भारत-भ्रमणके चतुर्थ खण्डका सूचीपत्र।

अध्याय	कस्बा, इत्यादि	पृष्ठ.
१	आसनसोल	१
"	चाईबासा	४
"	संबलपुर	"
"	रायगढ़	६
"	सारनगढ़	७
"	तुरमाल	"
"	शवरीनारायण	"
"	बिलासपुर	८
"	रतनपुर	९
"	कबरदह	११
"	रायपुर	१३
"	राजनन्दगाँव	१५
"	खैरागढ़	१६
"	भण्डारा	१७
"	कामटी	१८
"	रामटेक	१९
२	नागपुर	२०
"	मध्यदेश वरधा	२९
"	चाँदा	३०
"	अमरावती	३२
"	बरार देश	३३
"	एलिचपुर	३४
"	अकोला	३५
"	कासिम	३६
"	सेगाँव	"
"	खामगाँव	३७
३	भुसावल	"
"	अजंताके गुफामन्दिर	३९
"	धूलिया	४१
"	ननमार जंक्शन	४२
"	इलोराके गुफामन्दिर	४३
"	राजौ	४७
"	दौलताबाद	४८
"	औरंगाबाद	४९
"	घुस्मेश्वर	५१
"	पैठन	५२
"	परली वैद्यनाथ	"
"	नागेश	"
४	अहमदनगर	५४
"	धोंद जंक्शन	५६
४	पंढरपुर	५७
"	बार्सी	५९
"	शोलापुर	"
"	होतगी जंक्शन	६१
"	गुलबर्गा	६२
५	वाडी जंक्शन	६३
"	हैदराबाद	६४
"	हैदराबादका राज्य	६७
"	बीदर	७१
"	नांदेड़	७४
"	वारंगल	"
६	बेजवाड़ा	७५
"	मछलीपट्टम्	७६
"	एलौर	७९
"	राजमहेंद्री	"
"	धवलेश्वरम्	८२
"	कोकानाडा	"
"	पीठापुरम्	८३
"	अनकापल्ली	"
"	विजिगापट्टम्	"
"	विजयानगरम्	८६
"	चिकालोल	८७
"	पर्लाखेमडी	८८
"	ब्रह्मपुर	"
७	पनानृसिंह	९०
"	गुंटूर	९१
"	मल्लिकार्जुन	"
"	करनूल	९३
"	गुण्टकल जंक्शन	९५
"	बल्लारी	९६
"	कुमारस्वामी	९८
"	होसपेट	१०१
"	किष्किन्धा और विजयानगर	१०१
८	लक्कुण्डी	११२
"	गदग	"
"	बादामी	११३
"	बीजापुर	११५
९	रायचुर	१२१
"	अदोनी	१२३
"	गूटी	१२३

अध्याय	कसबा, इत्यादि	पृष्ठ
९	ताडपत्री ...	१२४
"	कडपा	"
"	रेणुगुंटा जंक्शन	१२६
"	कालहस्ती ...	१२७
"	वेंकटगिरि ..	१२९
"	नेल्लूर. ...	१३०
१०	तिरुपदी	१३१
"	वालाजी	१३२
"	चन्द्रगिरि .	१३५
"	वेलूर	"
"	तिरुवन्नामलई	१३६
"	आरकाट	१३७
"	आरकोनम् जंक्शन ..	१३८
"	तिरुत्तनी .	"
"	तिरवल्लूर . .	"
"	भूतपुरी .	१३९
११	मदरास ...	१४६
"	मदरास हाता ..	१५१
"	महावली पुरके गुफामन्दिर	१६३
१२	चेङ्गलपट्ट .. .	१६५
"	पक्षीतीर्थ	१६७
"	कांची .	"
"	जिञ्जीका किला	१७३
"	विलीपुरम् जंक्शन .	"
"	पाण्डीचरी	१७४
"	कडालूर	१७५
"	तिरुवन्नामलई . .	१७६
"	चिदम्बरम्	१७७
"	मायावरम्	१८२
"	नागपट्टनम्	"
१३	कुम्भकोणम्	१८३
"	तञ्जौर	१८४
"	तिरुचनापल्ली	१९०
"	श्रीरङ्गम् .	१९४
"	जम्बुकेश्वर	२००
"	पुदुकोटा	"
"	दिण्डीगल . .	२०२
"	मदुरा . .	२०३
१४	रामनाद .	२११
"	रामेश्वर	२१३
१४	देवीपित्तन	२२७
"	दर्भशयन	२२८
१५	तुतिकुडी	२२९
"	सिलोन	२३०
"	तिरुचेंदूर	"
"	तिरुनलवेली	२३१
"	पालमकोटा	"
"	पापनाशनतीर्थ	२३४
"	तोताद्री	"
"	कुमारी तीर्थ	"
"	तिरुवन्द्रम्	२३५
"	कोचीन .	२३९
"	कोचीन देशी राज्यमे	२४०
१६	करूर	२४३
"	ईरोड	२४३
"	कोयम्बतूर	२४४
"	उत्तकमन्द	२४६
"	पालघाट	२४९
"	कलीकोट	२५०
"	तलीचेरी	२५४
"	माही .	२५५
"	कननूर	"
"	मरकाड	२५६
"	कुर्गदेश	"
"	मगलूर	२५९
"	सेलम	२६०
१७	कोलार	२६२
"	बंगलोर .	२६३
"	सोमनाथपुर	२६७
"	शिवसमुद्रम्	२६७
"	श्रीरङ्गपट्टनम्	२६९
"	मैसूर	२७१
"	मैसूरका राज्य	"
"	नञ्जनगुडी	२८१
१८	तमकूर	"
"	श्रावन वडगुला	२८२
"	हलेवीडके मन्दिर	"
"	वेलूर	२८३
"	शृङ्गेरीमठ	"
"	हरिहर	२८८

अध्याय कसवा, इत्यादि	पृष्ठ.
१८ हुबली ...	२८९
” धारवाड	२९०
” गोआ ...	२९२
” कारबार	२९४
” गोकर्ण तीर्थ	२९५
” जरसोपाके जलप्रपात	२९८
” रत्नागिरि	२९९
१९ वेलगाँव	३०१
” गोकाकका जलप्रपात	३०२
” मीराज...	३०३
” कोल्हापुर	”
” संगली ...	३०८
” सतारा...	”
” बाई	३११
” महाबलेश्वर	३१२
२० पूना ...	३१३
” भीमशंकर	३२७
” कार्लीके गुफा मन्दिर	”
” अमरनाथ	३३०
२१ कल्याण	३३१
” नासिक.	”
” त्र्यम्बक	३३९
” थाना ...	३४३
” अलीबाग	३४४
२२ वम्बई ...	३४५
” वंबई हाता	३५९
” एलिफेंटाके गुफामन्दिर	३६७
२३ योगेश्वरका गुफामंदिर	३६९
” मण्डपेश्वरके गुफामन्दिर	”
” कनारीके गुफा मन्दिर	३७०
” वसीन	३७१
” दमन ...	”
” नौसारी...	३७२
” सूरत	३७३
” भड़ौंच	३७६
” शुक्लतीर्थ	३७८
” डभोई ...	३७९
” चन्द्रोदय तीर्थ	३८०
” वड़ोदा..	”
” वड़ोदाका राज्य ...	३८३
२४ डाकौर.	३८७
२४ गोधड़ा...	३८८
” कांबे ..	३८९
” नदियाड	३९१
” खेड़ा ...	”
” अहमदाबाद	३९२
” गुजरात देश	४०३
” काठियावाड	४०५
२५ वीरमगांव	४०८
” वाढ़वान	४०९
” धांगध्रा	४१०
” मोरवी..	४११
” राजकोट	४१२
” नवानगर	४१३
” मांडवी..	४१४
” भुज ...	”
” कच्छका राज्य	४१५
” नारायणसर	४१७
” गोंडल...	”
” पोरवन्दर	४१८
२६ मूलद्वारिका	४२१
” द्वारिका	”
” वेटद्वारिका	४३१
२७ विरावल	४३६
” सोमनाथपट्टन	४३७
२८ जूनागढ़	४४७
” गिरनार पर्वत	४५७
” जेतपुर	४५९
” लाठी ..	४६०
पालीटाणा	”
” शत्रुंजय पहाडी ...	४६१
” भावनगर	४६५
” लिंबडी..	४६७
२९ पाटन	”
” राधनपुर	४६९
” वीसनगर	४७०
” वाडनगर	”
” सिद्धपुर	४७१
” पालनपुर	४७३
” आबू पहाड	४७५
” सिरोही	४७८

॥ श्रीः ॥

॥ ऋद्धिसिद्धीश्वराय नमः ॥

भारतभ्रमण.

चतुर्थ खण्ड.

पहला अध्याय ।

(सूबे बंगालमें) आसनसोल जंक्शन, (सूबे छोटेनागपुरमें) चाईवासा, (मध्यदेशमें) सम्भलपुर, रायगढ, सारनगढ़, कुदरमाल, शवरीनारायण, बिलासपुर, रतनपुर, कवरदह, रायपुर, राजनन्दगाँव, खैरागढ़, भंडारा कामटी और रामटेक।

आसनसोल ।

शंकर पद पाथोज नमि 'साधुचरणपरसाद' ।
चौथ खण्ड 'भारत-भ्रमण' वरनत रहित विषाद ॥

मेरी चौथी यात्रा सन् १८९३ ईस्वीके मार्च (संवत् १९५० के चैत) में आरम्भ हुई । मैंने तीसरी यात्रा समाप्त करनेके उपरान्त कई एक दिन अपने घर रहकर चौथी यात्रा आरम्भ की।

चरजपुरासे दक्षिण गङ्गाके दूसरे पार 'इष्टइण्डियन रेलवे' का स्टेशन विहिया है, जहाँ मैं रेलगाड़ीमें सवार होकर' आसनसोल चला ।

विहियासे पूर्व ४४ मील बाकीपुर जंक्शन और १३० मील लक्षीसराय जंक्शन और लक्षीसराय जंक्शनसे पूर्व-दक्षिण ६१ मील वैद्यनाथ-जंक्शन और १३० मील

आसनसोल जंक्शन है। मैं आसनसोलसे बिलासपुर, नागपुर और भुसावल जंक्शन होकरके बम्बई और मदरास हातेके तीर्थों और शहरोंमें गया। जिसको बिहियासे रामेश्वर, बम्बई, द्वारिका इत्यादि जाना हो उसको बिहियासे नैनी जंक्शन और जबलपुर होकर भुसावल जानेसे ३७८ मील मार्गका बचत होगा; क्योंकि बिहियासे आसनसोल होकर भुसावल ११२१ मील और नयनी होकर केवल ७४३ मील है।

सूबे बङ्गालके वर्द्धवान जिलेमें कार्डलाइनपर (२३ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांश और ८७ अंश १ कला पूर्व देशान्तरमें) रानीगञ्ज सबडिवीजनके अन्तर्गत आसनसोल एक बस्ती है। वहाँसे पश्चिम कुछ दक्षिण 'बङ्गाल नागपुर रेलवे' नागपुरको गई है, जो सन् १८९१ ई० में खुली थी। आसनसोलमे एञ्जिनका बड़ा कारखाना, एक थाना और एक रोमनकथोलिक स्कूल है और उसके चारोंओर कोयलेकी खानोंका मैदान है। वहाँके प्रायः सबलोग पत्थरके कोयलेसे रसोई बनाते हैं।

आसनसोल जंक्शनसे रेलवे लाइन ३ ओर गई है।

(१) आसनसोलसे पश्चिम थोडा दक्षिण 'बङ्गाल-नागपुर रेलवे' जिसके तीसरे दर्जे और डाकगाड़ीका महसूल प्रति मील २ पाई है, गई है–

मील—प्रसिद्ध स्टेशन–

४७ पुरलिया।
८० चण्डील।
८९ कन्दरा।
९७ सीनी *।
१०७ अमडा।
११९ चक्रधरपुर।
१५६ मनारपुर।
१८२ रौरकेला।
१९० कलुंगा।
२२१ बामड़ा।
२४४ झारसुगढ़ जंक्शन।
२८९ रायगढ़।
३३८ चॉपा।
३४५ नैला।
३७१ विलासपुर जंक्शन।
४३९ रायपुर +।
४८१ राजनान्दगाँव।
५०० डुङ्गरगढ़।
५८८ भंडारारोड।
६०३ तोरसा।
६१८ कामटी।
६२७ नागपुर।

झारसुगढ़ जंक्शनसे ३० मील दक्षिण सम्भलपुर।

बिलासपुर जंक्शनसे पश्चिमोत्तर ६३ मील पेंड्रारोड और १९८ मील कटनी जंक्शन।

नागपुरसे पश्चिम ओर ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे

---

* सीनीके स्टेशनसे रेलवेकी नई शाखा खरगपुर होकर कलकत्तेके पास हवडेको और खरगपुरसे कटक होकर वालटेयरको गई है सीनीसे पूर्व ९९ मील खरगपुर, १५१ मील उलवड़िया और १७१ मील हवड़ा और खरगपुरसे उत्तर ८ मील मेदनीपुर और दक्षिण पश्चिम ७२ मील वालेश्वर, ११० मील भद्रक, १३० मील जाजपुर रोड, १८१ मील कटक, १९८ मील भुवनेश्वर, २१० मील ख़ुरदारोड, ३०२ मील ब्रह्मपुर, ४३६ मील विजयानगरम् और ४७४ मील वालटेयर जंक्शन और खुर्दारोड जंक्शनसे दक्षिण १७ मील शाखीगोपाल और २८ मील जगन्नाथपुरी है।

+ रायपुरसे दक्षिण ४६ मीलको रेलवेशाखा धमतरी कसबेको गई है।

पर२४४मील भुसावल जंक्शन, ३५८ मील मनमार जंक्शन, ४८७ मील कल्यान जंक्शन और ५२० मील बम्बईका विक्टोरिया स्टेशन।

(२) आसनसोलसे पश्चिमोत्तर 'ईष्टइण्डियन रेलवे' जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २½ पाई है—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

६ सीतारामपुर जंक्शन।
५१ मधुपुर जक्शन।
६९ वैद्यनाथ जंक्शन।
१०३ गिद्धौर।
११२ जमुई।
१३० लक्ष्मीसराय जंक्शन।
१५० मोकामा जक्शन।
१६७ बाढ।
१७८ बख्तियारपुर।
२०० पटना।
२०६ बाँकीपुर जंक्शन।

सीतारामपुर जंक्शनसे पश्चिम ५ मील बराकर और ३९ मील कटरसगढ़।

मधुपुरसे २३ मील पश्चिम दक्षिण गिरिडी।

वैद्यनाथ जंक्शनसे ४ मील पूर्व दक्षिण देवगढ़ अर्थात् वैद्यनाथजी।

लक्ष्मीसराय जंक्शनसे पूर्व २५ मील जमालपुर जंक्शन, ४३मील सुलतानगञ्ज, ५८ मील भागलपुर, ७८ मील कहलगाँव और १०४ मील साहबगञ्ज।

मोकामा जंक्शनसे उत्तर ओर गयाके बाँयें ओर २ मील मोकामाघाट, २२ मील सेमारियाघाट, और ६० मील समस्तीपुर जंक्शन।

बाँकीपुर जंक्शनसे पश्चिमोत्तर६ मील दीघाघाट, दक्षिण और गयाब्रेंचपर ८ मील पुनपुन, २८ मील जहाँनाबाद और ५७ मील गया, और पश्चिम कुछ दक्षिण ६मील दानापुर, ३० मील आरा, ४४ मील बिहिया, ६३ मील डुमराँव, ७३मील बक्सर, ९५ मील दिलदारनगर जंक्शन और १३१ मील मुगलसराय जंक्शन।

(३) आसनसोलसे पूर्व-दक्षिण 'ईष्टइण्डियन रेलवे'।

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

११ रानीगञ्ज।
१६ अण्डाल जंक्शन।
५७ खाना जंक्शन।
६५ बर्द्वान।
१०३ मगरा।
१०८ हुगली जंक्शन।
१११ चन्दरनगर।
११८ सेवडाफुली जंक्शन।
१२० श्रीरामपुर।
१३२ हवड़ा (कलकत्तेके पास)।

अण्डाल जंक्शनसे २४ मील पश्चिमोत्तर गउरागद्दी।

खाना जक्शनसे लुपलाइनपर १४४ मील उत्तर साहबगञ्ज और साहबगञ्जसे १०४ मील पश्चिम लक्ष्मीसरायजंक्शन।

हुगली जंक्शनसे५ मील पूर्व दक्षिण नइहाटी जंक्शन।

सेवड़ाफूली जंक्शनसे २२ मील पश्चिम कुछ उत्तर तारकेश्वर।

चाईबासा।

आसनसोल जंक्शनसे पश्चिम-दक्षिण ४७ मील पुरुलियाका रेलवे स्टेशन है, जिससे ४९ मील पश्चिम दक्षिण चण्डील और कन्द्राके स्टेशनोंके बीचमें सुवर्णरेखा नदीपर रेलवेका पुल बना है। पुरुलियासे ६० मील (आसनसोल जंक्शनसे १०७ मील) पश्चिम दक्षिण अमड़ाका रेलवे स्टेशन है, जिससे लगभग १५ मील दक्षिण चाईबासाको १ सड़क गई है। सूबे छोटेनागपुरके (२२ अंश, ३२ कला, ५० विकला, उत्तर-अक्षांश और ८५ अंश ५० कला ५७ विकला पूर्व देशान्तरमें) सिंहभूमि जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा चाईबासा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय चाईबासामें ६००६ मनुष्य थे; अर्थात् ५१२० हिन्दू, ७७८ मुसलमान और १०८ दूसरे।

चाईबासामें मामूली कचहरियाँ, जेलखाना, अङ्गरेजी स्कूल और खैराती अस्पताल है। वहाँ प्रतिवर्ष बड़े दिनके समय एक मेला होता है, लगभग २००० मनुष्य मेलेमें आते हैं, ३१ दिसम्बरको घोड़दौड़, नाच इत्यादि तमासा होते है। चाईबासा कसबेसे चारोंओर देहाती सड़क निकली है।

सिंहभूमि जिला—यह छोटानागपुर विभागके दक्षिण-पूर्वमें ३७५३ वर्गमीलके क्षेत्र-फलमे फैलताहै। इसके उत्तर लोहारडागा और मानभूमि जिला; पूर्व मेदनीपुर जिला; दक्षिण सूबेउड़ीसा और पश्चिम लोहारडागा जिला और छोटेनागपुरके देशी राज्य है। जिलेके चारोंओर पहाड़ियाँ हैं। जिलेके दक्षिणी सीमापर कुछ दूर तक सुवर्णरेखा नदी और पश्चिमी सीमापर वैतरणी नदी बहती है। देश पहाड़ी है। प्रधान नदी सुवर्णरेखा और कोयल है। जङ्गलोंमें बाघ, तेंदुए, भालू इत्यादि वनजन्तु रहते हैं और कभी २ हाथियोंके छोटे झुण्ड चले आते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सिंहभूमि जिलेमें ४५३७७५ मनुष्य थे; अर्थात् ४४७८१० हिन्दू, २९८८ कृस्तान, २३२९ मुसलमान और ६४८ पहाड़ी कोम संथाल। इनमें ३०४४९९ पहाड़ी और जङ्गली कोम थे, जिनका बड़ा भाग हिन्दूमें लिखा गया। इनमे १८७७२३ कोल थे। हिन्दूमें ३८६७२ ग्वाला, २०८३९ तांती, २८८६ ब्राह्मण, २२५९ बनिया, १९४९ राजपूत, शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे। जिलेमें केवल चायबासा में ५००० से अधिक मनुष्य थे।

सम्भलपुर।

अमड़ाके रेलवे स्टेशनसे १२ मील पश्चिम-दक्षिण सिंहभूमि जिलेके चक्रधरपुरमें रेलवे के एञ्जिन बदलते हैं। स्टेशनके आसपास अनेक कोठियाँ बनी हैं। वहाँसे उत्तर एक सड़क रांचीको गईहै। उससे आगे रेलवेके दोनों ओर अधिक पहाड़ियाँ देखनेमें आती हैं। चक्रधर-पुरसे ३७ मील पश्चिम-दक्षिण मनारपुरका स्टेशन है। वहाँ उत्तम शालके वृक्षोंसे भरे हुए जङ्गलोंसे रेलवे निकलती है। उन जङ्गलोंमें बहुत पहाड़ियाँ होनेके कारण घूम घाम कर रेलवे लाइन निकली है। एक जगह पहाड़ी फोड़कर उसके भीतर लाइन बैठाई गई है जिससे होकर रेलगाड़ी निकलती है, वहाँके प्रायः सम्पूर्ण निवासी कोल है। मनारपुरके स्टेशनसे

३४ मील पश्चिम दक्षिण कलूँगाका स्टेशन है। रौरकेलों और कलूँगाके स्टेशनके बीचमें ब्राह्मणी नदीपर रेलका पुल बना हुआ है। उस देशके गरीब लोग नदीके बालू धोकर कुछ सोना निकालते हैं। कलूँगाके स्टेशनसे तीस चालीस मील दक्षिण ब्राह्मणीनदीके पूर्व सूबे छोटेनागपुरके एक देशी राज्यकी राजधानी गांगपुर है। कलूँगासे २१ मील पश्चिम-दक्षिण गारपोस स्टेशनके आसपासके घने जङ्गलमें बरसातके समय जङ्गली हाथी आते हैं। गारपोससे १० मील आगे जानेपर बामडाका रेलवे स्टेशन मिलता है, जिससे लगभग २५ मील दक्षिण मध्य देशमें एक देशी राज्यकी राजधानी बामड़ा है। बामडाके स्टेशनसे १० मील बगदेहीके स्टेशन तक रेलवे लाइन पहाडियोंके दरमियान होकर जाती है। बगदेहीसे १३ मील और आसनसोल जंक्शनसे २४४ मील पश्चिम-दक्षिण झारसुगढ़में रेलवेका जंक्शन है।

एक रेलवे शाखा झारसुगढ़से ३० मील दक्षिण सम्भलपुरको गई है। मध्यदेशके छत्तीसगढ विभागमें (२१ अंश, २७ कला १० विकला उत्तर अक्षांश और ४८ अंश १ कला पूर्व देशान्तरमें) महानदीके बॉये किनारेपर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा सम्भलपुर है, जहांसे एक सडक उत्तर कुछ पूर्व रांचीको, दूसरी सडक पूर्व कुछ उत्तर मेदनीपुर होकर कलकत्तेको और तीसरी सडक दक्षिण पूर्व कटकको गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सम्भलपुर कसबेमें १४५७१ मनुष्य थे, अर्थात् १२१६९ हिन्दू, १२७४ मुसलमान, ९८९ एनिमिष्टिक अर्थात् पहाडी कोम और १३९ कृस्तान।

कसबेके निकट महानदीकी चौडाई लगभग १५० फीट है, किन्तु वर्षाकालमें यह नदी १ मील चौडी होजाती है। कसबे और स्टेशनके सामने नदीके किनारेके चट्टानोंपर झौआंका सघन जङ्गल लगा है। कसबेके पश्चिमोत्तर सम्भलपुरका उजडा हुआ किला है, उसकी खांईकी निशानी अब तक देखनेमें आती है और सम्भलाई देवीके निकट सम्भलाई फाटक विद्यमान है किलेके भीतर सोलहवीं सदीके बने हुए परमेश्वरी देवी, बडा जगन्नाथ अनन्तजी इत्यादि देवताओंके बहुतेरे मन्दिर स्थित हैं। सम्भलपुरमें सरकारी कचहरियाँ, जेलखाना, जिलास्कूल, जनाना अस्पताल और दो सराय प्रधान इमारत हैं और एक बडा बाजार फैला हुआ है। पहिले कसबेके पश्चिमोत्तर महानदीके विस्तरमें बहुत हीरे मिलते थे।

सम्भलपुर कसबेसे लगभग ५० मील दक्षिण महानदीके दहिने मध्य देशके एक देशी राज्यकी राजधानी सोनपुर है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ८६९८ मनुष्य थे। सोनपुरसे पश्चिम और पटना राजधानी है।

सम्भलपुर जिला—यह जिला छत्तीसगढ़ विभागके पूर्वमें ४५२१ वर्गमीलमे फैला है। इससे मिले हुए कालाहांढ़ो, रायगढ़, सारनगढ, पटना, सोनपुर, बामडा और रेहराखोल ७ देशी राज्य ११८९७ वर्गमीलमें हैं सम्भलपुर जिले और देशी राज्योंके उत्तर छोटा नागपुर और पूर्व और दक्षिण कटक, बिलासपुर और रायपुर जिला हैं। सम्भलपुर जिलेमे होकर महानदी बहती है। नदीके पश्चिमकी भूमि अच्छी तरहसे जोती जाती है। उस भागके जङ्गल अधिक साफ किये गये हैं। जिलेके प्रायः प्रत्येक बस्तीमें एक तालाव है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सम्भलपुर जिलेमें ६९३४९९ मनुष्य थे; अर्थात् ६३२७४७ हिन्दू, ४६६५२ पहाड़ी कोमें, १०१२० कबीरपंथी, २९६६ मुसलमान, ६९२ कुम्भीपंथिया जो केवल सम्भलपुरहीमें है, २१२ सतनामी और ११० क्रस्तान। जातियोंके खानेमें ७९०७९ गोर, ७८६२२ गांडा, ७७४५३ केवट, ६७१०२ कोलटा, ६५८४५ सवर, ५७३२७ गोंड़, ४०६९६ पैगा, ४०६९६ कोल, २२२५० तेली, २१८२८ ब्राह्मण, १८६४३ कुरा, १६६७२ खोंद, ५६४४ राजपूत, और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

इतिहास—पटनेके १२ वें राजा नरसिंहदेवने अपने भाई बलरामदेवको दक्षिणका जङ्गली देश दे दिया। बलरामदेव सम्भलपुरका पहला राजा हुआ। उसने अपने आसपासके कई राजाओंसे भूमि छीनकर अपना राज्य बढ़ाया। उसके बड़े पुत्र हरिनारायणदेवने, जो सन् १४९३ ई० में राजगद्दी पर बैठा, अपने दूसरे पुत्र मदनगोपालको सोनपुरका देश दे दिया, जो अब तक उसके वंशधरोंके अधिकारमें है। उस समयसे लगभग २०० वर्षतक सम्भलपुरका बल बढ़ता गया और पटनाका घटता गया। सन् १७९७ में महाराष्ट्रोंने बड़ी लडाईके उपरान्त सम्भलपुरको ले लिया और वहाँके राजा जेठसिंह और उसके पुत्रको कैदी बनाकर नागपुरमें भेज दिया। सन १८०८ में जेठसिंह मरगया। उसके चन्द महीनोंके पीछे जेठसिंहका पुत्र राजा बनाया गया। सन् १८२७ में उसके मरनेके पश्चात् उसकी विधवा मोहनकुमारीके उत्तराधिकारिणी होनेपर झगड़ा आरम्भ हुआ। रानी तख्तसे उतारी गई और सम्भलपुरके तीसरे राजाकी रखेलिन स्त्रीसे जन्मा हुआ पुत्र नारायणसिंह राजा बनाया गया। सन् १८४९ में जब नारायणसिंह विना पुत्रके मर गये तब सम्भलपुर अङ्गरेजी अधिकारमें होगया। सन् १८६४ के आरम्भमें सुरेन्द्र शा बागी हुआ था, जो कैद किया गया। तबसे जिलेमें शान्ति स्थापित हुई और सम्भलपुर कसबेकी उन्नति होने लगी।

रायगढ़।

झारसुगढ़ जंक्शनसे ४५ मील पश्चिम (आसनसोल जंक्शनसे २८९ मील पश्चिम-दक्षिण) रायगढ़का रेलवे स्टेशन है। मध्य देशमें (२१ अंश ५४ कला उत्तर अक्षांश और ८३ अंश २५ कला पूर्व देशान्तरमें) एक छोटे देशी राज्यकी राजधानी और उस राज्यका प्रधान कसबा रायगढ़ है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय ४८६० मनुष्य थे; अर्थात् ४३६१ हिन्दू, ३२८ मुसलमान, १६६ आदि निवासी, ३ कबीरपन्थी और २ सतनामी।

रायगढ़का राजवंश गोंड़ जातिका है। कसबेमें राजाका महल बना है और १ स्कूल है। राजाके पूर्व पुरुष ठाकुर दरियावसिंहने महाराष्ट्रोंकी सहायताकी, इस लिये उनको राजाकी पदवी मिली। रायगढ़के वर्तमान राजा भूपदेव २५ वर्षके नौजवान हैं।

रायगढ़के राज्यके उत्तर सरगुजा और गाङ्गपुरका राज्य; दक्षिण महानदी और सम्भलपुर जिला, पूर्व गाङ्गपुरका राज्य और पश्चिम चन्द्रपुर इत्यादि है। राज्यकी पहाड़ियोंमें लोहाका ओर होता है। राज्यका क्षेत्रफल १४८६ वर्गमील है। उससे लगभग ६६७०० रुपये

मालगुजारी आती है, जिसमेंसे ४०० रुपया अङ्गरेजी सरकारको दिया जाता है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय उस राज्यमे १२८९४३ मनुष्य थे।

सारनगढ़।

रायगढ़से दक्षिण-पश्चिमकी ओर महानदीसे दक्षिण मध्य देशमे एक छोटे देशी राज्यकी राजधानी सारनगढ है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ४२२० मनुष्य थे; अर्थात् ३६३८ हिन्दू, ३१७ पहाडी कोमें, २३० मुसलमान और ३५ कबीरपथी। राजधानीमें राजाका महल, कचहरियाँ और एक स्कूल है।

सारनगढ़का राजा गोंड है। लाञ्जीका राजा नरेन्द्रशा सन् ९१ ई० में भण्डारा गाँवमें था। सारनगढ़के राजाओंके कथनानुसार नरेन्द्रशाके पोता जगदेवशाके ५५ वें पुश्तमें सारनगढ़का वर्तमान राजा है। जगदेवशाके ४२ वें पुश्तमें कल्यानशा था, जिसको राजाकी पदवी मिली। राजा संग्रामसिंह, उसके बाद राजा भवानीप्रतापसिंह, सारनगढ़के राजा हुए थे, जिसके पीछे वर्तमान राजा लालजवाहिरसिह, जो निरे बच्चे हैं, राजा बने हैं।

राज्यका क्षेत्रफल ५४० वर्गमील है। इसके उत्तर रायगढ़का राज्य, पूर्व सम्भलपुर जिला, दक्षिण फुलझर और पश्चिम बिलासपुर जिला है सन १८८१ में राज्यमें ७१२७४ मनुष्य थे। राज्यमें होकर महानदी बहती है। राज्यसे ४१७०० रुपया मालगुजारी आती है। पहिले यह राज्य १८ किलेंमेंसे एक था।

कुदरमाल।

रायगढ़से ४९ मील पश्चिम (आसनसोल जंक्शनसे ३३८ मील पश्चिम कुछ दक्षिण) चॉपाका रेलवे स्टेशन है, जिससे पूर्व हसदू नदीपर रेलवेका पुल बना है। रेलवेसे लगभग ३०मील उत्तर कोबराके कोयलेके मैदानमें उस नदीके किनारोपर जंगलोंमें कभी कभी जङ्गली हाथियोंके दल देख पड़ते हैं।

चॉपाके रेलवे स्टेशनसे १४ मील उत्तर (बिलासपुर कसबेसे ३२ मील पूर्वोत्तर) कुदरमाल एक बस्ती है, जो श्रीकबीरजीके सुप्रसिद्ध शिष्य धर्मदासजीके पुत्र वचनचूडामणि साहबकी समाधि और वंश घरानेके मठ होनेके कारणसे प्रसिद्ध है। इस घरानेका प्रधान मठ कुदरमालसे लगभग ८० मील पश्चिम कुछ उत्तर कबरदहमें है।

कुदरमालमें वचन चूडामणि साहबका समाधि मन्दिर है। माघकी पूर्णिमाको वहाँ प्रसिद्ध मेला होता है, जो पूर्णिमाके पहिलेसे उसके पीछे तक लगभग ३ सप्ताह रहता है। यात्रीगण चूडामणि साहबकी समाधिका दर्शन करते हैं। चतुर्दशी और पूर्णिमाको बड़ी धूम धामसे समाधिकी चौका आरती होती है। कुदरमालके महत कबरदहके मठके आधीन है। इस समय महंत विश्वनाथदास कुदरमालके मठके मालिक हैं।

सबरीनारायण।

चांपाके स्टेशनसे ७ मील पश्चिम नैलाका रेलवे स्टेशन है। नैलासे १६ मील दक्षिण कुछ पूर्व और बिलासपूर कसबेसे २९ मील दक्षिण-पूर्व बिलासपुर जिलेमें महानदी और शिवनाथनदीके संगमसे लगभग १० मील पश्चिम शिवनाथ नदीके दहिने किनारेपर शबरी-नारायण एक तीर्थ स्थान है; जिसको शेवरीनारायणभी लोग कहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय शबरीनारायण बस्तीमे २२५० मनुष्य थे; अर्थात् २००९ हिन्दू, १२७ मुसलमान, ७९ कबीरपन्थी, २६ पहाड़ी जातियाँ और ९ दूसरे।

नदीके तीरपर महादेवजीका और उससे थोड़ी दूर पर शबरीनारायण और राम लक्ष्मणका मन्दिर है। एक लेखसे ज्ञात होता है कि लगभग सन् ८४१ ई० में शबरीनारायणका मन्दिर बना। वहाँ फाल्गुनकी शिवरात्रिको एक बड़ा मेला और विजयादशमीके समय छोटा मेला होताहै। शबरीनारायणके महन्त धनी हैं।

बस्तीमें तहसीली कचहरी, थाना, डाकखाना और मदरसा, ये सरकारी इमारतें पक्की बनी हैं। निवासी गोंड़ और छतीसगढ़ी अधिक हैं।

कुछ लोगोंका कथन है कि श्रीरामचन्द्र वनवासके समय इसी स्थानपर शबरीसे मिले थे; किन्तु वाल्मीकि अध्यात्म इत्यादि रामायणोंमें लिखा है कि पम्पासरके समीप रामचन्द्र शबरीसे मिले थे। वह स्थान शबरीनारायणसे ६०० मीलसे अधिक दक्षिण-पश्चिम मदरास हातेके बलारी जिलेके हुसपेट कसबेसे कई मील दूर निजामके राज्यमें है। नासिकसे जहाँ सीता हरण हुआ था, लगभग ४०० मील दक्षिण-पूर्व पम्पासर और ६०० मील पूर्व कुछ उत्तर शबरीनारायण है। शबरीकी कथा किष्किन्धाके वृत्तान्तमे मिलगो।

बिलासपुर।

नैलाके स्टेशनसे २६ मील पश्चिम (आसनसोलसे ३७१ मील पश्चिम-दक्षिण) विलासपुरका रेलवे स्टेशन है। मध्य देशके छत्तीसगढ़ विभागमें (२२ अंश, ५ कला उत्तर अक्षांश और ८२ अंश, १२ कला पूर्व देशान्तरमें) रेलवे स्टेशनसे २ मील दूर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा विलासपुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय विलासपुर कसबेमें ११११२ मनुष्य थे; अर्थात् ९४९६ हिन्दू, १४४१ मुसलमान, १०६ क्रस्तान, ७५ एनिमिष्टिक अर्थात् पहाड़ी और जंङ्गली, २ जैन और २ पारसी।

कसबेके उत्तर एक छोटी नदी वहती है। आस पास आमके वहुतेरे वाग लगे हैं और कुछ दूरपर अनेक पहाड़ियाँ हैं।

विलासपुरसे १९८ मीलकी रेलवे लाइन पहाडी जिले और उमरियाके कोयलेके मैदान होकर कटनी जंक्शनको गई है। विलासपुरसे ६३ मील उत्तर पेन्ड्रारोड और पेन्ड्रारोडसे १३५ मील पश्चिमोत्तर कटनी है।

पेन्ड्रारोडसे लगभग ७ मील दूर रीवाँके राज्यमें अमरकण्टकके शिखरपर वहुतेरे देवमन्दिर वने हैं। उसमें स्थानको अमरकण्टक तीर्थ कहते हैं; उसी शिखरसे नर्मदा नदी और सोन नदी निकली हैं। भारतभ्रमण पहिले खण्डके इक्कीसवे अध्यायमें अमरकण्टकका वृत्तान्त है।

विलासपुर जिला—इसके उत्तर रीवाँका राज्य; पूर्व गढ़जातके अनेक राज्य; दक्षिण रायपुर जिला और पश्चिम मण्डला बालाघाट जिला है। जिलेका सदर स्थान विलासपुर कसबा है। जिलेके पूर्व, पश्चिम और उत्तर पहाड़ियोंके सिलसिले है। सोन और महानदी

वर्षा कालमें बहुत चौड़ी होजाती हैं; किन्तु अन्य ऋतुओंमें विना नावके लोग पार चले जाते हैं। जिलेमें जङ्गल बहुत है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय विलासपुर जिलेके ७७९८ वर्गमील क्षेत्रफलमें १०१७३२७ मनुष्य थे, अर्थात् ६२९६५९ हिन्दू, १५७५४७ आदिनिवासी, १३३०८६ सतनामी, ८७३४८ कबीरपन्थी, ९६२५ मुसलमान, ३५क्रस्तान, १७ जैन और १० सिक्ख, हिंदुओंमें ९५०२० चमार, ८४५४६ अहीर, ६१३२४ तेली, ४१३२७ कूर्मी, ३४७६७ केवट, २४५४१ मरार, २३३२४ ब्राह्मण, २५९२८ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे और आदि निवासियोंमें १२५९२८ गोंड, बाकीमें सारिया, कुरुकू इत्यादि जातियोंके मनुष्य थे। विलासपुर जिलेके कसबे विलासपुरमे ७७७५ रतनपुरमें ५६१५ और मुँगेलोंमें ४७५७ मनुष्य थे।

विलासपुर जिलेके किशान इत्यादि सर्व साधारण पुरुष छोटे वस्त्र पहनते हैं और स्त्रियाँ लम्बे वस्त्रके आधे भागको कमरमें लपेट कर ठेहुनो तक लटकाती हैं और आधेको छातीपर फैला कर दहिने कंधे पर रख देती हैं। वहाँकी भाषा पहाडी लोगोंकी बोलियोंसे मिली हुई हिन्दीका अपभ्रंश है। उस ज़िलेमें बहुत सी जोतने योग्य भूमि विना जोती हुई पड़ी है। सन् १८८१ में जिलेके ७७९८ वर्गमील क्षेत्रफलमेसे केवल २१२१ वर्गमील भूमि जोती जाती थी, ४१६४ वर्गमील जोतने लायक थी और १०६३ वर्गमील जोतने योग्य नहीं थी। जिलेकी प्रधान फसिल धान है। गेहूं, इत्यादि दूसरे अन्न, तेलके बीज, ऊख और कपास भी होते हैं। जिलेमें ज्वरकी बीमारी अधिक होती है।

इतिहास—लगभग ३०० वर्ष हुए कि विलास नामक एक मछुहेने विलासपुरको बसाया, इस लिये कसबेका नाम विलासपुर पड़ा। वहाँ बहुत दिनों तक केवल मछुहोंकी चन्द झोंपड़ियाँ थीं। सन् १८६१ में विलासपुर एक जिला नियत हुआ। सन् १८६२में विलासपुर कसबा जिलेका सदर स्थान बना। विलासपुर संबंधी इतिहास रतनपुरके इतिहासमें है।

रतनपुर।

विलासपुर कसबेसे १५ मील उत्तर कटनी शाखाके कोटाके रेलवे स्टेशनसे कई मील दूरपर विलासपुर जिलमें रतनपुर एक छोटा कसबा है, जिसमे सन् १८८१ की मनुष्य गणनाके समय ५६१५ मनुष्य थे, अर्थात् ४७६५ हिन्दू, ५०२ मुसलमान, १४२ कबीरपंथी, ११४ आदि निवासी और ९२ सतनामी।

यह सन् १७८७ ई० तक छत्तीसगढके हैहयवंशी राजाओंकी राजधानी था। पुराने किलेकी टूटी हुई मेहराबियाँ और पुराने महलकी टूटी फूटी दीवारें तथा शहरके चारों ओरकी खाई, जो लगभग आधी भर गई हैं, रतनपुरके पूर्वकालके ऐश्वर्यको प्रकट करती हैं। वहाँके निवासी तिजारती लोग कपड़े मसाले और लाहके कारोबार करते है। वहाँ ब्राह्मण बहुत है, जो उस देशके ब्राह्मणोंमे मुखिया समझे जाते हैं, उनमें विद्वान् बहुत हैं। कसबेके आस पास बहुतेरे मीलो तक पुराने कसबेकी निशानियाँ मिलती हैं, उसके भीतर आमके वृक्षोंके बडे जङ्गलमें जगह जगह बहुतेरे तालाव, मन्दिर और सतियोंके स्थान हैं जिनमेंसे पुराने किलेके निकट सबसे अधिक प्रसिद्ध सतीकी एक बडी इमारत है, जिसमे लिखा है कि यहाँ राजा लक्ष्मण शाहीकी बीस रानियां सती हुईं।

इतिहास——महाराष्ट्रोंके आक्रमणक पहले और उनके आक्रमणके समय तक विलासपुर जिला रतनपुरके हैहयवंशी राजाओके आधीन था । जैमिनिपुराणमें लिखा है कि रतनपुरके राजा मयूरध्वज बड़े दानी और धर्मनिष्ठ थे । कृष्णभगवानने राजाके धर्मकी परीक्षा लेनेके लिये ब्राह्मण बनकर उनसे उनका आधा शरीर माँगा । राजाने अपना आधा शरीर आरासे चिरवाकर देना स्वीकार किया । अन्तमें श्रीकृष्णने प्रकट होकर राजाको दर्शन दिया । १८ वीं सदीके महाराष्ट्रोंके आक्रमणके समय तक, जब हैहयवंशी राज्यका अन्त होगया, वहाँका कोई मनुष्य आराको अपने काममें नहीं लाया ।

रतनपुरके राजा लोगोंने ३६ किलोंपर राज्य किया, इस लिये वह देश छत्तीसगढ़के नामसे प्रसिद्ध हुआ । ३६ किलोंमेसे प्रत्येक एक तालुकाका सदर स्थान था । लगभग सन् ७५० ई० में रतनपुरके बीसवें राजा सूरदेवके राज्यके समय छत्तीसगढ़ दो भागोमें बट गया। रतनपुरसे उत्तरके आधे भागमें राजा सूरदेव और दक्षिणके आधे हिस्सेमें सूरदेवके छोटे भाई ब्रह्मदेव (रायपुरमें रहकर) हुकूमत करने लगे । ब्रह्मदेवसे ९ वें पुस्तमें कोई पुरुष नहीं था, इस लिये लगभग सन् १३६० में रतनपुर राजघरानेका एक छोटा पुत्र रायपुरकी गद्दी पर बैठा, जिसके वंशधर महाष्ट्रोंके आक्रमणके समय तक हुकूमत करते रहे ।

रतनपुरके राजा सूरदेवके पुत्र पृथ्वी देव बड़े प्रतापी, प्रजाप्रिय और पण्डित थे । उस देशके लोग उनकी बहुत कहानी कहते है और अमरकण्टक तथा मल्हारमें संस्कृत लेख हैं, जिनमें उनके प्रताप और यशका वर्णन हुआ है। १६ वीं सदीमें दिल्लीके बादशाह अकबरने रतनपुरके प्रधान कल्यानशाहीको उस देशके राज्यका पूरा अधिकार और राजाकी पदवी दी । कल्यानशाहीके ९ वे पुस्तमें राजसिंह हुए; उनके कोई पुत्र नहीं था, इस लिये एक ब्राह्मण द्वारा रानीसे क्षेत्रज पुत्र उत्पन्न कराया गया । उस पुत्रका नाम विश्वनाथसिंह पड़ा, जिसका विवाह रींवाँके राजाकी पुत्रीसे हुआ । एक समय विश्वनाथसिंह अपनी स्त्रीके साथ जुआ खेलते हुए उसको बार बार हराने लगे । अन्तमें स्त्रीको सन्देह हुआ कि मेरा पति द्यूतमें छल करके जीतता है । तब उसने कुछ गुस्सा होकर परिहासके तौरपर विश्वनाथसिंहसे कहा कि आप न तो ब्राह्मण हैं और न राजपूत । ऐसा सुन विश्वनाथसिंहने ग्लानिमे आकर आत्महत्या कर डाली । कुछ दिनोंके पश्चात् राजसिंह घोड़ेसे गिरकर मरगया । तब उसका चचा सरदारसिंह राजसिंहासनपर बैठा, जो २० वर्ष राज्य करनेके पश्चात् सन् १७३२ ई० में मरगया । तब उसका भाई रघुनाथसिंह, जिसकी अवस्था ६० वर्षकी थी, उसका उत्तराधिकारी बना । सन् १७४१ ई० में महाराष्ट्रोंने रघुनाथसिंहको परास्त किया । हैहयवंशी राज्यका अन्त हुआ । रघुनाथसिह, भोंसलेके आधीन हुकूमत करने लगा । रघुनाथसिंहकी मृत्यु होनेपर सन् १७४५ में नागपुरका पहला राघोजी भोंसलाने रायपुर राजघरानेके मोहनसिंहको रतनपुरकी गद्दीपर बैठाया। सन् १७५८ में भीमाजीने उत्तराधिकारी होकर ३० वर्ष तक राज्य किया । उसके मरनेपर उसकी स्त्री अनन्दीबाई लगभग सन् १८०० तक राज्य करती रही । उसके मरनेपर सूबेदार बीठल दिवाकर उसका उत्तराधिकारी बना, जिसके समयके पीछे राज्यमें बड़ा गड़बड फैला । सन् १८१८ में अङ्गरेज महाराजने नागपुरके आपासाहबको गद्दीसे उतारकर एक लड़का राघोजीको, जो सन् १८३० में बालिग

हुआ, नागपुरके तख्तपर बैठाया, जिसके मरनेपर सन् १८५४ मे नागपुरका राज्य अङ्गरेजी अधिकारमें होगया । छत्तीसगढ़ एक अलग् कमिश्नरी बनाया गया ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—जैमिनिपुराण–(४१ वाँ अध्याय) जिस समय श्रीकृष्ण और अर्जुनसे रक्षित राजा युधिष्ठिरका यज्ञ-अश्व मणिपुरसे खुला, उसी समय रत्ननगर (रतन-नगर) के राजा मयूरध्वजका यज्ञ-अश्व उसके पुत्र ताम्रध्वजकी रक्षामें वहाँ जा पहुँचा । जब अर्जुनका घोडा ताम्रध्वजके घोड़ेके निकट गया तब ताम्रध्वजने उसको पकड लिया । उस समय दोनो ओरकी सेना लडने लगी । (४४ वाँ अध्याय) बडे युद्धके पश्चात् ताम्रध्व-जने कृष्ण और अर्जुन दोनोको मूर्च्छित किया । दोनों घोडे और ताम्रध्वज रतनपुरमे आये । राजा मयूरध्वज अपने पुत्र ताम्रध्वजके मुखसे यह वृत्तांत सुनकर उसकी निन्दा करने लगे । उधर कृष्णचन्द्र और अर्जुन सचेत होनेपर मणिपुरसे प्रस्थान कर अपनी सेना सहित मयूरध्वजकी राजधानी रतनपुरमें आये । कृष्णभगवान्ने वृद्ध ब्राह्मणका रूप धारण किया । अर्जुन उनके शिष्य बने । (४५ वाँ अध्याय) ब्राह्मणने यज्ञमें दीक्षित राजा मयूरध्वजके समीप जाकर स्वस्ति-वचन कहा । राजा बोले कि हे ब्राह्मण ! तुम जिस लिये मेरे यज्ञमे प्राप्त हुए हो वह कहो, मुझको कुछ अदेय नहीं है; मै तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करूंगा । ब्राह्मणने कहा कि हे राजन् ! मैं धर्मपुरसे अपने पुत्रके विवाहके निमित्त तुम्हारे पुरोहित कृष्णशर्मासे कन्या याचनेके लिये अपने पुत्रके साथ चला । मार्गके घोर बनमे एक सिंहने मेरे पुत्रको पकड़ लिया । मैने उससे प्रार्थना की कि तुम मुझको भक्षण करो, मेरे पुत्रको छोड़ दो, सिंहने कहा कि तेरा अंग तपस्या करने और वृद्ध होनेके कारण जर्जर होगया है, स्वादिष्ठ नहीं है । अगर दिव्यरस दुग्ध और नाना विधि फलो करके पुष्ट राजा मयूरध्वजके शरीरका आधा दाक्षि-णीय भाग तुम आनकर मुझको दो तो मैं तुम्हारे पुत्रको छोड दूँ । तुम राजाके पास जाकर मांगो वह अपना शरीर दे देगा । हे राजन् ! तुम सिंहसे मेरे पुत्रको बचाओ । (४६ वॉ अध्याय) राजाने प्रसन्न चित्तसे अपना शरीर दो भाग करनेके लिये अपनी स्त्री और अपने पुत्रके हाथमें 'आरा' दिया । रानी कुमुद्वतीने राजाकी आज्ञासे अपने पुत्रके सहित उस आरासे राजाके मस्तकको छेदन किया । शिरके कटनेके समय बडा हाहाकार शब्द हुआ । उस समय राजाके बायें नेत्रसे जल गिरता हुआ देख ब्राह्मण बोले कि हे राजन् ! तुम रोदन करते हुए दान देते हो मैं अभावसे दिया हुआ तुम्हारा आधा अङ्ग ग्रहण नहीं करूंगा । तब राजाने कहा कि हे मुनिशार्दूल ! इस लिये मेरे बायें नेत्रसे जल गिरा कि मेरा दहिना अङ्ग ब्राह्मणके काममें लगता है; किन्तु बायाँ अङ्ग वृथा जायगा । ऐसा राजाका वचनसुन ब्राह्मणरूपी कृष्ण भगवान्ने प्रसन्न होकर अपना सुन्दर शरीर राजाको दिखलाया और ताम्रध्वज द्वारा अर्जुनके सहित अपना मूर्च्छित होनेका वृत्तान्त उनसे कहा, तथा ३ रात्रि राजाके गृहमें निवास किया । राजा मयूरध्वज अपने मित्र बर्गोंके सहित युधिष्ठिरके यज्ञ अश्वकी रक्षा करनेके लिये कृष्णके साथ चला ।

कवरदह ।

बिलासपुरके रेलवे स्टेशनसे ६० मील पश्चिम कुछ उत्तर (२२ अंश १ कला उत्तर अक्षांश और ८१ अंश १५ कला पूर्व देशान्तरमें) बिलासपुर जिलेके अन्तर्गत

कवरदह एक छोटे देशी राज्यकी राजधानी है। उसमें कवीरन्पथीक वंश घरानेका प्रधान मठ है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कवरदहमे ५६८५ मनुष्य थे; अर्थात् ४१३१ हिन्दू, ४५६ मुसलमान, ४२० पहाड़ी, ३४८ कबीरपंथी और ३३० सतनामी।

कसबेके अधिक मकान खपडेसे छाये हुए हैं; जगह जगह पक्के मकान देख पड़ते है राजाका मकान दो मञ्जिला बना है। कसबेमें रूई और लाहकी सौदागरी होती है' राजाके राज्यका क्षेत्रफल ८८७ वर्गमील है जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ८६३६२ मनुष्य थे। राज्यसे लगभग ६८००० रुपया मालगुजारी आती है; जिसमेसे १६००० रुपया अङ्गरेजी गवर्नमेन्टको दिया जाता है।

कवीरपंथी—कवरदह कबीरपंथी वंशघरानेका सर्व प्रधान स्थान है। वहाँ वंशघरानेके प्रधान महन्त रहते हैं। उनके मठ पर हिन्दुस्तानके सब विभागोंसे बहुत कबीरपंथी यात्री आते हैं। इसके आधीन वंशघरानेका दूसरा मठ कवरदहसे ८० मीलसे अधिक पूर्व कुछ दक्षिण कुदरमालमें है।

कबीरसाहब भारतवर्षमे बहुत प्रख्यात हुए। उनका नाम सब लोग जानते हैं। उनका जन्म श्रीकाशीजीमें और शरीर त्याग गोरखपुर जिलेके मगहर बस्तीमें हुआ था। उन स्थानोके वृत्तान्तमें उनकी कथा देखिये।

नाभाजीने अपने भक्तमाल ग्रन्थमें, जिसको बने हुए ३०० वर्ष हुए, लिखा है कि कबीर कानि राखी नहीं वर्णाश्रम षटदर्शनी। भक्ति विमुख जो धर्म सो अधर्म करि गायो। योग यज्ञ व्रत दान भजन बिन तुच्छ दिखायो। हिन्दू तुरक प्रमाण रमैनी सबदी शाषी। पक्षपात नहीं वचन सबहीके हितकी भाषी। आरूढ दशा है जगतपर मुख देखी नाहि न भनी। कबीर कानि राखी नही वर्णाश्रम षटदर्शनी॥ ६०॥ अर्थ;—कबीरसाहबने वर्णाश्रम और षटदर्शनोंकी मर्यादा नही रक्खी। उन्होंने भक्तिसे विमुख धर्मको अधर्म कहा; बिना भजनके योग, यज्ञ, व्रत और दानको तुच्छ बतलाया; हिन्दू और मुसलमानके प्रमाणके लिये रमैनी ग्रन्थमे बहुतसी शाखी लिखी, पक्षपात रहित सबके हितका वाक्य कहा और जगत्में आरूढ दशाको प्राप्त होकर मुहदेखी बात नही कही।

कबीरसाहबके पीछे कबीरपन्थियोंके वंशघराने, सुरतगोपाली, ज्ञानी इत्यादि १२॥ पंथ चले। धर्मदासजी कबीरसाहबके प्रधान शिष्य थे, कबीरपन्थियोंके बहुतेरे ग्रन्थोंमें कबीरसाहब और धर्मदासजीके सम्वादकी कथा है कवरदहसे कई एक मञ्जिल दूर गढ़बांधव एक बस्ती है, जिसमे धर्मदासजीका जन्म हुआ था वहाँ भी कबीरपन्थीका मठ है।

कबीरसाहबके अनुरागसागर आदि ग्रन्थोंमें लिखा है कि धर्मदासजीकी प्रार्थना करने पर कबीरसाहबने कहा था कि तुम्हारा ४२ वंश चलेगा। ग्रन्थोंमें ४२ वंशोंके भविष्य नाम लिखे हुए हैं वह ये हैं;—१ वचनचूड़ामणिसाहब, (धर्मदासजीके पुत्र) २ सुदर्शननाम ३ कुलपतिनाम, ४ प्रमोदगुरुबालापीर, ५ कमलनाम, ६ अमोलनाम, ७ सुरतसनेहीनाम, ८ हकनाम, ९ पाकनाम, १० प्रकटनाम, ११ धीरजनाम; १२ उग्रनाम, १३ दयानाम, १४ गिरिधरनाम, १५ प्रकाशनाम, १६ उदितनाम, १७ मुकुन्दनाम १८ अर्द्धनाम, १९ उदय-

नाम, २० ज्ञानीनाम, ३१ हंसमणिनाम, २२ सुकृतनाम, २३ अग्रमणिनाम, २४ रहस्यनाम, २५ गङ्गमणिनाम, २६ पारसनाम, २७ जाग्रतनाम, २८ गङ्गामणिनाम, २९ अकहनाम, ३० कण्ठमणिनाम, ३१ सन्तोषनाम, ३२ चातकनाम, ३३ धनीनाम. ३४ नेहनाम, ३५ आदिनाम, ५६ महानाम, ३७ निजनाम, ३८ साहबनाम ३९ उद्धवनाम, ४० केतनाम, ४१ द्गमणिनाम और ४२ विज्ञानीनाम।

इनमें ११ वंश होगये। दशवें वंशके प्रकटनामसाहबके रहते हुए उनके पुत्र ११ वाँ वंश धीरजनामसाहबका देहान्त होगया था। प्रकटनामसाहबकी मृत्यु होनेपर उनके भतीजे और धीरजनामसाहबके पुत्र मुकुन्दीजीसे कबरदहकी गद्दी पर १२ वाँ वंश उग्रनाम बननेके लिये अदालत हो रही है। प्रकटनामसाहबका भतीजा कहता है कि मुकुन्दीजी धीरजनाम साहबकी विवाहिता स्त्रीका पुत्र नहीं है, यह क्यो गद्दीका अधिकारी होगा। कुदरमालका महन्त विश्वनाथदास मुकुन्दीजीके पक्षपर और कबरदह वाले लोग भतीजेकी ओर हैं। भतीजेकी जीत हुई है।

मध्यदेशमें खास करके बिलासपुर, रायपुर, और छिंदवाडा जिलेमे कबीरपंथी बहुत हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मध्यदेशमे ३४७९९४ कबीरपंथी थे। वंश घरानेके कबीरपंथी साधुओंके लिये बिवाह करनेका निषेध नही है। मध्यदेशके प्रायः सब कबीरपंथी विवाह करते हैं। किन्तु वंश घरानेके अनेक साधु आदरके लिये अपना विवाह नहीं करते।

रायपुर।

बिलासपुरसे ६८ मील (आसनसोल जंक्शनसे ४३९ मील) पश्चिम-दक्षिण रायपुरका रेलवे स्टेशन है। मध्यदेशके छत्तीसगढ़ विभागमें (२१ अंश १५ कला उत्तर अक्षांश और ८१ अंश ४१ कला पूर्व देशान्तरमें) रेलवे स्टेशनसे एक मील दूर छत्तीसगढ़ विभाग और रायपुर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसवा रायपुर हैं। एक सडक नागपुरसे रायपुर सम्भलपुर और मेदनीपुर होकर कलकत्तेको गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके साथ रायपुर कसवेमें २३७५९ मनुष्य थे, अर्थात् १९०१३ हिन्दू, ३६२३ मुसलमान, ५२८ एनिमिस्टिक, ३०० जैन, २७२ कृस्तान, २१ यहूदी और २ पारसी। मनुष्य संख्याके अनुसार यह मध्यदेशमें ६ वाँ शहर है।

रेलवे स्टेशनसे १ मील दूर कसवेके पास ऋषीराम मारवाड़ीकी पुरानी धर्मशाला है जिसका भाग उजड़ गया है। धर्मशालेसे दक्षिण गोल नामक चौकमें छोटी छोटी दुकानोंके ४ चौखूंटे वाजार हैं। गोल चौकसे दक्षिण २ मील लम्बी १ पक्की सड़क है जिसके बगलोंमे बहुतेरे बड़े मकान और कपड़े वर्तन इत्यादिकी दूकाने वनी है। कसवेमें १७ वीं सदीका बना हुआ पत्थरका कंकाली तालाव है जिसको महन्त कृपालगिरने बनवाया था। उसमें अव लोग कपड़े धोते हैं। रायपुरमें जल कल सर्वत्र लगी हैं और प्रधान सडको पर रात्रिमे लालटेने जलती हैं।

कसवेके चारों ओर अनेक तालाव और बहुतेरे आम इत्यादि वृक्षोंके बाग है और उसके पास एक पुराना जर्जर किला देख पडता है; जिसको सन् १४६० ई०में राजा भुवने-

ञ्वरसिंहने बनवाया था। किलेके बाहरका घेरा लगभग १ मील लम्बा है। किलेके पूर्व उसी समयका बना हुआ बूढ़ा तालाब है जो पूर्वकालमें १ वर्ग मीलमें फैलता था किन्तु हालमें मरम्मतके समय वह छोटा कर दिया गया था। उसके पूर्व बगलमें पबलिक बाग लगाया गया है। किलेके दक्षिण ¾ वर्गमीलमें फैला हुआ महाराज तालाब है। तालावके बाँधके निकट श्रीरामचन्द्रका मन्दिर खड़ा है। जिसको सन् १७७५ में रायपुरके राजा भीमाजी भोंसलाने बनवाया। कसबेसे ¾ मील उत्तर लगभग २०० वर्षका पुराना अम्वा तालाव है। जिसको एक तेली सौदागरने बनवाया था। लगभग सन् १८५०में रायपुरके शोभाराम महाजनके खर्चसे वह सुधारा गया और उसके तीन बगलोंपर पत्थरकी सीढ़ियाँ बनाई गई। तालावका पानी उत्तम है, इसलिये कसबेके बहुत लोग उसको लेजाते हैं। शोभारामके पिता दीनानाथने लगभग सन् १८३५ ई० में तेली बाँध बनवाया था, जिसके एक बगलमें पत्थरका काम है। यह छोटा है, किन्तु इसमें पानी बहुत रहता है। कसबेसे १ मील पश्चिम राजा बरियारसिंहके समयका बना हुआ लगभग २०० वर्षका पुराना राजा तालाव है। तालावके एक बगलमें पत्थरकी सीढ़ियाँ बनी हैं। रायपुरके पास लगभग ६० वर्षका बना हुआ कोको तालावहै, जिसके तीन बगलोंमें पानी तक सीढ़ियाँ और ऊपर पत्थरकी दिवारे हैं। उस तालावमें गणेश चौथके उत्सवके अन्तमें गणपतिजीकी मूर्तियोंको लोग विसर्जन कर देते हैं।

इनके अतिरिक्त रायपुरमे कमिश्नरकी कचहरी, दीवानी और फोजदारी कचहरियाँ, अस्पताल, एक गिर्जा, सेंट्रल जेल इत्यादि इमारतें हैं। देशी पैदलकी एक रेजीमेंट रहती है। गल्ले, कपास, लाह और दूसरी पैदावारकी सौदागरी बढ़तीपर है। वर्त्तमान कसबेके दक्षिण और पश्चिम छोटी नदीके किनारे महादेवघाट तक रायपुरका पुराना कसबा था।

रायपुर जिला—छत्तीसगढ़ विभागके दक्षिणी विभागमें रायपुर जिला है। इसके पूर्व सम्भलपुर जिलेके छोटे छोटे देशी राज्य; पश्चिम चन्दा और बालाघाट जिला; उत्तर बिलासपुर जिला और दक्षिण बस्तरका राज्य है। जिलेका क्षेत्रफल ११८८५ वर्गमील है, जिसमेसे लगभग ४००० वर्गमील भूमि जोती जाती है; और लगभग ४५०० वर्गमील जोतने लायक जमीन वीरान पड़ी है। रायपुर जिलेकी प्रधान फसिल धान है; उसके पश्चात् गेहूँ, चना, अरहर, कोदो, तिल, कपास, रेंडी इत्यादि होती हैं। जिलेकी सीमाके भीतर छुइकडा, कॉकर, खैरागढ़ और राजनन्दगाँव ये ४ देशी राज्य हैं। जिलेका सदर स्थान रायपुर कसबा है। जिलेके पूर्वोत्तर और दक्षिणके भागमें जङ्गल है। जिलेमें दो नदियाँ हैं; महानदी और शिवनाथ। शिवनाथ नदीमें बहुतेरी छोटी नदियाँ मिली हैं, जो आगे जाकर महानदीमें मिलगईहै। महानदी रायपुर जिलेके नवगढ़के पाससे निकलकर सम्भलपुर, सोनपुर और कटक होकर लगभग ५३० मील बहनेके पश्चात् कटक शहरसे पचास साठ मील पूर्व फल्सपाइण्टके समीप समुद्रमे मिली है। पहिले यह उत्तर तब पूर्व जाकर सम्भलपुर जिलेमें प्रवेश करनेपर उससे आगे दक्षिण-पूर्व गई है। रायपुर जिलेमें बहुत तालाव है। महानदीके आस पास और जिलेके दक्षिणी भागमें १२ फीटसे २४ फीट तक भूमिके नीचे कूपोंमें पानी है। जिलेकी कोई कोई पहाड़ी १५०० फीटसे अधिक ऊँची है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय रायपुर जिलेके अङ्गरेजी राज्यमें १४०५१७१ मनुष्य थे, अर्थात् ८५६४९२ हिन्दू, १६५७२९ आदि निवासी, १४३१७८ कवीरपंथी,

२२३४४१ सतनामी, १४९९१ मुसलमान, ८२७ कृस्तान और ५१३ जैन। जातियोंके खानेमें २६१७९१ गोंड, २४८४२९ चमार, २०३५०३ तेली, १४१९८३ अहीर, ५८२९३ कुर्मी, ५०९२३ केवट, ३५७२८ गंडा, ३५०९६ मरार, ३११६५९ पङ्का, २९३३३ कन्नार या कनवार, २६७९६ मेहरा, २०३०७ कलार, २०२६१ ब्राह्मण, ९३९३ राजपूत और शेषमें विजवार, मुँइयाँ, खाँद, खरवार, कोस्टी, भीमर, वनजारा, घासिया इत्यादि जातियोंके लोग थे।

सतनामी कवीरपंथी रायपुर जिलेमें वहुत हैं। सतनामी हिन्दू हैं, वे जाति भेद नहीं मानते है। इस पंथमे चमार जातिके लोग अधिक हैं, जो अपनेको रैदासी कहते हैं। रैदास चमार १५ वीं सदीमें रामानन्द स्वामीका १ चेला था।

रायपुर जिलेके केवल दो कसवोंमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ५००० से अधिक मनुष्य थे, अर्थात् रायपुरमें २४९४८ और धमतरीमें ६६४७।

इतिहास—रायपुर जिला रतनपुरके हैहयवंशी राजाओंके राज्यका एक भाग था। उस वंशके २० वें राजा सूरदेवके राज्यके समय लगभग सन् ७५० मे छत्तीसगढ़ दो भागोमें वँट गया। राजा सूरदेव उत्तरीय भागमें और उसका छोटा भाई ब्रह्मदेव रायपुरको राजधानी वनाकर दक्षीणीय भागमें राज्य करने लगा। ब्रह्मदेवके ९ पुश्तके पीछे जव रायपुरके राजवंशमें कोई नहीं था तव लगभग सन् १३६० में रतनपुरके राजा जगन्नाथसिंह देवका पुत्र रायपुरका राजा हुआ, जिसके वंशधर महाराष्ट्रोंके आनेके समय तक स्वतंत्र राज्य करते रहे। सन् १४६० में राजा भुवनेश्वरसिंहने रायपुरके किलेको वनवाया। सन् १८१८ में जव रायपुर अँगरेजी अधिकारमें आया, किलेके उत्तर वगलमें प्रधान फाटक विद्यमान था सन् १७४१ में महाराष्ट्रोंने रतनपुरके राजा रघुनाथसिंहको परास्त किया। उसके कई एक वर्ष पीछे रायपुरका राजा अमरसिंह राजसिंहासनसे उतार दिया गया। उसको निर्वाह के लिये राजिमपाटन और रायपुर परगना मिला, जिनके लिये उसको ७०० पौण्ड खिराज देना पडता था। सन् १८२२ में अमरसिंहके पोते रघुनाथसिंहने विना लगानके वारहगाँव और उसके पड़ोसके ४ गावोंको पाया। महाराष्ट्रोंके आधीन होने पर रायपुरकी घटती होने लगी। सन् १८१८ मे अङ्गरेजी सरकारने नागपुरके आपासाहवको गद्दीसे उतार कर एक लडके तीसरे राघोजीको राजा वनाया और राज्यका प्रवन्ध अपने हाथमें लिया, उस समयसे रायपुरकी उन्नति होने लगी। सन् १८३० में रायपुरका वर्तमान कसवा वसा। पुराना कसवा इसके दक्षिणपश्चिम था। सन् १८५४ में नागपुरका राज्य अङ्गरेजी गवर्नमेन्टके अधिकारमें हो गया। अङ्गरेजी सरकारने सन् १८५८ में वलवे करनेके अपराधमें रायपुरके जमीन्दार नारायणसिंहकी जमीन्दारी छीन ली।

राजनन्दगाँव।

रायपुरसे ४२ मील पश्चिम (आसनसोलसे ४८१ मील पश्चिम थोडा दक्षिण) राजनन्दगाँवका रेलवे स्टेशन है, जिसके १४ मील पहिले अर्थात् पूर्व राजनन्दगाँवके राज्यकी पूर्वी सीमाके पास शिवनाथ नदीपर रेलवेका पुल मिलता है। मध्य देशके रायपुर जिलेमें एक छोटे देशी राज्यकी राजधानी राजनन्दगाँव है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय राजधानीमें ८८५० मनुष्य थे, अर्थात् ७६७९ हिन्दू, ६७७ मुसलमान, ३४४ जैन, ८३ क्रस्तान और ६७ एनिमिष्टिक।

रेलवे स्टेशनसे राजधानी तक सुन्दर सड़क बनी है। राजधानीमें राजाका महल, कचहरियाँ, स्कूल इत्यादि इमारतें बनी हुई है। रेलवे होनेसे राजधानीकी उन्नति हुई है।

राजनन्दगॉवका राज्य––यह रायपुर जिलेमें देशी राज्य है। राज्यका क्षेत्रफल ९०५ वर्गमील है। इसमें चार परगने है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय राज्यके १ कसवे (नन्दगॉव) और ५४० गाँवमे १६४३३९ मनुष्य थे। राज्यकी प्रधान फसिल धान, गेहूँ, चना, कोदो, तेलके बीज और कपास है। राज्यके क्षेत्रफलमें लगभग आधी भूमि जोती जाती है, जोतने लायक बहुत भूमि पडी हुई है। सन् १८८३ ई० में राज्यके ८ स्कूलोंमे २६३ विद्यार्थी पढ़ते थे। राज्यसे २२२००० रुपये मालगुजारी आती है, जिसमेसे ४६००० रुपये अङ्गरेजी सरकारको 'कर' दिया जाता है।

इतिहास––सन् १७२३ ई० में नागपुरके राजाने अपने गुरुको रायनन्दगॉवका राज्य दान कर दिया। सन् १७६५ और सन् १८१८ में राज्य बढ़ाया गया। राजा वैरागी हैं। महन्त घासीदासने जिनकी मृत्यु सन् १८८३ में हुई, रेलवे स्टेशनके पास एक बड़ा डाक बँगला और अपने राज्यमें अनेक तालाबोको बनवाया और कई एककी मरम्मत करवा दी। इस समय महन्त घासीदासके पुत्र (२६ वर्षकी अवस्थाके) महन्त राजा बलरामदास बहादुर राजनन्दगॉवके राजा हैं। राजाको ७ हाथी, १०० घोड़े और ५०० पैदल सेना रखनेका अधिकार है।

खैरागढ़।

राजनन्दगाँवसे उत्तर ओर रायगढ़ कसवेसे ४५ मील पश्चिमोत्तर (२१ अंश, २५ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ८१ अंश, ३ कला, पूर्व देशान्तरमें) अम्बा और पिपरिया नदीके संगमके समीप रायपुर जिलेमें एक छोटे देशी राज्यकी राजधानी खैरागढ़ है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय खैरागढ़में २८८७ मनुष्य थे; अर्थात् २६०० हिन्दू, १७६ मुसलमान, ७८ कवीरपन्थी, २७ आदिनिवासी ४ जैन और २ सतनामी।

खैरागढ़के राजा राजगोंड़ है। कसबेमें राजाका मकान, जेलखाना, कचहरी और स्कूल बना हुआ है।

खैरागढ़ राज्य—यह राज्य छत्तीसगढ़के राज्योंमें सबसे अधिक प्रसिद्ध रायपुर जिलेमें है। इसका क्षेत्रफल ९४० वर्गमील है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय राज्यके ५१२ कसबे और गावोंमें १६६१३८ मनुष्य थे। राज्यमें किसी किसी जगह लोहेके ओर मिलते है। राज्यसे २१४७०० रुपया मालगुजारी आती है। खैरागढ़ और डूँगरगढ़में अस्पताल खुले हैं और जेलखाना तथा कचहरियॉ इत्यादि कई एक सरकारी इमारतें बनी है। खैरागढ़से ३४ मील दक्षिणकी ओर और राजनन्दगॉवके रेलवे स्टेशनसे १९ मील पश्चिमोत्तर डूँगरगढ़का रेलवे स्टेशन है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय डूँगरगढ़ कसबेमें ५६७५ मनुष्य थे।

इतिहास–खैरागढके राजा, जो जातिके राजगोंड है, गढ़मण्डलाके राजवंशकी सतान है। जबलपुर कसबेसे लगभग ५० मील दक्षिण-पूर्व जिलेका सदर स्थान मण्डला एक कसबा है, जिसके ३ बगलोमें नर्मदा नदी बहती है । आरम्भमें खेलवा नामक एक छोटे जङ्गली देशपर खैरागढ़के राजाका अधिकार हुआ; किन्तु सन् १८१८ में मण्डलाके प्रधान और नागपुरके राजाने उसको भूमिका एक बडा भाग दे दिया ।

खैरागढ़के राजा लाल फतहसिंह तख्तसे उतारे जानेके पश्चात् सन् १८७४ में मर गये । राज्य अङ्गरेजी प्रबन्धके आधीन रहा । सन् १८८३ में लाल उमराससिंहको राज्यका अधिकार दिया गया ।

भण्डारा ।

राजनन्दगाँवसे १९ मील पश्चिमोत्तर डूँगरगढ़का रेलवे स्टेशन है, जहाँ एञ्जिन वदलते है और रेलवे संवन्धी बहुतसे यूरोपियन लोग रहते है । कसवेमें सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय ५६७५ मनुष्य थे । कसबेके निकट ४ मीलके घेरेका पहाडी पुराना किला उजाड़ पडा है, जिसके हातेके भीतर १ तालाब है । डूँगरगढसे २३ मील पश्चिम सलेक्साके स्टेशन तक पहाड़ियों और बाँसके भारी जङ्गलोंमें होकर रेलवे लाइन निकली है । १७ मील पर दरक्साके स्टेशनसे पश्चिम पहाडी फोड़ कर सुरङ्गी मार्गसे रेलवे लाइन निकाली गई है, जिसके पासके जङ्गलमें बहुतसे बाघ रहते हैं । रेलवे बननेके समय बाघोंने बहुतेरे लोगोको मार डाला था । सलेक्सासे ९ मील आगे जानेपर आमगाँवके स्टेशनके पास छत्तीसगढ छूटकर नागपुर विभाग मिल जाता है । आमगाँवसे ४३ मील पश्चिम तमसारोड स्टेशनके पास वेणगङ्गापर रेलवेका पुल है ।

तमसारोडसे ११ मील और आमगॉवसे ५६ मील (आसनसोल जंक्शनसे ५८८ मील) पश्चिम और भण्डारारोडका रेलवे स्टेशन है । नागपुर विभागमें रेलवे स्टेशनसे ६ मील दक्षिण वेणगंगा नदीके पश्चिम किनारे पर जिलेका सदर स्थान भण्डारा एक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय भण्डारा कसवेमे १३३४८ मनुष्य थे, अर्थात् ११५०९ हिन्दू, १६५९ मुसलमान, ८९ क्रस्तान, ६३ एनिमिस्टिक और २८ जैन ।

कसवेमें मामूली कपडे और वर्तनकी सौदागरी होती है । कूप और वाहरके तालावोके पानी लोग पीते है । सरकारी मामूली कचहरियाँ, जेलखाना, पुलिसस्टेशन, पवलिक लाइब्रेरी, गवर्नमेण्ट अस्पताल, जिला स्कूल, लडकियोंका स्कूल इत्यादि इमारते है । वहाँ एक महाराष्ट्र राजा रहता है । एक अच्छी सडक नागपुरसे पूर्व भण्डारा, रायपुर, सम्भलपुर और मेदनीपुर होकर कलकत्तेको गई है ।

भण्डारा जिला—इसके पूर्व रायपुर जिला, दक्षिण चन्दा जिला, पश्चिम नागपूर जिला और उत्तर सिउनी और बालाघाट जिला है । जिलेके पश्चिमका भाग वेणगङ्गाके किनारे तक मैदान और उत्तर और पूर्व पहाडिया है, जिनपर खास करके गोंड़ और अन्य जङ्गली जातियोंके लोग रहते हैं । जिलेके क्षेत्रफलमें एक तिहाई भागसे अधिक जङ्गल हैं । गर्मीकी ऋतुओंमे वेणगङ्गाके अतिरिक्त किसी नदीमे पानी नही रहता है । जिलेमें ५००० से अधिक झीले और तालाव हैं जिनमें नवगॉव, सिउनी और शेरगॉव इत्यादि की झीले और वहुतेरे तालाव वहुत वडे हैं । नवगॉव झीलका क्षेत्रफल ५½ वर्गमील और उसका घेरा १७ मीलका

है, जिसमें जगह जगह ९० फीट तक गहरा पानी है। जङ्गलोंमें महुए छोड़कर किसी वृक्षकी लकड़ियां मकानके कामके योग्य नहीं होतीं। लोहाके ओर बहुतेरी जगहोमें मिलते हैं। इमारतके कामका पत्थर पहाड़ियोंसे निकलता है। बाघ इत्यादि जङ्गली जानवर अनेक मनुष्योंको मारते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय भण्डारा जिलेके क्षेत्रफल ३९२२ वर्गमीलमें ६८३७७९ मनुष्य थे; अर्थात् ५८९६९९ हिन्दू, ७८०२१ एनिमिस्टिक अर्थात् आदिनिवासी, १३१०२ मुसलमान, २१६९ कबीरपंथी, ५७६ जैन, १५७ कृस्तान, ३८ सतनामी, १२ सिक्ख, ४ पारसी और १ बौद्ध। आदिनिवासियोंमें ७०६८८ गोड़ और शेषमे कुरकू कोल इत्यादि और हिन्दुओमे ११३५८९ धेद और महारा, ७९०३६ कुर्मी, ५३९९० पोनवार, ४२७९६ गोरी, ३६९५२ तेली, २९३४७ धीमर, २५१९५ कलार, २०२५८ गोंड, ७९९४ राजपूत, ६४३५ ब्राह्मण और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे। भण्डारा जिलेके भण्डारा कसवेमें ११९५० पौनीमे ९७७३, तुमसरमें ७३८८ और मोहरीमें ५१४२ मनुष्य थे।

इतिहास—१७ वीं शदीमें भण्डारा जिला देवगढ़के गोंड़ राजाके अधिकारमें था। उस समय बहुतसे पोनवार, लोधी, राजपूत, कोरी और कुनवी आकर उस जिलेमें खास करके वेणगङ्गाके निकटवर्ती गांवोंमें बसे। सन् १७३८ में पहला राघोजी भोंसलाने उस देशको जीता। उसके पश्चात् बहुतसे अग्रवाल, मारवाड़ी, महाराष्ट्र, कुनवी और लिंगायत वहाँ आ बसे। नागपुरके तीसरे राघोजी भोंसलेके मरने पर सन् १८५४ में भण्डारा जिला अङ्गरेजी अधिकारमे हो गया।

कामटी।

भण्डारारोड़के स्टेशनसे ३० मील (आसनसोलसे ६१८ मील) पश्चिम और नागपुर शहरसे ९ मील पूर्वोत्तर कामटीका रेलवे स्टेशन है। मध्यदेशके नागपुर जिलेमें कंधान नदीके दहिने किनारेपर कामटी एक अच्छा कसवा और फौजी छावनीका मुकाम है। कामटीसे थोड़ीही दूरपर पेंध और कोल्हार नदी कंधानमें मिली हैं। कंधान नदीपर छावनीके पूर्व पत्थरका सुन्दर पुल बना है, जिसके बनानेमें लगभग ९००००० रुपया खर्च पड़ा था। उसके पास १०००००० रुपयेके खर्चसे बना हुआ लोहेका रेलवे पुल है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कामटी कसबे और फौजी छावनीमें ४३१५९ मनुष्य थे; अर्थात् २२६६० पुरुष और २०४९९ स्त्रियाँ। इनमे २८५२१ हिन्दू, ११५४६ मुसलमान, २४१२ कृस्तान, ३२० एनिमिस्टिक, २९१ जैन, ३९ पारसी; १६ यहूदी, ११ सिक्ख और ३ बौद्ध थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ९३ वाँ और मध्य प्रदेशमें ४ था शहर है।

छावनी और कसवेके बीचमें छावनीके दक्षिण-पूर्व परेडकी फैली हुई भूमि है। कसबेमे चौड़ी सडके बनी हैं। कई धर्मशाले, स्कूल, एक अस्पताल, हालका बना हुआ एक उत्तम तालाब, एक अच्छी सराय और बड़ा बाजार है। मवेसी, लकड़ी, गल्ले, नमक, कपड़े और अंगरेजी वस्तुओंको बडी तिजारत होती है।

सन् १८२१ ई० में वहाँ फौजी छावनी नियत हुई। उसी समय वहाँ कामटी कसबा बस गया। कामटीमें कंधान नदीके दहिने फौजी छावनी है, किन्तु रिसाले बायें रहती है। नदीके दहिने लगभग ४ मील लम्बी छावनीकी चौडी सडक है। प्रथम कामटीमें बहुत फौज रहती थी, किन्तु अब यूरोपियन आरटिलरीकी एक बैटरी और कुछ देशी सेना है। इनके अतिरिक्त कामटीमें ७० मन्दिर, ५ मसजिदे, २ गिरजे और लगभग ४६० कूप हैं।

रामटेक।

कामटीसे १८ मील और नागपुर शहरसे २४ मील पूर्वोत्तर (तीरसाके रेलवे स्टेशनसे ११ मील उत्तर) २१ अंश, २४ कला, उत्तर अक्षाँश और ७९ अंश, २० कला पूर्व देशांतरमें नागपुर जिलेके अन्तर्गत एक तहसीलीका सदरस्थान रामटेक छोटा कसबा है। एक बड़ी सड़क नागपुर शहरसे कामटी और रामटेकसे ४ मील पश्चिम होकर जबलपुरको गई है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय रामटेकमें ७८१४ मनुष्य थे, अर्थात् ६९७८ हिन्दू, ६१४ मुसलमान, १२१ पहाडी जातियाँ और १०१ जैन।

रामटेक पवित्र स्थान है। और पानके लिये भारतवर्षमें प्रसिद्ध है। उसमें लगभग २०० घर तंबोली बसते हैं उसके आसपास पान बहुत होता है। वहाँसे बहुत पान छिंदवाड़ा, सिउनी, जबलपुर और बम्बईको भेजा जाता है। कसबेमे छोटे बडे लगभग २० देवमन्दिर बने हुए हैं। कसबेके पश्चिम भागमे सरकारी आफिसें हैं। मैदानसे ५०० फीट ऊँची पहाड़ी पर एक सुन्दर बँगला बना है।

रामटेकके पास एक पहाड़ी है, जिसके उत्तर बगल पर एक बहुत पुराना मन्दिर है, जिसके पास अनेक मन्दिर बने हैं। पहाड़ीके ऊपर उसके पश्चिम किनारेके पास एक हातेके भीतर श्रीरामचन्द्रजीका प्राचीन विशाल मन्दिर है। उसके पासके छोटे मन्दिरों और दीवारोंके ऊपर उसका शिखर दूरसे देख पडता है रामटेकके पाससे पहाडीके शिखर तक बहुत सीढ़ियाँ बनी हुई हैं।

रामटेकसे २ मील दूर अम्बाडा बस्ती तक एक अच्छी सड़क गई है, जहाँ अम्बाड़ा नामक पुराना तालाब है। तालाबके तीन बगलोंमें पानी तक पत्थरकी सीढ़ियाँ बनी हैं और बगलोंमें महाराष्ट्रोंके बनवाये हुए पन्द्रह बीस देव मन्दिर बने हुए हैं। यहाँ कार्त्तिककी पूर्णिमाको एक बड़ा मेला होता है, जो ५ दिन तक रहता है। मेलेमें कपडे, बर्तन, मनिहारीकी चीजें इत्यादि वस्तु विकती हैं और लगभग १००००० आदमी आते हैं।

तालाबके किनारेसे पहाड़ीके ऊपरके मन्दिरोंतक ½ मील लम्बी पत्थरकी सीढ़ियाँ गई हैं। यात्रीगण तालाबमें स्नान करके सीढ़ियो द्वारा ऊपरके मन्दिरोमें जाकर पूजा करते हैं। पहाडीके शिखरके पास एक बावलीके समीप एक धर्मशाला है। पहाड़ीपर पहला राघोजी भोंसलाका बनवाया हुआ गढ़ है। उसके पहले चौगानमें दहिने नारायणका और बायें एक दूसरे देवताका मन्दिर है। दूसरे चौगानमें महाराष्ट्रोंका हथियारखाना था जिसकी दीवारकी निशानी विद्यमान है। तीसरे चौगानमें भैवर दरवाजा होकर जाना होता है। उस

हिस्सेकी दीवार और बुर्ज अभी तक अच्छे बने हुए है। गोकुल दरवाजा होकर गणपति, हनूमान और रामचन्द्रके मन्दिरको जाना होता है। इसी चौगानसे पत्थरकी दूसरी सीढ़ियां नीचे रामटेक कसबेको गई हैं।

दूसरा अध्याय।

(मध्यदेशमें) नागपुर, बरधा, चाँदा, (बरारमें) अमरावती, एलिचपुर, अकोला, वासिम, सेगाँव, और खामगाँव।

नागपुर।

कामटीसे ९ मील पश्चिम और आसनसोल जंक्शनसे ६२७ मील पश्चिम थोडा दक्षिण नागपुरका रेलवे स्टेशन है। मध्य देशमे (२१ अंश, ९ कला, ३० विकला, उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, ७ कला पूर्व देशान्तर मे) नाग नामक छोटी नदीके किनारे पर मध्यदेश और नागपुर जिलेका सदर स्थान और मध्यदेशका प्रधान शहर नागपुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके साथ नागपुर शहरमे ११७०१४ मनुष्य थे; अर्थात् ६०६४० पुरुष और ५६३७४ स्त्रियाँ। इनमें १४५४९ हिन्दू, १६३८७ मुसलमान, ३०८७ कृस्तान, ११६३ एनिमिष्टिक, १०४१ जैन, ३३७ पारसी, २३१ बौद्ध, १३८ सिक्ख और ८१ यहूदी थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें २३ वाँ और मध्यदेशमे पहिला शहर है।

म्युनिसिपेल्टीके भीतर खास शहरके अलावे सीतावर्डी और ताकली शहरतली है। शहरके भीतर सीतावर्डी पहाड़ीके ऊपर सीतावर्डी नामक किला है, जिसको देखनेके लिये पास लेना होता है। पहाड़ीके नीचे उसके उत्तर और पश्चिम नागपुरका सिविल स्टेशन है। स्टेशनसे उत्तर फौजी लाइन और बाजार है। उनसे उत्तर ताकली शहरतली है, जिसकी पहाड़ीपर उत्तम नई रेजीडेंसी बनी है; किन्तु चीफकमिश्नर खास करके सतपुड़ा पहाड़ीपर पचमारीमें रहते हैं। सीतावर्डी पहाड़ीके दक्षिणके बगलके नीचे सीतावर्डी शहरतलीमें पुरानी रेजीडेंसी है, जहाँ चीफ कमिश्नर रहते थे।

पहाड़ीके पूर्व नागपुरके रेलवे स्टेशनके पास पुतलीघर और राजाराम और रामचन्द्रकी नई धर्मशाला हैं; उसी धर्मशालेमें मेरे (पिताके) रामेश्वरके पण्डेके दो गुमास्ते मुझको मिल गये। उनमेंसे एक हमारे साथ चला और रामेश्वर तक हमारे साथ साथ गया। उस धर्मशालेके अलावे नागपुरमें कई धर्मशाले और ३ सरकारी सराय हैं। रेलवे स्टेशनसे पूर्व महाराष्ट्र राजाका बनवाया हुआ बहुत बड़ा जामा तालाब और तालाबसे पूर्व खास शहर है। ३ बड़ी सड़कें यूरोपियन स्टेशनसे शहरको गई है, एक उत्तर, दूसरी जामा तालाबके दक्षिण किनारे होकर और तीसरी, जो सबसे उत्तर है, स्टेशनके उत्तर रेलवे होकर। किलेसे थोड़ी दूरपर एक छोटा अजायब खाना है।

रेलवे स्टेशनसे २ मील दूर नागपुरकी दीवानी कचहरियाँ है। शहरके पडोसमें महाराष्ट्र राजाओंका बनवाया हुआ अम्बाझीरी और तेलिंगखेरी उत्तम तालाब हैं। अम्बाझीरीसे जल कलद्वारा शहर और सिविल स्टेशनमें पानी आता है। इनके अलावे नागपुरके आस पास कई छोटे तालाब हैं। शहर और शहरतलियोंमें बहुत बाग अर्थात् उद्यान हैं; जिनमेंसे सीताबर्डीका महाराजबाग, शहरके भीतरका तुलसीबाग, शहरतलियोंमे सकरदरा, पाल्डी, सोनगाँव और तेलिङ्गखेरीबाग प्रधान हैं। इनमेंसे महाराजबाग सब बागोंसे उत्तम है। इसमें स्थान स्थानपर फूल और पत्तोकी बेलके गमले सजे हैं। एक स्थानपर छोटे हौजमें जीवित हाथीके समान पत्थरका बडा हाथी खड़ा है। उसके सूंडसे कलका पानी सर्वदा गिरा करता है, जो हौजसे नाला द्वारा निकल कर फूलकी क्यारियोको सींचता है। इस बागमें एक छोटा चिडियाखाना (जन्तुशाला) है, जिसमें अनेक बाघ, भाल्लू, बन्दर, हरिन, भेडिया, नीलगाय, और भाँति भाँतिके चिड़िये पाले जाते हैं।

नागपुरमें महाराष्ट्र राजाओंके समयके बहुतेरे मन्दिर है, जिनमेंसे कई एक मन्दिरोमें नकासीका उत्तम काम बना है। शहरके दक्षिण शुक्रवारी महल्लेमे भोसले राजाओंकी अनेक छत्तरियाँ अर्थात् समाधिमन्दिर बने हुए हैं। इनके अतिरिक्त नागपुरमे एक सेंट्रल जेलखाना, जिसमें लगभग १ हजार कैदी रह सकते है, दो गिरजे, कई एक स्कूल, मोरिस कालिज, पागलखाना, कोढ़ीखाना, गरीबखाना, एक कृपीस्कूल, जिसमें लडकोंको खेतीकी विद्या सिखलाई जाती है और दो कल कारखाने हैं। काले अर्थात् तेलिया पत्थरका बना हुआ नागपुरके भोंसलेका उत्तम महल था, जो सन् १८६४ में जलादिया गया, अब केवल उसका नक्कारखाना है। शहरमें भोसले वंशके एक छोटे राजा हैं।

गुरुगञ्ज स्केयर और गचीपगारमें सप्ताहिक बड़ा बाजार लगता है। शहरमे शुक्र आदि दिनोंके नामसे कई महल्लेका नाम पड़ा है। नागपुर नारंगियोंके लिये प्रसिद्ध है। वहाँसे नारंगी हिन्दुस्तानके दूर दूरके प्रदेशोके अलावे विलायतमें भी भेजी जाती है। नागपुरकी बडी सौदागरी उन्नतिपर है। गेहूँ, गल्ला, नमक, कपड़ा, मसाला, अङ्गरेजी सामान इत्यादि चीजें दूसरे देशोसे नागपुरमें आती हैं और बहुतसे कपड़े बनकर दूसरे देशोंमें जाते हैं। सवारीके लिये टमटम और एक्के बहुत मिलते हैं। वहाँके बहुतेरे लोग सवारीके लिये हलकी सुन्दर बैलगाड़ी रखते हैं, जिसको लोग रिंगी कहते है। वह एक दूसरे ढंगकी लम्बी होती है; उसके बैल तेजीसे दौडते हैं।

नागपुरसे एक सड़क उत्तर कुछ पूर्व जबलपुरको और दूसरी सड़क पूर्व भण्डारा, रायपुर, सम्भलपुर, क्योंझोर और मेदनीपुर होकर कलकत्तेको गई है।

नागपुर जिला—इसके पूर्व भण्डारा जिला, उत्तर चिन्दवाड़ा और सिउनी जिला; दक्षिण-पश्चिम वरदा जिला और दक्षिण-पूर्व चाँदा जिला है। नागपुर विभाग और जिलेका सदर स्थान नागपुर कसबा है। इस जिलेकी उत्तरी सीमापर लगातार पहाड़ियोंका जंजीरा है और दक्षिण-पश्चिमकी सीमाके भीतर पहाडियोंका बडा भाग है। जिलेकी खरकी पहाड़ी समुद्रके जलसे लगभग २००० फीट ऊँची है। पहाडियोंका तीसरा सिलसिला देशके बीचसे होकर उत्तरसे दक्षिण चला गया है। ये तीनो सिलसिले सतपुडाके हिस्से है। जिलेके पूर्वोत्तर भागमें रामटेक नामक पवित्र पहाडीपर एक पुराना किला और कई एक देवमन्दिर

स्थित है। नागपुर शहरके पास एक छोटी पहाड़ीपर सीतावर्डी किला है। सन् १८८३–१८८४ में जिलेके ३७८६ वर्गमील क्षेत्रफलमें १९३२ वर्गमील भूमि जोती जाती थी; ७८९ वर्गमील जोतनेके लायक और १०६५ वर्गमील नहीं जोतने योग्य थी। जिलेकी प्रधान फसिल गेहूं, कपास, ऊख और तम्बाकू है। जिलेमें बोखार बहुधा हुआ करता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय नागपुर जिलेके ३७८६ वर्गमील क्षेत्रफलमें ६९७३५६ मनुष्य थे, अर्थात् ५९८४४१ हिन्दू, ४३७५० आदि निवासी, जो प्रायः सब गोंड़ हैं; ३९७६५ मुसलमान, ७३७१ कबीरपंथी, ४८५० क्रस्तान, ३५६४ जैन, ४१६ सतनामी, १७८ पारसी, ६ ब्राह्म, ५ बौद्ध, ४ यहूदी और ६ अन्य। हिन्दुओंमें १४५८१५ कुर्मी, ८२०६६ महारा, ५४४५१ तेली, ३७७३३ कोस्टी, २७६१० माली, ३१०२८ ब्राह्मण, १८८८४ मेहरा, ११२१२ राजपूत और शेषमें गारी, बरई इत्यादि दूसरी जातियोंके लोग थे। नागपुर जिलेके कसबे नागपुरमें ९८२९९ (सन् १८९१ में ११७०१४), कामटीमें ५०९८७ (सन् १८९१ में ४३१५९), अमरेरमें १४२४७ (सन् १८९१ में १५१८०), खापामें ८४६५, रामटेकमें ७८१४ और नरखेरामें ७०६१ मनुष्य थे।

इतिहास—सोलहवीं सदीमें नागपुर जिला देवगढ़के गोंड़ राज्यका एक भाग बना। देवगढ़के राजाके छोटे भाई जतवाने पहाड़ीपर एक दृढ़ किला बनवाया। उसके और उसकी सन्तानके बनवाये हुए बहुतेरे टूटे फूटे किले नागपुर जिलेमें जगह जगह देख पड़ते हैं। लगभग सन् १७०० ई० में उसके ३ या ४ पुश्त पीछेके बख्त बुलन्दने देवगढ़के राज्यको प्रतापी बनाया और राज्यको बहुत बढ़ाया। उसके बादके राजा चाँदसुलतानने नागपुर शहरको दीवारसे घेरवाया और उसको अपनी राजधानी बनाया। सन् १७३९ में चाँदसुलतानकी मृत्यु होनेपर बख्तबुलन्दके पुत्र अलीशाह बरजोरीसे तख्तपर बैठ गया। तब चाँदसुलतानकी विधवाने अपने पुत्र बुरहानशाह और अकबरशाहको राज्य दिलानेके लिये बरारसे राघोजी भोंसलेको बुलाया। अलीशाह मारा गया। चाँदसुलतानके पुत्रोंको राज्य मिला। राघोजीके चले जानेपर चाँदसुलतानके दोनों पुत्रोंमें राज्यके लिये लड़ाई हुई। बुरहानशाहने सन् १७४३ में अपनी सहायताके लिये राघोजी भोंसलाको बुलाया। अकबरशाह राज्यसे निकाला गया। राघोजीने बुरहानशाहका पेंशन मुकरर करके उसको राजाकी पदवी देकर राज्यको अपने अधिकारमें कर लिया और नागपुर शहरको अपनी राजधानी बनाया।

सन् १७४४ में नागपुरके राघोजी भोंसलाने पूनाके पेशवासे बरारसे कटकतक 'कर' लेनेकी सनद ली और सन् १७५० में बरार, गोंडवाना और बङ्गालके लिये नई सनदें हासिलकीं। उसने सन् १७५१ में बङ्गालसे चौथ तहसीली और सूबे उड़ीसेका दक्षिणी भाग अपने अधिकारमें कर लिया। इस प्रकार उसने बाहरके देशोंको जीतकर एक बड़े देशके ऊपर अपनी हुकूमत फैलाई। सन् १७५५ में पहला राघोजीकी मृत्यु होनेपर उसका बड़ा पुत्र जानोंजी नागपुरका राजा हुआ और छोटे पुत्र माधोजीको छत्तीसगढ़ और चन्दा मिला। सन् १७६५ में निजाम और पेशवा दोनोंने मिलकर जानोंजीको परास्त करके नागपुरको जलाया; किन्तु उसके ४ वर्ष पीछे पेशवाने जानोंजी भोंसलेसे एक सन्धि की, जिसके अनुसार जानोंजीकी पूरी स्वाधीनता होगई। उसके ३ वर्ष पश्चात् जानोंजी मर गया। वह चन्दाके माधोजीके पुत्र अर्थात् अपने भतीजे राघोजीको गोद ले चुका था। माधोजी अपने पुत्रको गद्दीपर

बैठा कर राज्य कार्य चलाने लगा । सन् १७८८ म माधोजीके मरने पर उसका पुत्र दूसरा राघोजी राज्यका काम करने लगा । उसके राज्यके समय नागपुरका बल अधिक बढ़ गया और अङ्गरेजोंसे अधिक सरोकार हुआ । जब सन् १७५६ और १७६५ के बीचमें बङ्गालमे अङ्गरेजोका अधिकार होगया तब महाराष्ट्रोंकी चढ़ाई बन्द हुई । सन् १७९८ के थोड़े दिन पीछे राघोजीने सिंधियाके साथ मिलकर अङ्गरेजोसे मुकाबिला किया । अङ्गरेजोने जब असाई और अरगांवकी लड़ाइयोंमे महाराष्ट्रोंको दबाया तब देवगाँवमें सन्धि हुई, जिसके अनुसार राघोजी भोंसलाने अपने राज्यका तीसरा भाग अङ्गरेजोंको दे दिया और नागपुरमें एक रेजीडेंटको रखना कबूल किया । सन् १८०३ में अङ्गरेजोंने महाराष्ट्रोंको सूबे उडीसेसे निकाल दिया । राघोजी अपने राज्यसे अधिक मालगुजारी लेने लगे और पिण्डारी लूट पाट करने लगे, इससे नागपुरका वर्तमान जिला पूरे तौरसे बरबाद होगया । सन् १८१६ में दूसरा राघोजी मर गया । उसका पुत्र परशूजी अन्धा लँगडा और निर्बल था, इसलिये राघोजीका भतीजा आपासाहब राजप्रतिनिधि बना । चन्द महीनोंके पश्चात् आपासाहबने परशूजीको विष देकर मरवा डाला और आप नागपुरके राजसिंहासन पर बैठा । उसने अङ्गरेजोंके दुश्मन पेशवासे दोस्ती की, इसलिये अङ्गरेजाने कई बार नागपुर पर आक्रमण किया । प्रथम तो आपासाहबने अङ्गरेजी सेनाको भगादिया, किन्तु सन् १८१७ के अन्तमे वह नागपुरके पास परास्त होकर भाग गया । अङ्गरेजोने दूसरे राघोजीके पोतेको, जो निरा बालक था, राघोजीकी पदवी देकर गद्दीपर बैठाया । अङ्गरेजी रेजीडेण्ट राज्यका प्रबंध करने लगा । सन् १८३० में बडे होनेपर तीसरे राघोजीको राज्यका अधिकार मिला । सन् १८५३ में तीसरा राघोजी मर गया । तब अङ्गरेजी गवर्नमेण्टने उसके गोद लिये हुए बालकको राजा स्वीकार न करके नागपुरके राज्यको अपने राज्यमें मिला लिया ।

सन् १८५७ के बलवेके समय देशी सवारोंने शहरके मुसलमानोंसे राय करके बगावत करनेको ता० १३ जून नियत की, किन्तु पैदल सेना अङ्गरेजोंकी ओर थी, इसलिये बगावत नहीं होसका । पीछे बागी होनेवाली फौजके हथियार छीन लिये गये और वे लोग निकाल बाहर किये गये । ता० २४ जूनको इर्रेगुलर रिसालेके हथियार लेलिये गये, किन्तु नवंबरमें उनको फिर हथियार दिये गये और वे लोग सम्भलपुरकी ओर सरकारी कामके लिये भेजे गये ।

सन् १८६१ मे सागर और नर्मदा देशमे नागपुर देश मिला दिया गया । तीनो मिलकर वर्तमान मध्य देश, जिसका सदर स्थान नागपुर कसबा है, नियत हुआ ।

मध्यदेश—मध्य देश एक चीफ कमिश्नरके आधीन है, जो नागपुर शहरमे रहते हैं । इसके पूर्व गवर्नमेण्ट बङ्गाल, दक्षिण मद्रास हाता और हैदराबादका राज्य, पश्चिम बरार, पश्चिमोत्तर मालवा और उत्तर मध्यहिंद और बुन्देलखण्ड है । इसकी सबसे अधिक लम्बाई पूर्वसे पश्चिम तक लगभग ६०० मील और उत्तरसे दक्षिण तक करीब ५०० मील है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मध्यदेशके अङ्गरेजी राज्यका क्षेत्रफल ८६५०१ वर्गमील और उसकी मनुष्य-संख्या १०७८४२९४ थी; अर्थात् ५३९७३०४ पुरुष और ५३८६९९० स्त्रियाँ । इनमें ८८३१४६७ हिन्दू, १५९२१४९ एनिमिष्टिक-अर्थात् जङ्गली

जातियाँ इत्यादि,२९७६०४ मुसलमान, ४८६४४ जैन, १२९७० क्रुस्तान, ७८१ पारसी, ३२२ बौद्ध, १७६ यहूदी, १७२ सिक्ख और ९ अन्य थे। इनमें सैंकड़े पीछे ६०$\frac{1}{4}$ हिन्दी भाषा वाले, १९$\frac{3}{4}$ महाराष्ट्र भाषा वाले, ९$\frac{1}{4}$ गोंड़ भाषा वाले, ६$\frac{1}{4}$ उड़िया भाषावाले, १$\frac{1}{2}$ उर्दू भाषावाले और ३ अन्य भाषा बोलनेवाले मनुष्य थे। मध्यदेशके लोगोंकी बोली और चाल तथा पहराव बँगला, उड़िया, महाराष्ट्री और हिन्दीकी खिचड़ी है।

मध्यदेशमें ४ भाग और १९ जिले इस भाँति हैं,—(१) नागपुर किस्मतमें नागपुर, भण्डारा, बरधा, चाँदा, बालाघाट और अपरगोदावरी, (२) नर्मदा बिभागमें नरसिंहपुर, हुशंगाबाद, निमार, बेतूल और चिंदवाड़ा, (३) जबलपुर विभागमें जबलपुर, सागर, दमोह, मण्डला और सिउनी और (४) छत्तीसगढ़ विभागमें रायपुर, विलासपुर और सम्भलपुर जिला।

मध्यदेशके अङ्गरेजी राज्यके शहर और कसबे, जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १०००० से अधिक मनुष्य थे;—

नं०	शहर या कसबा	जिला	जन-संख्या	नं०	शहर या कसबा	जिला	जन-संख्या
१	नागपुर	नागपुर	११७०१४	११	हरदा	हुशंगाबाद	१३५५६
२	जबलपुर	जबलपुर	८४४८१	१२	हुशंगाबाद	हुशंगाबाद	१३४९५
३	सागर	सागर	४४६७४	१३	भण्डारा	भण्डारा	१३३४८
४	कामटी	नागपुर	४३१५९	१४	सिउनी	सिउनी	११९७६
५	बुरहानपुर	निमार	३२२५२	१५	दमोह	दमोह	११७५३
६	रायपुर	रायपुर	२३७५९	१६	बिलासपुर	बिलासपुर	१११२२
७	चाँदा	चाँदा	१६१७५	१७	हिंगनघाट	बरधा	१०९६४
८	खण्डवा	निमार	१५५८९	१८	नरसिंहपुर	नरसिंहपुर	१०२२०
९	अमरेर	नागपुर	१५१८०	१९	बरोरा	चाँदा	१००१८
१०	सम्भलपुर	सम्भलपुर	१४५७१				

मध्यदेशमें १५ देशी राज्य हैं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय देशी राज्योंके २९४३५ वर्गमील क्षेत्रफलमें २१६०५११ मनुष्य थे; अर्थात् १०८९०११ पुरुष और १०७१५०० स्त्रियाँ। इनमें १६५८१५३ हिन्दू, ४८९५७२ एनिमिष्टिक अर्थात् जङ्गली जातियोंके लोग, ११८७५ मुसलमान, ५६८ जैन, ३३८ क्रुस्तान, ३ बौद्ध १ सिक्ख और १ अन्य था। इनमें सैकड़े पीछे ४२$\frac{1}{2}$ उड़िया भाषावाले, ३६ हिन्दी भाषावाले, ८$\frac{1}{2}$ गोंड़ भाषावाले, ६$\frac{1}{2}$ हलाबी भाषावाले ३ खोंद भाषावाले और ३$\frac{1}{2}$ अन्य भाषावाले मनुष्य थे।

देशी राज्यके कसबे; जिनमे सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ५००० से अधिक मनुष्य थे;—

नं०	कसबा	राज्य	जन-संख्या	नं०	कसबा	राज्य	जन-संख्या
१	राजनन्दगाँव	राजनन्दगाँव	८८५०	४	कवरदह	कवरदह	५३४९
२	सोनपुर	सोनपुर	८६९८	५	जगदलपुर	बस्तर	५०४४
३	डूगरगढ़	खैरागढ़	५६७५	६	वेंका	०	५०४०

मध्यदेशके देशी राज्योंका त्रिज,–

नं०	देशी राज्य	क्षेत्रफल वर्गमील	मनुष्य-संख्या सन् १८८१	मालगुजारी रुपया	राज्यका पता
१	खैरागढ़	९४०	१६६१३८	२१४७००	रायपुर जिलेमें ।
२	राजनन्दगाँव	९०५	१६४३३९	२२२०००	रायपुर जिलेमें ।
३	वस्तर	१३०६२	१९६२४८	१४१३००	रायपुर जिलेके दक्षिण और चाँदा जिलेके उत्तर ।
४	कालाहांडी ...	३७४५	२२४५४८	१०००००	पटना-राज्यके दक्षिण ।
५	पटना	२३९९	२५७९५९	८१०००	कालाहांडी—राज्यके उत्तर और सोनपुर-राज्यके पश्चिम।
६	रायगढ़	१४८६	१२८९४३	६६७००	सुरगुजासे दक्षिण और सम्भलपुर जिलेसे उत्तर ।
७	सोनपुर	९०६	१७८७०१	५१५००	सम्भलपुर जिलेके दक्षिण और पटना-राज्यके पूर्व ।
८	वामडा	१९८८	८१२८६	३७०००	सम्भलपुरके पूर्व ।
९	कवरदह	८८७	८६३६२	६८०००	विलासपुर जिलेमें ।
१०	सारनगढ़ ...	५४०	७१२७४	४१७००	सम्भलपुरके पश्चिम और रायगढ-राज्यके दक्षिण ।
११	कांकर	६३९	६३६१०	२२०००	रायपुर जिलेके पश्चिम और वस्तर-राज्यके उत्तर ।
१२	छुइकड़ा ...	१७४	३२९७९	३३०००	रायपुर जिलेमें सालटेकरी-पहाडीके पास ।
१३	रेहराखोल ...	८३३	१७७५०	३३०००	वामड़ा राज्यके दक्षिण और सम्भलपुर जिलेके पूर्व ।
१४	मकराई	२१५	१६७६४	३३०००	हुशंगाबाद जिलेमें ।
१५	सकटी	११५	२२८१९	२५०००	रायगढके पश्चिम विलासपुर जिलेके पूर्वी सीमाके पास ।
	जोड	२८८३४	१७०९७२०	११६९९००	

खैरागढ़, रायगढ, सारनगढ, मकराई और सकटीके राजा गोंड, वस्तर, कालाहाँडी, पटना, सोनपुर, वामडा, काँकर और रेहराखोलके राजा राजपूत और राजनन्दगाँव तथा छुइकडाके राजा वैरागी हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके अनुसार मध्यदेशके अङ्गरेजी और देशी राज्य दोनोंका क्षेत्रफल ११५९३६ वर्गमील और मनुष्य-सख्या १२९४४८०५ है । मध्यदेशमें

जङ्गल और पहाड़ियाँ बहुत हैं। आबादी कम है। कोयले और लोहेकी खानिया बहुत स्थानोंमें हैं। गेहूँ और कपास बहुत उत्पन्न होते हैं। महानदी, शिवनाथ, नर्मदा, वरधा, वेणगङ्गा, इत्यादि बहुतसी नदियाँ बहती है। सीमेपर कुछ दूर तक गोदावरी नदी बहती है। झील और तालाब बहुत हैं। क्षेत्रफलकी एक तिहाईसे कुछ अधिक भूमि जोती जाती है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय मध्य देशकी जातियोंमें नीचे लिखी हुई जातियोके लोग इस भाँति पढ़े हुए थे, प्रति हजारमे कायस्थोमे ४७५ पुरुष और १६ स्त्रियाँ, बनियोंमें ३८८ पुरुष; विधुरमें ३४२ पुरुष और ४ स्त्रियाँ और ब्राह्मणोमें; ३१७ पुरुष और ७ स्त्रियाँ।

मध्यदेशके निवासियोंमे महाराष्ट्र और गोंड़ अधिक है। लगभग २० लाख कोल हैं। बहुतेरे लोग कबीरपन्थी, सतनामी, कुम्भीपान्थिया, सिंहपन्थी, धामीपन्थी इत्यादि मतोंके अनुगामी है।

मध्यदेशके प्रायः सब पहाड़ी कोमोंका काला चमड़ा, चिपटा नाक और मोटा ओठ होता है, जिससे वे पहचाने जाते है कि एरियन नहीं हैं। वे लोग खास करके भगवा पहनते है और माता तथा हैजेको पूजते हैं और भूत तथा प्रेतोंमें अधिक विश्वास रखते हैं। साधारण प्रकारसे लोग विवाह बन्धनपर बहुत कम खियाल रखते है। अविवाहिता स्त्रीका पुत्र विवाहिता स्त्रीके पुत्रके बराबर पिताके धन संपत्तिका भागी होता है। पहाड़ी लोगोंमें मारिया जातिके लोग बड़े गवाँर है, जो तीर चलानेमें बड़े प्रवीण होते हैं। मारीलोग उनसे भी अधिक गवाँर हैं। वे लोग विना पहचानके आदमीको देखकर अपने पासके झोपड़ोंमें भाग जाते हैं। वे अपने राजाको वर्षमें एक बार मालगुजारीमें गल्ले आदि फसिल देते हैं। राजाके कर्मचारी लोग उनकी झोपड़ियोंके निकट जाकर बाजा बजानेके उपरान्त आप छिप जाते हैं। तब मारीलोग नियत स्थानोंपर नियत फसिल रखकर चले जाते है। कर्मचारी लोग उसे उठा ले जाते है। बहुत पहाड़ीलोग हिन्दूमे मिल गये हैं और हिन्दूमें लिखे जाते हैं। बस्तरके राज्यमे काली दन्तेश्वरी राज्यकी रक्षक समझी जाती है। उसको पहले मनुष्य बलि दिये जाते थे; किन्तु अङ्गरेज महाराजने सन् १८४२ से उस रीतिको रोक दिया। उस राज्यके पूर्वी भागमें गड़वा जातिके पहाड़ीलोग होते हैं, जो खेती और मजदूरीसे अपना निर्वाह करते है। उनकी स्त्रियाँ करिङ्गके वृक्षकी छालसे बने हुए ६ फीट लम्बे और ३ फीट चौड़े कपड़ेको अपनी कमरके चारो तरफ लपेट कर कन्धेके पास लाकर लगभग $1\frac{1}{2}$ फीट लम्बे पटुयेसे छातीपर बाँधती हैं। वे कुश (घास) के बने हुये शिरोभूषण और पीतलके तारके कर्णभूषण अर्थात बड़ा बाला, जो कन्धे तक लटके रहते है, पहनती हैं।

मध्यदेशके बहुतेरे बैल और गाय लाल रङ्गकी होती हैं। हल और गाड़ियोंमें भैंसे भी जोते जाते है। प्रायः सब गाड़ियोंके पहिये बहुत छोटे छोटे होते हैं। रेलवेके बड़े स्टेशनोंपर केले, अमरूद और नारङ्गी मिलती है।

कबीरपंथी—मध्यदेशमें खास करके बिलासपुर, रायपुर और छिन्दवाड़ा जिलेमें कबीरपंथी बहुत हैं, जो सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मध्यदेशमें ३४७९९४ थे। मध्यदेशके कबीरपंथीका प्रधान मठ बिलासपुर जिलेके कवरदहमें और उसके बाद कुदरमाल और गढ़ बान्धवमें है।

सतनामी—लगभग सन् १८३५ ई० में घासीदास नामक एक विना पढ़ा हुआ मनुष्य अपने चेलोंको एक स्थानपर ६ मासमे एक नियत दिनपर इकट्ठे होनेको कहकर जङ्गलमें चला गया। नियमित दिनपर उस स्थानमें बहुत चमार एकत्र हुए। प्रातःकाल सन्नाटे समयमें घासीदास पहाडीसे उतरा। उसने अपने चेलोंसे अपना स्वर्ग जानेका वृत्तान्त कह सुनाया और घोषणा किया कि सम्पूर्ण मनुष्य एक समान हैं। मूर्ति पूजा करनेसे कुछ लाभ नहीं है। हमारे आदेशपर चलनेसे मनुष्योंका उद्धार होगा। हमारे घरानेमे उपदेशक सर्वदा हुआ करेंगे। घासीदासकी मृत्यु होनेपर उसका बडा पुत्र बालकदास उसका उत्तराधिकारी उपदेशक हुआ, किन्तु सन् १८६० ई० मे किसी दुश्मनने उसको मारडाला। छत्तीसगढके प्रायः सब चमारोंने इस नये मतको स्वीकार कर लिया है। वे लोग सतनामी कहलाते है, जो प्रतिदिन प्रातःकाल और संध्याके समय सतनाम, सतनाम, सतनाम कहते हुए सूर्यके आगे दण्डवत करते हैं अर्थात गिरते हैं। वे लोग मांस भक्षण नहीं करते और मद्य नहीं पीते। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मध्यदेशमें ३९८४०९ सतनामी थे।

भारतवर्षमें सबसे अधिक नीच जातियोंमेंसे चमार समझे जाते हैं; किन्तु भारतमें जो सब काम कृषक लोग करते है, उन्हीं कामोंको अर्थात् उन्हीं पेशेको मध्यदेशके छत्तीसगढ़ विभागके चमार भी करते हैं और वे लोग अधिक मिलनसार और मजहबी हो रहे हैं। बहुतेरे गाँवामें चमार मुखिया और जमीन्दार है।

कुम्भीपंथिया—सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इनकी संख्या ९१३ थी। वे लोग मध्यदेशहीमें खास करके सम्भलपुर जिलेमें हैं। यह पन्थ सन् १८६६ में सूबे उड़ीसेके अङ्गोल जिले और धंकेल राज्यमें नियत हुआ। इस पन्थको कायम करनेवाला एक आदमी था। इस पंथवाले कहते हैं कि इस मतको नियत करनेवाला स्वर्गमें रहता है। वह निराकार (अर्थात् विना शरीरका) है। उसका प्रधान चेला गोविन्ददास मरगया, उसके एक दूसरे चेले नरसिंहदासने उसके स्मरणार्थ बॉकी गॉवमे एक मन्दिर बनवाया है। इस मतका एक दूसरा मन्दिर बांकीमे है। इस पन्थके ३ फिरके हैं,—कुम्भीपंथिया गोसाईं, कनफाटिया गोसॉई और आश्रिता। कुम्भीपंथिया और कनफाटिया दोनों परस्पर एक साथ भोजन नहीं करते और विरक्त होते हैं और आश्रिता विवाह करते हैं और जातिका बंधन नहीं छोडते और वे लोग कुम्भीपन्थिया और कनफाटियाको अपना गुरू समझते हैं और उनकी शिक्षाका पालन करते हैं। इस मतके लोग सूर्योदय और सूर्यास्तके समय सूर्यके आगे दण्डवत् करते हैं। सूर्यास्त होनेपर कभी भोजन नहीं करते। हिन्दूके देवताओंकी मूर्तियोंका नहीं मानते। यद्यपि वे लोग ३३ किरोड देवताओंको मानते है, किन्तु उनको पूजते नहीं। वे कहते हैं कि मालिकको पूजना चाहिये, नोकरोंकी पूजा करनेकी जरूरत नहीं है। वे लोग एक ईश्वरकी, जिसको वे अलख कहते हैं, उपासना करते हैं।

सिंहपन्थी—सिंहजी नामक एक साधु थे, जिनके नामसे निमार और हुशंगावाद जिलेमें अनेक मन्दिर बनाये गये है, जिनमें सब जातिके लोग जाते है।

इतिहास—पूर्व समयमें मध्यदेशका अधिक भाग गोंडवाना अर्थात् गोडोंका देश कहलाता था। एरियन लोगोंके आक्रमणके समय आदि निवासोंकी जातियोंके लोग सतपुड़ाकी ऊँची भूमि पर चले गये और यूथके यूथ दक्षिण भाग गये।

पाँचवीं सदीमें विदेशी जाति यवन लोग सतपुड़ाके प्लेटू पर शासन करते थे; दशवीं और तेरहवीं सदीके बीचमें चन्द्रवंशी राजपूत लोग जबलपुरके चारोंओरके देशमें हुकूमत करते थे और मालवाके प्रमार लोग सतपुड़ाके दक्षिणके देशमें शासन करते थे। गोड़के चाँदा-खाँदानने कदाचित् दशवीं या ग्यारहवीं सदीमें राज्य किया था। छत्तीसगढ़के हैहयवंशी लोग पुराने समयसे थे। सन् १३९८ मे सतपुड़ा-प्लेटूके खेरलाके राजाओंके आधीन गोंड़वानेकी सम्पूर्ण पहाड़ियां थीं; सन् १४६७ में बहमनी राजाने उनको जीता। सोलहवीं सदीमे गोडलोग फिर बली हुए; किन्तु सन् १७४१ में महाराष्ट्रोंने उस देशपर आक्रमण किया और पीछे उसको अपने अधिकारमे करलिया। अङ्गरेजी गवर्नमेण्टने सन् १८१८ मे सागर और नर्मदा विभागको और सन् १८५३ मे शेष मध्यदेशको अपने राज्यमें मिला लिया।

रेलवे——बङ्गाल नागपुर रेलवे और इण्डियन पेनिनसुला रेलवेका जंक्शन नागपुरमें है।

(१) नागपुरसे पश्चिमकी ओर ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे है, जिसके तीसरे दर्जे और डाकगाडीका महसूल प्रतिमील २½ पाई लगता है—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

४९ वरधा जंक्शन।
८० धामनगाँव।
१०८ वडनेरा जंक्शन।
१५७ आकोला।
१८० सेगाँव।
१८८ जलंब जंक्शन।
२४४ भुसावल जंक्शन।
३१६ चालीसगाँव।
३४२ नन्दगाँव।
३५८ मनमार जंक्शन;
३७४ लासलगाँव।
४०४ नासिक।
४३५ इगतपुर।
४८७ कल्याण जंक्शन।
४९९ थाना।
५१४ दादर।
५१५ पेरेल जंक्शन।
५२० बम्बई विक्टोरिया स्टेशन।

वरधा जंक्शनसे पूर्व दक्षिण २१ मील हींगनघाट और ४५ मील वरोरा।

वड़नेरा जंक्शनसे ६ मील उत्तर अमरावती।

जलंब जंक्शनसे ८ मील दक्षिण खामगाँव।

भुसावल जंक्शनसे पूर्वोत्तर ७७ मील खण्डवा जंक्शन १८७ मील इटारसी जंक्शन, २१८ मील सोहागपुर, २८८ मील नरसिंहपुर ३४० मील जबलपुर, ३९७ मील कटनी जंक्शन, ५०६ मील मानिकपुर जंक्शन, ५६४ मील नयनी जंक्शन और ५६८ मील इलाहाबाद शहर।

(२) नागपुरसे पूर्व थोड़ा उत्तर बङ्गाल नागपुर रेलवे है, जिसके तीसरे दर्जे और डाकगाड़ीका महसूल प्रतिमील २ पाई लगता है—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

९ कामटी।
३९ भण्डारा रोड।
५० तुमसर रोड।
१२७ डूगरगढ़।

१४६ राजनन्दगाँव।
१८८ रायपुर।
२५६ विलासपुर जंक्शन।
२८२ नैला।
२८९ चापा।
३३८ रायगढ़।
३८३ झारसुगढ़ जंक्शन।
४०६ बामड़ा।
५०८ चक्रधरपुर।
५३० सीनी।
५८० पुरुलिया।
६२७ आसनसोल जंक्शन।

विलासपुर जंक्शनसे पश्चिमोत्तर ६३ मील पेंड्रा रोड और १९८ मील कटनी जंक्शन।

झारसुगढ़ जंक्शनसे दक्षिण ३० मील सम्भलपुर।

वरधा।

नागपुरसे ४९ मील पश्चिम-दक्षिण वरधाका रेलवे जंक्शन है। वरधा मध्यदेशके नागपुर विभागमें (२० अंश, ४५ कला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ४० कला पूर्व देशान्तरमें) जिलेका सदर स्थान एक नया छोटा कसवा है, जो सन् १८६६ में पलकवारी गाँवके स्थानपर वसा।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय वरधा कसवेमें ५८१६ मनुष्य थे, अर्थात् ४६३३ हिन्दू, ८०७ मुसलमान, १९६ जैन, १०९ एनिमिष्टिक, ५५ कृस्तान, ८ यहूदी, ६ पारसी और २ दूसरे।

कसवेमें रूईकी बड़ी तिजारत होती है। बम्बईके बहुत सौदागरोंके गुमास्ते रहते हैं। रूई दबानेके लिये इञ्जनवाली २ बड़ी कलें हैं। तिजारत उन्नत पर है। कसवेके पूर्व सरकारी कचहरियाँ, पुलिस लाइन, जेलखाना, पवलिक बाग इत्यादि हैं। कसवेके चारों ओर कई मीलों तक सुन्दर सड़के बनी हैं।

वरधा जिला—यह मध्यदेशके अखीर पश्चिममे त्रिभुजाकार है। इसके पूर्व नागपुर जिला, पश्चिमोत्तर चाँदा जिला और पश्चिम वरदानदी; वाद वरार प्रदेश है। देश पहाड़ी है। क्षेत्रफलकी आधीसे अधिक भूमि जोती जाती है। ग्रीष्म ऋतुओंमें जब इस जिलेकी पहाड़ियोंकी घास सूख जाती है, तब मवेशियोंके बहुतेरे झुण्ड मॅडला और चाँदा जिलेके वनोंमें खदेर दिये जाते हैं। इस जिलेमें बच्चे देनेके लिये बहुत मवेशियाँ पाली जाती हैं। उत्तम भैंस और बैलोंके लिये यह जिला प्रसिद्ध है। बहुत कपास इस जिलेसे दूसरे जिलोंमें भेजा जाता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेके २४०१ वर्गमील क्षेत्रफलमे ३८७२२१ मनुष्य थे; अर्थात् ३२८५२३ हिन्दू, ४१९३३ एनिमिष्टिक, १४२०० मुसलमान, २३५६ जैन, ९६ कृस्तान, ९२ कबीरपंथी, ८ यहूदी, ७ पारसी, और ६ दूसरे। हिन्दुओंमें ८०९०७ कुर्मी, ३९००३ महारा, ३७५७७ तेली, १७२०७ माली, ८५८९ ब्राह्मण, ३६९६ बनिया, ३०८१ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे। एनिमिष्टिकोंमें प्राय सब गोंड हैं।

जिलेमें हीङ्गनघाट प्रधान कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १०९६४ मनुष्य थे और देवली आदि कई छोटे कसबे हैं।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि बरधा जिलेके पश्चिमोत्तरका भाग विदर्भ देशके राजा भीष्मकके राज्यका एक हिस्सा था। भीष्मककी रुक्मिणी नामक पुत्रीसे श्रीकृष्णचन्द्रका विवाह हुआ था। उन्नीसवीं सदीके आरम्भमें पिण्डारी इस देशमें लूट पाट करते थे। उस समय बस्ती वालोंने उनसे बचनेके लिये मट्टीके किले बनानेका काम प्रारम्भ किया। बरधा जिलेके प्रायः सब गावोंमें मट्टीके छोटे किले देखनेमें आते हैं। इस जिलेका इतिहास नागपुरके इतिहासमें शामिल है। यह जिला सन् १८६२ में नागपुरसे अलग किया गया।

हिङ्गनघाट—बरधा जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व ४५ मीलकी रेलवे लाइन हिङ्गनघाट होकर कोयलेकी खानोंके मैदानके बरोरामें गई है। बरधासे २१ मील दक्षिण-पूर्व हिङ्गनघाटका स्टेशन है। बरधा जिलेमें प्रधान कसबा हिङ्गनघाट है, जहाँसे बहुतसे कपास और रूई दूसरे जिलोंमें भेजी जाती है। सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय हिङ्गनघाट कसबेमें १०९६४ मनुष्य थे, अर्थात् ९३६८ हिन्दू, १२१४ मुसलमान, २१८ जैन, १४२ एनिमिष्टिक और २२ कृस्तान।

हिङ्गनघाटसे २४ मील दक्षिण–पूर्व बरोराका रेलवे स्टेशन है। मध्यदेशके चाँदा जिलेमें बरोरा एक कसबा है, जिसमें कपास और रूईकी बड़ी तिजारत होती है। सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय बरोरा कसबेमें १००१८ मनुष्य थे। बरोराके निकट कोयलेकी अच्छी खानियाँ हैं, जिनमेंसे प्रति वर्ष लगभग १००००० टन कोयला निकाला जाता है।

चान्दा।

बरोराके रेलवे स्टेशनसे ३० मील दक्षिण–पूर्व मध्यदेशके नागपुर विभागमें (१९ अंश, ५६ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, २० कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमें) जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा चाँदा है। बरोरासे एक अच्छी सड़क चाँदा कसबेको गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय चाँदा कसबेमें १६१७५ मनुष्य थे; अर्थात् १४५९८ हिन्दू, १०९९ मुसलमान, ३४४ एनिमिष्टिक अर्थात् पहाड़ी, ९४ जैन और ४० कृस्तान।

चाँदा कसबा ५½ मीलकी पत्थरकी दीवारसे घेरा हुआ है, जिसमें ४ फाटक और ५ खिड़कियाँ हैं। दीवारके भीतर कई बस्तियोंके साथ चाँदा कसबा और जोते हुए खेतोंकी भूमि है। पुराने गढ़के भीतर जेलखाना और एक बड़ा कूप है, जिसमे जानेके लिये भूमिके भीतर एक मार्ग बना है। चाँदामें अचलेश्वर, महाकाली और मुरलीधर तीनोंके ३ मन्दिर और गोंड़ राजाओंके अनेक समाधि मन्दिर, एक सराय, एक बङ्गला, कोतवाली (जिसके आगे बाग है), जिला स्कूल, अस्पताल और जतपुरा फाटकके समीप विक्टोरिया बाजार है। कसबेके उत्तर सिविल स्टेशन; कसबे और सिविल स्टेशनके बीचमें एक पबलिक पार्क, जिसमें सरकारी कचहरियाँ और देशी पैदलके एक रेजीमेंटके रहने लायक मकान है और सिविल स्टेशनके पश्चिम फौजी छावनी है।

चाँदामें बड़ी सौदागरी होती है। खास करके एक बडे मेलेमें; जो वैशाखमें आरम्भ हो करके लगभग २० दिन रहता है। कसवेमें कपडे, पीतलके वर्तन, चमड़ेके स्लीपर और बाँसकी अनेक भाँतिकी चीजें बनती हैं। चाँदामें बहुत गोड़, जो मत और भाषामें आस पासके लोगोंसे भिन्न हैं देखनेमें आते हैं।

चाँदा जिला—इसके उत्तर बरधा, नागपुर, और भण्डारा जिला, पश्चिम बरधा नदी और दक्षिण-पूर्व बस्तरका राज्य और रायपुर जिला है। जिलेके भीतर उसकी पश्चिमी सीमाके पास बरधा नदीके समीपवर्त्ती नीची भूमिके सिवाय जिलेमें सर्वत्र छोटी छोटी पहाडियाँ हैं। बानगङ्गा नदी इस जिलेमें उत्तरसे दक्षिणको बहती हुई सिउनी जिलेमें जाकर बरधा नदीसे मिली है। जिलेके पूर्वी भागमें महानदी और पूर्वोत्तर इन्द्रवती नदी बहती है। जिलेमें बहुत झीलें, बहुत सघन जङ्गल और बाँसका बहुत बड़ा वन है। सन् १८८१ में १०७८५ वर्गमील भूमिमेंसे केवल ११४८ वर्गमील जोती गई थी, ३७९७ वर्गमील नहीं जोतनेके लायक और ५८४० वर्गमील जोतनेके लायक भूमि विना जोती हुई पडी थी। पहाडियोंमें लोहेका और बहुत है। चन्द पहाड़ी नदियोंके वालूमे सोनेके चूर्ण मिलते हैं। पूर्व समयमें वैरागढके निकट हीरे और लाल मिलते थे। देवल, भाँडक, बिजबसनी और घुगुसमें सुन्दर गुफा मन्दिर, बलालपुरके पास चट्टानी मन्दिर और एक किला और डोमाके निकट झरना और गुफा देखनेके लायक हैं। मध्य देशमें चाँदा जिलेके पानके बाग अर्थात् बरेत्र प्रसिद्ध हैं। बडा मेला वैशाख मासमें चाँदा कसवेमें और उससे छोटा मेला फागुनमे भाँडकमें होता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय चाँदा जिलेमें ६४९१४६ मनुष्य थे; अर्थात् ४९९३२७ हिन्दू, १३६५६४ आदि निवासी कोमें, १०९८७ मुसलमान १०६४ कबीरपन्थी, ७३७ जैन, २८९ कृस्तान, १७३ सतनामी और ५ सिक्ख। जातियोंके खानेमें ९३८०६ कुर्मी, ७२४७२ महारा, ४२७९६ गावली (मवेसी चराने वाले), ३२००१ चमार ३११२६ तेली, ६४५८ ब्राह्मण, २२२१ राजपूत और शेषमे दूसरी जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय चाँदा जिलेके चाँदा कसवेमें १६१७५ और बरोरामें १००१८ मनुष्य थे।

इतिहास—महाराष्ट्रोंके राज्यसे पहिले चाँदाके गोंड राजा यद्यपि बराय नामके दिल्लीके बादशाहके आधीन थे, किन्तु वास्तवमें चाँदाका राज्य स्वाधीन था। चाँदाके असभ्य निवासियोंने गोंड राजाओंके आधीन बहुत सभ्यताको प्राप्त किया। सन् १७४९ मे नागपुरके राघोजी भोसलाने चाँदाको ले लिया और उससे २ वर्ष पीछे पूरे तौरसे उसको अपने आधिकारमे कर लिया। गोंड घरानेके अन्तिम राजा नीलकण्ठ शाह कैदखानेमें मर गये। सन् १७७३ में नीलकण्ठशाहके पुत्रके आधीन गोंडोंने बलवा किया था, किन्तु नीलकण्ठशाहका पुत्र परास्त होकर कैदखानेमें गया। सन् १७८८ में महाराष्ट्रोंने उसको ६०० रुपया वार्षिक पेन्शन नियतकर दिया। १९ वीं सदीके प्रारम्भमें सन् १८०२ से १८२२ तक पिण्डारियोंने चाँदाके आधे वाशिंदोंको मार डाला। सन् १८५३में नागपुरके तीसरे राघोजी भोंसलेकी मृत्यु होनेपर अङ्गरेज महाराजने नागपुरके अन्य देशोके साथ चाँदाको ले लिया।

अमरावती।

बरधा जंक्शनसे कई एक स्टेशनोंसे पश्चिम बरधा नदीपर रेलवेका पुल है। बरधाके स्टेशनसे ३१ मी० पश्चिम धामन गाँवका रेलवे स्टेशन है, जिसके पास मध्य देश छूटकर बरार देश मिल जाता है। धामन गाँवसे २८ मील और बरधा जंक्शनसे ५९ मील (नागपुरसे १०८ मील) पश्चिम बडनेराका रेलवे स्टेशन है, जिससे उत्तर ६ मीलकी एक रेलवे शाखा अमरावती कसबेको गई है। सूबे बरारके पूर्वी विभागमे जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा बरार है

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय छावनीके सहित अमरावती कसबेमें ३३६५५ मनुष्य थे; अर्थात् १८५०४ पुरुष और १५१५१ स्त्रियाँ। इनमे २६४०३ हिन्दू, ६०४७ मुसलमान, ६७३ जैन, ३९७ क्रस्तान, ९६ एनिमिष्टिक, ३६ पारसी, २ सिक्ख और १ यहूदी थे।

अमरावती कसबेके चारोंओर सवा दो मील लम्बी और २० फीटसे २६ फीट तक ऊँची पत्थरकी दृढ़ दीवार है, जिसमें ५ फाटक और ४ खिड़कियाँ बनी हुई हैं। निजाम सरकारने अमरावतीके धनी सौदागरोंको पिण्डारियोंसे बचानेके लिये उन्नीसवीं सदीके आरम्भमे इसको बनवाया। अमरावती दो भागोंमें विभक्त है,–कसबा और पेट। अमरावतीके सम्पूर्ण कूपोंका जल खारा है।

अमरावतीके देवमन्दिरोंमें ८ मन्दिर प्रसिद्ध है, जिनमेंसे एक हजार वर्षका पुराना अम्बाका मन्दिर प्रधान है। बहुत लोगोंका मत है कि इसीके नामसे कसबेका नाम अमरावती पड़ा था। इनके अतिरिक्त अमरावतीमें कमिश्नर, और डिपुटी कमिश्नरके आफिस, कचहरियाँ, जेलखाना अस्पताल, गिरजा, कबरगाह, बङ्गला, धर्मशाला, स्कूल, एक कम्पनी देशी पैदल सेनाकी छावनी और बहुतेरे रूईके मिल अर्थात् कल कारखाने है। सन् १८७७ ई० में अमरावती कसबा और उसके पडोसमें रूईके १२ मिल थे। अमरावती बहुत दिनोंसे रूईके लिये प्रसिद्ध है। अब बरार प्रदेशमें खामगाँवके बाद सब कसबोंसे अधिक रूईका कारोबार अमरावतीमें होता है और यह कसबा बरारके सम्पूर्ण कसबोंसे अधिक तिजारती और धनवान है।

अमरावती जिला—इसके उत्तर (मध्यदेशका) बेतूल जिला; पूर्व बरधा नदी; दक्षिण वासिम और वून जिला और पश्चिम अकोला और एलिचपुर जिला है। यह जिला समुद्रके जलसे लगभग ८०० फीट ऊँचा मैदानमें है। जिलेमें कपास बहुत उत्पन्न होता है। यह जिला रूईके लिये बहुत दिनोंसे प्रसिद्ध है, इसमें कई एक मेले होते है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय अमरावती जिलेके २७५९ वर्गमीलमे ५७५३२८ मनुष्य थे; अर्थात् ५२७४६७ हिन्दू, ४१११८ मुसलमान, ६१२७ जैन, ३६६ क्रस्तान, ११९ सिक्ख, १०३ पारसी, २७ एनिमिष्टिक और १ बौद्ध। हिन्दुओमे १५९७६८ कुनबी, ७९४९२ महारा, ५७१२७ माली, १५९३६ ब्राह्मण, ११७०९ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय अमरावती जिलेके अमरावती कसबेमें ३३६५५, करेजामे १४४३६ और सन्दुरजनमें १००४३ मनुष्य थे। बडनेरा, खोलापुर, तालगाँव, अजाँगाँव भी छोटे कसबे है।

बरार प्रदेश—बरार प्रदेश एक चीफ कमिश्नरके आधीन है, जो हैदराबादके अङ्गरेजी रजीडेंट भी हैं। इसके उत्तर और पूर्व मध्यदेश, दक्षिण हैदराबादका राज्य और पश्चिम बम्बई हातेका खानदेश जिला है। इसकी लम्बाई पूर्वसे पश्चिमको लगभग १५० मील और औसत् चौडाई १४४ मील है। इस प्रदेशमें तापती, पूर्णा, बरधा, पेनगङ्गा इत्यादि नदियाँ बहती हैं। इसके उत्तरकी सीमापर तापती, पूर्वकी सीमापर बरधा नदी है और दक्षिणकी सीमापर पेनगङ्गा है। बुलडाना जिलेमें खारा पानीका एक दर्शनीय झील है। यह सघन बनोंसे हरी भरी पहाड़ियोंसे घेरी हुई, स्वाभाविक गोलाकार ३४५ एकड़में, जिसका घेरा ५½ मील है, फैली हुई है। सन् १८८३ में बरार प्रदेशमें ४३४४ वर्गमील क्षेत्रफलमें जङ्गल था। बरारकी घाटीके बड़े भागमें मकानके कामके योग्य वृक्ष और बॉस बहुत होते हैं। इस देशकी पहाड़ियोंमें लोहेकी खान और बरधा नदीकी घाटीके पास कोयलेकी खान है। देशकी भूमि आबादी है। कपास और नील बहुत होता है।

सूबे बरारमें ६ जिले हैं;—पूर्वी बरारमें एलिचपुर अमरावती और वून और पश्चिमी बरारमें अकोला, बुलडाना और वासिम।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सूबेबरारके १७७१८ वर्गमील क्षेत्रफलमें २८९७४९१ मनुष्य थे, अर्थात् १४९१८२६ पुरुष और १४०५६६५ स्त्रियाँ। इनमे २५३१७९१ हिन्दू, २०७६८१ मुसलमान, १३७१०८ जङ्गली जातियाँ इत्यादि, १८९५२ जैन, १३५९ कृस्तान, ४१२ पारसी, १७७ सिक्ख, ४ बौद्ध, और ७ अन्य थे। जिनमें सैकड़े पीछे ७९½ महाराष्ट्री भाषावाले, ९¾ हिन्दी भाषावाले, ३¼ गोंड भाषावाले और ७½ अन्य भाषा बोलनेवाले मनुष्य थे। उस समय बरार प्रदेशकी जातियोमेसे नीचे लिखे हुए लोग इस भाँति पढ़े हुए थे,—प्रति हजार पीछे प्रभूमे ७६४ पुरुष और १६० स्त्रियाँ, ब्राह्मणमें ६६८ पुरुष और २१ स्त्रियाँ, कायस्थमे ५५७ पुरुष और १६० स्त्रियाँ, बनियामे ४८० पुरुष, विधुरमें ३६८ पुरुष और कोमटीमें ३४९ पुरुष।

बरार प्रदेशके शहर और कसबे, जिनमे सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १०००० से अधिक मनुष्य थे,—

नं०	शहर या कसबा	जिला	जन-संख्या	नं०	शहर या कसबा	जिला	जन-संख्या
१	एलिचपुर	एलिचपुर	३६२४०	७	वासिम	वासिम	१२३८९
२	अमरावती	अमरावती	३३६५५	८	सेगॉव	अकोला	११४२२
३	अकोला	अकोला	२१४७०	९	अजाँगाँव	एलिचपुर	१०५९३
४	अकोट	अकोला	१५९९५	१०	बालापुर	अकोला	१०२५०
५	खामगॉव	अकोला	१५५९८	११	सन्दुरजन	अमरावती	१००४३
६	करेजा	अमरावती	१४४३६				

इतिहास—अनुमानसे जान पड़ता है कि बरार प्रदेश पूर्व कालमें कल्याण और देवगढ़के आधीन था। सन् १३१९ में यह बराय नामके मुसलमान हुकूमत करने वालोके आधीन हुआ। बादशाह महम्मदतुगलकके मरने पर सन् १३५१ से लगभग ५० वर्ष तक यह स्वाधीन रहा। उसके पश्चात् लगभग १३० वर्ष तक बहमनी बादशाहोके आधीन था। सन् १५२६ में बहमनी खानदानके राज्यका अन्त होनेपर इमादशाही बादशाहोंके जिनकी

राजधानी एलिचपुर था, अधिकारमें हुआ। सन् १५७२ मे अहमद नगरके अधिकारमे हुआ सन् १५९६ मे अकबरने अहमदनगरसे ले लिया। सन् १७२४ से बरार हैदराबादके अधिकारमें चला आता था। सन् १८५३ में अङ्गरेजी गवर्नमेण्टने हैदराबादकी फौजके खरचके बदलेमें निजामसे इसको ले लिया।

एलिचपुर।

अमरावती कसबेसे ३० मीलसे अधिक उत्तर कुछ पश्चिम (२१ अंश, १५ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, २९ कला, ३० विकला, पूर्व देशान्तरमें) सूबे बरारमे जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा एलिचपुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय एलिचपुर कसबेमे ३६२४० मनुष्य थे, अर्थात् १८७४१ पुरुष और १७४९९ स्त्रियाँ। इनमे २५६३५ हिन्दू, १०१५४ मुसलमान, २७९ जैन, १०८ कृस्तान, ५२ एनिमिष्टिक, ११ पारसी, और १ अन्य थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह बरार प्रदेशमें पहिला शहर है।

कसबेमे अनेक दिलचस्प इमारते हैं;–एक बड़े चबूतरेके ऊपर, जिसके चारों ओर ४ फाटक हैं, दुल्ला रहमानका दरगाह है, जिसको लगभग ४०० वर्ष हुए कि बहमनी खाँदानके एक बादशाहने बनवाया था महलके पत्थरका काम उत्तम है, जिसको सलाबतिखाँ और इसमाइलखाँने बनाया था, किन्तु वह शीघ्रतासे उजड़ रहा है। नवाबोंके मकबरोंमेंसे कई एक सुन्दर हैं। सुलतानगढ़ी नामक एक पत्थरका सुन्दर किला है, जिसको (१०० वर्षसे अधिक हुए कि) सुलतानखाँने बनवाया था। इसके अलावे अस्पताल, पुलिस स्टेशन और कई एक स्कूल है।

कसबेसे लगभग २ मील दूर फौजी छावनी और सिविल स्टेशन हैं। सन् १८८२—८३ में छावनीमें ७३ सवार, १२५ आदमीके साथ आरटिलरीकी एक बैटरी और ७६५ पदल थे।

एलिचपुर जिला—यह जिला सूबे बरारके उत्तरीय भागमे है। इसके पूर्व बरधा नदी और अमरावती जिला; दक्षिण और पश्चिम अमरावती और अकोला जिला और पश्चिमोत्तर तथा उत्तर निमार, हुसङ्गाबाद और बेतूल जिला है। इस जिलेके उत्तरके भागमे जो क्षेत्रफलके करीब आधा है, लगातार सतपुड़ाका एक भाग पहाड़ियाँ और घाटियाँ है, जिनको मेलघाट या गाविलगढ़ कहते हैं। जिलेके दक्षिणके भागमें मैदान है, जिसमें बहुतेरी छोटी नदियाँ बहकर बरधा और पुर्ना नदीमें गिरती है। जिलेमे आमके कुञ्ज बहुत हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय एलिचपुर जिलेका क्षेत्रफल २६२३ वर्गमील और इसकी मनुष्य-संख्या ३१३८०५ थी, जिसमें २८२००० हिन्दू, ३०२९९ मुसलमान, १२८० जैन, १९७ कृस्तान, २७ सिक्ख और २ पारसी थे। हिन्दुओंमें १७२८० कुनबी ७४२२ ब्राह्मण, ४८३० राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय एलिचपुर जिलेके एलिचपुर कसबेमें ३६२४० और अञ्जँगाँवमे १०५९३ मनुष्य थे।

इतिहास—कहावतसे जान पड़ता है कि जैन राजा एलने एलिचपुरको वसाया; जो वाडगाँवके निकटवर्ती खानजामा नगरसे आया था। सन् १५२६ में वहमनी खानदानके राज्यका अन्त होनेपर सूबेबरार इमादशाही बादशाहके अधिकारमें हुआ; जिसकी राजधानी एलिचपुर थी। सन् १५७४ में वह अहमदनगरके राज्यमें मिल गई। १८ वीं सदीके पहले भागमें पहला निजामुलमुल्क डेकानमें हुकूमत करने वाला हुआ; तब एलिचपुर एक सूबेदारके अधिकारमें किया गया। उस समयसे कसबेकी घटती होने लगी। सन् १८५३ में अङ्गरेजी सरकारने बरार दूसरे जिलोंके साथ एलिचपुरको निजामसे ले लिया।

अकोला।

बडनेरा जंक्शनसे ४९ मील (नागपुरसे १५७ मील) पश्चिम अकोला रेलवे स्टेशन है। पश्चिमी बरारमें जिलेका सदर स्थान जिलेमें प्रधान कसबा और बरारके जुडिसियल कमिश्नरका सदर स्थान अकोला है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय अकोलामें २१४७० मनुष्य थे, अर्थात् ११८१४ पुरुष और ९६५६ स्त्रियाँ। इनमे १४६६० हिन्दू, ६१५० मुसलमान, २५२ जैन, १८८ कृस्तान, ९८ एनिमिष्टिक, ६८ पारसी ४९ सिक्ख, ४ बौद्ध और १ अन्य थे।

अकोला कसबेके आगे पत्थरकी दीवार और इसमें ईटोंका पुराना किला है, जिससे जान पडता है कि यह एक समय प्रसिद्ध शहर था। कसबेके बीचमें मोरना नदी है नदीके पश्चिम किनारेपर खास अकोला कसबा और पूर्व ताजनापेट है, जिसमें कमिश्नर, और डिपुटी कमिश्नरके आफिस, कचहरियाँ, जेलखाना, टाउनहाल, गिरजा, खैराती अस्पताल, सराय, बारकें कई एक स्कूल और यूरोपियन लोगोंके मकान हैं। नदीके पूर्व रविवारको और पश्चिम बुधवारको वाजार लगता है।

अकोला जिला—इसके उत्तर सतपुड़ा पहाड़ियाँ, पूर्व एलिचपुर और अमरावती ज़िला, दक्षिण अजंताका सिलसिला, जो वासिम और बुलडाना जिलेसे इसको अलग करता है और पश्चिम बुलडाना और खानदेश जिला है। जिलेके मध्य होकर पूर्ना नदी वहती है। गावलुगी सकलकी एक पहाड़ी वालापुर तालुकके दक्षिण भागमें और दूसरी अकोला तालुकमें है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इस जिलेके २६६० वर्गमील क्षेत्रफलमें ५९२७९२ मनुष्य थे, अर्थात् ५३९०६८ हिन्दू, ४९३३७ मुसलमान, ३७३६ जैन, ३८८ कृस्तान, १०८ पारसी, ९३ सिक्ख, ५९ पहाड़ी और ३ यहूदी। हिन्दुओंमें २०७२५३ कुन्बी; ६६७८१ महारा, ५३४२१ माली, १८६३२ ब्राह्मण, १०९२२ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय अकोला जिलेके अकोला कसबेमे २१४७० अकोटमें १५९९५ खामगाँवमें १५५९८, सेगाँवमें ११४२२; वालापुरमें १०२५० और जलगाँव इत्यादि कई कसबोंमें दसहजारसे कम मनुष्य थे।

अकोट और बालापुरमें बहुत गलीचे और पगड़ियाँ वनती है। इस जिलेमें ३ बड़े मेले होते हैं,—फागुनके पाटोरका मेला लगभग २० दिन, कार्तिकके सोनालाका मेला ५ दिन और कार्तिकके अकोटका मेला १२ दिन रहता है। मेलोंमें दूर दूरसे बहुत सौदागर आते हैं।

इतिहास—अठारहवीं सदीमें अकोला कसबेके पास निजाम और महाराष्ट्रोंसे लड़ाई हुई थी। सन् १७९० में कसबेकी दीवारके पास भोंसलाके सेनापतिने गाजीखाँ पिण्डारीको परास्त किया। निजामके राज्यके पिछले भागमें देशी अफसरोंके अत्याचारसे अकोला कसबेकी घटती हुई; इसके बहुतसे निवासी अमरावतीमें जा बसे। अङ्गरेजी अधिकार होनेपर इसकी उन्नति हुई है।

वासिम।

अकोलाके रेलवे स्टेशनसे ५२ मील दक्षिण कुछ पूर्व (२० अंश, ६ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, ११ कला, पूर्व देशान्तरमें) सूबे बरारमें जिलेका सदर स्थान वासिम एक पुराना कसवा है। अकोलाके रेलवे स्टेशनसे वासिमको पक्की सड़क गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वासिम कसबेमें १२३८९ मनुष्य थे; अर्थात् ९३६३ हिन्दू, २६५६ मुसलमान, ३०० जैन, और ७० कृस्तान।

कसबेके बाहर पद्मतीर्थ नामक एक तालाब है। लोग कहते हैं कि तालाबके स्थानपर पानीका छोटा कुण्ड था। जब उसमें स्नान करनेसे वासुकी नामक राजाका कुष्टरोग छूट गया, तब उसने कुण्डको बढ़ाकर तालाब बनवा दिया। वासिममें नागपुरके भोसलेके कर्मचारी भवानीकालूका बनवाया हुआ लगभग १०० वर्षका एक तालाब और बालाजीका सुन्दर मन्दिर है। इसके अतिरिक्त वासिममें पुलिस स्टेशन, स्कूल, अस्पताल इत्यादि सरकारी इमारत हैं। वासिम कसबेसे दक्षिण २९ मीलकी पक्की सड़क निजामके राज्यमें हिंगौलीकी फौजी छावनी तक गई है।

वासिम जिला—इसके उत्तर अकोला और अमरावती जिला; पूर्व यून जिला; दक्षिण पैनगङ्गा नदी, बाद हैदराबादका राज्य और पश्चिम बुलडाना जिला है। जिलेकी आधीसे अधिक भूमि जोती जाती है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय वासिम जिलेके २९५८ वर्गमील क्षेत्रफलमें ३५८८८३ मनुष्य थे; अर्थात् ३२५६४७ हिन्दू, १९७१५ मुसलमान, ३३६२ जैन, १०७ कृस्तान, ५१ सिक्ख और १ पारसी। हिन्दुओंमें १२०३१० कुनबी, ७२३९ ब्राह्मण, १७६३ राजपूत और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

सेगाँव।

अकोलाके रेलवे स्टेशनसे २३ मील (नागपुरसे १८० मील) पश्चिम सेगाँवका रेलवे स्टेशन है। पश्चिमी बरारके अकोला जिलेमें सेगाँव एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सेगाँवमें ११४२२ मनुष्य थे; अर्थात् १००८४ हिन्दू, ११५२ मुसलमान, ९९ जैन, ४३ कृस्तान, ३८ पारसी और ६ सिक्ख।

सेगाँवमें अङ्गरेजी बङ्गला, पुलिस स्टेशन, स्कूल; सराय और रूई दबानेकी कई एक कल हैं। सेगाँवसे ११ मील बालापुर है।

खामगाँव।

सेगॉवसे ८ मील पश्चिम (नागपुरसे १८८ मील) जलम्बका रेलवे स्टेशन है, जिससे दक्षिण ८ मीलकी रेलवे शाखा खामगॉवको गई है। सूबे बरारके अकोला जिलेमें खामगॉंव तिजारती कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय खामगॉंवमे १५५९८ मनुष्य थे, अर्थात् ११९३२ हिन्दू, ३२५७ मुसलमान, ३३० जैन, ५२ कृस्तान, २७ पारसी, ७ एनिमिष्टिक और ३ अन्य।

खामगॉंव अफीमका प्रसिद्ध स्थान है और उसमें गल्ले, विशेष करके रूईकी बड़ी सौदागरी होती है। प्रति वर्ष लाखों बैल रूई अन्यत्रसे खामगॉवमे लाई जाती है। दिसम्बरसे जुलाई तक रूईका कारबार होता है। कसबेके चारोंओर छोटी पहाड़ियाँ है। पूर्व ओर घेरा हुआ रूईका बाजार है। ४०० से अधिक सरकारी और साधारण लोगोंके कूप हैं जिनमेंसे बहुतेरे नष्ट होगये हैं। कसबेसे १½ मील दूर एक नया बहुत उत्तम तालाब बना है, इनके अलावे तहसील, एसिस्टेंट कमिश्नरकी कचहरी, सराय, बंगला, अस्पताल, पुलिस स्टेशन, कई स्कूल, रूई दबानेके धुएँकी कल, अनेक बाग और यूरोपियन सौदागरोंके सुन्दर मकान हैं।

तीसरा अध्याय।

(बम्बई हातेमें) भुसावल, (हैदराबादके राज्यमें) अजंताके गुफा मन्दिर, (बम्बई हातेमें) धूलिया, मनमार जंक्शन, (हैदराबादके राज्यमें) इलौराके गुफा, मन्दिर, रौजा, दौलताबाद, औरङ्गाबाद घुश्मेश्वर पैठन, परणीवैद्यनाथ और नागेश।

भुसावल।

जलम्ब जंक्शनसे करीब ३५ मील पश्चिम जाने पर बरार प्रदेश छूटकर बम्बई हाता मिलजाता है। उस स्थानसे करीब २१ मील पश्चिम कुछ उत्तर (नागपुरसे २४४ मील पश्चिम ओर) भुसावलमें रेलवेका जंक्शन है। बम्बई हातेके खानदेश जिलेमे तापती नदीसे ३ मील दक्षिण (२१ अंश, १ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ४७ कला, पूर्व देशान्तरमें) सबडिवीजनका सदर स्थान भुसावल एक कसबा है, जो रेलवे खुलनेके बाद प्रसिद्ध हुआ है। तापती पर दृढ और सुन्दर रेलवेका पुल बना है भुसावलमें लगभग १२०० आदमी, जिनमेसे लगभग १०० यूरोपियन और यूरेशियन हैं, रेलवेके कारखानेमें काम करते है और यूरोपियन लोग बहुत रहते है। रेलवे फाटकसे बाहर एक बड़ी धर्मशाला है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय भुसावलमें १३१६९ मनुष्य थे, अर्थात् ९५१३ हिन्दू, २२९८ मुसलमान, ९१७ क्रुस्तान, १८५ जैन, १८३ पारसी, ६२ यहूदी और ११ दूसरे।

रेलवे लाइनकी एक ओर रेलवे सम्बन्धी इमारते और दूसरी ओर भुसावल कसबा है। रेलवेके उत्तर सदरालाकी कचहरी, मामलात घरका आफिस, रेलवे मजिष्टरका आफिस, मातहत जेलखाना, स्कूल, टेलीग्राफ आफिस इत्यादि इमारतें हैं। जलकल द्वारा तापती नदीसे जल आता है। कई एक सुन्दर बाग लगे हैं।

भुसावलमे ग्रेटइंडियन पेनिनसुला रेलवेका बड़ा जंक्शन है। यहाँसे २७६ मील दक्षिण पश्चिम बाम्बे, ३४० मील पूर्वोत्तर जबलपुर और २४४ मील नागपुर है। इस रेलवेके तीसरे दर्जेके पसेंजर और डाकगाड़ीका महसूल प्रति मील २½ पाई लगता है।

(१) भुसावलसे दक्षिण-पश्चिम—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१५ जलगाँव *

४४ पचौरा।

७२ चालीसगाँव।

९८ नन्दगाँव।

११४ मनमार जंक्शन।

१३० लासलगाँव।

१६० नासिक।

१६३ देवलाली।

१९१ इगतपुरी।

२०१ कसारा।

२४३ कल्यान जंक्शन।

२५५ थाना।

२५९ भण्डूप।

२७० दादर जंक्शन।

२७६ बम्बई विक्टोरियाटर्मिनस।

मनमार जंक्शनसे दक्षिण ९५ मील अहमदनगर १४६ मील धोंद जंक्शन।

धोंद जंक्शनसे पूर्व-दक्षिण ११७ मील शोलापुर १२६ मील होतगी जंक्शन, १८७ मील गुलबर्गा, २१० मील बाडी जंक्शन और २७७ मील रायचुर जंक्शन और धोंदसे पश्चिमोत्तर ४८ मील पूना, १३४ मील कल्याण जंक्शन और १६७ मील बम्बई।

कल्यान जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व ४ मील अमरनाथ, २० मील नेरल, २९ मील करजत ४५ मील खंडाला, ४७ मील लोन वली ५२ मील कारली, ६३ मील धाड़गाँव, ७६ मील चिचवाड ८३ मील किरकी और ८६ मील पूना है।

दादर जंक्शनसे उत्तर २६ मील बेसिनरोड, १५९ मील सूरत, १९६ मील बरौंच २४० मील बरोदारोड़ २६२ मील आनन्द जंक्शन और ३०२ मील अहमदाबाद जंक्शन है।

(२) भुसावलसे पूर्वोत्तरकी लाइनपर—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३४ बुरहानपुर।

४६ चाँदनी।

७७ खँडवा जंक्शन।

१४० हरदा।

१६६ सिउनी।

* जलगांवसे पश्चिम कुछ उत्तर एक रेलवे लाइन सूरतको गई है।

१८७ इटारसी जंक्शन ।
२६० गडरवाड़ा जंक्शन ।
२८८ नरसिंहपुर ।
३४० जबलपुर ।

खँडवा जंक्शनसे अधिक उत्तर कम पश्चिम राजपूताना मालवा रेलवे पर ३७ मील मोरतक्का (मोरतक्कासे ओंकारनाथ ७ मीलहै) ७३मील मऊ, ८६ मील इन्दौर, १११ मील फतेहावाद जक्शन (फतेहावादसे १४ मील पूर्वोत्तर उज्जैन) १६० मील रतलाम जक्शन १८१ मील जावरा, २४३ मील नीमच और २७७ मील चित्तौरगढ़ ।

इटारसी जंक्शनसे उत्तरकी ओर 'इंडियन मिडलेंड रेलवे' पर ११ मील हुशंगावाद, ५७ मील भोपाल जंक्शन, ९० मील भिलसा, १४३ मील वीना जंक्शन, १७९ मील ललितपुर और २३८ मील झाँसी जंक्शन है ।

गाडरवाडा जंक्शनसे १२ मील दक्षिण पूर्व मोपानी ।

जबलपुरसे पूर्वोत्तर 'ईष्टइण्डियन रेलवे' पर ५७ मील कटनी जंक्शन' १६६ मील मानिकपुर जंक्शन; और २२४ मील नयनी जंक्शन है ।

(३) भुसावलसे पूर्वकी ओर—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन ।
५६ जलम्ब जंक्शन ।
६४ सेगाँव ।
८७ अकोला ।
१२६ वड़नेरा जंक्शन ।
१९५ वरधा जंक्शन ।
४४४ नागपुर ।

जलम्ब जंक्शनसे ८ मील दक्षिण खामगाँव ।

वडनेरा जंक्शनसे ६ मील उत्तर अमरावती ।

वरधा जंक्शनसे पूर्व-दक्षिण २१ मील हिङ्गनघाट और ४५ मील वरोरा है ।

अजन्ताके गुफा मन्दिर ।

भुसावल जंक्शनसे ४४ मील पश्चिम-दक्षिण रेलवेका स्टेशन पचौरा है, जहाँसे ३४ मील दक्षिण(२० अंश, ३२ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ४८ कला पूर्व देशान्तरमें) निजामके राज्यमें अजंता एक वस्ती है, जिससे ४ मील पश्चिमोत्तर अजन्ताकी प्रसिद्ध बौद्ध गुफा हैं । रास्ता जंगलका है । पचौरासे फरदापुर तक, जहां एक मुसाफिरखाना है, बैलगाडीका मार्ग और उससे आगे ३½ मील घोडाका रास्ता है । वगोरा नदी कई वार पार उतरना होता है । अजन्तासे ५५ मील दक्षिण-पश्चिम औरंगावाद है ।

अजन्ताके गुफा मन्दिरों और मठोंसे अशोकके वादसे बौद्ध लोगोंके खदेरे जानेके समय तकका बौद्ध कारीगरीके इतिहास जान पड़ते हैं; अर्थात् सन् ईस्वीसे लगभग २०० वर्ष पहिलेसे सन् ६०० ईस्वीतकके वे वने हुए हैं ।

करीव २५० फीट ऊंचे चट्टानकी एक दीवारमें जो आधे गोलाकारकी शकलमे है, पानीकी एक नालीसे, जिसके पिछले छोरके पास ७ कुण्डोंका बड़ा झरना है, ३५ फीटसे १०१ फीट तक ऊपर करीव ⅓ मील पूर्वसे पश्चिमको छोटी वड़ी २७ गुफा फैली हुई है, जिनमेंसे २२ विहार अर्थात् बौद्ध मठ और धर्मशालाके साथ मन्दिर और ५ चैत्य अर्थात् बौद्ध मन्दिर

निशन पहाड़ी चट्टानमें पत्थर खोदकर अर्थात् भीतरसे पत्थर निकालकर बनाये हुए हैं। इनमेंसे ५ बौद्ध मन्दिरोंकी लम्बाई उनकी चौड़ाईसे लगभग दूनी अधिक है। जो सबसे बड़ा है वह ९४ फीट लम्बा और ४१ फीट चौड़ा है। सम्पूर्ण विहार अर्थात् बौद्ध मठ साधारण प्रकारसे मोरब्बा शकलके है। उनके भीतर खम्भोंकी पंक्तियाँ बनी हैं। इनमेंसे बड़ी बड़ी गुफाओंमें हैं मध्यमे एक बड़ा कमरा है। उसके आगे एक दालान, जिसके दोनो बगलोंमे एक एक कोठरी हैं, पीछे एक छोटे कमरेमें तख्तपर बैठी हुई बुद्धदेवकी मूर्त्ति और तीनो बगलोंमे बौद्ध सन्तोके रहनेकी छोटी कोठरियाँ बनी हैं। प्रायः सब गुफामन्दिर रंगसे चित्रित हैं। बाहर ८ शिला लेख और भीतर लगभग १६ रंगके लेख संस्कृत और मागधी भाषमें है। इनमेंसे अनेक बहुत छोटे हैं और अनेकका काम पूरा नहीं हुआ है। चन्द प्रधान गुफाओंके वृत्तान्त नीचे लिखे जाते हैं।

एक पगडण्डी, जिससे गुफाओंके पास जाना होता है, सातवीं गुफाके पास पहुंचीहै, जहाँसे रास्ते पूर्व और पश्चिम दोनो तरफ ऊपर गुफाओंके पास गये है।

सबसे पूर्व नम्बर १ एक बिहार गुफा है। उसकी बनावट उत्तम है। उसमें बहुतेरे हाथी घोड़े मनुष्य और शिकारी लोग पत्थरके बने है। उसका बीचवाला कमरा हरतरफसे ६४ फीट लम्बा है, जिसमें २० पाये बने है। उसके पीछेकी तरफ ४ और प्रत्येक बगलोंमे ५ छोटी कोठरियाँ बनी हुई है। एक स्थानमें उपदेश करते हुए बुद्धकी मूर्त्ति है।

नम्बर २—यह एक विहार गुफा है। बरण्डेमें २ एबादतखाना है। बुद्ध अपने बाये हाथकी अंगुलीको दहिने हाथकी अंगुलियोंसे पकड़ेहुए हैं। गुफाओंकी दीवारोंमे रामकी लड़ाई, बहुत देवता, स्त्री पुरुष आदिकी बहुतसी मूर्त्तियाँ पत्थरमें बनी हैं।

नम्बर ६—यह बिहार गुफा दो मञ्जिला होनेसे प्रसिद्ध है। इसकी सीढ़ियाँ टूट गई है, इससे ऊपरकी मञ्जिलमें कोई नहीं जाता। भील लुटेरे बहुत दिनों तक यहाँ रहते थे। उन्होंने इसकी बड़ी हानि की।

नं० ७ विहार गुफा—इसमें एक बड़ा बरण्डा है, जिसके पीछे दो कोठरियाँ आगे तरफ २ पेशगाह और दोनो अखीरमें २ एबादत खाने है। देवढ़ीमें कमल पर बैठी हुई ५ सूरतोकी ४ पंक्तियाँ और ध्यान करते हुए बुद्धकी मूर्त्तियोंका एक कत्तार है। दहिने तरफ इसी तरहकी बुद्धकी २ मूर्त्तियाँ हैं। मन्दिरमें दोनो तरफ दो दो बड़ी और एक एक छोटी और दो दो पंखोंको लिये हुई मूर्त्तियाँ है।

नं० १० एक दगोवा—बुद्धकी मूर्त्ति दीवारसे अलग है। छत पहलूदार है। गुफाके भीतरी चेहरेके ऊपर सन् ई० से १०० या २०० वर्ष पहिलेका लाट अक्षरमें एक शिलालेख है।

नं० १६ और १७—ये इस सिलसिलेके सबसे उत्तम विहार हैं। बाहरी द्वारपर २ लम्बे शिलालेख है। ये गुफाये चौथी सदीकी अनुमान की जाती हैं। बड़े कमरेमें लड़ाई जाहिर करते हुए रंगके उत्तम चित्र है। नं० १७ की गुफा १६ वीं गुफाके समान है, परंतु यह उतना ऊंचा नहीं है और इसकी कारीगरीभी उसके समान नहीं है।

नं० २६ चैत्य गुफा—यह इस सिलसिलेमें सबसे नयी है। इसकी संग तराशी सबसे अधिक और बारीक है। दगोवाक आगे अपना चरण नीचे किये हुए बुद्ध देव बैठे हैं।

बुद्ध और उनके चेलोंकी मूर्त्तियोकी संग तराशीसे दीवार छिपी हुई हैं। जिस सकलमें बौद्ध लोग निर्वाणलेनेको उद्यत होते है, उसी सकलमें गुफाके दक्षिणके वाजूसे २३ फीट लम्बी एक बौद्ध मूर्त्ति है। ऊपर बहुतेरे फिरिस्ते हैं। बाहरी तरफ २ लेख हैं.-एक फाटकके वॉये बुद्धकी सूरतके नीचे और दूसरा दहिने तरफ छठवी सदीकी भाषामें।

धूलिया।

पचौराके रेलवे स्टेशनसे-२८ मील (भुसावलसे ७२ मील) दक्षिण-पश्चिम चालीसगॉवका रेलवे स्टेशन है। चालीसगॉवसे ३० मील उत्तर कुछ पश्चिम (२० अंश,५४ कला उत्तर अक्षॉश और ७४ अश, ४६ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमें) बम्बई हातेके मध्य विभागके खान देश जिलेमे एक छोटी नदीके दक्षिण किनारेपर खानदेश जिलेका सदर स्थान धूलिया एक कसबा है। *

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय धूलियामें २१८८० मनुष्य थे, अर्थात् १५९९१ हिन्दू, ४९०० मुसलमान, ६५८ जैन, २३३ एनिमिष्टिक,४९ क्रस्तान, ४५ पारसी और ४ यहूदी।

धूलिया कसबा दो भागोंमें बटा है,—नया और पुराना धूलिया। नया धूलियामें सडकें अच्छी हैं और मकान अच्छे अच्छे बने हैं। नदीके ऊपर पत्थरका पुल बना है। धूलियामें सरकारी कचहरियॉ, जेलखाना, टेलीग्राफ आफिस, रुई दबानेके लिये एजिनवाला एक मिल अर्थात् कल क़ारखाना, २ अस्पताल और बहुतेरे स्कूल हैं। वहॉ अन्न रुई आदि वस्तुओंकी बड़ी तिजारत होती है। ऊनी कपडा और पगडी बहुत तैयार होती हैं। कसबेके दक्षिण-पश्चिम फौजी लाइन है और ६ मील दूर एक ऊँची पहाडीके सिरपर लालिङ्गका पुराना किला है। धूलियामे प्रति गुरुवारको सप्ताहिक वडा बाजार लगता है, जिसमें लगभग ५००० की वस्तु बिकती है। धूलियासे सडक द्वारा ६४ मील पूर्व भुसावल है।

खानदेश जिला—इसके पूर्व सूबा बरार और मध्य देशका निमार जिला, दक्षिण सातमाला या अजन्ता पहाडी, दक्षिण-पश्चिम नासिक जिला, पश्चिम बडोदाका राज्य और उत्तर सतपुडा पहाडी और नर्मदा नदी है। तापती नदी खानदेश जिलेके अग्निकोणसे प्रवेश करके जिलेमें पश्चिमोत्तरको बहती है, जिससे यह जिला दो भागोंमे विभक्त हो गया है। इनमेंसे दक्षिण वाले बडे भागमें बडे बड़े कसबे और घनी बस्तियॉ हैं और उपजाऊ बडा मैदान है, । उत्तर सतपुड़ा पहाड़ोकी ओर भूमि ऊँची होती गई है। मध्यमें और पूर्वकी नीची पहाडियोंके चन्द सिलसिलोंको छोड़कर देश प्राय. बराबर है उत्तर और पश्चिम ओर ऊँचा मैदान है। देश कठिन है। जंगलमे भील बहुत बसते हैं, जो जङ्गलके फलोंको खाकर और बनकी लकडी बेंचकर अपना निर्वाह करते हैं। बहुतेरे भील सतपुडा पहाडीके पाद-मूलके निकट बस्तियोंमें और बहुतेरे सातमाला पहाड़ोके नीचे बसते हैं। इनमेसे चन्द अन्न तिजारत करते हैं। तापती नदीका किनारा बडा ऊंचा है। वर्षा कालमें वह बिना नावके पार होने लायक नहीं रहती। जिलेमें भुसावलके पास उसपर पुल है। जिलेमें जङ्गल और जङ्गली जानवर बहुत है। अब बाघ और तेन्दुये कम देखनेमें आते हैं।

---

* अब चालीसगॉवसे धूलिया तक ३५ मीलकी रेलवे शाखा खुली है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय खानदेश जिलेके ९९४४ वर्गमील क्षेत्रफलमें १२३७२३१ मनुष्य थे; अर्थात् ९५८१२८ हिन्दू, १७५३४९ भील, ९२२९७ मुसलमान, १००१३ जैन, ११४६ क्रस्तान, १५८ पारसी, ८८ यहूदी, ४३ सिक्ख, ८ बौद्ध और १ दूसरे। हिन्दुओंमें ३३७८१६ कुन्वी, ८५६७४ महारा, ४९१५३ माली, ५८३०७ कोली, ४७७४३ धांगर, ४५८६९ राजपूत, ४०४५९ ब्राह्मण, २८५७९ बनजारा, २३१७८ तेली, २०१०२ सोनार और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय खानदेश जिलेके कसबे धूलियामें २११८८०, धोपड़ामें १५६५५, धरनगाँवमें १५०७२, जलगाँवमें १४६७२, परोलामें १४४७८, भुसावलमें १३१६९, एराण्डलमे १२५५७, नसीराबाद्में ११४७२, इयावलमें १०८०० और शेरपुरमें १०१४२ मनुष्य थे।

इतिहास—खानदेश राजपूतोंके बाद अन्ध्रभृत्य वंशके राजाओके अधिकारमे हुआ, जिनके बादशाहवशके राजाओने इसपर हुकूमतकी उसके पश्चात् पाँचवीं सदीमें इसपर सालुक्य वंशका अधिकार हुआ। कई एक मालिकके आधीन होनेके बाद सन् १३२३ से सन् १३७० तक यह तुगलकके अधिकारमें रहा। सन् १३७० में यह अरब वालोंको आधीन हो गया। उन्हींके राज्यके समय धूलियाका किला बना। सन् १५९९ में दिल्लीके बादशाह अकबरने अपनी भारी फौजके साथ स्वयं आकर असीरगढ़के किलेको ले लिया और वहाँके राजा बहादुरखाँको ग्वालियरमें भेजकर खानदेशको अपने राज्यमें मिला लिया। सन् १७६० में महाराष्ट्रोंने मुसलमानोंसे असीरगढ़का किला और खानदेश ले लिया। सन् १८०३ में हुलकरकी लूटपाटसे और उस सालके अकालसे दुःखी हो धूलियाके निवासियोंने कसबेको, जो एक छोटा गाँव था; छोड़ दिया; किन्तु पेशवाके आधीनके कर्मचारी बालाजी बलवन्तने दूसरे वर्ष धूलियाको फिर बसाया और धूलियामें अपना सदर स्थान बनाया।

सन् १८१८ में खानदेशपर अङ्गरेजी अधिकार होनेपर खानदेश एक नया जिला बनाया गया। धूलिया कसबा जिलेका सदर स्थान हुआ और बासिन्दे सुखी हुए। तबसे कसबेकी उन्नति होने लगी। सन् १८७२ की बाढ़से धूलिया कसबेकी बड़ी हानी हुई, बहुतेरे मकान गिर गये और बहुतेरे माल बह गये।

मनमार जंक्शन।

चालीसगाँवके रेलवे स्टेशनसे २६ मील दक्षिण-पश्चिम नन्दगाँवका रेलवे स्टेशन और नन्दगाँवसे १६ मील पश्चिम (भुसावल जंक्शनसे ११४ मील दक्षिण पश्चिम) बम्बई हातेमें धोंद और मनमार स्टेट रेलवेका जंक्शन मनमार है *। उससे ४ मील दक्षिण एक किला उजाड़ पड़ी है और ७ साधारण बौद्ध गुफाये हैं। रेलवे स्टेशन और गुफाओके बीचमें रामगुलनी नामक एक पहाड़ी है; जिसके सिरेपर ८० या ९० फीट ऊँचा चट्टानका एक अपूर्व स्वाभाविक मीनार है। मनमारके स्टेशनसे ६ मील दक्षिण अगस्त्य पहाड़ीपर

* एक रेलवे लाइन हालमे मनमारसे पूर्व थोडा दक्षिण हैदराबादको गईहै। उस पर ६३ मील दौलताबाद ७१ मील औरंगाबाद, ११० मील जालना, १८१ मील प्रभानी, १९९ मील पुरना २१८ मील नादेड़, २८६ मील इंडुर, ३१८ मील कामरदी, ३७७ मील बलारम और ३८६ मील हैदराबादका स्टेशन है।

अगस्त्यमुनि और रामलक्ष्मणका मन्दिर बना हुआ है । लोग कहते हैं कि इसी जगह बन बासके समय रामचन्द्र अगस्त्यजीसे मिले थे ।

मनमारसे दक्षिण-पश्चिम ४६ मील नासिक और १६२ मील बम्बई है । द्वारिकाके यात्री बम्बईमें आगबोटपर चढ़कर समुद्रके मार्गसे द्वारिका जाते हैं । मनमारसे दक्षिण ९५ मील अहमदनगर और १४६ मील धोंद जंक्शन है । मद्रास, बालाजी, कांची, रंगजी, मदुरा, रामेश्वर इत्यादिके जानेवाले लोग मनमारसे अहमदनगर और धोंद होकर जाते हैं । मैं मनमारसे लौटकर उससे १६ मील पूर्वके नन्दगॉवके स्टेशनमें रेलगाडीसे उतरकर इलोरा औरंगाबाद, पैठन इत्यादि स्थानोमे होकर अहमदनगरमें रेलगाडीपर चढा ।

इलोराके गुफा मन्दिर ।

चालीसगॉवके स्टेशनसे २६ मील (भुसावलसे ९८ मील) दक्षिण-पश्चिम और मनमार जंक्शनसे १६ मील पूर्व बम्बई हातेमें नन्दगॉवका रेलवे-स्टेशन है, जिससे दक्षिण पूर्व ५६ मीलकी सडक औरंगाबादको गई है । छोटा तांगा नव दश घण्टेमे औरंगाबाद पहुँच जाता है । नन्दगॉवमें किरायेपर तांगा मिलते हैं । नन्दगॉवसे ३६ मील देवगॉव है, जिसके ४½ मील आगे औरंगाबादकी सड़क छोड कर, वहॉसे ४½ मील दूसरी सड़क द्वारा जानेपर हैदराबादके राज्यमें (२० अंश, २ कला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, १३ कला पूर्व देशान्तरमें) इलोरा गॉव मिलता है, जिसमें एक मुसलमानी दरगाह है । इलोरासे २ मील रौजा, ७ मील दक्षिण-पूर्व दौलताबाद * और १४ मील दक्षिण-पूर्व औरङ्गाबाद है । नन्दगॉवसे २६ मील पीछे चालीसगॉवके रेलवे स्टेसनसे इलोरा करीब ४५ मील है, परन्तु वहॉसे गाड़ीकी सडक नही हैं ।

इलोरा गॉव गुफामन्दिरोंके लिये वहुतही प्रसिद्ध है । ऐसा मनोहर और आश्चर्यजनक शिल्पविद्याका स्मारक चिह्न, जो पहाडसे पत्थर काटकर वनाये गये हैं, भारतवर्पमें सहमा देख नहीं पड़ता । हिंदुस्तानके चट्टानोंमें वने हुए गुफामन्दिर ईशासे २५० वर्प पहिलेसे ८०० वर्प पीछे तकके हैं । सबसे प्रथम वौद्धोंने उसके पीछे हिन्दुओंने और हिन्दुओंके पश्चात् जैनोंने गुफामन्दिर वनवाये, जिनमे वौद्धोंके अधिक हैं । पश्चिमी भारतमें ५० से अधिक झुण्डोमें छोटे वड़े ९०० से अधिक गुफामन्दिर है । इनमे वम्बई हाते और इसके आसपासमें वहुत है । इनके अलावे अप्रसिद्ध गुफा मन्दिरोंके झुण्ड उडीसा, सिंध, पञ्जाब और वलुचिस्तानमें हैं ।

इलोरा गॉवके पास अर्द्धचन्द्राकारकी शकलकी पहाडीमें उत्तरसे दक्षिण १¼ मील तक गुफा मन्दिर फैले हुए हैं । अजन्ताके गुफामन्दिर खडी पहाडीमें वने है, किन्तु इलोराके गुफामन्दिर पहाडीके ढालूए वगलमे हैं, इससे प्राय. सम्पूर्ण गुफाओंके आगे आंगन वने हैं वहुतेरोंके आगे एक दीवार है और उनके भीतर जानेके लिये एक एक रास्ता वना है । आगे दीवार होनेसे वाहरीसे गुफामन्दिर नहीं देख पडते हैं ।

---

* अब मनमार जंक्शनसे दौलताबाद होकर रेल्वे निकली है । मनमारसे ६३ मील पूर्व-दक्षिण दौलताबाद है ।

यहाँ बौद्ध, हिन्दू और जैनगुफाओंके अलग अलग सिलसिले है;—दक्षिण तरफ १२ बौद्ध गुफायें; मध्यमें गुफाओके ऊपरवाले छोटे गुफाओको छोड़कर जो १७ से अधिक हैं, १७ हिन्दू गुफाये और उत्तरमें ५ जैन गुफाये हैं गुफाओंके आगे बड़े बड़े झरने और पहाड़ीकी नेवपर झाड़ी और वृक्ष हैं।

बौद्ध गुफाओंमें सबसे अधिक प्रसिद्ध ये हैं;—पहली धारवार गुफा, जो सबसे अधिक पुरानी है, दूसरी विश्वकर्माकी चैत्य गुफा, जो ८५ फीट लम्बी है, तीसरी दो मञ्जिली गुफा और चौथी तीन तलवाली गुफा। विश्वकर्माकी सभामे एक बहुत बडी बुद्धकी मूर्ति है, जिसको वहाँके लोग विश्वकर्मा कहते है।

सम्पूर्ण गुफाओंमे प्रधान, सबसे अधिक उत्तम कैलास नामक गुफामन्दिर है। कहा जाता है कि ८ वी सदीमें सूबेबरारके एलिचपुरके राजा यदुने, जिसने इलोरा नगरको कायम किया, यहाँ कैलास आदि गुफामन्दिर बनाये। यह बाहरसे मालूम होता है कि मैदानमे बना हुआ एक मन्दिर है। भीतरके समान इसके वाहरसे भी पत्थर काटकर निकाल दिया गया है। भीतर कई गुफा मन्दिर हैं; जिनमें आठ(दश फीट ऊँची बड़ी बड़ी मूर्तियाँ बनी हुई है। दीवारोंमें चारों तरफ जिन्दे जानवरोंके समान बड़े बडे हाथी, सिंह, घडियाल, हरिन, हंस और बैल चट्टान काटकर बनाये गये हैं;—पहाड़ोंके ढालू बगल पर १०० फीट गहड़ा १५० फीट चौड़ा और २७० फीट लम्बा आँगनकी शकलका खन्दक है, जिसके बीचमें १६४ फीट पूर्वसे पश्चिमको लम्बा और १०९ फीट उत्तरसे दक्षिणको चौड़ा और लगभग ५० फीट ऊँचा खास कैलाश मन्दिर खड़ा है। आंगनके आगे एक परदा छोड दिया गया है, जिसके बाहरी बगल पर शिव, विष्णु आदिकी बहुत सी बड़ी बड़ी मूर्तियाँ, भीतरी बगलपर कोठरियाँ और मध्यमें रास्ता है। जिसके दोनों तरफ दो कोठरियां है। उससे आगे जानेपर कमलोपर हाथियोंके साथ लक्ष्मीकी मूर्ति देख पड़ती है। दहिने और बायें आंगनके आगेका हिस्सा चन्द फीट नीचा है। उसके उत्तर और दक्षिणके अखीरके पास जिन्दे हाथीके समान दो बड़े हाथी खड़े हैं। फिर पूर्व जाकर चन्द सीढ़ियोंके ऊपर चढ़ने पर मन्दिरका एक बड़ा कमरा मिलता है जिससे आगे पुल द्वारा चौखटा मण्डपमें जाना होता है; जिसमें नन्दी बैल है; इसमे दो दरवाजे और दो खिड़कियाँ है। खिड़कियोंके सामने मण्डपके दोनों तरफ ३८ फीट ऊँचे दो ध्वजास्तम्भ खड़े हैं; जिनके सिरोपर पहले सिंह थे। नन्दीसे आगे एक दूसरा पुल लांघने पर एक बड़ा कमरा मिलता है, जिसके दरवाजे पर दो बड़े द्वारपाल बने है। आखीरके कमरेमें जिसमे उत्तम सङ्गतरासीका काम है, शिवलिङ्ग है।

एक बरंडेमें देवताओके ४३ झुण्ड है; जिससे पुराणोंकी कथा और लीला जाहिर होती है। पहली हिन्दू गुफाको रावणकी खाई कहते हैं जिसमे दुर्गा, लक्ष्मी, शिव, पार्वती आदिकी ऐतिहासिक कर्तव्यताको बहुत सी मूर्तियाँ सङ्गतरासीसे बनी हुई है।

हिन्दू गुफाओंमें दश अवतारकी गुफा सब गुफाओंसे पुरानी है, उसका बड़ा कमरा १०३ फीट लम्बा और ४५ फीट चौड़ा है; जिसके भीतर ४६ पाये बने है।

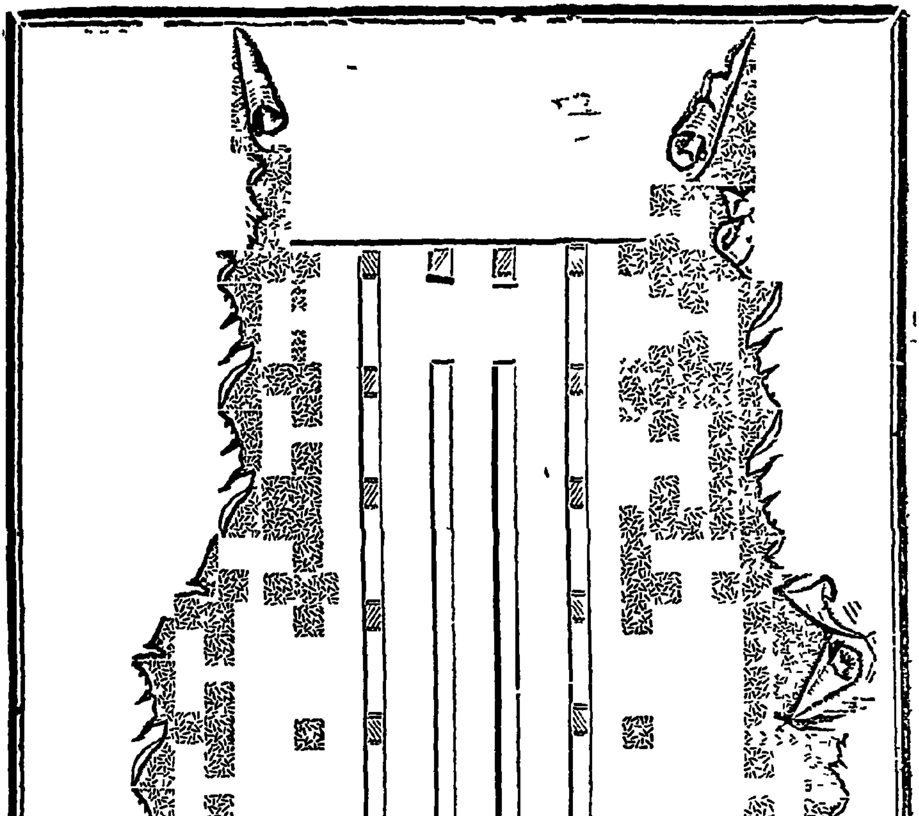
धारवाडा

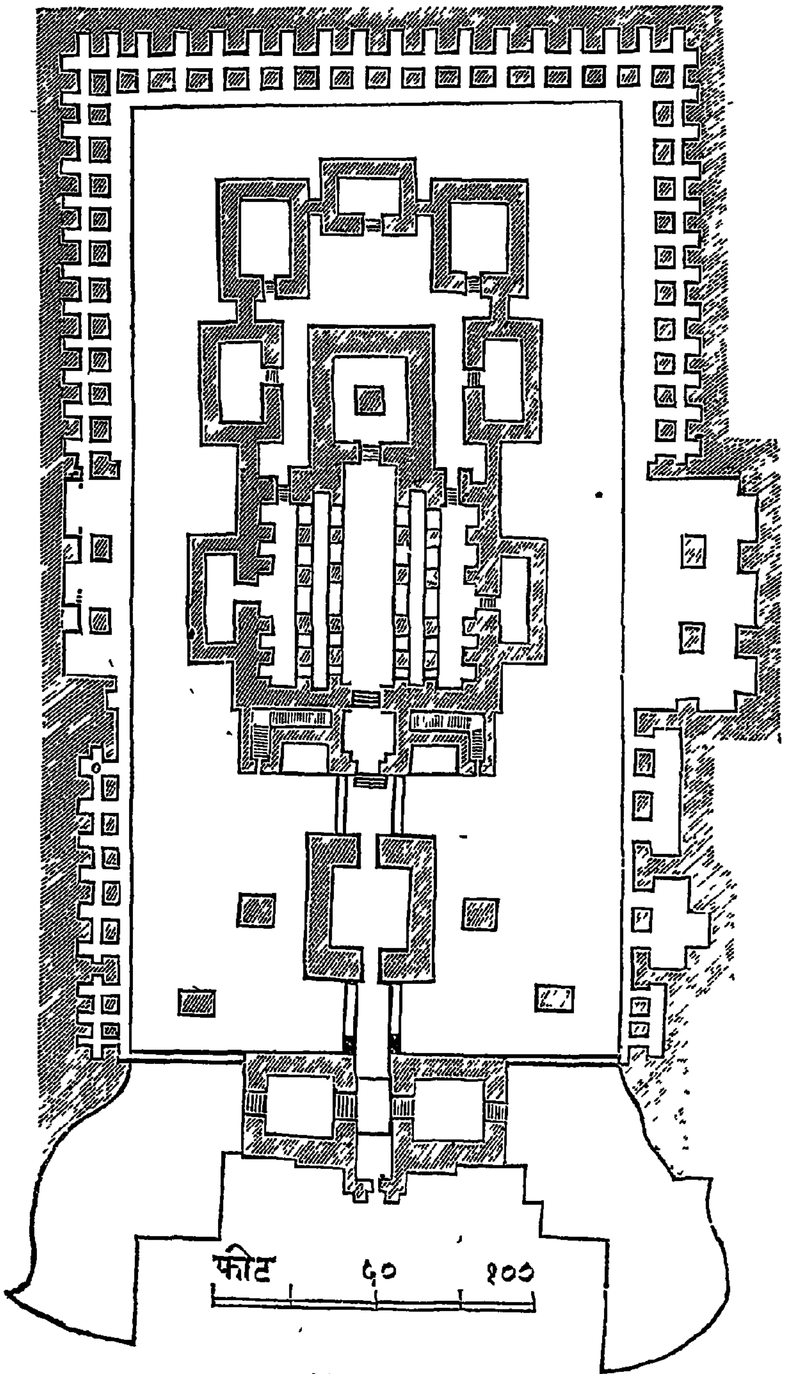

कैलास

हिन्दू गुफा मन्दिरोंसे करीब १ मील (अखीर) उत्तर जैन गुफाओंको एक पगडण्डी गई है; जहाँ जगन्नाथसभा और इन्द्रसभा बनी है। वहाँ चन्द छोटी छोटी कोठरियाँ और अनेक छोटी तथा एक बड़ी जैन प्रतिमा है।

इनके अतिरिक्त वहाँ आदिनाथ सभा, परशुराम सभा, लंका, जनवासा, तीनलोक, इत्यादि बहुतेरे स्थान बने हुए हैं। इलोराके सम्पूर्ण मदिर एक उसी पत्थरके पहाडमें पत्थर खोदकर बनाये गये हैं अर्थात् उसमें कोई पत्थर अथवा ईंटा नहीं जोड़े गये हैं।

रौजा।

इलोराके गुफाओंसे २ मील दूर (दौलताबादसे ६ मील पश्चिमोत्तर हैदराबादके राज्यमें २२०० आदमियोंकी बस्ती रौजा है, जिसके चारोंतरफ औरङ्गजेबकी बनवाई हुई पत्थरकी ऊँची दीवार है। सडकके दोनों तरफ बहुतेरे स्थानोंमें पुरानी तबाही हालतमे मसजिदे और कबरे पाई जाती हैं।

रौजाका आब हवा खुशनुमा और मातदिल है। गरमीके महीनोंमे स्वास्थ्यके लिये वहाँ लोग आते हैं। यह दक्षिणके मुसल्मानोंका करवला (पवित्र स्थान) है और यहा बहुतेरे प्रसिद्ध मुसलमानोंके कबरस्थान होनेसे यह मशहूर है। यहाँ औरङ्गजेब बादशाह, उसका लडका आजिमशाह, हैदराबाद खान्दानके कायम करनेवाला आसफजाह, उसका दूसरा लडका नासिरजङ्ग, पिछला निजामशाही बादशाहका मन्त्री मलिकअम्बर, गोलकुण्डाका कैदी राजा थानाशाहकी कबरें हैं।

औरङ्गजेबका मकबरा—रौजा बस्तीके उत्तर और दक्षिणके फाटकके बीचमें औरङ्गजेबका मकबरा है। पहले गुम्बजदार पेशगाह और फाटकका रास्ता मिलता है, जिसको लगभग सन् १७६० में औरङ्गाबादकी एक वेश्याने बनवाया उसके भितर चौगान अर्थात् आँगन है, जिसके चारोंओरकी इमारतोंमेंसे चन्दमें मोसाफिर टिकते हैं और एकमें स्कूल है। दक्षिग तरफ मध्यमे एक छोटा नौबतखाना और पश्चिम तरफ एक बड़ी मसजिद है, मसजिदके उत्तर एक फाटक है, जिससे भीतरके आँगनमे जाना होता है। आँगनके दक्षिण–पूर्वके कोनेके पास एक वृक्षके नीचे ३ फीट ऊँचे पत्थरके चबूतरेपर ५ फीट ऊँची मार्बुलकी टट्टीसे घेरी हुई दिल्लीके बादशाह औरङ्गजेबकी कबर है। औरङ्गजेब सन् १६५८ में बादशाही तख्तपर बैठा और सन १७०७ की फरवरीमें अहमदनगरमें मरगया।

दूसरी कबरें—औरङ्गजेबकी कबरके पूर्व मार्बुलसे बना हुआ एक छोटा चौखूटा घेरा है, जिसमें एक फकीरकी लडकीकी, औरङ्गजेबके दूसरे लड़के आजिमशाहकी और आजिमशाहका स्त्रीकी कबर है। इस घेरे और औरङ्गजेबकी कबरके बीचमे सैयद जैनुद्दीनका मकबरा है, जिसके दरवाजेपर चाँदीका पत्तर जड़ा है।

औरङ्गजेब और आजिमशाहकी कबरोंके सामने हैदराबादके पहला निजाम आसिफजाहका सुन्दर मकबरा है। यहाँ एक चौगानके चारों तरफ बरण्डे और पूर्व एक नौबतखाना है और पश्चिमकी इमारतमें कुरानकी शिक्षा होती है। इसके दरवाजेसे पश्चिमके दूसरे आँगनमें जाना होता है; जिसमें बहुतसी कबरें हैं। उसके पूर्वमुखकी इमारतमें, जिसमें चारोंतरफ लाल पत्थरकी जालीदार टट्टी है, आसफजाह और उसकी एक स्त्रीकी कबर है। वहाँ सैयद हजरतबरहनुद्दीन एक प्रसिद्ध फकीरकी, जो सन् १३४४ ई० में रौजामें मरा था, कबर है।

दौलताबाद।

रौजासे ६ मील पूर्व-दक्षिण और औरङ्गाबादसे १० मील पश्चिमोत्तर हैदराबादके राज्यमे (१९ अंश, ५७ कला, उत्तर अक्षॉश और ७५ अंश, १८ कला, पूर्व देशान्तरमें) दौलताबाद एक पुराना कसबा है,उसको पूर्व समयमें लोग देवगिरी कहते थे;जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय १२४३ मनुष्य थे*। दौलताबाद किला प्रसिद्ध है। जिसको देखनेके लिये एक अफसरसे इजाजत लेना होता है। दौलताबादसे ६ मील दूर घुश्मेश्वर शिव हैं।

किला—५०० फीट ऊँची गावदुमी खड़ी-पहाड़ी पर १३ वीं सदीका बना हुआ किला है, जिसके बाहरीका घेरा २¾ मीलका है। किलेके नीचे लगभग ३० फीट चौड़ी खाई और पूर्वतरफ फाटक है। खाईपर पत्थरका छोटा पुल बना है। तीसरे फाटकके पास ५६ फीट ऊँचा एक बुर्ज है। चौथे मेहराबी रास्तेके बाद दाहिने तरफ एक पुराना हिन्दू मन्दिर देखनेमें आता है। एक तालावके बगलसे होकर बायें तरफ घूमते हुए एक रास्ता एक मसजिदको गया है। उत्तर ओर २१० फीट ऊँचा एक मीनार मिलता है, जिसको मुसलमानोंने इस किलेके विजयके स्मरणार्थ बनवाया। मीनारके सिरपर चढ़नेसे चारो तरफ देशका सुन्दर दृश्य देखनेमें आता है। एक कमरेमें पारसी लेख है, जिसके अनुसार यह सन् १४३५ ई० में बना था।

किलेमें एक तोप महम्मदहसनकी बनवाई हुई २२ फीट लम्बी, जिसके मुखका व्यास ८ इंच है, दूसरी एक बैठकीपर १९½ फीट लम्बी, जिसका सुराख ७ इंच है और तीसरी एक बड़ी तोप गुजराती लेखके साथ है। किलेमें निजाम सरकारके लगभग १०० सिपाही रहते हैं। किलेके भीतर पहाड़ीके शिखरपर एकनाथ स्वामीके गुरु जगन्नाथ स्वामीका समाधि मन्दिर है, जिसके दर्शनको हिन्दू लोग जाते हैं। दीपके प्रकाशसे लोग अंधेरे मन्दिरमें दर्शन करते है।

इतिहास—सन् १२९३ में अलाउद्दीनने, जो पीछे दिल्लीका बादशाह हुआ, देवगिरिको जो, उस समय महाराष्ट्रकी हिन्दू बादशाहतकी राजधानी था, लेलिया। वह १५००० पाउन्ड सोना, १७५ पाउन्ड मोती, ५० पाउन्ड हीरा और २५००० पाउन्ड चॉदी और आसपासके जिलोके साथ एलिचपुरको लेकर और वहॉके राजा रामचन्द्रको अपने आधीन बनाकर महासरा उठाकर चला गया। सन् १३०६ में रामचन्द्र बागी हुआ और कैदी बनाकर दिल्ली भेजा गया, किन्तु बादशाहने रामचन्द्रको उसका अधिकार फिर दे दिया। उसके मरनेपर उसका पुत्र शङ्कर मुसलमानोंसे बागी हुआ, तब मुसलमान जनरल काफूरने जाकर दौलताबादके किलेको ले लिया और राजा शंकरको मारडाला। सन् १३३८ में गयासुद्दीन तोगलकके पुत्र महम्मद तोगलकने देवगिरिको मुसलमानी राज्यकी राजधानी बनानेकी इच्छाकी, वह दिल्लीके निवासियोंको दिल्लीसे लगभग ८०० मील दूर देवगिरिमें ले गया। उसने किलेको मजबूत किया और देवगिरिका नाम दौलताबाद रक्खा। दौलताबाद प्रसिद्ध हुआ। उसके कई एक वर्षबाद गुलबर्गाका बहमनी राजा, उसके पीछे अहमदनगरके निजामशाही वंशवाले, उसकेबाद मुगल खॉदानके बादशाह दौलताबादके शासक

* मनमार जंक्शनसे पूर्व ओर हैदराबादको एक रेलवे लाइन निकली है, उसपर मनमारसे ६३ मील पूर्व दक्षिण और औरंगाबादसे ८ मील पश्चिमोत्तर दौलताबादका रेलवे स्टेशन है।

हुए। सन् १७०७ में औरङ्गजेबके मरनेके पीछे दौलतावादका किला निजाम घरानेके नियत करने वाले आसफजाहके हाथमें आया, जिनके वंशधरोंके अधिकारमें यह अब तक है।

औरंगाबाद।

दौलतावादके किलेसे पूर्व-दक्षिण औरङ्गावाद तक ८ मीलकी पक्की सड़क है। इलोरासे १४ मील और नन्दगॉवके रेलवे स्टेशनसे ५६ मील पूर्व-दक्षिण हैदरावादके राज्यमें जिलेका सदर स्थान औरङ्गाबाद एक कसवा है, जो पहले किरकी नामसे मशहूर था *। सन् १६१० मे मलिकअम्वरने इसको कायम किया। औरङ्गाबादसे ६८ मील दक्षिण-पश्चिम अहमदनगर है

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय औरङ्गाबाद और उसकी छावनीमे ३३८८७ मनुष्य थे, अर्थात् १७१८६ पुरुष और १६७०१ स्त्रियॉ। इनमे १८९०७ हिन्दू, १४०४१ मुसलमान, ५११ जैन, ३१६ कृस्तान, ६० पारसी, और ५२ सिक्ख थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह हैदरावादके राज्यमें दूसरा शहर है।

कसबेके चारोंओर पक्की दीवार, जिसके कोनोपर टावर हैं, वनी हुई है, जिसके भीतर वहुतेरी इमारतोके खण्डहर हैं। औरङ्गजेबका वनवाया हुआ महल उजड गया है। कसवेके पास एक छोटी नदी वहती है। कसवेसे पूर्व चालीस पचास छोटे वडे मकवरे और पश्चिम फौजी छावनी है। औरङ्गावादमें हैदरावाद राज्यका सदर तालुकेदार रहता है। गेंहू, कपास वरतन इत्यादिकी तिजारत होती है औरङ्गावाद जिलेमें कादिरावाद एक कसवा है, जिसमें सन् १८९१ को मनुष्य-गणनाके समय २३३५३ मनुष्य थे।

रावियादुर्रानीका मकवरा—रावियादुर्रानी दिल्लीके वादशाह औरङ्गजेवकी लड़की थी। यह वड़ा मकवरा शहरसे १ मील पूर्वोत्तर पुराने कवरगाहके करीव ३०० गज दक्षिण है। इसके वडे फाटकमे पीतलका पत्तर जडा है। इसके किनारेपर लिखा है कि यह उमदे मकबरेका दरवाजा सन् १०८९ हिजरी (सन् १६७७ ई०) में वना। वागमे एक लम्वी तङ्ग जगहमें पानी है, जिसमें फौआरे इस्तमाल होते थे। पानीके दोनो तरफ रास्ता है, मकवरेकी दीवारमे ६ फीट ऊंचा, पीतल जडे हुए दरवाजेका फाटक है, जिसमें अजीव तरहकी नकाशीके फूल और सांप वने हैं। मकबरेके भीतर मार्वुलके ऊँचे चवूतरेपर ८ पहलकी मार्वुलकी झंझरीदार टट्टियोके भीतर रावियादुर्रानीकी कवर है। निजाम सरकारने इसकी मरम्मतमें वहुत खर्च किया है। मकवरेके पश्चिम ईटोंकी मसजिद है।

मसजिदें—छावनीसे वेगमपुरा पुलपर जानेवाली सड़कके दहिने घूमनेपर एक खूबसूरत वागमे मछलियोंसे भरा हुआ एक तालाव मिलता है जिसका पानी उमड़कर नीचेके दूसरे तालावमें गिरता है और फिर एक तङ्ग नालेमे वहता है। वहाँ वोखारेका वावाशाह, जो औरङ्गजेवका उपदेशक था, दफन किया गया है। वागके वाद एक वडे तालावके पास एक उत्तम मसजिद है, जिसकी छत्तके नीचे पायोंके ४ कत्तार है। मसजिदके दक्षिण-पश्चिम एक छोटे वागमें हलके रङ्गके मार्वुलसे वना हुआ एक खूबसूरत मकवरा है।

---

* मनमार जंक्शनसे हैदरावादको रेलवे लाइन गई है, मनमारसे पूर्व दक्षिण ६३ मील दौलतावाद और ७१ मील औरंगावादका रेलवे स्टेशन है।

खाम नदीके किनारेकी पनचक्कीसे ¾ मील उत्तर शहरका पुराना मक्का फाटक और मक्का पुल है। फाटककी इमारत ४२ फीट ऊँची है। फाटकके भीतर मलिकअम्बरकी बनवाई हुई काले पत्थरकी मसजिद है।

सरकारी मकानके निकट जुमा मसजिद है। मसजिद और उसके मीनार बहुत ऊँचे नहीं हैं मसजिदके सम्पूर्ण अगवासमें अपूर्व जालीदार काम है। मलिकअम्बरने आधी मसजिदको और औरङ्गजेबने बाकीको बनवाया।

सरकारी आफिस—छावनीके दक्षिण-पूर्व औरङ्गजेबके गढ़में सरकारी आफिस हैं। वहाँ एक सुन्दर बड़े कमरेके आगे एक सुन्दर तालाब और पीछे एक खूबसूरत बाग है; फिर उसके पीले बारहदरी या सरकारी हौस है,जिसके आगे एक सुन्दर तालाब है। औरङ्गजेबके गढ़की निशानीमें अब केवल एक मेहराबी राह है। यहाँ एक समय हजारहाँ हथियार बन्द आदमियोंके साथ ५३ राजा औरंगजेब बादशाहकी कचहरीमें हाजिर रहते थे; उस समय औरङ्गाबाद दक्षिणकी दिल्ली था।

औरङ्गाबादके गुफामन्दिर—शहरसे लगभग २ मील उत्तर पहाड़ियोंके बगलमें गुफामन्दिर हैं। पहले और दूसरे झुण्डमें ९ बौद्ध गुफाये हैं; जिनसे लगभग १ मील पूर्व तीसरे झुण्डमें ३ गुफामंदिर हैं; उनमे प्रधान ये हैं;—गुफा नं० १ के दरवाजेके बायें उपदेश करते हुए बुद्धकी मूर्ति है, जिसके आसपास कई सेवकोंकी मूर्त्तियाँ हैं। बगलके दरवाजेके ऊपर दो पल्थी मारकर बैठी हुई और तीसरी अपने गणोंको उपदेश देती हुई बुद्धकी प्रतिमाँ हैं। प्रधान फाटकके दहिने बुद्ध और बायें उन्हींके समान ३ सूरतें हैं। नीले पत्थरकी ६ फीट ऊँची बुद्धकी एक सूरत बैठी हुई है।

नं० २ चैत्यगुफा अर्थात् बौद्ध मन्दिर है। यह इलोराके विश्वकर्माकी गुफाके समान अर्द्ध गोलाकार छतके साथ है।

नं० ३ विहार अर्थात् बौद्ध मठ और धर्मशालाके साथ मन्दिर है। मध्यके कमरेमे १२ खाये हैं। बीचमें ९½ फीट ऊँची बुद्धकी प्रतिमा है, जिसके पास बहुतेरी मूर्तियाँ पूजा कर रही हैं। बाहरका बरंडा बिगड़ रहा है।

नं० ४ आठ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा एक छोटा विहार है, जिसमे उपदेश करते हुए बुद्ध बैठे हैं। दीवारमे चारों तरफ छोटी छोटी बुद्धकी मूर्तियाँ हैं।

नं० ५ अधिक ऊँचाई पर एक साधारण गुफा है।

पैठन—औरंगाबादसे लगभग ३० मील दक्षिण गोदावरी-नदीके किनारे पर पैठन है, जिसका वृत्तान्त आगे लिखा जायगा। यात्री लोग पैठनसे पर्णी वैद्यनाथ और नागनाथके दर्शनको जाते हैं और घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिङ्गके दक्षिणसे आनेवाले यात्री पैठन होकर और उत्तरके यात्रीगण दौलताबाद होकर जाते है।

इतिहास—एक समय औरंगाबाद अहमदनगर राज्यके दक्षिणके बड़े भागकी राजधानी था कसबेके क्षेत्रफलके प्रायः ¾ भागमें शहरके खण्डहर फैले हुए हैं। कसबेके २ मील पश्चिम एक बड़ी शहर तलीका खण्डहर देखनेमें आता है। एक समय वहाँ भारी तिजारत होती थी। निजामकी राजधानी हैदराबाद होनेपर इसकी तिजारत घटने लगी।

घुश्मेश्वर।

दौलताबादके ६ मील पश्चिमोत्तर पहाड़ीके दूसरी ओर उसके पादमूलके पास और पैठनसे लगभग ३० मील उत्तर और हैदराबादके राज्यमें वेरुल एक वस्ती है। पैठनसे वेरुलको बैलगाडीका मार्ग है। वेरुलसे $\frac{1}{2}$ मील दूर एक छोटी नदीके किनारे पर घुश्मेश्वरका छोटा शिखरदार मन्दिर पूर्व मुखका बना हुआ है। मन्दिरके आगे अठपहला जगमोहनमें नन्दी है। नदीके किनारे पर एक छोटा पक्का घाट बना है। स्थान निर्जन है। रातको मन्दिरके पास कोई नहीं रहता। यात्री लोग पण्डोंके मकानपर चले जाते हैं। वेरुल वस्ती और घुश्मेश्वर शिवके मन्दिरके बीचमें एक-तालाबके मध्यमे एक बड़ा मन्दिर और उसके चारों कोनोंपर ४ छोटे मन्दिर हैं। घुश्मेश्वर शिवलिङ्ग महादेवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे एक हैं। यह लिङ्ग आधा हाथ ऊँचा है। मन्दिरमें दिन रात दीप जलता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—शिवपुराण,—(ज्ञानसंहिता ३८ वाँ अध्याय) शिवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे घुश्मेश्वर लिङ्ग शिवालयमें स्थित हैं। ज्योतिर्लिङ्गोंके पूजन करनेका अधिकार चारों वर्णोंका है; इनके नैवेद्य भोजन करनेसे सब पापोंका नाश होजाता है।

(ज्ञानसंहिता, ५८ वाँ अध्याय) दक्षिण दिशामें देवसंज्ञक पर्वत (देवगिरि) के निकट सुधर्मा नामक ब्राह्मण रहता था। जब उसके कोई सन्तान नहीं हुई, तब उसने अपनी स्त्री सुदेहाके बहुत हठ करनेपर घुश्मा नामक स्त्रीसे अपना दूसरा विवाह किया। घुश्मा अपने स्वामीकी आज्ञा पाकर नित्य १०८ पार्थिवका पूजन करने लगी। वह नित्य पार्थिवोंको पूजकर एक तालाबमें डाल देती थी। इस भाँति उसने १ लाख लिङ्गोंका पूजन किया। थोडे दिनोंके पश्चात् शिवजीकी कृपासे घुश्माका सुन्दर पुत्र जन्मा। कुछकालके उपरान्त उस पुत्रका विवाह हुआ। सब संबन्धी लोग घुश्माकी प्रशंसा करने लगे। यह देख सुदेहा अति दुःखी होकर अपनी सौतके पुत्रसे ईर्षा करने लगी। एक दिन उसने उस पुत्रको सोते हुए पाकर मारडाला और जिस सरोवरमें घुश्मा पार्थियोंको पूजकर फेंक देती थी, उसीमें उसका शरीर डाल दिया। सवेरा होनेपर ब्राह्मणके पुत्रकी मृत्युकी खबरसे सब लोग दुखी हुए, किन्तु सुधर्मा और घुश्मा यह समाचार पाकर भी शिवपूजनको त्यागकर अपने स्थानसे नहीं उठे। घुश्माने विज्ञान बलसे प्रसन्नता पूर्वक पार्थिव लिङ्गोंको लेजाकर पूर्ववत् उस सरोवरमें विसर्जन किया। जब वह लौटने लगी तब सरोवरके तटपर उसका पुत्र देख पड़ा। वह अपनी मातासे आ मिला। उसी समय घुश्माकी दृढ़ भक्ति और सन्तोष देखकर शिवजीने ज्योतिरूप होकर उसको दर्शन दिया और उससे कहा कि तेरी सौतने तेरे पुत्रको मारा था, मैं प्रसन्न हूं तुम वर मांगो। घुश्मा बोली कि हे स्वामी! मैं यही मांगती हूं कि आप लोककी रक्षाके निमित्त यहाँही स्थित होजाइये। महादेवजीने कहा कि हे सुमध्यमे! तेरेही नामसे मेरा नाम घुश्मेश्वर होगा और यह सरोवर लिंगोंका आलय है, इस लिये यह शिवालय नामसे विख्यात होगा। ऐसा कह शिवजी लिङ्ग स्वरूप होकर पार्वतीके सहित स्थित होगये। उनका नाम घुश्मेश्वर और उस तालाबका नाम शिवालय हुआ। इस लिङ्गका दर्शन करके मनुष्य सब पापोंसे छूट जाता है और शुक्लपक्षके चन्द्रमाके समान उसके सुखकी वृद्धि होती है।

पैठन।

औरङ्गाबादसे (जिससे ५६ मील पूर्वोत्तर नन्दगाँवका रेलवे स्टशन है) लगभग ३० मील उत्तर और अहमदनगरके रेलवे स्टेशनसे लगभग ६० मील पूर्वोत्तर हैदराबाद-राज्यके औरङ्गाबाद जिलेमें गोदावरी नदीके बाँये किनारेपर पैठन एक पुराना नगर है, जो एक समय शक जातिके राजा शालिवाहनकी राजधानी प्रतिष्ठानपुर नामसे विख्यात था। अब तक लोग इसको दक्षिणका प्रतिष्ठानपुर कहते हैं। उसी शालिवाहनके नामसे शालिवाहन शाका चलता है, जो सन् ७८ ई० और विक्रमी संवत् १३५ में आरम्भ हुआ। पैठनसे औरङ्गाबाद तक दिहाती मार्ग और अहमदनगर तक पक्की सड़क है, जिसपर तांगे चलते हैं *। पैठनसे पूर्वोत्तर एक सड़क नागपुर शहरको गई है।

पुराने नगरके एक छोटे भागमे वर्तमान पैठन कसबा है। पूर्वकी भूमिपर पुराने नगरकी निशानियाँ दूर तक देख पड़ती है। कसबेमें बहुतेरे देव मन्दिर बने हुए है। और एकनाथ स्वामीका प्रसिद्ध समाधि मन्दिर है एक समय पैठन रेशमी कपड़ेकी दस्तकारीके लिये प्रसिद्ध था, अब भी कुछ उसका काम होता है।

परणी बैद्यनाथ।

पैठनसे ३० मीलसे अधिक पूर्व हैदराबादके राज्यमें गोदावरी नदीके किनारेपर गङ्गाखेड़ एक वस्ती है, जिससे १६ मील दूर घुश्मेश्वरसे लगभग ८० मील परणी गाँव है। पैठनसे वहाँतक बैलगाड़ीका मार्ग है। परणी वैद्यनाथसे लगभग ६० मील बार्सीरोड और १०० मील अहमदनगरका रेलवे स्टेशन है। परणी गाँवके पास छोटी पहाड़ीके ऊपर वैद्यनाथ शिवका शिखरदार विशाल मन्दिर और एक धर्मशाला है। शिवलिङ्ग आधा हाथ ऊँचा है। मन्दिरमें दिन रात दीप जलता है। पहाड़ीके दोनों ओर पत्थरकी सीढ़ियाँ नीचेसे ऊपरको गई है। एक ओर परणीगाँव और दूसरी ओर एक छोटी नदी और एक पक्का कुण्ड है।

दक्षिणी लोग परणी-वैद्यनाथहीको शिवके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेंका वैद्यनाथ कहते है, किन्तु शिवपुराणकी कथाओंसे विहार प्रदेशके संथाल परगनेके वैद्यनाथ, जिनका वृत्तान्त भारतभ्रमणके तीसरे खण्डमें है, १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमें सिद्ध होते है। तीसरे खण्डके १८ वें अध्यायमें देखिये। एक स्तोत्रमें "परण्यां वैद्यनाथं च" ऐसा लिखा है, किन्तु यह नही जान पड़ता है कि यह श्लोक किस पुस्तकका है।

नागेश।

गङ्गाखेड़से लगभग ३० मील दूर अवढा नामक वस्ती है, जिसके पास अवढानागनाथ अर्थात् नागेशका शिखरदार बड़ा मन्दिर है। गङ्गाखेड़से वहाँतक बैलगाड़ीका मार्ग है। नागेश शिवलिङ्ग शिवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे एक है। मन्दिरके आगे अर्थात् पश्चिम तरफ जगमोहन बना हुआ है। मन्दिर और जगमोहन दोनों खाली हैं, मन्दिरके भीतर एक बगलमें ४ सीढ़ियोंके नीचे एक बहुत छोटी कोठरीमें एक हाथ ऊँचा नागेश शिवलिङ्ग है। यात्रीगण सीढ़ीसे दर्शन करते है। कोठरीमें दिन रात दीप जलता है। मन्दिरके पीछे नदी-

* मनमार जंक्शनसे नई रेलवे हैदराबादको गई है, उसपर मनमारसे पूर्व-दक्षिण ६३ मील दौलताबाद और ७१ मील औरंगाबादका रेलवे स्टेशन है।

की मूर्त्ति है। मन्दिरके समीप एक टूटी फूटी धर्मशाला और एक कुण्ड है लोग कहते हैं कि हैदराबादके निजामकी ओरसे घुश्मेश्वर, परणी वैद्यनाथ और अवढा नागनाथ ये तीनों देवताओंके भोगराग इत्यादि खर्चके लिये तीस तीस रुपये मासिक मिलता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—शिवपुराण—(ज्ञानसंहिता, ३८ वाँ अध्याय) शिवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेसे नागेश लिङ्ग दारुकावनमें स्थित हैं। ज्योतिर्लिङ्गोंके पूजन करनेका अधिकार चारों वर्णोंका है। इनके नैवेद्य खानेसे सब पापोंका विनाश होजाता है।

(ज्ञानसंहिता, ५६ वाँ अध्याय) चारोंओरसे १६ योजन विस्तीर्ण दारुका नामक राक्षसीका वन था। श्रीपार्वतीजीके वरदानके प्रभावसे दारुका जहाँ जानेकी इच्छा करती थी, तहाँ पृथ्वी, वृक्ष, महल सब सामग्रीके साथ वह 'वन' जाता था। वह राक्षसी अपने पति दारुकके सहित उस स्थानमें रहकर सब लोगोंको भय देने लगी। जब सबलोग दुःखी हो 'और्व' ऋषिके शरणमें गये, तब उन्होने राक्षसोंको शाप दिया कि यदि राक्षस लोग पृथ्वीमें प्राणियोंकी हिंसा और यज्ञमें विघ्न करेंगे तो प्राण रहित हो जायँगे। देवता लोग यह समाचार पाकर राक्षसोंसे युद्ध करनेका उद्योग करने लगे। तब दारुका राक्षसीने पार्वतीजीके वरके प्रभावसे स्थल सहित अपने वनको लेजाकर पश्चिमके समुद्रमे स्थित किया। अनेक प्रकारके महल उसमें बनगये। सम्पूर्ण राक्षस उसमें सुखसे विहार करने लगे। वे लोग मुनिके शापके भयसे स्थलमें नहीं जाते थे; किन्तु नावमें बैठकर जानेवाले मनुष्योंको पकडकर अपने नगरमें लाकर किसी २ को मारडालते और किसी २ को बन्धनागारमें रखते थे। एक समय वहाँ मनुष्योंसे पूर्ण बहुतसी श्रेष्ठ नौकाएँ आईं। राक्षसोंने सब मनुष्योंको पकड़कर अपने नगरके बन्धनागारमे डाल दिया। उन मनुष्योंका स्वामी वैश्य बड़ा शिवभक्त था। वह शिवजीके विना पूजन किये हुए भोजन नहीं करता था। वह अपने सब साथियोंके साथ बन्धनागारहीमें शिवजीकी मानसी पूजा करने लगा सुप्रिय नामक वैश्य मानसिक पूजा और ध्यानसे जो कुछ शिवजीको निवेदन करताथा, शिवजी उसको प्रत्यक्ष स्वीकार करते थे, परन्तु वह इस बातको नहीं जानता था। इस प्रकारसे ६ मास बीतनेके उपरान्त राक्षसके सेवकोंने वैश्यके आगे शिवजीका सुन्दर रूप देखकर अपने राजासे सब वृत्तान्त कह सुनाया। राक्षसराजने अपने गणोंके साथ जाकर वैश्यको मारनेकी आज्ञा दी। राक्षस गण मारने दौडे। वैश्य भय भीत होकर बोला कि हे शंकर! हमारी रक्षा करो। ऐसी प्रार्थना सुनकर शिवजी ४ द्वार युक्त विवरसे अपने ज्योतिर्लिङ्गके सहित प्रगट हुए। उनके साथ सब उनका परिवार था। वैश्यने शिवजीका पूजन किया। शिवजीने प्रसन्न हो कर वहाँके राक्षसोंको नष्ट भ्रष्टकर डाला और वैश्यको वर दिया कि इस वनमे अपने धर्मके सहित चारों वर्णके लोग सदा विद्यमान रहेंगे। उसी समय दारुका राक्षसी पार्वतीजीकी स्तुति करने लगी, तब पार्वतीजीने कहा कि तुम क्या चाहती हो। राक्षसी बोली कि तुम मेरे वंशकी रक्षा करो। पार्वतीजीने उसको यह वरदान देकर शिवजीसे कहा कि हे आर्य! तुम्हारा वचन युगान्तरमे सत्य होगा; अभी दारुका यहाँ रहकर राक्षसोंका राज्य करेगी। शिवजीने पार्वतीका वचन स्वीकार करके कहा कि मैं इस वनमें निवास करूँगा। जो पुरुष अपने वर्णाश्रममें स्थित रहकर यहाँ मेरा दर्शन करेगा वह चक्रवर्ती होगा। ऐसा कहकर पार्वतीके सहित महादेवजी नागेश नामसे वहाँ स्थित होगये।

चौथा अध्याय।

(बम्बई हातेमें) अहमदनगर, धोंद जंक्शन, पंढर-पुर, बार्सी, शोलापुर, होतगी जंक्शन, और (हैदराबादके राज्यमें) गुलबर्गा।

अहमदनगर।

पैठनसे लगभग ६० मील पश्चिम-दक्षिण और मनमार जंक्शनसे ९५ मील दक्षिण अहमदनगरका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके मध्य विभागमें (१९ अंश, ५ कला, उत्तर अक्षांश और ७४ अंश, ५५ कला पूर्व देशांतरमें) शिवानदीके बांये किनारे पर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसवा अहमदनगर है। मनमार जंक्शन और अहमदनगरके बीचमें गोदावरी नदीपर रेलवेका पुल बना है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय अहमदनगर और इसकी छावनीमें ४१६८९ मनुष्य थे; अर्थात् २२०७३ पुरुष और १९६१६ स्त्रियां। इनमें ३२०२७ हिन्दू, ६३४७ मुसलमान, १८८८ कृस्तान, ११७७ जैन, १८३ पारसी, ३२ यहूदी, २३ एनिमिष्टिक और १२ दूसरे थे।

मनुष्य-संख्याके अनुसार यह बम्बई हातेमें ११ वॉ और भारतवर्षमें ९७ वॉ शहर है।

शहर दश बारह फीट ऊंची मट्टीकी दीवारसे घेरा हुआ है, जिसके जगह जगहके बुर्ज और फाटक उजड़ रहे हैं। शहरके अधिक मकान ईटोंसे बने हुए मामूली दरजेके मुड़ेरेदार है; निवासियोंमें शूद्र अधिक हैं। एक सड़कके बगलोंमें गल्लेकी और दूसरी पर कपड़े इत्यादिकी दूकानें हैं। खास करके मारवाड़ी लोग कपड़े बेचते है। शहरमें तॉवे और पीतलके बहुत बर्तन बनते हैं। इसमें दरी और गलीचे बहुत मजबूत तैय्यार होते है; इनके लिये अहमदनगर प्रसिद्ध है। शहरकी कई एक पुरानी मशजिदें सरकारी आफिस बनी हैं; कई एकमें यूरोपियन लोग रहते है। एक जेलखानेके काममें आती है और एक अस्पताल बनी है। लगभग सन् १६०० ई० का बना हुआ एक मुसलमान शरीफके महलमे जजकी कचहरी होती है। इनके अलावे अहमदनगरमें दो तीन देवमन्दिर; एक आरमेनियन चर्च, एक पारसी अग्निमन्दिर; और एक हाई स्कूल है। शहरके कूपोंका पानी खारा है। दूर दूरसे कई प्रणालीद्वारा शहरमे पानी पहुँचाया जाता है। शहरसे लगभग १२ मील दूर शिवानदीका निकास स्थान है।

रेलवे स्टेशनसे २½ मील पूर्वोत्तर, शहरसे ¾ मील पूर्व गोलाकार शकलका १½ मीलके घेरमें पत्थरका किला है। किलेके चारो ओर चौड़ी खाई है। पूनाकी सड़ककी ओर किलेका दरवाजा है। किलेके निकट २ गिरजे और उसके दक्षिण-पूर्व फौजी छावनी है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ४५८९ मनुष्य थे।

किलेसे २ मील दूर फेरियाबागमें नागर बादशाहोंका पुराना महल है। अहमदनगरक प्रधान दृश्य शहरसे ६ मील पूर्व एक ऊँची पहाड़ीपर चान्दबीबीका तीन मंज़िल

मकबरा है । जमीनके नीचेकी कोठरीमें दो कबर हैं, ऊपरकी पहिली मञ्जिल बीमार खानेके काममें आती है । उसके पूर्व कुछ उत्तर एक बड़ा तालाव है ।

अहमदनगर जिला–इसके पूर्वोत्तर गोदावरी नदी, जो हैदरावादके राज्यसे इसको अलग करती है, पूर्व कुछ दूर तक हैदरावादका राज्य; दक्षिण-पूर्व और दक्षिण-पश्चिम शोलापुर और पूना जिला और पश्चिमोत्तर तथा उत्तर नासिक जिला है । पश्चिमकी सीमाके एक हिस्सेके पास पूर्व ओर फैली हुई सह्याद्रिकी पहाड़ियाँ हैं । जिलेके पश्चिमोत्तर भागमें पहाड़ियोंकी सबसे ऊँची चोटियाँ हैं । जिलेमे हरिश्चन्द्रगढ़ आदि नामके कई महाराष्ट्रोंके पुराने किले हैं । जिलेकी प्रधान नदी गोदावरी जिलेके पूर्वोत्तर और उत्तरकी सीमापर लगभग ४० मील और भीमानदी दक्षणीय सीमापर लगभग ३५ मील वहती है । इनके अतिरिक्त वहुत सी छोटी नदियां हैं । इस जिलेमें कोई वडा वन नहीं है ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय अहमदनगर जिलेका क्षेत्रफल ६६६६ वर्गमील था, जिसमें ७५१२२८ मनुष्य थे, अर्थात् ६८४१८४ हिन्दू, ३९५९२ मुसलमान, १५४९७ जैन, ६८७६ एनिमिष्टिक, ४८२७ क्रस्तान, १७९ पारसी, ६५ यहूदी और ८ सिक्ख । जातियोंके खानेमें ३०४८१८ कुन्वी, ६२०९१ महारा, ३९५२७ धांगड, ३२६३९ माली, ३२५८१ ब्राह्मण, ३००७२ बनजारा, २६७५३ कोली, १९१६५ मांग, १३५२३ चमार, ३२२९ लिङ्गायत, २७९४ राजपूत और शेषमे दूसरी जातियोंके लोग थे । इस जिलेमें महाराष्ट्र अधिक है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय अहमदनगर जिलेके कसबे अहमदनगरमें ४१६८९, धोलकामें १६४९४ और संगमनेरमे १३२६५ मनुष्य थे । पाथरडी, श्रीगोंडा, खरदा, भेंगर और सोनाई छोटे कसबे हैं ।

इतिहास—सन् १४९४ ई० मे अहमद निजामशाह वहरीने अहमदनगरको वसाया । वह विजयानगरके एक ब्राह्मणका लडका था, जो मुसलमान होगया । वह पहिले वहमनी राज्यका एक अफसर था, जिसने वहमनी खान्दानके राज्य टूट जानेपर स्वाधीन हुकूमत करनेवाला वन गया और अहमदनगरको अपनी राजधानी वनाया, उसीसे निजामशाही खान्दान चला । उसका राज्य वरारके वडे भाग, औरङ्गाबादके सूबे और खानदेशके कई एक जिलोंमे और वेंकटसे वेसिनतक कोकनमें फैला था, उसके वाद उसका पुत्र बुरहान निजामशाह उत्तराधिकारी हुआ, जिसको सन् १५४६ में बीजापुरके राजा इब्राहिम आदिलशाहने परास्त किया । सन् १५५६ में बुरहान निजामशाहके मरनेपर उसका पुत्र हुसेननिजामशाह अहमदनगरके तख्तपर बैठा । लोग कहते हैं कि इसीने सन् १५५९ में अहमदनगरके किलेको और लगभग सन् १५६२ में अहमदनगरकी मट्टीकी दीवारको वनवाया । सन् १५६२ में वीजापुरके राजाने उसको अच्छी तरहसे परास्त किया और कई सौ हाथी तथा वहुतेरी तोपोंको उससे छीन लिया, जिनमेंकी पीतलकी वडी तोप बीजानगरमें विद्यमान है । सन् १५८८ में हुसेन निजामशाहको, जो दीवानाके समान हो गया था, उसके पुत्र मीरनहुसेन निजामशाहने मारडाला । मीरनहुसेन केवल १० मास राज्य करनेके उपरान्त मारडाला गया, तव उसका भतीजा इस्माइल निजामशाह तख्तपर बैठा । उसके २ वर्ष वाद इस्माइलके पिताने इस्माइलको तख्तसे उतारकर दूसरा बुरहाननिजामशाहकी पदवी लेकरगद्दीपर

बैठाया। सन् १५९४ में दूसरा बुरहानशाहकी मृत्यु होनेपर उसका पुत्र इब्राहिम निजामशाह उत्तराधिकारी हुआ; किन्तु केवल ४ महीने राज्य करनेके पश्चात् बीजापुरके राजाकी लड़ाई-में वह मारा गया। उसके पश्चात् उसका बच्चा पुत्र बहादुरशाह गद्दीपर बैठायागया और उसकी कोई रिस्तेदार चॉद बीबी; जो बीजापुरके राजा अली आदिलशाहकी विधवा थी, राज्यका काम चलाने लगी। सन् १५९९ में बादशाह अकबरके पुत्रने अहमदनगरको परास्त करके शहरको ले लिया। उस समयसे अहमदनगर बराय नामके दिल्लीके आधीन था, किंतु सन् १६३७ में बादशाह शाहजहॉने इसको पूरे तौरसे अपने अधिकारमें कर लिया। शाह-जहॉके पुत्र औरंगजेब सन् १७०७ की फरवरीमें अहमदनगरमे मरगया और औरङ्गाबाद जिलेके रौजामें दफन किया गया। सन् १७५९ में पूनाके पेशवाने अहमदनगरको ले लिया। सन् १७९७ में पेशवाने इसको दौलतराव सिंधियाको दिया। सन् १८०३ में दो दिन लड़ाई होनेके उपरान्त अङ्गरेजी फौजने अहमदनगरके किलेको ले लिया। किलेमें अबतक उस समयका दर देख पड़ता है। कुछ दिनोंके पीछे अङ्गरेजी सरकारने पेशवाको अहमद-नगर दे दिया; किन्तु सन् १८१७ में पूनाकी सन्धिके अनुसार यह किला फिर अङ्गरेज महाराजको मिल गया। पीछे अहमदनगर एक जिलेका सदर स्थान बनाया गया।

धोंद जंक्शन।

अहमदनगरसे ५१ मील और मनमार जंक्शनसे १४६ मील दक्षिण धोंदमें, रेलवेका जंक्शन है। स्टेशनके पास छोटा धर्मशाला है। स्टेशनसे $\frac{1}{2}$ मील भीमा नदीके पास गाडौन नामक एक बड़ी वस्ती है, जिसमें विट्ठलनाथका बड़ा मन्दिर दूरहीसे देख पड़ता है।

धोंद जंक्शनसे ग्रेट इंडियन पेनिनसूला रेलवेकी लाइन तीन तरफ गई है। जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रतिमील २$\frac{3}{4}$ पाई लगता है।

(१) धोंदसे पूर्व-दक्षिण—

मील	प्रसिद्ध स्टेशन।
१८	डिकसल।
५७	केम।
६८	बार्सीरोड।
९७	मोहल।
११७	शोलापुर।
१२६	होगती जंक्शन।
१८७	गुलबर्गा।
२०४	शाहाबाद।
२१०	बाड़ी जंक्शन।
२७७	रायपुर।

(२) धोंदसे पश्चिमोत्तर।

मील	प्रसिद्ध स्टेशन।
४८	पूना।
१३४	कल्याण जंक्शन।
१६७	बम्बई

पूनासे दक्षिण सर्दन मरहटा रेलवे पर ७७ मील सितारारोड, ८३ मील कोरेगाँव; १३० मील कोल्हापुर २४५ मील बेलगॉव और २७८ मील लोंडा जंक्शन।

लोंडा जंक्शनसे पूर्व कुछ दक्षिण ४३ मील धारवाड़ ५६ मील हुबली जंक्शन और ९२ मील गदग जंक्शन।

(३) धोंदसे उत्तर—

मील	प्रसिद्ध स्टेशन।
५१	अहमदनगर।
१४६	मनमार जंक्शन।

पंढरपुर।

धोंद जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व १८ मील डिकसलका स्टेशन, २० मील भीमा नदी पर रेलका पुल और ६८ मील वार्सीरोड नामक रेलवेका स्टेशन है। स्टेशनसे ३० मील दक्षिण (१७ अंश, ४० कला, ४० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, २२ कला, ४० विकला पूर्व देशान्तरमें) वम्बई हातेके दक्षिणी विभागके शोलापुर जिलेमें भीमानदीके दक्षिण अर्थात् उसके दहिने किनारेपर पढरपुर सबडिवीजनका प्रधान कसवा और वम्बई हातेकी यात्राके प्रधान स्थानोंमेंसे एक पंढरपुर है वार्सीरोडके स्टेशनसे पंढरपुर तक पक्की सडक वनी है। उस सडकसे घोडेकी डाकगाडी वहुतेरे तॉगे और वैलगाडियाँ पंढरपुर जाती है। वार्सीरोडके स्टेशनसे २९ मील दक्षिण-पूर्व मोहलका रेलवे स्टेशन है। जहॉसे ३४ मील दक्षिण-पश्चिम पंढरपुर तक कची सडक गईहै मोहलसे २० मील दक्षिण-पूर्व शोलापुरका रेलवे स्टेशन है, जिससे ३८ मील पश्चिम पंढरपुरको एक सडक गई है। २० मील तक घोडे गाड़ीकी डाक चलती है, उसस आगे वैलगाडीकी सडक है। भीमानदीके उत्तर किनारेसे पंढरपुर कसवेका सुन्दर दृश्य दृष्टि गोचर होता है। यात्रीगण नौकाओं द्वारा नदी पार होकर पंढरपुर पहुँचते हैं। भीमानदी जिसको भीमारथीभी कहते हैं, वम्बई हाते और हैदरावादके राज्यमें दक्षिण पूर्वको वहती हुई अपने निकास स्थानसे लगभग ५०० मील वहनेके पश्चात् कृष्णाके रेलवे स्टेशनसे दक्षिण कृष्णा नदीमे जा मिली है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पढरपुर कसवेमें १९९५४ मनुष्य थे; अर्थात् १८३१६ हिन्दू, १०२६ मुसलमान ६११ जैन और १ कृस्तान।

पंढरपुर कसवेका एक भाग, जिसमें विट्ठलनाथजीका मन्दिर है, पॉढरीक क्षेत्र करके प्रसिद्ध है विट्ठलनाथको लोग विठोवाभी कहते हैं। वर्तमान मन्दिर सन् ८० वीं ई० का वनाया हुआ है, इसकी लम्बाई पूर्वसे पश्चिमतक ३५० फीट और चौडाई उत्तरसे दक्षिण तक १७० फीट है। प्रधान मन्दिर ४० फीट लम्वा और इतनाही चौडा है। बाये चॉदीके पत्तरसे मढ़ा हुआ एक स्तम्भ है, जिसको यात्रीगण अंकमाल करते है। ८ फीट लम्वी और इतनीही चौड़ी कोठरीमें पांडुवर्ण विट्ठलनाथ पूर्व मुखसे विराजते हैं। यात्रीगण भीमानदीमें स्नान करके विट्ठलनाथका दर्शन करते हैं। वहॉ चन्द्रभागा तीर्थ, सोमतीर्थ आदि अनेक पवित्र स्थान हैं। वहुतेरे देवमन्दिर और पत्थरके ११ घाट वने हैं। वहुतेरे दो मञ्जिले तीन मञ्जिले मकान देखनेमें आते हैं। विष्णुपद और नारदकी रेतीपर अनेक मन्दिर वने हुए है एक अस्पताल है। रामवागमें लक्ष्मीनारायण और कोदंडराम स्वामीका मन्दिर है।

पंढरपुरमें नित्य यात्री जाते है। प्रतिवर्ष वहॉ तीन मेले होते हैं। आषाढ़के मेले १००००० से १५०००० तक; कार्त्तिकके मेलेमें ४०००० से ५०००० तक और चैत्रवाले मेलेमें २०००० से ३०००० तक यात्री जाते हैं और प्रत्येक महीनेके शुक्लपक्षकी एकादशीके दिन ५००० से १००००तक यात्री पण्ढरपुरमें एकत्र होते है। मेलोंके समय प्रत्येक यात्रीसे चार आना (टिकट) लिया जाता है। सन् १८८२ ई० में म्युनिसिपल्टीको तीनों मेलोंसे४० हजार रुपयेसे अधिक आमदनी हुई थी पण्ढरपुरमें थोड़ी तिजारत होती है। वहॉसे चावल, मकई, सन, दाल, छड़ी इत्यादि वस्तुयें दूसरे स्थानोंमें जाती हैं।

विट्ठलनाथ विष्णुके अवतार समझे जाते हैं। कथा ऐसी है कि पण्डलीक नामक एक ब्राह्मण अपने पिता माताको छोड़कर काशी जाता था। वह पण्ढरपुरमें एक ब्राह्मणके घरमें ठहर गया। पण्ढरपुरका ब्राह्मण अपने पिता माताका भक्त था, इस लिये गङ्गा, यमुना और सरस्वती उसके घर लौंड़ीका काम करती थीं। यह देखकर ब्राह्मणयात्री अपनी यात्राको छोड़कर अपने पिता माताकी सेवा करने लगा।

एक दिन श्रीकृष्ण भगवान् अपनी स्त्री रुक्मिणीको खोजते हुए, जो घरसे रुष्ट होकर वहाँ आई थी, पण्ढरपुरमें आये। भगवान्ने देखा कि पण्डलीक ब्राह्मण अपने माता पिताका चरण धो रहा है और मेरे आनेपर भी चरण धोनेके कामसे निवृत्त नहीं होता है; तब उन्होंने उसकी ऐसी पिता मातामें दृढ़ भक्ति देखकर प्रसन्न हो उससे कहा कि हे विप्र! तुम इच्छित वर माँगो। पण्डलीकने कहा कि तुम जैसे हो उसी प्रकार सर्वदा स्थित रहो। उसने एक पाषाण दिया; जिसपर कृष्ण भगवान् स्थित हुए, जो विट्ठल और विठोवा नामसे विख्यात होगये।

ऐसा प्रसिद्ध है कि विष्णुस्वामी संप्रदायके नामदेवजीका जन्म पण्ढरपुरमें हुआ था। एक वामदेव नामक जातिका छीपी पण्ढरपुरमें रहता था, उसकी पुत्री बाल विधवा होगई, तब वामदेवने उससे कहा कि तुम भगवान्की सेवा करो, वह सब मनोरथ पूरा करते हैं। पुत्री पिताके वचनका विश्वासकर बड़ी निष्ठा भक्तिसे भगवान्की पूजा करने लगी। जब वह युवती हुई तब उसको पुत्रकी कामना हुई। भगवान्के प्रभावसे उसके गर्भ रहगया, जिससे नामदेवका जन्म हुआ। बालपनहींसे नामदेवजीकी भगवान्मे प्रीति हुई। वह अपने नाना वामदेवको भगवान्की मूर्त्तिका पूजन करता हुआ देखकर उनसे कहता था कि मुझको भगवान्की पूजा करने दो। एक दिन वामदेव, नामदेवको भगवान्की पूजाका काम सौंपकर किसी गाँवमे चला गया नामदेव संध्याके समय कटोरेमें दूध और मिश्री भगवान्के आगे लेगया और हाथ जोड़कर बोला कि हे महाराज! यह दूध है आप पान कीजिये। वह जानता था कि जैसे लड़के दूध पिया करते हैं वैसेही भगवान् भी पीते हैं। जब भगवान्ने दूध नहीं पिया, तब लड़का नामदेव निरास होकर रोते रोते विना भोजन किये हुए पड़ा रहा। तीसरे दिन उसने सोचा कि आज हमारे नाना आवेंगे, हमको पूजा करनेकी रीति नहीं आती है, इससे वह हमको पूजाके कामसे अलगकर देंगे। ऐसा विचार फिर दूध लेजाकर वह भगवान्से पीनेको कहने लगा, जब उस दिन भी भगवान्ने दूध नहीं पिया, तब नामदेव छूरी निकालकर अपना गला काटने लगा। भगवान्ने उसका दृढ़ विश्वास देखकर एक हाथसे उसका हाथ पकड़लिया और दूसरे हाथसे कटोरेका दूध पीलिया। जब कटोरेमें थोड़ा दूध रहा, तब नामदेवने कहा कि मैं ३ दिनका भूखा हूं कुछ भी तो छोडो, तब भगवान्ने हँसकर उसको प्रसाद दिया।

पण्ढरपुरमें रॉकाजी, जो जंगलसे लकड़ी लाकर वेंचता था, परमभक्त हुआ था। उसकी बॉका नामक स्त्री उससे भी अधिक भगवतभक्त थी। एक दिन भगवान्ने नामदेवजीके साथ वनमें जाकर, जिस मार्गसे रॉका और बॉका लकड़ीको जाती थी, उसमे मुहरकी थैली डालदी, परन्तु दोनोमेसे किसीने मुहरको नहीं लिया। तब भगवान् और नामदेवजीने लकड़ी बटोरकर इकट्ठा करदी। रॉका और बॉकाने दूसरेकी बटोरी हुई जानकर लकड़ी

नही उठाई। वे लोग खाली हाथें घर चले आये और कहने लगे कि मुहर देखनेके अश-कुनसे आज लकड़ी नहीं मिली, जो हम लोग मुहरोको उठाते तो, न जाने क्या होता। जब भगवान्‌ने बटोरी हुई लकड़ी राँकाजीके घर पहुँचा दिया, तब उन्होंने भगवतका भेजा हुआ प्रसाद जानकर अङ्गीकार किया। उसके पीछे भगवानने उन भक्तोंको दर्शन देकर कृतार्थ किया।

बार्सी।

बार्सीरोडके रेलवे स्टेशनसे लगभग २१ मील पूर्व शोलापुरके जिलेमे (१८ अंश, १३ कला ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ४४ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमें) सबडिवीजनका प्रधान कसबा बार्सी है *।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बार्सीमें २०५६९ मनुष्य थे, अर्थात् १७७७० हिन्दू, २२५१ मुसलमान, ५०० जैन, ३० कृस्तान और १८ पारसी।

बार्सीमे बडी तिजारत होती है। रुई, तीसी और तेल खास करके वहाँसे बम्बईमे भेजे जाते है। वहाँ सदरालाकी कचहरी, पुलिस स्टेशन अस्पताल और पोष्टआफिस है।

सोलापुर।

बार्सीरोडके रेलवे स्टेशनसे ४९ मील (धोंद जंक्शनसे ११७ मील) दक्षिण-पूर्व (१७ अंश, ४० कला, १८ विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ५६ कला, ३८ विकला पूर्व देशान्तरमे) सोलापुरका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके दक्षिणीय विभागमें महाराष्ट्र देशके अन्तर्गत जिलेका सदर स्थान और जिलेमे प्रधान कसबा सोलापुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय शोलापुर कसबेमें ६१९१५ मनुष्य थे, अर्थात् ३१७३४ पुरुष और ३०१८१ स्त्रियाँ। इनमे ४५३५६ हिन्दू, १४५६७ मुसलमान, १०५१ जैन, ७७६ कृस्तान, १६८ पारसी और २ यहूदी थे, मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ५७ वाँ और बम्बई हातेके अङ्गरेजी राज्यमे ७ वाँ शहर है।

रेलवे स्टेशनके समीप एक छोटी धर्मशाला और स्टेशनसे १/२ मील दूर शहरका फाटक है। शोलापुर शहर पहिले २१/२ मील लम्बी दीवारसे घेरा हुआ था। वहाँकी म्युनिसिपल्टीने लगभग सन् १८७२ मे पूर्वकी सम्पूर्ण दीवार और दक्षिण पश्चिम तथा उत्तरकी दीवारोंके भागको गिरवा दिया, बाकी दीवारकी ऊँचाई ८ फीटसे १० फीट तक और चौडाई ४ फीटसे ६ फीट तक है।

समुद्रके जलसे १८०० फीट ऊपर एक बड़े मैदानमें शोलापुर कसबा है। कसबेके अधिक मकान मट्टीके है। पत्थर और ईंटोंके मकान मुंडेरादार हैं। सन् १८७९ और १८८१ के बीचमे जल कल बनी। जलकल द्वारा पानी कसबेमें सर्वत्र पहुँचाया जाता है। कसबेमें कई देवमन्दिर, एक हाईस्कूल एक लड़कियोका स्कूल है।

कसबेसे दक्षिण झीलके मध्यमें सिद्धेश्वरका मन्दिर है, उसके दक्षिण-पूर्वके किनारेपर म्युनिसिपल बाग लगा है, उससे लगभग १ हजार गज दक्षिण-पूर्व कलक्टर साहबका आफिस और बङ्गला है, जिससे दक्षिण-पश्चिम पुरानी छावनीके अफसरोके बङ्गले फैले हैं, जिनसे

---

* बार्सीरोडसे बार्सी कसबे तक २२ मील की रेलवे शाखा बनगई है।

पश्चिम दो गिरजे है। पुरानी छावनीका बड़ा भाग अब सिविल स्टेशनके काममे आता है सदर बाजारसे लगभग ½ मील दक्षिण-पूर्व देशी पैदल फौजकी लाइन है, जिससे दक्षिण, अफसरोंके बङ्गले बने हुए हैं।

शोलापुर तिजारतमे मशहूर हुआ है। इसमें रेशम और कपड़ेकी दस्तकारीके काममें ५ हजारसे अधिक आदमी लगे हैं। इनको कातने और विननेके लिये एक धुंयेकी मिल नियत हुई है, उस कारखानेमे कई सौ आदमी काम करते हैं।

रेलवे स्टेशनसे १ मीलसे अधिक उत्तर कसवेके दक्षिण-पश्चिमकी दीवारके निकट २३० गज लम्बा और १७५ गज चौड़ा शोलापुरका पुराना किला है जिसकी दीवारमें जगह जगह २३ टावर बने हुए हैं। किलेके पूर्व-बगलमें सिद्धेश्वरकी झील और ३ बगलोंमें १०० फीटसे १५० फीट तक चौड़ी और १५ फीटसे ३० फीट तक गहरी खाई है। किलेकी दीवारोंमें गोले और गोलियॉ छोड़नेके लिये बहुतेरे सुराख बने है। किलेके पहिले फाटकके पास सन् १८१० का शिला लेख पारसी अक्षरोंमें हैं।

कसबेसे लगभग ३ मील उत्तर, ६ मील लम्बी एक झील है; जिसको म्युनिसिपल्टीने सन् १८८१ में २ लाख २५ हजार रुपयेके खर्चसे बनवाया। यह झील बॉध बना करके बनाई गई है, इसका बॉध १½ मील लम्बा है। इससे ३ नहरें निकालकर आसपासके देशके खेत पटाये जाते है। झीलके पानीकी सबसे अधिक गहराई २० गज है, इससे जलकल द्वारा सम्पूर्ण कसवेमें पानी जाता है।

शोलापुर कसबेसे ३८ मील पश्चिम प्रसिद्ध तीर्थस्थान पण्ढरपुर है। २० मील तक घोड़े गाड़ीकी डॉक जाती है, उससे आगे बैलगाड़ीकी कच्ची सड़क है।

शोलापुर जिला—इसके उत्तर अहमदनगर जिला, पूर्व हैदराबादका राज्य और एक छोटा देशी राज्य; दक्षिण बीजापुर जिला और कई छोटे देशी राज्य और पश्चिम सितारा, पूना और अहमदनगर जिला और कई छोटे देशी राज्य हैं। शोलापुर जिलेके कई एक गॉव जिलेकी सीमासे बाहर हैं जिलेमें नीची पहाड़ियॉ और नीची ऊँची भूमि बहुत हैं। सन् १८८१ मे ३४१३ वर्ग मील भूमि जोती गई थी। जिलेकी प्रधान नदी भीमा है। इसके अलावे अनेक छोटी नदियॉ जिलेमें बहती हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय शोलापुर जिलेका क्षेत्रफल ४५२१ वर्गमील था और इसमे ५८२४८७ मनुष्य थे; अर्थात् ५३०१२१ हिन्दू, ४३९६७ मुसलमान, ७५१४ जैन, ६२५ कृस्तान, १५७ पारसी, ९४ यहूदी, ८ शिक्ख और १बौद्ध। हिन्दुओंमें १७८९०८ कुन्वी, ५७७०४ धॉगर, ४४००१ महारा, २७०५९ ब्राह्मण, २३८९८, माली, २१५०९ लिङ्गायत, १९२३३ मॉग, ११३८१ चमार, २९३८ राजपूत और शेषमे दूसरी जातियोंके लोग थे। इस जिलेमें महाराष्ट्र लोग बहुत है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय शोलापुर जिलेके कसबे शोलापुरमें ६१९१५, बार्सीमें ३०५६९ और पण्ढरपुरमे १९९५४ मनुष्य थे। इस जिलेमें करकंब, करमाला और सङ्गोला बड़ी बस्ती है।

इतिहास—शायद सन् ई० के ९० वर्ष पहिलेसे ३०० वर्ष तक शोलापुर जिला पैठनके शातकर्णियों अंध्रभृत्य वंशके राज्यका एक भाग था। पड़ोसके जिले बीजापुर, अहमदनगर

और पूनाके समान शोलापुर जिला भी सन् ५५० से ७६० ई० तक चालुक्योंके, सन् ९७३ तक राष्ट्रकूटोंके, सन् ११८४ तक पश्चिमी चालुक्योंके और लगभग १३०० ई० तक देवगिरिके यादवोंके अधिकारमें था। सन् १३१८ में दिल्लीका गवर्नर देवगिरिमें रहकर महाराष्ट्र देशमें हुकूमत करने लगा। सन् १३३८ में महम्मद तुगलकने देवगिरिका नाम दौलताबाद रक्खा। सन् १३४६ मे दिल्लीके बादशाहके अफसरोंने लूट पाट करके उस देशको बरबाद किया, तब दक्षिणके सरदारोंने एक अफगान सिपाही हसनको अगहर बनाकर दिल्ली वालोको परास्त करके डेकान अर्थात् दक्षिणको स्वाधीन बनाया। तभीसे बहमनी खानदानका राज्य नियत हुआ। हसनने अपने रक्षक एक ब्राह्मणके स्मरणार्थ जो मुसलमान हो गया था, उस खानदानका नाम बहमनी रक्खा और शोलापुरमें किला बनवाया, जो अब तक विद्यमान है; किन्तु किलेके भीतरोकी दीवार १६ वीं और १७ वी सदीकी बनी हुई है। सन् १४८९ में बीजापुरके गवर्नरने बहमनी वंशके राजाको परास्त करके शोलापुरको अपने आधीनकर लिया; तबसे लगभग २०० वर्ष तक शोलापुर कभी बीजापुरके और कभी अहमदनगरके अधिकारमें चला आया। सन् १६८६ में दिल्लीके बादशाह औरङ्गजेबने बीजापुरके राजाको परास्त करके शोलापुरको ले लिया। अठारहवीं सदीमें मुगलोंके राज्यकी घटतीके समय महाराष्ट्रोंने शोलापुरको अपने आधीनकर लिया। सन् १८१८ में अङ्गरेज महाराजने बम्बई हातेके दूसरे जिलोंके साथ पेशवासे शोलापुर ले लिया। प्रथम यह पूना जिलेके साथ था, किन्तु सन् १८३८ में एक अलग जिला बनाया गया।

होतगी जंक्शन।

शोलापुरसे ९ मील और धोंद जक्शनसे १२६ मील दक्षिण-पूर्व होतगी जंक्शन है। हातगी सन् १३४७ से १४४२ तक डेकानकी राजधानी थी। होतगीसे रेलवे लाइन तीन तरफ गई है।

(१) होतगीसे दक्षिण-पूर्व रायचुर तक 'ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला, रेलवे और रायचुरसे दक्षिण-पूर्व मदरास रेलवे है।

मील प्रसिद्ध स्टेशन।
६१ गुलबर्गा।
८४ वाडी जंक्शन।
१३५ कृष्णा।
१४५ रायचुर छावनी।
१५१ रायचुर कसबा।
१६८ तुङ्गभद्रा नदी।
१९४ अदोनी।
२२६ गुंटकल जंक्शन।
३४४ गूटी।
३४० कडापा।
४१८ रेनिगुंटा जक्शन।
४५९ आरकोनम् जक्शन।
४७६ त्रिवल्लौर।
५०२ मदरास।

वाडी जंक्शनसे निजाम स्टेट रेलवे पर पूर्व ११५ मील हैदराबाद, १२१ मील सिकन्दराबाद, २०८ वारंगल और वारंगलसे दक्षिण-पूर्व १२६ मील बेजवाड़ा है।

गुण्टकल जंक्शनसे दक्षिण ६३ मील धरमवरम् जंक्शन और १७४ मील बगलोर शहर है। (वहाँसे ५

लाइन निकली हैं गुंटकलमें देखो)

(२) पश्चिमोत्तर ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे;—

मील–प्रसिद्ध स्टेशन ।

९ शोलापुर ।

२९ मोहल ।

५८ वार्सी रोड ।

१२६ धोंद जंक्शन ।

(३) होतगीसे दक्षिण सदर्न मरहठा रेलवे, जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २½ पाई है;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन ।

५८ बीजापुर।

१३१ वादामी ।

१७३ गदग जंक्शन ।

गदगसे पूर्व कुछ दक्षिण ११ मील हरपालपुर, ५२ मील हुसपेट, ६८ मील गादिगनूर, ९१ मील पलारी छावनी और ९३ मील पलारी शहर और १२३ मील गुंटकल जंक्शन ।

गदगसे पश्चिम ३६ मील हुवली जंक्शन, ४८ मील धारवाढ़, ९२ मील लोंडा जंक्शन १०७ मील कैसलरक और १५८ मील पोर्चुगीजोंके राज्य में गोवाके पास मरमागोवा वन्दरगाह ।

लोंडा जंक्शनसे उत्तर ३३ मील वेलगाँव, ६९ मील गोकाकरोड, ११८ मील मिराज जंक्शन, २०० मील सितारा रोड, २०९ मील वाथर और २७८ मील पूना जंक्शन ।

गुलबर्गा ।

होतगी जंक्शनसे कई मील आगे जाने पर हैदराबादका राज्य मिलता है । होतगीसे ६१ मील दक्षिण-पूर्व गुलबर्गाका रेलवे स्टेशन है । हैदराबादके राज्यमें जिलेका सदर स्थान गुलबर्गा एक पुराना कसबा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय गुलबर्गामें २८२०० मनुष्य थे; अर्थात् १४७४७ पुरुष और १३४५३ स्त्रियाँ । इनमें १५२११ हिन्दू, १२६६८ मुसलमान, १७५ कृस्तान, १४१ जैन और ५ पारसी थे । मनुष्य-संख्याके अनुसार यह निजामके राज्यमें तीसरा शहर है ।

निजाम सरकारके वहुतेरे आफिस और अफसरोंके लिये इमारतें रेलवे स्टेशनसे कसवे तक फैली हुई हैं । पुराना किला पीछेकी जमीन पर है, जिसमें जगह जगह वहुतेरे गुम्बज देख पड़ते हैं । एक खूबसूरत फाटकसे कसबेमें प्रवेश करना होता है, जिसमें सब दिशाओंमें नई इमारतें देख पड़ती हैं । और ३७० फीट लम्बा और ६० फीट चौड़ा एक बाजार है, जिसमें ६१ मेहराबियोंका एक कतार है । गुलबर्गाका जेलखाना वहुत सुन्दर है ।

किलेकी वहुतेरी पुरानी इमारतें बाहरकी दीवारें और अनेक फाटक अतिहीन दशामें हैं । गढ़ या वालाहिसारको कम नुकसानी पहुँची है । इसके सिरेपर २० जोड़े लोहेकी

कड़ियाँ लगी हुई २६ फीट लम्बी एक पुरानी तोप पडी है। पुराने किलेमें फिरोजशाह राज्यके समयकी वनी हुई २१६ फीट लम्बी और १७६ फीट चौड़ी जुमामसजिद है। इसमें पश्चिमके अतिरिक्त तीन तरफ मेहराबियाँ वनी हुई हैं। मसजिदकी सम्पूर्ण जगह एकही छतके नीचे है। इतनी बड़ी मसजिद हिन्दुस्तानमे दूसरी नही है। यह हिन्दुस्तानमें पठानोके सबसे उत्तम पुरानी मसजिदोंमेंसे एक है।

शहरके पूर्वके महल्लेमे पुराने मकवरे हैं। वहां बड़े बड़े मोरव्वे गुम्बजदार मकवरोंमे १४ वीं सदीके अखीरमें राज्य करनेवाले मुसलमान गाडे गये हैं। उसी जगहमें तालुकदारकी कचहरी, गुलबर्गाका खजाना और अनेक जुडिसियल आफिस हैं।

इनसे थोड़े फासिलेपर सन् १६४० की बनी हुई चीस्ती खान्दानके प्रसिद्ध मुसलमान फकीर बन्दानेयाजकी, जो सन् १४१३ में गुलबर्गामें आया था, दरगाह है। इस स्थानको इस प्रदेशके मुसलमान बहुत आदर करते हैं। सच्चे इतकाद करनेवालोंके सिवा कोई आदमी दरगाहके भीतर नहीं जाने पाता है। इसके पास औरङ्गजेवकी बनवाई हुई सराय, मसजिद और मदरसा है। इसके सिवा गुलबर्गामे रुकनुद्दीन और शिराजुद्दीनका दरगाह और चोर गुम्बज नामक मकबरा है।

इतिहास—बहमनी खान्दानके मुसलमान वादशाहोंने जिस (खान्दान) का राज्य सन् १३४७ ई० में आरम्भ हुआ था, प्रथम गुलबर्गामें रहकर राज्य किया था। पीछे उनकी राजधानी बीदर हुआ। उस खान्दानके अन्तिम वादशाहको सन् १५१२ में कुतवशाही खान्दानके बादशाहने बीदरकके तख्तसे उतार दिया। सन् १६३५ तक गुलबर्गा डेकानके गवर्नमेन्टका सदर स्थान था, उसके वाद बीदर सदर मुकाम हुआ।

पाँचवाँ अध्याय।

(हैदराबादके राज्यमें) वाडी जंक्शन, हैदराबाद, बीदर, नांडेड़ और वारंगल।

वाडीजंक्शन।

गुलबर्गासे २३ मील (होतगी जंक्शनसे ८४ मील) दक्षिण-पूर्व हैदराबादके राज्यमें ग्रेट इण्डियन पेनिनसूला और निजाम स्टेट रेलवे' का जंक्शन वाड़ीमें है। उससे पूर्व निजाम 'स्टेट रेलवे पर ११५ मील हैदराबाद, १२१ मील सिकन्दराबाद और २०८ मील वारंगल और वारंगलसे दक्षिण-पूर्व १२६ मील वेजवाडा है।

रायचुर, अदोनी, गुंटकल जक्शन, गूटी, कड़ापा, रेनीगुन्टा जंक्शन, आरकोनम, जंक्शन, मदरास शहर, तथा बालाजी, काँची चिदम्बरम् कुम्भकोनम् तन्जौर; श्रीरंगजी, मदुरा, रामेश्वर, तुती कोरिन इत्यादि स्थानोंमें जानेवालोंको वाड़ी जंक्शनसे दक्षिण पूर्वकी ग्रेट इण्डियन और मदरास रेलवेसे जाना चाहिये। मैं, वाड़ीसे पूर्व हैदराबादकी ओर चला।

हैदराबाद।

वाड़ी जंक्शनसे ११५ मील पूर्व कुछ उत्तर हैदराबादका रेलवे स्टेशन है। हैदराबादके राज्यके तैलंगदेशमे (१७ अंश, २१ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश; ३० कला, १० विकला पूर्व देशान्तरमें) समुद्रके जलसे लगभग १७०० फीट ऊपर मूसी नदीके दक्षिण किनारेपर हैदराबादके राज्यकी राजधानी और उस राज्यका प्रधान शहर हैदराबाद है। एक अच्छी सडक हैदराबाद शहरसे दक्षिण कुछ पूर्व मद्रास शहरको गई है, जिसमें कटकसे आने वाली समुद्रके पासकी सड़क आकर मिली है।

सन् १८९१की मनुष्य-गणनाके समय हैदराबाद शहर और उसकी छावनीमें ४१५०३९ मनुष्य थे; अर्थात् २१६३२४ पुरुष और १९८७१५ स्त्रियाँ। इनमे २२६८४० हिन्दू, १७२८६१ मुसलमान, १३८२९ कृस्तान, ६६९ सिक्ख, ६१६ पारसी, २०३ जैन और २१ यहूदी थे। इनमेसे शहरतलियोंको छोड़कर खास शहरमें ३१२३९० मनुष्य थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमे चौथा शहर है।

शहरका क्षेत्रफल २ वर्गमील है; इसके चारों ओर ६ मील लम्बी दीवार बनी हुई है। शहरके चारोंओर जङ्गल और पहाडियोंका मनोहर दृश्य देखनेमें आता है। पश्चिमोत्तरकी दीवारमें पूर्व चादरफाटक; उससे पश्चिम क्रमसे दिल्लीफाटक, चम्पाफाटक, चारमहलफाटक, और पुराना पुलफाटक, पश्चिम—दक्षिणकी दीवारमें दुधनीफाटक. फतहफाटक; और अलीआबादफाटक; दक्षिणकी दीवारमें गौलीपुरफाटक, और गाजीबन्दफाटक और पूर्वकी दीवारमें मीरजुमलाफाटक, याकूवपुरफाटक और दाउदपुरफाटक है। शहरके पास मूसीनदीकी चौडाई लगभग ४०० गजसे ५०० गजतक है।

हैदरावादमें निजामका महल, अङ्गरेजी रेजीडेंसी और अनेक मसजिदें शहरकी प्रधान इमारतें हैं।

रेलवे स्टेशनसे उत्तर एक उत्तम पवलिक वागमें २ सायवान और एक जंतुशाला है। बागके उत्तरीय भागमें 'नौवत पहाड' नामक एक काला चट्टान है। वागके पास निजामकी सैफाबादकी फौजी छावनी है। शहरके पड़ोसमें वहुतेरे उत्तम वागोंमें बङ्गले और मकान वनेहुए हैं। निजामके मन्त्रीका बाग ऊँची दीवारोंसे घेरा हुआ बहुत मनोहरहै; इसके मध्यमें मार्वुलके तख्तोंसे बना हुआ एक हौज है। सीतारामबागमे वरदराज, सीताराम और श्रीरामानुजस्वामीका मन्दिर है। इसके अलावे हैदरावादमें वहुतेरे हिन्दू, मन्दिर बने हैं। शहरके पूर्व घोड़दौड़का मैदान है, जिसमें प्रति वर्ष अकतूवरमें ५ दिनो तक घोड़दौड़ होता है।

हैदरावाद शहरमें अति उत्तम इमारत वहुत नहीं है; किन्तु वाजार वहुत मनोरम है। उसमें भारतवर्षके प्रत्येक विभागोंके लोगोंकी भीड़ रहती है और अरव, बोखारा, पारस इत्यादि दूसरे देशोंके मुसलमान और अन्य मतके लोग भी वहुत देखनेमे आते हैं। शहरमें कालीन, घोड़ेके साजके लिये मखमल, सूत मिले हुए रेशमके असवाव और लाल मट्टीके वर्तन बहुत तैयार होते हैं। शहरके कई मील दक्षिणके बड़े तालाबसे शहरमे पानी आता है। शहरकी प्रधान सड़कोंपर रातमें लालटेनोंकी रोशनी होती है। हैदराबाद-सरकारकी ओरसे एक टकशाल और करेंसीनोट जारी है। शहरसे ७ मील पश्चिम गोलकुण्डाका पुराना किला है।

मूसीनदीपर पश्चिमोत्तर तीन पुल हैं,—सबसे पूर्व सन् १८३१ का बना हुआ ओलिफेंट पुल, उससे पश्चिम अफजल पुल और उसके बाद पुराना पुल। अफजल पुल लॉघ करके रेजीडेंसी स्कूल और सीटी अस्पतालके पास जाना होता है। उस अस्पतालसे लगी हुई ४ ऊँचे मीनारोंके साथ अफजल मसजिद और सड़कके दूसरी तरफ औरतोका अस्पताल है। एक चौडी सडक, पुल लॉघकर अफजल फाटकसे शहर होकर गई है। चन्द सौ गज दूर उसके पास मृतसर सालारजङ्ग बहादुर जी० सी० एस० आईका, जो राज्यके इन्तजाममें वडा नामवर था, बारहदरी नामक महल है। वहाँ एक कमरेमे पहलेके रेजीडेंट लोगो और दूसरे प्रसिद्ध आदमियोंकी तस्वीरें टँगी हैं। इसके आगे फौआरोके साथ पानीका एक हौज है। सीलीखानेमें भांति भांतिके पुराने हथियार और वस्तरोंके अजीव नमूने देखनेमे आते हैं।

अफजल पुलसे करीब ¾ मील दूर शहरके प्राय. मध्यमें, जहाँ शहरकी ४ प्रधान सडकें मिलती हैं, १०० फीट लम्बी और इतनीही चौड़ी और १८६ फीट ऊँची सन् १५९१ की बनी हुई चार मीनार नामक इमारत है; जिसमें ४ मीनार बने है। उसके ऊपरके कई एक मञ्जिलोंमे कमरे हैं।

चारमीनारके थोड़ा पूर्व शहरकी मसजिदोंमे प्रधान जामामसजिद है, जिसको मक्का मसाजिद भी लोग कहते है। यह मक्काकी मसाजिदके ढांचेकी बनी हुई है। इसका विस्तार ३६० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है। भीतर एकही पत्थरके बहुत ऊँचे ऊँचे खंभे लगे हैं। जमीन,पत्थरके तख्तोसे पाटी हुई है। ऊपर ४ ऊँचे मीनार हैं। ऑगनके एक बगलपर खास मसजिद है। मुसलमानी तिहवारोंके समय आठ दस हजार मुसलमान एबादतके लिये वहाँ एकत्र होते हैं।

निजामका महल—यह चारमीनारके पश्चिम बगल पर है। महल बहुत सुन्दर नहीं है परन्तु इसका विस्तार बहुत वड़ा है चौकसे निजामके महलको जाने पर एक फाटकसे बड़े चौगानमे जाना होता है, जिसके दक्षिण-पश्चिम कोनेके पास एक गली है, जो एक दूसरे चौगानको गई है, जिसमें करीब २००० सवार, नौकर, इत्यादि रहते हैं। उसके दक्षिण-पश्चिमके कोनेसे एक रास्ता तीसरे चौगान (चौक) को गया है, जहां साधारण तरहसे एक या दो हजार नौकर देखनेमें आते हैं। महलकी इमारतें हर बगलमें तेहरानके शाहके महलके मानिन्द खूबसूरत हैं। कहा जाता है कि महलकी इमारतोंमे ७००० आदमी रहतेहैं।

मुहर्रमके समय लंगरके उत्सवमें निजामकी ३०००० फौज जलसामें निकलती है। कहाजाता है कि हैदराबादके बसानेवाले बादशाह कुतुबशाह महम्मद कुलीके स्मरणार्थ यह उत्सव होता है। महलसे २०० गज दूर बगलकी सड़कके पास वह मकान है, जिसमें प्रसिद्ध मिनिष्टर चन्दूलाल मरे थे। यह नीचा लेकिन बहुत उमदा मकान है।

चौक और शहरके पश्चिमकी दीवारके बाद समसुल उमराका बनवाया हुआ बारहदरी नामक वडा महल है। इसके शिरपर चढ़नेसे शहरका उत्तम दृश्य देखनेमें आता है। वहाँसे पश्चिम ओर गोलकुण्डाका किला और उसके पास बादशाहोंके मकबरे और दक्षिण ओर जहान्नुमाका महल और अमीर कबीरकी बनवाई हुई एक मसजिद देख पड़ती है।

अलीआबाद फाटकके बाहर एक बहुत लम्बा बाजार है, जिसमें साफ मकान बने हुए है। उसके बाद एक ऑगन है, जिसमें हजारहा फौजी पैदल और सवार रहते हैं। उसके

अखीरके पास कालीन विछा हुआ सीढ़ीघर है, जिसकी सीढ़ियाँ मेहमानोंके रहनेवाले कमरेमें गई हैं। महल, साज और सामानोसे भरा हुआ है।

मीर आलम तालाव—शहरके दक्षिणकी दीवारसे २ मील दूर ७ मीलके घेरेमें मीर आलम तालाव है। ११३० गज लम्बी २१ मेहराबियोंकी तालावकी पुस्ता बन्दी है, जो फ्रेंच इनजिनियर द्वारा वनाई गई थी। उसके वनानेमें ८०००० पाउण्ड अर्थात् ८ लाख रुपया खरच पड़ा। उस तालावमें कई आगवोट रहते हैं। तालावसे ३०० गज दूर एक वँगला और उसके अखीर पश्चिम ८० फीट ऊँची एक पहाडी है, जिसके शिरे पर अच्छी वनावटका महब्बत अलीका दरगाह है।

रेजीडेंसी—शहरसे लगभग १ मील पश्चिमोत्तर चादरघाट नामक शहरतलीमें अङ्गरेजी रेजीडेंसी है, जिसके चारों ओर १२००० वासिन्दोंका वाजार है। रेजीडेंसीके चारो ओर पक्की दीवार है, जो सन् १८०३—१८०८ में वनी और सन् १८५७ के आक्रमणके पीछे मजवूत की गई। रेजीडेंसी और निजामके महलके वीचमें ८ मेहराबियोंका पत्थरका सुन्दर पुल वना है। रेजीडेंसीके उत्तरका अगवास, नदीसे और शहरसे देख पड़ता है। रेजीडेंसीमें दो फाटक हैं। सीढ़ी घरकी प्रत्येक सीढ़ियाँ एकही ग्रेनाइट पत्थरकी वनी हुई हैं। रेजीडेंसीके पास रेजीडेंसका एक खानगी मकान है।

सिकन्दरावाद—हैदरावाद शहरसे ६ मील उत्तर कुछ पूर्व सिकन्दरावादका रेलवे स्टेशन है। सिकन्दरावाद हिन्दुस्तानमें वहुत वड़ी अङ्गरेजी फौजी छावनी है। यह १९ वर्गमील क्षेत्रफलमें फैली हुई है एक सड़क हैदरावादसे सिकन्दरावादको गई है, जिसके किनारोपर वहुतेरे देशी धनी और निजामकी कचहरीके अफसरोंके वहुतेरे विले (देहाती वँगले) वने हैं। सड़कके पश्चिम हुसेन सागर तालाव है। सिकन्दरावादमे वहुत वड़ी परेडकी जमीन है। उसके उत्तर वगल पर वहुतेरे अफसरोंके मकान, खूबसूरत रेलवे स्टेशन और एक बड़ा गिरजा है। परेड ग्राउण्डके दक्षिण वगल पर कवरगाह और परेडकी जमीनके पास मट्टीका एक किला है।

त्रिमलगिरि—सिकन्दरावादके ३ मील पूर्वोत्तर त्रिमलगिरिके पास ७ फीट ऊँची दीवार और ७ फीट गहरी खाईसे घेरा हुआ एक लस्करगाह है। जिसके कई वुर्जों पर तोप चढ़ाई हुई है।

वुलारम—सिकन्दरावादसे ६ मील और हैदरावाद शहरसे ११ मील उत्तर और हदरावाद कन्टिनजेन्ट फौजकी छावनी वुलारम है। वहाँ निजामकी फौजें रहती हैं।

गोलकुण्डा—हैदरावादसे ७ मील पश्चिम हैदरावादके राज्यमें उजड़ा हुआ पुराना शहर गोलकुण्डा है वहाँ एक किला है, जिसको वारङ्गलके राजाने वनवाया था पीछे सन १३६४ ई० में वारङ्गलके राजाने गुलवर्गाके वाहमनी वादशाहको वह किला दे दिया। सन् १५१२ में कुतुवशाही खांदानके वादशाहने वहमनी वंशके वादशाहसे किलेको छीन लिया। सन् १६८८ में मुगल वादशाह औरङ्गजेवने कुतुवशाही। खान्दानके वादशाहको कैद करके गोलकुण्डाको ले लिया। कुतुवशाही राज्यका अन्त होगया।

किलेके पत्थरका घेरा ३ मीलसे अधिक लम्बा है। उसमें ८७ वुर्ज वने हुए हैं, जिनमेंसे कोई एक पर पुरानी कुतुवशाही तोपोंमेंसे कई तोप अव तक रक्खी है। दीवारके वाहरकी

चारो तरफकी खाई बहुतेरी जगहोंमें भरगई है। उस किलेमें निजामका खजाना और राज्यके कैदी रहते हैं और निमाजसागर नामक तालाब तथा पुराने महलोंके खँड़हर हैं।

पहाड़ीके सिरे पर किलेकी दीवारोंके भीतर बालाहिसार अर्थात् बादशाही महलका खंडहर है जिसकी ऊँचाई मैदानसे करीब ४०० फीट है एक बाग होकर बालाहिसारके फाटक पर जो अभी मरम्मत है, पहुँचना होता है उस पहाड़ीके सिरेपर बादशाहका महल था, जिसकी कई मेहराबियाँ अब तक खडी हैं। किसी किसीको किला देखनेके लिये पास मिल जाता है।

किलेसे ६०० गज पूर्वोत्तर एक मैदानमें कुतुबशाही बादशाहोंके मकबरे हैं उनमेंसे बहुतेरे खराब हालतमे विद्यमान हैं उनके नाम येहैं,—पहिला कुतुबशाही वंशको नियत करनेवाला सुलतान कुली कुतुब जो सन् ९५० हिजरी (१५४३ ई०) में मरा, दूसरा जमसिद कुली कुतुब, जो सन् १५५० में मरा, चौथा इब्राहिम कुली कुतुब शाह, जो सन् ९८८ हिजरी (१५८० ई०) में मरा, पाँचवाँ महम्मद कुली कुतुबशाह, जिसने हैदराबादको बसाया और सन् १०३५ हिजरी (१६२५ ई०) में मरा, और छठवाँ सुलतान अबदुलकुतुब शाह, जो सन् १०८३ हिजरी (१६७२ ई०) में मरा। महम्मद कुली कुतुबशाहका मकबरा सब मकबरोंसे बड़ा १६८ फीट ऊंचा है। कुतुब शाही वंशका पिछला बादशाह आबुलहसन्को औरङ्गजेबने जन्मभर कैद रहनेके लिये दौलताबादके किलेमें भेज दिया; वहाँ सन् १७०१ में वह मरगया। कुतुबशाहियोंमें वही एक यहाँ नहीं गाड़ा गया।

पूर्व समयमे गोलकुण्डा हीरेके लिये प्रसिद्ध था। खास करके निजाम राज्यके दक्षिण पश्चिमकी सीमाके पासके पुर्टियलसे हीरा आतेथे और गोलकुण्डेमें काटकर दुरुस्त किये जाते थे और उनपर पालिस होती थी।

हैदराबादका राज्य—इसको निजाम-राज्य भी कहते हैं यह राज्य भारतवर्षके देशी राज्योंमें सबसे बहुत बड़ा८२६९८ वर्गमीलमें फैला है इसकी सबसे अधिक लम्बाई पूर्व-दक्षिण से पश्चिमोत्तर तक लगभग ४७५ मील और सबसे अधिक चौड़ाई, पश्चिम-दक्षिणसे पूर्वोत्तर तक ४०० मील है। इसके उत्तर बरार, पूर्वोत्तर और पूर्व मध्यदेश; दक्षिण-पूर्व और दक्षिण मदरास हाता और पश्चिम तथा पश्चिमोत्तर बम्बई हाता है इस राज्यके पश्चिमी भागमें अङ्गरेजी राज्यके कई छोटे टुकड़े है। राज्यके उत्तरीय विभागमें मेहदक, इन्दुर, वारङ्गल और सिरपुर बंदूर जिला, पश्चिमोत्तर विभागमें औरङ्गाबाद, बीढ़ और प्रभानी जिला; पश्चिमी विभागमें बीदर, नन्देड और नालदुर्ग जिला, दक्षिणीय विभागमें रायचुर, लिङ्गसागर, शोरापुर और गुलबर्गा जिला और पूर्वी विभागमें कामेट, नलगोंड़ा और नागर करनूल जिला है। इन जिलोंके अतिरिक्त राजधानी हैदराबादका जिला अलग है। निजामको हैदराबादके राज्यसे लगभग ३ करोड़ रुपयेकी आमदनी है।

हैदराबादके राज्यके चन्द हिस्सोंमें पहाड़ियाँ और अन्य विभागोंमें जगह जगह समतल और जगह जगह नीची ऊँची भूमि है। मैदान ऊपजाऊ है जगह जगह ऊपर भूमिभी देखनेमे आती है। राज्यकी औसत ऊँचाई समुद्रके जलसे १२५० फीट है। कई एक पहाड़ी चोटियाँ ३५०० फीट ऊंची है। राज्यकी पहाड़ियोंमे बालाघाट सिलसिला, जो पूर्वसे पश्चिमको गया है, सवियाद्री सिलसिला, जो इन्दुर जिलेसे बरार तक और बरारसे बम्बई हातेके खान

देश जिले तक गया है और सह्याद्री सिलसिला, जो निजाम राज्यके भीतर लगभग ३५० मील है, जिसमेंसे १०० मील अजन्ताघाट सिलसिला, कहलाता है, प्रधान है।

पेनगङ्गा और वरधा नदीके संगमके निकट, वरधा नदीकी घाटीमे कोयलेकी खानियोंके मैदान है। उसीके आस पास लोहा और कंकड़की भी खानियाँ है। वाड़ी जंक्शनके समीप शाहावादमें पत्थरकी उत्तम खान है, जिससे मार्वुलके समान चिकना भूरे और काले रंगके पत्थर निकलते हैं; जो हैदरावाद शहर और दूसरे स्थानोमें इमारत वनानेके लिये भेजे जाते है। इसके अलावे दूसरीभी पत्थरकी कई खानियाँ हैं। पूर्व समयमें हीरेकी अनेक खानियाँ थीं।

इस राज्यकी प्रधान नदी गोदावरी है; जो नासिकके पास त्र्यम्वकसे निकल कर इस राज्यके मध्य होकर दक्षिण-पूर्व वहनेके उपरान्त वङ्गालकी खाड़ीमें गिरती है। उसके वाद कृष्णा और तुंगभद्राहै। यह तीनों नदियाँ राज्यके भीतर और राज्यकी सीमापर वहती हैं। तुङ्गभद्रा कृष्णामें मिल गई है। इनके अलावे निजाम राज्यमें वहुतेरी छोटी नदियाँ और छोटे वड़े लगभग १८००० जलाशय हैं।

धान, गेहूँ आदि सव प्रकारके गल्ले, तेलके वीज, नील, ऊख, कपास वहुत उत्पन्न होते है। खरवूजा, ककड़ी, आदि विविध प्रकारके फल वहुत होते है। मुरई, कन, अदरक, हलदी, आलू, इत्यादिभी होते है। वनोंमें रेशम वाले कीड़े सर्वत्र है। मधु जङ्गलोंसे वहुत निकाला जाता है। गोदभी वहुत होता है। अनेक प्रकारके गल्ले, चावल, रुई, तेलके वीज, देशी कपड़ा, धातुके वर्तन, चमड़ा इत्यादि सामान हैदरावादके राज्यसे दूसरे स्थानोमें भेजे जाते है और गल्ले, लकड़ी, यूरोपियन चीजें, इत्यादि वस्तु दूसरे स्थानोसे वहां आती हैं। पूर्वी और पश्चिमी किनारेसे निमक आता है। इस राज्यके कसवे वीदरमें वीदरके कामके धातुके उत्तम वर्त्तन, औरंगावाद, गुलवर्गा और अन्य कसवोमें कपडे पर सोनेका सुन्दर काम और दौलतावादके किलेके निकट कागजपुर ग्राममें अनेक प्रकारके उत्तम कागज वनते है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय हैदरावाद राज्यके ८२६९८ वर्गमीलमें ११५३७०४० मनुष्य थे; अर्थात् ५८७३१२९ पुरुप और ५६६३९११ स्त्रियाँ। इनमें १०३१५२४९ हिन्दू, ११३८६६६ मुसलमान, २९१३० जङ्गली जातियाँ इत्यादि, २७८४५ जैन, २०४२९ कृस्तान, ४६३७ सिक्ख, १०५८ पारसी और २६ यहूदी थे। इनमेंसे सैकड़े पीछे ४३½ तेलगू अर्थात् तैलंगी भाषावाले, ३०⅞ महाराष्ट्री भाषावाले, १२½ कनड़ी अर्थात् करनाटकी भाषावाले, १०½ उर्दू भाषावाले, और ३⅞ अन्य भाषावाले मनुष्य थे। पढ़े हुए लोगोंमे प्रत्येक हजारमें ५६९ ब्राह्मण, ५ ब्राह्मणी, ४३८कायस्थ; १५१ विदुर और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे। राज्यके पूर्व-दक्षिणके वड़े भागमें तैलंगी भाषा दक्षिण-पश्चिमके भागमें कृष्णानदीके आस पास कनड़ी अर्थात् करनाटकी भाषा और पश्चिम तथा उत्तरके भागमे महाराष्ट्री भाषा सर्व साधारण लोगोंमें प्रचलित है। पश्चिमी भागमे महाराष्ट्र लोग अधिक हैं। राजधानी और सरकारी कामोंमें खासकर मुसलमान लोग वहुत है। इस राज्यमें शिक्षा-की तरक्की हुई है। एक शिक्षाका डाइरेक्टर निजाम कालिज, ओरिएण्टल कालिज, मेडिकल स्कूल इत्यादि नियत हुए हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय हैदराबाद राज्यके ९८४५५९४ मनुष्योंमें ९२५९२९ मुसलमान थे. अर्थात् ४८४१५५ शेख, ८९९०९ सैयद, ६१४३७ पठान, १५४२३ मुगल और २७५००५ दूसरे मुसलमान । इनके अतिरिक्त दूसरी जातियोंमें १६५८६६५ कुन्बी, ८०६६५३ महारा, ४८२०३५ धांगड़, ४४७३१२ चमार, ३९३१८४ बनियाँ, ३६९६३६ महाराष्ट्र, ३२७३३८ तेलिंगा, ३१५७३२ माँग, २५९१४७ ब्राह्मण, २१३९६६ कोली, २१२६०८ गावली, १९४२८४ कोमटी (सौदागर) १३९५१३ गोंड, ११९१६१ वाडर, १०२२१३ महली, ९७६३६ लिङ्गायत, ९२१३६ भोई, ९०८३५ कुम्भार, ८८७६९ सोनार ८५२०४ लवनी, ८६८०६ माली, ७९१४२ कोस्ती, ६७५६४ तेली, ५६१२८ लोहार, ५४८३३ बेडदार, ४९८४३ राजपूत और शेषमें गौढ़ी, दर्जी, गोसांई, वनजारा भील, कोया इत्यादि जातियोंके लोग थे ।

हैदराबाद राज्यके शहर और कसबे, जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १०००० से अधिक मनुष्य थे,–

नं०	शहर, कसबे	जिलेवा–तालुक	मनुष्य–संख्या
१	हैदराबाद	हैदराबाद	४१५०३९
२	औरंगाबाद	औरंगाबाद	३३८८७
३	गुलबर्गा	गुलबर्गा	२८२००
४	कादिराबाद	औरंगाबाद	२३३५३
५	रायचुर	रायचुर	२३१७४
६	बीढ़	बीढ़	१८९९४
७	गाडवाल	रायचुर	१४६७२
८	मोमीनाबाद	बीढ	१३९२३
९	नांदेड़	नांदेड	१३१०५
१०	कल्यानी	बीदर	१३०२६
११	हिंगोली	प्रभानी	११९६६
१२	नारांपेट	महबूबनगर	११८८८
१३	वारंगल	वारंगल	११४८४
१४	इन्दुर	इन्दुर	११४८२
१५	वसमथ	प्रभानी	११३६१
१६	बीदर	बीदर	११३१५
१७	निर्मल	इन्दुर	१०९३२
१८	मनवट	प्रभानी	१०९१२
१९	भारासर	नालदुर्ग	१०५११
२०	प्रभानी	प्रभानी	१०१०२

सिकन्दराबाद, बलारम, दौलताबाद, इलोरा और असाईभी हैदराबादके राज्यमें प्रसिद्ध नगर हैं ।

हैदराबादके राज्यमें साधारण तरहसे प्रत्येक गाँवोंके निकट लगभग ५० गज लम्बा और इतनाही चौडा पक्का अथवा मट्टीका एक एक किला है । पहाडियों और जङ्गलोंके रहने वाले गोंड वडे असभ्य है । उनमेंसे अधिक गुफाओं और वृक्षोके खोखलोंमें रहते हैं । वे लोग शिकारसे अपना उदर पालन करते हैं, किन्तु जब सिकार नहीं मिलता, तब कीडे मक्कूड़े और जङ्गली जड़ अथवा फल खाकर अपना निर्वाह करते हैं ।

इतिहास—सुलतान कुली कुतुबशाहके, जिसने गोलकुण्डाका राजवंश नियत किया था, पांचवे पुस्तमें महम्मद कुली कुतुबशाह था, उसीने सन् १५८९ ई० में कई एक कारणोसे गोलकुण्डाको छोड़कर उससे ७ मील दूर मूसीनदीके किनारेपर एक शहर बसाकर उसको अपनीराजधानी बनाया और अपनी प्रियस्त्री भागमतीके नामसे उसका नाम भागनगर रक्खा;

किन्तु उस स्त्रीके मरजानेपर उसने शहरका नाम हैदराबाद रख दिया। उसके पश्चात् उसने अपने राज्यको कृष्णानदीके दक्षिण फैलाया उड़ीसेके राजाको परास्त किया और वह उत्तरीय सरकारके बड़े भागको अपने अधिकारमें लाया। सन् १६२५ में महम्मद कुली कुतुबशाह मरगया। हैदराबादमें इसके राज्यके समयके बने हुए महल, इलाहीमहलका बाग, महमदी बाग, नौबतघाटका महल, चारमीनार, और मक्का मसजिद, जिसको जामामसजिदभी कहते हैं, विद्यमान हैं। महम्मदकुली बड़ा उदार और दानी था। उसके मरनेपर उसका पुत्र सुलतान अबदुलकुतुबशाह उत्तराधिकारी हुआ। मुगल बादशाह शाहजहॉने, जिसका राज्य सन् १६२७ से १६५८तक था; बिजापुर और गोलकुण्डाको अपने अधीन करनेके लिये अपने पुत्र औरंगजेबको भेजा। औरंगजेबने विश्वासघात करके हैदाराबादको लेलिया और अबदुल कुतुबशाहको अपने अधीन बनाकर छोड़ दिया। सन् १६७२ में अबदुल कुतुबशाहके मरने पर उसका दामाद आबूहुसन उत्तराधिकारी हुआ। उसने मधुनापन्त नामक एक महाराष्ट्र ब्राह्मणको अपना प्रधान मन्त्री बनाया। सन् १६७६ में मन्त्रीने महाराष्ट्र प्रधान शिवाजीको बुलाया। शिवाजीने अपनी भारी सेनाके साथ करनाटक जाते समय हैदराबादमें आकर आबूहसनसे एक सन्धिकी। सन् १६८० में शिवाजीकी मृत्यु होने पर आबूहसनने उनके पुत्र संभाजीसेभी मेल किया। सन् १६८८ में खांजहॉ और उसके पीछे उसकी सहायताके लिये औरंगजेबका पुत्र मोअजिम गोलकुण्डापर आक्रमण करनेके लिये दिल्लीसे भेजा गया। गोलकुंडेकी सेनाके कमाण्डरने दगा करके मुगलोकी सेनाको हैदराबादमें घुसा दिया।मधुनापंत मारागया। हैदराबाद लूटा गया। आबूहसन गोलकुण्डाके किलेमें जा छिपा। पीछे उसने मुगलोंसे संधि की। सन् १६८७ में औरंगजेबने गोलकुण्डा पर आक्रमण किया। आबूहसन ७ मास तक गोलकुण्डाके किलेको बचाकर पीछे छल द्वारा परास्त हुआ और कैदी बनाकर दौलताबाद भेजा गया। औरंगजेब बीजापुर और गोलकुण्डाके सब राज्योंपर अपना अधिकार कर लिया। आबूहसन सन् १७०१ में दौलताबादमें मरगया।

टर्कोमैनके खांदनका आसफजाह, मुगल बादशाह औरङ्गजेबका जनरल था। उसीसे हैदराबादका वर्तमान निजाम खानदान नियत हुआ। दिल्लीके बादशाह फर्रुखशियरने; सन् १७१३ में आसफजाहको निजामुल मुल्ककी पदवी देकर डेकान अर्थात् दक्षिणका सूबेदार बनाया। वही पदवी उसके वंशमें अब तक चली आती है। सन् १७२२ में आसफजाह दिल्लीका वजीर बनाया गया; किन्तु सन् १७२३ में वह वजीरके कामसे इस्तीफा देकर दक्षिण चला गया। सन् १७२४ में वह हैदराबादके गवर्नर मुबारिजखांको, जो दिल्लीकी तरफसे था, परास्त करके हैदराबादमें रहने लगा और एक स्वाधीन राज्य कायम करनेवाला हुआ। सन् १७४८ में निजामुल मुल्क अर्थात् आसफजार मरगया। उस समय उसका फैला हुआ स्वाधीन राज्य मजबूत होचुका था। हैदराबाद उसकी राजधानी था। आसफजाहके मरनेपर उसके दूसरे पुत्र नासिरजङ्ग जौर पोता मुजफ्फरजङ्गने गद्दीके लिये झगड़ा किया। अङ्गरेज, नासिरजङ्गकी ओर और फरासीसी, मुजफ्फरजङ्गकी तरफ थे। अन्तमें नासिरजङ्गने मुजफ्फरजङ्गको कैद करालिया; किन्तु थोड़ेही दिनोंके बाद नासिरजङ्ग अपने खास आदमियों द्वारा मारागया और मुजफ्फरजङ्ग सूबेदार बनाया गया; परन्तु शीघ्रही वह मरगया; तब फरासीसियोंनें मुजफ्फरजङ्गके बच्चा पुत्रको छोड़कर नासिरजङ्गके

भाई सलावतजङ्गको दक्षिणका हुकूमत करनेवाला चुना। थोड़ेही दिनोंके बाद फरासीसियोंने अङ्गरेजोंसे डरकर सलावतजङ्गकी सहायता करना छोड़ दी। तब सलावतजङ्ग निर्बल होगया। सन् १७६१ में सलावतजङ्गके छोटे भाई निजामतअलीने सलावतजङ्गको तख्तसे उतार दिया और २ वर्षके पीछे उसको मारडाला।

सन् १७६६ में निजामतअलीसे अङ्गरेजोंकी एक संधि हुई, जिसके अनुसार मैसूरके हैदरअली पर चढ़ाई करनेके समय अङ्गरेजोंने अपनी फौजसे निजामतअलीकी सहायता की, किन्तु निजामतअलीका मनोरथ सफल नहीं हुआ, उसको हैदरअलीके पास सुलहका दरख्वास्त करना पडा। सन् १७९९ में श्रीरङ्गपट्टनके टीपूसुलतानके परास्त होनेपर टीपूके राज्यका एक भाग निजामको मिलगया; क्योंकि वह अंगरेजोके मददगार थे। सन् १८०० ई० की संधिमे निजामने समय पड़ने पर अङ्गरेजोंको ६००० पैदल, ९००० घोडसवार और हर प्रकारकी सहायता देनेको कवूल किया। सन् १८५३ की संधिमें निजामको ५००० पैदल, २००० घोड़सवार और ४ मैदानकी तोपें (पहलेके सैनिक बलसे अधिक) बढ़ानेका अधिकार हुआ। अङ्गरेजी सरकारने इसका खर्च देना स्वीकार किया। निजामने ५० लाख रुपये वार्षिक आमदनीके जिले अङ्गरेजी सरकारको दे दिये।

सन् १८५७ के बलवेके समय निजामने अङ्गरेजोंकी सहायता की। सन् १८६० की साधम अङ्गरेज महाराजने निजामके राज्यको बढ़ाया और कर्जाका ५० लाख रुपया माफ करदिया। उससे सन् १८५३ की संधिके मतलबके लिये बरार देशके ३२ लाख रुपये आमदनीके जिलोंको लिया अङ्गरेजी प्रबंधसे बरारकी मालगुजारी बहुत बढ़ गई है। सन् १८८२-१८८३ में उसकी मालगुजारी लगभग ८५ लाख रुपया होगई थी।

हैदराबादके वर्तमान निजाम हिज हाईनेस मीर सर महबूबअलीखाँ बहादुर आसफजाह जी० सी एस० आई० सन् १८६६ में पैदा हुए, जो अपने बापके मरनेके समय केवल ३ वर्षके थे, मृत सर सालारजङ्ग और अमीर समसुलउमरा उनके लड़कपनमें राज्यका काम करते थे। सर सालरजङ्ग बड़ी चातुरीसे राज्यका प्रबंध किया, किन्तु सन् १८८३ में वह हैजेसे मरगये। सन् १८८४ में भारतवर्षके गवर्नर जनरल और वाइसराय लार्ड रिपनने वर्तमान निजामको राजतिलक दिया। मृत प्राइमिनिष्टर नवाब सर आसमानजाह बहादुर के० सी०आ०ई० निजामके रिस्तेदार थे, जिनके पीछे इकबालुद्दौला विकरूल उमरा बहादुर उनके कायम मुकाम हुए।

हैदराबादके निजामको २१ मैदानकी और ६५४ अन्य तोपें,५५१ गोलंदाज, १४००० सवार और १२७७५ पैदल सेना रखनेका अधिकार है इनको अङ्गरेजी सरकारकी ओरसे २१ तोपोंकी सलामी मिलती है।

बीदर।

हैदराबाद शहरसे ७८ मील पश्चिमोत्तर (१७ अंश, ५३ कला, उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, ३४ कला पूर्व देशान्तर) में हैदराबादके राज्यके अन्तर्गत जिलेका सदर स्थान बीदर एक पुराना कसबा है। यही बीदर पूर्व समयमें विदर्भदेशमें सुप्रसिद्ध राजा नलके श्वसुर और दमयंतीके पिता विदर्भराज राजाभीमकी विदर्भनगरी था।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बीदरमें ११३१५ मनुष्य थे; अर्थात् ५७४५ मुसलमान, ५४७५ हिन्दू, ८२ जैन, ९ कृस्तान और ४ सिक्ख।

बीदरमें वहमनी बादशाहोंके विविध महल, मसाजिदे और अन्य इमारतें टूट फूट गई हैं; किन्तु बची हुई इमारतें, जिनमें मदरसा और मसजिद अधिक प्रसिद्ध है, वहाँके पहिलेके ऐश्वर्यको जनाती हैं। कसबेका शहर पनाह, जिसका दौरा ६ मील होगा, टूट फूट गया है। उसकी पुश्तोंमेंसे एकपर २१ फीट लम्बी एक पुरानी तोप पड़ी है। कसबेमें १०० फीट ऊँचा एक मीनार है और पश्चिमोत्तरके मैदानमें बहुतेरे मकबरे खड़े हैं।

बीदरी धातुके वर्तनके लिये बीदर कसबा प्रसिद्ध है वहाँ इस धातुकी उत्पत्ति हुई, इस लिये इसका नाम बीदर पड़ा। सीसा, ताम्बा और राङ्गा इन तीनोंको गलाकर एक प्रकारका धातु तैयार करते हैं; उसका थाल, फर्शी, रेकावी, चारपाईके पावे, इत्यादि चीजें बनाकर उनपर विविध प्रकारके फूल खोदकर उनमे रूपा और सोना या केवल रूपा अथवा सोनाका मुलम्मा किया जाता है। काली धातुकी चीजोंपर सफेद और पीले फूल बहुत अच्छे लगते हैं। बीदर जिलेमें कल्यानी सबसे बड़ा कसबा है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय उसमें १३०२६ मनुष्य थे।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—(महाभारत—आरण्य पर्व—५३ वाँ अध्याय) निषध देशमें बीरसेन राजाके दो पुत्र उत्पन्न हुए। जिनमें ज्येष्ठका सुप्रसिद्ध राजा नल और कनिष्ठका पुष्कर नाम था।

राजा नल द्यूत विद्या और अश्व विद्यामें परम निपुण थे।

तथा विदर्भनगरीमें अति पराक्रमी राजा भीम नामक था। एक समय महर्षि दमनक राजाके समीप आये उन्हें राजाने निष्पुत्र होनेके कारण अत्यन्त प्रसन्न किया। महर्षि प्रसन्न होकर एक कन्या और ३ पुत्र होनेका बर दिया। जब राजाके एक कन्या और तीन पुत्र हुये; तब उनमें कन्याका दमयन्ती और पुत्रोंका दम, दान्त, दमन, नाम रक्खा।

दमयन्ती अत्यन्त रूपवती होनेके कारण लोकमें प्रसिद्ध हुई। लोग दमयन्तीकी नलके समीप और नलकी दमयन्तीके समीप प्रशंसा करने लगे। नल और दमयन्तीकी प्रीति परस्पर विना देखेही बढ़ गई। निदान यहाँ तक कि राजा नल विरहसे व्याकुल हो नगरके समीपके बनमें चले गये। वहाँ सुवर्णवर्णके बहुतसे हंस देखकर छलसे एकको पकड़ लिया। तब दूसरा हंस आकाशसे मनुष्य वाणी बोला कि हे राजन्। यदि हंसको आप न मारोगे और छोड़ दोगे तो दमयन्तीके पास जाकर तुम्हारा ऐसा वर्णन हमलोग करेंगे कि जिसमे वह तुम्हें छोड़ दूसरेको नहीं चाहेगी। इस बातको सुनकर नलने उस हंसको छोड़ दिया। तदनन्तर सब हंस विदर्भनगरमें जाकर जहाँ दमयन्ती थी, वहीं आकाशसे उतर पड़े।

उन्हें देख सखीगण और दमयन्ती एक २ हंसको पकड़ने चलीं। पर जैसे २ पकड़नेको आगे बढ़ती थीं, वैसे २ हंसभी आगे बढ़ जाते थे। उनमें जिस हंसको खास दमयन्ती पकड़ती थी; वह हंस मनुष्यवाणीसे राजा नलकी प्रशंसा करने लगा और कहा कि तेरे रूपके योग्य तीनों लोकमें राजा नलके समान दूसरा नहीं है; इसलिये उन्हींको तू अपना पति बना। हंसके ऐसे कहनेपर दमयन्तीने कहा कि आप राजासे भी जाकर इसी तरह कहिये।

(५४ वाँ अध्याय) दमयन्तीको उसी समयसे नलके विरहमे विकल देखकर सखी जनोंने यत्न पूर्वक राजा भीमसे कुछ कहा । भीमने कन्याकी युवावस्था विचारकर स्वयबर रचा । सब राजागण स्वयम्वरमें आने लगे । उसी समय नारदऋषिके मुखसे दमयन्तीका रूप और बडा भारी स्वयम्वर सुनकर इन्द्र, वरुण, यम, अग्नि भी दमयन्तीके लिये चले । मार्गमें अति रूपवान् राजा नलको स्वयम्बरमे जाते देखकर निरास हो विमान रोका और नलसे कहा कि हे राजन् ! आप सत्यव्रत हैं; इसलिये मेरी सहायताके लिये दूत बनिये ।

(५५ वाँ अध्याय) तब राजा नलने दूतत्त्व अंगीकार करके उन लोगोंका नाम पूछा और कहा कि किसका और क्या काम है ।

तदनन्तर देवतोंने अपना २ इन्द्र, वरुण, यम, अग्नि, नाम बतलाकर कहा कि दूत बनकर दमयन्तीके पास जाकर यह कहना होगा कि आपको इन्द्र, वरुण, अग्नि, यम चाहते हैं, उनमेंसे एक किसीको अपना पति बनाओ । ऐसा सुनकर नम्र हो नलने कहा कि हमारा और आपका एकही उद्देश्य होनेसे हमें दूत बनाना उचित नहीं है और मैं अपने हृदय-से उसे अपनी स्त्री बनाकर दूसरेके पास जानेकी अनुमति कैसे दूंगा ।

तब देवतोंने कहा कि हम लोगोंने तुम्हें परम सत्यवादी सुना है और तुम प्रतिज्ञा करचुके हो, इसलिये तुम्हें अवश्य दूत बनना होगा । ऐसा सुनकर नलने कहा कि द्वारपालों-से रक्षित अन्त पुरमें मेरा किस प्रकार प्रवेश होगा । तब इन्द्रके अन्तर्द्धान विद्या देने पर दमयन्तीके समीप पहुँचकर उसके पूछनेपर नलने कहा कि मैं नल हूं—और इन्द्र, वरुण, यम, अग्नि, देवता तुम्हारी इच्छा करते हैं । मैं दूत बनकर उनके प्रभावसे अलक्ष्य होकर यहां आया हूँ । अब जैसा चाहो वैसा करो ।

(५६ वाँ अध्याय) ऐसा सुन देवतोंको नमस्कार करके दमयन्तीने कहा कि मैं सिवाय आपके कदापि दूसरेको नहीं वरूंगी और आप उनके दूत बनकर आए हैं, इसलिये आप उनलोगोंके साथ स्वयम्वरमें आइये, पर मैं तो आपहीको जयमाल दूँगी । ऐसा सुन नलने देवतोके पास आकर यथार्थ वृत्तान्त कह सुनाया ।

(५७ वाँ अध्याय) तदनन्तर नल और चारो देवता स्वयम्वरमें एकाकार बनकर जा बैठे । दमयन्ती स्वयम्वरमें एकाकार पाँचों नलोको देख परम विस्मित होकर जब देवतोंके चिह्न किसीमें न पाये, तब दीन हो ध्यानकर देवतोंकी प्रार्थना की कि मै हंसके वचनसे अपना पति राजानलको बना चुकी हूँ, इसलिये मेरे पातिव्रत्यधर्मकी आप लोग रक्षा कीजिये । ऐसी प्रार्थना जानकर देवतोंने अपना २ चिह्न धारणकर लिया । तब दमयन्ती परम आनन्द-से राजा नलहीके गलेमें जयमाल दे दिया । यह देख सब लोग दमयन्ती और नलकी प्रशंसा करने लगे ।

दमयन्तीके पिताने नलके साथ दमयन्तीका विवाह कर बिदा किया ।

राजानलके दमयन्तीको साथ ले आनेपर अपनी राजधानीमें इन्द्रसेन नामक पुत्र और इन्द्रसेना नामक कन्या उत्पन्न हुई ।

इतिहास—बहमनी खान्दानके बादशाहोंने, जिसका राज्य सन् १३४७ से प्रारम्भ हुआ, क्रमसे गुलबर्गा, वारंगल और बीदरमें रहकर राज्य किया । सन् १५१२ में गोल

कुण्डाके कुतवशाही खान्दानके बादशाहने वहमनी खान्दानके अन्तिम बादशाहसे गोलकुण्डाका किला छीन लिया। वहमनी खान्दानके पश्चात् वरीदशाही खान्दानके बादशाह, जो सन् १४९८ में कायम हुए थे सन् १६०९ के पीछे तक बीदरमें स्वाधीन राज्य करते रहे सन् १६५७ ई० में मुगल बादशाह औरंगजेबने बीदरका किला लेलिया। अब वह हैदराबादके निजामके अधिकारमें है।

नांदेड़।

बीदर कसवेसे लगभग ९० मील उत्तर हैदराबादके राज्यमें गोदावरी नदीके बायें एक नहरके निकट जिलेका सदर-स्थान नांदेड़ एक कसवा है। उसमें निजाम सरकारकी कचहरियाँ बनी हुई हैं। *

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नांदेड़मे १३१०५ मनुष्य थे; अर्थात् ७३०४ हिंदू, ५०६८ मुसलमान, ६५९ सिक्ख ६७ जैन और ७ पारसी। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह हैदराबादके राज्यमे ९ वॉ शहर है।

नॉदेड़में सिक्ख लोगोंके दशवॉ गुरु श्रीगोविन्दसिंहजीकी संगति है। गुरुगोविन्द-सिंहने सन् १६६६ ई० में विहारके पटने शहरमें जन्म लिया और सन् १७०८ में इसी नाँदेड़के समीप मुसलमानोसे लड़कर परलोकको प्रस्थान किया। इनका संक्षिप्त जीवनचरित्र भारत-भ्रमणके दूसरे खण्डके अमृतसरमें और तीसरे खण्डके पटनेके वृत्तान्तमे है।

वारंगल।

सिकन्दराबादके रेलवे स्टेशनसे ८७ मील पूर्वोत्तर वारंगलका रेलवे स्टेशन है। हैदरावादके राज्यमें जिलेका सदर स्थान वारंगल एक पुराना कसवा है, जिसमें चालुक्य कारीगरीकी इमारतोंमेसे ४ दिलचस्प कीर्तिस्तम्भ अब तक हीन दशामे विद्यमान हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय करीमाबाद और मतवारा शहरतलीके साथ वारंगलमें ११४८४ मनुष्य थे; अर्थात् ८३५४ हिन्दू, २७६२ मुसलमान, २५२ सिक्ख; १०४ कृस्तान और २२ पारसी।

इतिहास—वारंगल तेलीगानाके हिन्दू राज्यकी, जिसको नरपति अन्ध्रने नियत किया था, पुरानी राजधानी था। सन् १३०३ ई० मे अलाउद्दीनने वारंगल पर आक्रमण किया; किन्तु निरास होकर उसको लौटजाना पड़ा। सन् १३०९ में उसका कर्मचारी मलिक काफूरने बहुत दिनों तक घेरा देनेके पीछे वारंगलको लेलिया। वहाँका राजा 'कर' देनेको कबूल किया। गयासुद्दीन तुगलकके राज्यके समय जब फरासीसियोंने वारंगल पर आक्रमण किया, तब मुसलमानोंने वारंगलको फिर लेलिया; किन्तु गयासुद्दीनके पुत्र महम्मदआदिल तुगलकके राज्य (सन् १३२५-१३५१) के समय हिन्दुओंने वारंगलको फिर प्राप्त किया। सोलहवीं सदीके आरम्भमे वहमनी खानदानके बादशाहने वारंगलको लेलिया और वारंगलके राजाके पुत्रको कैदी बनाकर मारडाला। सन् १५१२ और १५४३ के बीचमे कुतवशाही खानदानके बादशाहोंने गोलकुण्डा राजधानी और बचे हुए राज्यको लेलिया।

* मनमार जंक्शनसे पूर्व-दक्षिण हैदराबाद तक नई रेलवे लाइन निकली है। उसके पास मनमारसे २१८ मील पूर्व-दक्षिण और हैदराबादसे १६८ मील (इन्दुर कसबेसे ६८ मील) पश्चिमोत्तर नांदेडका रेलवे स्टेशन है।

छठवाँ अध्याय।

(मद्रास हातेमें) बेजवाड़ा, मछलीपट्टम्, एलौर, राजमहेंद्री, धवलेश्वरम्, कोकनाड़ा, पीठापुरम्, अनकापल्ली, विजगापट्टम्, विजयानगरम्, चिकाकोल, पर्लाखिमड़ी और ब्रह्मपुर।

बेजवाड़ा।

वारंगलसे १२६ मील दाक्षिण थोड़ा पूर्व बेजवाडाका रेलवे स्टेशन है। वहाँ निजाम स्टेट रेलवे, सदर्न मरहठा रेलवे और ईष्टकोष्ट रेलवेका जंक्शन और मद्रास, तथा हैदराबाद और कलकत्तेकी पुरानी सड़कोंका मेल है।

मद्रास हातेके तैलङ्गदेशके कृष्णा जिलेमें (१६ अंश, ३० कला, ५० विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश, ३९ कला, पूर्व देशान्तरमे कृष्णानदीके बायें किनारे पर बेजवाडा एक प्रसिद्ध तिजारती कसवा है, जिसको कुछ लोग विजयेश्वर और दक्षिण काशी कहते हैं। बेजवाड़ेसे ४५ मील दक्षिण कृष्णानदीका मुहाना है। नहरकी सौदागरी और सिंचावके कामोंका वह प्रधान केन्द्र है। वहांसे मद्रास, एलौर, मसुलीपट्टम्, कोकनेडा और राजमहेन्द्रीको नहरें गई हैं। बेजवाड़ामें सन् १७६० का बना हुआ एक उजडा हुआ किला और उसके पास चट्टान काट कर बने हुए बौद्ध और हिन्दुओंके बहुतसे पुराने गुफा मन्दिर हैं। बेजवाडेके आस पास बहुत पुराने रिमेन्स हैं। इनके अतिरिक्त बेजवाड़ामें मुनसफी कचहरी, अस्पताल, स्कूल, बंगला, लाइब्रेरी और जेलखाना और अन्य भी अनेक सरकारी आफिस हैं बेजवाडाके पास एक पहाड़ी है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय बेजवाडेमें २०७४१ मनुष्य थे, अर्थात् १८२२३ हिन्दू, २१७७ मुसलमान, ३३७ क्रस्तान, २ जैन और २ पारसी।

बौद्ध गुफायें—पहाड़ीके उत्तरीय रिजके पूर्वके छोरके पास अनेक बौद्ध गुफाएँ और छोटी कोठरियाँ हैं। कसबेसे एक मील पश्चिम कृष्णानदीके दक्षिणके रिजपर अण्डावल्लीका गुफामन्दिर है। एक दूसरे स्थान पर ७७ फीट भीतरको लम्बी ३० फीट दहिने बायें चौड़ी और ४५ फीट ऊंची, चट्टान काटकर गुफा बनाई हुई है।

हिन्दू गुफायें—बड़ी पहाडीके जिसके कदमके पास बेजवाड़ा बसा है; पूर्व बगलमें उसके पादमूलके पास बेजवाड़ा कसबेके पूर्वोत्तर छोटे गुफामन्दिरमें विनायककी मूर्ति है। उसके आगे कई एक छोटी कोठरियाँ और एक बड़ा मण्डप है, जिसमें चट्टानके खम्भे बने हुए हैं।

बेजवाड़ेसे १½ मील पश्चिम कृष्णानदीके दहिने किनारेपर सीतानगरम्के पश्चिम अण्डावल्ली गाँवके निकट गुफा मन्दिर है। एकमे अनन्तस्वामी अर्थात् विष्णु भगवान् हैं और एकमें, जिसकी छत चट्टानके खम्भोंपर है, सीताहरण, रामद्वारा सीताका खोज और रावणवधकी लीला देख पड़ती है।

बेजवाड़ासे ३ रेलवेकी लाइन ३ तरफ गई हैं; जिनके तीसरे दरजेका महसूल प्रति मील २ पाई लगता है।

(१) बेजवाड़ासे पूर्वोत्तर 'ईष्टकोष्ट (पूर्वी किनारा) रेलवे'—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३७ एलौर।
४९ भीमाडोल।
९८ राजमहेन्द्री।
१३० सामलकोटा जंक्शन।
१३७ पीठापुरम्।
२०१ अनकापल्ली।
२२२ वालटेर जंक्शन।
२६० विजयानगरम्।
३०३ चिकाकोलरोड।
३३२ नवापाड़ा।
३७९ इच्छापुर।
३९४ ब्रह्मपुर।
४०८ छत्तरपुर।
४२४ रम्भा।
४८६ खुरदा रोड।
४९८ भुवनेश्वर।
५०८ कटक रोड (शहरसे ६ मील)।

सामलकोटा जंक्शनसे ७ मील कोकानाडा और ९ मील कोकानाडा बन्दर।

वालटेर जंक्शनसे २ मील दक्षिण-पूर्व विजिगापट्टम्।

(२) बेजवाड़ासे दक्षिण-पश्चिम 'सदर्न मरहठा रेलवे;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

७ मङ्गलगिरि।
२० गुंटूर।
७१ विनुकुण्डा।
१८९ नंद्याल।
२३६ करनूल रोड।
२७९ गुंटकल जंक्शन।

(३) बेजवाड़ासे पश्चिमोत्तर 'निजाम स्टेट रेलवे'—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१२६ वारङ्गल।
२१३ सिकन्दराबाद।
२१९ हैदराबाद।
३३४ वाडी जंक्शन।

(४) *

मछलीपट्टम्।

बेजवाड़ासे नहर द्वारा लगभग ५० मील पूर्व-दक्षिण (१६ अंश ९ कला ८ विकला उत्तर अक्षांश और ८१ अंश ११ कला ३८ विकला पूर्व देशान्तरमें) समुद्रके किनारेपर मदरास हातेके तैलङ्ग देशके कृष्णा जिलेमें प्रधान कसबा और प्रधान बन्दरगाह तथा कृष्णा जिलेका सदर स्थान मछलीपट्टम् एक कसबा है, जिसको मसुलीपटम् मछलीबन्दर तथा केवल बन्दर नाम भी लोग कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मछलीपट्टम्में ३८८०९ मनुष्य थे; अर्थात् १८६०१ पुरुष और २०२०८ स्त्रियाँ। इनमें ३३५४४ हिन्दू, ४६१८ मुसलमान, ६४४ कृस्तान, २ जैन और १ पारसी थे।

---

* बेजवाड़ासे दक्षिण मदरास रेलवेपर ३ मील कृष्णा नहर, ८६ मील अंगोल, १५८ मील नेलोर, १८२ मील गुडुर, और २६७ मील मदरास शहर है।

मछलीपटम्में जज और कलक्टरका आफिस, जेलखाना, सरकारी कचहरियाँ, अस्पताल और कई एक स्कूल हैं। किलेमें कई एक गिरजे हैं। किलेके वारक अर्थात् सैनिक गृह और हथियारखाना हीन दशामें खडे हैं, क्योंकि सन् १८६५ ई० में वहाँसे सरकारी सेना दूसरी जगह हटा दी गई कसवेमें अच्छी सड़के और ईटोंके मकान बने हुए हैं। किलेसे लगभग २ मील पश्चिमोत्तर यूरोपियन लोगोंकी कोठियाँ वनी हुई है।

सन् १८८२—१८८३ ई० में बन्दरगाहमे १०८३२८० रुपयेका माल आया और १५२८१४० रुपयेका माल बन्दरगाहसे यूरप इत्यादि देशोंमें गया। बडे जहाज किनारेसे ५ मीलके बाहर लङ्गरपर ठहरते हैं।

मछलीपट्टम्में कपडे बिननेवाले और छापनेवाले बहुत लोग है, किन्तु कल कारखाने होनेसे उनका काम घटता जाता है। अबतक वहाँकी छींट दूसरे देशोंमें भेजी जाती है। वहाँ पादड़ी लोगोंकी बड़ी उन्नति है, बहुत लोग कृस्तान होते जाते है। कसबेकी दशा हीन है। सन् १८६४में समुद्रकी तूफानी लहरसे सम्पूर्ण कसवा बहगया और३०००० प्राणी मरगये। सन् १८७९ की रातमें ऐसेही तूफानसे बहुतेरे सोये हुए लोग डूब मरे।

कृष्णा जिला—यह जिला मदरास हातेमें बंगालेकी खाढी अर्थात् पूर्वी किनारेके पास कृष्णा नदीके मुहानेके दोनो ओर है। कृष्णानदीके नामसे इस जिलेका यह नाम पडा है। इसके पूर्व बङ्गालकी खाढ़ी, दक्षिण नैलोर जिला, पश्चिम हैदरावादका राज्य और करनूल जिला और उत्तर गोदावरी जिला है। जिलेमें चन्द नीची पहाडियाँ हैं। उनमेंकी सबसे ऊँची पहाडी समुद्रके जलसे केवल १८७५ फीट ऊँची है। जिलेमें कृष्णा प्रधान नदी है, जिससे यह जिला मसुलीपट्टम् और गंतूर दो भागोमे बटगया है। कृष्णाके पूर्व मसुलीपट्टम् और पश्चिम गंतूरका भाग है। कृष्णामें सर्वदा नाव चलती है। इसके अलावे पाँच सात छोटी नदियाँ हैं। जिलेकी पूर्वी सीमापर कोलर झील जिसकी लम्बाई २१ मील और चौडाई १४ मील है, आषाढ़से फागुन तक नाव चलनेके लायक रहता है। उसमें जगह जगह टापू हैं। (गोदावरी जिलेमें देखिये) जिलेमें लोहे और ताम्बेकी अनेक खानियाँ हैं; जिनमेंसे एक समय बहुतसे धातु निकाले जाते थे। हैदरावादके राज्यकी सीमाके पासके ५ गाँवोंमें हीरेकी खान हैं, किन्तु बहुत कम हीरे निकलते हैं। पूर्व कालमें इस जिलेकी खानोंमें असंख्य लोग काम करते थे और इस जिलेमें रक्तमणि और छोटे लाल भी निकलते थे। लोग कहते हैं कि इसी जिलेकी खानोसे सुप्रसिद्ध कोहनूर और रीजेंट हीरा निकला था। जिलेके भीतर अव बहुत थोडा जङ्गल है। जिलेमे तैलंगी भाषा प्रचलित है। साधारण प्रकारसे इस जिलेके लोग गरीब हैं।

कृष्णा जिलेके एक तालुकमे एक पहाड़ीके सिरपर, जो समुद्रके जलसे १५८७ फीट और मैदानसे ६०० फीट ऊँचा है, कटपाकुण्डा एक प्रसिद्ध गाँव है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २५०४ मनुष्य थे उस गाँवमे एक शिवमन्दिरके पास फाल्गुनकी शिव-रात्रिके समय एक मेला होता है, जो फाल्गुन सुदी २ तक रहता है। मेलेमें ५० हजारसे अधिक मनुष्य आते हैं और लकडीकी बड़ी तिजारत होती है। नीचेसे पहाड़ीके सिर तक पत्थरकी सीढियाँ बनी हैं।

सन् १८८१की मनुष्य-गणनाके समय कृष्णा जिलेके ८४७१ वर्ग मीलमें १५४८४८० मनुष्य थे; अर्थात् १४२५०१३ हिन्दू, ८७१६१ मुसलमान, ३६१९४ कृस्तान, ८ जैन और १०४ दूसरे। हिन्दुओंमें ५२२६९६ बेलाला, १०१५७८ गड़ेरिया, ९४८९३ ब्राह्मण, ६९८५४ सेटी (व्यापार करनेवाले), ४७१९९ कैकोला, ४४३७६ बनान (कपड़ा धोनेवाले), ३४५२८ कमार, ३०६४३ साना, २४४५९ बनियाँ (मजुराके किसिमकी एक ज्ञाति विशेष), १८६०६ सतानी, १६५५७ अम्बातन (क्षौर कर्म करनेवाले), १६३६३ कुसवन (मट्टीके बर्तन बनानेवाले), ११५५९ राजपूत और बाकीमें मछुहा, कनाकन इत्यादि जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गगनाके समय कृष्णा जिलेके कसबे मछलीपट्टमूमें ३८८०९, गंतूरमें २३३५९, बिजबाड़ामें २०७४१, चिरलामें १०५८१ और मङ्गलगिरि, चेलापल्ली, कुण्डापल्ली, बल्लूर इत्यादि छोटे कसबोंमें इनसे कम मनुष्य थे।

इतिहास—कृष्णा जिलेके जङ्गलीलोग अति पूर्व कालमें शिकारसे अपना निर्वाह करते थे। सन् ईस्वीके कुछ पहिलेसे कुछ पीछे तक कृष्णानदीके किनारोंपर बौद्धमतके लोग वसते थे। तीसरी सदीमें ब्राह्मणमतके लोग आये। सातवीं सदीमें कल्यानीपुरके चालुक्य वंशके राजाने बेंजीके राजाको जीता। चालुक्य राजाओंके बाद दक्षिणसे चोला वंशके राजा आये। उसके बाद धरनीकोड़ाके जैन राजाने कृष्णा जिलेपर हुकूमत की। उसके पीछे कुण्डावरके रेड्डी वंशके राजाने उड़ीसाके राजाके साथ उस देशके राज्यको बाँटा। सन् १३२८ से सन् १४२४ ई० तक रेड्डी वंशके राजाओंने राज्य किया। उनके बाद उड़ीसाके गजपति राजा आये और गजपति वंशके पीछे विजयानगरके राजाका राज्य कायम हुआ। १४ वीं सदीमें मछलीपट्टमूका बन्दरगाह नियत हुआ। सन् १५८० में मुसलमानोंने कुण्डावीरके किलेको हिन्दुओंसे जीतकर कृष्णा जिलेपर अपना अधिकार किया।

सत्रवीं सदीके आरम्भमें यूरोपियन सौदागरोंने गोलकुण्डा राज्यके आधीन मछलीपट्टमूमें अपनी कोठियाँ कायम कीं। सन् १६११ में अङ्गरेजोंने वहाँ अपनी कोठी नियत की। सन् १६२८ में ४ वर्षके लिये वे लोग निकाल बाहर किये गये किन्तु गोलकुण्डाके बादशाहसे फरमान पाकर वे लोग फिर मछलीपट्टमूमें आये। सन् १६११ के पहिलेहीसे मछलीपट्टमूमें डच लोगोंकी कोठी कायम हो चुकी थी। सन् १६६९ में फरासीसी वहाँ आये। सन् १६८६ में डच लोगोंने मछलीपट्टमूपर अपना स्वाधीन अधिकार कर लिया। सन् १६८९ में मुगल-बादशाह औरंगजेबके जनरल जुलफकारखांने: डचवालोंसे मछलीपट्टमू छीन लिया और कृष्णा जिलेको मुगल राज्यमें मिला दिया। सन् १६९० में अङ्गरेजोंने औरंगजेबकी आज्ञापत्रसे मछलीपट्टमूकी सौदागरीका पूरा अधिकार पाया। सन् १७०७ से अङ्गरेजी अधिकार होनेके पहिले तक कृष्णा जिले डेकानके सूबेका एक भाग था। १७५० में निजामने चारों तरफके देशके साथ मछलीपट्टमूको फरासीसियोंको दे दिया। फरासीसियोंकी सहायतासे मुजफ्फरजङ्ग हैदराबादके तख्तपर बैठे। सन् १७५३ में अङ्गरेज लोग मछलीपट्टमूसे निकाल दिये गये। सन् १७५९ में बङ्गालके अङ्गरेजोंने अपनी सेना भेजकर मछलीपट्टमूपर अधिकारकर लिया। सलाबतजंगने डरकर अङ्गरेजोंसे सन्धि करके कृष्णा जिलेका बड़ा भाग उनको दे दिया। सन् १७६६ में दिल्लीके बादशाहके सनद द्वारा

अङ्गरेजोंको ५ उत्तरी सरकार मिले। सन् १८२३ में सम्पूर्ण कृष्णा जिलेपर अङ्गरेजी अधिकार होगया। सन् १८५९ में गंतूर और मछलीपट्टम् दो जिलोंके मेलसे कृष्णा जिला बना। गन्तूरका एक छोटा भाग और राजमहेन्द्री जिला गोदावरी जिला बनाया गया। पुराणोंके लेखसे मछलीपट्टम् और राजमहेन्द्रीके आस पासके देश कालङ्ग देशमें जान पड़ते हैं।

एलौर।

बेजवाड़ा जंक्शनसे ३७ मील पूर्वोत्तर एलौरका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके गोदावरी जिलेमें (१६ अंश, ४२ कला, ३५ विकला उत्तर अक्षांश और ८१ अंश, ९ कला, ५ विकला पूर्व देशान्तरमे) एक छोटी नदी और नहरके पास एक तालुकाका सदर स्थान एलौर कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय एलौरमें २९३८२ मनुष्य थे, अर्थात् १४२८७ पुरुष और १५०९५ स्त्रियाँ। इनमे २४८९८ हिन्दू, ४०४७ मुसलमान, और ४३७ क्रूस्तान थे।

एलौरमें मातहत मजिष्टरकी, कचहरी, पुलिसका स्टेशन स्कूल, पोस्टआफिस और कई गिरजे हैं। वहाँ ऊनी कालीन अच्छे तैयार होते हैं। कसबेके समीप पुराने किलेकी निशानियां विद्यमान हैं। नये बारकोंमें अब सरकारी आफिसोंका काम होता है। एलौरमे गरमी बहुत पड़ती है। उससे कई मील दक्षिण २१ मील लम्बा और १४ मील चौड़ा कोलर झील है।

इतिहास—पूर्व समयमें एलौर उत्तरी सरकारकी राजधानी था, इस कारणसे यह इतिहासोंमें प्रसिद्ध है। पहिले यह वेंजीके राज्यका हिस्सा था। सन् १४८० में यह मुसलमानोके अधिकारमें था। विजयानगरके राज्यकी बढतीके समय यह फिर हिन्दुओंके अधीन हुआ था किन्तु सोलहवीं सदीके आरम्भमें गोलकुण्डाके कुतबशाहने इसको छीन लिया। उसके पश्चात् यह क्रमसे देशी राजाओं, फरासीसियों और अङ्गरेजोंके अधिकारमें हुआ।

राजमहेन्द्री।

एलौरके रेलवे स्टेशनसे ६१ मील (बेजवाड़ासे ९८ मील) पूर्वोत्तर राजमहेन्द्रीका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके गोदावरी जिलेमें (१७ अंश उत्तर अक्षांश और ८१ अंश, ४८ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमें) समुद्रसे ३० मील पश्चिमोत्तर गोदावरी-नदीके बायें किनारेपर राजमहेन्द्री प्रसिद्ध कसबा है। इसको शास्त्रमे कलिङ्ग देशके अन्तर्गत लिखा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय राजमहेन्द्रीमें २८३९७ मनुष्य थे; अर्थात् १३९३४ पुरुष और १४४६३ स्त्रियाँ। इनमें २६१८८ हिन्दू, १७९३ मुसलमान, ४१३ क्रूस्तान और ३ जैन थे।

राजमहेन्द्रीके निकट गोदावरीनदीपर ५६ स्तंभ लगे हुए एक बड़ा पुल बना हुआ है। राजमहेन्द्री सुन्दर बनाहुआ कसबा है। कसबेमें १ मिउजियम अर्थात् अजायबखाना, एक कालिज १ पबलिकबाग, अस्पताल, २ गिरजा, कई एक स्कूल, जिलाजज, मातहत मजिष्टर और मुनसफकी कचहरियां और ३ जेलखाने हैं। इनमेंसे बड़े जेलखानेमें लगभग १००० कैदी रह सकते हैं। जिलेके प्रत्येक प्रसिद्ध स्थानोंपर राजमहेन्द्रीसे सड़क अथवा नहर गई है। जजकी

कोठी और कचहरियोंके मकान एक ऊँची भूमि पर बने हैं। पुराने शहरपनाहका कुछ भाग अबतक विद्यमान है कसबेके उत्तर और पूर्वोत्तर यूरोपियन लोग रहते हैं। राजमहेन्द्रीके पास गोदावरीकी चौड़ाई लगभग तीनमील है। राजमहेन्द्रीसे ४ मील दक्षिण धवलेश्वरम् कसबा है।

उड़ीसेके राजा महेन्द्रदेवने राजमहेन्द्रीको बसाकर अपनी राजधानी बनाई। वह राजा सन् ईस्वीके पहिले १०३७ और ८२२ के बीचमें था, बहुत समयके बाद यह वेंजी राजाओंका बैठक हुआ। सन् १४७१ में मुसलमानोंने राजमहेन्द्रीको अपने अधिकारमें करलिया। सन् १५१२ में कृष्णरायने मुसलमानोंसे छीन कर इसको उड़ीसेमें फिर मिलादिया। सन् १५७२ में डेकानके रफातखाँके आधीन मुसलमानोंने इसको जीत लिया। बाद १५० वर्षतक राजमहेन्द्रीमें लड़ाई होती रही। उसके पश्चात् यह गोलकुण्डाके बादशाहके आधीन हुआ। सन् १७५३ मे यह फरासीसियोंको मिला। सन् १७५४ से १७५७ तक यह चूसीका सदर स्थान था। सन् १७५८ में फरासीसी खदेरे गये। अन्तमें अङ्गरेजोंने इसको लेलिया।

गोदावरी जिला—इसके उत्तर मध्यदेशके बस्तरका देशी राज्य और मदरास हातेका विजिगापट्टम् जिला, पूर्वोत्तर विजिगापट्टम् जिला, पूर्व और दक्षिण वंगालकी खाढ़ी, दक्षिण पश्चिम कृष्णा जिला और पश्चिम हैदराबादका राज्य है। गोदावरीके मुहानेके पास गोदावरीके दोनों ओर यह जिला फैला है। जिलेमें खास करके इसके उत्तरी भागमें (अधिक) स्थान स्थानमें गावदुमी पहाड़ियाँ हैं, जिन पर सघन जङ्गल लगे हैं। कई पहाड़ियोंके जङ्गल अगम हैं। जिलेके जङ्गलोंमें बाँस, साबुनके फल, मधुमक्खियोंका मोम इत्यादि पैदावार होते हैं और बाघ, तेंदुये, भेड़िया, सूअर इत्यादि बनैले जन्तु रहते हैं।

जिलेकी गोदावरी और सरारी इन दो नदियोमें सर्वदा नाव चलती है। सरारी नदी गोदावरीमें मिल गई है। राजमहेन्द्रीसे ४ मील दक्षिण धवलेश्वरम् कसबेके निकट और समुद्रसे ३० मील उत्तर और गोदावरी नदीकी दो प्रधान शाखा होगई हैं, जिनके बीचमें अमलापुर तालुक है। इनमेंसे एक मुहानेके पास नरसापुर कसबा और दूसरेके निकट फरासीसियोके अधिकारमें अनाम बस्ती है। गोदावरीके ७ पवित्र धाराओंमेंसे अन्तिम धारा नरसापुरके निकट अन्तरवेदी स्थानमें है, वशिष्ठ धारा वहाँ समुद्रमें मिली है। यात्रीलोग सातों धाराओंमें स्नान करते हैं। अन्तरवेदीमें कल्याणम्का तिहवार होता है, जो ५ दिन रहता है। उसमें लगभग २० हजार यात्री आते हैं। गोदावरी नदी ७ धाराओसे, जो सातों पवित्र समझी जाती हैं, समुद्रमे मिली है। इनके नाम ये हैं;—तुल्यभागा; अत्रेया, गौतमी, वृद्धगौतमी, भरद्वाजा, कौशिका और वशिष्ठा। गोदावरीनदी बम्बई हातेके नासिकके पासके त्र्यम्बकसे निकलकर ९०० मील दक्षिण-पूर्व बहनेके उपरान्त यहाँ गोदावरी जिलेमें समुद्रसे मिली है। (इसकी कथा त्र्यम्बकके वृत्तान्तमें देखो) जिलेके पश्चिमी भागमे एलौर कसबेसे दक्षिण कोलर झील ३१ मील लम्बी और १४ मील चौड़ी है। उसमें जगह जगह टापू और मछुहोंके गाँव देखनेमें आते हैं। बहुतेरे टापुओंमें खेती होती है। झीलमे जल पक्षी और मछलियाँ बहुत हैं। वह झील कभी कभी १०० वर्ग मीलसे अधिक फैल जाती है। सूखी ऋतुओंमें उसका विस्तार बहुत कम होजाता है; बहुतेरे भागोमें केवल कीच रह जाता है। वह झील कृष्णा और गोदावरी इन दोनों जिलोंमें फैली हुई है। चन्द छोटी नदियोंका पानी उसमें आता है। नदियोंकी मट्टीसे झीलका विस्तार धीरे धीरे घट रहा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय गोदावरी जिलेका क्षेत्र फल (एजेंसी देशके साथ, जिसका क्षेत्र फल ८३० वर्गमील है) ७३४५ वर्ग मील था, जिसमें १७९१५१२ मनुष्य थे; अर्थात् १७४८७३४ हिन्दू, ३८७९८ मुसलमान, ३८९३ कृस्तान, १७ जैन और ७० दूसरे। हिन्दुओंमें ५३५८५४ वेलाला, ४३३२१८ परिया, १६१२६८ साना (ताड़ी बेंचने वाली जाति),८९४०२ ब्राह्मण, ७१७७६ कैकोला (विनने वाली जाति), ६६१५१ इडैगा (भेड चरानेवाली जाति), ५६४२४ वनियां (जाति विशेष, मजदूरी पेशे करनेवाले), ४६६६१ क्षत्री, ४५६३१ वनान (कपड़ा धोनेवाले),४३१७१ सेटी (सौदागर), ३५६७८ कमार, १९०११ अम्वातन (क्षौर कर्म करनेवाले), और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१की मनुष्य-गणनाके समय गोदावरी जिलेके कसबे कोकानाडामें ४०५५३, एलौरमें ३९३८२, राजमहेंद्रीमें २८३९७, पीठापुरम्में १३७३१, पेडापुरम्में १३६५८, सामलकोटमें १३४०९ और धवलेश्वरम्में १०४९२ मनुष्य थे। इनके अलावे इस जिलेमें अमलापुर, नरसापुर पल्लाकुडू, कपिलेश्वरपुरम्, कोरिङ्गा इत्यादि वहुतसे छोटे कसवे हैं।

भद्राचलम्—राजमहेंद्री कसवेसे लगभग १०४ मील और डुमागुडिमसे १५ मील दूर गोदावरीके किनारेपर गोदावरी जिलेके भद्राचलम् तालुकाका प्रधान कसवा भद्राचलम् है, जिसमें सन् १८८१ में १९०१ मनुष्य थे। गोदावरीके किनारेपर ४०० वर्षका वना हुआ रामचन्द्रका मन्दिर है। वह पीछे समय समयपर वढ़ाया गया था। मन्दिर ऊँची दीवारसे घेरा हुआ है। उसके दोनों वगलोंमें वीस पचीस छोटे मन्दिर हैं। गोदावरीसे मन्दिर तक सीढ़ियाँ बनी हैं। मन्दिरके पास सालाना मेला होता है। मन्दिरके देवताओंके वहुमूल्य भूषण हैं। निजाम प्रतिवर्ष मन्दिरके खर्चके लिये १३००० रुपये देते हैं। भद्राचलम्से २० मील दूर परणेशला पुराना स्थान है। वहाँ चैत्रमें मेला होता है। मेलेमें कपडा, वर्तन, मसाला इत्यादि वस्तु विकती हैं। वहाँ सरकारी कचहरी, जेल, पुलिस और स्कूल हैं।

इतिहास—गोदावरी जिला पूर्व समयमें द्राविड देशका अन्ध्र विभाग था। उस जिलेमें कई एक सौ वर्ष तक चालुक्य, नरपति और रेड्डी वंशके राजा और पहाडी लोग लड़ते रहे। मुसलमानोंने लगभग १५० वर्ष लड़ाई होनेके पश्चात् सन् १४७१—१४७७ के वीचमें हिन्दू राजाओंको अपने आधीन वनाया। सन् १५१६ में विजयानगरके राजा कृष्णरायने देशको लूटा और कुछ दिनोंके लिये वहाँ फिर हिन्दू राज्य नियत किया। छोटे छोटे हिन्दू राजाओंने कुछ दिनों तक स्वतंत्र होकर राज्य किया, किन्तु फिर सम्पूर्ण देश मुसलमानोंके अधिकारमें होगया। सन् १६८७ में औरङ्गजेवने कुतवशाही खानदानके वादशाहसे इस जिलेको लेलिया। यह निजाम आसफजाहके गवर्नरके अधीन हुआ। सन् १७१८ में आसफजाहके मरनेके समयसे अङ्गरेज और फरासीसियोंमें लडाई आरम्भ हुई। सन् १७६५ में अङ्गरेजोंने दिल्लीके वादशाहसे सनद पाकर उत्तरी सरकारपर अपना अधिकार जमाया। सन् १८०२—१८०३ में दायमी वन्दोवस्त हुआ। सन् १८५९ में सीमा ठीक की गई। गंतूर, राजमहेन्द्री और मछलीपट्टम्, तीनों जिलोंसे कृष्णा और गोदावरी दो जिले वनाये गये।

धवलेश्वरम्।

राजमहेन्द्रीसे ४ मील दक्षिण मदरास हातेके गोदावरी जिलेके राजमहेन्द्री तालुकमें गोदावरी नदीके किनारे पर धवलेश्वरम् एक कसवा और अति मनोरम स्थान है। उससे लगभग ३० मील दक्षिण समुद्र है। धवलेश्वरम्के निकटसे गोदावरी नदीकी दो बड़ी शाखा होगई हैं; जिनमेंसे एकके मुहानेके पास गोदावरी जिलेका नरसापुर कसवा और दूसरेके पास फरासीसियोंके अधिकारमें अनाम वस्ती है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय धवलेश्वरम्में १०४९२ मनुष्य थे अर्थात् १००१५ हिन्दू, ३१६ मुसलमान और १६१ कृस्तान।

धवलेश्वरम्में जिलेका इञ्जिनियारिङ्ग महकमा है आस पासकी पहाड़ियोंपर यूरोपियन लोगोंकी पुरानी कोठियाँ हीन दशामें विद्यमान है खानोंसे मकान वननेके कामका अच्छा पत्थर निकलता है खानोका काम उन्नति पर है धवलेश्वरम्से एक ३२ मीलकी नहर कोकानाड़ाको और अन्य भी कई नहर समुद्रके किनारे तक गई हैं।

जिस जगह गोदावरी नदीकी दो बड़ी शाखा होगई हैं। वहाँ १२ फीट ऊँचा और १६५० गज लम्बा; जो पिचिका टापू तक फैला है, एक बड़ा बाँध बना हुआ है। उसका काम सन् १८४७ में आरम्भ हुआ, उसके बनानेमें १५१७०७० रुपया खर्च पड़ा।

कोकानाडा।

राजमहेन्द्रीसे ३२ मील (बेजवाड़ासे १३० मील) पूर्वोत्तर सामलकोटा जक्शनका रेलवे स्टेशन है। सामलकोटासे दक्षिण-पूर्व ९ मीलकी रेलवे शाखा समुद्रके किनारेपर कोकानाडाको गई है। कोकानाडा मदरास हातेके गोदावरी जिलेमें प्रधान कसवा और बन्दरगाह है जिससे ५४५ मील पूर्वोत्तर कलकत्ता और ३१५ मील दक्षिण कुछ पश्चिम मदरास शहर है। कोकानाडा और सामलकोटाके बीचमें नहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कोकानाडामें ४०५५३ मनुष्य थे, अर्थात् २०३२८ पुरुष और २०२२५ स्त्रियाँ। इनमें ३७९४१ हिन्दू, १६९० मुसलमान, ९०७ कृस्तान ५ बौद्ध ४ पारसी, ४ जैन और २ यहूदी थे।

कोकानाडा गोदावरी जिलेका सदर स्थान है। इसमें मजिष्ट्र और उनके अधीन हाकिमोंकी कचहरियाँ, स्कूल, अस्पताल, जेलखाना इत्यादि सरकारी इमारते वनी हैं। सामुद्रिक माल रखनेके लिये कष्टम हौस है। सैकडों यूरोपियन सौदागर रहते हैं। जिलेके जजकी कचहरी राजमहेन्द्रीमें है। कोकानाडा और जगन्नाथपुरके बीचमें, जो दोनों एक म्युनिसिपल्टीमें शामिल हैं,-एक लोहेका पुल बना है। समुद्रके ज्वार होनेपर लोग पुल द्वारा कोकानाडासे जगन्नाथपुर जाते है।

गोदावरी और कृष्णा जिलेकी रुई, तेलके बीजे और चावल कोकानाडासे जहाजों द्वारा यूरपमें भेजे जाते हैं। लोहा, ताँवा, बोरा इत्यादि चीजें दूसरे स्थानोंसे कोकानाडामें आती हैं।

पीठापुरम् ।

सामलकोटाके रेलवे जंक्शनसे ७ मील (बेजवाडासे १३७ मील) पूर्वोत्तर पीठापुरम्का रेलवे स्टेशन है । मदरास हातेके गोदावरी जिलेके पीठापुरम् तालुकमें पीठापुरम् एक कसबा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पीठापुरम्में १३७३१ मनुष्य थे अर्थात् १२६४३ हिन्दू, १०६९ मुसलमान; १८ बौद्ध और १ क्रस्तान ।

पीठापुरम्में पादगया तीर्थ, कचहरी, स्कूल, पोष्टआफिस और एक जमींदार राजा हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय राजाके राज्यका क्षेत्रफल ३७१ वर्गमील और उसकी मनुष्य-संख्या १८४०१८ थी । राजा वेलमा जातिके है। लोग कहते हैं कि राजाके पुरुषे अवधसे आये थे । सन् १६४७ में वहाँ इनकी मिलकियत कायम हुई । राज्यसे ८११००० रुपयेकी आमदनी है, जिसमेसे २४९००० रुपया सरकारको पेसकस दिया जाता है । वर्तमान राजाका नाम राजा राजाराव गङ्गाधररामराव है ।

अनकापल्ली ।

पीठापुरम्से ६४ मील (बेजवाडा जंक्शनसे २०१ मील) पूर्वोत्तर अनकापल्लीका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके विजिगापट्टम् जिलेमे सारदा नदीके पास अनकापल्ली तालुकका सदर स्थान अनकापल्ली कसबा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय अनकापल्लीमे १७०१० मनुष्य थे, अर्थात् १६७३७ हिन्दू, २५६ मुसलमान और १७ क्रस्तान ।

अनकापल्ली कसबेमें सरकारी कचहरी, जेलखाना, स्कूल; अस्पताल इत्यादि इमारतें बनी हैं । कसबा उन्नति पर है । एक सड़क कसबेसे समुद्रके किनारे तक गई है। अनकापल्लीके आसपास विजयानगरके राजाकी जमींदारी है।

विजिगापट्टम् ।

अनकापल्लीसे २१ मील (बेजवाडासे २२२ मील) पूर्वोत्तर वालटेयरका रेलवे स्टेशन है, जिससे दक्षिण-पूर्व २ मीलकी रेलवे शाखा विजिगापट्टम्को गई है। मदरास हातेमें (१७ अंश, ४१ कला, ५० विकला उत्तर अक्षांश और ८३ अंश, २० कला, १० विकला पूर्व देशान्तरमें) समुद्रके किनारे पर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा विजिगापट्टम् है; जिसको विशाखपट्टनम् अर्थात् कार्तिकेयका नगर भी कहते हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय विजिगापट्टम्में ३४४८७ मनुष्य थे, अर्थात १६७०२ पुरुष और १७७८५ स्त्रियां । इनमें ३०९६६ हिन्दू, २२३६ मुसलमान, १२७१ क्रस्तान, ९ जैन, ३ पारसी और १ बौद्ध थे ।

विजिगापट्टम्में जिलेके जज, मजिष्टर, सब मजिष्टरकी कचहरियाँ, जेलखाना, गिरजा, कई एक स्कूल, अस्पताल, मिशन, २ अतीमखाना, १ गरीबखाना, १ कोढ़ीखाना, और छोटी फौजी छावनी है । सडकोंपर रातमें लालटेनोंकी रोशनी होती है । कसबेके पश्चिम एक बड़ा दलदल और दक्षिण ओर कसबे और समुद्रके बीचमें एक छोटी नदी है, जिसमें दो घाट बने हुए हैं । किलेके भीतर अङ्गरेजी पैदल सेनाके लिये बारकें अर्थात्

सैनिकगृह और हथियारखाना बने हुए हैं । किलेके भीतर सेसनकी कचहरी होती है और दूसरे अनेक सरकारी इमारतें और एक गिरजा है ।

कसबेके निकट छोटा बन्दरगाह है । सन् १८८३-१८८४ में लगभग ७४०००० रुपयेके माल बन्दरगाहमें आये और २२१८००० रुपयेके माल वहाँसे दूसरे देशोंमें गये । खास करके छोटी छोटी चीजें और अनेक भाँतिके धातु इङ्गलैंडसे आते हैं और गल्ले, चीनी इत्यादि वस्तु विजिगापट्टम्से दूसरे स्थानोमे जाती है । कसबेमें हाथीदांत, भैंस और हिरनके सींग, चन्दनकी लकड़ी और चांदीकी सुन्दर चीजें तैयार होती हैं । और वक्स, डेक्स इत्यादि कई प्रकारकी चीजें वहुत उत्तम वनती है ।

विजिगापट्टम् जिला—इसके उत्तर गञ्जाम जिला और मध्यदेश; पूर्व गञ्जाम जिला और बङ्गालकी खाढ़ी. दक्षिण बङ्गालकी खाढ़ी और गोदावरी जिला और पश्चिम मध्यदेश है । यह जिला सुन्दर पहाड़ी देश है, किन्तु इसका अधिक भाग रोगवर्द्धक है । पूर्वी घाट पहाड़ियोंका सिलसिला जिलेमें पूर्वोत्तरसे दक्षिण-पश्चिम गया है, जिससे जिला दो भागोंमें बँट जाता है । इनमेंसे बड़ा हिस्सा पहाड़ी देश और छोटा हिस्सा समतल है । जिलेमें समुद्रसे ५००० फीटसे अधिक ऊँची कोई पहाड़ी नही है । बङ्गालकी खाढ़ीके निकटकी भूमि उपजाऊ है । विजिगापट्टम् कसबेसे १८ मील पूर्वोत्तर इसी जिलेमें समुद्रके किनारे पर ८७४४ मनुष्योंकी बस्ती विमलीपट्टम् एक बन्दरगाह है, जहाँ कलकत्ते और ब्रह्माके कई आगबोट लगते हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय जयपुर और विजयानगरम्की जमींदारियोंके साथ विजिगापट्टम् जिलेका क्षेत्रफल लगभग १७३८० वर्गमील और उसकी मनुष्य-संख्या १७९०४६८ और जिलेकी एजेंसीकी, जिसके भीतर खास करके असभ्य जातियोंके लोग वसते है, मनुष्य-संख्या ६९४६७३ दोनों मिलकर २४८५१४१ थी । इनमें २४६०४७४ हिन्दू, जिनमें जंगली असभ्य लोग भी सामिल हैं, २०४०३ मुसलमान, ३४१० कृस्तान, ६७५ बौद्ध, २० जैन और १५९ अन्य थे । हिन्दुओंमें ८९१४९८ वेलाला (जो खास करके खेती करते हैं), २४१११७ परिया, १२२१९८ इडैगा (भेड़ पालते हैं), ८८४९० कैकोला (विनाईका काम करते है), ७३३९८ कमालर (कारीगर), ७०३४१ साना (ताड़ीका काम करते हैं), ५७५६४ ब्राह्मण, ५७४३७ वनान (कपड़ा धोते हैं) ३४९०० सतानी, ३३४०० सेटी (व्यापार करते हैं), २९२५५ अंबांतन (हजाम), २१४२३ क्षत्री, १६५९६ मछुहा, १५८५८ कनाकन (लिखनेका काम करते हैं), १५०५५ कुसवन (मट्टीके वर्तन बनाते हैं), १४४८९ वनिया (जाति विशेष) और बाकीमें दूसरी जातियोंके लोग थे । आदिनिवासी जातियोंमें खास करके गोंड, गदवा, खांद इत्यादि थे । जिलेके एजेंसीके अधीन खास कर आदि निवासी असभ्य लोग वसते है, उसकी मनुष्य-गणना ३ या ४ महीनोमें एक दूसरी रीतिसे की गई थी ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय विजिगापट्टम् जिलेके कसबे विजिगापट्टम्में ३४४८७, विजयानगरम्में ३०८८१, अनकापल्लीमें १७०१०, वोविलीमें १४४६८, सालूरमें १२९१७, पालकोंडामें १०३६७ और पार्वतीपुरमें १००५३ मनुष्य थे । इनके अलावे इस जिलेमें विमलीपट्टम् और कासिमकोटाभी छोटे कसबे हैं ।

जयपुरका राज्य—विजिगापट्टम् जिलेके पश्चिमी भागमें जयपुरका जमींदारी राज्य है। उसका क्षेत्रफल ९३३७ वर्गमील है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ६१२००० मनुष्य थे। राजाको १६००० रुपया पेशकस अङ्गरेजी सरकारको देना पड़ता है। राज्यमें बहुत पहाडियाँ हैं, किन्तु ५००० फीटसे अधिक ऊँची कोई नहीं है। बहुत भाग पहाडी जाति खाँद् लोगोंके अधिकारमें हैं, जो लोग पाहिले समयमें पृथ्वीको मनुष्य-बलि देते थे। सन् १८४५ में इस कामको रोकनेके लिये अङ्गरेज सरकारकी ओरसे खास एजेंट नियत किया गया। राजधानी जयपुरमें राजाका महल और कई एक देवमन्दिर सुन्दर बने हुए हैं, अन्य प्राय सब मिट्टीकी झोपडियाँ हैं। वहाँके वर्तमान राजा महाराज रामचन्द्रदेव जातिके क्षत्रिय-हैं।

बोबिली राज्य—विजिगापट्टम् जिलेमें विजयानगरम्के-उत्तर बोबिलीका जमींदार राज्य है। यह राज्य मदरास हातेके बहुत पुराने राज्योंमेंसे एक है। इसका क्षेत्रफल ९२० वर्गमील है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय १५८१७८ मनुष्य थे। राजाको राज्यसे लगभग ३७५००० रुपया मालगुजारी आती है। बोबिली राजधानीमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १४४६८ मनुष्य थे, अर्थात् १४०७५ हिन्दू, ३३३ मुसलमान और ६० कृस्तान। वहाँके वर्त्तमान नरेश राजा व्यंकटेश्वराचल पन्थी रंगाराव बेल्मा जातिके हैं।

विजिगापट्टमका इतिहास—विजिगापट्टम्का वर्तमान जिला हिन्दू इतिहासके आरम्भमे कलिंग राज्यका एक भाग था। पीछे उसको चालुक्य वंशके पूर्वी शाखाके प्रधानने जीता। वह कभी कभी उड़ीसाके गजपति वंशके राजाओंके और कभी कभी तेलिंगानाके राजाओंके अधीन होता था। चौदहवीं सदीके मध्य भागमें अन्ध्र वंशके राजा कुलोटगाचोलाने विजिगापट्टम् कसबेको बसाया। पीछे वह जिला आस पासके देशके साथ बहमनी वंशके राजाको मिला, किन्तु उडीसेके राजाने उस देशको फिर लेलिया। पीछे कुतबशाही खानदानके इब्राहिमने उत्तर चिकाकोल तक सम्पूर्ण देशको जीतकर अपने राज्यमें मिला लिया। सत्रहवीं सदीके मध्यमें ईष्टइण्डियन कम्पनीने विजिगापट्टम्में अपनी कोठी कायम की। सन् १६८७ में मुगल बादशाह औरंगजेबने गोलकुण्डाको जीता; तबसे उत्तरी सरकार, जिसमें विजिगापट्टम् जिला है, बराय नामके दिल्लीकी बादशाहतका एक भाग बना। सन् १६८९ में मुगलोंने ईष्टइण्डियन कम्पनीकी कोठीको छीन करके कोठीवालोंको मारडाला, किन्तु दूसरे वर्ष वह कोठी फिर उसको मिलगई और शीघ्रही वहाँ किलाबन्दी बनाई गई।

मुगलोंके निर्बल होनेपर उत्तरी सरकार हैदराबादके निजामके अधिकारमें आया। पहिले निजामकी मृत्यु होनेपर गद्दीके लिये झगड़ा हुआ। फरासीसियोंने सलाबतजंगकी सहायता की, इस लिये उसने इनको मुसतफानगर, एलोर, राजमहेंद्री और चिकाकोल नामक चारों सरकारोंको दे दिया। सन् १७५३ में फरासीसियोंने चारों सरकारोंके लिये फरमान हासिल किया। सन् १७५९ में अङ्गरेजोंने गोदावरी जिलेमें फरासीसियोंको परास्त करके उनसे मछलीपट्टम्का किला छीन लिया; तब निजामने ईष्टइण्डियन कम्पनीको मछलीपट्टम्के चारोंओरका देश दे दिया। सन् १७६५ में कम्पनीको शाही फरमान द्वारा सब उत्तरी सरकार मिल गये। सन् १७६८ में निजामके साथ कम्प-

नीकी एक सन्धि हुई, जिसके अनुसार निजामने भी उत्तरी सरकारोंको कम्पनीको देदिया। इस तरहसे दूसरे देशोंके साथ विजिगापट्टम् अङ्गरेजोंके अधिकारमें होगया। पीछे कई बार बगावत हुई किन्तु बढ़ने नहीं पाई।

विजयानगरम्।

वालटेयर जंक्शनसे ३८ मील और विजिगापट्टम् कसबेसे ४० मील (वेजवाड़ासे २६० मील) पूर्वोत्तर विजयानगरम्का रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके विजिगापट्टम् जिलेमें (१८ अंश, ६ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ८३ अंश, २७ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमें) विजयानगरम् एक कसबा है, जिसको कुछ लोग ईजानगर कहते हैं। विजयानगरम्के महाराजकी राजधानी होनेसे यह अधिक प्रसिद्ध है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय विजयानगरम्में ३०८८१ मनुष्य थे; अर्थात् १४८८२ पुरुष और १५९९९ स्त्रियाँ। इनमें २८७४२ हिन्दू, १८२० मुसलमान, ३१५ कृस्तान, ३ पारसी और १ अन्य थे।

विजयानगरम् एक सुन्दर कसवा है। इसमें एक सुन्दर बाजार, महाराजका दिया हुआ एक टौनहाल, एक बड़ा स्कूल और कई सरकारी इमारतें हैं और एसिस्टेंट कलक्टर रहते हैं। किलेके भीतर महाराजका विशाल महल और अन्य मकान बने हुए हैं। किलेसे १ मील दूर ऊँची भूमिपर अङ्गरेजी फौजी छावनी है, जिसमें देशी पल्टनकी एक रेजीमेण्ट रहती है। किले और छावनीके मध्यमें सड़कके पास एक बड़ा तालाब है, जिसमें सर्वदा पानी रहता है।

महाराजकी जमीन्दारी–यह विजिगापट्टम् जिलेमें भारतवर्षकी पुरानी और फैली हुई जमीन्दारियोंमेंसे एक है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय इसके लगभग ३००० वर्ग मीलके क्षेत्रफलमें १२५२ गाँव, १८५९०४ मकान और ८४४१६८ निवासी थे। महाराज अङ्गरेजी गवर्नमेण्टको ४९६५८० रुपया पेशकस अर्थात् जमीन्दारीका लगान देते हैं।

इतिहास—सन् ५९१ ई० में माधववर्मा नामक एक क्षत्रियने कृष्णा नदीकी घाटीमें राजपूतोंका नया देश बसाया, जिसके वंशमें विजयानगरम्के वर्तमान महाराज हैं। गोलकुण्डाके राज्यके समय उस वंशके लोग गोलकुण्डाकी कचहरीके प्रसिद्ध सरदार थे। सन् १६५२ में उस वंशके पशुपति माधववर्मा विजिगापट्टम्में आकर रहने लगे। बाद पशुपति वंश वाले उत्तरी सरकारोंमें सबसे अधिक बलवान् हुए। लगभग सन् १७१० में पशुपति माधववर्माके मरनेपर उनके पुत्र पद्दा विजयरामराज उत्तराधिकारी हुए। उन्होंने सन् १७१२ में पोटनूरको छोड़कर अपनी नई राजधानी बसाई और उसका नाम अपने नामके अनुसार विजयानगरम् रक्खा। उन्होंने विजयानगरम्में किला बनाया और अपने अधिकारको बढ़ाया। सन् १७५७ में उन्होंने फरासीसियोंकी सहायतासे अपने वंशके शत्रु बोबिलीके जमीन्दारको मार डाला; किन्तु दो रातके पीछे उस जमीन्दारके २ नौकरोंने उनको प्राण रहितकर दिया। उसके बाद पद्दा विजयरामराजके उत्तराधिकारी आनन्दराज और आनन्दराजके उत्तराधिकारी उनके दत्तक पुत्र विजयरामराज, जो निरे बच्चे थे, हुए। विजयरामराजके वैमात्रिक भाई सीतारामराज राज्यका काम करने लगे। उन्होंने सन् १७६१ में पर्लाखेमडीके राज्यपर आक्रमण करके राजाकी फौजको चीकाकोलमें परास्त करके एक बड़े देशको प्राप्त किया और

राजमहेन्द्रीकी लड़ाईमे भी उनकी जीत हुई। उस समय जयपुर, पालकुण्डा और आस पासके अन्य बहुत जमीन्दारोंने पशुपति वंशके राजाको अपना सरदार स्वीकार किया। अङ्गरेजोने भी अपनी सेनासे उनकी सहायता की थी। पीछे सीतारामराजका वल वढ़ा हुआ देखकर ईष्टइण्डिया कम्पनीको अपने राज्यका भय हुआ, इसलिये सीताराम कुछ दिनके लिये अलगकर दिये गये। सन् १७९० में वह वापस आये थे, किन्तु सन् १७९३ मे फिर मद्रास रहनेके लिये भेजे गये। युवा होनेपर राजा विजयरामराज अपने मनमें मरना कवूल करके अङ्गरेजोंके साथ लड़नेको तैयार हुए। सन् १७९४ की जूनमे अङ्गरेजी सेनाने पद्मनाभमें थोड़ीसी लडाईके वाद उनको परास्त किया। राजा और बहुतेरे प्रधान मारे गये। राजाके शिशुपुत्र नारायणवावू पहाडी जमींदारोंकी रक्षामें चले गये। पीछे नारायणवावू और पहाड़ी प्रधान लोग अङ्गरेजोंके आधीन हुए। विजयानगरम्के चन्द हिस्से निकाल लिये गये। राजाके राज्यका ६००००० रुपया पेशकस नियत हुआ, किन्तु सन् १८०२ में दायमी वन्दोवस्त होनेके समय अङ्गरेजी गवर्नमेण्टने विजयानगरम्के राज्यका पेशकस ५ लाख रुपया कर दिया। उस समय राज्यमें ११५७ गाँवथे। सन् १८४५ में नारायणवावू वहुत करजदार होकर और अपनी मिलकियतका प्रवन्ध अङ्गरेजी गवर्नमेंटके हाथमें छोड़कर काशीजीमें मरगये। विजयराम गजपतिराज उनके उत्तराधिकारी हुए। पशुपति घरानेके राजाओंको गवर्नमेंटसे मिर्जा और मनिया सुलतानकी पदवी और १९ तोपोंकी सलामी मिलती थी, परन्तु सन् १८४८ में पदवी घटा दी गई और सलामी १९ के स्थानपर १३ तोपोंकी की गई, जो अव तक मिलती है। १८५२ में राजा विजयराम गजपतिराजको राज्यका अधिकार मिला। उस समय उनकी मिलकियत अच्छी हालतमे होगई थी। सन् १८६४ में राजाको हिज हाईनेस महाराजाकी और उसके पश्चात् के० सी० एस० आई० की पदवी मिली। सन् १८७७ में उनको १३ तोपोंकी सलामी मिलनेका अधिकार हुआ। महाराज वड़े वुद्धिमान और दानी थे। उन्होंने अनेक सड़क, पुल और अस्पताल वनवाये और विजयानगरम् कसवेकी अनेक उन्नति की। उन्होंने खैरात और सर्व साधारण लोगोंके हितके कामोंमे खास करके काशीजी और अपने राज्यमें लगभग १० लाख रुपया खर्च किया। मद्रास, कलकत्ता और लण्डनमेंभी उनकी उदारताका स्मारक चिह्न है। सन् १८७८ मे महाराज विजयराम गजपतिराजकी मृत्यु होनेपर उनके पुत्र विजयानगरके वर्तमान नरेश आनरेवल हिज हाईनेस महाराजा सर पशुपति आनन्द गजपतिराज के०सी०आई० ई०, जिनका जन्म सन् १८५० ई० में हुआ था, उनके उत्तराधिकारी हुए। सन् १८८४ में वह मद्रासके लेजिस लेटिव कौंसलके मेवर वनाये गये।

चिकाकोल।

विजयानगरम् से ४३-मील (वेजवाड़ासे ३०३ मील) पूर्वोत्तर चिकाकोल रोडका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे कई मील पूर्व मद्रास हातेके गञ्जाम जिलेमें (१८ अंश, १७ कला, २५ विकला उत्तर अक्षांश और ८३ अंश, ५६ कला, २५ विकला पूर्व देशान्तरमें) समुद्रसे ४ मील दूर चिकाकोल तालुकका सदर स्थान चिकाकोल कसवा है। कसवेके पास एक छोटी नदीपर पुल वना हुआ है। कटकसे मद्रास जानेवाली वड़ी सड़क कसवे होकर गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय चिकाकोलमें १८२४१ मनुष्य थे; अर्थात् १७३१५ हिन्दू, ८३६ मुसलमान, ७७ कृस्तान, ३ बौद्ध और १० दूसरे।

चिकाकोलमें जेलखाना, स्कूल, अस्पताल, सरकारी कचहरियाँ और अनेक मसजिदे हैं, जिनमेंसे सन् १६४१ की बनी हुई गोलकुण्डाके बादशाहके फौजदार शेरमहम्मदखाँकी मसजिद प्रसिद्ध है। कसबेसे उत्तर पुराने किलेकी खांईके भीतर ऊपर लिखी हुई सरकारी इमारतोंमेंसे बहुतेरी इमारतें हैं। सन् १८८१ में कसबेके निवासियोमेंसे सैकड़े पीछे २० आदमी सौदागर और ८ मनुष्य कपड़े इत्यादिके बिनने वाले थे।

कुछ दिनोंके लिये चिकाकोल जिलेका सदर स्थान था। सन् १८६६ में अकालसे कसबेकी बड़ी हानि हुई। सन् १८७६ में एक बाढ़से पुलकी ६ मेहराबियाँ और कसबेके बहुतेरे मकान और माल बहगये।

पर्लाखेमड़ी।

चिकाकोल रोडसे २९ मील (बेजवाड़ेसे ३३२ मील) पूर्वोत्तर नावापाड़ाका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे लगभग २५ मील पश्चिमोत्तर मदरास हातेके गञ्जाम जिलेमें (१८ अंश, ४६ कला, ४० विकला उत्तर अक्षांश और ८४ अंश, ८ कला पूर्व देशान्तरमें) एक जमींदारीका प्रधान कसबा पर्लाखेमडी है। *

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय उस कसबेमें १६३९० मनुष्य थे अर्थात् १५९२४ हिन्दू, ३१० मुसलमान, १०७ एनिमिष्टिक, ३७ कृस्तान और अन्य।

पर्लाखेमडी नाम दो गाँवोके नामसे बना है। कसबेके जमींदारके महलके बनानेमें ४ लाख रुपये खर्च पड़े है।

ब्रह्मपुर।

पर्लाखेमडी रोड़के स्टेशनसे ७९ मील (बेजवाडासे ३९४ मील) पूर्वोत्तर ब्रह्मपुरका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेमें (१९ अंश, १८ कला, ४० विकला उत्तर अक्षांश और ८४ अंश, ४७ कला, ५० विकला पूर्व देशान्तरमें) गञ्जाम जिलेका सदर स्थान और फौजी स्टेशन ब्रह्मपुर एक सुन्दर कसबा है। कटकसे मदरास जाने वाली बड़ी सड़क ब्रह्मपुर होकर गई है। ब्रह्मपुरसे १८ मील पूर्वोत्तर गञ्जाम कसबा है।

सन् १८९१की मनुष्य-गणनाके समय ब्रह्मपुर कसबे और इसकी फौजी छावनीमें २५६५३ मनुष्य थे; अर्थात् १२३९७ पुरुष और १३२५६ स्त्रियाँ। इनमें २३७६४ हिन्दू १३६४ मुसलमान, ४८८ कृस्तान, और ३७ एनिमिष्टिक थे।

ब्रह्मपुरमें जज मजिष्टर आदि हाकिमोंकी कचहरियाँ, फौजी छावनी, जिला जेल कालिज, अस्पताल अनेक देवमन्दिर और २ गिरजे हैं। चीनीकी सौदागरी बहुत होती है। वहाँका बिनाहुआ रेशमी कपड़ा बहुत अच्छा होता है। वहाँ मदरास बंककी एक शाखा खुली है। कसबेसे दूर पश्चिम और उत्तर पहाड़ियाँ ह। कसबाका पवन पानी रोगकारक है। ब्रह्मपुरसे पूर्व ९ मील गञ्जाम जिलेका प्रधान बन्दरगाह गोपालपुर और पूर्वोत्तर रेलवे पर १४ मील

* नवापाड़ासे २५ मीलकी रेलवे शाखा पर्लाखेमड़ी कसबेको गई है।

छत्तरपुर, ३० मील रम्भा, ९२ मील खुदरारोड, १०४ मील भुवनेश्वर और ११४ मील कटकरोडका स्टेशन है।

ब्रह्मपुरमें शिवमतावलम्बी लिङ्गायत लोग बहुत देख पडते हैं उनमें स्त्री पुरुष सबके गलेमें चाँदीका एक शिवलिङ्ग लटका रहता है उनमेंसे कोई कोई लिङ्गको रूमालमें लपेटकर अपने गलेमें अथवा वाम भुजा पर बाँधते हैं। वे लोग सर्वदा भस्म धारण करते हैं। लिङ्गायत मनुष्यके देहान्त होनेपर उसके गुरु मृतकके गलेमे शिवके नामकी चिट्ठी बाँध देते हैं। चिट्ठीमें लिखा रहता है कि हे शिव ! इस अपने भक्तको स्थान दो इत्यादि।

गञ्जाम जिला—मदरास हातेके पूर्वोत्तरकी सीमाके पास गञ्जाम जिला है। इसके उत्तर उड़ीसाके दसपला, वोड इत्यादि मालगुजार राज्य; पूर्व पुरी जिला और बङ्गालकी खाड़ी, पश्चिम मध्य देशका पटना और कालहाँडीका राज्य और दक्षिण मदरास हातेका विजगापट्टम् जिला है।

गञ्जाम जिलेका क्षेत्रफल ८३११ वर्गमील है, जिसमेंसे ५३०५ वर्गमीलमें एजेंसी या पहाडी देश है जिलेमें १६ बड़ी और ३५ छोटी छोटी जमींदारियाँ है। पहाड़ियाँ बहुत हैं, जिनमेंसे बहुतेरियोंपर सघन जङ्गल लगे हुए हैं। जगह जगह घाटी और उपजाऊ मैदान हैं। समुद्रके किनारे पर लोना पानीकी झीलोंका एक जञ्जीरा है। बहुतेरी नदियाँ जिनमें ऋषिकुल्या वमसा धारा और लॅगुलियाँ प्रधान हैं, बहती हैं। जङ्गलोंमें मधु बहुत होता है। चरागाहकी जमीन फैली हुई है। पहाडियोंमें बनैले जन्तु बहुत रहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय गञ्जाम जिलेमें १७४९६०४ मनुष्य थे अर्थात् १७४११७४ हिन्दू, केवल ६०७३ मुसलमान, १५५१ कृस्तान, २७० बौद्ध और ५३६ अन्य। इनमेंसे २४६३०३ मनुष्य पहाड़ी देशोंमे और बाकी लोग मैदानोंमें थे जातियोंके खानेमें ४६१९९५ वेलाला, १९८१७९ परिया, १२७८६९ ब्राह्मण ५६५६७ इडैगा, ४४९७० कम्भार ४४४६७ साना, ४२७१२ बनियाँ, (जाति विशेष), ४१८५६ सम्बदवा, ४०४६२ बनान, ३८१०४ कैकोला, ३०६८३ सेटी, २९६७० सतानी, २५६६५ कनाकन, २५२०६ अम्बातन, १५६६० कुशवन ४१४३ क्षत्रिय और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे गञ्जाम जिलेके मैदानोंके लोग तैलङ्गी और उड़िया भाषा और पहाड़ी कामोंके लोग खोंद और शवर भाषा बोलते हैं। आदि निवासियोंमें खास करके खान्द और शवर है; किन्तु ये प्राय: सबलोग अब हिन्दू मत पर चलते हैं और हिन्दुओंमे गिने गये हैं। जिलेके मनुष्योंमें ७७७५५८ उड़ियाभाषावाले और बाकी में ६९२९३१ तैलङ्गीभाषा बोलनेवाले थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय गंजाम जिलेके कसबे ब्रह्मपुरमें २५६५३ चिकाकोलमें १८३४१ और पर्लाखेमड़ीमें १६३९० और सन् १८८१ में रघुनाथपुरम्मे ७६३४, इच्छापुरमें ५५२८, गंजाममे ५०३७, कलिङ्गापट्टम्में ४४६५, भंडासामें ४६७१, नरसनापेटमें ४२३०, बरुआमें ४२९८ और शेषमें ४००० से कम मनुष्य थे।

गंजाम कसबा, जो सन् १८१५ ई० तक जिलेका सदर स्थान था, समुद्रके समीप ऋषिकुल्यानदीके मुहानेके पास है। ऋषिकुल्यानदीके दक्षिण एक पुराना किला खडा है। गंजामके पास कभी कभी यूरोपियन आगबोट आते है। चावल वहाँसे दूसरे देशोंमें भेजा जाता है। सरकार वहाँ नमक तैयार करती है।

इतिहास—पूर्व कालमें गंजाम दक्षिणी कलिङ्गराज्यका एक भाग था। बहुत दिनों-तकका इतिहास मालूम नहीं है। सन् १६४१ में कुतुबशाही राज्यके बादशाहने शेरमहम्म-दखाँको उस देश पर हुकूमत करनेके लिये फौजदार बनाकर चिकाकोलमें भेजा। वर्त्तमान गंजाम जिला मुसलमानोके आधीन चिकाकोल सरकारका एक भाग बना। गंजामके निकट ऋषिकुल्या नदीके दक्षिणका देश काशीबूगा तक इच्छापुर नामक देश करके प्रसिद्ध था। सन् १७५३ में निजाम सलावतजङ्गने फरासीसियोंको उत्तरी सरकारोंको देदिया। सन् १७५९ मे अङ्गरेजोंने मसुलीपट्टमको ले लिया। जब उत्तरी सरकार अङ्गरेजोके आधीन होगये, तब फरासीसियोंने गंजाम और उत्तरकी अपनी कोठियोंको छोड़ दिया। सन् १७६६ में मुगल बादशाहने अपने फरमान द्वारा उत्तरी सरकारोंको अङ्गरेजोंको देदिया। सन् १७६८ में गंजाम अङ्गरेजी रेजीडेण्टके आधीन हुआ और वहाँ एक अङ्गरेजी कोठी नियत की गई। सन् १७०३ तक इच्छापुर देशका प्रबंध रजीडेण्ट, कौंसिल और कलक्टर द्वारा होता था। उसी सन् में पुण्डीनदीके दक्षिणके चिकाकोल तकके देशका (वर्तमान) गंजाम जिला बनाया गया। सन् १८३६ मे अङ्गरेज सरकारको जान पड़ा कि खाँद लोग मनुष्य वलि देते है, तो उन्होने उनको परास्त करके उस असभ्य रीतिको रोक दिया। सन् १८६५ में खाँद लोगोंने बलवा किया था; किन्तु बहुत सहजमें वे दबाये गये। उस समयसे देशमे कोई बलवा नहीं हुआ है।

सातवां अध्याय।

(मद्रास हातेमें) पनानृसिंह, गुंटूर, मल्लिका-र्जुन, करनूल, गुंटकल जंक्शन, बल्लारी, कुमारस्वामी, होसपेट और किष्किन्धा।

पनानृसिंह।

बेजवाड़ेसे ७ मील दक्षिण-पश्चिम मङ्गलगिरिका रेलवे स्टेशन है। मद्रास हातेके कृष्णा जिलेमें मङ्गलगिरि एक छोटा कसबा है; जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ५६१७ मनुष्य थे। कसबेमें ११ खनके विशालगोपुरसे सुशोभित लक्ष्मीनृसिंहका मन्दिर है, जिसके सामने सुन्दर चित्रोंसे भूषित नृसिंहजीका काष्ठमय रथ रक्खा हुआ है।

मङ्गलगिरि पहाड़ी पर एक मन्दिरके कोनेमें पनानृसिंहकी मूर्ति पश्चिम-मुखसे विरा-जमान है। उसके पासही सामने लक्ष्मीजीकी मूर्त्ति है। मन्दिरमें सर्वदा दीप जलता है। शिखरके ऊपरी भागमें लक्ष्मीजीका स्थान है, जिसके आस पास वालाजी, रङ्गनाथ आदि देवमूर्तियां स्थापित हैं। उसी पहाड़ी पर हनूमानजीकी एक मूर्ति है। नृसिंहजीके मुखमे पना अर्थात् गुड़ अथवा शक्करका सर्वत पिलाया जाता है, इसी कारणसे उनको लोग पना-नृसिंह और गुड़ोदकपान नृसिंह कहते हैं। यात्रीगण उनके मुखमें गुड़ वा शक्करका सर्वत देते हैं। वहाकँ पुजारी रामानुज संप्रदायके वैष्णव है उस देशमें जगह जगह नृसिंहजीकी मूर्त्ति है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—नृसिंहपुराण—(४४ वाँ अध्याय) नृसिंह भगवान् सब लोगोंके हितके लिये श्रीशैलके शिखरपर देवताओंसे पूजित होकर विख्यात हुए, और अपने भक्तोंके हितके लिये उसी स्थानपर स्थित होगये।

गुण्टूर।

मंगलगिरिके रेलवेस्टेशनसे १३ मील (बेजवाड़ेसे २० मील) दक्षिण-पश्चिम गुंटूरका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके कृष्णा जिलेमें (१६ अंश, १७ कला, ४२ विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश, २९ कला, पूर्व देशान्तरमें) तालुकका सदर स्थान और प्रधान कसवा गुंटूर है, जिसके पास होकर बड़ी सडक कटकसे मदरास शहरको गई है। बेजवाडाके पास कृष्णानदीको पार उतरना होता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय गुंटूरमें २३३५९ मनुष्य थे, अर्थात् १७२८३ हिन्दू, ५४७४ मुसलमान, ५९२ क्रस्तान, ८ जैन और २ दूसरे।

कसवा २ भागोंमें विभक्त है,—एक नया और दूसरा पुराना गुंटूर। उत्तर और पश्चिम ओर जिलेके मातहत कलक्टर और अन्य अफसरोंकी कचहरियाँ और कोठियाँ बनी हुई हैं। हालमें कसबेकी बड़ी तरक्की हुई है। वहाँ गल्ले और रुईकी बड़ी तिजारत होती है। और मदरासबङ्ककी एक शाखा भी है। गुंटूरकी कबरगाहमें फरासीसियोंके राज्यके समयके बहुत लोगोंकी कबरें हैं।

इतिहास—गुंटूर मुसलमानोंके राज्यके समय एक सरकारकी राजधानी थी। सन् १७५२ में हैदराबादके निजामने इसको फरासीसियोंको देदिया। सन् १७७६ में जब उत्तरी सरकार अङ्गरेजोंको दिया गया, तब गुंटूर अलग निकाल लिया गया, क्योंकि यह जिन्दगीभरके लिये सलावतजङ्गका जागीर था। सन् १७७८ में अङ्गरेजोंने गुंटूरपर लगान कायम किया था, किन्तु सन् १७८० में छोड़ दिया गया। सन् १७८८ में यह फिर अङ्गरेजोंके अधिकारमें आगया।

मल्लिकार्जुन।

गुंटूरके रेलवे स्टेशनसे ५१ मील (बेजवाड़ा जंक्शनसे ७१ मील) दक्षिण-पश्चिम विनुकुण्डाका रेलवे स्टेशन है, जिससे ३ मंजिल उत्तर कुछ पश्चिम मल्लिकार्जुन हैं। मार्ग पहाडी और जंगली है। एक मंजिल तक बैल और घोड़े जा सकते हैं, उससे आगे पहाड़ी पगडण्डी है। मल्लिकार्जुन जानेका दूसरा मार्ग नंद्यालके रेलवे स्टेशनसे है। विनुकुण्डासे ११८ मील (बेजवाडा जंक्शनसे १८९ मील) दक्षिण-पश्चिम और गुंटकल जंक्शनसे ९० मील पूर्वोत्तर मदरास हातेके कर्नूल जिलेमें तालुकका सदर स्थान नंद्याल कसवा है; जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय १०७३७ मनुष्य थे। कसबेमें नव दश शिव मन्दिर बने हुए हैं। नंद्यालसे पूर्वोत्तर ३६ मील तक बैलगाड़ीका और उससे आगे लगभग २४ मील मल्लिकार्जुन तक पगडण्डी मार्ग है। पूर्वके यात्री विनुकुण्डाके रेलवे स्टेशनसे और पश्चिमवाले यात्री नंद्यालके स्टेशनसे उतरकर मल्लिकार्जुनके दर्शनको जाते हैं। दोनो मार्गमें पहाड़ियाँ और भयंकर जंगल मिलते हैं। वन जन्तुओंके भयसे बहुतसे यात्री एकत्र होकर मार्गमें चलते है। पर्वके दिनोंमें विशेष करके फाल्गुनकी शिवरात्रिके समय वहाँ यात्री लोग जाते हैं।

श्रीशैल नामक पर्वतके ऊपर मदरास हातेके कृष्णा जिलेमें कृष्णा नदीके किनारेपर महादेवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे एक मल्लिकार्जुन शिवका विशाल मन्दिर बना हुआ है। मन्दिरके चारोंओर सुन्दर गोपुर है। भ्रमराम्बा अर्थात् श्रीपार्वतीजीका मन्दिर अलग बना है। उस स्थानपर कई एक धर्मशाले और छोटे बड़े बहुतसे देवमन्दिर है। मन्दिरके निकट कृष्णा नदीका करारा बहुत ऊँचा है। कृष्णाकी धारा बहुत नीचे बहती है, इसी कारणसे उसको लोग पातालगङ्गा कहते हैं। पर्वतपर पहाड़ी लोगोंकी झोंपड़िया देखनेमे आती हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा––महाभारत—(वनपर्व, ८५ वां अध्याय) श्रीपर्वतपर जाकर नदीमे स्नान करके शिवजीकी पूजा करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है। वहाँ पार्वतीजीके सहित शिवजी और देवताओंके साथ ब्रह्माजी निवास करते हैं। जो मनुष्य वहाँके देवह्रद तीर्थमें स्नान करता है, उसको अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है और परम सिद्धि प्राप्त होती है।

लिङ्गपुराण–(९२ वाँ अध्याय) जो मनुष्य संन्यास ग्रहण करके श्रीशैल पर्वत पर निवास करता है, उसको दूसरे जन्ममें पाशुपत योग प्राप्त होता है। काशीजीके समान वहाँ भी प्राण त्याग करनेमें प्राणीकी मुक्ति होजाती है।

गरुड़पुराण—(पूर्वार्द्ध, ८१ वाँ अध्याय) भारतवर्षमे श्रीशैल एक उत्तम तीर्थ है।

पद्मपुराण—(उत्तर खण्ड, १९ वाँ अध्याय) श्रीशैलका माहात्म्य सुननेसे मनुष्य बालहत्यादि पापोंसे छूट जाता है। तपस्वी ऋषियोंसे सेवित श्रीशैल पर्वत पर अनेक तालाब और देवताओंके मन्दिर बने हुए हैं। वहाँ मल्लिकार्जुन शिव सर्वदा स्थित रहते हैं। पर्वतके कँगूरेके दर्शन मात्रसे मनुष्योंकी मुक्ति होती है। दक्षिण दिशामे उत्तम श्रीशैल पर्वत विद्यमान है। वहाँके पातालगङ्गामें स्नान करनेसे मनुष्यका सम्पूर्ण पाप छूटजाता है। श्रीशैलके शिखरके दर्शन करनेसे, काशीजीमें मृत्यु होनेसे, और केदारके जल पीनेसे फिर जन्म नहीं होता है; अर्थात् मोक्ष होजाता है। वहाँ स्वर्गके समान सुखदाई सिद्धपुर नामक सुन्दर नगर है।

सौरपुराण—(६९ वाँ अध्याय) श्रीपर्वत पर चारों ओर सिद्ध और मुनि देख पडते हैं। मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिङ्गमें महेश्वर सर्वदा निवास करते है, जिनके दर्शन करनेसे मनुष्य जीवन्मुक्त होजाता है। वहाँ मृत्यु होनेसे मनुष्य, पशु, कीट, पतंग; सब प्राणी शिवलोकमें चले जाते हैं।

शिवपुराण—(ज्ञानसंहिता, ३५ वां अध्याय) कार्तिकेय और गणेश दोनों कुमार पहिले विवाह करनेके लिये विवाद करने लगे। तब उनके माता पिता (पार्वती और शिव उनसे बोले कि तुम दोनोंमेंसे जो सम्पूर्ण पृथ्वीकी प्रदक्षिणा करके पहिले लौट आवेगा, उसीका विवाह प्रथम होगा। यह सुनकर कार्त्तिकेय पृथ्वी परिक्रमा करनेके लिये शीघ्रही वहाँसे चले गये। गणेशजी शोचने लगे कि मेरा स्थूल शरीर है; मैं किस भाँति पृथ्वीकी परिक्रमा करूं। पीछे उन्होने शोच विचार करके महादेवजी और पार्वतीजीको आसन पर बैठानेके उपरान्त उनकी पूजा करके उनकी ७ प्रदक्षिणा कीं उसके पश्चात् वह उनसे बोले कि तुम लोग अब शीघ्र हमारा विवाह कर दो माता पिताने कहा कि तुम पृथ्वीकी परिक्रमा करके कार्तिकेयसे पहिले आवो, तब तुम्हारा विवाह होगा। तब गणेशजी क्रोध करके बोले कि

तुम लोग ऐसा क्यों कहते हो, क्या तुम लोगोंकी परिक्रमा करनेसे पृथ्वीकी परिक्रमा नहीं हुई। वेद शास्त्रमें लिखा है कि माता पिताके पूजन करके उनकी परिक्रमा करनेसे पृथ्वी परिक्रमाका फल मिलता है; क्या वह बात सत्य नहीं है। तुम लोग शीघ्र मेरा विवाह कर दो, नहीं तो कहो कि वेद शास्त्र सब असत्य हैं। गणेशजीकी ऐसी बातें सुनकर पार्वतीजी और शिवजी विस्मित हुए। (३६ वाँ अध्याय) उन्होंने गणेशजीकी चतुरता देख कर उनको बहुत सराहा और बड़े सामानसे विश्वरूपकी कन्या सिद्धि और बुद्धिसे उनका विवाह करदिया। कुछ दिनोंके उपरान्त सिद्धिसे क्षेम और बुद्धिसे लाभ नामक पुत्र उत्पन्न हुए। बहुत दिनोंके पश्चात् कार्तिकेयजी पृथ्वीकी परिक्रमा करके आये। नारदजीने मार्गहीमें कैलास पर्वत पर जाकर उनसे कहा कि देखो तुम्हारे माता पिताने तुमको पर्य्यटनके बहानेसे बाहर निकाल कर दो स्त्रियोंसे गणेशका ब्याह कर दिया। उनके दो पुत्र भी होगये हैं। ऐसे काम करनेवाले माता पिताका मुख देखना उचित नहीं है। कार्तिकेय महा क्रोधित हो शिवजी तथा पार्वतीजीको प्रणाम करके क्रौंच पर्वत पर चले गये। शिवजीके निवारण करने पर भी उन्होंने रहना स्वीकार नहीं किया। उसी दिनसे तीनों लोकोंमें उनका नाम कुमार करके प्रसिद्ध हुआ। शिवजी कार्तिकेयके विरहसे दुःखी होकर पार्वतीजीके सहित उनके पास गये। शिवजीको देखकर कार्तिकेयने उसस्थानसे दूसरे स्थानमें जानेकी इच्छा की; किंतु देवताओंकी प्रार्थना करनेसे वह उस स्थानसे १२ कोश दूरजाकर रहने लगे। तब पार्वतीजीके सहित शिवजी अपने एक अंशसे ज्योतिर्लिङ्ग होकर उसी स्थानमें स्थित होगये और मल्लिकार्जुन नामसे जगत्में प्रसिद्ध हुए। वहाँ अब तक पार्वतीके सहित उनका दर्शन होता है। प्रति अमावास्याको शिवजी और प्रति पूर्णिमासीको पार्वतीजी स्वयं स्कंदके स्थानपर जाती हैं।

(३८ वाँ अध्याय) शिवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्ग हैं, जिनमेंसे मल्लिकार्जुन श्रीशैल पर्वतपर बिराजते हैं। ज्योतिर्लिङ्गोंकी पूजा करनेका अधिकार चारों वर्णोंका है। इनके नैवेद्य भोजन करनेसे सम्पूर्ण पापोंका नाश हो जाता है। नीच जातियोंमें उत्पन्न मनुष्यभी ज्योतिर्लिङ्गके दर्शन करनेसे दूसरे जन्ममें शास्त्रज्ञ ब्राह्मण होते हैं और उस जन्मके पश्चात् उनकी मुक्ति हो जाती है।

अग्निपुराण—(११४ वाँ अध्याय) श्रीपर्वत अर्थात् श्रीशैल पवित्र स्थान है। पूर्वकालमें उस स्थानपर पार्वतीजीने लक्ष्मीजीका रूप धारण करके तपस्या की तब विष्णु भगवान्ने उनको वर दिया कि तुमको ब्रह्मज्ञान लाभ होगा और अबसे यह पर्वत तुम्हारे नामसे (श्रीशैल) विख्यात होगा। इस स्थानपर जो मनुष्य दान, तपस्या और श्राद्ध करेगा, उन सबका फल अक्षय होगा। यहां मृत्यु होनेसे प्राणीको शिवलोक मिलेगा। ऐसा वर देकर विष्णु चले गये। हिरण्यकशिपु श्रीशैलपर तपस्या करके जगत् विजयी हुआ। देवताओंने वहां तप करके परम सिद्धि लाभ की।

करनूल।

नंद्यालके रेलवे स्टेशनसे ४७ मील पश्चिम, (बेजवाडा जंक्शनसे २३६ मील पश्चिम कुछ दक्षिण) और गुंटकल जंक्शनसे ४२ मील पूर्व करनूल रोड रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे (सड़क द्वारा) ३३ मील उत्तर (१५ अंश, ४९ कला, ५८ विकला उत्तर अक्षांश और

७८ अंश, ५ कला, २९ विकला पूर्व देशान्तरमें) मदरास हातेके तैलंगदेशमे तुंगभद्रा और हिन्द्री नदीके सङ्गमके पास चट्टानी भूमिपर जिलेका सदर स्थान करनूल एक कसबा है।

सन् १८९१ को मनुष्य-गणनाके समय करनूल कसबेमें २४३७६ मनुष्य थे, अर्थात् १२६३१ मुसलमान, ११४२९ हिन्दू, २८४ कृस्तान, ३१ जैन और १ दूसरा।

करनूल कसबेमें जिला जज, कलक्टर, मजिष्ट्रेटकी और अन्य सरकारी कचहरियाँ बनी हुई हैं। करनूलका पुराना किला, सन् १८६२ में तोड़ दिया गया, किन्तु उसके ४ पाये और ३ फाटक अवतक खड़े हैं। सन् १८७१ तक किलेमें अङ्गरेजी फौज रहती थी। किलेमें करनूलका पाहिला सूबेदार अबदुल वहावका सुन्दर मकबरा, कई एक मसजिदें और विजयानगरम्के महाराजका बनवाया हुआ एक नया सरोवर है। नवाबके खानदानके चन्द लोग अबतक किलेके मकानमें रहते हैं।

करनूल जिला—इसके उत्तर तुंगभद्रा और कृष्णानदी, जो हैदराबादके राज्यसे इसको अलग करती है और कृष्णा जिला, पूर्व नेलोर और कृष्णा जिला, दक्षिण कपाड़ा और बलारी जिला और पश्चिम बलारी जिला है। जिलेका सदर स्थान करनूल कसबा है। पहाड़ियोंके २ सिलसिले उत्तरसे दक्षिणको जिलेके मध्यमें समानान्तर रेखामें फैलते हैं। इससे जिला ३ भागोमे बट जाता है। कोई पहाड़ी ३२०० फीटसे अधिक ऊंची नहीं है। मध्य भागकी फैली हुई चिपटी घाटी समुद्रके जलसे ७०० तथा ८०० फीट ऊंची है। जिलेके पश्चिमी भागमें करनूल कसबा है। जिलेकी प्रधान नदी तुङ्गभद्रा और कृष्णा है। जिलेमें लगभग १५० मील नहर है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय करनूल जिलेका क्षेत्रफल एक छोटे राज्यके साथ ७७८८ वर्गमील और मनुष्य-संख्या ७०९३०५ थी। इनमे ६१५९९२ हिन्दू, ८१८२७ मुसलमान, ११४६४ कृस्तान, ६ जैन और १६ दूसरे थे। हिन्दुओमे १९२०८६ वेलाला या कापू (खेतिहर), ९५९६९ परिया; ७१९११ इडैअर, ६६७०५ संवडवन (यह मछरी और शिकार तथा पालकी ढोकर अपना निर्वाह करते हैं), ३१५६४ चेटी, १९६२९ बनान; १८८४३ ब्राह्मण, १५१२२ कैकोला, १०८५९ अंबातन, १०५९३ साना, ९९५८ कुसवन ९८९५ कंमार, २८९८ क्षत्रिय और शेषमें दूसरी जातियोंके लोग थे। जङ्गली लोग पहाड़ियोंपर रहते है वे खेती करना नहीं चाहते; किन्तु गॉववाले लोग कभी कभी उनसे खेतोंकी रखवाली कराते है वे लोग जङ्गली तेहवारोंके समय यात्रियोंसे फीस लेते है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय करनूल जिलेके करनूल कसबेमें २४३७६ और नंद्यालमें १०७३७ मनुष्य थे।

इतिहास—करनूल जिला वारङ्गलके पुराने राज्यका एक भाग था। पीछे वह विजया नगरम्के राज्यका हिस्सा बना। राजा अच्युतदेवके राज्यके समय करनूलका किला बनवाया गया। बीजापुर, गोलकुण्डा और अहमदनगरके (तीनों) राजाओंने तालीकोटकी लड़ाईमें विजयानगरम्के राजाको परास्त किया। उसके बाद सन् १५६४ में करनूल जिला बीजापुर राज्यका एक भाग बना। सन् १६५१ में मुगल बादशाह औरङ्गजेबने बीजापुर पर विजय प्राप्त करके खिजिरखॉ नामक एक पठानको करनूलका अधिकार देदिया। बहुत दिनों तक वह उसके वंशधरोंके अधिकारमे था सन् १८०० में कड़ापा और बलारी जिलेके

साथ करनूल जिला अङ्गरेजी गवर्नमेण्टके अधिकारमें आया। सन् १८५८ में करनूल एक जिला बनवाया गया। कड़ापा और बलारी जिलेका भाग करनूलमें जोड़ा गया।

गुण्टकल जंक्शन।

गुण्टकल जंक्शनसे रेलवे लाइन ५ ओर गई है;—पश्चिम कुछ उत्तर बल्लारी होकर गोवाको, पश्चिमोत्तर बम्बईको, पूर्वोत्तर बेजवाडा होकर कटकको; दक्षिण-पूर्व मदरास- शहरको और दक्षिण धर्मबरमूको।

(१) गुण्टकल जंक्शनसे पश्चिम कुछ उत्तर "सदर्न मरहठा रेलवे", जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई लगता है;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३० बल्लारी।
३२ बल्लारी छावनी।
५५ गादिगनूर।
७१ होसपेट।
११२ हरपालपुर।
१२३ गदग जंक्शन।
१५९ हुबली जंक्शन।
१७१ धारवाड।
२१५ लोंडा जंक्शन।
२३० कैसिलरक्।
२३३ पोर्चुगीज फ्रण्टियर।
२८१ मरमागोवा बन्दरगाह।

गदग जंक्शनसे उत्तर ४२ मील बादामी, ५० मील कटगेरी, ११५ मील बीजापुर और १७३ मील होतगी जंक्शन।

हुबली जक्शनसे दक्षिण-पूर्व ८१ मील हरिहर, १७८ मील बनावर, १८८ मील आर्सीकेरा, २४८ मील तमकूर और २८८ मील बंगलोर शहर।

लोंडा जंक्शनसे उत्तर ३३ मील बेलगाँव, ६९ मील गोकाक रोड, ११८ मील मीराज जंक्शन, २०० मील सितारा रोड २०९ मील बाथर और २७८ मील पूना।

(२) गुण्टकल जंक्शनसे पश्चिमोत्तर रायचुर तक "मदरास रेलवे" उससे आगे 'ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे",—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३२ अदोनी।
५८ तुङ्गभद्रा।
७५ रायचुर।
९१ कृष्णा।
१४२ वाडी जक्शन।
१६५ गुलबर्गा।
२२६ होतगी जंक्शन।

(आगेके स्टेशन होतगीमें देखो)।

वाडी जंक्शनसे पूर्व ११५ मील हैदराबाद और २०८ मील वारङ्गल

(३) गुण्टकल जंक्शनसे पूर्व कुछ उत्तर "सदर्न मरहठा रेलवे", जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रतिमील २ पाई है;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

४३ करनूल रोड।
९० नन्दयाल।
२०८ विनकुण्डा।
२५९ गुण्टूर।
२७२ मङ्गलगिरि।
२७९ बेजवाडा जक्शन।

आगेके स्टेशन बेजवाडामें देखो)।

(४) गुण्टकल जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व "मदरास रेलवे";—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन ।

१८ गूटी ।

४८ ताड़पत्री ।

११४ कड़पा ।

१९३ रेणुगुण्टा जंक्शन ।

२३३ आरकोनम् जंक्शन ।

२५० तिरुवल्लूर ।

२७६ मदरास शहर ।

रेणुगुण्टा जंक्शनसे पूर्वोत्तर १४ मील काल हस्ती, ३० मील वेंकटगिरि और ६२ मील नेल्लूर और रेणुगुण्टासे पश्चिम ६ मील तिरुपदी और १३ मील चन्द्रगिरि ।

आरकोनम् जंक्शनसे दक्षिण—पूर्व १८ मील काँची और ४० मील चेङ्गलपट्ट जंक्शन और चेङ्गलपट्टसे दक्षिण कुछ पश्चिम ६४ मील विलीपुरम् जंक्शन ।

(५) गुण्टकल जंक्शनसे दक्षिण "सदर्न मरहट्टा रेलवे", जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई है;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन ।

६३ धर्मवरम् जंक्शन ।

११२ हिन्दूपुरम् ।

१७४ बङ्गलोर शहर ।

धर्मवरम जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व सौथ इण्डियन रेलवेपर ४२ मील कादिरी, और १४२ मील पकाला जंक्शन; पकालासे पूर्वोत्तर १९ मील चन्द्रगिरि, २६ मील तिरुपदी और ३२ मील रेणुगुण्टा जंक्शन और पकालासे दक्षिण-पूर्व ३९ मील कटपद्दी जंक्शन ४५ मील वेल्लूर और १३८ मील विलीपुरम् जंक्शन

बल्लारी ।

गुण्टकल जंक्शनसे ३० मील पश्चिम वल्लारीका रेलवे स्टेशन है । छावनीका स्टेशन उससे २ मील पश्चिम है । मदरास हातेमें (१५ अंश, ८ कला, ५१ विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, ५७ कला, १५ विकला पूर्व देशान्तरमें) जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसवा वल्लारी है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय छावनीके साथ वल्लारी कसबेमें ५९४६७ मनुष्य थे; अर्थात् ३०२४४ पुरुष और २९२२३ स्त्रियाँ । इनमे ३७२१७ हिन्दू, १७६९२ मुसलमान, ४३१४ कृस्तान, २३९ जैन और ५ पारसी थे । मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ६१ वाँ और मदरास हातेमें ६ वाँ शहर है ।

शहरके रेलवे स्टेशनके पास रानीक्षेत्र नामक धर्मशाला है । कसवा किलेकी पहाड़ीके पादमूलके पास वसा है । उसमें कई एक रूईकी मिल अर्थात् कल कारखाने बने हैं । कसबेमें एक प्रकारका पैसा चलता है, जो एक आनेमें ३ होता है फौजी छावनीके दक्षिण-पश्चिमके भागमें एन० आई रेजीमेंटकी लाइनें हैं । १$\frac{1}{2}$ मील पूर्वोत्तर अङ्गरेजी पैदलके बारक बने हैं । छावनीमें मामूली तरहसे अङ्गरेजी पैदलकी एक रेजीमेंट, आरटिलरीकी एक बैटरी, देशी पैदलकी एक रेजीमेंट, और देशी सवारकी एक रेजीमेंट रहती हैं । उत्तर बगलमें अनेक सरकारी आफिस; कई एक गिरजा, अस्पताल और स्कूल हैं ।

किलेके सामन उसके ४ मीलके भीतर नोकदार एक ऊँची पहाड़ी है, जिसको लोग ताम्बाका पहाड कहते हैं। उसकी ऊँचाई पासके मैदानसे लगभग १६०० फीट और समुद्रके जलसे २८०० फीट है। मैसूरके हैदरअलीके राज्यके समय उस खानसे ताम्बा निकाला जाता था; किन्तु उसका खर्च नफेसे बढ़ जाता था, इस कारणसे खानका काम बन्दकर दिया गया। लोहाका ओर भी उसमें बहुत मिलता है, जिसमेंसे कुछ चुम्बकका तासीर रखता है।

वल्लारीका पवन पानी सूखा होनेके कारण वह स्वास्थ्यकर स्थान है किन्तु वहाँ गरमी बहुत पड़ती है और सालाना औसत वर्षा केवल १६ इञ्च होती है। बाग कम होते हैं,क्योंकि बड़े मुसकिलसे वृक्ष तैयार होते हैं।

किला—बल्लारी कसबेके पास विना पौधेकी पहाडीके ऊपर, जो पासके मैदानसे ४५० फीट ऊँची है, लगभग २ मीलके घेरेमे किला फैला है। नीचे और ऊपर किलेकी २ लाइने हैं। ऊपरकी लाइनमें, जिसका शिरोभाग चिपटा है, एक पुराना गढ़ है। फौजी कैदियोके रहनेके लिये किलेके भीतर बहुतसी छोटी छोटी कोठरियाँ बनीहुई हैं। वर्षाके पानी रखनेके लिये कई एक तालाब और हौज चट्टान खोदकर बनाये गये हैं। इनके अलावे किलेमें ६ बुर्ज, मीठे पानीसे भरेहुए अनेक गहरे खाते और एक पुराना शिवमन्दिर है, जिसके निकट ३६ फीट ऊंचा पत्थरका एक स्तभ है, जिसमें हनूमान और अन्य देवताओंकी सूरत बनी हैं।

नीचेके किलेके, जिसको सन् १७९२ में हैदरअलीके पुत्र टीपू सुलतानने बनवाया था, बगलोंमे दीवार और छोटे छोटे बुर्ज हैं। यह किला पहाडीकी नेवके पास है। पहाड़ीके दक्षिण-पश्चिमके कदमके पास तोपखाना है। किलेके दक्षिण ३ मील घेरेका एक तालाब है, जिसमें धाराका पानी आता है, किन्तु प्रति वर्ष वह समय समयमें सूख जाता है। किलेमें थोडेसे फौजी सिपाही रहते हैं।

बल्लारी जिला—इसके उत्तर और पश्चिमोत्तर तुङ्गभद्रा नदी, जो हैदराबादके राज्यसे इस जिलेको अलग करती है, पूर्व करनूल जिला, दक्षिण मैसूर राज्यका चितलदुर्ग जिला और पश्चिम तुङ्गभद्रानदी है, जो बम्बई हातेके धारवाड़ जिलेसे बल्लारीको जुदा करती है। बल्लारी जिलेके भीतर १६४ वर्गमील क्षेत्रफलमे सन्दूरका देशी राज्य है जिसमें सन् १८८१ में १०५३२ मनुष्य थे। जिलेमें वृक्ष बहुत कम हैं। जिला मैदान है। जमींनसे नमक और सोरा बहुत बनाया जाता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सन्दूरके राज्यके साथ बल्लारी जिलेका क्षेत्र-फल ५९०४ वर्गमील और उसकी मनुष्य-संख्या ७३६८०७ थी, अर्थात् ६६२०७२ हिन्दू, ६९७६७ मुसलमान, ४१४० कृस्तान, ६२० जैन और २०८ अन्य। इनमेसे हिन्दुओंमें १२४९०६ बेंवडवन (मल्लुहा), ९९८९३ वेलाला, ९७९५५ इडैयन, ८४५३० परिया, ४६८९१ सतानी, २८६६८ केक्लर, २२५५९ कंभाड़न, १५३७५ ब्राह्मण, १३८३८ वनान, ११२६० सेटी, ६२९० सानान, ६११९ कुसवन, ६१८९ अंबटन, २६२२ क्षत्रिय और बाकीमें दूसरी जातियोंके लोग थे। हिन्दुओंमें शैव और वैष्णव दोनो प्रायः बराबर हैं, थोड़े लिङ्गायत भी हैं। बल्लारी जिलेके पश्चिम भागके तालुकोके लोग कनड़ी अर्थात् कर्नाटकी भाषा और पूर्वीभागके तालुकोंके लोग कनडी और तैलुगु अर्थात् तैलङ्गी दोनों भाषा बोलतेहैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बल्लारी जिलेके कसबे बल्लारीमें ५९४६७ अदोनीमें २६२४३, होसपेटमें १२८७८, कॉंपतीमें १०५२९ और रायदुर्गमें १०३८३ मनुष्य थे।

इतिहास–विजयानगरम् राज्यके अधीनके एक राजाने बल्लारीके किलेको बनवाया। उसने विजयानगरम्को वार्षिक खेराज देकर बल्लारीको अपने आधीन रक्खा था। ताली-कोटमें विजयानगरम्के राजाके परास्त होनेपर बल्लारी मुसलमानोंके अधिकारमें हुई; किन्तु बल्लारीके राजाने अपनी आधी स्वाधीनताको कायम रक्खा था। सन् १६५० में बल्लारीके राजाने विजयानगरम्के राजाके वंशधरोंको परास्त किया। पीछे वह जिला हैदराबादके निजामके आधीन हुआ। उसके पश्चात् मैसूरके हैदरअलीने किलेकी पहाड़ीके नीचे निजा-मकी सेनाको परास्त करके किलेको छीन लिया। सन् १७९२ में वह किला सन्धिद्वारा निजामको फिर मिला। सन् १८०० में निजामने अङ्गरेजी गवर्नमेण्टको किला दे दिया। बल्लारी अङ्गरेजी अधिकारमें होगई। सन् १८०७ में कढापा और बल्लारी अलग अलग जिला बनाया गया।

कुमार स्वामी।

बल्लारीके रेलवे स्टेशनसे २५¾ मील (गुंटकल जंक्शनसे ५५ मील) पश्चिम गादिगनूरका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे १६ मील दूर पहाड़ीके ऊपर कुमारस्वामीका मन्दिर है। ५ गोपुरोंको लॉंघनेपर स्वामिकार्त्तिकके निज मन्दिरका बड़ा चौगान मिलता है, जिसके बगलमें एक बड़ा गोपुर और भीतर स्वामिकार्त्तिकका निज मन्दिर है, जिसके आस पास एरम्बू सुब्रह्मण्य आदि देवताओंके ४ मन्दिर हैं। १२ मील तक बैलगाड़ी जाती है; उससे आगे ४ मील पहाड़ी मार्ग है प्रतिवर्ष कार्तिककी पूर्णिमाको वहॉं दर्शनका बड़ा मेला होता है। मलमासके समय उससे भी अधिक यात्री वहॉं जाते हैं। कुमारस्वामीका नाम स्वामिकार्तिक, कार्तिकेय, स्कंद, सेनानी, षड्मुख, गुह इत्यादि है। द्राविडियन लोग उनको सुब्रह्मण्य कहते है।

कुमारस्वामी अर्थात् कार्तिकेय महादेवजीके पुत्र है। इनके जन्मकी कथा अनेक प्रकारकी है,–महाभारत वनपर्वके २२५ वें अध्याय, शल्यपर्व ४४ वें अध्याय, और अनुशा-सन पर्वके ८५ वें अध्यायमें, वाल्मीकि रामायण बालकाण्डके ३६ वें सर्गमें, मत्स्यपुराणके १५७ वें अध्यायमें, पद्मपुराण स्वर्गखण्डके १४ वें अध्यायमें, लिङ्गपुराणके ७१ वें अध्यायमें और शिवपुराण ज्ञानसंहिताके १९ वें अध्यायमें देखिये।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–शिवपुराण–(ज्ञानसंहिता, ३५ वॉं अध्याय) कार्तिकेय और गणेश, शिवजीके दोनों कुमार अपना विवाह प्रथम करनेके लिये विवाद करने लगे। तब उनके माता पिता उनसे बोले कि तुम दोनोमेंसे जो सम्पूर्ण पृथ्वीकी परिक्रमा करके प्रथम लौट आवेगा, उसीका विवाह पहिले होगा। ऐसा सुन कार्तिकेय पृथ्वीकी परिक्रमा करनेके लिये शीघ्रही वहॉंसे चले गये। गणेशजी शोचने लगे कि मेरा स्थूल शरीर है; मैं किस भॉंति पृथ्वी परिक्रमा करूगा। पीछे उन्होंने शोचकर महादेवजी और पार्वतीजीका पूजन करके उनकी ७ प्रदक्षिणा करदीं और वह उनसे बोले कि तुम लोग अब शीघ्र हमारा व्याह

कर दो। पार्वतीजी और शिवजी बोले कि तुम पृथ्वीकी परिक्रमा करके स्कन्दसे पहिले आवो, तब तुम्हारा विवाह पहिले होगा। तब तो गणेशजी क्रोध करके बोले कि तुम लोग ऐसा क्यों कहते हो, क्या तुम लोगोंकी परिक्रमा करनेसे पृथ्वीकी परिक्रमा नहीं हुई। वेद शास्त्रमें लिखा है कि माता पिताका पूजन करके उनकी परिक्रमा करनेसे पृथ्वी परिक्रमा करनेका फल मिलता है, क्या वह वात सत्य नहीं है। तुम लोग शीघ्रही हमारा विवाह कर दो नहीं तो कहो कि वेद शास्त्र सब असत्य है। गणेशजीकी ऐसी बातें सुनकर पार्वतीजी और शिवजी परम विस्मयको प्राप्त हुए। (३६ वाँ अध्याय) उन्होंने गणेशजीकी चतुरता देखकर उनको बहुत सराहा और विश्वरूपकी कन्या सिद्धि और बुद्धिसे उनका व्याह करदिया। कुछ दिनोंके पश्चात् सिद्धिसे क्षेम और बुद्धिसे लाभ नामक पुत्र उत्पन्न हुए। बहुत दिनोंके उपरान्त कार्तिकेय पृथ्वी परिक्रमा करके आये। नारदजीने मार्गहीमें कैलास पर्वतपर जाकर उनसे कहा कि देखो तुम्हारे माता पिताने तुमको बाहर भेजकर दो स्त्रियोंसे गणेशका विवाह कर दिया। उनके दो पुत्रभी होगये। ऐसे माता पिताका मुख देखना पुत्रको उचित नहीं है। ऐसा सुन कार्तिकेय महा क्रोधित होकर माता पिताको प्रणाम करके क्रौंच पर्वत पर चले गये। उसी दिनसे उनका नाम कुमार प्रसिद्ध हुआ। शिवजी उनके विरहसे दुःखी होकर पार्वतीजीके सहित क्रौंच पर्वतपर कार्तिकेयके पास गये। उनको देखकर कार्तिकेयने उस स्थानसे अन्यत्र जानेकी इच्छा की; किन्तु देवताओंकी प्रार्थना करनेपर उन्होंने उस स्थानसे १२ कोस दूर जाकर निवास किया। तब शिवजीने ज्योतिर्लिंग होकर उसी स्थान पर निवास किया, जो मल्लिकार्जुन नामसे प्रसिद्ध है। प्रति अमावास्याको शिवजी और पूर्णिमाको पार्वतीजी स्वयं कार्तिकेय अर्थात् कुमारस्वामीके स्थानपर जाती है। कार्तिककी पूर्णिमाके दिन देवता, ऋषि, तपस्वी सब लोग क्रौंच पर्वतपर जाकर कुमारका दर्शन करते हैं। जो मनुष्य कार्तिकी पूर्णिमाको कृत्तिका नक्षत्रमें कुमारका दर्शन करता है, उसका सब पाप छूट जाता है और वह मनोवांछित फल पाता है।

कूर्मपुराण-(उपरि भाग ३६ वाँ अध्याय) स्वामी नामक तीर्थ तीनों लोकमें विख्यात है। वहां स्कन्दजी देवताओंसे पूजित होकर निवास करते हैं। वहाँ कुमार धारामें स्नान करके पितरादिकोंके तर्पण करनेसे स्कन्दके निकट वास होता है।

याज्ञवल्क्य स्मृति-(प्रथम अध्याय) स्वामिकार्तिक, महागणपति और सूर्यका सर्वदा पूजन करनेसे और इनको तिलक लगानसे सिद्धि प्राप्त होती है।

महाभारत-(आदि पर्व १३८ वाँ अध्याय) कार्तिकेय अग्निके पुत्र कृत्तिकाके पुत्र, रुद्रके पुत्र और गङ्गाके पुत्र करके प्रसिद्ध होते हैं।

(वनपर्व—२२९ वाँ अध्याय) पञ्चमी तिथिको कार्तिकेय लक्ष्मीवान् हुए इसीसे उस तिथिका नाम श्रीपञ्चमी है। षष्ठीके दिन कार्तिकेयका विवाह हुआ, इसीसे षष्ठीको महातिथि कहा है।

कूर्म्मपुराण—(ब्राह्मीसंहिता उत्तरार्द्ध—३६ वाँ अध्याय) स्वामी तीर्थ नामक एक महा तीर्थ है। उस स्थानमें स्कन्द नित्य रहते हैं। वहाँ कुमारधारामें स्नान और देवतर्पण तथा स्कन्दकी पूजा करनेसे मनुष्य मरनेपर कार्त्तिकेय सहित आनन्द करता है।

भविष्यपुराण—(४१ वाँ अध्याय) भाद्रपद मासकी षष्ठी कार्त्तिकेयको अति प्रिय है। उस दिनके स्नान, दान आदि कर्मका फल अक्षय होता है। उस तिथिमे दक्षिण दिशामें प्रसिद्ध स्वामिकार्त्तिकका दर्शन करनेसे ब्रह्महत्यादि पाप छूट जाते हैं। जो राजा कार्त्तिकेयका पूजन करके युद्धमें जाता है वह अवश्य शत्रुओंपर विजय प्राप्त करता है। षष्ठीके दिन व्रत करके कार्त्तिकेयका पूजनकर रात्रिको भोजन करनेसे कार्त्तिकेयके लोकमें निवास होता है। जो पुरुष तीन बार दक्षिण देशमें जाकर कार्त्तिकेयका दर्शन और भक्तिसे पूजन करता है, वह शिवलोकमें बसता है।

वाराहपुराण—(२५ वाँ अध्याय) स्कन्दजीका जन्म षष्ठी तिथिको हुआ, इसलिये षष्ठी उनको बहुत प्रिय है। इस तिथिको फलाहार करके स्कन्दजीकी पूजा करनेसे धन, पुत्र आदि ऐश्वर्य्य प्राप्त होते हैं।

दूसरा शिवपुराण—(चौथा खण्ड–तीसरा अध्याय) इन्द्रने स्कन्दके उपद्रव करनेपर उनकी दहिनी काँखमें वज्र मारा, जिससे साख्य नामक गण और फिर बांई कांखमें वज्र मारा, जिससे विसाख्य नामक गण उत्पन्न हुए।

(चौथा अध्याय) स्कन्दका जन्म कार्त्तिककी षष्ठीको हुआ।

(२८ वाँ अध्याय) प्रति मासकी पूर्णिमाको सब देवता और मुनि जाकर स्कन्दके दर्शन करके कृतार्थ होते हैं और शिवजी वहाँ जाते हैं।

श्रीमद्भागवत–(दशम स्कन्ध–७९ वाँ अध्याय) बलदेवजी पंपासर और भीमरथीमें स्नान करनेके उपरान्त स्कन्दका दर्शन करके श्रीशैल पर्वतपर पहुँचे।

देवीभागवत—(नवम स्कन्ध ४६ वाँ अध्याय) षष्ठी देवी स्कन्दकी भार्य्या है। यह प्रकृतिके षष्ठांशसे उत्पन्न है, इसलिये इसको षष्ठी कहते हैं। यह बालकोंकी अधिष्ठात्री और बालक देनेवाली है। यह देवी बालकोंको आयुष देती है और उनकी सदा रक्षा करती है।

स्वायंभुव मनुके पुत्र राजा प्रियव्रतको पुत्र नहीं होता था; तब कश्यप मुनिने राजासे पुत्रेष्टी यज्ञ कराया। यज्ञचरुके खानेसे मालिनी रानीके गर्भ रहा। देवताओंके १२ वर्षके उपरान्त रानीका सुन्दर पुत्र जन्मा; पर वह प्राण रहित था। तब राजा मृतक पुत्रको ले श्मशान भूमिपर जाकर रोदन करने लगे। उस समय कृपामयी षष्ठी देवी विमानमें बैठ वहाँ आई। राजाने बालकको भूमिपर धर भगवतीकी अच्छे प्रकारसे पूजा करके उनसे पूछा कि आप कौन हैं। भगवती बोली कि, हे राजेन्द्र ! ब्रह्माकी मानसी कन्या हूँ। देवसेना मेरा नाम है। मुझको ब्रह्माजीने उत्पन्न करके स्कन्दजीको देदिया। मैं अपुत्र पुरुषोंको पुत्र, स्त्री रहित पुरुषोंको स्त्री और दरिद्रोंको धन देती हूँ इसके अनन्तर षष्ठी देवीने बालकको हाथमें ले कर अपने महा ज्ञानसे उसका जिला दिया। इसके पश्चात् वह स्वर्गको चलीगई। राजा पुत्रको ले अपने गृह आये और प्रतिमासकी शुक्ला षष्ठीको यत्नसे षष्ठी देवीकी पूजा कराने लगे। किसीके बालक होनेपर सौरीके गृहमें छठ दिन वा इक्कीसवें दिन वह षष्ठी देवीकी पूजा कराते थे, इसके अतिरिक्त बालकोंके शुभ कामोंमें और अन्नप्राशनादि कार्य्योंमें भी राजा षष्ठीकी पूजा कराते थे। षष्ठीकी पूजा शालग्राम शिलामें वा कलशमें, वा बरगदकी जड़में अथवा भीतिमें पुतली उरेह करके करनी चाहिये (यहाँ षष्ठीस्तोत्र भी है)।

होसपेट।

गादिगनूर स्टेशनसे १६ मील (गुंटकल जंक्शनसे ७१ मील) पश्चिम कुछ उत्तर होसपेटका रेलवे स्टेशन है। मद्रास हातेके (१५ अंश, १५ कला, ४० विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, २६ कला, पूर्व देशान्तरमें) बल्लारी जिलेमें होसपेट एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय होसपेटमें १२८७८ मनुष्य थे, अर्थात् १०९७३ हिन्दू, १८११ मुसलमान, ७३ क्रस्तान और २१ जैन।

होसपेट हेड एसिस्टेण्ट कलक्टरका सदर स्थान है। वहाँ तहसीलदार, और मातहत मजिस्टरकी कचहरी, स्कूल, अस्पताल, बंगला और एक सुन्दर मन्दिर है। होसपेटसे ७ मील पूर्व किष्किन्धामें विरूपाक्ष शिवका मन्दिर है।

किष्किन्धा-और विजयानगर।

होसपेटसे ७ मील पूर्व और हापी गाँवके पास, जो मद्रास हातेके होसपेट तालुकमें करीब ७०० मनुष्योंकी एक बस्ती है, विरूपाक्ष शिवके मन्दिर तक बैलगाड़ीकी सड़क है। मैं एक रुपयेमें गाड़ी किराया कर उस पर सवार हो मन्दिरमें पहुँचा। होसपेटसे २ मील आगे रेलवे सडक लाँघने पर अञ्जनी पहाडीके ऊपरका मन्दिर देख पडा।

विरूपाक्ष शिवके मन्दिरके आगे मोदियोंकी दुकानें हैं। मन्दिरके पूर्ववाले चौगानके मकानोमे यात्री टिकते हैं। मन्दिरके पुजारी यात्रियोंको पण्डोके समान तीर्थ दर्शन कराते हैं।

विरूपाक्षशिवका मन्दिर-मन्दिरका प्रधान दरवाजा पूर्व है। उसका पत्थरका गोपुर १०५ फीट लम्बा, ८५ फीट चौडा और करीब १७० फीट ऊँचा है। शिखरके ऊपरका कुछ हिस्सा टूट गया है। गोपुर बाहरसे ११ मंजिला जान पड़ता है; क्योंकि नीचेसे ऊपर तक एकके ऊपर दूसरे ११ दरवाजे बने हैं; परन्तु भीतरसे वह तीन या चार मञ्जिलका है उसके बीचके मजिलमें कई एक छोटी देवमूर्तियाँ देखनेमें आती हैं।

गोपुरके पश्चिम बड़ा चौगान है। इसके चारों बगलोंपर बडे बड़े मण्डप और मकान बने हैं, जिनमें यात्री टिकते हैं। चौगानके पश्चिम बगलके छोटे गोपुरके दक्षिण बगलमें गणेशजी और उत्तर ओर देवीजी हैं और चौगानके उत्तर हिस्सेमें एक कूप है। इसकी बाहरी दीवार पूर्वसे पश्चिमको करीब १९५ फीट और उत्तरसे दक्षिण तक लगभग २२५ फीट लम्बी है।

इस चौगानके पश्चिम बगलके छोटे गोपुरसे पश्चिमवाले बड़े चौगानमे जाना होता है, जिसके चारों बगलोंपर दोहरे तेहरे बरण्डे और मकान बने हैं, जिनमे जगह जगह पार्वती आदि कई देव देवियोंकी मूर्त्तियां हैं और उत्तर बगल पर ऊँचा गोपुर है, जिसमें नीचेसे ऊपर तक एकके ऊपर दूसरे ७ दरवाजे बने हुए हैं। इस चौगानके बाहरकी दीवार उत्तरसे दक्षिण करीब ३२५ फीट और पूर्वसे पश्चिम लगभग ३७५ फीट लम्बी है, जिसके भीतर यूरोपियन आदि अन्यधर्मी लोग नहीं जाने पाते।

विरूपाक्ष शिवके मंदिरका नक्शा.

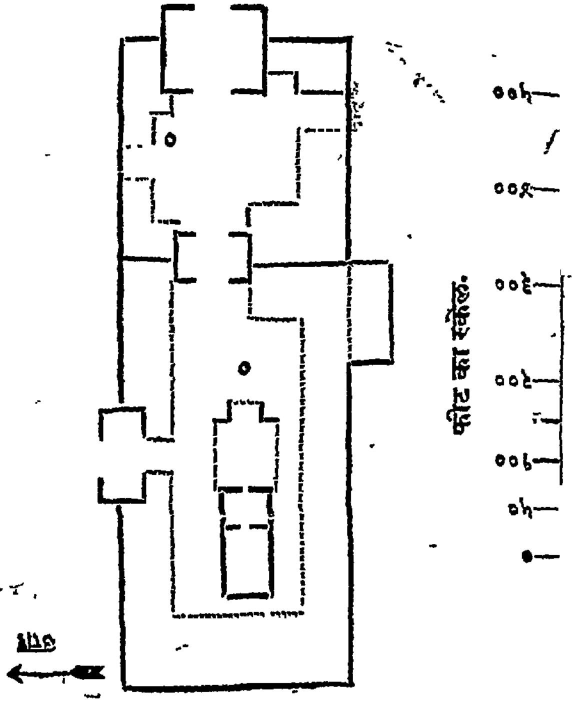

चौगानके पश्चिम हिस्सेमे विरूपाक्ष शिवका मन्दिर है। खास मन्दिरमें सोनहरा कलश लगा हुआ है जिसके पूर्व एक कमरा और कमरेके पूर्व एक वड़ा मण्डप है। मन्दिरमें अन्धेरे रहनेके कारण दिनमे भी दीप जलाया जाता है। समय समय पर पूजाके लिये मन्दिर खुलता है। जागीरकी आमदनीसे मन्दिरका खर्च चलता है। पूजाके समय वाजा वजानेवाले नौकर हैं। खास पूजाके समय शिवलिङ्ग पर शृङ्गार मूर्ति रक्खी जाती है। मण्डपके पूर्व सोनेका मोलम्मा किया हुआ एक ऊँचा स्तम्भ खड़ा है।

मन्दिरसे उत्तर पुरइनसे भरा हुआ एक तालाब और समीपही दक्षिण हेमकूट नामक पहाड़ी है, जिसके ऊपर छोटे छोटे १२ देव मन्दिर बने हैं मन्दिरके प्रधान दरवाजेसे ¾ मील पूर्व वडे नन्दीके पास मतंग पहाडीके पादमूल तक चौडी सड़क गई है, जहाँ चैत्रकी पूर्णिमाको विरूपाक्ष शिवकी भोगमूर्तिका रथ जाता है। उस दिन यात्रियोंकी भारी भीड होती है। पहाडीके ऊपर एक मन्दिर है।

चक्र तीर्थ–विरूपाक्षके मन्दिरसे ¾ मीलसे अधिक पूर्व कुछ उत्तर ऋष्यमूक पहाडीको चक्कर लगा कर पहाड़ियोंके वीचमें तुंगभद्रा नदी बहती है। वहाँ उसकी चौड़ाई लगभग १०० गज है। उसको चक्रतीर्थ कहते हैं। उसके उत्तर ऋष्यमूक पर्वत और दक्षिण बगलपर रामचन्द्रका एक छोटा मन्दिर है, जिसमें रामचन्द्र आदिकी मूर्त्तियाँ स्थित हैं। मन्दिरके पास सूर्य्य, सुग्रीव, रंगजी, आदि कई देवता हैं। यात्री लोग चक्रतीर्थमें स्नान करके राममन्दिरमे मेवे और फल भेंट देते है। वहाँ ऋष्यमूक पहाड़ीके तीन बगलोंमें तुङ्गभद्रा नदी बहती है, जो मैसूर राज्यके पर्वतसे निकलकर करीव ४०० मील पूर्वोत्तर बहनेके उपरान्त करनूलके नीचे कृष्णा नदीमें मिल गई है।

चक्रतीर्थके उत्तर ऋष्यमूकके पूर्व सीतासरोवर नामक एक निर्मल जलका कुण्ड है। उसके पास एक छोटी स्वाभाविक गुफा और दक्षिणकाशी, सीता अभरण राम लक्ष्मणके चरण चिह्न इत्यादि स्थान हैं।

चक्रतीर्थसे कुछ दूर पूर्व एक वडा मन्दिर है, जिससे पूर्वोत्तरकी पहाड़ीपर अनेक शिवमन्दिर और पहाड़ीके पूर्वोत्तर विठोबाका एक मन्दिर है।

स्फटिक शिला—विरूपाक्षके मन्दिरसे लगभग ४ मील पूर्वोत्तर माल्यवान पहाड़ी है, जिसके एक भागका नाम प्रवर्षण गिरि है। उसीपर श्रीरामचन्द्र और लक्ष्मणने वनवासके समय वर्षा काल विताया था। उसीके वगलपर चक्रतीर्थसे पूर्व ओर स्फटिकशिला एक स्थान है, जहाँ गुहामें श्रीरामचन्द्रजी, लक्ष्मणजी, सुग्रीव और हनूमानकी मूर्त्ति बनी हुई है। उसके आस पास अनेक मन्दिर और मण्डप वने हैं। एक वडा और एक छोटा गोपुर है। रथयात्राके लिये वडा रथ रक्खा है। सदावर्त लगा है।

कृष्णका मन्दिर–विरूपाक्षके मन्दिरके दक्षिणकी पहाड़ीके बाद कृष्णका वड़ा मन्दिर है। रास्ता बहुत घुमावका है। पहले शिवका एक पुराना मन्दिर मिलता है जहाँ केवल नन्दी हैं। उसके वाद पश्चिम एक घेरेके भीतर नरसिंहकी बहुत वडी मूर्त्ति बैठी है, जिसके ऊपर शेषका छत्र है। शेषके शिरतक मूर्त्तिकी उँचाई २२½ फीट है। फाटकके वाहर एक खड़े पत्थरके दोनों वगलोपर कनडी अक्षरका शिलालेख है। घेरेके चन्द गज दूर एक छोटे मन्दिरमें वड़े अरघेपर वड़ा शिवलिंग है;

जिसके पास कृष्णका बड़ा मन्दिर पत्थरकी दीवारसे घेरा हुआ है। प्रधान आँगनकी चौड़ाई उत्तरसे दक्षिण तक २०० फीट और लम्बाई पूर्वसे पश्चिम तक ३२० फीट है। गोपुरके पास एक पत्थरपर दोनों ओर कनडी अक्षरमे शिला लेख और गोपुरके सतूनोंपर नागरी और कनड़ीके लेख हैं। उस मन्दिरसे करीब ५० गज दूर एक मन्दिरमें १० फीट ऊँची गणेशकी मूर्त्ति है, जिससे चन्द गज दूर दूसरे मन्दिरमें १८ फीट ऊँचे गणेश है।

आनागन्दी–विरूपाक्षके मन्दिरसे पगदण्डी द्वारा करीब २ मील पूर्वोत्तर तुङ्गभद्रा नदीके बायें निजाम राज्यमें आनागन्दी एक बस्ती है, जिसको बहुत लोग सुग्रीवकी राजधानी किष्किन्धा कहते हैं। चक्रतीर्थसे कुछ दूर आगे रास्तेके पास घेरेके भीतर छोटे बड़े ३ पुराने मन्दिर और कई मण्डप हैं। मन्दिरोंमें कोई देवता नहीं है। बड़े मन्दिरकी छत और वहाँके दूसरे मन्दिर मण्डपोंमेंसे कई एकके हिस्से गिर गये हैं। मन्दिरसे करीब १ मील पूर्व आनागन्दीके सामने एक बस्तीके पास तुङ्गभद्राके किनारे आदमी पहुँचता है। वहाँ कडाहके समान १० फीट व्यासके टोकरेमें, जिसपर बाहरसे चमड़ा मढ़ा रहता है; बैठकर नदीपार जाना होता है। उस पर २० आदमी तक चढ़ते हैं। एक आदमीका एक आना भाड़ा लगता है, किन्तु साधु लोगोंको भाड़ा नहीं देना पड़ता है। तुङ्गभद्राके बायें अर्थात् उत्तर निजामका राज्य है। तुङ्गभद्रा नदीसे ४० गज उत्तर आनागन्दीका फाटक है, जिससे $\frac{1}{3}$ मील आगे आनागन्दीके राजाका महल साधारण इमारत है। महलके पास एक साधारण बस्ती और बाजार है। राजाकी तरफसे सदावर्त जारी है। वह राजा प्रख्यात विजयानगरके राजाके वंशमें हैं, जो अब हैदराबादके निजामके आधीन जमींदार है।

पम्पासर–आनागन्दीसे १ मीलसे अधिक पश्चिम तुङ्गभद्रासे उत्तर पम्पासर नामक तालाब है। आनागन्दीसे नीची ऊँची जमीनकी पगदण्डीसे जाना होता है। पम्पासर पूर्वसे पश्चिम तक लगभग २२५ फीट लम्बा और उत्तरसे दक्षिणतक २०० फीट चौड़ा है, जिसके उत्तर उससे छोटा मानसरोवर नामका एक त्रिभुजाकार तालाब है। दक्षिणके सिवाय दोनों तालाबोके ३ तरफ नीची पहाड़ियाँ हैं। तालाबोंके पश्चिम पहाड़ीके बगलपर कई पुराने जर्जर मन्दिर और मण्डप देखनेमें आते है, जिनमेंसे एकमें श्रीलक्ष्मीजी और श्रीनिवास भगवान्की मूर्त्ति है। वहाँ एक पुजारी रहता है। पंपासरसे लगभग ३० कोस पश्चिम शवरीका जन्मस्थान सुरेवनम् नामक वस्ती है। पंपासरसे दक्षिण तुङ्गभद्रा लाँघकर विरूपाक्ष शिवके मन्दिरमें लौट आनेमे लगभग डेढ़ घण्टा लगता है। मार्ग पगडण्डी है। रास्तेमें अंजनी पहाड़ी, जो ऋष्यमूकसे उत्तर है, दहिने मिलती है, जिसके ऊपर एक मन्दिर है।

विजयानगरकी तबाहियाँ—विरूपाक्षके मन्दिरसे करीब ३ मील दक्षिण-पूर्व विजयानगरके राजाके महलका एक हिस्सा और स्त्रियोंका स्नान घर है। उसके पास ५० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा तथा ६ फीट गहरा एक हौज है; परन्तु इसमें अब पानी नहीं है। मेहराबदार २० स्तम्भोंपर हौजकी छत है। उससे ५० गज पश्चिमोत्तर बहुतसे टूटे फूटे मकान हैं, जिनमें हाथियोंका अस्तबल, जनानखाना, खजानाघर इत्यादि इमारतें और एक तख्त हैं। उस जगहसे करीब १०० गज उत्तर सुन्दर स्तम्भ लगे हुए एक मन्दिर है। मन्दिरका चौगान २०० फीट लम्बा और ११० फीट चौड़ा है। जनानखानेकी बाहरकी दीवार ३०फीट ऊँची है। भीतरकी इमारत गिर गई है। घेरेके कोनेके पास अब २ टावर है। जनान-

खानेसे १५० गज दक्षिण ३ कमरोंके साथ एक मकान है हौजसे करीब ¾ मील दक्षिण डाक बङ्गला है, जो पहले एक मन्दिर था। डाकबङ्गलेसे दक्षिण कमालपुर है, जहांसे एक सड़क पहाड़ियोंको घूमती हुई हाँपी गाँवको गई है।

हाँपी विजयानगरके राजाओंकी राजधानी थी। राज्यका नाम विजयानगर था। तुङ्गभद्रा नदीके आस पास विजयानगरके राजाओंकी इमारतोंका खण्डहर ९ वर्गमीलमें फैला हुआ है, जिसके भीतर हाँपी, आनागंदी, कमालपुर इत्यादि जगह हैं। एक सड़क पहाड़ियोंको घूमकर कमालपुरसे उत्तर हाँपीको गई है। उन दोनोंके बीचमें पुराना शहर बसा था। राजमहलसे ¾ मील तुङ्गभद्राके निकट विष्णुका मन्दिर है।

इतिहास—बलाला वशके राज्यकी घटतीके समय लगभग सन् १३३६ ई० में बूका और हरिहरने, जो बारङ्गलसे खदेरे गये थे, हाँपी नगरको बसाया; जिनके वंश वाले सन् १५६४ की तिलीकोटकी लडाई तक वहाँ थे, बाद आनागन्दी, वेल्लूर और चन्द्रगिरिमें एक सदी तक थे। बीजापुर और गोलकुण्डाके मुसलमान बादशाहोंने विजयानगर राज्यको ले लिया। विजयानगरके हिन्दू राजाओंने अपनी राजधानी हाँपीमें और उसके आसपास बहुत से महल और मन्दिर बनवाये।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(वनपर्व—२७९ वाँ और २८० वाँ अध्याय) कबन्ध राक्षसने रामचन्द्रसे कहा कि लङ्कावासी रावण सीताको लेगया है। तुम सुग्रीवके पास जाओ। वह तुम्हारी सहायता करेगा। ऋष्यमूक पर्वतके तटपर पंपा नामक तडाग है। उस पर्वतपर ४ मंत्रियोंके सहित बालीके भाई सुग्रीव निवास करते हैं। इतना सुन रामचन्द्र वहाँसे चले और पम्पासरपर पहुँचे। उन्होने वहाँसे आगे जाकर ऋष्यमूक पर्वतपर ५ बन्दरोंको बैठे हुए देखा। तब सुग्रीवने अपने बुद्धिमान मन्त्रीको रामके पास भेजा। वह मन्त्री राम और लक्ष्मणको सुग्रीवके पास लेगया। रामने सुग्रीवके साथ मित्रता की। तब सुग्रीवने रामको सीताका वस्त्र दिखाया, जो सीताने जातीबार गिरा दिया था। रामने सुग्रीवका अभिषेक अपने हाथसे किया। रामने बालीके मारनेकी और सुग्रीवने सीताके लानेकी प्रतिज्ञा की। फिर वे लोग युद्धकी इच्छा करके किष्किन्धा गये। सुग्रीव बडे वेगसे गर्जा। बाली ताराके वचनोंका निरादर करके माल्यवान पर्वतके नीचे खडा हुआ। बाली और सुग्रीव युद्ध करने लगे। जब उन दोनोंके रूपमें भेद कुछ न दिखाई दिया, तब हनुमानने सुग्रीवको एक माला पहना दी। जब रामने सुग्रीवके गलेमें चिह्न देखा, तब धनुषपर बाण चढ़ाकर बालीको पृथ्वीमें गिरादिया। बालीके मरनेके पश्चात् सुग्रीवने ताराके समेत सब राज्य प्राप्त किया। राम माल्यवान पर्वतके ऊपर वर्षा ऋतु भर रहे।

(सभा पर्व ३१ वाँ अध्याय) राजा युधिष्ठिरके भ्राता सहदेवने दक्षिण देशमें किष्किन्धा नामक कन्दरेके निकट जाकर वन्दरनाथ मयन्द, और द्विविदसे युद्ध किया।

वाल्मीकि रामायण-(अरण्य काण्ड-६७ वाँ सर्ग) रामचन्द्रसे जटायुने कहा कि रावण सीताको लेगया है। तब वह सीताको ढूंढ़ते हुए वनमें चले। (७२ वाँ सर्ग) उनको भयङ्कर वनमे कबन्ध राक्षस मिला जब उन्होंने उस राक्षसको जलादिया, तब वह दिव्यरूप हो बोला कि हे राघव! सुग्रीव नामक बानर, जो अपने भाई बाली द्वारा घरसे निकाला गया है, ऋष्यमूक पर्वत पर निवास करता है। वह सीताके खोजमें तुम्हारी सहायता करेगा।

तुम जाकर शीघ्र सुग्रीवको अपना मित्र करो। वह इस समय सहायता चाहता है। (७३ वाँ सर्ग) बन और पर्वतोंमें भ्रमण करते हुए तुम पम्पासरोवर पर पहुँचोगे। उसके पास महर्षि मतङ्ग अपने शिष्योंके सहित रहते थे। ऋषि लोग तो चले गये; परन्तु उनकी सेवा करनेवाली तपस्विनी शबरी अब तक उस आश्रममें देख पड़ती है। वह तुमको देखकर स्वर्गलोकको चली जायगी। तुम पंपाके पश्चिम तीर पर उस गुप्त स्थानको जो मतंग वन करके प्रसिद्ध है, देखना। ऋष्यमूक पर्वतपर शिलासे आच्छादित एक बड़ी भारी गुहा है। उसमे प्रवेश करना बड़ा कठिन है। उस गुहाके पूर्व द्वार पर एक बड़ा भारी सरोवर है। उसी गुहामें बानरोंके साथ सुग्रीव निवास करता है। और कभी कभी शृङ्ग पर भी जा बैठता है।

(७४ वाँ सर्ग) राम और लक्ष्मणने कवन्धके वचनके अनुसार वनमें चलते चलते एक पर्वतके निकट निवास किया और वहाँसे चलकर पम्पाके पश्चिम शबरीके रमणीय आश्रमको देखा। सिद्धा शबरी रामचन्द्र और लक्ष्मणको देख उठकर उनके चरणोंपर गिर पड़ी, उसके पश्चात् उसने दोनों भाइयोंका अतिथि सत्कार किया। तापसी शबरी, जो सिद्ध गणोंकी मान्य थी, बोली कि हे रामचन्द्र! अब मैं तुम्हारे प्रसादसे अच्छे लोकको प्राप्त करूँगी। जब तुम चित्रकूटमें आये तब मुनि लोग, जिनकी मै सेवा करती थी, दिव्य विमानोंपर चढ़ कर स्वर्गको चले गये। मैंने तुम्हारे लिये पंपा वनके नाना वन्य पदार्थोंको इकट्ठाकर रक्खा है। रामचन्द्रने शबरीका ऐसा वचन सुन उसके दिये पदार्थोंको अङ्गीकार किया। इसके अनन्तर जटा धारिणी और कृष्ण मृगचर्मको धारण करनेवाली शबरी अग्निमे कूद पड़ी और अग्निके तुल्य रूप हो फिर उसमेसे निकली। ब्रह्मलोकमें जहाँ मतंग आदि महात्मागण विहार करते थे, शबरी जा पहुँची। (७५ वाँ सर्ग) उसके पश्चात् रामचन्द्र लक्ष्मणसे बोले कि मैंने मुनियोंके सप्तसागर तीर्थमे पितृ तर्पण किया, अब हमलोग पंपासरोवरके तीर पर चलें; जहाँ ऋष्यमूक पर्वत भी पासही देख पड़ेगा, जिसपर सुग्रीव निवास करता है। ऐसा कह दोनो भाई पंपाके तीर पर आये।

(किष्किन्धा काण्ड—पहले सर्गसे पाँचवें सर्ग तक) रामचन्द्र लक्ष्मणके साहित आगे चले। सुग्रीवने, जो ऋष्यमूक पर निवास करता था, इन दोनोंको देख त्रास युक्त हो हनूमानको भेजा। हनूमान ऋष्यमूक पर्वतसे कूदकर राम लक्ष्मणके पास आया और अनेक बातें करके दोनों भाइयोंको पीठ पर चढ़ाकर ऋष्यमूक पर होकर मलय पर्वत पर सुग्रीवके पास पहुँचा। वहाँ रामचन्द्रने सुग्रीवका हाथ पकड़ा। दोनों मित्रोंने अग्निकी प्रदक्षिणा करके दृढ़ मित्रता की।

(६ ठा सर्ग) सुग्रीव बोले, हे रामचन्द्र! एक दिन मैंने देखा कि एक स्त्रीको एक राक्षस हरे लिये जाता था। वह राम और लक्ष्मण ऐसा पुकार रही थी। उसने हम पाँच बानरोंको इस पर्वत पर देख अपने वस्त्र और सुन्दर सुन्दर आभूषणोंको ऊपरसे गिरा दिया। रामचन्द्रके माँगने पर सुग्रीवने पर्वतकी कन्दरासे उन वस्तुओंको लाकर रामचन्द्रके समीप रखदिया, जिनको दोनो भाइयोंने पहचाना।

(११ वाँ सर्ग) सुग्रीव कहने लगा कि हे रामचन्द्र! एक समय भैंसेका रूप दुन्दुभी असुर किष्किन्धाके द्वार पर आकर गर्जने लगा। बालीने दुन्दुभीके दोनों सींगोंको

पकड़ उसको दूर झोंक दिया। जब वह मरगया तब वालीने उसको अपने दोनों भुजोंसे उठाकर फेंक दिया। वह एक योजन पर मतंग ऋषिके आश्रम पर जा गिरा। मुनीश्वरने अपने तपोबलसे वानरका कर्म जानकर शाप दिया कि जिसने इस मृतकको मेरे आश्रममें फेंका है वह यदि अवसे इस आश्रममें प्रवेश करेगा तो मरजायगा। उस शापसे वाली ऋष्यमूक पर्वतकी ओर आँख उठाकर देखभी नहीं सकता है। देखिये दुन्दुभीकी हड्डियोंका समूह पासहीमें दख पडता है और ये सात साखूके वृक्ष हैं, इनमेंसे एक एकको वाली अपने पराक्रमसे हिलाकर विना पत्तेका कर सकता है, आप उसको कैसे मार सकेंगे। रामचन्द्रने खेलवाड़की नाई पैरके अंगूठेसे दुन्दुभीके सूखे शरीरको उठाकर दश योजन दूर फेंक दिया। (१२ वॉ सर्ग) और एक बाण साखूके वृक्षकी तरफ चलाया। वह बाण सातों वृक्षोंको और पर्वतको फोडकर रामचन्द्रके तर्कसमें आघुसा। तव सुग्रीव बोले कि हे प्रभो! तुम बाणोंसे सम्पूर्ण देवताओंको मार सकते हो, वाली क्या पदार्थ है। उसके अनन्तर रामचन्द्र, सुग्रीव आदि सब उठे और शीघ्रतासे किष्किन्धामें पहुँचकर वृक्षकी आड़मे खड़े हुए। तब सुग्रीव बड़े वेगसे गर्जा, जिसको सुन वाली अत्यन्त क्रोध युक्त हो लपकके आया। दोनों भाइयोंका घोर युद्ध होने लगा। हाथमें धनुष लिये रामचन्द्र देखने लगे। परन्तु कौन सुग्रीव और कौन वाली है। यह भेद उनको न समुझ पडा इस लिये उन्होंने अपने बाणको नहीं छोड़ा। इतनेमें सुग्रीव वालीसे हारकर ऋष्यमूकपर भाग गया। तब रामचन्द्र लक्ष्मण और हनूमानको साथ ले सुग्रीवके पास गये। रामकी आज्ञासे लक्ष्मणने पुष्पित गजपुष्पाको उखाड सुग्रीवके गलेमें मालाके समान पहना दिया। (१४ वाँ सर्ग) रामचन्द्र सुग्रीव आदिके साथ किष्किन्धामें जाकर वृक्षोंके आड़में ठहरे। सुग्रीवने उच्चस्वरसे युद्धके लिये वालीको ललकारा। (१६ वॉ सर्ग) ताराके वचनका निरादरकर वाली अपने नगरसे वाहर निकल सुग्रीवसे लड़ने लगा। जब रामचन्द्रने देखा कि सुग्रीव क्षीण पराक्रम होगया; तब वालीकी छातीमें बाण मारा, जिससे वह भूमिपर गिर पडा। (२२ वॉ सर्ग) वालीने रामचन्द्रजीसे अनेक वाते करके अपने प्राणोंको छोड दिया। (२५ वाँ सर्ग) लक्ष्मणके सहित श्रीरामचन्द्रने सुग्रीव, तारा और अंगदको समाश्वासन दिया। सुग्रीव और अङ्गदने वालीके शरीरको पालकीपर चढ़ाया। वानरोंने नदीके तीर पर चिता बनाई। तब अङ्गद और सुग्रीवने वालीको चिता पर स्थापन किया और विधिपूर्वक चितामें अग्नि देकर उलटी प्रदक्षिणा दी। इसके अनन्तर रामचन्द्रने, जो सुग्रीवहीके समान शोकयुक्त होगये थे, उसकी सम्पूर्ण प्रेत क्रिया करवायी।

(२६ वॉ सर्ग) उसके पश्चात् रामचन्द्र सुग्रीवसे बोले कि यह वर्षा ऋतुका पहिला महीना श्रावण है, उद्योगका समय नहीं है। जब कार्तिक लगे तब तुम रावणके वधका उद्योग करना। उसके पश्चात् सुग्रीवने किष्किन्धामें प्रवेश किया। वहाँ उनका अभिषेक हुआ। सुग्रीवने अङ्गदको यौवराज्यके आसनपर अभिषेक कराया।

(२७ वॉ सर्ग) रामचन्द्र लक्ष्मणके सहित प्रस्रवण गिरिपर आये। दोनो भाइयोंने उस पर्वतके शृङ्गपर एक बडी लम्बी चौड़ी कन्दरा देखकर वहाँ निवास किया। रामचन्द्र लक्ष्मणसे बोले कि देखो इस गुहाके अग्रभागमें यह पूर्व वाहनी नदी शोभा दे रही है। यहाँसे किष्किन्धा दूरभी नहीं है। देखो यहाँसे गीत और बाजोंका घोष और गर्जते हुए वानरोंका शब्द सुन पड़ता है। (२८ वॉ सर्ग) उसके उपरान्त माल्यवान पर्वतपर निवास करते हुए रामचन्द्रने लक्ष्मणसे वर्षा ऋतुकी शोभा वर्णन की।

(३० वाँ सर्ग) शरद कालके लगतेही रामचन्द्रने लक्ष्मणसे कहा कि देखो सुग्रीव सीताको खोजनेके लिये समयका नियम करकेभी चेत नही करता। वर्षा काल * के चारों महीने बीत गये। तुम किष्किन्धामें जाकर मेरे क्रोधका रूप उससे कह सुनाओ। (३१ वाँ सर्ग) लक्ष्मणने प्रवर्षणसे चलकर पर्वतकी सन्धिमें बसी हुई सेनाओंसे पूर्ण दुर्गम किष्किन्धा पुरीको देखा, जिसके बाहर भयंकर वानर घूम रहे थे। श्रेष्ठ वानरोंने सुग्रीवके घर जाकर लक्ष्मणका क्रोधपूर्वक आगमन कह सुनाया, परन्तु सुग्रीवने, जो ताराके साथ कामासक्त होरहे थे, उनके वचनोंकी ओर ध्यान नहीं दिया। उस समय सचिवोंकी आज्ञा पाकर बड़े बड़े वानर हाथोंमें वृक्षोंको लिये हुए खड़े होगये। सम्पूर्ण किष्किन्धा वानरोंसे भर गई। उस कालमें अङ्गद; प्रज्वलित कालाग्निके सदृश लक्ष्मणको देखकर अत्यन्त त्रसित हो लक्ष्मणके पास गया। लक्ष्मणने अङ्गदको सुग्रीवके पास भेजा; परन्तु सुग्रीव निद्रासे ऐसे प्रमत्त थे कि अङ्गदके वचनको कुछ भी न सुन और न समझ सके। तब वानर लोग लक्ष्मणको क्रुद्ध देख उच्च-स्वरसे किलकिला शब्द करने लगे, जिससे सुग्रीवकी निद्रा खुल गई। (३३ वाँ सर्ग) लक्ष्मणने अङ्गदसे सन्देश पाकर किष्किन्धा गुहामें पहुँचकर वहाँ पुष्पित वन, राजमार्ग और विशाल विशाल अनेक खनवाले गृह देखे। सुग्रीव चापके शब्दसे लक्ष्मणका आगमन जान कर त्रासयुक्त हो अपने आसनसे विचलित हुए। उन्होंने ताराको लक्ष्मणके पास भेजा। तारा लक्ष्मणका प्रबोध करके उनको सुग्रीवके पास लाई। (३६ वाँ सर्ग) सुग्रीवकी प्रार्थनासे लक्ष्मण प्रसन्न हुए। (३७ वाँ सर्ग) सुग्रीवकी आज्ञासे हनूमानने सब वानरोंको सब दिशा-ओंमे भेजा। उन्होने शीघ्र जाकर समुद्रों, पर्वतों, वनों और सरोवरोंके रहनेवाले वानरोंको राजाकी आज्ञा कह सुनाई। प्रधान वानर पृथ्वीके सब वानरोंको सन्देश दे शीघ्र सुग्रीवके पास उपस्थित होकर बोले कि सब वानर आ पहुंचे हैं। (३८ वाँ सर्ग) तब सुग्रीव लक्ष्म-णके सहित सुवर्णकी पालकीपर चढ़ रामचन्द्रके निवास स्थानपर पहुँचे और रामचन्द्रके समीप हाथ जोडकर खड़े होगये। (३९ वाँ सर्ग) श्रीरामचन्द्र सुग्रीवसे बातकर रहे थे कि इतनेमें असंख्य वानरोंसे सम्पूर्ण भूमि आच्छादित होगई। (४० वें सर्गसे ४७ वें सर्ग तक) सुग्रीवने सीताका पता लगानेके लिये लाखों वानरोंको चारों दिशाओंमें भेजा। पूर्व, उत्तर और पश्चिम इन तीन दिशाओंसे वानरोने लौटकर सीताका पता न लगनेका समाचार कपिराजसे कह सुनाया।

(सुन्दर काण्ड—६५ वाँ सर्ग) दक्षिणके जानेवाले हनूमान आदि वानरोंने प्रस्रवण पर्वतपर आकर सीताका समाचार रामचन्द्रसे कहा और सीताकी दी हुई मणि उनको दी।

(युद्ध काण्ड—४ था सर्ग) श्रीरामचन्द्रने प्रस्रवण पर्वतसे दक्षिण दिशामें प्रस्थान किया। उनके पीछे बड़ी भारी वानरी सेना सुग्रीवसे अभिरक्षित होकर चली।

(उत्तर काण्ड, ४० वाँ और ४१ वाँ सर्ग) अगस्त्यजी श्रीरामचन्द्रसे हनूमानके जन्मकी कथा कहने लगे कि, हे रघुसत्तम ! सुमेरु पर्वतपर वानरोंका राजा केसरी रहता था उसकी स्त्रीका नाम अंजना था। वायुने अञ्जनामें हनूमानको उत्पन्न किया। जब अञ्जना

* वर्षाकालके आषाढ़, श्रावण, भाद्र, अश्विन ये ४ महीने होते हैं, किंतु वर्षाऋतु श्रावण, भाद्र, दोही महीनोंकी नियत है।

फलोंके लानेके लिये वनमें गई, तव हनूमान क्षुधासे पीड़ित हो रोदन करने लगे । उसी समय सूर्योदय हुआ । वालकने उडहुलके पुष्पके समान विम्व निकलते सूर्यमें देखा । तव उसने जाना कि यह कोई फल है । उस समय वह सूर्यको पकड़नेकी इच्छासे उड़कर मध्य आकाशमें पहुँचा । वायु अपने पुत्रके स्नेहसे सूर्यके दाहके भयसे उसको शीतलता देता हुआ उसके पीछे पीछे चला जाता था । सूर्यने ऐसा विचारकर कि, यह आगे वहुत कार्योंको करेगा उसको भस्म नहीं किया, उसी दिन सूर्य ग्रहण था । जव हनूमानने जाकर सूर्यको पकड़ लिया तव राहु डरकर वहाँसे हट गया । उसने इन्द्रलोकमें जाकर यह वृत्तान्त इन्द्रसे कह सुनाया इन्द्र हाथीपर चढ़कर सूर्यके पास पहुँचे राहु इन्द्रसे पहिलेही वहाँ पहुँच गया। हनूमान राहुको भी एक फल जानकर सूर्यको छोड उसीको पकड़नेके लिये दौडे । राहु भागकर इन्द्रके शरणमे गया । उस समय हनूमान ऐरावत हाथीको वहुत वड़ा फल जानकर उसकी ओर दौडे । इन्द्रने उस वालकको आते देखकर साधारण क्रोध पूर्वक धीरेसे उनको वज्र मारा । हनूमान वज्रकी चोटसे पर्वतपर गिरपड़े और इनकी वाँई ठुड्डी भग्न होगई । तव वायु महा क्रोधकर प्रजाओंके अन्तर्गतके अपने प्रचारको रोक हनूमानको गोदमें ले गुहामें जाकर चुप चाप वैठ रहा । वायुके प्रकोपसे सवका श्वास रुक गया और सम्पूर्ण कर्म बन्द होगये । तव सव प्रजाओंकी पुकार सुनकर ब्रह्माजीने देवताओंके सहित वायुके पास जाकर हनूमानके शरीरपर हाथ फेरा, जिससे वह वालक जी गया । तव वायु प्रसन्न हो सव प्राणियोंमे संचार करने लगा । ब्रह्माकी आज्ञासे सव देवताओंने वालकको वर दिये । इन्द्रने कहा कि मेरे वज्रसे इस वालककी ठुड्डी, टेढ़ी होगई है, इस लिये आजसे इसका नाम हनूमान होगा । जव ब्रह्मा आदि सव देवता चले गये, तव वायु अञ्जनाके पास हनूमानको रखकर चला गया । उसके पश्चात् हनूमान महावलसे गर्वित हो ऋषियोंके आश्रममें जाकर उपद्रव करने लगे । तव भृगु और अंगिराके वंशवाले महर्षियोंने उनको शाप दिया कि जिस वलके भरोसे तुम हमको वाधा देते हो वह वल तुमको वहुत काल पर स्मरण होगा और जव तुमको कोई स्मरण करावेगा तव तुम्हारा वल वढ़ेगा । किष्किन्धाके ऋक्षराजके मरने पर वाली राजा और सुग्रीव युवराज हुआ । वाल्यावस्थाहीसे सुग्रीवसे हनूमानकी भारी मित्रता थी । हनूमानने सूर्यके पास जाकर उनसे व्याकरण पढ़ा । (यह कथा दूसरे शिवपुराण-७ वे खण्डके ३९ वें अध्यायसे ४३ वें अध्याय तक है) ।

ब्रह्माण्डपुराण—(अध्यात्मरामायण-अरण्यकाण्ड, १० वाँ अध्याय) कवन्ध राक्षसने कहा कि हे रामचन्द्र ! सन्मुखवर्त्ती आश्रममें शवरी नाम्नी तापसी निवास करती है । तुम उसके पास जाओ, वह सीताकी सव कथा तुमसे कहेगी । रामचन्द्र लक्ष्मणके सहित उस वनको परित्याग करके शवरीके आश्रममें गये । उन्होने शवरीसे पूछा कि हे तापसी ! सीता कहाँ है । उसने कहा हे भगवन् ! रावण सीताको लंकामें लेगया है । यहांसे थोड़ी दूर पंपासरोवरके निकट ऋष्यमूक पर्वत है, जिस पर चार मन्त्रियोके सहित सुग्रीव वानर निवास करता है । तुम वहाँ जाकर उससे मित्रता करो । वह तुम्हारा समस्त कार्य पूर्ण करेगा । ऐसा कह शवरीने अग्निमें प्रवेश करके मुक्ति लाभ की ।

(किष्किन्धाकाण्ड-प्रथम अध्याय) रामचन्द्र पंपासरोवरके समीप गये । वह सरोवर एक कोश-विस्तीर्ण था । राम और लक्ष्मण वहाँसे चलकर ऋष्यमूकके कटान-

पहुँचे। सुग्रीव ४ बानरोंके सहित उस पर्वतके शिखर पर रहता था। उसने दोनों भाइयोंको देख भयभीत होकर हनूमानको उनके पास भेजा। हनूमान दोनों भाइयोंको अपने कन्धोंपर चढ़ाकर सुग्रीवके निकट ले आये। सुग्रीवने जानकीके सब भूषण, जिनको उसने गिराया था, रामचन्द्रको दिये। सुग्रीवने प्रतिज्ञा की कि मैं रावणको मार कर जानकीका उद्धार करूंगा। अग्निकी साक्षी देकर दोनों मित्र बने। सुग्रीवने दुन्दुभी दानवका पर्वताकार मस्तक रामचन्द्रको दिखलाया। रामचन्द्रने उसको अपने अँगूठेसे १० योजन दूर फेंक दिया। फिर सुग्रीवने तालके ७ वृक्षोंको दिखलाया, जिनको राघवने एकही बाणसे भेदन कर दिया। तब सुग्रीवको निश्चय और विश्वास हुआ कि यह बालीको मारेंगे। (२ रा अध्याय) रामचन्द्रकी आज्ञासे सुग्रीव किष्किन्धाके उपवनमें जाकर गर्जा। तब बाली आकर उससे लड़ने लगा। रामचन्द्रने दोनों बानरोंका एकही रूप देख-कर सुग्रीव बधकी शंकासे बालीको नही मारा। सुग्रीव बालीसे परास्त होकर भाग गया। तब लक्ष्मणने उसके गलेमें पुष्प माला पहना दी। सुग्रीवने फिर जाकर बालीको ललकारा। बाली ताराके वचनका निरादर करके आकर फिर सुग्रीवसे लड़ने लगा। रामचन्द्रने वृक्षके ओटमें बैठकर बालीके हृदयमे बाण मारा। बालीने शरीर छोड़कर परमपद प्राप्त किया। (३) सुग्रीवने शास्त्रके अनुसार बालीका प्रेत कर्म किया। लक्ष्मणने रामकी आज्ञानुसार किष्किन्धासे जाकर सुग्रीवका अभिषेक करवाया। बालीका पुत्र अंगद युवराज बनाया गया। रामचन्द्र लक्ष्मणके सहित प्रवर्षण पर्वतके अति विस्तृत उच्च शिखरपर गये और वहाँ सरोवरके निकट एक गुहामें निवास करने लगे। (४) सुग्रीवकी आज्ञासे हनूमानने सातों द्वीपोंके बानरोंको बुलानेके लिये १० सहस्र वानर भेजे। (५) कुछ दिनोंके पश्चात् रामचन्द्रने लक्ष्मणसे कहा कि देखो शरद्काल उपस्थित हुआ; परंतु सुग्रीव सीताके खोज-नेका उद्योग नही करता है। तुम जाकर उसको ले आवो। लक्ष्मण किष्किन्धामें जाकर सुग्रीवको ले आये। (६) सुग्रीवने दूसरी दिशाओंमे विविध बानरगणोंको भेज कर दक्षिण दिशामें अंगद, जाम्बवान, हनूमान, नल, सुषेण, शरभ, मयंद, और द्विविधको भेजा।

(उत्तरकाण्ड—तीसरा अध्याय) सुमेरुके शृङ्गपर ब्रह्माकी सभा है। एक समय जब ब्रह्माने योगावलंबन किया था, तब उनके दोनों नेत्रोंसे अश्रु गिरे। जब उन्होने उसको हाथसे पोछ कर भूमिमें गिरादिया, तब उससे एक महा वानर उत्पन्न होगया। वह ब्रह्मा-की आज्ञासे वहाँ निवास करने लगा। उसका नाम ऋक्षराज पड़ा। एक समय वह बानर उस पर्वतके एक सरोवरमें जल पीनेके लिये गया और उसके जलमें अपना प्रतिबिम्ब देख उसको बानर जानकर जलमे कूद पड़ा। वह जलसे बाहर निकलनेपर सुन्दर स्त्री बनगया। इन्द्र ब्रह्माको पूजाकर जब अपने गृहको जाने लगा, तब मार्गमें सुन्दर स्त्रीको देख कामातुर होगया। उसका अमोघ वीर्य उस स्त्रीके केशपर गिरकर भूमिमें पड़गया, जिससे इन्द्रके तुल्य पराक्रमी बाली उत्पन्न हुआ। इन्द्र बालीको सुवर्ण–माला देकर अपने गृह चलागया। उसी समय सूर्य भी उस स्त्रीको देखकर कामवश होगया। उसने अपने अमोघ वीर्यको कन्याके ग्रीवा देशमें निक्षेप किया, जिससे उसी क्षण महाकाय सुग्रीव बानर उत्पन्न हुआ। सूर्य उसकी सहायताके लिये हनूमानको सौंपकर अपने स्थानको चलागया। वह स्त्री दोनों पुत्रोंको लेकर किसी स्थानपर सोगई। प्रातःकाल होनेपर उसने अपनेको पूर्ववत् बानर देखा।

ऋक्षराज वानर अपने दोनों पुत्रोंको लेकर ब्रह्माके समीप गया। इसके अनन्तर ब्रह्माने एक देवदूतसे कहा कि तुम ऋक्षराजके सहित विश्वकर्मा निर्मित किष्किन्धा नगरीमें जाओ और वहाँ उसको सिंहासनपर अभिषिक्त करके वानरोंका राजा वनावो। सातों द्वीपोंके वानर इसके वशवर्ती होंगे। जब रामचन्द्रका अवतार होगा तब सम्पूर्ण वानर उनकी सहायता करेंगे। देवदूतने किष्किन्धामे जाकर ब्रह्माके कथनानुसार ऋक्षराजको वानरोका राजा वनाया। तबसे किष्किन्धा वानरोका आश्रय–स्थान हुआ। (यह कथा वाल्मीकि रामायण––उत्तर काण्डके ४३ वें सर्गमें है)।

पद्मपुराण––(पातालखण्ड, ३६ वाँ अध्याय) हनूमानने पूस वदी सप्तमीको लङ्कासे लौटकर रामचन्द्रसे सीताका सन्देशा कहा और उनको सीताका चूडामणि दिया। अष्टमी तिथि उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र विजय मुहूर्तमें मध्याह्न समय प्रस्रवण गिरिसे रामचन्द्रका प्रस्थान हुआ।

वामनपुराण–(१२ वाँ अध्याय) सरोवरोंमें पंपासर श्रेष्ठ है।

भक्तमाल––लगभग ३०० वर्ष हुए नाभाजीने भक्तमाल नामक ग्रन्थ वनाया (भक्तमालमें लिखा है कि जयपुरके महाराज मानसिंह नाभाजीके मठपर गये थे)। संवत् १७६९ में प्रियदासने भक्तमालकी टीका रची। टीकाके २७ अङ्कसे ३३ तक इस भाँति शवरीकी कथा है;––शवरी वनमे रहती थी। वह नित्यही रात्रिके शेषमें चुपकेसे मतङ्गऋषिके आश्रममें लकडीके वोझे रख देती थी और कङ्कडोंको वहारकर मार्ग साफ कर देती थी। ऐसा देख ऋषिने अपने शिष्योको आज्ञा दी कि कौन श्रद्धावान् मनुष्य ऐसा काम करता है, तुम लोग उसको पकड़ो। शिष्यलोग रात्रिमें सावधानीसे पहरा देकर शवरीको पकडकर ऋषिके पास लाये। वह काँपने लगी दयालु मतङ्ग ऋषिने उसको वड़े स्नेहसे अपने आश्रममें वास कराया और उसका नाम श्रवणा रक्खा। ऐसा देख उस वनके सव ऋपियोने क्रोध करके मतङ्गऋषिको पंक्तिसे वाहरकर दिया। कुछ दिनोके पीछे महर्षि शवरीको रामचन्द्रके दर्शन करनेकी आज्ञा देकर परम धामको चले गये। गुरुके वियोगसे शवरीके हृदयमें दारुण शोक उत्पन्न हुआ, किन्तु श्रीरामचन्द्रके दर्शनकी आशासे वह जीवन धारण करती थी। ऋषियोंके स्नानके पहिलेही वह मार्गको वहारकर साफकर देती थी। यह देख वे लोग अप्रसन्न होते थे और उसके स्पर्श होनेपर उसपर क्रोध करते थे। जव ऋषि लोग स्नान करने जाते थे तव शवरी वहाँसे भागजाती थी। उस समय स्नानका जल रुधिर होगया और उसमें कीडे पड़गये। तव भी अभागे ऋषियोंने उसका कारण नहीं समझा। शवरी वनसे वेर लाकर चीख चीखके मीठे वैरोंको रामके लिये यत्नसे रखती थी और वाट जोहती थी कि कव श्रीरामचन्द्र आकर इन वैरोंको खायँगे। कुछ दिनोंके पीछे श्रीरामचन्द्र पूछते पूछते उसके स्थानमें आकर कहने लगे कि भगवती शवरी कहाँ है। शवरीने आकरके दूरहीसे उनको प्रणाम किया। रघुनन्दनने शीघ्रतासे उसको उठाया और उसके दिये हुए फलोंको वहुत प्रशंसा करके भोजन किया। ऋषि लोग विचार करते थे कि श्रीरामचन्द्र यहाँ आवेगे तो हम लोग विगडे हुए जलके सुधारका उपाय उनसे पूछेगे। इतनेमें उन्होंने सुना कि वह शवरीके आश्रममें आगये हैं। तव उन्होने अभिमानको परित्याग करके वहाँ जाकर

श्रीरामचन्द्रसे जब बिगड़नेका कारण पूछा। रामचन्द्रने कहा कि शबरीके चरणका स्पर्श करनेसे (अर्थात् शबरी उसमे जब अपना चरण डालेगी तब) जल स्वच्छ हो जायगा।

आठवाँ अध्याय।

(बम्बई हातेमें) लकुण्डी, गदग जंक्शन, बादामी, और बीजापुर।

लकुण्डी।

होसपेटसे ४१ मील (गुण्ठकल जंक्शनसे ११२ मील) पश्चिमोत्तर तरपालपुरका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे करीब ४ मील दूर और गदग जंक्शनसे करीब ८ मील दक्षिण पूर्व बम्बई हातेमें लकुण्डी एक बस्ती है। एक समय इसका नाम लोकोकण्डी था। यहाँ बहुत पुराने मन्दिर हैं।

बस्तीके पश्चिमके दरवाजेके पास एक अच्छा मन्दिर है, जिससे चन्द्गज दूर एक दूसरा मन्दिर है। काशीविश्वनाथके मन्दिरमें संगतराशीका उत्तम काम है। सब बातोंके मिलानेसे यह मन्दिर लकुण्डीमें देखने लायक है, परन्तु अब बहुत जर्जर होगया है। पश्चिम ओर सड़कके बगलपर एक तालाबके उत्तर नन्दीश्वर शिवका मन्दिर है। उससे २०० गज दक्षिण उस तालाबके पूर्व बगलपर बासवका मन्दिर है। बस्तीके भीतर मल्लिकार्जुन शिवका मन्दिर है। उससे १०० गज पश्चिम ईश्वरका बहुत पुराना मन्दिर है, जिसकी छत गिर गई है। लगभग १०० गजका एक तंग रास्ता बावलीके पास गया है। वहाँ पत्थरकी बावली है। उसके तीन तरफ पानी तक सीढ़ियाँ हैं। पहली सीढ़ीके दोनों बगलोंमें एक एक हाथी है। उससे लगभग २०० गज दूर टावरके पश्चिम बगलपर मणि केशव (कृष्ण) का मन्दिर है। मन्दिरके पास एक सुन्दर पत्थरका छोटा तालाब है, जिसमें पानीमें निकले हुए कई पुस्ते बने हैं। मन्दिरके दरवाजेके दोनों बगलोंमें चार चार काले स्तम्भ हैं। बाहरी दीवारका हिस्सा गिर रहा है।

गदग।

हरपालपुरसे ११ मील और गुण्टकल जंक्शनसे १२३ मील पश्चिम कुछ उत्तर गदगमें रेलवेका जंक्शन है। वहाँसे रेलवे लाइन ३ तरफ गई है,—उत्तर हातगी जंक्शनको, पश्चिम हुबली और लोडा जंक्शन होकर मोरमुगा बन्दरको और पूर्व कुछ दक्षिण गुण्टकल जंक्शनको बम्बई हातेमें दक्षिणी बिभागके धारवाड़ जिलेमें (१५ अंश, २४ कला, ५० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ४० कला, पूर्व देशान्तरमें) सबडिवीजनका सदर स्थान गदग एक कसबा है।

कसबेके दक्षिण-पश्चिम कोनेके पास कारवार कम्पनीकी रूईकी कोठी है। उसके पास गवर्नमेण्टके टेलीग्राफ आफिस और ममलुतदारकी कचहरी है। गदगमें सिविल स्टेशनके मामूली आफिस हैं। वहाँ रूई और रेशमकी बड़ी तिजारत होती है और साप्ताहिक बाजार लगता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय गदग कसबेमें ३३८९९ मनुष्य थे, अर्थात् १८३६१ हिन्दू, ४८०६ मुसलमान, ५९६ कृस्तान, ११७ जैन और १९ पारसी।

त्रिकूटेश्वरका मन्दिर–कसबेके दक्षिणके महल्लेमें त्रिकूटेश्वरका मन्दिर है। मन्दिरके पास ९ शिलालेख है, जिनमेंसे एकका सन् १०६२ ई० के मुताबिक होता है। प्रधान मन्दिरका पहला दरवाजा जगमोहनसे ३६ फीट दूर है। एक कमरेसे होकर मन्दिरमें जाना होता है। वहाँ दीवारमे सूरतोंके ३ कतार है, जिनमेंसे नीचे वाले कतारमें १५६ और ऊपर वालेमे १०४ मूर्त्तियाँ बनी हुई है। पूर्व ओर ४ स्तम्भोंके बीचमें नन्दी है। मन्दिरके प्रधान हिस्सेके पीछे पश्चिमकी तरफ इमारतें फैली है। हातेके दहिनेके हिस्सेमें सरस्वतीका मन्दिर है, जिसके जगमोहनमे १८ सतून और ६ सतूनची लगी हैं। चारो तरफ पुजारी और दर्शकोंके रहनेके लिये मकान है। पश्चिम एक दूसरा दरवाजा पेशगाहके साथ है। घेरेके भीतर पत्थरका एक उत्तम कूप है, जिसकी सीढियाँ पानी तक गई है। उस जगह बहुतेरे शिलालेख है, जिनमेंसे एकमे शाका ७९० (८६८ ई०) लिखा है।

दूसरे मन्दिर–कसबेके पश्चिमोत्तरके कोनेमे एक वैष्णव मन्दिर है। उसके दरवाजे पर ५० फीट ऊँचा चौमंजिला गोपुर बना हुआ है, जिसके प्रत्येक बगलमे १६ कतारोंमें मूर्तियाँ बनी है। गोपुर होकर एक हातेमें जाना होता है, जिसमे निहायत साधारण मन्दिर और एक कूप है।

उस मन्दिरसे ३०० गज दक्षिण-पश्चिम कारी देवका पत्थरका मन्दिर है, जिससे ३० गज दक्षिण एक छोटा जैन मन्दिर है।

बादामी।

गदग जंक्शनसे ४२ मील उत्तर बादामीका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके बीजापुर जिलेमें सबडिवीजनका सदर स्थान बादामी एक गाँव है, जिसमे सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ३०६० मनुष्य थे। गाँवके पूर्वोत्तर बादामीका किला और ऊँची भूमिपर चंद सुन्दर मन्दिर हैं। दक्षिण एक दूसरा चट्टानी किला एक पहाडीका मुकुट बना है, जिसके आगेके बगलमें ४ गुफामन्दिर है। ४०० फीट ऊँची दो पहाडियोंके बीचकी तंग जगहमें बादामीकी बस्ती है, जिसके पास एक उत्तम तालाब है। दोनों किले बहुत पुराने कदाचित् अङ्गरेजी सन्के शुरूके समयके है।

निचिले किलेके फाटकका मुख दक्षिण-पश्चिम है। उससे प्रवेश करने पर थोड़ेही आगे बाये तरफ हनूमानका मन्दिर मिलता है, जहाँसे १२० फीट ऊपर पत्थरका बना हुआ महादेवका मन्दिर है। मन्दिरसे ९० फीट ऊपर एक ऊँचा चट्टान है, जिसके किनारोंके चारों तरफ ऊपरवाले किलेकी दीवारका हिस्सा है। वह किला अब छोड दिया गया है। उसमे केवल १० फीट लम्बी एक लोहेकी तोप और दो तीन मन्दिर हैं।

दक्षिणवाली पहाडीके, जिसके ऊपर एक किला है, पश्चिम बगलमें छठी सदीके बने हुए हिन्दुओंके ३ गुफामन्दिर और जैनोका एक गुफामन्दिर है जिनके कारण बादामी प्रसिद्ध है।

हिन्दुओंकी गुफाये– पहली गुफा भूमिसे लगभग ३० फीट ऊपर है, इसका मुख पश्चिम ओर है। इसके आगे ६ स्तम्भ बने हैं, जिनमेंसे दक्षिणवाले २ स्तम्भ बिजलीसे

टूट गये है, उसके स्थान पर अब लकडीके स्तम्भ लगे है। गुफाके बायें एक द्वारपाल और एक नन्दी है। द्वारपालके सामने ५ फीट ऊँची १८ भुजावाली शिवकी मूर्ति है। वहाँ गणपति और बाजेवाले गण भी बने है। अगवासके बाद (पूर्व) निकासका मकान है, जिसमे बाये चतुर्भुजी विष्णु, दहिने एक पार्षदके साथ लक्ष्मीजी और चबूतरे पर शिव, पार्वती और नन्दी; पिछली दीवारमे महिषासुरको मारती हुई ४ भुजावाली माहेश्वरी, दहिनेकी दीवारमें गणपति और बायेंकी दीवारमें स्कन्द हैं। निकासके बाद दो स्तम्भोंके सा॰ एक कमरा है। भीतर स्तम्भोंके २ कतार है।

पहले गुफा मन्दिरमे दूसरे गुफा मन्दिरको सीढ़ी गई है। अगवासेमें उत्तर मुखकी ४ मेहरावी है। उसके आगे दो द्वारपाल और एक स्त्री है। बरंडेके पूर्व बगलमें सूरतोंका एक दल और भगवान् वामनजीकी बहुत बडी और वाराह भगवान्की साधारण मूर्ति है। वामनजी एक चरण पृथ्वी पर और दूसरा आकाशमें रक्खे हुए है। आगे गरुड पर चढे हुए चतुर्भुज विष्णु है। दीवारके शिरके पास शेषशायी विष्णुकी मूर्ति बनी है। बरंडेसे एक दरवाजा द्वारा कमरेमें प्रवेश करना होता है। कमरेकी छतके नीचे ८ स्तम्भ है। उसके भीतर मनुष्य, हाथी, इत्यादिकी बहुतेरी मूर्त्तियां बनी है।

दूसरी सीढ़ीके शिरके पास तीसरी गुफाके आगे एक चबूतरा है। यह गुफा वहाँके सब गुफाओंमें उत्तम है। इसका अगवास उत्तरसे दक्षिण तक ७२ फीट है, जिसमे १२½ फीट ऊँचे ८ स्तम्भ बने है। ११ सीढ़ियाँ गुफाको गई है। वहाँ पत्थर निकाल कर अनेक गण, पुरुष स्त्री, अर्द्धनारीश्वर शिव, शिव और पार्वतीकी मूर्त्ति बनी हुई है। बरंडेके पश्चिम अखीरमें ११ फीट ऊँची नृसिंहकी मूर्त्ति है। दक्षिणकी दीवारमें इतनीही ऊँचाईके शिव है। पूर्व अखीरके पास शेषके फणके नीचे नारायण हैं। इस मूरतके बायें वाराहजी और दहिने कनडी अक्षरमें एक शिलालेख है। भीतरका कमरा उत्तरसे दक्षिण तक २८ फीट लम्बा, पूर्वसे पश्चिम तक २५ फीट चौडा और १६¾ फीट ऊँचा है। गुफाके बायें चट्टानपर एक शिला लेख है। एक लेखमे शाका ५०० (सन् ५७८ ईस्वी) लिखा है।

जैनगुफा–तीसरी गुफाके पूर्व ७ फीट ऊंची दीवार है, जो जैन गुफाको तीनो हिन्दू गुफाओंसे जुदा करती है। दीवारके बाद चबूतरा या आँगन है। गुफाके आगे चट्टान काटकर बनी हुई चौड़ी ओरियानी है। अगवासमें मेहराबदार ६ स्तम्भ बने है। भीतरके बरण्डेके बायें एक जैन देवता और दहिने बुद्धकी मूर्त्ति है और आगे ४ स्तम्भ खडे है। इस बरण्डेमें मूर्त्तियोंको ४ पंक्तियाँ और बरण्डेके मध्यमें बुद्ध देव है। उससे आगे आदितम् अर्थात् निज मन्दिरमें बुद्धकी मूर्त्ति है। बरण्डेसे सीढ़ियाँ किलेके दरवाज़ेको गई हैं।

झीलके शिरके पास चट्टानके एक हिस्सेके गिर जानेसे पाँचवीं गुफा बन गयी है। एक सुराख द्वारा रेंगकर आदमी भीतर जाता है। चट्टानके सन्मुख एक बड़ी और एक छोटी जैन मूर्त्ति है। इससे थोडा पश्चिमोत्तर चट्टानके सन्मुख एक छोटा स्थान बना है, जिसपर देवताओंसे घेरे हुए विष्णु और शेषजी है। पश्चिमोत्तर और उत्तर बहुतसे दूसरे स्थान हैं।

पार्वतीका मन्दिर–बादामीसे करीब २ मील दूर मलपर्बा नदी और बादामीके बीच रास्तेके बनशंकर गाँवमें पार्वतीजीका मन्दिर है। पहिले पत्थरका एक छोटा सायबान

मिलता है, जिससे ३०० गज दूर ३६४ फीट लम्बा और इतनाही चौडा एक तालाव है, जिसके पश्चिम वगलपर स्तम्भोंके ४ कतारोंके साथ एक सायवान और पूर्व वगलपर पानी तक पत्थरकी सीढ़ियोंका घाट है। तालावमें मछलियाँ बहुत हैं। तालावके पास बहुतसे बड़े बड़े बन्दर रहते है और २६ फीट ऊंचा एक रथ रक्खा है, जिसकी बडी पहियोंका व्यास ७ फीट है। सायवानके पश्चिम बगलपर पार्वतीका मन्दिर है। वहाँ एक ऊँचे बुर्जपर कई कतारोंमें दीप रखनेकी जगह बनी है। मन्दिरके पास साफ पानीका १५ फीट चौडा एक सुन्दर नाला है, जो वडे वडे दरख्तोंके जङ्गल और झाडियोंमे होकर बहता है।

मलप्रवाके किनारेके मन्दिर—बादामीसे ५ मील दक्षिण पश्चिम मलप्रभा नदीके बॉयें किनारेपर सातवीं या आठवीं सदीके वने हुए द्राविडियन कारीगरीके नमूनेके हिन्दुओं और जैनोंके कई एक मन्दिर है। इनके सिवाय वस्तीमें बहुतेरे मन्दिर हैं। पापनाथका मन्दिर उत्तरी हिन्दुस्तानके मन्दिरके ढांचेका ९० फीट लम्बा, ४० फीट चौडा है। मन्दिरमें १६ स्तंभ और भीतरीके कमरेमें ४ स्तम्भ हैं। मन्दिरके आगे जगमोहन बना हुआ है।

गुफा—बादामीके ५ मील पूर्वोत्तर एवल्लीके पास एक जैन गुफा और एक हिन्दू गुफा है।

इतिहास—सन् १७८६ में बादामी टीपू सुलतानके अधिकारमें थी। उस समय निजाम अली और पेशवा माधवरावकी फौजोंने उसपर आक्रमण किया। अन्तमें बादामीके किलेकी सेना परास्त होगई। सन् १८१८ में अङ्गरेजोंने किलेको लेलिया। बादामीके पहिलेका इतिहास बीजापुरके इतिहासमें लिखा गया है।

बीजापुर।

बादामीके रेलवे स्टेशनसे ७३ मील (गदगजंक्शनसे ११५ मील) उत्तर और होटगी जंक्शनसे ५८ मील दक्षिण बीजापुरका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके दक्षिणी विभागमें (१६ अंश, ४९ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ४६ कला, ५ विकला पूर्व देशान्तरमें) जिलेका सदर स्थान बीजापुर एक पुराना नगर है, जिसका नाम पहिले विजयपुर था।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बीजापुर कसबेमें १६७५९ मनुष्य थे, अर्थात् १२०७५ हिन्दू, ४५०९ मुसलमान, १०० जैन, ५० क्रस्तान, १८ पारसी और ७ यहूदी।

रेलवे स्टेशनसे पश्चिम प्राय गोलाकार शकलमें बीजापुर कसबा है, जिसके बगलोंमें पत्थरकी दृढ दीवार, जिसकी परिधि लगभग ६ मीलके घेरेकी है, बनी हुई है। कोटमें स्थान स्थानपर सुन्दर पाये बने है। नगरके चारोंओर ७ फाटक है,—पश्चिमोत्तर शाहपुर फाटक; उसके दक्षिण कसबेके पश्चिम जोहरपुर फाटक, उससे २०० गज दक्षिण मक्का फाटक, जो स्कूल बननेके कारण अब बन्द रहता है, दक्षिणकी दीवारके मध्यमें फतह फाटक, कसबेके पूर्व बगलमे अलीपुर फाटक, उससे उत्तर रेलवे स्टेशनके पास बादशाहपुर फाटक और कसबेके उत्तरकी दीवारके मध्यमें बाहमनी फाटक।

नगरकी दीवारके भीतर ही किला है। बादशाही समयमें नगरही किला था और जिसको किला कहते हैं वह बादशाहका गढ़ था। नगरके भीतरका किला, जिसके चारोंओर दृढ दीवार है, पूरबसे पश्चिम तक लगभग १९०० फीट लम्बा और उत्तरसे दक्षिण तक१६५०

फीट चौड़ा है। इसका नाम अर्क किला है। अब अच्छी अच्छी इमारतें इसीमें देख पड़ती हैं। बीजापुरमें वहाँके मुसलमान बादशाहोंकी अनेक प्रकारकी कारीगरीसे बनी हुई बहुतसी इमारतें अब तक विद्यमान हैं और बहुतसी टूट फूटकर उजाड़ हो रही हैं। वहाँ अनगिनत मसजिदें मकबरे और कबरें हैं। इमारतोंके देखनेसे बीजापुरके बादशाही समयके ऐश्वर्य और विभवका अनुभव होता है। वहाँकी प्रधान इमारतोंको अच्छी तरहसे देखनेमें दो दिनसे कम नहीं लगेगा। किलेके बगलोंमें और उसके मध्यमें उत्तरसे दक्षिण तक चौड़ी खाई बनी हुई है। किलेके भीतर आनन्द महल, गंगन महल, चीनमहल, सतमहला महल, अम्बरी, मक्का मसजिद, पुरानी मसजिद इत्यादि इमारतें बनी हुई हैं और गिरजा इत्यादि कई एक अङ्गरेजोंकी बनवाई हुई इमारतें हैं। किलेके पश्चिमोत्तर पोस्टआफिसके पश्चिम बुखारा मसजिद है। एक सड़क बीजापुर नगरकी पूर्वी दीवारके बादशाहपुर फाटकके पाससे सीधी पश्चिम किलेके उत्तरके किनारेके निकट होकर सिरजा बुर्जको और दूसरी अलीपुर फाटकसे पश्चिम किलेके दक्षिणके किनारेके पास होकर गई है।

गोल गुंबज—नगरके पूर्वकी दीवारके भीतर रेलवे स्टेशनके पास बीजापुरके ७ वें बादशाह महम्मद आदिलशाहका उत्तम मकबरा है, जो गोल गुम्बज कहलाता है। इतना बड़ा गुम्बज किसी देशमें नहीं है। २ फीट ऊँचे और ६०० फीट लम्बे तथा इतनेही चौड़े चबूतरेपर मकबरा है। उसके आगेका फाटक एक तरफसे ८८ फीट और दूसरी तरफसे ९४ फीट लम्बा है। मकबरेके बाहरका प्रत्येक बगल १९६ फीट लम्बा है और उसके प्रत्येक कोनेके पास एक सात मञ्जिला मीनार है। मकबरेके मध्यके बड़े गुम्बजका व्यास १२४ फीट है और प्रत्येक बगलके मध्यमें एक चौड़ी और ऊँची मेहराबी है। मीनारोंके भीतर चक्करदार सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। मीनारोंके शिरोभागपर चढ़नेसे चारोंओर दूरदूरकी वस्तु देख पड़ती है। मकबरेके मध्यके गुम्बजके नीचेका बड़ा कमरा हर तरफसे १३५ फीट लम्बा और भीतरसे १७५ फीट और बाहरी १९८ फीट ऊँचा है।

गुम्बजके नीचेके बड़े कमरेके मध्यमें अहम्मद आदिल शाहकी, पूर्व बगलपर उसकी छोटी स्त्री और आठवाँ बादशाह दूसरा अली आदिलशाहके लड़केकी और पश्चिम एक नाचनेवाली लड़की तथा महम्मद आदिलशाहकी सबसे बड़ी स्त्री और एक लड़कीको कबरें हैं। दक्षिणके द्वारके पास एक पत्थरपर फारसी अक्षरोंमे लिखा हुआ है कि सुलतान महम्मद आदिलशाहका देहान्त सन् १०७० हिजरी (सन् १६५९ ई०) में हुआ। मकबरेसे पश्चिम चबूतरेके किनारेपर एक मसजिद है, जिसमे अब मोसाफिर टिकते हैं।

जुमामसजिद—गोल गुम्बजसे ½ मीलसे अधिक दक्षिण-पश्चिम अलीपुर फाटकसे किलेके दक्षिण जानेवाली सड़कके पास हिन्दुस्तानके उत्तम मसजिदोंमेंसे एक जुमा मसजिद है। दक्षिण हिन्दुस्तानमें उसकी जोड़की कोई मसजिद नही है। उत्तर बगलके एक फाटकसे चौखूटे आङ्गनमें प्रवेश किया जाता है, जिसके पूर्वकी दीवार तैयार नहीं है। उसके पश्चिम बगलमें खास मसजिद और दक्षिण बगलोंपर ३१ फीट चौड़ा मेहराबदार दालान है। आङ्गनके मध्यमें फौवारेका सूखा हुआ हौज है। मसजिदका काम पहला अली आदिलशाहने आरम्भ किया और उसके सब उत्तराधिकारियोंद्वारा उसका काम जारी रहा, परन्तु पूरे तौरसे मसजिद तैयार नही हुई। खास मसजिदकी लम्बाईमे ९ और

चौडाईमें ५ खन्दे है। वह बहुतसे मोरव्वे स्थानोंमे बंटी हुई है। प्रत्येक मोरव्वा स्थानोंके ऊपर एक चिपटा गुम्बज बना हुआ है। मध्यकी जगह, जिसपर बडा गुम्बज है, ७० फीट लम्बी और इतनी चौडी है, जो मोरव्वे स्थानो के १२ गुना होती है। मसजिद्के फर्शपर हजारों जा निजाम अर्थात् निमाज पढनेकी क्यारियाँ बनाई हुई हैं। मेहरावोपर फारसी शैर खोदे हुए हैं। मसजिद्से चौथाई मीलसे अधिक पश्चिम मेहतर महल है।

असरो शरीफका महल-भीतरीके गढ़ अर्थात् किलेके पूर्वकी दीवारके मध्यके पास उसकी खाईके बाहर तथा मेहतर महलसे उत्तर असरी शरीफका महल एक भारी इमारत है। ३६ फीट चौडा उसका पेशगाह है, जिसके पूर्व बगलपर ६० फीट ऊँचे टीक लकड़ीके ४ स्तम्भ लगे हैं। पेशगाहके भीतरकी छत चौखूटे लकडीसे बनी है और सुन्दर तरहसे रंगी हुई है। पेशगाहके पश्चिम बगलपर कई दो मञ्जिले कमरे हैं। ऊपरके ८१ फीट लम्बे और २७ फीट चौडे कमरेमें नीचेसे सीढ़ियाँ गई हैं। कमरेके भीतरकी छत और दीवारोंमे मोलम्मा हुआ है और उसके किवाडोंपर हाथीदांतके जडावका सुन्दर काम है। कमरेके उत्तर एक दूसरे कमरेमें महम्मद साहबके मूछोंके दो बाल रक्खे हुए हैं। वर्षमे केवल एक बार वह कमरा खुलता है। दक्षिणके दो कमरे खूबसूरतीसे रंगे हुए हैं। सम्पूर्ण कमरे मरहठोंकी आज्ञासे बदशकल किये गये थे और किवाडोंमें जडे हुए हाथीदांतके काम उखाड़ लिये गये थे। इस इमारतको करीब सन् १६४६ में महम्मद आदिल शाहने इनसाफकी कचहरीके लिये बनाया, इस लिये इसका नाम असरी सरीफ महल पड़ा। इसके आगे २५० फीट लम्बा और इतनाही चौडा एक तालाब है।

पुरानी मसजिद्-किलेके भीतरके फाटकके पश्चिमोत्तर पुरानी मसजिद है, जो पहले जैन मन्दिर थी। उसका दो मञ्जिला मण्डपम् मसजिदका पेशगाह बना है। भीतरीका दरवाजा मुसलमानोंका बनवाया है। खास मसजिद हिन्दू या जैनोंके स्तम्भोंसे बनी है। मसजिदके मध्यके कतारके उत्तर बगलके पास नकाशीदार एक काले स्तम्भपर कनडी अक्षरोंमें शिलालेख है और अन्य कई स्तम्भोंपर चारों तरफ कई एक संस्कृतसे और चन्द कनड़ी अक्षरोंमें शिलालेख हैं। एक लेख सन् १३२० ई० के मोताविक होता है।

आनन्द महल-यह किलेके मध्यमे गङ्गन महलसे पूर्व है। यहां महलकी स्त्रियाँ रहती थीं। इसको सन् १५८९ में दूसरा इब्राहिम आदिलशाहने बनवाया; लेकिन इसके अगवासका काम पूरा नहीं हुआ। उसमें एक उत्तम बडा कमरा है, जिसमें अब ऐसिस्टेन्ट कलक्टर रहता है।

दूसरी पुरानी मसजिद्-गगन महलके उत्तर जैन मन्दिरके पत्थरोंसे बनवाई हुई पुरानी मसजिद है। इसकी लम्बाईमे १० और चौड़ाईमें ७ खम्भोंकी पंक्तियाँ हैं।

सतमहला महल-किलेके भीतर उसके पश्चिम किनारेके पास पाँच मञ्जिला टावर है, जो पहिले सात मञ्जिला था। उसके सिरेपर चढ़नेसे सम्पूर्ण नगर देखा जा सकता था।

चीनमहल-ग्रेनरीके दक्षिणके किनारेके पास १२८ फीट लम्बा एक उत्तम हाल अर्थात् बड़ा कमरा है। टूटे हुए चीनके वर्तन वहाँ मिलते हैं, इसी कारणसे उसका नाम चीनमहल पड़ा है। उसीमें अब जज्ज मजिष्टर और कलक्टरकी कचहरियाँ लगती हैं।

मक्का मसजिद–ग्रेनरी मकानके आगे सड़कके मध्यमें एक छोटा सायबान है। वहाँसे १४० फीट लम्बा एक पुल द्वारा किलेके मध्यकी खाई लांघी जाती है, जिसकी औसत चौडाई १५० फीट है। किलेके भीतर उस खाईके फाटकसे पूर्वोत्तर मक्का मसजिद है। खास मसजिदकी लम्बाईमें ५ और चौड़ाईमें २ दर अर्थात् खाने है। मसजिदके ऊपर एक गुम्बज है। यह एक छोटीसी सुन्दर मसजिद है। लोग कहते है कि चौदहवी सदीके आरम्भमें, जब बीजापुर हिन्दू राजाके अधिकारमें था, एक पीरने इस मसजिदको बनवाया।

दूसरा अली आदिलशाहका मकबरा—इसको अलीरोजा भी कहते है। यह एक अधबना मकबरा है। किलेके उत्तर १५ फीट ऊँचे और २१५ फीट लम्बे और इतनेही चौड़े चबूतरे पर एक स्केयरके प्रत्येक बगलों पर सात सात बडी मेहराबियाँ है घेरेके मध्यमे ७८ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा रौजा है। बादशाहके मरनेके सबबके इसका काम जो रुक न जाता और असली ख्वाहिशके मुताबिक मकबरा बनता तो यह बीजापुरकी दूसरी सब इमारतोंसे उमदगी और कदमें बढ़ जाता। यह मकबरा तय्यार होता तो इसके ऊपर एक गुम्बज बनता। स्केयरके समीपही दक्षिण पश्चिम बोखारा मसजिद है, जिसमें अब पोष्टआफिसका काम होता है।

इब्राहिम रौजा–नगरके पश्चिमके मक्का फाटकसे ४०० गज पश्चिम एक मजबूत दीवारसे घेरा हुआ एक ऊँचे चबूतरे पर बीजापुरके दूसरे इब्राहिम आदिलशाहका रौजा है, जिसमें इब्राहिम आदिलशाह, उसकी स्त्री ताज सुलताना और उसके खान्दानके दूसरे चार आदमियोंकी कबरें है। रौजेके पश्चिम एक मसजिद और रौजे तथा मसजिदके बीचमें एक हौज़ और एक फौआरा है। रौजेके चारों तरफ सात सात मेहराबियोंके बरंडे है भीतरकी छत क़ोरानके बैतोंके साथ नकाशी की हुई है। अरबी जुमिलोंके झँझरीदार कामके साथ खिड़कियाँ बनी हैं। पत्थरके तख्तोंमें काटे हुए प्रति अक्षरोंके बीचकी जगहसे रोशनी आती है। इमारतके बाहर दोहरी मेहराबियोंके कतारोंमें खूबसूरत कारनिस है। रौजेके प्रत्येक कोनेके पास एक चौमंजिला बड़ा मीनार और पनके बीच बीचमें ८ छोटे मीनार है। रौजेका प्रधान कमरा ४० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है जिसके ऊपर गुम्बजमे दूसरा कमरा है, जिसमें जानेके लिये दीवारकी मोटाईमें तंग सीढ़ियाँ बनी हुई है। उत्तरके दरवाजेके ऊपर पारसीमें शिलालेख है, जिसके अखीरकी सतरमें इब्राहिम आदिलशाहकी मृत्युका समय सन् १०३६ हिजरी (१६२६ ई०) लिखा है। दक्षिणके दरवाजेके ऊपर एक दूसरे लेखमे बादशाहकी प्रशंसा है। उसका हिजरी सन् १६३३ ई० के मुताबिक होता है। उसी दरवाजेके ऊपरके फारसी लेखसे जाहिर होता है कि मलिक सन्दाल द्वारा यह रौजा तय्यार हुआ और इसके बनवानेमें डेढ़ लाख नव सौ हुन्न अर्थात् ७०००० पाउंड खर्च पडा।

सिंहबुर्ज—नगरके पश्चिमोत्तरके शाहपुर फाटकसे ५०० गज दक्षिण उसके पश्चिमकी दीवार और सिरजाबुर्जके पास सिंहबुर्ज है उसमें दो सिंहोंके शिर बननेके कारण वह सिंहबुर्ज कहलाता है। बुर्जकी सीढ़ियों पर चढ़ने पर दहिने बगलमें एक लेख मिलता है, जिससे जान पड़ता है कि यह बुर्ज सन् १६७१ में ५ महीनोंमें तय्यार हुआ। इसके ऊपर मालक मैदान नामक एक बड़ी तोप है, जिसके मुखके दोनों तरफ हाथीको निगलता हुआ

भूतका मुख बना है। तोपकी लम्बाई १४ फीट, घेरा १३ फीट और सुराखका व्यास २ फीट ४ इंच है। इस तोपको महम्मद रूमीखाँने बनवाया था तोपके मुखके पास लिखा है कि खोदाके पैगम्बरके खान्दानका दास आबुलगजी निजामशाह, सन् ९५६ हिजरी। वहाँ यह भी लिखा है कि काफिरोंको जीतनेवाले और मजहबको बचानेवाले बादशाह आलमगीरने अपने राज्यके ३० वें वर्ष सन् १०९७ हिजरी (१६८६ ई०) मे बीजापुरको जीता और शाहोंके राज्यको अपने राज्यमे मिला लिया, तथा कामयाबी देखला कर मालक मैदानको ले लिया।

ऊपरीबुर्ज वा हैदरबुर्ज—सिरजाबुर्जके करीब १५० गज पूर्वोत्तर नगरके भीतर ६१ फीट ऊँचा हैदरबुर्ज है, जिसके बाहरसे ऊपरको सीढ़ियाँ गई हैं। ऊपरके रास्ते पर एक शिलालेख है, जिसमे सन् १५८३ ई० के मुताबिकका हिजरी सन् देख पड़ता है। बुर्जके ऊपर लोहेकी पट्टीसे इकट्ठी बाँधी हुई २ तोपे रक्खी हुई हैं, जिनमेंकी बडी तोप; जो ३० फीट लम्बी है, लम्ब छड़ी कहलाती है। उसके मुखके पासका व्यास २ फीट ५ इञ्च पीछेका व्यास ३ फीट और मुखकी सुराखका व्यास १२ इंच है। दूसरी तोप १९ फीट १० इंच लम्बी है। उसके मुखके पासका व्यास १ फुट और पीछेका व्यास १३ फीट है। इनके सिवाय कई एक दूसरी बड़ी तोपें बीजापुरके आस पास पडी हैं।

ताजबावली—बीजापुरमें कई तालाब है, जिनमें नगरके पश्चिमके मक्का फाटकसे १०० गज पूर्वकी ताजबावली प्रधान है। उसके अगवासके पूर्वकी बाजू कुछ तबाह है और कुछ कनडी भाषाके स्कूलके काममे आता है और पश्चिमकी बाजू म्युनिस्पल आफिस बना है। ताज बावली पानीके किनारेके पास २३० फीट लम्बी और इतनीही चौड़ी है। उसमे कुछ झरनेसे और कुछ नालेसे पानी आता है। सूखे मौसिममे उसमें करीब ३० फीट गहरा पानी रहता है। बावलीमें बहुतसी मछलियाँ है।

इनके अलावे बीजापुरमे सिकन्दर आदिलशाहका मकबरा, औरङ्गजेबकी एक बेगमका मकबरा, मोतीगुंबज, बारह पाबेकी गुंबज, मेहतर महल इत्यादि बहुतसी पुरानी इमारतें हैं।

बीजापुर जिला—बम्बई हातेके दक्षिणी विभागमें बीजापुर जिला है। इसके उत्तर भीमानदी बाद शोलापुर जिला और अक्कलकोटका राज्य, पूर्व और पूर्व-दक्षिण हैदराबादका राज्य, दक्षिण मलपर्बा नदी बाद धारवाड़ जिला और रामदुर्ग देशीराज्य और पश्चिम मधोल जमखण्डी और जाठ राज्य है। जिलेमे भीमा, कृष्णा, घटपर्बा, मलपर्बा आदि नदियाँ बहती हैं। खेतोको पटानेके लिये ४५० से अधिक बाँध और ६००० से अधिक कूप है। पहाडियोसे लोहा, स्लेट, तेलिया पत्थर और अन्य पत्थर निकाले जाते हैं जंगल नहीं है।

ऐसा प्रसिद्ध है कि यह जिला दण्डकारण्यके अन्तर्गत है। इसमें दण्डकारण्यके ७ ऋषियोके ७ आश्रमके स्थान हैं—(१) बादामीमें एवल्ली, (२) इण्डीमें धुलखेड, (३) बादामी, (४) बगल कोट, (५) कालाडगीमें गलगली, (६) सीदगीमें हिपर्गी और (७) बादामीमें महाकूता।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय बीजापुर जिलेका क्षेत्रफल ५७५७ वर्गमील और इसकी मनुष्य-सख्या ६३८४९३ थी, अर्थात् ५६८०९६ हिन्दू, ६७०६६ मुसलमान, २६७९ जैन, ६२५ क्रस्तान, २६ पारसी और १ बौद्ध। हिन्दुओमे ९४७८६ धॉगड,

५६८६५ पंचमशाली, ४४४३३ मॉग और धेद, ३६९५२ तेली, २९०५५ रेडी, २६६३१ जंगम, २१२६२ विराध, २०३७४ ब्राह्मण, १६९९२ कुन्बी, १०१८७ कोली, ८०१०कोस्ती और शेषमें भण्डारी, राजपूत, लिङ्गायत इत्यादि जातियोंके लोग थे।

सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय बीजापुर जिलेके कसबे बगल कोटमें १८०३४ बीजापुरमें १६७५९, कलाडगीमें १५४८१ और इलकालमें ११२१६ मनुष्य थे।

इतिहास—सन् ईस्वीकी दूसरी सदीमे बीजापुर जिलेके अन्तरगत बादामी, इण्डी और कलकेरी ये ३ प्रसिद्ध स्थान थे, जिनमें सबसे पुराना स्थान बादामी पल्लव वंशके राजाओंकी राजधानी थी, जिनका बनवाया किला वहाँ अबतक देखनेमे आता है। छठी सदीके मध्य भागमें चालुक्य वंशके राजा पुलिकेसीने पल्लव वंशके राजासे बादामीको लेलिया। लगभग सन् ७६०में पाश्रकूता वंशके राजाने चालुक्योंसे जिला लेलिया, जिसके वंशधरोंसे सन् ९७३ ई० में पश्चिमके चालुक्योंने उसको छीन लिया। उसके पश्चात् यह जिला क्रमसे कलचुरी और हैसलाबल्लालके अधिकारमें गया। सन् ११९० में देवगिरिके यादव वंशके राजाने इसपर अपना अधिकार जमाया। सन् १२९४ में, जब यादव वंशके राजाओंने बीजापुरको छोड़कर अपना सदर स्थान देवगिरिको बनाया था, दिल्लीके अलाउद्दीनने यादव वंशके नवें राजा रामचन्द्रको परास्त करके देवगिरिको लूटा, रामचन्द्रका सब धन लेलिया और उसको अपने अधीन बनाया।

बीजापुरके आदिलशाही खानदानको कायम करनेवाला युसफ आदिल शाह एक तुर्क था। उसकी माताने उसके बचपनमें उसके जानकी रक्षा की। बीदरके बादशाहने बडा होनेपर उसको खरीदकर अपना अङ्गरक्षक बनाया। उसकी शीघ्रही तरक्की हुई। १५ वीं सदीके अन्तसे पहिले बीदर और गुलबर्गाकी बाहमनी खानदान निर्बल होगई। उस समय युसफ आदिलशाह नही होता तो हिन्दूलोग दक्षिणी हिन्दुस्तानमें अपने प्रथमका अधिकार मुसलमानोंसे छीन लेते। सन् १४८९ में युसफ आदिलशाह स्वाधीन बन गया। उसने बीजापुरको अपनी राजधानी बनाया, बीजापुरके बड़े गढ़को बनवाया, अपने राज्यको समुद्रके किनारे तक फैलाया और पोर्चुगीजोसे गोआ छीन लिया। वह बीजापुरके किलेका काम अधूरा छोड़कर मरगया; किन्तु इब्राहिम आदिल शाहने उसको तैयार किया। सन् १५१० में उसके मरनेपर उसका पुत्र इस्माइल आदिलशाह राजगद्दीपर बैठा, जिसने कामयाबीके साथ राज्य किया। सन् १५३४ में इस्माइलकी मृत्यु होनेपर मवल्लू आदिल शाहको राजगद्दी मिली, किन्तु केवल ६ मास राज्य करनेके पश्चात् वह गद्दीसे उतार दिया गया और अन्धा बनाया गया। तब उसका छोटा भाई इब्राहिम आदिलशाह राज्याधिकारी हुआ। सन् १५५७ में इब्राहिमके मरनेपर उसका पुत्र अली आदिलशाह उसका उत्तराधिकारी हुआ, जिसने बीजापुरकी दीवार, जामा मसजिद, अनेक जलाशय और कई एक अन्य कामोंको बनवाया और अहमदनगर तथा गोलकुण्डाके बादशाहोके साथ मिलकर सन १५६४ में तालीकोटके बड़े संग्राममें विजयानगरके हिन्दू राजा रामराजको परास्त किया। राजा मारागया। उसकी राजधानी मुसलमानोने लेली। सन् १५८० में अली आदिलशाहका देहान्त होने पर उसका भतीजा, जो निरा बचा था, इब्राहिम आदिलशाह तख्तपर बैठा। मृत बादशाहकी विधवा चाँदबीबी, जो राज्य कार्यमें चतुर थी; राज्यका काम करने लगी।

सयाना होने पर इब्राहिमने होशियारीसे राज्य किया। सन् १६२६ में दूसरा इब्राहिमकी मृत्यु होने पर महम्मद आदिलशाह बीजापुरका बादशाह बना। उसके राज्यके समय महाराष्ट्र प्रधान शिवाजीके पिता शाहजी बीजापुर राज्यके एक अफसर हुए थे और शिवाजीने सन् १६४६ और १६४८ के बीचमे बीजापुर राज्यके कई एक किलेको छीन लिया। थोडेही दिन बाद शिवाजीने कोकनके बडे भागपर अपना अधिकार करलिया। सन् १६५९ में महम्मद आदिलशाहके मरनेपर उसका पुत्र अली आदिलशाह उत्तराधिकारी बना। उसके राज्यके समय बीजापुर राज्य हीन दशामे था। सन् १६७२ म उसकी मृत्यु होने पर उसका बच्चा पुत्र शिकन्दर आदिलशाह, बीजापुरका ९ वॉ बादशाह बना।

सन् १६८६ में मुगल बादशाह औरंगजेबने बीजापुरको लेलिया। बीजापुरका अंतिम बादशाह शिकन्दर आदिलशाह चॉदीकी जंजीरमे बॉधकर उनके पास लाया गया। मुगलोंके राज्यकी घटतीके समय बीजापुर और उसके आस पासके देश महाराष्ट्रोंके अधीन हुए। सन् १८१८ में अङ्गरेजी सरकारने बीजापुरको पेशवासे लेकर सितारांके राजाको दिया, किन्तु सन् १८४८ में सितारांके राजाके नि:सन्तान मरनेपर उसका राज्य बम्बई हातेके अङ्गरेजी राज्यमें मिला लिया गया। अङ्गरेजी गवर्नमेन्ट बीजापुरकी प्रधान इमारतों और स्मारक वस्तुओंकी यथा साध्य मरम्मत करती है। बीजापुर कलाडगी जिलेमें था, किन्तु सन् १८८५ में जिलेका सदर स्थान बनाया गया और जिलेका नाम बीजापुर जिला पडा। बादामीसे पश्चिमोत्तरकी ओर घटपर्वा नदीके दहिने किनारेपर कलाडगी कसबा है।

नवाँ अध्याय।

(हैदराबादके राज्यमें) रायचुर, (मदरास हातेमें) अदोनी, गूटी, ताडपत्री, कडपा, रेणुगुंटा जंक्शन, कालहस्ती, वेंकटगिरि और नेल्लूर।

रायचुर।

बीजापुरके रेलवे स्टेशनसे ५८ मील उत्तर सदर्न मरहठा और ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवेका जंक्शन होतगीमें है। होतगीसे ८४ मील दक्षिण-पूर्व वाडी जंक्शन तकका वृत्तांत भारत-भ्रमणके इसी खण्डके ४ थे अध्यायमें लिखा है। मै वाडी जंक्शनसे हैदराबाद; बेजवाडा, गुन्टकल जंक्शन, बल्लारी, होसपेट, गदग जंक्शन, बीजापुर, होतगी जंक्शन इत्यादि स्थानोमें चक्कर देकर फिर वाडी जंक्शन पर पहुँचा और वाडीसे दक्षिण-पूर्वकी लाइनसे आगे चला।

वाडी जंक्शनसे ५१ मील (होतगी जंक्शनसे १३५ मील) दक्षिण-पूर्व हैदराबादके राज्यमें कृष्णानदीके बायें अर्थात् उत्तर किनारेके पास कृष्णा नामक रेलवे स्टेशन है। स्टेशनके निकट मारवाडी धर्मशाला और स्टेशनसे ½ मील दूर कृष्णाके समीप एक दूसरी धर्मशाला है। दोनोंमे सदावर्त जारी है। बहुतेरे यात्री उस स्टेशनपर उतरकर कृष्णामे स्नान करते हैं।

कृष्णा नदीपर ३८५४ फीट लम्बा रेलका पुल बना हुआ है। उस स्थानपर सूखी ऋतुओंमें कृष्णा नदी बहुत चौड़ी नहीं रहती है।

कृष्णाके स्टेशनसे १० मील और वाडी जंक्शनसे ६१ मील (होतगी जंक्शनसे १३५ मील) दक्षिण-पूर्व रायचुरकी छावनीका रेलवे स्टेशन और उससे ६ मील दक्षिण-पश्चिम रायचुर कसबेका रेलवे स्टेशन है। उस जगह ग्रेटइन्डियन पेनिनसुला रेलवे मदरास रेलवेसे मिल गई है। हैदराबादके राज्यके (१६ अंश, १२ कला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, ३४ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमे) जिलेका सदर स्थान रायचुर एक पुराना कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय रायचुर कसबे और उसकी छावनीमे २३१७४ मनुष्य थे, अर्थात् १६८९२ हिन्दू, ५८२१ मुसलमान, ३०४ क्रस्तान, १२० जैन, ३३ पारसी और ४ सिक्ख। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह हैदराबादके राज्यमें ५ वॉ शहर है।

रेलवे स्टेशनसे १ मीलसे अधिक दूर रायचुर एक सुन्दर कसबा है। इसमें अच्छी सड़के बनी है। यह मिट्टीके बर्तन और स्लिपर (जूता) के लिये प्रसिद्ध है। रायचुर जिलेमें गाड़वाल छावनी बड़ा कसबा है। सन १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय उसमें १६६७२ मनुष्य थे।

किला—रायचुर कसबेसे पश्चिम रेलवे स्टेशनसे १½ मील दूर रायचुरका सुन्दर किला है। उत्तरके फाटकके बगलोंमें कई एक टावर और फाटकसे करीब ५० गज बाहर पत्थरका एक हाथी है। दूसरे फाटकका नाम कसबा दरवाजा है, जिसके बाहर एक टिउनलका दरवाजा है, जिससे होकर किलेकी फौज फाटकके पास आई और पीछे जमीनके भीतरके रास्तेसे किलेमें चली गई। किलेके पश्चिम सिकन्दरिया फाटकके पास पुराना महल है, जो अब जेलखाना बनाया गया है। मैदानसे २९० फीट ऊपर गढ़ है। बायें दरगाहको छोटी कोठरियोंका एक कत्तार और पूर्व अखीरमें पत्थरका एक सायवान है, जिसके पूर्व एक मसजिद है।

इतिहास—रायचुर सन् १३५७ में बहमनी राजाओंके राज्यका एक हिस्सा बना। पीछे यह बीजापुरके राज्यमें शामिल हुआ। सन् १४७८ में ख्वाजा जेहन गवनने इसपर हुकूमत किया। जब बीजापुर स्वाधीन बादशाहत हुआ था, तब रायचुर इसकी दक्षिणी राजधानी था।

अदोनी।

रायचुरसे १७ मील दक्षिण निजामके राज्य और मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यकी सीमापर तुङ्गभद्रा नदी है। नदीपर रेलवे पुल बना है नदीके पास तुङ्गभद्रा नामक स्टेशन है।

तुङ्गभद्रा स्टेशनसे २६ मील (रायचुरसे ४३ मील) दक्षिण अदोनीका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके बल्लारी जिलेमें तालुकका सदर स्थान अदोनी एक कसबा है।

कसबेमें तहसीलदार और डिपुटीकलक्टरकी कचहरीका मकान और एक अस्पताल है, कपड़े कालीन और रेशमी वस्त्र इत्यादि चीजें बनती है और रुईकी बड़ी तिजारत होती है। अदोनीसे-अच्छी सड़कें गूटी, बल्लारी, करनूल आदि कसबोंको गई हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय अदोनीमें २६२४३ मनुष्य थे अर्थात् १६३६९ हिन्दू, ९७५४ मुसलमान, ७० क्रस्तान, और ५० जैन।

कसबेके उत्तर ५ पहाडियोंपर अर्दोनीके किले हीन दशामे विद्यमान हैं, जिनमेसे सबसे प्रसिद्ध बारा किला और तालीबन्दा है। दोनों मैदानसे ८०० फीट ऊपर है। आधे रास्तेमें चट्टानपर स्वच्छ पानीका एक उत्तम तालाब है। तालीबन्दाके शिरपर एक वटका पेड़ अकेले खडा है, जो चारोंओर बहुत दूरसे देख पडता है।

इतिहास—लोग कहते है कि लगभग ३००० वर्ष हुए कि बीदरके राजा भीमसिंहके राज्यके समय चन्द्रसेनने अर्दोनीको कायम किया। पीछे यह विजयानगरके अधिकारमे हुई। सन् १५६४ में तालीकोटके संग्राममे विजयानगरके राजाके परास्त होनेपर बीजापुरके सुलताननें एक ऐबिसिनियन मलिक रहमान खाँको यहाँका गवर्नर बनाया। ३९ वर्ष रहनेके पीछे वह यहाँही मर गया। तालीबन्दा पहाडीपर अवतक उसकी कबर है। उसका गोद लिया हुआ लड़का सीदी मसाउद खाँ उसकी जगहपर कायम हुआ, जिसने निचले किले और जुमामसजिदको बनवाया। सन् १६९० मे औरङ्गजेबके जनरलने सख्त रोकावटके पीछे अर्दोनीको ले लिया। बाद यह निजामके हाथमें आई। सलावतजङ्गने इसको जागीरमे अपने छोटे भाई बसालतजङ्गको दे दिया, जिसने इसको अपनी राजधानी बनाई। वह सन् १७८२ में मरा और अर्दोनीमे दफन किया गया। उमदे मसजिद और मकबरा उसकी और उसकी माताके कबरस्तानपर बनाये गये। सन् १७८६ में एक महीनेके महासरेके पीछे टीपू सुलतानने अर्दोनीके किलेको ले लिया। उसने किला बन्दियोंको ढाह दिया और तोप आदि युद्धकी वस्तुओंको यहाँसे गूटीमें ले गया। सन् १७९२ में अर्दोनी निजामको मिली। सन् १७९९ में निजामने इसके बदलेमें दूसरी जगहोंको लेकर इसको अङ्गरेजोंको दे दिया।

गूटी।

अर्दोनीसे ३२ मील दक्षिण-पूर्व मद्रास हातेमें रेलवेका बड़ा केंद्र गुंटकल है, जिसका वृत्तान्त भारत-भ्रमणके इसी खण्डके ७ वें अध्यायमें लिखा है। गुंटकल जंक्शनसे १८ मील दक्षिण पूर्व गूटीका रेलवे स्टेशन है। मद्रास हातेके बल्लारी जिलेमें डिवीजनका सदर स्थान गूटी एक छोटा कसबा है। रेलवे स्टेशनके निकट बाजार, एक धर्मशाला और एक छोटी नदी है। सूखे मौसिमोंमे नदीमें बहुत छोटी धारा रह जाती है। गूटीमें मजीस्टर डिपुटी कलक्टर और मुनसफकी कचहरियाँ, एक छोटा जेलखाना, मकबरा और सर थामस मन्दरोके यादगारका कूप है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय गूटीमें ५२७३ मनुष्य थे, अर्थात् ३७४९ हिन्दू, १५८७ मुसलमान और ३७ कृस्तान।

स्टेशनसे २ मील दक्षिण समुद्रके सतहसे २१०० फीट और मैदानसे ५९० फीट ऊपर पहाडीके शिरोभाग पर गूटीका अभेद्य पुराना किला है। पहाडीके ऊपर कई एक कूप और जलाशय तथा इमारतें विद्यमान हैं। किलेके एक पाये पर एक छोटी इमारत है, जिसको मुरारीरावका बैठक लोग कहते है।

गूटीसे ३२ मील दक्षिण अनन्तपुर एक कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ४९०७ मनुष्य थे। कसबेके पडोसमें एक बड़ा तालाब है, जो सन् १३६४ में एक नदीपर बाँध बना कर बनाया गया।

इतिहास—गूटीका किला सोलहवीं सदीमें वना। प्रथम इस पर विजयानगरके राजवंशके अधीन एक मनुष्यका अधिकार था। पीछे मुगल राज्यका प्रसिद्ध जनरल मीर जुमलाने इसको जीता। उसके पश्चात् कडपा और सवनूरके पठानोंने गूटीपर अपना अधिकार जमाया, जिनसे सन् १७१४ में गौरीपुरके खानदानके महाराष्ट्रोंने गूटीको छीन लिया। किला मुरारीरावका गढ़ वना। सन् १७७६ में ९ महीनेके घेरा देनेके वाद जव किलेका पानी चुक गया तव हैदरअलीने इसको जीता। सन् १७९९ में अङ्गरेजी सरकारने हैदरअलीके पुत्र टीपूको परास्त करके किला लेलिया।

ताड़पत्री।

गूटीसे ३० मील (गुंटकलसे ४८ मील) दक्षिण-पूर्व गूटीका रेलवे स्टेशन है। मद्रास हातेके अनन्तपुर जिलेमें प्रधान कसवा ताडपत्री है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ताडपत्रीमें १०२८३ मनुष्य थे, अर्थात् ६७७२ हिन्दू, ३४८३ मुसलमान, २१ कृस्तान, ५ जैन और २ दूसरे।

करीव सन १४८५ में विजयानगरके राजाओंके राज्यके समय ताड़पत्री कसवा वसाया गया। उसमें अच्छे अच्छे मन्दिर वनाये गये। नदीके किनारेपर एक सुन्दर मन्दिर है, जिसका काम पूरा नहीं हुआ था।

कड़पा।

ताड़पत्रीसे ६६ मील (गुण्टकल जंक्शनसे ११४ मील) दक्षिण-पूर्व कड़पाका रेलवे स्टेशन है। मद्रास हातेके (१४ अंश, २८ कला, ४९ विकला उत्तर अक्षांश, और ७८ अंश, ५१ कला, ४७ विकला पूर्व देशान्तरमें) पनार नदीसे ६ मील दक्षिण पश्चिम जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसवा कड़पा है, जिसको अनेक लोग कड़ापा और द्राविड़ी लोग कड़प्पै कहते है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कड़पा कसवेमें १७३७९ मनुष्य थे, अर्थात ९४३२ हिन्दू, ७५७४ मुसलमान, ३६२ कृस्तान और २१ सिक्ख।

देशी कसवा मैला है। कसवेके मकान ऊंचे नही है। कसवेसे पूर्व श्रृंगवेलकुण्ड एक पवित्र वस्तु है। कड़पामें जिला जज, कलक्टर इत्यादि हाकिमोंकी कचहरियाँ, जेलखाना, अस्पताल और स्कूल है। नील और रुई कड़पा कसवेसे दूसरे स्थानोमें भेजी जाती है। कसवेके तीन ओर विना पौधेकी पहाड़ियाँ है; इस कारणसे वहाँ गरमी अधिक पडती है। वहाँ औसत वार्षिक वर्षा २७ इंच होती है। कसवेके पासके एक गाँवको लोग पुराना कड़पा कहते हैं।

सन १८९१ ई० के निवर्पणके समय कड़पाके कलक्टरने एक कल द्वारा वहाँ वर्षा वरसाई थी। पहाड़ीके ऊपरसे तोप द्वारा डिनामाइट वारूदका धुआँ आकाशमें भरा गया; जिससे वर्षा हुई। इसी भाँतिकी परीक्षा अजमेरमें पहाड़ीके ऊपरसे और मुजफ्फरपुरमें मचान वांधकर की गई। पीछे यह निश्चय किया गया कि जहाँ पहाड़ी नही है; वहां इस यत्नसे वर्षा नहीं होगी तथा वर्षा वरसानेमें लाभसे अधिक खर्च पड जायगा और जहाँ वर्षा वरसनेके तत्त्व एकत्र न होंगे वहाँ वृष्टि नहीं हो सकेगी।

कड़पा जिला—इसके उत्तर करनूल जिला, पूर्व नेल्लूर जिला, दक्षिण उत्तरी आरकाट जिला और पश्चिम बल्लारी जिला है। पालकुण्डा और शेषाचलम् पहाड़ियोका सिलसिला, जिसकी औसत ऊँचाई लगभग १५०० फीट है, कड़पा जिलेको दो भागोंमें बांटता है। जिलेमें पनार, पापाग्नि, चित्रवती इत्यादि नदियाँ बहती हैं और जङ्गल बहुत है। खानोंसे सीसा, तांबा, लोहाका और, स्लेट और पत्थर निकलते है। कड़पा कसबेसे लगभग ७ मील दूर पनार नदीके दहिने किनारे चिनूरके आस पास कुछ सोना मिलता है। कड़पा घाटीकी भूमि उपज़ाऊ है। ऊख बहुत अच्छी होती है। जिलेमे करीब ७५ मील नहर है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कड़पा जिलेके ८७४५ वर्गमील क्षेत्रफलमें ११२१०३८ मनुष्य थे, अर्थात् १०१७२११ हिन्दू, ९७७४९ मुसलमान, ६०६७ कृस्तान और ११ अन्य। हिन्दुओमे ४४२५२० वेल्लाल (जो खेती करते है, इनको उत्तरी भारतके लोग वलालाभी कहते हैं,) १४७७३३ परिया, जिनको दक्षिणके लोग परयन कहते हैं; ८६०९३ इडैगा, जिसका शुद्ध नाम इडैयन है (भेड चराने वाले), ५२१६८ कैकोला, जिसका शुद्ध नाम कैक्कलर है (बिनाईके काम करनेवाले), ३५२५६ सेंवडवन् (मछुहा), ३४२६१ चेटी (व्यापार करने वाले), २८०४७ वनान (कपडा धोने वाले), २४२३६ ब्राह्मण, १६६५० क्षत्रिय, १४७०५ अम्बटन (नाई), १३६३८ कंमाड्न (कारीगर), १३५१७ सतानी (दोगला), १०१३९ कुशवन (कुभार), ७४३५ सानान (ताडीके काम करने वाले) और बांकीमें दूसरी जातियोंके लोग थे। ब्राह्मणोंमें अधिक लोग शैव और क्षत्रियोमें अधिक लोग वैष्णव हैं। कई एक जातिके लोग, जिनकी संख्या जिलेमें कम है, एक स्थानपर सदा नहीं बसते है। वे लोग जङ्गली पैदावारसे अपना निर्वाह करते हैं। कड़पा जिलेमें कडपा सबसे बड़ा कसबा और बडवेल, मदनापल्ली इत्यादि कई छोटे कसबे है। उस जिलेमें कनडी और तैलङ्गी भाषा प्रचलित है।

कडपा जिलेके अथिरला स्थानमें एक नदीके किनारे पर एक पवित्र तालाब और मन्दिर है। उस देशके लोग कहते हैं कि परशुरामजी इसी पवित्र तालाबमें स्नान करके मातृहत्याके दोषसे विमुक्त हुए थे। फाल्गुनकी शिवरात्रिके समय ३ दिनों तक वहाँका तेहवार होता है। हजारो यात्री आकर उस तालाबमें स्नान करते है।

इतिहास—पहिले कडपा जिला विजयानगरके हिन्दू राजाओके अधिकारमें था। सन् १५६४ मे कई मुसलमान बादशाहोंने मिलकर विजयानगरके राजाको तालीकोटमें परास्त किया। उसके पीछे गोलगुंडाके अधीनके कई मुसलमानोने कड़पा जिलेको बाँट-लिया। लगभग सन १५७० में कडपाके फौजी लेफ्टिनेण्ट एक पठानने किलेको बनवाया। सत्रहवीं सदीके मध्य भागमें शिवाजीने कड़पाको लूटा। अठारहवीं सदीके आरम्भमें अबदुलनबीखाँ नामक पठानने निजामकी अधीनताको छोडकर कडपाका स्वाधीन नवाब बनकर उसको अपनी राजधानी बनाया। लगभग सन् १७३२ में तीसरे नवाबके समय महाराष्ट्रोंके बलकी बढ़ती और उस खानदानकी घटती हुई। सन् १७६९ में कडपाके नवाबने मैसूरके हैदरअलीको "राज्य कर" आदाय किया। जब नवाबने निजामके साथ मेल किया तब हैदरअलीने आक्रमण करके नवाबसे किलेको लेलिया। सन् १७९२ की सन्धिमें टीपू सुलतानने कडपा जिला निजामको दे दिया। सन् १८०० मे निजामने कडपा जिला

अङ्गरेजोंको दिया सन् १८१७ में कड़पा कलश जिलेका सदर स्थान बनाया गया। सन् १८६८ तक कड़पा कसबेमें फौज रहती थी।

रेणुगुंटा जंक्शन।

कड़पासे २५ मील दक्षिण-पूर्व वाहूदा नदीपर रेलवेका पुल है। सूखे दिनोंमें नदीमें पानी नहीं रहता, लेकिन थोडेही बालू हटा देनेसे सूमिमें पानी मिल जाता है। महाभारत शान्ति पर्वके २३ में अध्यायमें लिखा है कि लिखित ऋषिने अपने बडे भ्राताके उपदेशसे वाहूदा नदीमें स्नान करके ज्योंही तर्पण करनेकी इच्छा की त्योंही अंगुलियोंसे युक्त उनके दोनों हाथ (जो गिर गये थे) प्रकट होगये।

कड़पासे ७८ मील (गुंटकलसे १९२ मील) दक्षिण-पूर्व मदरास हातेमें रेणुगुंटाका रेलवे जंक्शन है। रेलवे स्टेशनके पास एक धर्मशाला बनी हुई है। रेणुगुंटासे रेलवे लाइन चार तरफ गई है। मदरास और कांची इत्यादिके जानेवाले लोग दक्षिण पूर्वके रेलवेसे जाते हैं। मैं पूर्वोत्तरकी लाइनसे पहिले कालहस्ती, वेंकटगिरि इत्यादि स्थानोंमें गया।

रेणुगुंटा जंक्शनसे रेलवे लाइन ४ तरफ गई है।

(१) रेणुगुंटासे पूर्वोत्तर साउथ इण्डियन रेलवे, जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई है।

मील	प्रसिद्ध स्टेशन।
१४	कालहस्ती।
३०	वेंकटगिरि।
६२	नेल्लूर (मदरास रेलवे पर)।

(२) रेणुगुंटासे दक्षिणकी ओर "साउथ इण्डियन रेलवे"

मील	प्रसिद्ध स्टेशन।
६	तिरुपदी (पूर्व)।
७	तिरुपदी (पश्चिम)।
१३	चन्द्रगिरि।
३२	पकाला जंक्शन।
५०	चित्तौर।
७१	कटपदी जंक्शन।
९७	वेल्लूर।
१३८	तिरुवन्नामलई।
१७०	बिलीपुरम् जंक्शन।

पकाला जंक्शनसे पश्चिमोत्तर १४२ मील धरमवरम् और २०१ मील गुंटकल जंक्शन।

कटपदी जंक्शनसे पूर्व कुछ उत्तर मदरास रेलवे पर १५ मील आरकाट ३८ मील आरकोनम् जंक्शन ५५ मील तिरुवल्लूर और ८१ मील मदरास और दक्षिण-पश्चिम १५ मील कुडिआतम, ३२ मील अम्बूर, ५१ मील जालारपेट जंक्शन, १३६ मील सेलम, १६३ मील ईरोड जंक्शन, २२१ मील पोडैयनूर जंक्शन, २५५ मील पालघाट और ३३३ मील कलीकोट। जालार पेट जंक्शनसे पश्चिमोत्तर ८७ मील बङ्गलोर। ईरोड जंक्शनसे पूर्व दक्षिण सौथ इण्डियन रेलवेपर ८५ मील त्रिचनापल्ली फोर्ट और ८८ मील त्रिचनापल्ली जंक्शन। पोडैयनूर जंक्शनसे उत्तर मद-

रास रेलवेपर ४ मील कोयम्-बुत्तूर. और २६ मील मैडुपा-लयम् (उत्तक मण्डके पास)।

विलीपुरम् जंक्शनसे पूर्व साउथ इण्डियन रेलवेपर २४ मील पाण्डीचरी, उत्तर चिङ्गलपट होकर ९८ मील मद्रास और दक्षिण थोडा पश्चिम कुम्भकोनम् और तञ्जोर होकर १५१मील त्रिचनापल्ली जक्शन है।

(३) रेणुगुटासे दक्षिण-पूर्व मद्रास रेलवे, जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील १½ पाई है,—

मील प्रसिद्ध–स्टेशन।
३३ तिरुतानी।
४१ आरकोनम् जंक्शन।
५८ तिरुवल्लूर।
८४ मद्रास।

आरकोनम् जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व १८ मील कॉची-पुरी और ४० मील चेंगलपट्ट जक्शन और चेङ्गलपट्टसे ६४ मील दक्षिण कुछ पश्चिम विली-पुरम् जक्शन।

(४) रेणुगुटासे पश्चिमोत्तर मद्रास रेलवे,—

मील प्रसिद्ध–स्टेशन।
७८ कडपा।
१४४ ताडपत्री।
१७४ गूटी।
१९२ गुटकल जक्शन। (आगे गुटकलमे देखो)

कालहस्ती।

रेणुगुंटा जक्शनसे १४ मील पूर्वोत्तर कालहस्तीका रेलवे स्टेशन है मद्रास हातेके (१३ अंश, ४५ कला, २ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, ४४ कला, २९ विकला पूर्व देशान्तरसे) उत्तरी अर्काट जिलेमें सुवर्णमुखी नदीके दहिने किनारेपर (सडक द्वारा त्रिपतीसे १६ मील पूर्वोत्तर) कालहस्ती एक कसबा और तीर्थ स्थान है, जिसको द्राविडके बहुत लोग कालाश्री कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कालहस्तीमें ११७५४ मनुष्य थे, अर्थात् १०१५९ हिन्दू, १५०४ मुसलमान, और ९१ कृस्तान।

कालहस्तीमें सब मजीष्टर और एक जमीदार राजा रहते हैं, बडा बाजार है। तीर्थ स्थान होनेसे वहाँ बहुत यात्री जाते है। वहाँ गल्लेकी सौदागरी होती है। फाल्गुनकी शिवरात्रिके समय वहाँ मेला होता है, जो लगभग १० दिनो तक रहता है।

राजा—कालहस्तीके राजा वेलमा जातिके हैं। इनकी जमीन्दारी उत्तरी अर्काट और नेल्लूर जिलेमें है। कहाजाता है, कि विजयानगरके राजाने १५ वीं सदीमें इनके पुरुषेको यह मिलकियत दी। वह लडाईके मैदानमें ५००० सिपाही लासकते थे। सन् १७९२ में यह जमीदारी अङ्गरेजी सरकारके अधिकारमे हुई। राजा १९०००० रुपया पेसकस अर्थात् 'राजकर' अङ्गरेजी गवर्नमेंटको देते हैं। उनको राज्यसे वार्षिक चार पाँच लाख रुपये माल-गुजारी आती है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय राज्यका क्षेत्रफल १०२७ वर्गमील और उसकी मनुष्य-सख्या ११८०२२ थी। राज्यकी लगभग आधी भूमि जोती जाती है और उजाड जंगलोंसे जलावनकी लकडी मद्रास शहरमें भेजी जाती हैं।

कालहस्तीश्वर—द्रविड़ देशमें ५ तत्त्वोसे ५ लिङ्ग प्रख्यात है;–(१) शिवकांचीमे एकाम्रेश्वर पृथ्वी लिङ्ग, (२) त्रिचनापल्ली जिलेके श्रीरङ्गम्के निकटका जम्बुकेश्वर जल लिङ्ग, दक्षिणी अर्काट जिलेके तिरुवन्नामलई कसबेके पासके अरुणाचलपर अग्निलिङ्ग, कालहस्तीमें कालहस्तीश्वर वायुलिङ्ग और चिदम्बरमे नटेश आकाश लिङ्ग ऐसा प्रसिद्ध है कि काल अर्थात् सर्प और हस्तीने वहाँ तप करके महादेवजीसे वर माँगा था कि तुम हम लोगोंके नामसे प्रसिद्ध होओ। उन्ही दोनोंके नामसे शिवजीका नाम कालहस्तीश्वर हुआ। बड़े शिवलिङ्गपर सर्पके फण और हस्तीके दो दांतके चिह्न है। लिङ्गके नीचे भूमिपर लिङ्गकी पूजा होती है।

दक्षिणकी पहाड़ीके पादमूलके निकट कालहस्तीश्वरका विशाल मन्दिर पत्थरसे बना हुआहै। बड़े आंगनमें उसके पूर्वोत्तर पार्वतीजीका मन्दिर है। मन्दिरके चारो द्वारोंपर चित्रोंसे भूषित ४ विशाल गोपुर बने हुए है। मन्दिरकी दीवारोंमें तैलङ्गी आदि अक्षरोमे बहुतसे शिलालेख हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदोपपुराणीय शिवभक्त विलास—(२४ वाँ अध्याय) एक समय नील और कणिश दो व्याध धनुष बाण लिये हुए सुवर्णमुखरी नदीके तटपर घूमते थे। नीलने कणिशसे पूछा कि इस पर्वतपर कैसा शब्द सुन पड़ता है। तब कणिशने कहा कि इस पर्वतके ऊपर कोई दिव्य देवता है, जिसके पूजनेके लिये देवता लोग आते है, उसी स्थानके गानका शब्द सुन पड़ता है। उसके उपरान्त दोनो व्याधोने पर्वतके ऊपर जाकर एक बिल्वके वृक्षके नीचे शान्तवैर वाले हजारों सर्पोंको और उसके पश्चात् अपने पीछे फूत्कार करता हुआ सर्पसे भूषित शिवलिङ्गको देखा, जिसके एक बार दर्शन करनेसे सम्पूर्ण पाप छूट जाते है। वहाँ बिलका रहने वाला सर्प अपने मणिके तेजसे प्रकाश करता था और अपना केंचुल शिवको पहिनाता था। ऐसे अकाल मृत्युको हरने वाले कालहस्तीश्वरको देखकर वे प्रसन्न हुए नीलने कणिशसे कहा कि हमलोग वनवासियोके यह कुल देवता है हम कुछ दिनोंमें इनको अपना मित्र बनालेंगे। ऐसा कह उसने बहुतसे मृगोंको मारकर अग्निमें पकाया और मांसकी परीक्षा करके अपने मुखमें जल; माथेपर फूल और हाथमें मांस लेकर वह शिवके पास पहुंचा। (२५ वाँ अध्याय) उसने महादेवके ऊपरका पुष्पादि उतारकर अपने मुखके जलकी धारासे शिवको स्नान कराया, फूल शिवपर चढ़ाया और मांसके दोनाओंको उनके आगे रक्खा। ऐसा कर उसने कहा कि हे महादेव! सुस्वादु मांसोको खाकर मेरे ऊपर कृपा करो, जबतक तुम नही भोजन करोगे तब तक मैं कुछ न खाऊंगा। शिवजीने उसका चढ़ाया हुआ मांस ग्रहण किया। रात्रि हो जानेपर नीलने सर्पके मुखका मणि लेकर शिवको दीप दिखाया। सवेरा होने पर वह शिकारके लिये वनमें चला गया। पुजारी ब्राह्मणने आकर जब शिवलिङ्गके ऊपर मांसको देखा, तब रोता हुआ भूमिपर गिरपड़ा और चिल्लाता हुआ व्याधोको गाली देने लगा। इसके उपरान्त वह शिवलिङ्गको पोंछकर नित्यके समान पूजा करके अपने घर चला गया। उसके पश्चात् व्याधने आकर पूर्ववत् शिवको मांस भोजन कराके बचा हुआ मांस आप भोजन किया। इसी भाँति पूजन करते हुए उसको एक मास बीतगया। ब्राह्मण पुजारी नित्य आकर शिवलिङ्गको धोता था और दुःखी हुआ करता था। नीलके पिता नागने अपने पुत्रको वनदेवतासे पकड़ा गया हुआ जानकर उसको घर लेजानेका अनेक

उद्योग किया, किन्तु जब वह नहीं गया तब निरास होकर अपने घर चला गया। महादेवको पूजन करने वाले लोग उस व्याधसे द्वेष करने लगे, तब महादेवने स्वप्नमें उस पुजारीसे कहा कि हे ब्राह्मण ! यह शवर हमारा परम भक्त है। जो उससे द्रोह करेगा वह हमरा द्वेषी होगा। यदि व्याधकी भक्ति देखना है तो तुम एक वार वहाँकी झाड़ीमे छिपकर देखो। दूसरे दिन पुजारी शिवलिङ्गके निकटके वट वृक्षकी शाखामें छिपकर बैठ रहा। दोपहरके समय व्याध वहुतसा मांस और अपने मुखमें सुवर्णमुखरी नदीका जल लेकर वहां आया। उसने अपने पैरके अग्रभागसे शिवके ऊपरका फूल टारकर अपने मुखके जलसे शिवको स्नान कराया, अपने मस्तकका फूल उनपर चढ़ाया और मांस उनको अर्पण किया। उसने जब देखा कि महादेव नित्यके समान भोजन नहीं करते हैं, किन्तु इनके बायें नेत्रसे रुधिर गिरता है, तब हाहाकार करके मूर्च्छाको प्राप्त हुआ। उसके पश्चात् उसने विसल्यकर्णीका रस लेकर शिवकी ऑखमें लगाया और अनेक औषधी की। जब रोग दूर न हुआ तब उसने अपने वाणसे अपनी आंखको निकालकर महादेवकी आंखमें लगा दिया। जब महादेवकी आंख बन गई तब वह प्रसन्न होकर फिर उनके खानेके लिये मांस लाया। उस समय उसने देखा कि शिवकी दहिनी आंखसे भी रुधिर गिर रहा है, तब वह कहने लगा कि हे महादेव ! तुम्हारी ऑखमे रोग नही है; तुम हमारी भक्तिकी परीक्षा करते हो, ऐसा कह वह अपनी दूसरी ऑख निकालने लगा, तब शीघ्र महादेवजी प्रगट होगये। उनकी कृपासे नील व्याध त्रिनेत्र (शिव) होगया। शिवजी कैलासमें चले गये।

शिवपुराण—(विद्येश्वर संहिता, १० वॉं अध्याय) प्राणीगण ब्रह्मलोकसे च्युत होने पर महा पवित्र सुवर्णमुखी नदीके समीप जन्म लेते हैं। धन राशिके वृहस्पति और सूर्य होनेपर सुवर्णमुखीमें स्नान करनेसे शिवलोक मिलता है।

वेंकटगिरि।

कालहस्तीसे १६ मील (रेणुगुंटा जंक्शनसे ३० मील) पूर्वोत्तर वेङ्कटगिरिका रेलवे स्टेशन है। नेल्लूर जिलेके दक्षिण भागमे तालुकेका सदर स्थान वेङ्कटगिरि नामक एक छोटा कसवा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय वेङ्कटगिरि कसवेमें ७९८९ मनुष्य थे, अर्थात ६६१६ हिन्दू, ११४९ मुसलमान और २४ क्रस्तान।

वेङ्कटगिरिमें एक जमीन्दार राजाका महल और डिपुटी तहसीलदारकी कचहरी है। कसबेसे लगभग ४ मील उत्तर वेङ्कटगिरि किलेमें महल आदि उत्तम इमारत वनी हुई हैं।

देवमन्दिर—यहॉ विशेष दर्शनीय स्थान काशी पेठमें काशीविश्वेश्वरका मन्दिर है। वहॉके राजाके पितामह काशीसे इस शिव लिङ्गको ले आये और काशी विशालाक्षी, अन्नपूर्णा, कालभैरव, सिद्धिविनायक, आदि देवताओं समेत काशीविश्वनाथकी स्थापना की। इसकी पूजा अर्चा बड़ी तय्यारीसे होती है। नित्य रुद्रगणिका वहॉ आरती लेकर नृत्य और गान करती हैं। विश्वनाथ लिङ्गके स्थापित होनेपर वहॉ काशी पेठ वसी। मन्दिरके पास कैवल्यनदी नामक नाला है। इनके अतिरिक्त यहाँ रामचन्द्र, हनूमान, चङ्गलराज स्वामी, वरदराज, आदिके मन्दिर हैं। राजाके महलके पासके वाजारमें ग्रामशक्ति, पोलेर अम्बा है, जिसको लोग वहुत वलिदान देते हैं।

राजा—वेङ्कटगिरिमें वेलमा जातिके एक जमीन्दार राजा हैं। वर्तमान राजा सर गोपाल कृष्ण बहादुर के०सी० आई, ई० की उमर ३४ वर्षकी है, जो इस राजवंशके कायम करने वालेके सत्ताइसवीं पुश्तमें अपनेको कहते हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय उस राजाकी जमीन्दारीका क्षेत्रफल २११७ वर्गमील और उसकी मनुष्य-संख्या ३००८६५ थी।

नेल्लूर।

वेङ्कटगिरिके रेलवे स्टेशनसे ३२ मील (रेणुगुंटा जंक्शनसे ६२ मील) पूर्वोत्तर नेल्लूरका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेमें (१४ अंश, २६ कला, ३८ विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश, १ कला, २७ विकला पूर्व देशान्तरमें) पनार नदीके दहिने किनारेपर उसके मुहानेसे ८ मील दूर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा नेल्लूर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नेल्लूर कसबेमें २९३३६ मनुष्य थे; अर्थात् १४३१० पुरुष और १५०२६ स्त्रियां। इनमें २२५५३ हिन्दू, ५६०८ मुसलमान, १००२ कृस्तान, ८ जैन और १६५ अन्य थे।

नेल्लूरकी चन्द सड़कें अच्छी हैं, जिनके बगलोंमें धनी निवासियोंके मकान बने हुए हैं। कसबेके दक्षिण एक बड़े तालावके निकट यूरोपियन लोगोंकी कोठियाँ बनी हैं। तालाबके दूसरे बगलपर एक पहाड़ी है, जिसके ऊपर नरसिंहजीका मन्दिर बना हुआ है। पुराने किलेमें कलक्टरका आफिस और उसके सामने प्रथमके बारक (अर्थात् सैनिकगृह) मे पुलिसका आफिस है। उनके अलावे वहाँ एक गरीबखाना; एक गिरजा, एक पुराना बड़ा कबरगाह, एक अस्पताल, एक लड़कियोंका स्कूल और बहुतसे लड़कोंके स्कूल हैं। एक नहर और बेजवाड़ा वाली बड़ी सड़क नेल्लूर कसबे होकर वहाँसे दक्षिण ओर मदरास शहरको गई है।

नेल्लूर कसबेसे १० मील पश्चिम बचीरेड्डीपालयम् लगभग ५००० आदमियोंकी बस्ती है, जहाँ मकान और मन्दिरोंके कामके लिये पत्थरके स्तम्भ आदि सरंजाम बनते हैं। वहाँ कोदंडराम स्वामी अर्थात् श्रीरामचन्द्रजीका मन्दिर है; जहाँ प्रतिवर्ष चैत्रमे मेला होता है। मेलेमें आठ दश हजार मनुष्य आते हैं। नेल्लूरके सौदागर आकर वहाँ बड़ी सौदागरी करते हैं। नेल्लूर जिलेमे दूसरा मेला कवाली तालुकके बित्रघण्टा गाँवमे प्रति वर्ष होता है। लगभग ४००० यात्री आकर वेंकटेश स्वामीका दर्शन करते हैं। नेल्लूर जिलेके भीमावरम् गाँवके पास एक पहाड़ी पर नृसिंहजीका पुराना मन्दिर है, जिसको अगस्त्य मलई मुनिका नियत किया लोग कहते है। पहाड़ी पर गुफामन्दिर है, जिसका दरवाजा पत्थरकी एक बड़ी प्रतिमासे बन्द है। वहाँ प्रति वर्ष चैत्रमें मेला होता है।

नेल्लूर जिला—सन् १८०१ मे यह जिला अङ्गरेजी गवर्नमेण्टके अधिकारमे होगया इसके पूर्व बंगालकी खाढ़ी; दक्षिण उत्तरी आर्काट और चेंगलपट्ट जिला; पश्चिम ओर पहाड़ियाँ, जो कर्नूल और कड़पा जिलेसे इसको अलग करती हैं और उत्तर कृष्णा जिला है। नेल्लूर जिलेकी भूमि बहुत उपजाऊ नहीं है। लगभग आधी भूमि जोती जाती है। जिलेके अधिक क्षेत्रफलमें पहाड़ी भूमि और घना जंगल है। पश्चिमकी सीमाके पास सूखी अर्थात् बीना जंगलकी पहाड़ियाँ है। कोई पहाड़ी ३१०० फीटसे अधिक ऊँची नहीं हैं। वनोंमें बनले जंतु कम हैं। पनार, सुवर्णमुखी आदि नदियाँ बहती है। नेल्लूर जिलेमें अच्छी मवेसियां होती है, उनके कारणसे वह जिला प्रसिद्ध है। आस पासके जिलोंके लोग उस जिलेसे

मवेसियोंको ले जाते हैं। वहांके उत्तम बैलका दाम ७० रुपयेसे २०० रुपये तक होता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय नेल्लूर जिलेका क्षेत्रफल ८७३९ वर्गमील और इसकी मनुष्य-सख्या १२२०२३६ थी, अर्थात् ११३८०३१ हिन्दू, ६१३४४ मुसलमान, २०७९४ क्रस्तान और ६७ अन्य। इनमेसे हिन्दुओंमे ४१८०४९ वेलाल, जिसका शुद्ध नाम वल्लाल है, १०३०१६ इडैगा, जिसका शुद्ध नाम इडैयन है, उस जातिके लोग भेड़ पालते हैं। ५८०५८ सेटी (सौदागरी करनेवाले), ५६९६५ ब्राह्मण, ३३०७० बनान (कपड़ा धोनेवाले), २७८९५ कैकोला याने कैक्लर (कपड़ा बिननेवाले) २१४३५ कम्भालर (कारीगर), २०२२८ सेंवड़वन (मछुहा), १७७०८ सतानी १५३६७ सनान और शेषमें कुशवन, अंबंटन, छत्री, कनक्कन इत्यादि जातियोंके लोग थे। जङ्गली जातियोंमें अनाड़ी अधिक थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-मणनाके समय नेल्लूर जिलेके कसबे नेल्लूरमें २९३३६, और अंगोलमें १०,८६० मनुष्य थे। इनके अलावे वेंकटगिरि इत्यादि कई छोटे कसबे हैं। नेल्लूर कसबेसे ७२ मील उत्तर अंगोल है (नेल्लूर जिलेमें तेलुगू अर्थात् तैलंगी भाषा प्रचलित है।

दसवाँ अध्याय।

(मद्रास हातेमें) तिरुपदी, बालाजी, चन्द्रगिरि, वेल्लूर, आरकाट, आरकोनम् जंक्शन, तिरुवल्लूर और भूतपुरी।

तिरुपदी।

रेणुगुण्टा जंक्शनसे ६ मील पश्चिम तिरुपदीका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके उत्तरी आरकाट जिलेमें (१३ अंश, ३८ कला, उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, २७ कला, ५० विकला पूर्व देशान्तरमें) तिरुपदी एक कसबा है, जिसको उत्तरी भारतके बहुत लोग त्रिपदी कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तिरुपदीमें १४२४२ मनुष्य थे, अर्थात् १३५०७ हिन्दू, ६५५ मुसलमान, ७४ क्रस्तान, ५ जैन और १ अन्य।

कसबेसे लगभग १ मील दक्षिण सुवर्णमुखी नदी बहती है। तिरुमला पहाड़ीके पादमूलके पास नीचेकी तिरुपदी और पहाड़ीके ऊपर, ऊपरकी तिरुपदी, जहाँ बालाजीका प्रसिद्ध मन्दिर है, बसी है। नीचेकी तिरुपदीमे बालाजीके यात्रियोंकी भीड़ रहती है। वहाँ धर्मशालाये बनी है और बाजारमें खाने पीनेकी सब वस्तु मिलती हैं। तिरुपदीमें कई देवताओंके मन्दिर बने हुए हैं, जिनमे गोविन्दराजका मन्दिर प्रधान है। रामानुजस्वामीके संप्रदायकी पुस्तक प्रपन्नामृतके ५१ वें अध्यायमें लिखा है कि श्रीरामानुजस्वामीने वेंकटाचलके पास गोविन्दराजको स्थापित किया। गोविन्दराज भुजंगपर शयन किये हुए विष्णुकी मूर्ति हैं। गोविन्दराजके मन्दिरके पास श्रीभट्टनाथ दिव्य सूरिकी कन्या गोदादेवीका मन्दिर है, जिसको रामानुजस्वामीने स्थापित करवाया था। नदीके किनारेके पुराने मन्दिरके २ गोपुरोंकी दीवारोंमें सुन्दर संगतरासीका काम है।

बालाजी।

तिरुमला पहाड़ीकी ७ चोटियाँ प्रधान हैं। सातवीं चोटी शेषाचलपर जिसको वेंकटाचल और वेंकटरमनाचलम्‌भी कहते हैं; दक्षिण भारतके उत्तम मन्दिरोंमेंसे एक, प्रख्यात बालाजीका पुराना मन्दिर है। वेंकटाचलकी चोटी समुद्रके जलसे लगभग २५०० फीट ऊंची है। उस पर जङ्गल नहीं है।

श्रीवेङ्कटेश्वरो विजयतेतराम्।

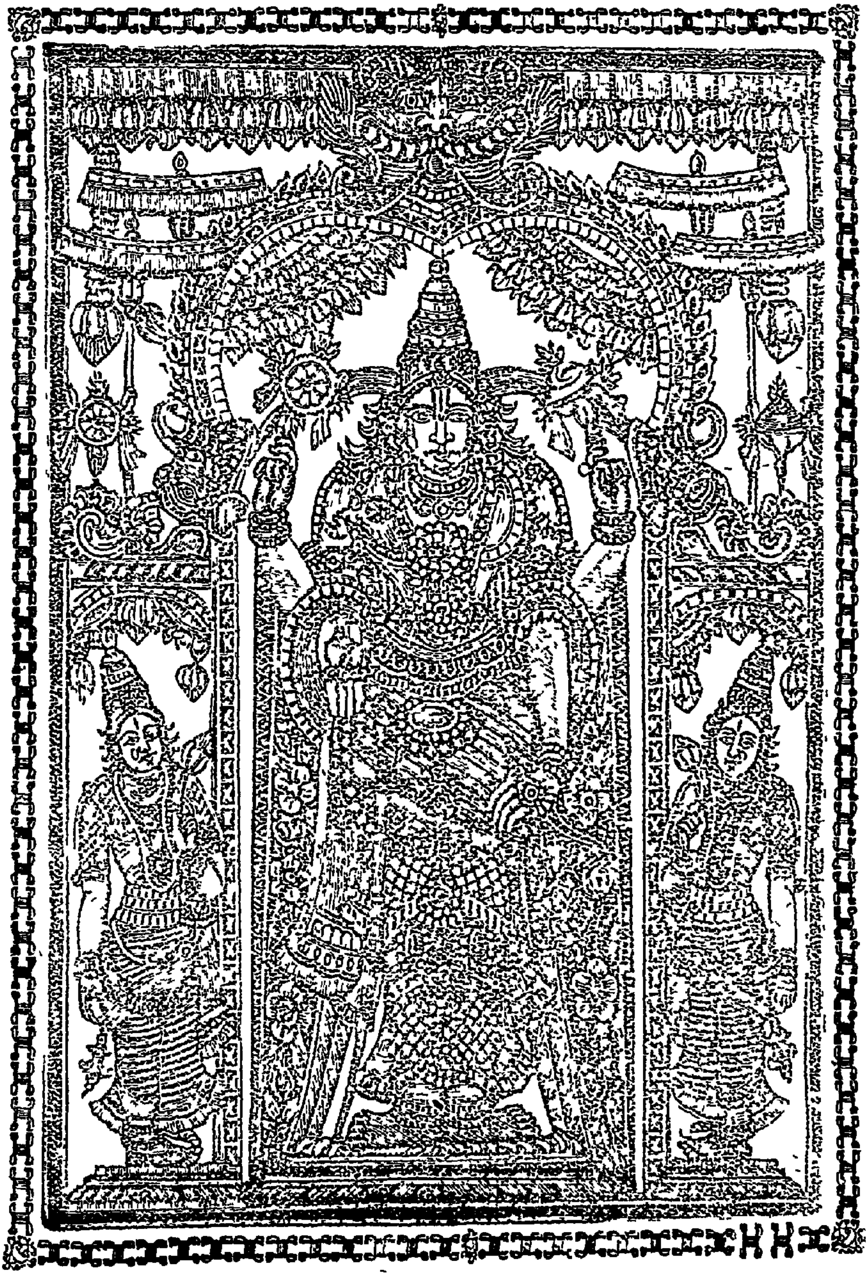

तिरुपदीसे ६ मील श्रीबालाजीका मन्दिर है, किन्तु कसवेसे लगभग १ मील दूरपर चढ़ाईके वाहरका फाटक मिल जाता है । रास्ता पहाड़ी है। चढ़ाई कड़ी है। तिरुपदीमें डेढ़ दो रुपयेमे सवारीके लिये डोली और चार आनेमें मजदूरा मिलता है।

जूता पहनकर पहाडके ऊपर कोई नहीं जाता है। यात्रीगण पहाड़ीके नीचे तिरुपदी-की धर्मशालामें अपना कुछ असबाव और जूता छोड़ जाते हैं। पहले मन्दिर वाली पहाडीपर कोई यूरोपियन नहीं चढ़ा था। सन् १८७० ई० में महन्तके रुकावटके दरखास्त करनेपर भी एक मुजरिमके तलासनेके लिये पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट ऊपर चला गया था। वड़े गोपुरके पास तक यूरोपियन आदि अन्यधर्मी मनुष्य जासकते हैं, उससे आगे नहीं जाने पाते। चढ़ाईके रास्तेमें पहाड़ीके ऊपर कई जगह टिकने या विश्राम करनेके लिये जगह बनी हैं, जहाँ केला, नींबू, चना इत्यादि खानेकी वस्तु और पानी मिलता है और स्थानस्थान पर पानीके कुण्ड हैं।

गोपुरके पाससे सीढ़ियाँ आरम्भ होती हैं। वालाजीका मन्दिर पत्थरकी तीन दीवारोंसे घेरा हुआ है, जिनके बगलोंपर सुन्दर गोपुर बने हुए हैं। मध्यमें गुम्बजदार मन्दिर है। मन्दिरका हाता ४१० फीट लम्बा और २६० फीट चौड़ा है। कई देवढ़ीके भीतर लगभग ७ फीट ऊंची, शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण किये हुई बालाजीकी पाषाणमय चतुर्भुज मूर्त्ति पूर्वमुखसे खडी हैं। बालाजीको दक्षिणी भारतके लोग वेङ्कटेश वेंकटाचलपदी आदि नामोसे पुकारते हैं, किन्तु उत्तरी भारतके अधिक लोग नको बालाजी कहते हैं। इनकी झांकी अतिमनोहर है। मन्दिरके चारो तरफ मकान बने हैं और आस पास वाराहजी आदि देवताओंके अनेक मन्दिर हैं।

यहाँ राजसी कारखाना है। भोग रागका खर्च वेहिसाव है। चौकठ किंवाडोंमें चाँदी सोने जडे गये हैं। प्रति वर्ष दशहरेके दिन वड़े धूमधामसे रथयात्रा होती है। वडे तिहवारोंके समय हजारों यात्री बालाजीके मन्दिरके पास एकत्रित होते हैं। नित्यही वेंकटेशगिरिपर यात्री चढ़ते हैं। प्रति वर्ष लगभग १२५००० यात्री श्रीवेंकटेश भगवान्का दर्शन करते हैं।

मन्दिरके पास १०० गज लम्बा और ५० गज चौड़ा स्वामिपुष्करणी नामक एक सरोवर है, जिसके चारो तरफ पत्थर काटकर सीढ़ियाँ बनाई हुई हैं। यात्री लोग उसीमें स्नान करके बालाजीका दर्शन करते हैं। सरोवरके पास "सहस्र स्तम्भ" मण्डपम् है। और श्रीवाराहस्वामी पूर्व मुखसे विराजमान हैं।

बदरीनारायणके समान यहाँभी प्रसादमें छूत नहीं है। यहाँ यात्रियोंकी तरफसे अटका भी चढ़ाया जाता है। कितनी स्त्रियाँ पुत्रादि होनेके लिये बालाजीकी मानता करती हैं जगमोहनके पास वहुतसे नाई रहते हैं। वहुत लोग वहाँ अपने लड़कोंका मुण्डन कराते हैं।

मन्दिरके पास हुण्डी नामसे प्रसिद्ध एक तरहके हौजके समान एक पात्र बना है, जिसका मुख ऊपरसे वन्द है। रुपया, पैसा, गहना, चाँदी, सोना, धान्य, मसाला, केसर, फल, इत्यादि वस्तु, जो जिसके मनमें आता है, वह उस हुण्डीमें डाल देता है, जिनको नियत समय पर मन्दिरके अधिकारी निकाल लेते हैं। बहुतेरे व्यापारी या दूसरे लोग अपने घरमे बालाजीके निमित्त रुपये पैसे निकालते हैं, जिसको कानगी कहते हैं। मन्दिरकी वार्षिक आमदनी लगभग २ लाख रुपया है; खर्च भी भारी है।

सन् १८४३ ई० तक मन्दिरकी आमदनी खर्चका प्रबन्ध अङ्गरेजी सरकार करती थी; पीछे महन्तके स्वाधीन कर दिया गया। कई वर्ष हुए तिरुपदीके प्रधान वासिन्दोंने वाइसरायके पास दरखास्त दिया कि मन्दिरका खजाना महन्त द्वारा बरबाद होरहा है। मुकदमा कायम होनेपर वहाँके महन्तको दण्ड मिला था। कालहस्तीके पासके रहनेवाले टोंडिमा चक्रवर्त्ती एक कमेटीकी रायसे बालाजीकी पूजा और खर्चका प्रबन्ध करते हैं।

यहाँ टिकनेके लिये धर्मशालाये हैं। बाजारमें खाने पीनेकी सब चीजें मिलती हैं। बालाजीकी उत्तम उत्तम तस्वीर बिकती हैं। एक अस्पताल और रामानुजस्वामीके संप्रदायकी एक गद्दी है। स्थान स्थान पर पहाड़ीके ऊपर १६ झरने हैं।

बालाजीसे ३ मील दूर पहाड़ीकी ऊँची नीची चढ़ाई उतराईके बाद पापनाशिनी गंगा मिलती है। दो पहाड़ियोंके बीचमें बहती हुई धारा दूरसे आई है और वहाँ पहाड़ीपर ऊपरसे नीचे गिरती है। यात्री लोग वहाँ स्नान करते हैं। बालाजीकी तरफ लौटते हुए रास्तेमे आकाशगंगाकी धारा मिलती है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–श्रीमद्भागवत—(दशम स्कन्ध ७९ वाँ अध्याय) बलदेवजी, श्रीशैल पर्वतसे चलनेके पश्चात् द्रविड़ देशमें परम पवित्र श्रीवेंकट पर्वतका दर्शन करके काञ्ची पुरीमें गये।

श्रीवेंकटाचल इतिहासमाला नामक ७ स्तवक अर्थात् अध्यायकी संस्कृत पुस्तक है, जिसको रामानुजस्वामीजीके शिष्य अनन्ताचार्यने, जिनका जन्म शाका ९७५ (सन् १०५३ ई०) में था, बनाया था। आचार्यजीने उस पुस्तकमें वेंकटेशजीका प्राचीन वृत्तान्त लिखा है, जिसका सारांश नीचे है,—सुवर्णमुखरीके तीर पर वेंकटाचल नामक पर्वत है जिसके ऊपर सिद्ध और मुनिगण तप करते हैं। इस पर चांडाल, यवन आदि वेदसे बाह्य लोग चढ़ नही सकते। शुक्र, भृगु, प्रह्लाद, अंबरीष आदि महर्षि, और राजर्षिगण पर्वतको विष्णुका अंश समझकर उसके ऊपर नही चढ़े; उन्होंने उसके निकट तप किया था पर्वतके ऊपर स्वामिपुष्करणीके पश्चिम किनारे पर पृथ्वीको अंकमे लिये हुए शूकर भगवान् स्थित हैं।

गरुड़ने वैकुण्ठसे वेंकटाचलको लाकर द्रविड़ देशमें सुवर्णमुखरी नदीके तटपर रक्खा और भगवान्की क्रीडावापी स्वामिपुष्करणीको भी लाकर उसपर स्थापित किया। वेंकटगिरिपर लक्ष्मीदेवी, पृथ्वीदेवी और नीलादेवीके सहित विष्णु भगवान् विराजने लगे।

विष्णु भगवान् वैवस्वत मन्वन्तरके प्रथम सत्ययुगमें वायुके तपसे प्रसन्न होकर गंगासे २०० योजन दक्षिण, (द्राविड़ देशके) पूर्वके समुद्रसे ५ योजन पश्चिम वेंकटगिरिके ऊपर स्वामिपुष्करणीक तटपर सूर्यमण्डलके तुल्य विमान (मन्दिर) में लक्ष्मी और देवताओंके सहित जा विराजे। वह कल्पके अन्त तक उस विमानमें निवास करेंगे। (भगवान्की आज्ञासे शेषजीने पर्वतरूप अर्थात् वेंकटगिरि बनकर पृथ्वीपर निवास किया।

रामानुजस्वामीके उपदेशसे वेंकटाचलके राजा यादवने वेंकटेशके प्राचीन मन्दिरको सुधरवाया और उसके चारों ओर मन्दिरके अधिदेवता वाराह, नृसिंह, वैकुण्ठनाथ इत्यादिको स्थापित करवाया। राजाने उस स्थान पर शेषाशन, गरुड़, द्वारपाल आदि बनवा दिये और पद्मावतीकी स्थापना करवा दी। पीछे वेंकटगिरि पर रामानुजस्वामीकी प्रतिमा भी प्रतिष्ठित हुई।

चन्द्रगिरि।

तिरुपदीके रेलवे स्टेशनसे ७ मील (रेणुगुण्टा जंक्शनसे १३ मील) दक्षिण-पश्चिम चन्द्रगिरिका रेलवे स्टेशन है। उत्तरी आरकाट जिलेमें चन्द्रगिरि एक छोटा कसबा है, जिसमे सन् १८८१ में ४१९३ मनुष्य थे।

सन् १५६४ में तिलीकोटमे परास्त होनेके बाद विजयानगरके राजवंशका एक राजा चन्द्रगिरिमें रहने लगा। सन् १६३९ मे चन्द्रगिरिके राजाने ईस्ट इण्यिन कम्पनीको जमीनका एक टुकड़ा दिया, जिसपर मद्रासके "फोर्टसेंटजर्ज" (किला) बनाया गया। जिस महलमें बैठकर राजाने कम्पनीको भूमि दी, वह किलेमें अब तक विद्यमान है। सरकारने उसको मरम्मतसे रक्खा है। उसमें अफसर लोग ठहरते हैं। महलके पीछे एक पहाडी है।

वेलूर।

चन्द्रगिरिसे ६४ मील (रेणुगुंटा जंक्शनसे ७७ मील) और कटपद्दी जंक्शनसे ६ मील दक्षिण वेलूरका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेमें (१२ अंश, ५५ कला, १७, विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, १० कला, १७ विकला पूर्व देशान्तरमें) पलार नदीके किनारेपर उत्तरी आरकाट जिलेमें प्रधान कसबा वेलूर है। उसमें एक बडा मन्दिर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय छावनीके साथ वेलूरमें ४४९२५ मनुष्य थे; अर्थात् २१२८५ पुरुष और २३६४० स्त्रियाँ। इनमें ३१२२८ हिन्दू, १२२२० मुसलमान, १४७४ कृस्तान और ३ जैन थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ८९ वां और मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें १२ वॉ नगर है।

वेलूरमें सेटजनका गिरजा है, जिसके चारों तरफके मकानोंमें श्रीरङ्गपट्टमूके टीपू सुलतानके वंशके लोग सन् १८०२ ई० से रहते थे। उसके पास एक तालाव है, जो सन् १८७७ के अकालके समय ६० हजार रुपयेके खर्चसे बना। वेलूरका किला २०० फीट चौड़ी एक गहरी खाईसे घेरा हुआ है; उसमे बहुतसी दिलचस्प इमारतें हैं। उसके भीतर देशी पैदलकी एक रेजीमेण्ट रहती है। किलेसे ३/४ मील पश्चिम टीपू सुलतानके वंशवालोंका कबरगाह है। वेलूरके आस पास कई पहाडी किले हैं। सिंगलदुर्ग नामक किलेसे लगभग २ मील दूर पुलिसकी लाइन और सेंट्रलजेल है। जेलमे कपड़े और कालीन तैयार होते हैं। इनके अलावे वेलूरमें सबकलक्टर इत्यादि हाकिमोंकी कचहरियॉ, अस्पताल, स्कूल चन्दासाहबकी सुन्दर मसजिद और जलंधरेश्वर शिवका बडा मन्दिर है। वेलूरमें सुगन्ध फूलोंके बाग बहुत हैं। नित्य वहाँसे रेल द्वारा फूलोंकी बहुतसी गठरियाँ मदरास शहरको भेजी जाती हैं।

जलंधरेश्वर शिवका मन्दिर—यह भारत वर्षके बड़े मन्दिरोंमेंसे एक है। इसका सात मञ्जिला गोपुर लगभग १०० फीट ऊँचा है। दरवाजा बहुत सुन्दर है, जिसके पास नील रङ्गके पत्थरके दो द्वारपाल खड़े हैं। गोपुरसे मन्दिरके घेरेमें प्रवेश करनेपर बायें तरफ पत्थरका कल्याण मण्डपम् मिलता है, जिसमे नफीस कारीगरीका सुन्दर काम बना हुआ है। पेशगाहके भीतरकी छतमें उत्तम नकाशीका काम और खम्भोंमें भिन्न भिन्न तरहकी नकाशी है। मण्डपम्के सामने एक कूप है। घेरेके चारों बगलोंमें दीवारके पास दालान,

जिनमें नकाशीदार ९१ खम्भे लगे हैं, और घेरेके चारों कोनोंपर चार मण्डपम् हैं। गोपुरके सामने पत्थरकी इमारत है; अब उसमें ऐसा अन्धियारा रहता है कि विना मसाल या दीपके कुछ नहीं देख पड़ता। वहाँके लोग कहते हैं कि सन् १३५० ई० में पेशगाह बना था।

तिरुवन्नामलई—वेलूरसे ५१ मील दक्षिण तिरुवन्नामलईका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके दक्षिणी आरकाट जिलेमें तालुकका सदर स्थान तिरुवन्नामलई एक कसवा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १२१५५ मनुष्य थे। कसबेसे दक्षिण ओर पण्डनी पहाड़ीपर सुब्रह्मण्य अर्थात् महादेवजीके पुत्र स्कन्दजीका सुन्दर मन्दिर है। वहाँ देवताके भोग रागमें बहुत रुपया खर्च होता है। कार्त्तिककी पूर्णिमाको वहाँ मेला होता है, उस समय वहाँ बहुतसे यात्री जाते हैं।

वेलूरका इतिहास—उस देशकी कहावतसे जान पड़ता है कि १३ वीं सदीके अन्तके भागमें भद्राचलमूके राजाने वेलूरके किलेको बनवाया। लगभग सन् १५०० में वह किला विजयानगरके राजा नरसिंहको मिला। १७ वीं सदीके मध्य भागमे बीजापुरके सुलतानने वेलूरको अपने अधिकारमें कर लिया। सन् १६७६ में महाराष्ट्रोंने साढ़े चार महीनेके महासरेके बाद वेलूरको ले लिया। सन् १७०८ में मुसलमानोंने महाराष्ट्रोंको निकालकर किलेपर अपना अधिकार जमाया। सन् १७६० के चन्द वर्ष पीछे अङ्गरेजोंने वेलूर पर अपना अधिकार कर लिया। श्रीरंगपट्टमूकी लड़ाई में टीपू सुलतानके परास्त होने पर उसके वंशके लोग वेलूरमें रक्खे गये। सन् १८०६ में जब वेलूरके सिपाहियोंने बगावत करके वहाँके यूरोपियनोंको मार डाला तब मैसूरके लोग बङ्गालमें भेज दिये गये।

उत्तरी आरकाट जिला—इसके उत्तर कडपा और नेल्लूर जिला, पूर्व चेंगलपट्ट जिला दक्षिण सेलम और दक्षिणी आरकाट जिला और पश्चिम मैसूरका राज्य है। उत्तरी आरकाट जिलेका सदर स्थान वेलूरसे २७ मील उत्तर रेलवे स्टेशनके पास चित्तूर कसबा है। जिलेके उत्तरीय और पश्चिमीय भागमें पहाड़ियाँ हैं। चन्द पहाड़ियोंमें तांबा और लोहेके ओरे बहुत मिलते हैं और मकान बनाने लायक पत्थर बहुत हैं। जिलेकी प्रधान नदी पनार है। जङ्गलों और पहाड़ियोंमे कई जातिके पहाड़ी लोग रहते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय उत्तरी आरकाट जिलेका क्षेत्रफल ७२५६ वर्गमील और उसकी मनुष्य-संख्या १८१७८१४ थी, अर्थात् १७१७५९५ हिन्दू, ८२४३८ मुसलमान, १००१८ कृस्तान, ७७६१ बौद्ध और २ अन्य थे। हिन्दुओंमें ५०७९२८ वेल्लाल (खेती करते हैं); ३१६०२५ परिया, २६७७१० वनिया (जाति विशेष मजदूरी पेशेवाले) १२४४८७ इडैयन (भेड़ चराते हैं), ५६७११ कैक्केलर (कपड़ा बिनते हैं), ४९२९९ ब्राह्मण; ४७०३० कंभाड़न, २९३९८ चेटी (सौदागरी करने वाले), २७६०९ वनान (कपड़ा धोते हैं), २६०४५ सतानी (दोमसला), २५९७६ सेवड़वन (मछुहा), २४२०८ साना (ताड़ी बनाते हैं), २३५६३ छत्री; २०१९७ अंबटन (हजाम), १९८९५ कनकन (लिखनेका काम करते हैं), १५५७७ कुशवन (मट्टीका वर्तन बनाते हैं), और शेष १३५९३७ में अन्य जातियोंके लोग थे। उत्तरी आरकाट जिलेमें तामिल और तेलगू अर्थात् तैलङ्गी भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय उत्तरी आरकाट जिलेके कसवे वेलूरमें ४४९२५ कुडीआतमूमें १८७४७, तिरुपदीमे १४२४२, कालहस्तीमें ११७५४, आरकाटमें १०९२८, अंबूरमें १०५८६ और तिरुपदीमे १०४८५ मनुष्य थे। पूंगानूर और चित्तूर इनसे छोटे कसबे है। चन्द्रगिरि, रानीपट्ट, आरकोनम् इत्यादि वडी वस्तियां हैं।

उत्तरी आरकाट जिलेके वेलूर तालुकमें मदरासमे वेलूर होकर वङ्गलोर जाने वाली सड़कके पास मदरास शहरसे ९७ मील दूर पुलिकुण्डा एक बस्ती है। उसके समीप एक ऊंची पहाडीके पादमूलके पास पलार नदीके दहिने आदिरङ्गम् नामक पवित्र स्थानमें प्रति वर्ष मेला होता है। वहाँ सुन्दर मन्दिर वना हुआ है।

उत्तरी आरकाट जिलेका इतिहास—पल्लव वंशके राजाओंका प्रधान किला पुरलूरमे था। कांजीवरम् उनके राज्यका सबसे अधिक प्रसिद्ध कसवा हुआ। सातवीं सदीमे पल्लव वंशके राजाओंका वल वढ़ा हुआ था। आठवीं या नवीं सदीमें चोला वंशके राजाओंने पल्लव वंशके राजाओंको निर्वल कर दिया। उनकी राजधानी कांजिवरम् अर्थात् काञ्चीपुर हुआ, जिनका राज्य एक समय गोदावरी नदी तक फैला था। तैलिङ्गाना और विजया-नगरके राजाके साथ कई वार लडाई होने पर चोला वंशके राजाका वल घट गया। सत्रहवीं सदीके मध्यमें महाराष्ट्र लोग आये। सन् १६९८ में औरंगजेवके जनरल जुलफ्कारखांने जींजी का किला लेलिया और दाउदखांको आरकाटका, जिस जिलेमें जींजी थी, गवर्नर वनाया। सन् १७१२ में सआदतुल्लाखांने, जो दिल्लीकी फौजका कमाण्डर था, नवावके खिताव पाकर आरकाट कसवेको अपनी राजधानी वनाया। उसके मरनेपर दोस्तअली उसका उत्तराधिकारी हुआ। सन् १७४० में भोंसलेकी महाराष्ट्री सेनाने जिलेमें उपद्रव मचाया। दोस्तअली मारागया। उसके पश्चात् सन् १७४२ में दोस्तअलीके उत्तराधिकारी सवदरअली-को और सन् १७४४ में सवदरअलीके उत्तराधिकारी सैयदमहम्मदको दुश्मनोंने मारडाला। सन् १७५१ में अङ्गरेजोंने वडी वहादुरीसे लड़कर आरकाटके किलेको मुसलमानोंसे छीन लिया। सन् १७५८ मे वह किला फरासीसियोंके अधिकारमे होगया। सन् १७६० मे अङ्गरेजी सरकारने, फरासीसियोंसे किलेको छीनकर अपने मित्र नवाव महम्मदअलीको दिया। सन् १७८० मे श्रीरङ्गपट्टनमूके हैदरअलीने आरकाट पर अपना अधिकार करलिया और किलेवन्दीको मजवूत किया; किन्तु उसके पुत्र टीपूने सन् १७८३ मे उसको छोड़ दिया और दो बगलोंकी दीवारोंको तोडवा दिया। टीपूके परास्त होनेके पीछे सन् १८०३ में कर्नाटकके नवावके अन्य राज्योंके साथ आरकाट अङ्गरेजोंके अधिकारमे होगया।

आरकाट।

कटपड्डी जंक्शन से १५ मील दक्षिण पश्चिम रेलवे स्टेशन के पास उत्तरी आरकाट जिले में कुडीआतमू एक कसवा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय १८७४७ मनुष्य थे।

कटपड्डी जंक्शनसे १५ मील पूर्वोत्तर और आरकोनम् जंक्शनसे २३ मील पश्चिम-दक्षिण मदरास रेलवे पर आरकाटका रेलवे स्टेशन है, जिससे ५ मील दक्षिण पलार नदीके दहिने किनारेपर (१२ अंश, ५५ कला, २३ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश,

२४ कला, १४ विकला पूर्व देशान्तरमें) उत्तरी आरकाट जिलेके आरकाट तालुकेका सदर स्थान आरकाट एक कसबा है। वह एक समय करनाटकके नवाबकी राजधानी थी। रानी पेंटसिविल स्टेशन और यूरोपियनोंके रहनेकी जगह रेलवेसे ३ मील दूर है। द्राविडियन लोग आरकाटको आरकाड कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय आरकाट कसबेमें १०९२८ मनुष्य थे; अर्थात् ९०७१ हिन्दू, १७५७ मुसलमान, ९१ क्रस्तान और २ जैन।

अब आरकाटका महल उजड़ गया है। वहाँके किलेकी निशानीमात्र रह गई है। कसबेके पास पहुँचकर नदीके किनारे किनारे जानेपर ¾ मीलके बाद दिल्ली फाटक मिलता है। केवल-यही बिना नुकसानीका रहगया है, जिसके देखनेसे ख्यालमें ले आना सम्भव है कि कैसी किलाबन्दी थी। खाँईके बहुत हिस्सोंमें अब धान बोया जाता है। तालुकदारकी कचहरीके पूर्व एक चोड़ी खाई लाँघना होता है, जो गढ़को घेरती है। अब उसमें वृक्ष जमगये है। वहाँ २ छोटे हौज हैं, जिनके पास एकही घेरेमें नवाब सभादतुल्लाखांका मकबरा और जुमा मसजिद है। मकबरेके दरवाजेके ऊपरके लेखसे जान पड़ता है कि सन् १७३३ में नवाब मरा। इनके अलावे आरकाटमें मातहत मजिस्टरकी कचहरी, मातहत जेलखाना,गवर्नमेण्ट स्कूल, बहुतसे दरगाह, बहुतेरी कबरें और चोला राजाओंके बनवाये हुए कई मन्दिर हैं। जुमा मसजिदके पश्चिम एक टीलेपर कर्नाटकके नवाबोंका तबाह महल है, जिसके पास एक झील है। आरकाटका इतिहास वेल्लूरके इतिहासमें देखिये।

आरकोनम् जंक्शन।

आरकाटसे २३ मील पूर्वोत्तर और रेणुगुण्टा जंक्शनसे ४१ मील दक्षिण-पूर्व, उत्तरी आरकाट जिलेके आरकोनम् वस्तीमे रेलवेका जंक्शन है। जहांसे रेलवे लाइन ४ तरफ गई है।-आरकोनम् वस्तीमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ३२२० मनुष्य थे।

जिनको मद्रास देखनेकी जरूरत नहीं है, वे आरकोनम्से काञ्चीपुर, चेंगलपट्ट जंक्शन, चिदम्बरम्, कुम्भकोणम्, तञ्जोर जंक्शन, तिरुचनापल्ली जंक्शन और मदुरा होकर रामेश्वर, तुतीकुड़ी इत्यादि नगरोंमें जाते है। आरकोनम्से तिरुचनापल्ली जानेके लिये रेलवेके ३ मार्ग हैं;—आरकोनम्से कांचीपुरी, चेङ्गलपट्ट, विलीपुरम्, मायावरम् और तञ्जोर होकर २५४ मील, कटपद्दी जंक्शन, विल्लीपुरम् जंक्शन, मायावरम् जंक्शन और तञ्जोर जंक्शन होकर २८७ मील और कटपद्दी जंक्शन, जालारपेट जंक्शन और ईरोड जंक्शन होकर २८९ मील तिरुचनापल्ली जंक्शन है।

आरकोनम्से ८ मील पश्चिमोत्तर तिरुत्तनीका रेलवे स्टेशन है। तिरुत्तनी वस्तीमें स्कन्दजीका मन्दिर है, जहाँ बहुतसे यात्री आते हैं और प्रति महीनेमें तेहवार होता है।

तिरुवल्लूर।

आरकोनम् जंक्शनसे १७ मील (रेणुगुंटा जंक्शनसे ५८ मील) पूर्व और मद्रास शहरसे २६ मील पश्चिम तिरुवल्लूरका रेलवे स्टेशन है। मद्रास हातेके चेङ्गलपट्ट जिलेमें (१३ अंश, ८ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश, और ७९ अंश, ५७ कला, २० विकला पूर्व देशान्तरमें) तालुकका सदर स्थान तिरुवल्लूर एक छोटा कसबा है,जिसमें मद्रास हातेके सबसे बड़े मान्दिरोंमेंसे एक मान्दिर है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय तिरुवल्लूरमें ७६५ मकान और ४९२१ मनुष्य थे, अर्थात् ४४६५ हिन्दू, ४४५ मुसलमान और ११ कृस्तान।

तिरुवल्लूरमें मुनसफकी कचहरी, पुलिस स्टेशन, पोष्ट आफिस और टेलीग्राफ आफिस है।

वरदराजका मन्दिर—तीन कोट (अर्थात् घेरे) के भीतर वरदराजका निज मन्दिर है। पहिले घेरेकी लम्बाई १९० फीट और चौड़ाई १५५ फीट दूसरेकी लम्बाई ४७० फीट और चौडाई भी ४७० फीट और तीसरे की लंबाई ९४० फीट और चौडाई ७०० फीट है। पहिले घेरेके चारों बगलोंमें दालान और मध्यमें बरदराजका, जिनको श्रीवीरराघवास्वामी भी लोग कहते हैं, मन्दिर है। कई देवढीके भीतर बरदराजकी विशाल मूर्त्ति भुजङ्गपर शयन करती है। उस मन्दिरके बगलमें शिवजीका मन्दिर है। उस मन्दिरमें भी कई देवढीके भीतर शिव हैं। दोनो मन्दिरोंके आगे जगमोहन है। घेरेके आगेकी दीवारमे एक गोपुर है। दूसरे कोटके भीतर, जो पीछेका बना हुआ है, बहुतसे छोटे स्थान और दालान और बगलोंपर पहिले घेरेके गोपुरसे ऊँचे दो गोपुर हैं और तीसरे घेरके भीतर जो पीछेका बना है, ६६८ खम्भोंका एक मण्डपम् तथा कई एक मन्दिर तथा स्थान और बगलोंपर ५ गोपुर हैं, जिनमें आगे और पीछेके २ बहुत बड़े हैं। मान्दिरके घेरेके फाटकके ऊपरकी इमारतको गोपुर कहते है। द्राविड़ी मन्दिरोंमें वे बहुत बनते हैं। उनकी ऊँचाई बड़े बड़े मन्दिरोंके समान होती है। वे ११ खन तक बने हैं। मन्दिरके पास एक तालाब है, जिसमे उत्सवोंके समय भोग मूर्तियोंको लोग जलकेलि कराते हैं।

प्रति अमावास्याको तिरुवल्लूरके आसपासके यात्री वहाँ देवदर्शनके लिये जाते हैं; उत्सवोंके समय वहाँ यात्रियोंकी बडी भीड़ होती है।

भूतपुरी।

तिरुवल्लूरके रेलवे स्टेशनसे १२ मील दक्षिण श्रीरामानुज स्वामीजीका जन्मस्थान, भूतपुरी एक वस्ती है। भूतपुरीमें अनन्तसरोवर नामक तालावके पास रामानुज स्वामीजीका बडा मन्दिर बना हुआ है। रामानुजस्वामी दक्षिणमुखसे विराजमान हैं। वहाँ केशव-भगवान्का मन्दिर बना है। इनके अतिरिक्त वहाँ अनेक स्थान और बडे बड़े स्तम्भ लगे हुए कई मण्डपम् बने हुए हैं।

उत्सवोंके समय बहुतसे यात्री विशेष करके रामानुजीय संप्रदायके आचारी लोग भूतपुरीमें जाते हैं।

भूतपुरी माहात्म्य, जिसमें लिखा है कि यह स्कन्दपुराणका है, ४ अध्यायकी संस्कृत पुस्तक है। उसमे लिखा है कि सूर्यवंशी राजा मान्धाताके पौत्र और राजा युवनाश्वके पुत्र हरित थे। युवनाश्व हरितको राज्य सौंपकर तप करनेके लिये वनमें चले गये। एक समय राजा हरित शिकारके लिये वनमें गये। उन्होने वहाँ सिंहसे एक गऊको बचानेके अर्थसे सिंहके ऊपर अपना बाण छोडा, किन्तु वह बाण उस गऊको लग गया, जिससे वह तत्कालही मर गई। राजाने अपने घर आकर वशिष्ठजीसे पूछा कि इस पापसे किस भांति मेरा छुटकारा होगा। महर्षिने कहा कि हे राजन्! तुम भूतपुरीमे जाकर अनन्तसरोवरमे स्नान करके तप करोगे, तब इस पापसे छूट जाओगे। वेङ्कटगिरिसे ३ योजन दक्षिण ७ योजन लम्बा और इतनाही

चौड़ा सत्यव्रत नामक तीर्थ है, जिसके भीतर अनेक तीर्थस्थान और कांची नगरी है। कांचीसे २ योजन पूर्वोत्तर विदेह वन है। उसके कुछ पश्चिम अरुणारण्य और अरुणारण्यके दक्षिण भूतपुरी नगरी है जिसमें निर्मल जलसे पूर्ण अनन्तसर नामक तालाब सुशोभित है। भूतपुरीकी उत्पत्तिकी कथा मैं तुससे कहता हूँ—सृष्टिके आरम्भमें, जब रुद्र भगवान् अपने सर्वांगमें भस्म लगाये हुए और जटा फटकारे हुए नृत्य करने लगे; तब उनके साथके भूतगण परस्पर हँसने लगे। रुद्र भगवान्ने उनकी ऐसी ढिठाई देखकर उनको शाप दिया कि तुम लोग अब हमसे अलग रहोगे। भूतगणोंने ब्रह्माके पास जाकर उनसे सब वृत्तान्त कह सुनाया। तब ब्रह्माने कहा कि भारतवर्षमे वेंकटगिरिसे दक्षिण सत्यव्रत तीर्थ है। तुम लोग वहाँ जाकर केशव भगवान्की आराधना करो। जब भूतगणोंने उस तीर्थमें जाकर सहस्र वर्ष तक केशव भगवान्का ध्यान किया तब विमानपर चढ़े हुए भगवान्ने उनको दर्शन दिया। उनके साथमें अनन्त अर्थात् शेष आदि बहुत देवता थे। भूतगणोंने उनसे विनय किया कि हे भगवन्! आप ऐसा उद्योग करें कि जिससे हम लोग फिर रुद्र भगवान्के गण बनें। तब विष्णु भगवान्ने महादेवका ध्यान किया। महादेवजी वहाँ प्रकट हुए। विष्णुने उनसे कहा कि हे शंकर! इस तीर्थमे निवास करनेसे भूतगणोंका पाप छूट गया, अब तुम दया करके इनको अपना गण बना लो। महादेवजीने विष्णुका वचन स्वीकार किया। उसके पश्चात् विष्णुकी आज्ञासे अनन्तने उस स्थानमें एक सरोवर बनाया। भूतगणोंने उस सरोवरमें स्नान करके शिवकी प्रदक्षिणा की। शिवने उनको अपना गण बना लिया। उसके पश्चात् महादेवजीने विष्णुसे कहा कि तुम वर्तमान कालके स्वारोचिष मन्वन्तर तक इस स्थानमें निवास करो। उस समय भूतगणोंने केशव अर्थात् विष्णुके उत्सव करनेके लिये उस स्थानमें ३ योजन लम्बी और इतनीही चौड़ी एक पुरी बनाई, जिसमें देवताओं राजाओं और अन्य मनुष्योंके रहने योग्य बड़े बड़े गृह और प्राकार थे। वैशाख सुदी द्वादशीके हस्त नक्षत्रमें रुद्रके सहित भूतगणोंने वहाँ विष्णुका बड़ा उत्सव किया। भूतगणोंने देवताओंके चले जानेपर उस नगरीमें ब्राह्मण आदि चारो वर्णोंको बसाया। विष्णुने कहा कि जो मनुष्य इस तिथिमें यहाँके अनन्तसरमें स्नान करके मेरा पूजन करेगा उसको हम सम्पूर्ण वांछित फल देंगे। महादेवजी भूतगणोंके सहित वहाँसे अपने स्थानको चले गये। भूतोंने उस पुरीका निर्माण किया इसी कारणसे उसका भूतपुरी नाम पड़ा। राजा हरित महर्षि वशिष्ठके मुखसे इस कथाको सुन अपने राज्यका भार उनको सौंपकर भूतपुरीमें गये। उन्होंने वहाँ पुराने नगरके विविध मकान, मन्दिर, तालाब और प्राकारोंका खण्डहर देखा और अनन्तसरोवरमें स्नान करके तप आरम्भ किया। एक सौ वर्ष तपस्या करनेके उपरान्त वहाँ विष्णु प्रकट हुए। उन्होंने कहा कि हे राजन्! हमारे दर्शन करनेसे तुम्हारा गोवधका पाप छूट गया। तुम इसी शरीरसे अब ब्राह्मण होजाओगे। तुम्हारेही वंशमें हमारे अंश शेषजी (अर्थात् रामानुजस्वामी) अवतार लेंगे। तुम्हारे वंशवालोंको मनोवांछित देनेके लिये वैवस्वत मन्वंतरके अन्त तक हम यहाँ निवास करेंगे। भूतगणोंने स्वारोचिष मन्वंतरमे इस पुरीको बनाया था। उस मन्वंतरके अन्तमें यह पुरी उजड़ गई। तुम इस नगरीको पूर्ववत् बना दो और अनन्तसरके पूर्व किनारेपर हमारा स्थान बनाओ। आज चैत्र मासके शुक्लपक्षकी सप्तमी है; आजही उत्सव आरम्भ करके पूर्णिमाके दिन तुम हमारी स्थापना करदो और तुम अपने पुत्र और पौत्रके सहित इसी पुरीमे निवास

करो। राजा हरितने विष्णुकी आज्ञानुसार भूतपुरीको पूर्ववत् बना दिया और उत्तम मन्दिर बनाकर उसमें विमानके साथ विष्णुका स्थापन कर दिया। उस दिनसे प्रति वर्ष वहाँ उत्सव होने लगा। कुछ कालके पश्चात् राजा हरित कालधर्मको प्राप्त हुए। उनके वंशके ब्राह्मण अबतक भूतपुरीमें केशव भगवान्‌की पूजा करते हैं। वैशाख सुदी द्वादशी और चतुर्थीके मृगशिरा नक्षत्रमें तथा चैत्र सुदी सप्तमी और पूर्णिमाको अनन्तसरोवरमें स्नान करनेसे अनेक फल लाभ होते हैं।

श्रीरामानुजस्वामीकी संप्रदायकी (११७ अध्यायकी) प्रपन्नामृत नामक पुस्तक है, उसमें लिखा है कि दक्षिण देशके पूर्वके समुद्रके तटसे १२ कोस दूर तुण्डीर देशमें भूतपुरी नामक सुन्दर नगरी है। उसमें हारित गोत्र * के केशव नामक एक ब्राह्मण रहते थे। उनकी स्त्रीका नाम कान्तिमती था। चैत्र सुदी ५ को, जब मेष राशिपर सूर्य थे, गुरुवारको आर्द्रा नक्षत्रमें मध्याह्नके समय कान्तिमतीके गर्भसे शेषजीके अंश श्रीरामानुजजीका जन्म हुआ। पिताने आठवें वर्षमें उनको विद्यारम्भ कराया और १६ वर्षकी अवस्थामें रक्षकांना नामक कन्यासे उनका विवाह करदिया। कुछ कालके पीछे केशवजीका देहान्त होगया। तब रामानुज स्वामीजी अपनी माता और पत्नी के साथ भूतपुरीको छोड़कर कांचीपुरीमे चले गये और वहाँ यादव प्रकाश नामक प्रसिद्ध पण्डितसे विद्या पढ़ने लगे। उसी समय कांचीपुरके राजाकी कन्याको ब्रह्मपिशाचकी बाधा हुई। तब राजाने पिशाचको दूर करनेके लिये यादव पण्डितको बुलाया। यादवजी, रामानुज आदिक अपने शिष्योंके सहित वहाँ गये। उनके अनेक यत्न करनेपर पिशाच नहीं हटा, तब रामानुजस्वामीने कन्याको अपना चरण छुला कर उसकी पिशाचबाधा दूर करदी। राजाने प्रसन्न होकर रामानुजस्वामीको बहुत द्रव्य दिया और उनका बडा सत्कार किया। यह देख कर यादव पण्डितने अपना अपमान समझा। स्वामीका मौसेरा भाई गोविन्दार्य कांचीपुरमें आकर स्वामीके सहित विद्या पढ़ने लगा। रङ्गपुर अर्थात् श्रीरङ्गम्में यामुनाचार्य नामक एक त्रिदण्डी संन्यासी थे। उन्होंने अपने शिष्योंके मुखसे रामानुजजीकी प्रशंसा सुनकर उनको शिष्य करनेकी इच्छा की और कांचीमें आकर उनको देख उनकी बडी प्रशंसा की। एक दिन स्वामीजी अपने गुरु यादव पण्डितकी सेवा कर रहे थे; उस समय यादवने श्रुतिके एक शब्दका कुछ अशुद्ध अर्थ किया; तब स्वामीने उनको छोड़ा। उस समय यादव उनसे शास्त्रार्थ करने लगे, किन्तु परास्त होगये। तब उन्होंने क्रोध करके रामानुजजीको निकाल दिया। तब वे कांचीपुरके हस्तगिरिपर चले गये। रङ्गपुरके यामुनाचार्यने अपने शिष्य पूर्णाचार्यको स्वामीको बुलानेके लिये वहाँ भेजा। रामानुजजी यामुनाचार्यसे मिलनेके लिये रङ्गपुर चले। यामुनाचार्य स्वामीका आगमन सुनकर आगेसे उनको लेने चले; किन्तु कावेरी नदीके किनारेके निकट पहुँचने पर उनका देहान्त होगया। स्वामीजीने शीघ्रतासे उनके पास पहुँच कर देखा कि आचार्य शरीर छोडकर अपनी ३ अंगुली उठाये हुए हैं। उसका आशय यह था कि (१) बोधायन मतानुसार ब्रह्मसूत्रादिका भाष्य बनाओ, (२) दिल्लीके बादशाहसे श्रीरामकी

---

* भूतपुरी माहात्म्यमें लिखा है कि विष्णुने सूर्यवंशी राजा युवनाश्वके पुत्र राजा हरितको वर दिया कि तुम इसी शरीरसे ब्राह्मण हो जाओगे। तुम्हारेही वंशमें हमारे अंश शेषजी (रामानुज स्वामी) जन्म लेंगे।

मूर्त्तिका उद्धार करो और (३) दिग्विजय करके विशिष्टाद्वैत मतका प्रचार करो । स्वामीने प्रतिज्ञा की कि मैं तुम्हारी इच्छा पूर्ण करूंगा। उसके अनन्तर स्वामीजी कांचीपुरीमें आये । कुछ समयके पश्चात् उन्होने कांचीपूर्णके उपदेशानुसार रङ्गपुरमें जाकर पूर्णाचार्यसे वैष्णवोंके पंच संस्कार (ऊर्द्धपुण्ड्र; मुद्रा, माला, मंत्र और विचार) से दीक्षित होकर विद्या पढी । कुछ कालके पीछे कूपसे जल भरनेके समय पूर्णाचार्यकी स्त्री और रामानुजस्वामीकी पत्नीसे कुछ कलह होगई । रक्षकांबाके झगडालू स्वभावसे पहिलेहीसे स्वामीका मन उसकी ओरसे खिंच गया था । उस समय उन्होंने उससे उदास होकर उसको नैहर भेज दिया और अपने धन, गृह आदि संपत्तिको छोड़कर त्रिदण्ड संन्यास ग्रहण किया। कांचीपूर्णने प्रसन्न होकर उनको 'यतिराज' की पदवी दी । एक समय यादव पण्डितने स्वामीका कलेवर शंख चक्रसे चिह्नित देख कर वडा आक्षेप किया । उस समय श्रीरामानुजजीके विद्यार्थी कुरेशने शास्त्रार्थमें अपने मतको स्थापन करके यादवको परास्त किया । तव यादव पण्डितने ज्ञान पाकर गृहस्थाश्रम परित्याग कर रामानुज मतको ग्रहण किया । उस समयसे उनका नाम गोविन्ददास पड़ा जिन्होंने 'यतिधर्म समुच्चय' नामक ग्रन्थ बनाया । कुछ समयके पीछे यामुनाचार्यके पुत्र वररङ्गस्वामीने रामानुजस्वामीको लाकर रङ्गनाथजीको समर्पण करदिया । स्वामीने अपने संप्रदायके मालाधार नामक पण्डितसे शठकोपाचार्यकृत सहस्रगीतिकाका व्याख्यान सुना । उसके पश्चात् रामानुजस्वामी देशाटनको निकले और वेंकटगिरि होते हुए उत्तरको चले । वह दिल्ली, बदरिकाश्रम इत्यादि स्थानोंमें होकर अष्टसहस्र नामक गाँवमें आये । उन्होंने वहाँ वरदाचार्य और यज्ञेश नामक अपने दो शिष्योंको मठाधिपति नियुक्त किया और हस्तिगिरिमें पूर्णाचार्यादिसे मिलनेके पश्चात् कापिल तीर्थमें जाकर उस देशके राजा विट्ठलदेवको अपना शिष्य बनाया । राजाने तोण्डीरमण्डल आदि अनेक गाँव उनको दिये वहाँसे वह रङ्गनगर लौट आये । रामानुजस्वामीने वेदान्त सूत्रपर श्रीभाष्य, वेदान्तदीप, वेदान्तसार और वेदान्तसंग्रह और गीताभाष्यादि वहुतसे ग्रन्थ बनाये । उसके पीछे उन्होंने वहुतसे शिष्योंके साथ चोलमण्डल, पाण्ड्यमण्डल, कुरुङ्ग इत्यादि देशोंमें जाकर वैष्णव धर्मका प्रचार किया और कुरुङ्ग देशके राजाको दीक्षित करके केरल देश अर्थात् मलेवारके पण्डितोको जीता । वहाँसे वह क्रमसे द्वारिका, मथुरा, काशी, अयोध्या, वदरिकाश्रम, नैमिषारण्य, वृन्दावन आदि तीर्थोंमे होकर फिर द्वारका आये और वहाँसे पुरुषोत्तम क्षेत्रमें पहुँचकर बौद्धोंको परास्त करके वहाँ रामानुजमठमें रहने लगे पीछे वह वहाँसे वेङ्कटगिरि आये । चोलदेशके क्रिमिकण्ठ नामक राजाने, जो शैव था, शास्त्रार्थके लिये स्वामीको वुलाया । वह कुछ दिनों तक मार्गके भक्तनगरमें रह गये । उन्होंने स्वप्नसे जानकर शाका १०१२ (सन् १०९० ईस्वी) में पौष शुक्ला चौदसको पुनर्वसु नक्षत्रमें यादवाचलकी छिपी हुई भगवन्मूर्त्तिको निकाला और उसकी वहाँ प्रतिष्ठा करदी । अन्त समयमें रामानुजस्वामीने अपने शिष्योंसे कहा कि अव चार दिनमें मैं परम धामको जाऊँगा । ऐसा सुन शिष्यगण व्याकुल हो पृथ्वीमें गिर गये और अपने शरीरके त्याग करनेका विचार करने लगे । तव स्वामीजीने उनको शपथ धराया कि तुम लोग हमारे वचनका निरादर करके हमारे वियोगसे शरीर परित्याग करोगे तो तुमको पाप लगेगा । तव शिष्योंने कहा कि हम लोग जिस प्रकारसे तुम्हारे वियोगसे शरीर धारण करें, उसका

उद्योग आप करदे। ऐसा सुन स्वामीजीने अपने विग्रहका निर्माण किया और भूतपुरीमे केशव भगवान्‌के निकट उसकी स्थापना करवा दी। रामानुजस्वामीके अनेक विग्रह देश देशान्तरमे स्थापित हुए। जिनमें भूतपुरी, यादवगिरि और रङ्गस्थल ये तीन स्थानकी प्रतिमा मुख्य हैं, इनमे भूतपुरीका विग्रह सर्वप्रधान है। चैत्रमासके आर्द्रा नक्षत्रमें उसके अभिषेक करानेसे मनुष्यको विष्णुलोक मिलता है। उसके पश्चात् माघ सुदी दशमी शनिवारको मध्याह्नके समयमें श्रीरामानुज स्वामीजीने १२० वर्षकी अवस्थामें रङ्गपुरीमें अपना शरीर छोड़कर विष्णुलोकको प्रस्थान किया।

दानपत्रादिकोंसे और दक्षिणके राजाओंके घरके लेखोंसे निश्चय होता है कि सन् ईस्वीके ११ वें शतकके प्रथम चरणके किसी सन्में रामानुजस्वामीका जन्म हुआ था और १२ वीं सदीमें वह थे। रामानुजस्वामीके शिष्य अनन्ताचार्यकी बनाई हुई श्रीवेङ्कटाचल इतिहासमाला नामक संस्कृतकी पुस्तक है। उसके प्रथम स्तवकमें लिखा है कि रामानुजस्वामीने शाका ९३९ (सन् १०१७ ई०) में तुण्डीर मण्डलकी भूतपुरीमें जन्म लिया। पीछे वह रङ्गनगरमे निवास करने लगे। प्रपन्नामृतमें लिखा है कि १२० वर्षकी अवस्थामें उनका देहान्त हुआ, इस लेखसे सन् ११३७ ई० में उनका देहान्त होना सिद्ध होता है।

रामानुजस्वामीने विष्णुके एक ईश्वर होनेका उपदेश दिया और वैष्णव मतके बहुतसे ग्रन्थ बनाये। उनके पश्चात् दाशरथी, पूर्णाचार्य, गोविन्दाचार्य,और कुरुक ये ४ शाखाप्रवर्त्तक हुए।

रामानुजीय संप्रदायके प्रथम आचार्य शठकोपाचार्य थे, जिनका जन्म पाण्डय देशमें ताम्रपर्णी नदीके किनारेके कुरगा नगरीमें हुआ था। उनके पिताका नाम कारी और माताका नाम नाथनायकी था। इस संप्रदायमें रामानुजस्वामीसे पहिले नाथार्य, पंकजाक्ष, राममिश्र, यामुनाचार्य, गोष्ठिपूर्ण, महापूर्ण (अर्थात् पूर्णाचार्य), मालाधारगुरु, श्रीशैलपूर्ण, वररङ्ग और कांचीपूर्ण ये १० आचार्य हुए; जिनको पूर्वाचार्य कहते हैं। उनके अतिरिक्त इस संप्रदायमें कासार, भूत, महत्, भक्तिसार, शठारि, कुलशेखर, विष्णुचित्, भक्तांघ्रिरेणु, मुनिवाह और चतुष्कवीन्द्र ये १० सूरि हुए। इनमे भट्टनाथकी कन्या गोदादेवी और रामानुजस्वामीको मिलाकर १२ दिव्य सूरि कहे जाते हैं। कोई कोई गोदादेवीको छोडकर मधुर कविको मिलाकर १२ दिव्य सूरि कहते हैं। ऊर्द्धलिखित १० पूर्वाचार्य और १२ सूरियोंने अपने अपने नामके ग्रन्थ बनाये और जगत्में अपने धर्मका विस्तार किया।

लगभग ३०० वर्ष हुए कि भक्तमालको नाभाजीने बनाया था। उसके ३६ वे ३७ वें और ३८ वें छप्पैमें लिखा है कि श्रीरामानुजजीकी पद्धतिका प्रताप पृथ्वीपर अमृतके समान फैला। रामानुजस्वामीके पीछे उनकी गद्दीपर देवाचार्य, देवाचार्यके पश्चात् हरियानन्द, हरियानन्दके बाद राघवानन्द और राघवानन्दके पीछे रामानन्द हुए। रामानन्दजीने संसार-सागरके तरनेके लिये पुल बॉध दिया। उनके अनन्तानंद, कवीरजी, सुखानन्द, सुरेश्वरानन्द, पद्मावत, नरहरी, पीपा (राजा), भावानन्द, रैदास (चमार), धना (जाट), सेन (हजाम), और एक दूसरा (ये १२) प्रसिद्ध शिष्य थे। अनन्तानंदके चरणका स्पर्श करके योगानन्द, गयेश, कर्मचन्द, अल्ह, पयहारी, रामदास, श्रीरङ्ग इत्यादि लोग लोकपालके समान होगये। उनके गुणकी महिमाकी भारी अवधि हुई इत्यादि।

रामानन्दजीने चौदहवीं सदीमें श्रीसंप्रदायका अपना दूसरा पन्थ चलाया, जिस मतके लोग रामानन्दी वैष्णव कहलाते हैं और सब जातिके (वैरागी) लोग एकही पंक्तिमें भोजन करते है। उनके मतमें हिन्दू जातिके सब लोग ईश्वरके भजन करनेको एक समान अधिकारी है। रामानन्दजीके शिष्योमे कबीरजीसे कबीरपन्थी मत नियत हुआ,जिसमें कबीरजीके पश्चात् सुरतगोपाली, तकसरी, नूलपन्थी, योगीपन्थी, जीवपन्थी, नामकबीर; ज्ञानीपन्थी, दवनपंथी, समपंथी, वंशघराना, नारायणपंथी, कमालपंथी इत्यादि १३ पन्थ हुए। कमालपंथीको आधापन्थ कहनेसे १२॥ पन्थ होते है।

रामानंदजीके पश्चात् अनंतानन्द, कृष्णदास; किल्हदास, अग्रदास, नारायणदास (अर्थात् भक्तमालके बनाने वाले नाभाजी) और गोविंददास आदि जयपुर राज्यके रामगढ़ और गलिता गद्दीमें हुए थे। भक्तमालके ४२ वें, छप्पैमे लिखा है कि अग्रदासका ऐसा मत है कि सर्वदा हरिभजन करना उचित है। उसके तिलकमें, जिसको संवत् १७६९ में प्रियादासने बनाया था; लिखा है कि महाराज मानसिंह अग्रदासके दर्शनके लिये उनकी कुटी (अर्थात् गलिता गद्दी) में आये। अग्रदास, जो पत्तोंको फेंकनेके लिये बाहर गये थे, भीड़ देखकर आम्र वृक्षके नीचे बैठगये। नाभाजीने अग्रदासको आये हुए देखकर उनको साष्टांग प्रणाम किया। इस लेखसे जान पड़ता है कि अग्रदासजी और नाभाजी सोलहवीं सदीके अन्तमें थे, क्योंकि आँवेरके राजा मानसिंह मुगल बादशाह अकबरके सूबेदार थे, जिन्होंने सन् १५९० ईस्वीमें मथुरा जिलेके वृंदावनमें गोविंददेवजीका मन्दिर बनवाया।

रामानुज संप्रदायके लोग आचारी कहे जाते हैं। इनका मत विशिष्टाद्वैत अर्थात् मायाविशिष्ट ब्रह्म और उपास्य देव साकार ब्रह्म नारायण है। ये लोग अपनी भुजाओंपर तप्त शंख चक्रकी छाप लेते है और ललाटपर चौड़े ऊर्ध्वपुण्ड्र चढ़ाते हैं, जिसके मध्यमें पीत वर्णकी श्री और उसके दोनों तरफ शुक्लवर्णकी मोटी लकीरें रहती हैं। आचारी लोग द्राविड़ देशकी रीत्यनुसार पर्देके भीतर भोजन करते हैं। इस मतकी दो शाखा अर्थात् वड़गल और तिंगल बहुत प्रसिद्ध हैं, पीछे रामानन्द इत्यादि इसकी अनेक शाखा हुई। इस मतके लोग भारतवर्षके सब प्रान्तोंमें देख पड़ते हैं, किन्तु मद्रास हातेके तैलङ्ग, कर्नाटक, मलेबार आदि अङ्गरेजी राज्योंमें तथा मैसूर और तिरुवांकूर आदि देशी राज्योंमें ये लोग बहुत है। उन देशोंमें स्थान स्थानपर मन्दिर और मकानोंके बाहर रामानुज संप्रदायके तिलक लिखे हुए अथवा खोदे हुए देख पड़ते हैं। उनके दोनों ओर शंख चक्रका चिह्न भी रहता है। द्रविड़में आचारी लोगोंकी ८ गद्दी हैं:—उनमेंसे तोताद्री, मैलकोटा और बालाजी अर्थात् वेंकटाचल, ये ३ गद्दी विरक्त आचारीकी और विष्णुकांची, श्रीरंगम् इत्यादिकी ५ गद्दी गृहस्थ आचारीकी है। सम्पूर्ण गद्दियोंमें तोताद्रीकी गद्दी मुख्य है जिसको लोग मूलगद्दी कहते हैं।

द्रविड़ देशमें शैव और आचारी वैष्णवोंका परस्पर द्वेष चला आता है। शैव लोग विष्णुका नहीं; किन्तु आचारीके मत और उनके तिलक तथा छापकी निन्दा करते हैं, परन्तु आचारी लोग शिव और शैव दोनोंसे द्वेष रखते हैं। उनमेंसे बहुतेरे लोग बदरिकाश्रममें जाकर केदारनाथको छोड़ देते हैं, रामेश्वरपुरीमें जाकर रामेश्वर शिवका दर्शन नहीं करते, समुद्रमें स्नान और रामझरोखेमें रामका दर्शन करके चले आते हैं तथा काशीजीमें जाकर

मणिकर्णिकामें स्नान करके बिना विश्वनाथके दर्शन किये हुए अपने घर लौट जाते हैं। इस सम्प्रदायमें बहुत लोग संस्कृतके पढ़नेवाले हैं। शैव लोग आचारी लोगोंके तिलक छापको अप्रमाणिक कहते हैं, किन्तु, पद्मपुराणमें इसके प्रमाण देख पड़ते हैं, जो नीचे लिखी हुई प्राचीन कथासे ज्ञात होंगे।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—पद्मपुराण—(भूमिखण्ड, ७६ वॉ अध्याय) राजा ययातिकी आज्ञासे सम्पूर्ण भूमण्डलके सब मनुष्य भागवत होकर विष्णुके ध्यानमें परायण हुए। सबके मन्दिर पताकाओ और शख, चक्र तथा गदाओंसे युक्त हुए। ब्राह्मण आदिक सम्पूर्ण वर्णके लोग शंख चक्र तथा बाणादिकोंसे अंकित होगये, तथा पद्मादिकोंसे भी चिह्नित होकर प्रकाशित होने लगे। सबके गृहोंके द्वारोंपर शंख पद्म इत्यादिके चिह्न विद्यमान हुए। नारियोंने अपने अपने गृहके द्वारोंपर शंखादिकोंके चित्र बना दिये। (स्वर्गखण्ड ७० वॉ अध्याय) शालग्राम और चक्रांकित ब्राह्मणके समीप श्राद्ध करनेका उत्तम स्थान है।

(पातालखण्ड, ७९ वां अध्याय) चांडाल भी ऊर्ध्वरेखासे युक्त ऊर्ध्वपुंड्र अपने ललाटपर देनेसे निःसन्देह शुद्धात्मा होजाता है, और पूजा करनेके योग्य होता है।

(उत्तरखण्ड, ७५ वॉ अध्याय) गंडकी नदीके पास, जहाँ शालग्राम शिला उत्पन्न होतीहैं, नारायण नित्य स्थित रहते हैं। जो मनुष्य शंख और चक्रका चिह्न धारण करके उनके समीप निवास करता है, वह मरनेपर चतुर्भुज होकर विष्णुलोकमे चला जाता है। प्रति वर्षके आषाढ़ मासमें शिवजी वहाँ जाकर निवास करते हैं। श्रेष्ठ ब्राह्मणोंको उचित है कि आषाढ़ मासमें वहाँ जाकर शंख चक्रादिकोंके चिह्नोंको धारण करें। उनको बाये हाथमें शंख और दहिने हाथमें चक्रका चिह्न धारण करना चाहिये, इससे उनकी मुक्ति होती है।

(२२४ वाँ अध्याय) शिवजीने पार्वतीजीसे कहा कि विष्णुजीकी १६ प्रकारकी भक्ति है,—(१) शंख चक्रका चिह्न धारण करना, (२) ऊर्ध्वपुण्ड्रोंका धारण, (३) उनके मन्त्रोंका परिग्रह, (४) अर्चन, (५) जप, (६) ध्यान, (७) नामका स्मरण, (८) कीर्त्तन, (९) श्रवण, (१०) वन्दन, (११) चरणसेवन, (१२) विष्णुके चरणके जलकी सेवा, (१३) उनका प्रसाद भोजन, (१४) उनके भक्तोंकी सेवा, (१५) द्वादशी व्रत करना और (१६ वीं) तुलसी वृक्षका लगाना। ब्राह्मणोको उचित है कि अपनी भुजाओं पर अग्निसे तपा कर शंख और चक्रका चिह्न धारण करें। वे लोग चक्र वा शंख चक्र अथवा शंखादिक पांचों आयुध धारण करके ब्राह्मणके कर्मका विधिपूर्वक आरम्भ करें। ऐसा करनेसे उनको विष्णुका परमपद मिलता है तथा मोक्ष प्राप्त होता है। चक्रसे चिह्नित भुजावाले ब्राह्मणोंको गऊ पृथ्वी और सोना आदिक वस्तु दान देना उचित है। ब्राह्मणोंको तपे हुए शंख चक्र और स्त्रियों तथा शूद्रोंको सुगंधित चन्दनसे शंख चक्र अपनी भुजाओंपर धारण करना चाहिये। वर्णसे बाह्य भी वैष्णव त्रिभुवनको पवित्र करता है। ब्राह्मण बाईं भुजामें शंख और दाहिनीमें चक्र धारण करें। इस भाँति महोपनिषद तथा साम और यजुर्वेदमें चक्र आदि धारणका विधान कहा है। जिनके कण्ठमें तुलसी और रुद्राक्षकी माला, भुजाओंपर शंख चक्रका चिह्न और ललाटपर ऊर्ध्वपुण्ड्र रहता है वे लोकको पवित्र करते है। वैष्णवोंको उचित है कि अपने स्त्री, पुत्र, नौकर, पशु आदिकोको भी शंख चक्रादिकोंके चिह्नोंसे चिह्नित करादें।

(२२५ वाँ अध्याय) ऊर्ध्वपुण्ड्रके मध्यमें लक्ष्मीजीके साहित जनार्दन भगवान् बैठे रहते हैं; इस कारणसे जिसके शरीरमें ऊर्ध्वपुण्ड्र रहता है, उसका शरीर भगवान्का निर्मल मन्दिर है। ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करनेवालेको देखकर मनुष्य सब पापोंसे छूट जाते हैं। ब्राह्मणोंका तिलक ऊर्ध्वपुण्ड्र, क्षत्रियोंका पट्टाकार और वैश्यों तथा शूद्रोंका त्रिपुण्ड्र है क्षत्रिय आदिक वैष्णव भी ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण कर सकते हैं, किन्तु ब्राह्मणोंको त्रिपुण्ड्र धारण करना नहीं चाहिये।

ग्यारहवां अध्याय।

(मद्रास हातेमें) मद्रास और महाबलीपुरके गुफामन्दिर।

मद्रास।

तिरुवल्लूरसे २६ मील (आरकोनम् जंक्शनसे ४३ मील) पूर्व और बम्बईसे रेलवे द्वारा ७९४ मील दक्षिण पूर्व मद्रास शहरका रेलवे स्टेशन है। समुद्रके मार्गसे मद्रास शहरसे ७३० मील पूर्वोत्तर कलकत्ता है। रेलवेके रास्तेसे मद्रास शहरसे गुंटकल जंक्शन, रायचुर जंक्शन, मनमार जंक्शन, भुसावल जंक्शन, नागपुर जंक्शन, आसनसोल जंक्शन और हवड़ा होकर २१९३ मील कलकत्ता शहर है; किन्तु गुंटकल जंक्शन, वेजवाडा जंक्शन, कटक, खड्गपुर जंक्शन, उलबड़िया और हवड़ा होकर केवल १३११ मील दूर है *।

मद्रास शहरसे रेलवे लाइन २ तरफ गई है।

(१) मद्रास शहरसे दक्षिण-कुछ पश्चिम "सौथ इण्डियन रेलवे," जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई लगता है;—

मील	प्रसिद्ध स्टेशन।
५	सैदापेट।
३४	चेंगलपट्ट जंक्शन।
७५	टिण्डीवरम्।
९८	विलीपुरम् जंक्शन।
११०	पनरूटी।
१२५	कड्लूर नया।
१२७	कड्लूर पुराना।
१४४	पोर्टोनोवे।
१५१	चिदम्बरम्।
१६१	सियाली।
१७४	मायावरम् जंक्शन।

चेङ्गलपट्ट जंक्शनसे पश्चिमोत्तर २२ मील कांचीपुर और ४० मील आरकोनम् जंक्शन।

विलीपुरम् जंक्शनसे रेलवेके स्टेशनोंका फासिला विलीपुरम्के वृत्तान्तमें देखिये।

(२) मद्रास शहरसे पश्चिमोत्तर "मद्रास रेलवे," जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील १३/७ पाई लगता है;—

मील	प्रसिद्ध स्टेशन।
२६	तिरुवल्लूर।

* हालकी एक नई लाइन निकल जानेसे अब मद्रास शहरसे कलकत्ता केवल १०२३ मील पड़ता है,—मद्राससे पूर्वोत्तर नेल्लूर और अंगोल होकर २६७ मील वेजवाडा जंक्शन, ७७० मील कटक और १०२३ मील कलकत्तेके पास हवडाका रेलवे स्टेशन है।

४३ आरकोनम् जंक्शन।
५१ तिरुतानी।
८४ रेणुगुन्टा जंक्शन।
१६२ कड़पा।
२२८ ताड़पत्री।
२५८ गूटी
२७६ गुण्टकल जंक्शन।
३०८ अदोनी।
३३४ तुङ्गभद्रा।
३५१ रायचुर।

आरकोनम् जंक्शनसे पूर्व दक्षिण १८ मील कांचीपुर और ४० मील चेङ्गलपट्ट जंक्शन।

रेणुगुण्टा जंक्शन और गुण्टकल जंक्शनसे रेलवेके स्टेशनोका फासिला उनके वृत्तान्तमे देखिये।

(३) *

मदरास शहरसे उत्तर ओर एक नहर गोदावरी जिलेको और दक्षिण ओर दूसरी नहर दक्षिणी आरकाट जिलेको गई है। मदरास शहरसे पूर्वोत्तर एक सड़क अङ्गोल, वेजवाड़ा, राजमहेन्द्री, विजयानगरम्, ब्रह्मपुर, गञ्जाम, कटक, भद्रक, वलेश्वर, मेदनीपुर, होकर कलकत्तेको; दूसरी सडक दक्षिण-पश्चिम विलीपुरम्, तिरुचनापल्ली, मदुरा और मनियार्ची होकर कन्याकुमारीको और तीसरी सड़क पश्चिम ओर कटपड्डी जंक्शन और जालारपेट जंक्शनके पाससे होकर बङ्गलोर शहरको गई है।

पूर्वीघाट अर्थात् कारोमण्डलके किनारेपर (१३ अंश, ४ कला ६ विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश, १७ कला, २२ विकला पूर्व देशान्तरमें) मदरास हातेकी राजधानी और उस हातेमें प्रधान शहर मदरास है, जिसको द्रविडियन लोग चेनापट्टनम् कहते हैं। वह शहर अपनी शहरतलियों अर्थात् उपपुरोंके सहित समुद्रके किनारेपर एक म्युनिसिपल्टीके भीतर ९ मील लम्बा और लगभग ३½ मील चौडा २७ वर्गमीलके क्षेत्रफलमे फैला हुआ है, जिसके भीतर खास शहरके अलावे १४ गाँवभी हैं। क्षेत्रफलके भीतर किले, देशी कसबे और शहरतलियोंके आसपास जोती हुई भूमिभी है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय किलेके साथ मदरास शहरमें ४५२५१८ मनुष्य थे, अर्थात् २२५८१७ पुरुष और २२६७०१ स्त्रियाँ। इनमें ३५८९९८ हिन्दू, ५३१८४ मुसलमान, ३९७४२ क्रस्तान, २८१ जैन, १२९ बौद्ध, ४५ पारसी, ४ यहूदी और १३५ अन्य थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें तीसरा और मदरास हातेमें पहिला शहर है।

मदरास शहरके समयके मुताबिक भारतवर्षकी सम्पूर्ण रेलवेकी घडियाँ रहती हैं। जब मदरास शहरकी लोकल घड़ीमें ६ बजता है, उस समय कलकत्तेमें ६ बजके ३३ मिनट, इलाहाबादमें ६ बजके ७ मिनट, आगरामें ५ बजके ५० मिनट; दिल्लीमें ५ बजके ४७ मिनट, और बम्बईमें ५ बजके ३० मिनट, रहता है, अर्थात् मदरास शहरके सूर्योदयसे ३३ मिनट पहिले कलकत्तामें, ७ मिनट पहिले इलाहाबादमें, १० मिनट पीछे आगरामें, १३ मिनट पीछे दिल्लीमें और ३० मिनट पीछे बम्बईमें सूर्योदय होता है।

---

* मदरास रेलवेकी एक लाइन मदरास शहरसे उत्तर वेजवाडा जंक्शनमें जा मिली है,—उसपर मदरासे ८५ मील गुडूर, १०९ मील नेल्लूर, १८१ मील अगोल-और २६७ मील वेजवाडा जक्शन है।

यद्यपि मदरास शहर देखनेमें बहुत सुन्दर नहीं है और उसमें अत्युत्तम सड़कें नहीं बनी हैं, तथापि उत्तम कारीगरीकी बहुतसी इमारतें और ऐतिहासिक दिलचस्पीकी बहुतसी जगहें हैं। दूरसे किले, सौदागरोंके अनेक आफिसो; चन्द मीनारों, और सरकारी आफिसोंके सुन्दर दृश्य दृष्टिगोचर होते हैं।

शहरमें छोटी बड़ी चार पॉच धर्मशालायें हैं, जिनमेंसे एक सौथइण्डियन रेलवेके स्टेशनसे शहरमें जानेवाली सडकके पास और दूसरी स्टेशनसे २ मील दूर शहरके भीतर मारवाड़ी धर्मशाला है।

मदरासके बन्दरगाहके पास तथा उससे दक्षिण कष्टमहौस, टेलीग्राफ आफिस, बङ्क, कमसरियटका स्तबल, मदरास मेल आफिस, पोष्टआफिस, हाईकोर्ट तथा कारोबारके अन्य मकान समुद्रके किनारेपर फैले हुए हैं, उनके पश्चिम देशी लोगोंकी बनी बस्ती है, जिसमें एक बड़ी सड़कके बगलोंमें बड़ीबड़ी दूकानें, मदरासबंक और कई गिरजे हैं। देशी बस्तीसे दक्षिण समुद्रके किनारेपर लगभग २ मील लम्बे और ¾ मील चौड़े मैदानमें किला, कूउम नदीका टापू, परेडकी भूमि, गवर्नमेंट हाउस और कई एक दूसरी सुन्दर इमारतें हैं। उस भागके दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण तिरुवलेश्वरम्, पेट, पूदूपाक, रायपेटम्, कृष्णस्पेट इत्यादि महल्ले हैं। उस भागके पश्चिम पुदूपेट और एक दूसरे महल्लेमे खासकर यूरोपियन लोग बसते हैं। इनके अलावे अन्य कई महल्लों और शहरतलियोंमें बहुतसे यूरोपियन बसे हुए हैं। मदरासकी प्रधान सड़क मांउटरोड है, जो किलेसे दक्षिण-पश्चिम सेंटथमस मांउटतक चली गई है। उसके बगलोंमें सुन्दर वृक्ष लगे हुए हैं; परन्तु उसके किनारोंपर अच्छे मकान बहुत नहीं हैं। इसके अलावे कैथेड्रलरोड, जो मांउटरोडको काटता हुआ निकला है; और मउब्रेरोडभी अच्छी सड़क है। कूउम नामक एक छोटी नदी किलेसे आधा मील दक्षिण, म्युनिसिपल्टीके हदके भीतर समुद्रमें गिरती है, जिससे बनी हुई टापूके दक्षिण-पश्चिम मदरासके गवर्नरकी कोठी, जिसका दरवाजा मांउटरोडके पास है, खड़ी है। किलेसे मांउट-रोडको जाने वाली सड़कके मध्यमें नदीके टापूके भीतर सरटीमसनरोंकी धातकी प्रतिमा बनी हुई है, जो चन्देके ९०००० रुपयेके खर्चसे सन् १८३९ में तैयार हुई। किलेसे पश्चिमोत्तर खास शहरके पश्चिम एक बड़े क्षेत्रफलमें कई एक बड़े तालाव, दो पार्क और अनेक बागान हैं, जहाँ टहलनेके लिये बहुत लोग जाते है। उसके दक्षिण टाउन हाल है। सौथइन्डियन रेलवेके स्टेशनसे आधा मीलसे अधिक पश्चिम "इसपरटंक" नामक टेढ़ा तालाव है।

मदरासकी इमारतोमे हाईकोर्ट, गवर्नरकी कोठी 'केथेड्रल, मेमोरियल हाल, सिनेटहाउस' कालिज, सेंट्रल रेलवेका स्टेशन; टेलीग्राफ आफिस, पोष्टआफिस, अजायबखाना, अवजरवे-टरी, बड़ी लाइब्रेरी, अनेक अस्पताल, अधिक खियालके लायक है। किलेसे २ मील दक्षिण-पश्चिम मदरास क्रव बड़ी इमारत है। मदरासकी लाइब्रेरियोंमेंसे 'रायल एसियाटिक सोसा-इटी' की शाखा और 'लिटरेरी सोसाइटी' में लगभग १७००० किताव रक्खी है।

सन् १८०८ का कायम हुआ एक गरीबखाना है, जिसका निर्वाह साधारण चन्दे और सरकारके खर्चेसे होता है, उसमें गरीव, निर्वल तथा अनाथ लोगोंको भोजन और वस्त्र ... ाभग ४०० पुरुष और स्त्रियोंके रहनेका स्थान बना हुआ है। मदरासमें ... एक उत्तम अस्पताल है, जिसमें रोगियोंके लिये ३०० से अधिक

-मदराससे पूर्वोत्तर नेल्लूर ...
२३ मील कलकत्तेके पास है

सन् १८८२-१८८३ में मद्रासके ५ कालिजोंमे ७८७ विद्यार्थी ३ कालिजोंमें, जा पेशे सिखलानेके लिये हैं, २१७ विद्यार्थी १४ अङ्गरेजी हाईस्कूलोंमे, १२६३ विद्यार्थी ५५ अङ्गरेजीके मिडिल स्कूलोंमे ३४६१ विद्यार्थी थे। इनके अलावे देशी भाषाके बहुतसे मिडिल स्कूल थे।

खास शहरके उत्तर भागमें दिवानीका जेलखाना, रोमनकैथोलिक चर्च, शिल्पकारीका स्कूल, कई अन्य स्कूल और अस्पताल है।

किलेसे पश्चिम जनरल अस्पताल और मेडिकल कालिज है। कूड्म नदीसे बना हुआ टापूके पश्चिम नेपियरपार्क, एक गिरजा और स्कूल और दक्षिण ओर समुद्रके पास सेनेटहाउस, इञ्जनियरिंग कालिज, प्रेसीडेन्सी कालिज, हिन्दुओंका श्मशान, पुलिस इन्स्पेक्टर जनरलका आफिस, सेण्टहोमका चर्च और यतीमखाना है।

मद्रासमे बड़ी फौजीछावनी है जिसमें ३००० से अधिक सैनिक लोग जिनमें लग भग ११०० यूरोपियन हैं, रहते है। बहुतसे गिरजे हैं। जलकल सर्वत्र लगी है। सड़कों पर रात्रिमें लालटेनोंकी रोशनी होती है। सवारीके लिये तांगे घोडे गाड़ी और बैलगाडी मिलती हैं।

खास शहरके, जिसमें देशी लोगोंकी घनी वस्ती है, पूर्वके बन्दरगाहमें ४० फीट चौडा एक पुश्ता बना है, जो किनारेसे पानीके भीतर १ हजार फीट लम्बा है। उस पर जहाजके मुसाफिर उतरते हैं। सब देशोंके जहाज बन्दरगाहमे आते हैं और सब देशोंमें जानेके लिये बन्दरगाहसे खुलते हैं। गल्ला, रुई, काफी, नील, तेलहन, रङ्ग, चीनी, चमडा, सींग, इत्यादि वस्तु मदराससे दूसरे देशोंमें भेजी जाती हैं और लोहा इत्यादि धातु खुर्दा चीजे और यूरोपियन कारीगरीकी विविध भाँतिकी चीजे दूसरे देशोंसे मद्रासमें आती हैं।

उस देशकी रीतिके अनुसार मद्रास शहरके पायखानोंमें पर्दे नहीं हैं। बड़े पायखानोंके बाहर बीड़ी बिकती है। उस देशके लोग मलत्याग करते समय बीड़ी पीते हैं और जोर सोरसे परस्पर बातें करते हैं उत्तरी भारतवर्षकी स्त्रियोंके समान वे लोग मलत्यागके समय परस्पर लज्जा नहीं करते। अत्रिस्मृतिके ३१९ वे और ३२० वें श्लोकमें लिखा है कि मलत्यागने, लघुशंका करने और होम करनेके समय मौन धारण करना उचित है।

नई हाईकोर्ट—खास शहरके दक्षिण पोष्टआफिस और पोष्ट आफिससे दक्षिण समुद्रके किनारेसे कई सौ गज पश्चिम १ लाख वर्गफीट भूमि पर नई हाईकोर्ट बनी है। दूरसे उसकी दो मञ्जिली ३ मञ्जिली इमारतोंके सुनहरे कलशोंके साथ बीसहाँ गुम्बजोंका मनोहर दृश्य देखनेमें आता है। उसके भीतरकी लकड़ीकी नकाशी और रङ्गोकी आरास्तगी देखने लायक है। उसमें जज लोगोके ४ इजलास है। सन् १८८८ मे हाईकोर्टका काम आरम्भ हुआ और सन् १८९२ में इमारत तैयार होकर उसमे कचहरियोंका काम होने लगा।

किला—हाईकोर्टसे दक्षिण "फोर्टसेण्टजर्ज" नामक किला है। किलेके आगे अर्थात् पूर्व ओर समुद्रके किनारे पर चौडी सडक बनी हुई हैं। किलेके पूर्वका अगवास सीधा है, लेकिन पश्चिमका अगवास अर्द्धचन्द्राकार बना हुआ है। किलेकी दीवारके पास जगह जगह तोपोंके बुर्ज हैं। किलेके बाहर गहरी खाई और भीतर बहुतसे फौजी आफिस यूरोपियन

वारक अर्थात सैनिक गृह, तोपखाना, चंद गवर्नमेण्ट आफिस और सेटमेरीका चर्च है, जो सन् १६७८से १६८० तक बना था। उसमें कई एक अङ्गरेजी अफसर दफन किये गये हैं। किलेके भीतरकी प्रायः सब इमारतें दो और तीन मञ्जिलकी हैं। किला आम लोगोंके लिये खुला रहता है। किलेके बुर्जसे समुद्र और जहाजोंका उत्तम दृश्य दृष्टिगोचर होता है। किलेसे ½ मील पश्चिम जेलखाना है।

गवर्नमेण्ट हाउस–किलेसे करीब ½ मील दक्षिण-पश्चिम गवर्नमेण्ट हाउस है; इसका प्रधान दरवाजा उत्तरको है। पत्थरकी चौड़ी सीढ़ियों द्वारा उसके निकट पहुँचना होता है। श्रीरङ्गपट्टनम्के फतेहकी यादगारमें इसका हाल (बड़ा कमरा) बना। भीतर चारों तरफकी दीवारोंमें टीपूसुलतान, महारानी विक्टोरिया, बहुतेरे वाइसराय, बहुतेरे लार्ड और बहुतेरे सरीफ अङ्गरेज अफसरोंकी तस्वीरें हैं। दूसरे कमरोंमें अनेक शरीफ अङ्गरेज और हिन्दुस्तानके बहुतेरे नवाबोंकी तस्वीरें देखनेमें आती हैं।

अजायबखाना–अजायबखानेका अङ्गरेजी नाम मिउजियम, पारसी नाम अजायबखाना और हिन्दी नाम जादोघर है। किलेसे करीब २ मील पश्चिम कुछ दक्षिण पंथियन रोडके पास दो मञ्जिला अजायबखाना है, जो ६॥ बजे सुबहसे ५ बजे शाम तक खुला रहता है। सालमें करीब ४ लाख आदमी इसको देखते हैं।

सन् १८४६ में इसकी चीजोंके बटोरका काम आरम्भ हुआ। प्रथम इसके असबाब कालेज हालमें रक्खे गये थे; किन्तु सन् १८५७ में वर्तमान मकानोंमे लाये गये; तबसे इसमें रखनेके असबाबोंके बटोरका काम जारी है। अब इस मिउजियममे उत्तम नमूनोंका जमाव होगया है। जो अब तक बिना जाने हुए जानवर थे, उनमेंसे बहुतेरे तलाश करके इसमें रक्खे गये हैं, जिससे यह मिउजियम मशहूर हुआ है।

इसमें तरह तरहके जल थलके मरे हुए जानवर अर्थात् मछली, घड़ियाल, शंख, घोंघे, सीप, पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि- सामुद्रिक चीजें अर्थात् फेन, जलकी लकड़ी, लतर आदि; जङ्गलकी किसिम किसिमकी लकड़ियाँ; देश देशके गहने, कपड़े, बर्तन, पत्थर और पीतलकी मूर्त्तियाँ, बाजा, मसाला, रेशम, नकली फल, और खानिक चीजोंके नमूने हैं। एक मगरकी हड्डी ४८ फीट लम्बी है। एक लोहेका बखतर (सनाह) है। एक जगह सोने चांदी और ताम्बेके सैकड़ों तरहके हजारों सिक्के रक्खे हुए हैं। एक जगह तञ्जोरके भांति-भांतिके बहुतसे हथियार, हाथी दाँतकी बनी हुई तञ्जोरके राजाकी सभा और तञ्जोरके बड़े शिव मन्दिरका नमूना है। अजायबखानेमें बहुतेरी ऐसी चीजें है, जिनको देखनेसे अङ्गरेजी तथा हिन्दुस्तानी कारीगरी और तरीकों तथा देशकी पुरानी वस्तुओंका भली भांति परिज्ञान होता है। अजायबखानेसे लगा हुआ एक पढ़नेका कमरा और एक साधारण लोगोंका पुस्तकालय है, जिसमें विविध प्रकारकी किताबोंके लगभग ८००० जिल्दें रक्खी हुई हैं।

बोटैनिकल गार्डन–(पौधा सम्बन्धी बाग) यह कैथेड्रलके पास २२ एकड़ जमीनपर बहुत सुन्दर तरीकेमें लगाया गया है। इसमें भांति भांतिके दुर्लभ वृक्ष और झार लगे हैं, दो सुन्दर छोटे तालाब है और एक लाइब्रेरी बनी हुई है। डाक्टर राइटके उद्योगसे सन् १८३६ में यह बाग कायम हुआ।

रानी बाग—यह सेंट्रल रेलवे स्टेशनके पास १०६ एकड़ भूमिपर है। इसके भीतरकी कुल सडक ५ ३/४ मील लम्बी है। इसमें बनाई हुई बहुतेरी झील, एक पबलिक हम्माम, गेंद खेलनेकी जगह, बाजा बजानेका स्थान और एक चिडिया खाना (पशुशाला) ये हैं। एक घेरेके भीतर पशुशालामें अनेक बाघ, गेंडे, भालू आदि जंगली जानवर हैं। उनके देखनेवालेको आध आना महसूल देना पडता है। घेरेके बाहरके बागमे पशु पक्षियोंके देखनेमें कुछ नहीं देना पडता है बागके दक्षिणके किनारेपर सडकके पास विक्टोरिया टाउन हाल है, जो सन् १८८३ से १८८८ तक चन्देके खर्चसे बनकर तैयार हुआ।

अवजर बेटरी—मिउजियमसे करीब १ मील पश्चिम छोटी खानगी अवजर बेटरी है, जिसका काम सन् १७८७ में आरम्भ और सन् १७९३ में समाप्त हुआ। उसमें उत्तम यंत्र हैं। वह बहुतेरे शरीफ आदमियोंके चार्जमें रक्खी गई है।

चर्च—मदरासमें १०-१२ चर्च हैं, जिनमेसे एक "सौथ इण्डियन रेलवे" के स्टेशनके सामने है, जो सन् १८१८ से १८२० तक २००००० रुपयेके खर्चसे बनकर तैयार हुआ था। उसका मीनार १६६ फीट ऊँचा है।

जनरल हस्पिटल—(याने आम अस्पताल) यह सेंट्रल रेलवे स्टेशनके सामने है। उसमें २८० बिस्तर हैं और यूरोपियन तथा हिन्दुस्तानी रोगी रहते हैं।

गवर्नरकी देहाती कोठी—यह गवर्नमेंट हाउससे करीब ५ मील दूर गिंडीके पास एक उत्तम इमारत है, जिसके दक्षिण ८३/४ एकडमें फूलोका सुन्दर बाग लगा है।

मदरास हाता—यह भारतवर्षके दक्षिणी भागमें है। इसके उत्तर सूबे उड़ीसा, मध्यदेश, हैदराबादका राज्य और बम्बई हातेके जिले हैं। बाकी तीन तरफ समुद्र हैं। इसके भीतर मदरासके गवर्नरके अधीनके अनेक देशी राज्य और मैसूरका राज्य है। शास्त्रमें इस देशका नाम द्राविड लिखा है। यह त्रिभुजाकारसे दक्षिण समुद्रके भीतर चलागया है। इसकी सबसे अधिक लम्बाई पूर्वोत्तरसे पश्चिम-दक्षिणका लगभग ९५० मील और सबसे अधिक चौड़ाई (हैदराबादके राज्यसे दक्षिणको) पूर्वसे पश्चिम तक ४५० मील है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यका क्षेत्रफल १४११८९ वर्गमील, देशी राज्योंका क्षेत्रफल ९६०९ वर्गमील और मैसूर राज्यका क्षेत्रफल २७९३६ वर्गमील था, जो तीनों मिलकर १७८७३४ वर्गमील होता है। मदरास हातेका सदर स्थान मदरास शहर है, जिसमें इस हातेके गवर्नर रहते हैं। हातेके पूर्वके किनारेकी पूर्वी घाट और कारोमण्डल और पश्चिमके किनारेको पश्चिमीघाट तथा मलेबारका किनारा कहते है। पूर्वी घाटके पासकी पहाड़ियोकी औसत उँचाई समुद्रके जलसे केवल १५०० फीट है, किन्तु पश्चिमी घाटकी चन्द पहाडियोंकी उंचाई ८००० फीटसेभी अधिक है, अर्थात् नीलगिरिकी एक चोटी समुद्रके जलसे ८७६० फीट, और आनामलई पहाड़ीकी एक चोटी ८८६० फीट ऊँची है। मदरास हातेकी नदियोमें गोदावरी, कृष्णा और कावेरी ये तीनं नदियाँ प्रधान हैं, जो पश्चिमी घाटसे निकलकर पूर्वी घाटके बङ्गालेकी खाडीमे गिरती हैं। इनके अतिरिक्त मदरास हातेमें पिनाकिनी, पनार, वैगा, वेल्लर, ताम्रपर्णी, तुङ्गभद्रा इत्यादि नदियाँ बहती हैं। देशमें ७० प्रकारके सांप है, किन्तु उनमेंसे केवल १३ प्रकारके सर्प विषधर होते हैं।

मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें २२ जिले हैं,–गञ्जाम, विजगापट्टन, गोदावरी, कृष्णा, करनूल, बल्लारी, अनन्तपुर, कड़पा, नेल्लूर, चेंगलपट्ट, मदरास, उत्तरी आरकाट, दक्षिणी आरकाट, तंजोर, तिरुचनापल्ली, मदुरा, तिरुनलवेली, सैलम, कोयम्बुतूर, नील-गिरि, मलेवार और दक्षिणी किनारा जिला।

मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ३५६३०४४० मनुष्य थे; अर्थात् १७६१९३९५ पुरुष और १८०११०४५ स्त्रियाँ। इनमे ३११९८३०९ हिन्दू, २२५०३८६ मुसलमान, ८६५५२८ क्रुस्तान, ४७२८०८ एनिमिष्टिक अर्थात् जङ्गली जातियोंके लोग, २७४२५ जैन, १०३६ बौद्ध, २४६ पारसी, १२८ सिक्ख, ४२ यहूदी, १४५०३ जिनका कोई मजहब नहीं लिखागया था और २९ छोटे छोटे मजहब वाले थे, जिनमें सैकड़े पीछे ३९$\frac{1}{2}$ तामिल भाषा बोलने वाले, ३८$\frac{1}{2}$ तैलङ्गी भाषावाले, ७$\frac{1}{2}$ मलेयालम् भाषावाले, ४ कनड़ी अर्थात् करनाटकी भाषावाले, ३$\frac{3}{4}$ उड़िया भाषावाले, २$\frac{1}{4}$ ऊर्दू भाषावाले, १$\frac{1}{8}$ तुलु भाषावाले, और ३$\frac{1}{8}$ इनसे अन्य भाषावाले थे।

द्राविड़ देशमें तामिल, जिसको द्रविड़ भी कहते है, तेलुगू (अर्थात् तैलङ्गी) मले-यालम्; कनड़ी और तुलू ये ५ भाषा प्रचलित है। तामिल भाषा बोलनेवाले लोग करनाट-कमे अर्थात् पूर्वी किनारेके पासके मदरास शहरसे कन्याकुमारी तकके; मदरास, उत्तरी आर-काट, दक्षिणी आरकाट, चेङ्गलपट्ट, तञ्जोर, तिरुचनापल्ली, मदुरा, तिरुनलवेली इत्यादि जिलोंमें और तिरुवांकूरके राज्यमें, तेलुगू बोलनेवाले, पूर्वी किनारेके समीप मदरास शहरसे उत्तरके नेल्लूर, करनूल, कृष्णा, गोदावरी, विजगापट्टन आदि जिलोंमें, मलेयालम् बोलनेवाले खास करके मलेवार जिलेमें और दक्षिणी किनारा जिले तथा तिरुवांकूर और कोचीनके राज्यमें, कनडी बोलनेवाले खास करके मैसूरके राज्यमें और उसके आसपासके अङ्गरेजी जिलओंमे तथा दक्षिणी किनारा जिलेमें (कड़पा, अनन्तपुर, बल्लारी जिलेमे कनड़ी और तेलुगू दोनों हैं) और तुळु बोलनेवाले लोग दक्षिण किनारा जिलेके एक भागमें वसते हैं। उडिया बोलनेवाले लोग गञ्जाम जिलेके उत्तरीय भागमे हैं। इनके अलावे द्राविड़में खासकर पहाड़ी कोमोंमें कोडागू अर्थात् कुर्गी, कोटा इत्यादि भाषा प्रचलित हैं। (भारतभ्रमणके पहिले खण्डमें भारतवर्षीय संक्षिप्त विवरणके ३७ वें पृष्ठमें देखिये)।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मैसूर राज्यको छोड़ करके मदरास हातेमें नीचे लिखी हुई जातियोंके लोग इस भाँति पढ़े हुए थे,––प्रति हजारमें ७८६ यूरेशियन पुरुष, ७२० यूरेशियन स्त्रियाँ; ७२२ ब्राह्मण, ३७ ब्राह्मणी, ६५८ कणक्कन पुरुष, २१ कणक्कन जातिकी स्त्रियाँ, ६०५ कोमटी पुरुष, ९ कोमटी जातिकी स्त्रियाँ; ५८७ करनाम पुरुष १३ करनाम जातिकी स्त्रियाँ; ४९० नायर पुरुष, १२५ नायर जातिकी स्त्रियाँ २१८ देशी क्रुस्तान, ७६ देशी क्रुस्तानोंकी स्त्रियाँ इत्यादि।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मदरास हातेमें खेती करनेवाली जातियोंके ७७६७४६७ मनुष्य थे। इनमें ऊँचे दरजेकी जातियोंमें तैलङ्ग देशमें बेलमा, तामिल बोलने-वालोंके जिलोंमे वेल्लाल, मलेवारमें नायर इत्यादि अधिक हैं। नायर लोग मदरास हातेमें ३३५३२० और कुर्गमें ९०७ थे। भेड़ी रखनेवाली जातिके लोग, जिनको तामिलमें इडैयन और तेलिगूमें गोला कहते हैं; १५८०००० थे; ये लोग बल्लारी और करनूल जिलेमें अधिक

तामिल वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ
அ ஆ இ ஈ உ ஊ எ ஐ ஒ ஔ

क ङ च ञ ट ण
க ங ச ஞ ட ண

त न प म य र ल व
த ந ப ம ய ர ல வ

ऴ ळ ऩ का कि की कु कू के कै को कौ कं कः
ழ ள ன கா கி கீ கு கூ கெ கை கொ கௌ க் கஃ

द्राविड वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ

𑌅 𑌆 𑌇 𑌈 𑌉 𑌊 𑌋 𑍠 𑌌 𑍡 𑌏 𑌐 𑌓 𑌔

क ख ग घ ङ च छ छ ज झ ट ठ ड ढ ण त

𑌕 𑌖 𑌗 𑌘 𑌙 𑌚 𑌛 𑌛 𑌜 𑌝 𑌟 𑌠 𑌡 𑌢 𑌣 𑌤

थ द ध न प फ व भ म य र ल व श ष स ह ळ

𑌥 𑌦 𑌧 𑌨 𑌪 𑌫 𑌬 𑌭 𑌮 𑌯 𑌰 𑌲 𑌵 𑌶 𑌷 𑌸 𑌹 𑌳

का कि की कु कू के कै को कौ कं कः १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

𑌕𑌾 𑌕𑌿 𑌕𑍀 𑌕𑍁 𑌕𑍂 𑌕𑍇 𑌕𑍈 𑌕𑍋 𑌕𑍌 𑌕𑌂 𑌕𑌃 ௧ ௨ ௩ ௪ ௫ ௬ ௭ ௮ ௯

है; उनमेंसे बहुतेरे अपना भेड रखनेका पेशा छोड़ दिये हैं। सौदागरी करनेवाली जातियोंके लोग ६४००४७ थे, जिनमें ३६५७१५ सेटी और कोमठी थे। इनके अलावे ९२८५२० ब्राह्मण, १९३५५० क्षत्रिय और शेषमें अन्य सब जातियोंके लोग थे। उस (मनुष्य-गणनाके) समय मद्रास हातेमें १५३९९६८६ शैव मतके लोग, १०४९४४०८ वैष्णव और ६४५८० लिङ्गायत थे। इनके अतिरिक्त लिंगायत लोग ४७०२६९ मैसूरके राज्यमे और ३६९००४ बम्बई हातेमें थे। लिङ्गायत लोग शैव होते हैं। वे जाति भेद नहीं मानते, स्त्रियोंका बहुत सम्मान रखते हैं। मैसूरके पश्चिमके लोग बहुत है, जो इनका खास तिजारतका स्थान है। इसके अलावे वे लोग मद्रास हाते और बम्बई हातेके दक्षिणके जिलाओंमें अपना कारोबार करते हैं। भारतवर्षके दूसरे भागोकी अपेक्षा मद्रास हातेमें क्रस्तान बहुत हैं।

मद्रास हातेके अङ्गरेजी राज्यके शहर और कसबे, जिनमे सन् १८९१ की जन-संख्याके समय १०००० से अधिक मनुष्य थे;—

नं०	नाम शहर	नाम जिले	जन-संख्या	नं०	नाम शहर	नाम जिले	जन-संख्या
१	मद्रास	मद्रास	४५२५१८	२४	तलीचेरी	मलेवार	२७१९६
२	तिरुचनापल्ली	तिरुचनापल्ली	९०६०९	२५	अदोनी	वल्लारी	२६२४३
३	मदुरा	मदुरा	८७४२८	२६	ब्रह्मपुर	गञ्जाम	२५६५३
४	सेलम	सेलम	६७७१०	२७	तुतुकुडी	तिरुनलवेली	२५१०७
५	कालीकोट	मलेवार	६६०७८	२८	तिरुनलवेली	तिरुनलवेली	२४७६८
६	वल्लारी	वल्लारी	५९४६७	२९	करनूल	करनूल	२४३७६
७	नागपट्टनम्	तञ्जौर	५९२२१	३०	मायावरम्	तञ्जौर	२३७६५
८	तञ्जौर	तञ्जौर	५४३९०	३१	गुंटूर	कृष्णा	२३३५९
९	कुम्भकोणम्	तञ्जौर	५४३०७	३२	श्रीरङ्गम्	त्रिचनापल्ली	२१६३२
१०	कडालूर	दक्षिणी अर्काट	४७३५५	३३	श्रीवल्लीपुतूर	तिरुनलवेली	२१४४८
११	कोयम्बुतूर	कोयम्बुतूर	४६३८३	३४	वेजवाडा	कृष्णा	२०७४१
१२	वेल्लूर	उत्तरी अर्काट	४४९२५	३५	मनारगुडी	तञ्जौर	२०३९५
१३	कांजीवरम्	चेङ्गलपट्ट	४२५४८	३६	दीण्डीगल	मदुरा	२०२०३
१४	मङ्गलूर	दक्षिणी किनारा	४०९२२	३७	कुडीआतम	उत्तरी आर्काट	१८७४७
१५	काकेनाडा	गोदावरी	४०५५३	३८	पालमकोटा	तिरुनल वेली	१८६८६
१६	पालघाट	मलेवार	३९४८१	३९	चिदम्बरम्	दक्षिणी—आर्काट	१८६४०
१७	मछलीपट्टन	कृष्णा	३८८०९	४०	चिकाकोल	गंजाम	१८२४१
१८	विजिगापट्टन	विजिगापट्टन्	३४४८७	४१	कोचीन	मलेवार	१७६०१
१९	विजियानगरम्	विजिगापट्टनम्	३०८८१	४२	कड़पा	कडपा	१७३७९
२०	एल्लौर	गोदावरी	२९३८२	४३	अनकापल्ली	विजिगापट्टनम्	१७०१०
२१	नेल्लूर	नेल्लूर	२९३३६	४४	पलनी	मदुरा	१६९४०
२२	राजमहेन्द्री	गोदावरी	२८३९७	४५	तिरुपतूर	सेलम	१६४९९
२३	कननूर	मलेवार	२७४१८	४६	पर्लाखेमडी	गञ्जाम	१६३९०

नं०	नाम शहर	नाम जिले	जन-संख्या	नं०	नाम शहर	नाम जिले	जन-संख्या
४७	पेरियाकुलम्	मदुरा	१६३६३	७०	किलकराय	मदुरा	१२३९३
४८	कुलसेखरन्पटनम्	तिरुनलवेली	१५९२४	७१	ईरोड	कोयम्बुतूर	१२३३०
४९	वाणियम्बाड़ी	सेलम	१५८३८	७२	शिवकाशी	तिरुनलवेली	१२१८४
५०	उतकमण्ड	नीलगिर	१५०५३	७३	तिरुवन्नामलई	दक्षिणी आर्काट	१२१५५
५१	पोरयार	तंजौर	१४४६८	७४	कालहस्ती	उत्तरीआर्काट	११७५४
५२	वोविली	बिजिगापट्टन	१४४६८	७५	कायरपटनम्	तिरुनलवेली	११४६५
५३	तिरुपदी	उत्तरी आरकाट	१४२४२	७६	कलडैकुरुची	तिरुनलवेली	११०९६
५४	विरुदुपट्टी	तिरुनलवेली	१४०७५	७७	आर्काट	उत्तरी आर्काट	१०९२८
५५	पोर्टोनोवे	दक्षिणी आरकाट	१४०६१	७८	आङ्गोल	नेल्लूर	१०८६०
५६	विलवनूर	तिरुनलवेली	१३९५१	७९	करूर	कोयम्बुतूर	१०८५०
५७	पीठापुरम्	गोदावरी	१३७३१	८०	अधिरामपट्टनम्	तञ्जौर	१०७४८
५८	पेडापुरम्	गोदावरी	१३६५८	८१	नंद्याल	करनूल	१०७३७
५९	रामनाद	मदुरा	१३६१९	८२	अम्बूर	उत्तरी आर्काट	१०५८६
६०	वेदारण्यम्	तञ्जौर	१३४३८	८३	चिरला	कृष्णा	१०५८१
६१	समरलाकोटा	गोदावरी	१३४०९	८४	रासिपुर	सेलम	१०५३९
६२	सैदामङ्गलम्	सेलम	१३३५४	८५	काम्पती	बल्लारी	१०५२९
६३	राजापालयम्	तिरुनलवेली	१३३०१	८६	धवलेश्वरम्	गोदावरी	१०४९२
६४	सेंटथ मसमॉउड	चेंगलपट्ट	१३११७	८७	बालाजी	उत्तरी आर्काट	१०४८५
६५	तिरुवालूर	तञ्जौर	१२९३४	८८	रायदुर्ग	बल्लारी	१०३८२
६६	सालूर	बिजिगापट्टन	१२९१७	८९	पालकोंडा	बिजिगापट्टन	१०३६७
६७	होसपेट	बल्लारी	१२८७८	९०	ताडपत्री	अनन्तपुर	१०२८३
६८	तेनकाशी	तिरुनलवेली	१२८६१	९१	पार्वतीपुर	बिजिगापट्टन	१००५३
६९	अरुपुकोटई	मदुरा	१२६७३	९२	परमकुड़ी	मदुरा	१०००

मदरास हातेमें (मैसूर राज्यको छोड़ कर) ५ देशी राज्य हैं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय इन राज्योंके ९६०९ वर्गमील क्षेत्रफलमें ३७००६२२ मनुष्य थे; अर्थात् १८५३९७६ पुरुष और १८४६६४६ स्त्रियाँ। इनमे २७५९२११ हिन्दू, ७१४६५१ कृस्तान, २२५४७८ मुसलमान, १२६७ यहूदी, १० जैन, १ पारसी, और ४ अन्य थे, जिनमें सैकड़े पीछे ७३½ मलेयालम भाषा बोलने वाले, २३ तामिल भाषावाले, १½ तेलुगू अर्थात् तैलङ्गी भाषावाले और २ दूसरी भाषा बोलने वाले मनुष्य थे।

मद्रासहातेके गवर्नमेन्टके अधीनके ५ देशी राज्योंका त्रिज,—

नम्बर	देशी राज्य	क्षेत्रफल वर्गमील	कसवा गॉव	मालगुजारी मकान	मनुष्य-संख्या सन् १८८१	मालगु-जारी रु०
१	तिरुबवॉकूर	६७३०	३७१९	५२४९५०	२४०११५८	६६०००००
२	कोचीन	१३६१	६५५	१२५२९७	६००२७८	१६०००००
३	पुदुकोटा	११०१	५९७	७४०८४	३०२१२७	५७५१००.
४	वङ्गनापल्ली	२५३	६४	८७३५	३०७५४	
५	सण्डूर	१६४	२३	२६८६	१०५३२	
	जोड	९६०९	५०५८	७३५७५२	३३४४८४९	

मद्रास गवर्नमेन्टके अधीनके देशी राज्योंके कसबे जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय १० हजारसे अधिक मनुष्य थे, नीचे हैं,—तिरुबांकूर राज्यके तिरुवनन्द्रम्में २७८८७, अलोपीमे २२७६८, कीलनमें १५३७५ और नागरकोयलमें १११८७, कोचीन राज्यके मतन चेरंरमे १७३५४ और तिरुचुरमें १२९४५ और पुदुकोटा राज्यके पुदुकोटामें १६६८५।

महाभारतमें चोल, पांड्य, माहिपक, केरल, कालगिरीय, अंध्र, कलिङ्ग, विदर्भ इत्यादि दक्षिणके देशोंका नाम लिखा है। चोल देशमें तंजोर, कुम्भकोणम् आदि, पांड्य देशमें मदुरा इत्यादि, माहिपक देशमे मैसूर, बङ्गलोर, श्रीरंगपट्टनम् आदि, केरल देशमें मलेवार, कालगिरीय देशमें नीलगिरि आदि, अंध्र देशमें गोदावरी जिला और उसके दक्षिणके जिले, कलिंग देशमें विजिगापट्टम् जिला और उससे उत्तरके जिले तथा उड़ीसा देश और मध्य देशका कुछ हिस्सा, और विदर्भ देशमे बीदरके आस पासके देश हैं, किन्तु इन देशोंकी ठीक सीमा कोई नियत नहीं है।

द्राविड़ी लोग पञ्जाब, राजपूताना, पश्चिमोत्तर, बङ्गाल आदि नर्मदाके उत्तरके प्रदेशोंको हिन्दुस्तान और इनके निवासियोंको हिन्दुस्तानी कहते है। उनमे प्रायः सब लोग काले और सांवरे होते है। वहाँ वालोंके मुख्य वस्त्र साफा, छोटी पगडी, अंगरखा, कोट और धोती हैं। वडे जातिके हाकिम, अमले और वकीलभी प्रायः इसी ठाटसे रहते है। कोई कोई रंगिन वडा रूमाल सिरपर बांधता है। बहुतेरे लोग लंगोटके ऊपर ५ हाथका डोरिया वस्त्र कमरपर लपेटते हैं। आडियोंके समान द्राविड़के बहुतेरे लोग बड़े घेरेकी शिखा रखते है और अपनी मूछ मुडवाते हैं। मलेवारके लोग ललाटसे ऊपर शिखा रखकर उसको आगेकी ओर लटकाये रहते है। स्थान स्थानपर रामानुज संप्रदायवाले (आचारी) बहुत देख पड़ते हैं। द्राविड़ी लोगोंके जूते चपौरे होते है, जिनमें अंगूठे घुसानेके लिये चमड़ेकी नथुनी रहती है।

गर्म मुल्क होनेके कारण वहाँके लोगोंमें रूईदार कपड़े पहनने और चारपाई रखनेकी चाल बहुत कम है। साधारण लोग बिना बिस्तरकी भूमिपर बैठते हैं। सर्व साधारणका भोजन भाजी और उसिना चावलका भात है। उत्तम वर्णके लोग नीच वर्णोंकी दृष्टि बचा करके एकान्तमें भोजन करते हैं। धनी गरीब सब लोग पान खाते हैं। दूसरे देशोंकी स्त्रियोंकी समान पुरुष, पुरुषसे लज्जा नहीं मानता। पायखानोंके भीतर पर्दे नहीं हैं। वहाँके बहुतेरे लोग पायखानोंमे परस्पर बातचीत करते हैं। समुद्रके समीपके देशोंमें हाथीपांवकी बीमारी होती है।

मद्रास हातेमें काफी (कहवा) और तम्बाकू बहुत उत्पन्न होते हैं। कुछ कुछ चायभी होता है। नमक तैयार किया जाता है। ज्वार बाजरेकी फसिल बहुत होती है। धान, अरहर, तिल, बेरेंभी उत्पन्न होते हैं। ताड़, नारियल, इमली, खजूर, बबूरके वृक्ष बहुत हैं। मद्रास प्रान्तमें मूँगफली बहुत उत्पन्न होती हैं, करीब लाख एकड़ भूमिपर इसकी खेती हुआ करती है। नागफनी, सीज और केतकी जगह जगह रेलवेके बगलोंमें घेरेकी जगह लगाई गई है। बहुतेरे छाता, पानी भरनेके डोल और अनेक मकानोंके छप्पर ताड़के पत्तोंसे और अनेक मकानोंके छप्पर नारियलके पत्तोंसे बनाये जाते हैं।

द्राविड़के बहुतेरे देवमन्दिर दूसरे देशोंके मन्दिरोंसे बहुत बड़े हैं। बहुत मन्दिरोंमे बड़े बडे गोपुर और बड़े बड़े मण्डप बने हैं। वहाँके मन्दिरोंमे देवताओंका दर्शन अलगसे होता है। पूजा पुजारीद्वारा चढ़ाई जाती है। देवताओंके निज मन्दिरको आदितम वा विमान कहते हैं और जिस सरोवरमें बेड़ेपर चढ़ाकर देवता घुमाये जाते है, उसको तेप्पकुलम् कहते हैं। शिवमन्दिरोंकी दीवारों और छतों पर नन्दीकी अनेक मूर्त्ति रहती हैं। पत्थरकी दीवारो और स्तम्भोंके ऊपर गचका काम भी होता है। प्रायः सब तीर्थस्थान और शहरोंमें धर्मशालायें और सदावर्त है। किसी किसी जगह ब्राह्मणोंके टिकनेके लिये खास धर्मशाला बनी है। प्रायः सम्पूर्ण तीर्थोंमे शिव और विष्णु दोनो देवताओंके मन्दिर बने हैं। पद्मपुराण, स्वर्गखण्डके ५ वें अध्यायमें लिखा है कि ब्रह्माजीने शिव और विष्णुसे कहा कि पृथ्वीपर जितने तीर्थ हैं, उन सबोंमें आप दोनोंकी समान पूजा होगी, बिना आप दोनोंके निवास किये किसी तीर्थकी पवित्रता न समझी जायगी।

आटा और घी प्रसिद्ध जगहोंपर मिलता है। शहरों और बड़े स्टेशनोंपर महंगी मिठाई, केले और नारंगीभी मिलती हैं। कच्ची रसोईका सामान सर्वत्र मिलता है। तरकारी बहुत प्रकारकी बिकती हैं। मद्रास हातेके दक्षिणीय भागमे प्रसिद्ध जगहोंपर बिना समयके आम और कटहलके फल बिकते हैं। कई जगहोंमें केवल २४ रुपये भरका सेर बाजारमें चलता है।

मद्रास हातेमें गर्मी बहुत पड़ती है। पूर्वके जिलोंमें गर्मीकी ऋतुओंकी अपेक्षा जाड़ेमे वृष्टि अधिक होती है। मद्रासमें औसत सालाना ५० इञ्च वर्षा होती है, जिसमेंसे लगभग आधा पानी केवल नवम्बर महीनेमें गिरता है। यद्यपि अगहन, पूस और माघमें जाड़ा पड़ता है, किन्तु वास्तवमे मद्रासके मैदानोंमें प्रायः जाड़ा नहीं है। समुद्रका ज्वार तीन चार फीटसे अधिक ऊँचा नहीं होता। समुद्रके किनारोंपर बार बार तोफान आया करता है। कोई बन्दरगाह तूफानोंसे सर्वदा जहाजोंको नहीं बचा सकता है।

ऊपर लिखे हुए तामिल आदि द्राविडी भापावोंको आर्यावर्त अर्थात् नर्मदाके उत्तरके पञ्जाब, पश्चिमोत्तर, बङ्गाल इत्यादिके लोग कुछ नहीं समझ सकते हैं, किन्तु जगह जगह विशेप करके तीर्थ स्थानों और बड़े बडे शहरोंमें द्रविडियन दुभापिया मिल जाते हैं। जिन तीर्थों अथवा शहरोंमे आर्यावर्त्तके बहुत यात्री जाते हैं, वहाँके पण्डाओ और दुकानदारोंमेंसे अनेक लोग कुछ हिन्दी समझते हैं। उर्दूके समान वहाँके मुसलमानोंकी एक तुलुक्कु भापा है; उस भाषाको जाननेवाले मुसलमान लोग कुछ हिन्दी वोल सकते हैं। यात्रियोंके कामकी चीजोंके तैलंगी और तामिल भाषाके नाम नीचे हैं—

हिन्दी	तैलङ्गी	तामिल	हिन्दी	तैलङ्गी	तामिल
चावल	वियम	अर्सी	गोइँठा	पिडिङ्को	एरंटे
दाल	पपू	पपू	धर्मशाला	क्षेत्रम्	क्षत्रम्
आटा	पिण्डी	माऊ	मकान	इलो	उंडू
गेहू	गोदम	गोदमे	कोठरी	इलो	उंडू
नमक	ऊपू		पायखाना	पेलों	कक्कुस
घी	नइये		चटाई	चापा	पाई
दही	पेरगू	तयेरू	लोटा	टमलेर	चम्बू
दूध	पालू	पाल	थारी	तट्ट	
मक्खन	वेना	वेने	कपडा	वट्टलो	तुनी
गुड	वेलम्	वेलम्	कम्बल	कमडी	कम्ली
चीनी	सकरा	चक्के	गाड़ी	वण्डी	वण्डी
तेल	नुना	एने	जूता	जोड़ो	चर्पा
इमली	चिन्तपुण्ड	पुली	खड़ाऊं		पादकोरडो
मिर्चा	मिरपकाय	मलगा	पुस्तक	पुस्तकम्	बुको
नारियल	तेंकाई	तेङ्गा	दीप	दीपम्	
कपूर	कर्पूरम्		धोती	धोती	धोती
तम्बाकू	पोगाको	पोगले	उपल	दंचक्डी	ओडके
पानी	निल्लो	तन्नी	शिलवट		अभी
कुआँ	बाई	कंनरो	आग	नीपो	निर्पो
लकड़ी	कटलो	वेरगू			

तामिल भापामें १ को ओरू, २ को रेड, ३ को मुण्ड, ४ को नाल, ५ को अचू, ६ को आर, ७ को एंडू, ८ को एट्ठ, ९ को ओवज और १० को पत्तू कहते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–महाभारत–(सभापर्व ५१ वाँ अध्याय) चोलनाथ और पांड्यनाथने राजा युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञके समय इन्द्रप्रस्थमे आकर मलयगिरिके चन्दनरसके घड़े राजाको दिये। (भीष्म पर्व, ४७ वाँ अध्याय) कुरुक्षेत्रके संग्रामके दूसरे दिन राजा युधिष्ठिरकी ओर क्रोंचारुण व्यूह बनाया गया, जिसमें तङ्गन, परतङ्गन, चोल, पॉड्य आदि देशोंके वीरगण व्यूहके पक्ष स्थानमें स्थित हुए। (५३ वाँ अध्याय) कौरवोंकी ओरके गरुड व्यूहके दाहिने पार्श्वमें कलिङ्ग आदि देशोंके योद्धागण खडे हुए। (द्रोणपर्व,

१९ वाँ अध्याय) वारहवे दिनके संग्राममें कौरवोंने गरुड़ व्यूह रचा, जिसमें व्यूहकी ग्रीवाके स्थानपर कलिंग और सिंहल आदि देशोंके योद्धागण स्थित हुए। (१५३ वाँ अध्याय)भीमसेनने कलिङ्ग देशके राजाके पुत्रको मारडाला। (कर्णपर्व, २० वाँ अध्याय) पांड्य देशका राजा मलयध्वज कौरव दलके असंख्य योद्धाओंको मारकर अश्वत्थामाके हाथसे मारा गया। (अश्वमेधपर्व, ८३ वाँ अध्याय) राजा युधिष्ठिरके विजय होनेके पश्चात् यज्ञका सामान हुआ। अर्जुनकी रक्षामें यज्ञ अश्व छोड़ा गया। अर्जुन देश देशके राजाओंको परास्त करते हुए दक्षिणके समुद्रकी ओर गये। उन्होंने उस तरफके द्राविड़, अंध्र, माहिषक, (मैसूर वाले), कालगिरीय (नीलगिरि वाले), आदि वीरोंको संग्राममे परास्त करके सुराष्ट्रकी ओर गमन किया।

आदि ब्रह्मपुराण—(१३ वाँ अध्याय) राजा संवर्तके पुत्र दुष्यन्त हुए। राजा ययातिके शापसे तुर्वसुका वंश पौरव वंशमें मिल गया। दुष्यन्तके पुत्र कुरुत्थाम; कुरुत्थामके पुत्र अथाक्रीड़ और अथाक्रीड़के ४ पुत्र हुए, अर्थात् पाँड्य केरल, कोल और चोल, जिनके नामसे पांड्य, केरल अर्थात् मलेवार,कोल और चोल देश विख्यात हुए। (२६ वाँ अध्याय) भारतवर्षके दक्षिणीय भागमें कुमार, वासक, महाराष्ट्र, माहिषक, कलिङ्ग, आभीर, पुलिन्द, मैलेय, वैदर्भ, दण्डक, कौलक, कुन्तल आदि देश है।

वामनपुराण–(१३ वाँ अध्याय)भारतवर्षके दक्षिणके भागमें चोल, मुषिकाध, महाराष्ट्र, कलिङ्ग, आभीर, शबर, नल, अंध्र इत्यादि देश है।

मत्स्यपुराण–(११३ वाँ अध्याय) भारतवर्षके दक्षिणीय भागमें पांड्य, केरल, चोल, नवराष्ट्र, कलिङ्ग, कारुष, शबर, पुलिंद, विंध्य, विदर्भ, दण्डक इत्यादि देश हैं।

गरुड़पुराण—(पूर्वार्द्ध ५५ वाँ अध्याय) भारतवर्षके दक्षिणके भागमें अन्ध्र देश है।

इतिहास—किसी किसीके मतसे मदरसा शब्दसे मदरास नाम हुआ है। द्राविडियन लोग मदरास शहरको चेनापट्टनम् कहते है। शहरके कायम होनेके समय उस देशके नायक (अर्थात् राजा) के भाईका नाम चेनापप्पा था, जिसके नामसे शहरका नाम चेनापट्टनम् हुआ। जान पड़ता है कि प्रायः उसी समयसे लोग इसका मदरास नामभी कहते हैं।

मदरास हाता पहिले छोटे छोटे बहुतसे देशी राज्योंमें विभक्त था, जिनके वंशधरोके राज्य थोडेही दिनोंमें समाप्त होजाते थे। मदरास हातेके दक्षिणीय भागमें पांड्य, चोला और चेरा ये ३ बादशाह राज्य करते थे। सिरियाके बादशाह सेल्युकसका वकील मेगस्थनीज सन् ईस्वीके आरम्भसे ३०६ वर्ष पहिले हिन्दुस्तानमें (चन्द्रगुप्तके दरबारमें) आया था। उसके लिखनेके अनुसार उस समय पांड्य, कलिङ्ग और अंध्र ये तीन वंशोंके राजाओंके राज्य थे। पांड्य वंशके राजा दक्षिणके भागमें, और कलिङ्ग तथा अंध्र वंशके राजा वर्तमान मदरास हातेके उत्तरीय भागमें राज्य करते थे. उनमेंसे कलिङ्ग वंशवाले समुद्रके किनारेके आसपास और अंध्र वंशके राजा किनारेसे दूर थे। ऐसा जान पड़ता है कि सन् ईस्वीके आरम्भसे लगभग २५० वर्ष पहिले राजा अशोकके राज्यके समय चोला और केरल अर्थात् चेरा वंशके राजा भी राज्य करते थे। सन् ईस्वीके आरम्भके ५०० वर्ष पहिले भी पांड्य, चोला और चेरा वंशके राजाओंके राज्य विद्यमान थे। लगभग सन् ईस्वीकी छठवीं सदीमें पल्लववंशके राजाने अपना दृढ़ राज्य नियत किया,जिसकी राजधानी मदरासके पास थी; परन्तु

शीघ्रहीं उस वंशके कई आदमियोने अपने अपने राज्य अलग अलग कर लिये । वे लोग पूर्वी किनारेके पास ऊड़ीसे तक हुकूमत करते थे। कलिङ्ग और अध्र वंशके राजाओंने पल्लव वंशके राजाओंकी आधीनता स्वीकार की, उसके पश्चात् पश्चिमके चालुक्य वंशके राजाने चोला और पल्लव वंशके राजाओंसे संग्राम किया, किन्तु सर्वदाके लिये उनका मनोरथ पूर्ण नहीं हुआ। सातवी सदीमें चालुक्य वंशके राजाने पल्लव वशके राजाको जीता । वे लोग पूर्वी चालुक्य वंशके नामसे वहुत काल तक राज्य करते रहे । ११ वी सदीमें पल्लव वंश वालोंने चालुक्य वंशवालोंको कांचीपुरीके दक्षिण परास्त किया । दक्षिणके पल्लव वंश वाले फिर वलवान् हुए । चालुक्य लोग निकाले गये । ११ वी सदीमें चोला वंशके राजा वहुत प्रसिद्ध हुए। उन्होंने कुछ दिनोंके लिये सिलोन अर्थात् लङ्काके वादशाह, गङ्गावंशके राजा और दक्षिणके पांड्य वंशके राजाको जीता और पल्लव वंशके तथा पूर्वी चालुक्योंके राज्यको उड़ीसेकी सीमा तक अपने राज्यमें मिला लिया ।

चालुक्योंका फैला हुआ राज्य धीरे धीरे अनेक टुकड़ोमें वॅट गया । १३ वीं सदीके अन्तमें कई एक राजाओंने चोला वशके राजासे मदरास हातेके उत्तरीय भागको छीन लिया । पांड्य देशका अधिकार भी उनके हाथसे निकल गया । हैसलावल्लाल वंशके राजाने चोला वंशके राजाको मैसूर और गङ्गावंशके देशसे निकाल वाहर किया । १४ वीं सदीके आरम्भतक पांड्य वशके राजा दक्षिणमें वलवान् थे। चोला वंशके राजाके अधिकारमें तञ्जोर और मदरास था ।

१४ वीं सदीके आरम्भमे दिल्लीके खिलजी खानदानके वादशाह अलाउद्दीन और उसका जनरल मलिक काफूरने डेकान (दक्षिण) को जीता उन्होने हैसलावल्लालके राज्यका विनाश किया, मदुराके पांडय वंशका नाश करके कन्याकुमारी तकके देशोंका विध्वंस कर दिया, तथा पूर्वी किनारेके प्रधानोको जीता ।

द्राविड़ देशके पांड्य, चोला और चेरा इन ३ राजाओंमे पांडय राज्य सवसे सभ्य था। उस वंशमें क्रमसे ११६ राजा हुए, उनकी राजधानी मदुरा थी । चोला वंशके राजाओकी राजधानी पहिले कांवेकोनम् अर्थात् कुम्भकोणम् और पीछे तञ्जोर था; उस वंशमें क्रमसे ६६ राजा हुए । चेरा राज्यकी राजधानी मैसूर राज्यका तालकद शहर था, जो अव कावेरीके वालूमें ढक गया है, उस वंशके ५० राजाओने राज्य किया था । पांडय, चोला और चेरा वंश वालोंका किसी तरहसे थोडा वहुत राज्य सोलहवीं सदी तक था ।

मुसलमानी फौजोंके चले जानेपर विजयानगरका राज्य आरम्भ हुआ, लगभग सन् १३३६ में तुङ्गभद्रा नदीके पास हांपी, विजयानगरके हिन्दू राजाकी राजधानी वनी । उनका राज्य धीरे धीरे पूर्वी किनारासे पश्चिमी किनारा तक फैला । उन्होंने दक्षिणी भारतके प्रथमके राजाओंका विनाश करके उनके सम्पूर्ण देशोंपर हुकूमत की । सन् १५६४ में वीजापुर, गोलकुण्डा आदिके ४ मुसलमान वादशाहोने मिलकर विजयानगरके हिन्दू राजाको परास्त किया । सोलहवीं और सत्रहवीं सदीमें नायक वंश वालोंने मदुराके राज्यकी हुकूमत की ।

सत्रहवीं सदीमें वादशाह औरङ्गजेवने वराय नामके अपने राज्यको दक्षिणमें कन्याकुमारी तक फैलाया था; परन्तु वास्तवमे दक्षिणके अनेक राजा लोग सर्वदा उसके अधीन नहीं रहते थे । शिवाजीके परिवारका एक राजा तञ्जोरके मैदानमे हुकूमत करता था । उसके

बाद करनाटकके नव्वाब, जिसकी राजधानी आरकाट थी, और हैदराबादके निजाम स्वतन्त्र हुए ।

सन् १४९८ में पोर्चुगल राज्यके वासकोडिगामाने कलीकोटके किनारेपर अपने जहाजका लङ्गर डाला । सन् १६०० ई० तक पोर्चुगीज लोग हिन्दुस्तानमें खास करके पश्चिमी किनारेके पास तिजारत करते रहे । सत्रहवीं सदीके आरम्भमें हालेण्ड वाले और उनके तुरन्तही बाद अङ्गरेज लोग दक्षिणी हिन्दमें आये । अङ्गरेजोंने पहिले सन् १६११ में पूर्वी किनारेके मछलीपट्टनमें और उसके पीछे सन् १६१६ में कलीकोट और कननूरमें अपनी कोठी कायम की । सन् १६८३ में तलीचेरी जो सूरतकी कोठीकी शाखा थी, पश्चिमी किनारेपर अङ्गरेजी तिजारतका प्रधान स्थान हुई, जो सन् १७०८ में सर्वदाके लिये अङ्गरेजोंको मिल गई । अन्तमें पोर्चुगीज लोग गोवाको और हालेंडवाले एक टापूको चले गये ।

सन् १६३९ के मार्चमें ईष्टइण्डियन कम्पनीने चन्द्रगिरिके राजा श्रीरंगरायलसे, जो विजयानगर राजवंशके थे, उस भूमिको पाया, जिसपर वर्तमान मदरास शहर है । उस कम्पनीने शीघ्रही वहाँ "फोर्टसेंटजर्ज" नामक किलेके बनानेका काम प्रारम्भ किया । पहिले एक दीवारके भीतर, जिसमें ४०० गज लम्बी और १०० गज चौड़ी भूमि थी, एक कोठी और अन्य इमारतें थीं । सन् १६४३ में उसका काम बढ़ाया गया और हिफाजतके लिये वहाँ १०० सैनिक रक्खे गये । सन् १६७० और १६८० के बीचमें किला बढ़ाया गया । कोठी बननेके पीछे उसके बगलोंमें धीरे धीरे देशी लोग बसने लगे सन् १६७२ में फरासीसियोंने उस जगहको जहां पाण्डीचरी है, खरीदा । उसके २ वर्षके पीछे वहां फरासीसी आबादी कायम हुई । सन् १७०२ में मुगल बादशाह औरङ्गजेबके जनरल दाउदखांने चन्द सप्ताह तक मदरास शहरपर घेरा डाला, किन्तु पीछे विफलमनोरथ होकर वह लौट गया । सन् १७२३ में किलेके भीतर टकशाल घर बनाया गया । सन् १७४१ में महाराष्ट्र लोगभी मदरासके किलेपर आक्रमण करके लौट गये । सन् १७४३ में वह किला फिर बढ़ाया गया और मजबूत किया गया । उस समय मदरास शहर दक्षिणी भारतमें सब शहरोंसे बड़ा होगया था । सन् १७४६ में फरासीसियोंने अङ्गरेजोंसे मदरासका किला छीन लिया । उसी सन्के अकतूबरमें एक भयंकर तोफान आया, जिससे मदरासके समुद्रमें १२०० मनुष्योंके साथ ३ जहाज डूब गये और दूसरे २ जहाज भीतर चले गये । उनके अलावे २० जहाजोंमेंसे, जो उस समय मदरासमें थे, एक भी नहीं बचा । फरासीसियोंने दो वर्षके पीछे एक सन्धि होने पर अङ्गरेजोंको मदरास लौटा दिया, तब अङ्गरेजोंने फिर किलेको बढ़ाया और उसको दृढ़ किया । सन् १७५८ में फरासीसियोंने शहरपर अपना अधिकार करके किलेपर घेरा डाला । उस समय किलेका काम पूरा नहीं हुआ था, परन्तु वह हिफाजत करने लायक होगया था । दो मास तक उनका घेरा रहा; किन्तु अङ्गरेजी बहरके पहुंचनेपर उन्होंने अपना घेरा उठा लिया । महासरेके बाद किलेका काम फिर जारी हुआ । सन् १७८७ में किला पूरे तौरसे तैयार होगया, जैसा अब विद्यमान है । सन् १७६० में अङ्गरेजोंने फरासीसी अफसर लैलीको परास्त किया ।

सन् १७६५ में मुगल बादशाह औरंगजेबने ईष्टइण्डिया कम्पनीको, उत्तरी सरकारोंको जिसमें गञ्जाम्, विजगापट्टन, गोदावरी और कृष्णा जिले हैं, दिया । जिसपर सन् १८८३ में अङ्गरेज सरकारका पूरा अधिकार होगया ।

सन् १७६९ में मद्रासकी दीवारके पास अङ्गरेज हैदरअलीके साथ लड़े। वह लड़ाई सन्धि होजानेसे खतम् हुई। दूसरी लड़ाईमें कभी अङ्गरेज लोग कभी हैदरअलीका विजय हुआ। सन् १७८२ में हैदरअली मरगया। सन् १७९१ की तीसरी लड़ाईमें अङ्गरेजोंने हैदरअलीके पुत्र टीपूसे बङ्गलोरका किला छीन लिया, किन्तु दूसरे वर्ष टीपूने अङ्गरेजोंसे सन्धि करके अपनी राजधानीको बचाया। उस समय अङ्गरेजोंको बारमहाल, जो अब सालेम जिलेका एक भाग है, मालाबार, दिण्डीगल और पलनी, जो मदुरा जिलेके तालुक हैं, और कुंगुड़ी, जो उत्तरी आरकाट जिलेका तालुक है, मिल गये। सन् १७९९ में अङ्गरेजोंने टीपूसुलतानके साथ चौथी लड़ाई आरम्भ की। उस लड़ाईमें सुलतान मारागया, श्रीरङ्गपट्टनम् (राजधानी) अङ्गरेजोंके अधिकारमें होगया, कोयम्बुतूर नीलगिरि, सालेम जिलेका शेष भाग, और दक्षिण किनारा जिलेका हिस्सा अङ्गरेजोंको मिला। उन्नीसवीं सदीके शुरूसे मद्रासमें कोई लड़ाई नहीं हुई, किन्तु कई बार बगावतें हुई; जो सहजमें दबादी गईं। सन् १८०० में हैदराबादके निजामने अनन्तपुर, वल्लारी, करनूल और कड़पा इन जिलोंको अङ्गरेजोंको दे दिया। उसके दूसरे वर्ष करनाटकके नवाबका देश, जो पूर्वी किनारेके पास नेल्लूरसे तिरुनलवेली तक फैला था, अङ्गरेजी सरकारके अधिकारमें होगया। करनाटकका अंतिम नवाब, जो सन् १८५५में मरा, बराय नामका नवाब था। सन् १८११ के तूफानके समय मद्रासमें २ जहाज डूब गये और ९० अपने लङ्गड़ोंके पास नीचे चले गये। सन् १८३९ में करनूलके नवाब गद्दीसे उतार दिये गये उनका राज्य अङ्गरेजी राज्यमें मिल गया। सन् १८७२ में एक बड़ा तूफान आया, जिससे मद्रासमें ९ यूरोपियन जहाज और २० देशी जहाज डूब गये। उसके बाद सन् १८८१ में भी एक बड़ा तूफान आया था, जिससे बन्दरगाहकी बड़ी हानि हुई थी।

मैसूरके राज्यको, जो टीपूसुलतानके परास्त होनेपर मैसूरके हिन्दू राजाको फिर मिला था, सन् १८३१ में अङ्गरेज महाराजने अपने प्रबन्धमें करलिया था; किन्तु सन् १८८१ में वह राज्य वहाँके राजाको लौटा दिया गया। मद्रासके गवर्नमेण्टके अधीन मद्रास हातेमें तिरुवांकूर, कोचीन, पुडुकोटा, बगनापल्ली और संडूर ये ५ देशी राज्य हैं।

महाबली पुरके गुफामन्दिर।

मद्रास शहरसे करीब ३५ मील दक्षिण चेङ्गलपट्टके जिलेमें महाबलीपुरके गुफा-मन्दिर हैं। मद्राससे ६ मील दूर बार्किंघम नहरके पास गिंडी पुलतक घोड़ा गाड़ीकी सड़क है, उससे आगे नहरकी डोंगी द्वारा बारह चौदह घण्टेमें आदमी वहाँ पहुँच जाता है।

बलिपीठम् नामक एक छोटे गाँवके सामने नावसे उतरना चाहिये। नहरसे पूर्व, नहर और समुद्रके बीचमें बहुतसे चट्टानी गुफा मन्दिर और चट्टान काटकर बनी हुई मूर्तियाँ हैं, जिनके होनेके कारण महाबलीपुर प्रसिद्ध हुआ है। वहाँके सम्पूर्ण मन्दिर तथा मूर्त्तियाँ उन्हीं जगहोंके पत्थरमें पत्थर काट करके बनाई गई थीं। इनके बननेका सन् निश्चय नहीं है, किन्तु वे बहुत पुरानी हैं। बलिपीठम्से करीब १½ मील उत्तर सलुवन कुपन नामक गाँव, जहाँ आश्चर्य व्याघ्र गुफा है और दक्षिण महाबलीपुर नामक बड़ा गाँव है। नहर और समुद्रके बीचमें १½ मीलका फासिला है। सलुवन कुपनके १ मील दक्षिणसे उसके ½ मील दक्षिणतक महाबलीपुरके गुफा मन्दिर फैले हुए हैं।

बलिपीठम्के सामने उतरकर सीधे रास्तेसे ½ मील जाने पर एक बस्ती मिलती है, जहाँ पत्थर काटकर लंगूरके कदके बन्दरोंका एक झुण्ड बना है। समुद्रकी तरफ जानेपर २०० गज आगे बाईं तरफ एक धर्मशाला मिलती है। इससे करीब ३० गज दूर दुर्गा-देवीकी एक मूर्त्ति है, जिसके बायें ४ और दाहिने ३ स्त्रियोंकी मूर्त्तियाँ हैं। उस स्थानसे १० गज दूर ४½ फीट ऊँचा आश्चर्य नकाशीसे बना हुआ नीलवर्णका शिवलिङ्ग है। उससे ५ गज दूर एक नन्दी है। उस स्थानसे आगे जानेपर बालूपर दहिने बहुत सी झोपड़ियाँ और बायें मछुहोंका एक गाँव मिलता है। इसी तरह १⅛ मील जाने पर समुद्रके किनारेका मन्दिर मिल जाता है।

यह पहले महाबली चक्रवर्त्तीका मन्दिर था, और पीछे शिवमन्दिर हुआ। एक टूटे हुए हातेके भीतर मन्दिर है। मन्दिरके पास जगमोहन बना हुआ है। दरवाजेके सामने चट्टान काट करके शिव और पार्वतीकी मूर्त्ति बनी हुई है। पूर्वकी दीवारके मध्य हिस्सेमें एक अष्टभुजी सूरत है। भीतरके हिस्सेमें एक गिरा हुआ लिङ्गम् (शिवलिङ्ग) है। मन्दिर १७ फीट ऊँचा; ९ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है। मन्दिरका दरवाजा समुद्रके किनारे पर पानीसे करीब १० फीट ऊपर है, जिसके आगे दहिनी तरफ ७५ फीट दूर समुद्रके भीतर एक चट्टान पर १८ फीट ऊँचा पत्थरका टूटा हुआ ध्वजास्तम्भ है, जो पहिले इससे दूना ऊँचा रहा होगा। स्तम्भके पास पहुँचना कठिन है। मन्दिरके पश्चिम बगलके पास एक देवढ़ीमें करीब ११ फीट लम्बी विष्णुकी सूरत है।

किनारेके मन्दिरसे लगभग ६०० गज पश्चिम विष्णुका एक सादा मण्डपम् है, जिसके १२ गज दक्षिण एक सुन्दर तालाब है, जिसके चारों तरफ पानी तक पत्थरकी सीढ़ियां बनी हुई है। तालाबके मध्यमें एक छोटा मण्डपम् और उसके पास ब्राह्मणोंकी एक बस्ती तथा बहुतेरे वृक्ष हैं।

उस स्थानसे पश्चिमोत्तर बलिपीठम् गाँवसे ⅛ मील दक्षिण वाराहस्वामीका मण्डपम् है, जिसके आगे ४ स्तम्भ लगे हैं। मण्डपम्के दोनों बगलोंमें द्वारपाल बनाये गये हैं और मध्यमें हिरण्याक्ष दैत्यके ऊपर अपने दाहिने चरणको रक्खे हुए वाराहजी खड़े हैं। सामनेकी दीवारमें वामन भगवान्की बहुत बड़ी मूर्त्ति पत्थर काटकर बनाई हुई है, उनका एक चरण नीचे और दूसरा ऊपर है। दोनों चरणोंके पास पूजने वाले बने हुए हैं। दाहिनेकी दीवारमें एक स्त्रीकी बड़ी मूर्ति है, जिसके दाहिने व्याघ्र और बायें घड़ियाल बने हैं और बायेंकी दीवारमें लक्ष्मी बैठी है, जिनके ऊपर सूंडोंसे पानी गिराते हुए हाथी बने हैं। इनके अतिरिक्त उस मण्डपम्में विष्णु और दूसरे देवताओंकी कई सूरत बनी हैं। वाराह स्वामीके मण्डपम्से करीब ३० गज उत्तर गणेशजीका गुफामन्दिर है।

उस स्थानसे दक्षिण-पूर्वको फिरनेपर काट करके बनाया हुआ ३७ फीट ऊँचा एक चट्टान मिलता है, जिसको लोग अर्जुनका तपस्थान कहते हैं। देखने वालेके दहिनेके कमरेमें १३½ फीट ऊँचे हाथीके ऊपर पुरुष, स्त्री; और बानरोंकी ५७ मूर्त्तियाँ और ६½ फीट ऊँचे हाथीके नीचे हाथीके ३ बच्चे है। बायेंके कमरेमें ६१ मूर्त्तियाँ है, जिनमे अर्जुन सबसे अधिक प्रसिद्ध है। वह अपने हाथको अपने शिरके ऊपर रक्खे हुए बायें चरणकी एक

अंगुलीपर खड़े है। उनका शरीर बहुत दुबला है। अर्जुनके नीचे उसी प्रकारसे खड़े हुए लम्बे कान वाले एक राक्षसकी मूर्त्ति है, उसके दहिने शिवकी बड़ी मूर्त्ति है।

उस चट्टानसे लगा हुआ देखनेवालेके बायें ४९ फीट लम्बा और ४० फीट चौड़ा एक गुफामन्दिर है। उसके भीतरके स्तम्भोके ऊपरके भागमे सुन्दर नकाशीदार तीन तीन सिंह बने हैं। उसी दिशामे ४८ फीट लम्बा और २५ फीट चौड़ा एक दूसरा गुफामन्दिर है, जिसके भीतर बहुतसे स्तम्भ बनाये गये हैं; पीछेकी दीवारमे गोप, गोपियों और गौओंका झुण्ड बना है, दहिने गोवर्द्धन पहाड़ीको अपने बायें हाथपर थांभे हुए कृष्ण खड़े हैं और मध्यमें एक पुरुष गाय दुहता है, जिसके साथमें एक बछडा है।

उससे करीब १५ गज दूर विष्णुका एक बड़ा मन्दिर है, जिसमें ब्राह्मण लोग पूजा करते है। वह मन्दिर पीछेसे आगे तक १६५ फीट लम्बा है। उसका गोपुर करीब ४४ फीट ऊँचा है। मन्दिरके पास हीन दशामे एक छोटा मन्दिर और उसके आगे विष्णुकी एक मूर्त्ति है। उससे पूर्व थोड़ी चढाईपर रमणजीका मन्दिर मिलता है, जिसके अगवासमें ४ स्तम्भ बने हुए हैं। उस जगह पुराना संस्कृत अक्षरमें एक शिला लेख है।

उससे १½ मील दूर समुद्रकी तरफ मन्दिरोका एक झुण्ड है, जिसको लोग विमान कहते है। सड़क बालूदार है। पहिले पत्थरमें बने हुए एक सिंह और एक हाथी मिलता है। वहाँ द्रौपदी, अर्जुन, भीम और धर्मराजके मन्दिर हैं।

पौन मील पश्चिमोत्तर एक चट्टानपर दुर्गाका मन्दिर है, जिसके ५६ फीट ऊपर एक छोटा मन्दिर है, जहाँ चढ़ना कठिन है। नीचेके मन्दिरमे महिषासुरको मारती हुई सिंहपर चढ़ी हुई दुर्गाजी और विष्णुकी मूर्त्ति है।

बारहवाँ अध्याय।

(मदरास हातेमें) चेंगलपट्ट, पक्षीतीर्थ, कांची, जिंजीका किला, विलीपुरम् जंक्शन, पाण्डीचरी, कड़ालूर, चिदम्बरम्, मायावरम् और नागपट्टनम्।

चेंगलपट्ट।

मदरास शहरके रलवे स्टेशनसे ३४ मील दक्षिण–पश्चिम और आरकोनम् जंक्शनसे ४० मील (कांचीवरम्से २२ मील) दक्षिण-पूर्व चेंगलपट्टका रेलवे जंक्शन है। मदरास हातेके (१२ अंश, ४२ कला, १ विकला उत्तर अक्षांश और ८० अंश, १ कला, १३ विकला पूर्व देशान्तरमे) समुद्रके किनारेके निकट चेगलपट्ट जिलेके चेगलपट्ट तालुकका सदर स्थान चेंगलपट्ट कसबा है, जिसको द्राविडियन लोग सेङ्गलपट्ट कहते है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय चेंगलपट्टमें ५६१७ मनुष्य थे, अर्थात् ५२८६ हिन्दू, २३५ मुसलमान, ९५ क्रस्तान और १ दूसरा।

चेंगलपट्टके किलेके एक भागमे होकर रेलवे निकली है और उसके भीतरही मुनसफी आदि सरकारी कचहरियां तथा मुजरिम लड़कोंका चरित्र सुधारनेके लिये एक सरकारी कैदखाना है। इनके अलावे चेंगलपट्टमें क्षत्रम् अर्थात् धर्मशाला बङ्गला अस्पताल इत्यादि इमारतें हैं। किलेके एक बगलमें दोहरी किलावन्दी और तीन बगलोंमें एक झील और दलदल है।

चेंगलपट्ट जिला—इसके उत्तर नेल्लूर जिला, पूर्व बङ्गालकी खाड़ी, दक्षिण ओर दक्षिण आरकाट जिला और पश्चिम ओर उत्तर आरकाट जिला है। साधारण प्रकारसे इस जिलेकी भूमि समतल है। बहुतेरे स्थानोंमें समुद्रके निकटकी भूमि समुद्रके जलसे नीची है। भीतरकी ओरके मैदानोंमें जगह जगह नारियर और इमलीके वृक्षोंके कुञ्जोंमें बस्तियाँ देख पड़ती हैं। पत्थरीली और ऊसर जमीनपर खजूरके वृक्ष और कटैली झाड़ियाँ लगी हुई हैं। जिलेके पश्चिमोत्तरके कोनेके पास पहाड़ी सिलसिला है जिसकी सबसे ऊंची चोटी समुद्रके जलसे लगभग २५०० फीट ऊंची है। अनेक नदियाँ हैं, किन्तु सर्वदा नाव चलने लायक कोई नहीं है। जिलेकी झीलोंमें पलीकाट झील प्रधान है, उसकी सबसे अधिक लम्बाई ३५ मील चौड़ाई तीन मीलसे ११ मील तक, तथा सबसे अधिक गहराई १६ फीट तक है। मदरास हातेके दूसरे भागोंकी अपेक्षा चेंगलपट्ट जिलेमें सांप अधिक हैं। यह जिला मदरास हातेके स्वास्थकर जिलोंमेंसे एक है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय चेंगलपट्ट जिलेके २८४२ वर्गमील क्षेत्रफलमें ९८१३८१ मनुष्य थे, अर्थात् ९३९३१४ हिन्दू, २५०३४ मुसलमान, १६७७४ कृस्तान, २२९ जैन तथा बौद्ध और ३० अन्य। हिन्दुओंमे शैव और वैष्णव दोनो प्रायः बराबर थे। कृस्तानोंमें केवल २८५७ यूरोपिन और युरेशियन थे, बाकी सब देशी कृस्तान थे। हिन्दुओं-में २४३५९७ परिया, जिसको परयनभी कहते हैं, १९०८७६ वनिया (जातिविशेष), १८१३१६ वेल्लाल, ५५३७१ इडैयन (भेड़िहर), ३५६६२ कैक्कलर (कपड़ा बिननेवाले) ३२०२६ ब्राह्मण, २१८०५ कुंभाड़न (कारीगर), १८३९० सानान, १६८३५ सेट्टी (सौदागर); १६०२७ सेंवड़वन (मछुहा), १५०५९ कणक्कन (लिखनेवाले) और बाकीमें सतानी, वन्नान, अम्बंटन कुसवन इत्यादि जातियोंके लोग थे। इनमे क्षत्रिय केवल ६४३५ थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय चेंगलपट्ट जिलेके कसबे कांजीवरम् अर्थात् कांचीमें ४२५४८ और सेंटथमसमांउट नामक फौजी छावनीमें १३१३७ मनुष्य थे। इनके अलावे जिलेमें तिरुवतपुर, तिरुवल्लूर, चेंगलपट्ट और सैदापेट छोटे कसबे हैं। मदरास शहरके रेलवे स्टेशनसे ५ मील दक्षिण चेगलपट्ट जिलेका सदर स्थान सैदापेटका रेलवे स्टेशन है। चेंगलपट्ट जिलेमें तामिल भाषा प्रचलित है।

इतिहास—चेंगलपट्ट जिला विजयानगरके राज्यका एक भाग था। सोलहवीं सदीके अन्तमें विजयानगरके एक राजाने चेंगलपट्टके किलेको बनाया। लगभग सन् १६४४ में गोलकुण्डाके बादशाहने किलेपर अपना अधिकार जमाया। उसके बाद आरकाटके नवाबने किलेको लेलिया। सन् १७५१ में किला चन्दासाहबके अधिकारमें हुआ था; किन्तु पीछे नवाबने इसको फिर लेलिया। सन् १७६० में आरकाटके नवाब महम्मदअलीने "ईष्टइण्डियन

कम्पनी" को २० वर्षके लिये इस जिलेको ठीका दिया। प्रथम इस जिलेकी भूमि कई जिलेमें बँटी थी, किन्तु सन् १७९३ में एक जिलेमें कायम हुई। सन् १८०१ में आस पासकी भूमि इसमें जोड़ी गई।

पक्षीतीर्थ।

चेंगलपट्टके रेलवे स्टेशनसे ९ मील दूर एक पहाड़ीके ऊपर पक्षीतीर्थ है। स्टेशनसे उस पहाड़ीके पादमूल तक बैलगाड़ीकी सडक है। स्टेशनके पास सवारीके लिये बहुतसी गाड़ी तैयार रहती हैं। चेंगलपट्ट होकर दक्षिण जानेवाले यात्रियोंमेंसे बहुत लोग पक्षीतीर्थ जाते है। पहाड़ीके नीचे धर्मशालाये बनी हुई हैं। सवेरेसे यात्रीलोग उस पहाड़ीपर एकत्र होते है। पण्डे लोग पक्षियोंके खानेके लिये भोजन * तैयार करते हैं। नियमित समय मध्याह्न कालमे (पाली हुई) दो सफेद चील्ह (कभी कभी एकही) वहां आकर भोजन करके चली जाती है। यात्रीगण उनका दर्शन करते है। सफेद चील्हको क्षेमकरी और कोई २ दोनोंको लक्ष्मीनारायणभी कहते है उनका दर्शन मङ्गल सूचक है।

कांची।

चेंगलपट्ट जंक्शनसे २२ मील पश्चिमोत्तर और आरकोनम् जंक्शनसे १८ मील दक्षिण-पूर्व "सौथ इण्डियन रेलवे" पर कांचीवरम् अर्थात् कांचीका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके चेंगलपट्ट जिलेमें (१२ अंश, ४९ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, ४५ कला पूर्व देशान्तरमें) कांचीवरम् तालुकका सदर स्थान कांचीवरम् कसवा है। यह मदरास हातेमें एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान और पवित्र सप्तपुरियोंमेंसे एक पुरी है। कांचीवरम् से पूर्वोत्तर मदरास शहर सडक द्वारा ४६ मील और रेलवे द्वारा चेंगलपट्ट जंक्शन होकर ५६ मील तथा आरकोनम् जंक्शन होकर ६१ मील है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कांचीवरम् में ४२५४८ मनुष्य थे, अर्थात् २०६१५ पुरुष और २१९३३ स्त्रियां। इनमें ४१०९२ हिन्दू, १३११ मुसलमान, ७६ क्रस्तान, ६८ जैन और १ अन्य थे। मनुष्य संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमे ९५-वॉ और मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें १३ वॉ शहर है।

रेलवे लाइनसे पश्चिम कांचीवरम् कसबा है। रेलवेके स्टेशनसे १½ मील दूर बड़ा कांचीवरम् अर्थात् शिवकांची और शिवकांचीसे लगभग २ मील दक्षिण-पूर्व तथा रेलवे स्टेशनसे लगभग २ मील दूर छोटा कांचीवरम् अर्थात् विष्णुकांची है। दोनो कांचीके बीचमें सड़कके बगलोंमे प्राय. लगातार मकान हैं। कांचीमे मामूली कचहरियाँ, जेलखाना, अस्पताल, स्कूल इत्यादि सरकारी इमारतें बनी हुई हैं। वहाँ तामिल और कुछ तैलङ्गी भाषा प्रचलित है। शिवकांचीमे शैवलोग और विष्णुकांचीमें रामानुज संप्रदायके वैष्णव रहते हैं।

शिवकांची–शिवकांचीमें एकाम्रेश्वर शिवका बडा मन्दिर है। मन्दिरके २ बड़े घेरे है, जिनमेंसे पश्चिमके घेरेके मध्य भागमें शिवका निज मन्दिर है। उस गुम्बजदार छोटे मन्दिरकी तीन देवढ़ीके भीतर एकाम्रेश्वर शिवलिङ्ग है। द्राविड़के पाँच लिङ्गोंमेसे यह पृथ्वी लिङ्ग है। श्रीरङ्गम्के पास जंबुकेश्वर जललिङ्ग, दक्षिणी आरकाट जिलेके तिरुवन्नामलईके पासकी

* भोजन एकको खीर दूसरेको घी दिया जाता है।

अरुणाचल नामक पहाड़ीपर अग्निलिङ्ग, कालहस्तीमें कालहस्तीश्वर वायुलिङ्ग और चिदंबरम् में नटेश आकाशलिङ्ग हैं) । एकाम्रेश्वर पर जल नहीं चढ़ाया जाता वहांके पण्डे यात्रियोंसे दक्षिणा पानेपर उनकी तरफसे शिवके ऊपर फूल और बेलपत्र चढ़ाते हैं। यात्री लोग दरवाजेके बाहरसे शिवका दर्शन करते हैं। नियमित समय पर मन्दिरके आगे लड़कियाँ नृत्य करती हैं। मन्दिरके पीछे आम्रका एक पुराना वृक्ष है, जिसके नीचेके चबूतरे पर एक छोटे पत्थरमें "तपस्या कामाक्षी" की प्रतिमा खोदी हुई है, उसके पास एक मन्दिरमें कामाक्षीकी ताम्रमयी उत्सव मूर्त्ति है, निज मन्दिरके पास "सहस्र स्तंभ मण्डपम्" नामक विशाल मण्डप है, जिसमें २७ स्तम्भोंके २० पंक्तियोंमें ५४० स्तम्भ लगे हैं। मण्डपकी मरम्मत हो रही है।

निज मन्दिरसे पश्चिम-दक्षिण और घेरेके पश्चिमकी दीवारके समीप एक छोटे मन्दिरमें शिवकी उत्सव मूर्त्ति धातुविग्रह है; जिसके सिंहासन, छत्र, मुकुट आदि सामान सुनहरे बने हुए हैं। उत्सवोंके समय इस प्रतिमाकी यात्रा होती है। जगमोहनमे ६४ योगिनियाँ खड़ी हैं। उस मन्दिरसे थोड़ी दूर एक मन्दिरमें बहुमूल्य वस्त्र भूषणोंसे सुसज्जित पार्वतीकी मूर्त्ति है। पश्चिमवाले गोपुरके पास पंक्तिसे १०८ शिव लिङ्ग हैं। पश्चिमवाले घेरेके पूर्व वाले गोपुरके निकट चिदंबर शिव और नन्दीकी सुनहरी विशाल मूर्त्ति है। इनके अतिरिक्त उस घेरेमें नवग्रह आदिके बहुतेरे मन्दिर और दीवारके नीचे बहुतेरे शिवलिङ्ग तथा उसके ऊपर पंक्तिसे बहुतसे नन्दी बैल है। दक्षिणकी दीवारमें एक बड़ा गोपुर है।

उस घेरेके पूर्व उसमें लगा हुआ दूसरा घेरा है, जिसके पश्चिमोत्तरके भागमें तेप्पकुलम् नामक सरोवर है, जिसमे एक सुन्दर नाव रहती है। जेठ मासके प्रधान उत्सवमें शिव और पार्वतीकी उत्सव मूर्त्तियाँ इसीपर चढ़के जलक्रीड़ा करती हैं। उस समय वहाँ बड़ा मेला होता है, जिसमे लगभग ५० हजार यात्री आते हैं। घेरेके दक्षिणके बगलपर १० मञ्जिलका १८८ फीट ऊँचा एक विशाल गोपुर है। वह बाहरकी नेवके पास करीब १०० फीट लम्बा और ८० फीट चौड़ा है। उसके शिखरपर पंक्तिसे ११ कलश बने हुए हैं। उसके फाटकका चौकठ करीब ३५ फीट ऊँचा है, जिससे ऊपर चारो तरफ पत्थर खोदकर नीचेसे ऊपर तक मूर्त्तियाँ बनी हुई है। उसके सिरे पर चढ़नेसे चारों तरफका देश देख पड़ता है। द्रविडियन मन्दिरोंके घेरेके फाटकोंके ऊपर बड़े बड़े मन्दिरोंके समान शुंडाकार इमारत बनाई जाती है; उनको गोपुर कहदेते है। उनमें ग्यारह, नव, सात या इनसे कम मंजिलें होती हैं। ऐसाही गोपुर कांचीवरम्में है।

घेरेके बाहर बड़े गोपुरके सामने दक्षिण लगभग ७५ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा एक उत्तम मण्डपम् है। उसके चारो बगलोमे १२ और मध्यमें ४ नकाशीदार बड़े बड़े स्तम्भ लगे है। उनकी नकाशीमें निकाल कर मूर्त्तियाँ बनाई हुई हैं। मण्डपम्के पास काष्ठका ऊँचा रथ रक्खा है, जिसके नीचेका भाग सुन्दर चित्रोंसे भूषित और ऊपरका शिखर नारिलयके पत्तोंसे छाया हुआ है। रथयात्राके समय अचल देवताओंकी प्रतिनिधि चल मूर्तियाँ उस रथपर बैठाकर घुमाई जाती हैं।

शिवकांचीमें सर्वतीर्थ नामक एक बड़ा सरोवर है, उसके चारो बगलोमे पानी तक सीढ़ियां; मध्यमें एक छोटा मन्दिर और चारों तरफ जगह जगह शिवलिङ्ग और छोटे छोटे

मन्दिर है । यात्रीलोग सर्वतीर्थमें स्नान करके शिवका दर्शन करते हैं । अनेक यात्री सरोवरके किनारेपर पितरोंका तर्पण और पिण्डदान करते हैं । इसके अतिरिक्त शिवकांचीमें कई एक धर्मशाला और कई सदावर्त है । वस्तीके पूर्व देवीका मन्दिर और वस्तीसे २½ मील दक्षिण पनार नदी है ।

विष्णुकांची—शिवकांचीसे २ मील दक्षिण-पूर्व और रेलवे स्टेशनसे २ मील दूर विष्णुकांची है । विष्णुकांचीमें * वरदराज विष्णुका विशाल मन्दिर पत्थरका बना हुआ है । । वहाँ रामानुजीय सम्प्रदायके प्रतिवादि भयंकरकी गद्दी है और पुजारी, पण्डे सब लोग आचारी हैं । श्रीरामानुजस्वामी कुछ समय तक कांचीपुरीमें रहे थे (१० वें अध्यायमें भूतपुरीकी कथामें देखिये) ।

वरदराजके मन्दिरका घेरा लगभग ११०० फीट लम्बा और ७०० फीट चौड़ा है, जिसके भीतरकी भूमि २८ वीघेसे कुछ अधिक होती है । घेरेके वाहरकी दीवार लगभग २० फीट ऊँची है । घेरेके पूर्व बगलमे ११ खनका और पश्चिम बगलमें ९ खनका गोपुर देख पड़ता है, किन्तु गोपुरोंके भीतर इनसे बहुत कम तह है । पूर्ववाला गोपुर, जो विष्णुकांचीके सब गोपुरोंसे बडा है, नेवके पास लगभग १०० फीट लम्बा और ६० फीट चौडा है । फाटकोंके ऊपर गोपुरोंके चारों बगलोंपर नीचेसे ऊपर तक पत्थर खोदकर असंख्य मूर्त्तियाँ तथा कारीगरीकी वस्तुयें बनाई हुई हैं । हातेकी दीवारोंपर तामिल अक्षरोंमें शिलालेख है, जिनको लोग इमारत बनानेवालोंके निशान कहते हैं । पश्चिमवाले गोपुरसे बाहर एक सुन्दर रथ रक्खा है, जिसपर वैशाखके उत्सवके समय भगवान्‌की प्रतिनिधि चल मूर्त्ति वैठाकर घुमाई जाती है ।

(१) पश्चिमके गोपुरके फाटकके दोनों बगलोंमे तामिल अक्षरोंमे संस्कृत लेख है, जिसको लोग ग्रन्थी कहते हैं । उस फाटकसे प्रवेश करनेपर फाटकके पास बाईं ओर नीले पत्थरोंसे बना हुआ उत्तम मण्डपम् देख पड़ता है, जो कांचीपुरीमें उत्तम बनावटका काम है । मण्डपम् चारों ओरसे खुला हुआ है । उसमें १२ स्तम्भोंके ८ कतारोंमें ९६ पायादार स्तम्भ बने हुए हैं, जिनके नीचेके भागोंमें पूरे कदके बहुतसे अपूर्व घोड़े और परदार घोड़े, जिनपर सवार बैठे हैं, सिंह, शार्दूल, बाज, मनुष्य इत्यादि पत्थरमें निकाल करके बने हुए हैं । मण्डपम्‌के मध्यमे पत्थरका सिंहासन है, जिसपर गर्मीके उत्सवके समय भगवान्‌की चल मूर्त्ति बैठाई जाती है । उस मण्डपम्‌के उत्तर एक छोटा मण्डप और कोटितीर्थ नामक एक उत्तम सरोवर है, जिसके चारों बगलोंमे नीचे तक पत्थरकी सीढ़ियाँ और मध्यमें एक छोटा मण्डप बना हुआ है । यात्रीगण सरोवरमे स्नान करते है । पश्चिमवाले गोपुरके सामने पूर्व, वरदराजके निज मन्दिरके घेरेका गोपुर; पूर्वके गोपुरके भीतर उसके पश्चिमोत्तर एक बडा सरोवर है और बड़े घेरेके भीतर जगह जगह मकान, मण्डपम् तथा ताड़, खजूरके वृक्ष है ।

(२) भीतरका दूसरा घेरा पूर्वसे पश्चिमको लगभग ३७५ फीट लम्बा और उत्तरसे दक्षिणको २५० फीट चौडा है । उसके पश्चिमकी दीवारमें एक छोटा गोपुर है जिसके सामने वाहर एक बुर्ज (जिसपर उत्सवोंके समय सैकड़ो दीप जलाये जाते हैं) और सुनहरा गरुड़

* विष्णुकांचीके रहनेवाले सुप्रसिद्ध बादशाह शाहजहांके पण्डितराज जगन्नाथके प्रतिवादी अप्पय्य दीक्षितने वरदराजस्तवराज बनाया है ।

विष्णुकांची के मंदिर का नक्शा।

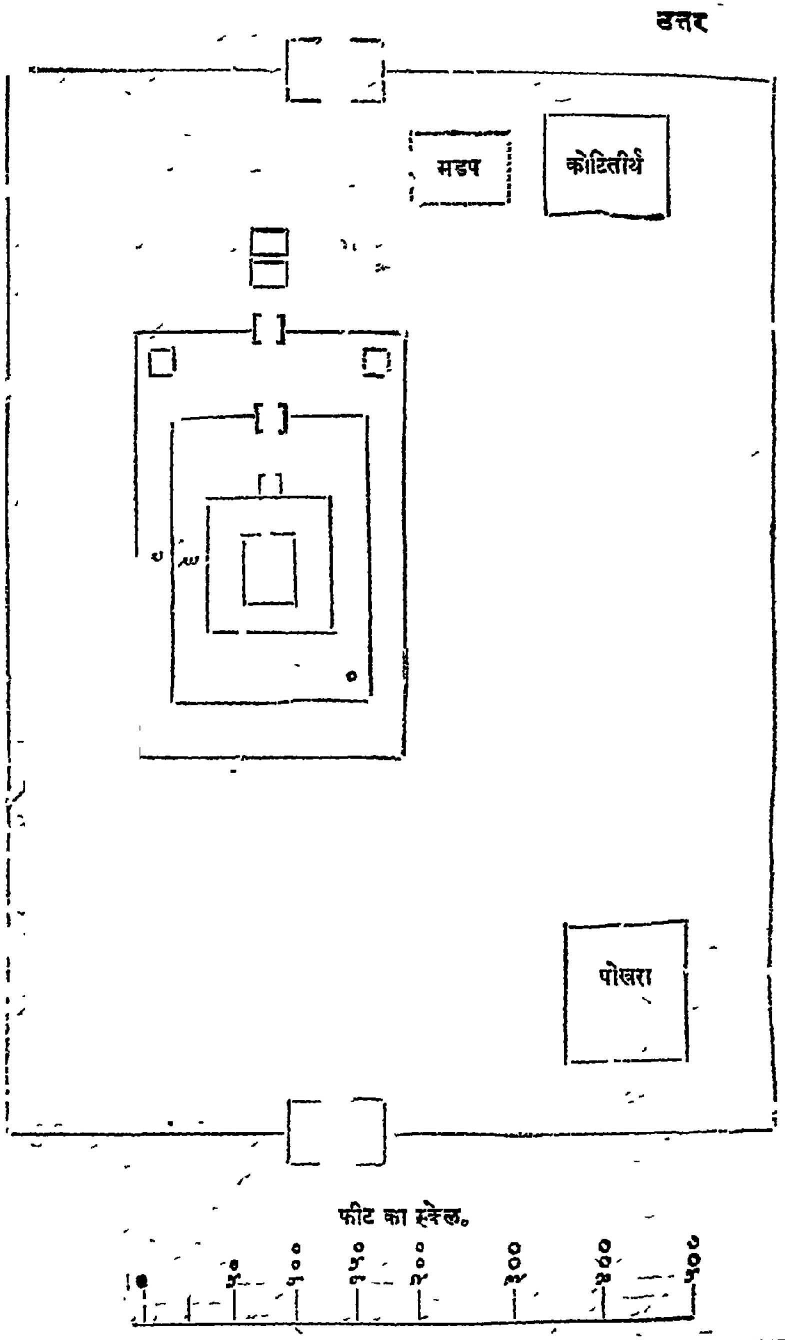

स्तम्भ खड़ा है। उस घेरेके भीतर चारोंओर मकान, दक्षिण-पश्चिमके कोनेके पास लक्ष्मीजीका मन्दिर और पश्चिमोत्तरके कोनेके पास भगवान्‌के वाहनोंके मकान हैं, जिनमें हनूमान, हस्ती, घोड़ा, गरुड़, बन्दी, मयूर, व्याघ्र, सिंह और शरभकी प्रतिमायें रक्खी हुई हैं। इनमेंसे कई वाहनोंपर चाँदी तथा सोनेका मुलम्मा है। शरभ कौन जानवर है, यह बात बहुत लोग नहीं जानते हैं। लिङ्गपुराणके ५८ वें अध्यायमें लिखा है कि शरभ सिंहोंका स्वामी है, और ९६ वाँ अध्यायमें है कि वीरभद्रने शरभका रूप धारण किया उसका आधा शरीर मृगका और आधा पक्षीका और बड़े बड़े पंख, तीखी चोंच और ४ पाद थे, वैशाख मासके आरम्भसे एकादशी तक भगवान्‌की प्रतिनिधिरूप उत्सवमूर्त्ति प्रतिदिन एक एक वाहनके सिंहासनपर बैठकर इधर उधर निकलती है। उस समय विष्णुकांचीमें यात्रियोंकी बड़ी भीड़ होती है।

(३) तीसरे घेरेके पश्चिमकी दीवारमें फाटक है, जिसके सामने पूर्व वरदराजके निज मन्दिरके चबूतरेमें लगा हुआ योगनृसिंहका छोटा मन्दिर है। उस घेरेके चारों बगलोंमें मकान, दक्षिणपूर्वके कोनेके पास भगवान्‌की पाकशाला, पूर्वोत्तर एक कूप, उत्तर तरफ असबाब रखनेका गृह और मध्यमें हस्तीगिरि नामक ऊँचे चबूतरेपर वरदराजका मन्दिर है।

एकसौ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा हस्तगिरि नामक चबूतरा है, जिसपर चढ़नेके लिये दक्षिण-पूर्वके कोनेके पास २४ सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। चबूतरेके ऊपर उसके पूर्वके किनारेके पास वरदराजका विमान अर्थात् निज मन्दिर पूर्व मुखसे खड़ा है। चारों तरफ मन्दिरके आगे जगमोहन और चारोंओर छतके नीचे परिक्रमाकी जगह है। परिक्रमामें विमानसे पूर्वोत्तर पत्थरका एक सिंहासन है।

विमानकी तीन देवढ़ीके भीतर ४ हाथसे अधिक ऊँची वरदराज भगवान्‌की श्यामल चतुर्भुज मूर्ति खड़ी है। भगवान्‌के गलेमें बहुमूल्य अनेक सुवर्ण भूषण और चमकीले शालग्रामोंकी माला, शिरपर सुनहरे मुकुट और अङ्गमें बेशकीमती भूषण वस्त्र लगे है। उनके समीपकी उत्सव मूर्त्तियाँ भी बहुमूल्य भूषण वस्त्रोंसे सज्जित हैं। नियत समयपर दूसरी देवढ़ीसे यात्रियोंको दर्शन मिलता है। वहाँका पुजारी एक रुपया पानेपर यात्रीकी तरफसे भगवान्‌को पुष्प और तुलसीपत्र चढ़ाकर उनकी आरती करदेता है। जो नहीं रुपया देता है वह दर्शन करके चला जाता है।

विष्णुकांचीके मन्दिरके खजानेमें वहाँके देवताओंके बहुमूल्य भूषण रक्खे हुए हैं। उनमें सोनेके ५ कुण्डा और किरीटोंमे बहुतेरे पन्ना, हीरा और लाल जडे हुए है, जिनमेसे प्रत्येकका दाम ५००० से १०००० रुपये तक लगा है। लक्ष्मीके बाल बाँधनेके लिये डेढ़ इञ्च चौड़ा रत्न जड़ा हुआ नागसेन नामक एक सिरबन्द अर्थात् पट्टी, लाल मोती और पन्नेसे बने हुए अनेक प्रकारके हार और बहुतसी गलेमें पहननेकी सोनेकी सिकरी हैं। प्रत्येकका दाम ८०० से १००० रुपये तक कहा जाता है। एक आचारीका दिया हुआ ७८०० रुपयेका मकर कंठा है। रत्न जड़े हुए सोनेके पायताबे और एक मकर कंठा अर्थात् गलेका भूषण ८६०० रुपयेका है। लोग कहते हैं कि इसको लार्ड क्लाइवने दिया था। इनके अतिरिक्त और भी कई बहुमूल्य भूषण हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(कर्णपर्व १२ वाँ अध्याय) कांचीके क्षत्रियगण कुरुक्षेत्रके संग्राममे पाण्डवोंकी ओर होकर कौरवोंकी सेनासे युद्ध करने लगे।

वामनपुराण—(१२ वाँ अध्याय) नगरोमे श्रेष्ठ कांचीनगर और पुरियोंमें श्रेष्ठ द्वारिकापुरी है।

देवीभागवत—(सातवां स्कंध, ३८ वाँ अध्याय) कांचीपुरमें भीमादेवी और विमलादेवीका स्थान है।

श्रीमद्भागवत–(दशमस्कन्ध, ७९ वाँ अध्याय) बलदेवजी श्रीशैल और वेंकटेश पर्वतका दर्शन करके कांचीपुरीमें गये।

गरुड़पुराण–(पूर्वार्द्ध, ८१ वाँ अध्याय) कांचीपुरी एक उत्तम स्थान है। (प्रेतकल्प २७ वाँ अध्याय) अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिका और द्वारिका ये ७ पुरियाँ मोक्ष देनेवाली हैं।

पद्मपुराण–(स्वर्गखण्ड, ५७ वाँ अध्याय) विराट्पुरुषके सात धातुओंसे सातों पुरियां है। (सृष्टिखण्ड, १४ वाँ अध्याय) महादेवजी सब प्रदेशोंमें पर्यटन करते हुए कांचीपुरीमें गये। (पातालखण्ड, १७ वें अध्यायसे २२ वें अध्याय तक) लोकमें प्रसिद्ध कांची नामक पुरी है। उसमें रत्नग्रीव नामक राजा राज्य करता था। वह अपने पुत्रको राज्य देकर पुरुषोत्तमजीके दर्शनको चला और गङ्गासागर संगमके निकट नीलपर्वतपर पुरुषोत्तमजीका दर्शन करके विमानमें बैठ वैकुण्ठको चला गया।

शिवभक्तविलास–(दूसरा अध्याय) दक्षिण देशमें ब्रह्मा, विष्णु और मुनियोंको सिद्धि देने वाली कांची नामक नगरी है, जहां जगत्को उत्पन्न करनेवाली कामाक्षी देवी विराजती हैं। वहाँ एकाम्र वृक्षके नीचे तप करने पर शिव भगवान्का दर्शन होता है और मुनि लोग कामाक्षीनाथ महादेवकी आराधना करके शीघ्रही तपकी सिद्धि प्राप्त करते हैं। (५० वाँ अध्याय) हरदत्त ब्राह्मणने कांचीपुरमें जाकर एकाम्र वृक्षके मूलमें स्थित देवीकी स्तुति की।

इतिहास–चीनका रहनेवाला हायनशांग सन् ६२९ से ६४५ ईस्वी तक हिन्दुस्तानमें रहा था, उसने लिखा है कि कांचीवरम् बौद्धोंके अधीन द्राविड़की राजधानी एक प्रसिद्ध नगर है। पल्लव वंशके राजाओके राज्यका प्रसिद्ध कसबा कांचीवरम् हुआ था। उनका प्रधान किला पुरलूरमें था। ७ वीं सदीमें पल्लव वंशके राजाओंका प्रताप बढ़ा चढ़ा था। ८ वी अथवा ९ वी सदीमें चोला वंशके राजाओंने पल्लव वंशके राजाओंको निर्बल करदिया और कांचीपुरीको अपनी राजधानी बनाया। १४ वीं सदीमें यह विजयानगरके राजाके अधिकारमें हुआ। १६ वीं सदीके आरम्भमें विजयानगरके राजा कृष्णरायने कांचीवरम्के दो बड़े मन्दिरोंको, जो द्राविड़के सबसे बड़े मन्दिरोंमेंसे हैं, बनवाया और दक्षिणीय भारतके बड़े मन्दिरोंमेंसे अनेकको सुधरवाया तथा बढ़वाया। ऐसा प्रसिद्ध है कि कांचीवरम्, चिदंबरम् और श्रीरंगम्के बड़े गोपुरोंको इन्हींने बनवाया था। पीछे उनके वंशके लोगोंने वहाँके छोटे मन्दिरोंको बनवाया। सन् १६४४ में विजयानगरके राज्यकी घटतीके समय कांचीवरम् गोलकुण्डाके मुसलमान बादशाहके अधिकारमें था। पीछे एक समय यह आरकाट राज्यके अधीन हुआ था। सन् १७५१ में ईष्टइण्डियन कम्पनीके गवर्नर लार्ड क्लाइवने आरकाटसे लौटती समय फरासीसियोंसे कांचीवरम्को छीन लिया।

जिंजीका किला।

चेंगलपट्ट जंक्शनसे कई मील दक्षिण पनार नदीपर रेलवे पुल और ४१ मील दक्षिण पश्चिम टिंडीवरम्का रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे १८ मील पश्चिम मदरास हातेके दक्षिणी आरकाट जिलेमें जिंजीका पसिद्ध पहाडी किला है।

किलेमे मजबूतीके साथ किलाबन्दी कीहुई ३ पहाड़ियां है, जिनमे सबसे अधिक ऊँची और प्रसिद्ध राजगिरि नामक पहाडी है। यह आस पासकी भूमिसे पांच छः सौ फीट ऊँची होगी। किलेके भीतर उत्तम इमारतोके कई एक खण्डहर हैं, जिनमेंसे कल्यान महलमे मोरब्वा आँगनके बगलोंमे सुन्दर कमरे बने हुए है। यह गवर्नरकी स्त्रियोंके रहनेके लिये बना था। मध्यमे आठ मञ्जिला टावर है। राजगिरिके ऊपर एक बड़ी तोप पडी है, जिसकी नकाशीमें ७५६० सूरते बनी हुई हैं।

इतिहास—पन्दरहवीं सदीके अन्तमें, जब विजयानगरका प्रताप चमका था, तब यह किला उसके अधिकारमें था। सन् १५६४ में डेकानके मुसलमान बादशाहोंने विजयानगरके राजाको परास्त करके किलेको ले लिया।

सन् १६७७ में यह किला शिवाजीके हाथमे आया और ३१ वर्ष तक मरहटोंके अधिकारमें रहा। सन् १६९८ में औरङ्गजेबने किलेको ले लिया। सन् १७५० मे फरासीसियोंने रातमें अकस्मात् आक्रमण करके किलेको ले लिया और ११ वर्ष तक यह उनके अधीन रहा। अन्तमें किला अङ्गरेजी गवर्नमेण्टके अधिकारमें होगया।

विलीपुरम् जंक्शन।

टिण्डीवरम्के स्टेशनसे २३ मील दक्षिण-पश्चिम विलीपुरम्का रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके दक्षिणी आरकाट जिलेमें विलीपुरम् एक कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ८२४१ मनुष्य थे। विलीपुरम् जंक्शनसे रेलवे लाइन ४ तरफ गई है,—

(१) विलीपुरम् जंक्शनसे उत्तर "साउथ इण्डियन रेलवे" जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई है;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

४२ तिरुवन्नामलई।
९३ वेल्लूर।
९९ कटपदी जंक्शन।
१३८ पकाला जंक्शन।
१५७ चन्द्रगिरि।
१६४ तिरुपदी।
१७० रेणुगुण्टा जंक्शन।

(२) पूर्व साँथ इण्डियन रेलवे पर १० मील कन्दमङ्गलम् और २४ मील पांडीचरी।

(३) विलीपुरम्से दक्षिणकी ओर सौथ इण्डियन रेलवे,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१७ पनरुटी।
२७ कडलूर नया।
२९ कडलूर पुराना।
४६ पोर्टो नोवे।
५३ चिदंबरम्।
६३ सियाली।
६८ स्वर्णकोइल।
७६ मायावरम् जंक्शन।

९५ कुम्भकोणम्।
१२० तञ्जोर जंक्शन।

मायावरम् जंक्शनसे दक्षिण २३ मील तिरुवालूर जंक्शन और ५३ मील मुटूपेटै। तिरुवालूरसे पूर्व १५ मील नागपट्टनम् और पश्चिम ३५ मील तञ्जोर जंक्शन और ६६ मील तिरुचनापल्ली जंक्शन।

(४) विलीपुरम् जंक्शनसे पूर्वोत्तर सौथ इण्डियन रेलवे;—
मील—प्रसिद्ध स्टेशन।
२३ टिण्डीवरम्।
६४ चेङ्गलपट्ट जंक्शन।
९३ सैदापेट।
९८ मदरास शहर।

चेंगलपट्ट जंक्शनसे पश्चिमोत्तर ३१ मील कांची और ४० मील आरकोनम् जंक्शन है।

पांडीचरी।

विलीपुरम् जंक्शनसे २४ मील पूर्व पांडीचरीका रेलवे स्टेशन है। फरासीसियोंके हिन्दुस्तानके राज्यकी राजधानी पांडीचरी एक शहर है जिसको पट्टूचारी भी कहते हैं।

गोराकी वस्ती, जिसमें अच्छी अच्छी इमारतें हैं, समुद्रके पास है। नहरकी एक तरफ गोरावस्ती और दूसरी तरफ देशी वस्ती है। उत्तर बगलके पास समुद्रसे ३०० गजसे कम फासिले पर गवर्नमेण्ट हाउस एक खूबसूरत इमारत है। पांडीचरीमें एक लाइटहाउस है, जिसकी रोशनी समुद्रसे ८९ फीटकी ऊँचाई पर होती है। हाईकोर्ट एक खूबसूरत इमारत है। अस्पतालके उत्तर मिशनरियोंका चर्च; फिर उसके उत्तर ४५० विद्यार्थियोंका स्कूल है। कैदखानेमें साधारण प्रकारसे ३३० कैदी रहते हैं। उसके सामने घड़ीका टावर है। पवलिक बाग भी देखने लायक है।, इनके अलावे पांडीचरीमें नया बाजार, बारक, टाउनहाल, एक कालिज, एक लाइब्रेरी और २ देवमन्दिर हैं। जहाजोंसे उतरनेके स्थानके पास एसप्लानेडमें फरासीसियोंके गवर्नर डुप्लेकी सुन्दर प्रतिमा खड़ी है।

फरासीसियोंका राज्य—फरासीसियोंके हिन्दुस्तानके राज्यका क्षेत्रफल १७८ वर्गमील है। जिसमें सन् १८९१ में २८४५६८ मनुष्य थे पांडीचरीके हाकिमके अधीन पाण्डीचरीके सिवाय मदरास हातेके तञ्जोर जिलेमें ट्रंकूबारके दक्षिण कारीकाल; गोदावरी जिलेमें अनाम और मलेवार जिलेमें माही और बङ्गाल हातेके हुगली जिलेमें चन्दरनगर है।

खास पाण्डीचरी राज्यका क्षेत्रफल ११५ वर्गमील है, जिसमें ९३ बड़े और १४१ छोटे गाँव बसे हुए हैं, जिनमें सन् १८८२ में १४१००० मनुष्य थे। पाण्डीचरी राज्यके बगलोंमें दक्षिणी आरकाट जिलेका कड़ालूर ताल्लुक है। पाण्डीचरीका गवर्नर १६००) रुपये, एटरनी जनरल २००) रुपये और ४ सिनियर जज चार चार सौ रुपये मासिक तनखाह पाते हैं। सन् १८८३ में फरासीसी सरकारको पाण्डीचरी राज्यसे लगभग ५७५००० रुपया मालगुजारी मिली थी।

इतिहास—सन् १६७२ ई० में फरासीसियोंने हिन्दुस्तानमें अपने आनेके ७१ वर्ष पीछे विजयानगरके राजासे पांडीचरी एक छोटा गाँव खरीदा। सन् १६७४ में कसबा कायम हुआ। सन् १६९३ में हालेण्ड वालोंने पाण्डीचरीको छीन लिया था; किन्तु सन्

१६९७ में एक सुलह नामेके मुताबिक तरक्की की, किलाबन्दियोंके साथ उसेने फरासीसियोंको वापस दिया। सन् १७४८ में अङ्गरेजी अफसरने ६००० फौजके साथ इसपर महासरा किया; लेकिन ४१ दिनोंके पीछे १०६५ यूरोपियनोंके मारे जानेपर उसने अपना घेरा उठा लिया।

सन् १७६० की जुलाईके आरम्भमें अङ्गरेजी अफसर कर्नेल कूटने २००० यूरोपियन और ६००० देशी सेनाओंके साथ पाण्डीचरीका महासरा किया और ता० ९ सितम्बरको अङ्गरेजी मदद पहुँचनेपर सरहदी झाड़ी और किलेबन्दीके ४ हिस्सोंमेंसे ३ को लेलिया। ता० २७ नवम्बरको फरासीसियोंका अफसर मिष्टर लैलीने रसद और गल्लेकी कमती देख-कर शहरके निवासियोको, जो १४०० थे; निकाल दिया। उन्होंने अङ्गरेजों द्वारा खदेरे जानेपर फिर किलेमें प्रवेश करनेकी कोशिश की, किन्तु फरासीसियोने चन्दूको गोलीसे मार कर उनको जाने नही दिया। वे लोग ८ दिनों तक दोनों फौजोकी लाइनोंके बीचमें भटकते फिरे; अन्तमें अङ्गरेजोंने उनको बाहर जानेका हुक्म दे दिया। सिलोन और मदरासमे अङ्गरे-जोंके लड़ाईके अनेक जहाज आ जानेपर फरांसीसियोंको छुटकारा होनेकी आशा जाती रही। तारीख १६ दिसंम्बर को, जब उनके पास केवल २ दिनके भोजनकी सामग्री थी, फरांसीसी लोग परास्त हुए। सन् १७६३ में अङ्गरेजोंने फरांसीसियोंको पाण्डीचरी छोड़ दी।

सन् १७७८ के ९ अगस्तको अङ्गरेजी अफसर सर हेक्टर मनरोने १०५०० फ़ौजके साथ, जिनमे १५०० यूरोपियन थे, पाण्डीचरीपर फिर महासरा किया। सख्त रुकावटके बाद अकतूबरके बीचमें पाण्डीचरीके फरांसीसियोंकी हार हुई। सन् १७८३ में वह फिर फरांसीसियोंको दी गई। सन् १७९३ के २३ अगस्तको अङ्गरेजोंने पाण्डीचरीको लेलिया; किन्तु सन् १८०२ के सुलहनामेसे वह असली मालिकको फिर लौटा दी गई। सन् १८०३ में अङ्गरेजी सरकारने फरांसीसियोंसे पाण्डीचरीको छीनकर अपने आरकाटके राज्यमें मिला लिया; उससे वार्षिक ४५०००० रुपया वसूल होने लगा। पीछे एक सन्धि होनेपर अङ्गरे-जोंने सन् १८१७ में फरांसीसियोको पाण्डीचरी लौटा दी, तबसे वह उनके अधिकारमें चली आती है।

कड़ालूर।

विलीपुरम् जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व २७ मील नया कड़ालूर और २९ मील पुराना कड़ा लूरका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके दक्षिणी आरकाट जिलेमें पाण्डीचरी कसबेसे १६ मील दक्षिण समुद्रके किनारेपर कड़ालूर ताल्लुकमें दक्षिणी आरकाट जिलेका सदर स्थान कड़ालूर एक कसबा है, जिसको द्रविड़ियन लोग कड्लूर कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कड़ालूरमें ४७३५५ मनुष्य थे; अर्थात् २३१९७ पुरुष और २४१५८ स्त्रियाँ। इनमें ४३३८९ हिन्दू, २१०४ मुसलमान, १७८५ कृस्तान और ७७ जैन थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमे ८० वाँ और मदरास हातेमें १० वाँ शहर है।

कड़ालूरमें जिलेकी सदर कचहरियाँ, जेलखाना इत्यादि सरकारी इमारतें हैं। कड़ा-लूरका पुराना कसबा, जिसमें देशी लोग बसते हैं, यूरोपियन लोगोंकी बस्ती अर्थात् नया

कड़ालूरसे २ मील दक्षिण नीची भूमिपर है, जिसमें बहुतसे सुन्दर मकान बने हुए हैं। उसमें जेलखाना, गिरजा, रेलवेका कारखाना, वारक (अब खाली पड़ा है,) तथा समुद्र संबंधी बहुतसे तिजारती आफिस हैं। यूरोपियन लोगोंकी बस्ती ऊंची जमीनपर वसी है। वहां बड़े मैदानमें जगह जगह सरकारी आफिस बने हुए हैं और सड़कोंके बगलोंमें वृक्ष लगे हैं। कड़ालूरके पास एक नदीके बायें किनारेपर सेट डेविटका किला उजाड़ पड़ा है। किलेकी खाई प्रायः भर गई है; बहुतेरे स्थानोंमें किलेकी दीवार गिर गई है। नया कड़ालूरके स्टेशनसे उतरकर किलेको देखना चाहिये। कड़ालूरमें तेल, चीनी और नील तैयार होते हैं, इनकी वहां बड़ी सौदागरी होती है। नदीके मुहानेके पास मट्टी पड़ जानेके कारण केवल देशी नाव कसवेके पास तक आती है।

दक्षिणी आरकाट जिला—इसके उत्तर चेंगलपट्ट और "उत्तर आरकाट" जिला, पूर्व बङ्गालकी खाड़ी, दक्षिण तिरुचनापल्ली और तञ्जोर जिला और पश्चिम सेलम जिला है। दक्षिणी आरकाट जिलेकी सीमाके भीतर फरासीसियोंके पाण्डीचरीका राज्य है। जिलेमें नाव चलने लायक ३ छोटी नदियां हैं। जिलेके जङ्गलोंमें कुछ कुछ हाथी, बाघ और भालू तथा बहुतसे तेंदुये, सूअर इत्यादि बनैले जन्तु हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय दक्षिणी आरकाट जिलेके ४८७३ वर्गमील क्षेत्रफलमें १८१४७३८ मनुष्य थे, अर्थात् १७२१६१४ हिन्दू, ४८२८९ मुसलमान, ३९५७१ कृस्तान, ५२६१ जैन और बौद्ध और ३ अन्य। हिन्दुओंमें ५९२३८० वनिया (जाति-विशेष मजदूरी पेशे वाले) ४३७७४५ परिया (परयन्), २४५०४४ वेल्लाल (खेतिहर) ९९८०९ इडैयन, ४४४१९ कैक्कलर (कपड़ा बिनने वाले), ४१६६९ कम्भाड़न (कारीगर) ३४५५५ ब्राह्मण ३२७१४ चेटी (सौदागर) २०००५ बनान (धोबी), १९२१७ अम्बा-टन (नाई), १९१७९ सेंबड़वन (मछुहा), १५०५९ सानान (मदक), १३११८ सतानी, ११३४२ कुसवन (कुम्भार), १०४३४ कणक्कन (लिखनेवाले), ३५४२ क्षत्रिय और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे। हिन्दुओंमें सैकड़े पीछे ५३ शैव, ४५ वैष्णव और २ अन्य मतके लोग थे। दक्षिणी आरकाट जिलेके ब्राह्मण जमीदारी और सरकारी नोकरी करते हैं। चेटी जातिके लोगोंमें बहुत धनी हैं, कोरवा जातिके लोग जो चोरीका पेशा करते हैं। सूअरोंके झुण्डके साथ घूमा फिरा करते है और दौरी बनाते हैं। पहाड़ी देशोंमे मलयाली, इरुला और विलियर जाति बसते हैं। इस जिलेमें तामिल भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय दक्षिणी आरकाट जिलेके कसबे कड़ालूरमें ४७३५५, चिदंबरम्में १८६४०, पोर्टोनोवेमें १४०६१ और तिरुवन्नामलईमे १२१५५ मनुष्य थे। इनके अतिरिक्त पनरुटी, विलीपुरम्, वृद्धाचलम् आदि कई कसबे हैं।

पुराना कड़ालूरके रेलवे स्टेशनसे १७ मील दक्षिण पोर्टोनोवेका रेलवे स्टेशन है। समुद्रके किनारेपर एक नदीके मुहानेके पास पोर्टोनोवे एक बन्दरगाहका कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १४०६१ मनुष्य थे। कसबेमें चटाई बहुत बनती हैं और बन्दरगाह द्वारा सौदागरी होती है।

तिरुवन्नामलई कसबेके पास तिरुवन्नामलई नामक पहाड़ी है, जिसको अरुणाचलम्भी कहते हैं। उसी पहाड़ीके नामसे कसबेका नाम तिरुवन्नामलई पड़ा है। उसी पहाड़ीके ऊपर द्राविड़ देशके ५ प्रसिद्ध शिवलिङ्गोंमेंसे अग्नि लिङ्गका मन्दिर है।

इतिहास—सन् १६८३ में ईस्टइण्डियन कम्पनीने जींजीके खांसे इजाजत लेकर कड़ालूरमें अपनी कोठी बनाई और उसके दूसरे साल वन्दरगाह और किला बनानेके लिये भूमिका ठेका लिया। सन् १६८७ में कम्पनीने महाराष्ट्रोंसे "फोर्टसेंट डेविड" की भूमि और उसके पडोसकी वस्तियोंको खरीदा। कोठी बनानेके १० वर्षके भीतर, जब सौदागरी की बडी तरक्की हुई कम्पनीने अपनी रक्षाके लिये कड़ालूरमें सेंटडेविड नामक किला बनवाया और अपनी कोठियोंको फैलाया। मदरास शहरके निर्बल होनेपर हातेका सदरस्थान कडालूर बना था। सन् १७५२ में फिर मदरास शहर सदर स्थान हुआ। सन् १७५८ में फरांसीसियोंने अङ्गरेजों से कड़ालूरको छीनकर वहाके किलेका विनाश करदिया। सन् १७६० मे कडालूर फिर अङ्गरेजोंके अधिकारमे हुआ। सन् १७८२ में टीपू सुलतान और फरांसीसियोंने कड़ालूरपर अपना अधिकार करलिया। और आक्रमणोंके रोकनेके लिये किलेको दुरुस्त करवाया। १७८५ में अंङ्गरेजोने एक लडाईमे फरांसीसियोंको परास्त करके कड़ालूर और किलेको छीन लिया। सन् १८०१ मे जब करनाटक अङ्गरेजोंके अधिकारमें होगया, तब दक्षिणी आरकाट एक जिला बनाया गया।

चिदम्बरम्।

पुराने कडालूरके रेलवे स्टेशनसे २४ मील विलीपुरम् जंक्शनसे ५३ मील और मदरास शहरसे १५१ मील दक्षिण चिदम्बरम्का रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके दक्षिणी आरकाट जिलेमें (११ अंश, २४ कला, ९ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, ४४ कला, ७ विकला पूर्व देशान्तरमे) समुद्रके पूर्वी किनारेसे ७ मील पश्चिम चिदम्बरम् तालुकका सदर मुकाम तथा एक पवित्र स्थान चिदम्बरम् है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय चिदम्बरम् कसबेमें १८६४०मनुष्य थे; अर्थात् ९०७९ पुरुष और ९५६१ स्त्रियाँ। इनमें १७४२२ हिन्दू, ११०२ मुसलमान, १०७ क्रस्तान और ९ जैन थे।

रेलवे स्टेशनसे १ मील दूर चिदम्बरम् कसबा है। कसबेमें सरकारी कचहरियाँ, पोस्ट आफिस, मोदियोंकी दूकानें और अनेक धर्मशालायें हैं। रेलवेकी ओर एक छोटी नदी बहती है। निवासियोंमेंसे चौथाई लोगसे अधिक कपड़े और रेशमी वस्त्र बिननेका काम करते हैं। दिसम्बरमें एक बडा मेला होता है; जिसमे ५०००० से ६०००० तक यात्री तथा सौदागर आते हैं।

नटेश शिवका मन्दिर—चिदम्बरम् कसबेके उत्तर ३९ बीघे भूमिपर नटेश शिवका मन्दिर है। ३० फीट ऊंची २ दीवारोंके घेरेके भीतर नटेशके निज मन्दिरका घेरा, पार्वतीका मन्दिर, शिवगङ्गा नामक सरोवर और अनेक मण्डप तथा मन्दिर हैं। बाहरकी दीवारके भीतरकी भूमिकी लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तक करीब १८०० फीट और चौड़ाई पूर्वसे पश्चिम तक १५०० फीट है। बाहरकी दीवारमें चारों दिशाओंमें एक एक छोटे गोपुर है।

नटेश के मंदिर का नक्शा

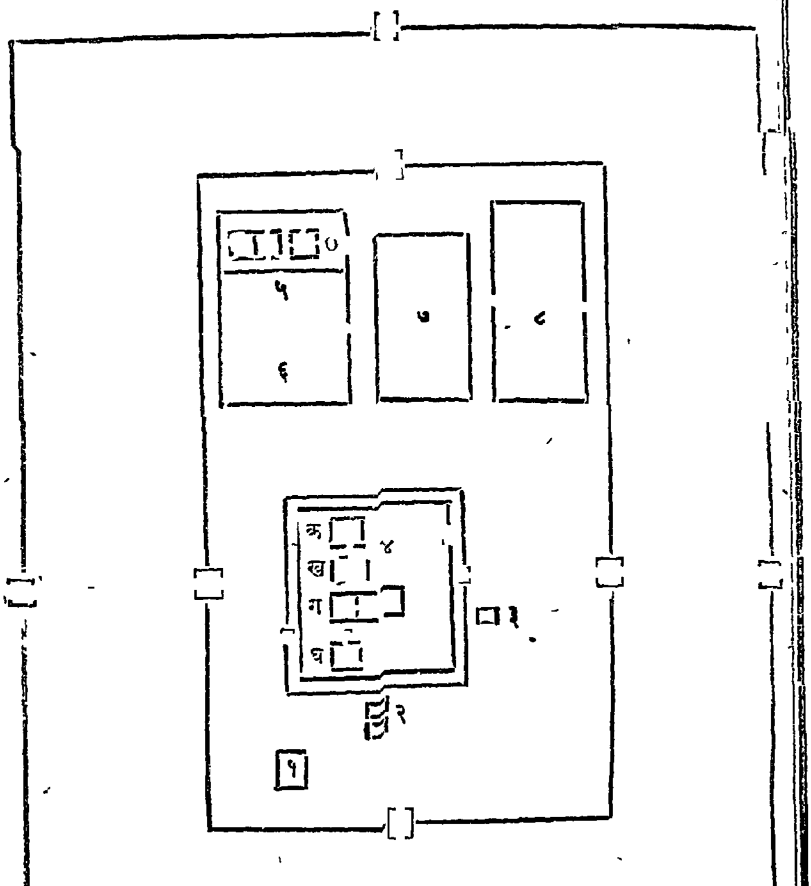

फीट का स्केल.

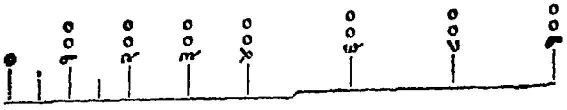

भीतरवाली दीवारके अन्तरकी भूमि लगभग १२०० फीट लम्बी और ७२५ फीट चौड़ी है। उस घेरेके चारों बगलोंपर करीब ११० फीट लम्बे ७५ फीट चौड़े और १२२ फीट ऊँचे एक एक नव मजिले गोपुर हैं। चारों गोपुर प्रतिमाओंसे पूर्ण और चित्रोंसे चित्रित हैं। उनके नीचे ४० फीट ऊँचे ५ फीट मोटे ताम्बेके पत्तर जडे हुए पत्थरके चौकठ लगे हैं। दीवारके भीतर चारों तरफ दो मञ्जिले मकान और दालान और मध्यमें नटेशके निज मन्दिरका घेरा और शिवगङ्गा सरोवर तथा बहुतसे मन्दिर, मण्डप हैं, जिनका वृत्तान्त नीचे लिखा जाता है, नीचेके नम्बरके अङ्कोंको नकशेसे मिलाकर देखिये। उस घेरेके भीतर जूता पहनकर कोई नहीं जाता है।

(१) दक्षिणके बडे गोपुरसे प्रवेश करना होता है, बायें तरफ दक्षिण-पश्चिमके कोनेके पास एक मन्दिरमें गणेशजीकी मूर्ति है।

(२) गोपुरके सामने उत्तर एक छोटे मन्दिरमें बड़ा नन्दी है, जिसके पास एक अन्य देवताका स्थान है।

(३) कोई बाहन है।

(४) शिवका खास मन्दिर भी दो दीवारोंसे घेरा हुआ है। उस घेरेके बाहरकी दीवारके भीतर करीब ३३० फीट लम्बी और इतनीही चौड़ी भूमि है। घेरेके चारोंओरकी दीवारके ऊपर लगभग १०० नन्दी बैल और दीवारके भीतरके चारो बगलोंके ओसारोंपर भी बहुतसे नन्दी हैं। घेरेके पूर्व और पश्चिम एक एक दरवाजा है। उस घेरेके अन्दरकी दीवारके भीतर चारों बगलोंपर ओसारे और कई एक मन्दिर और मण्डप, पूर्व ओर एक द्वार; दक्षिण-पश्चिम कोनेमें पार्वतीका एक मन्दिर, दक्षिण बगलके मध्यमें नाट्येश्वरकी एक मूर्त्ति और मध्य भागमे नटेशका प्रधान मन्दिर, मण्डप और अन्य अनेक मन्दिर है।

(क) नटेश शिवके निज मन्दिरकी दीवारपर चांदीका और गुम्बजपर सोनेका मुलम्मा है। दो डेवढीके भीतर नृत्य करते हुए नटेश शिव खड़े हैं। शिवके पासमें कई देवमूर्त्तियाँ हैं। वहाँके देवताओंके शृङ्गार मनोहर हैं। मन्दिरका पुजारी यात्रियोंसे दक्षिणा लेकर उनको पहिली डेवढ़ीके भीतर लेजाकर दर्शन कराता है। जो दक्षिणा नहीं देता, वह मन्दिरके बाहरसे दर्शन करता है।

(ख) सुन्दर मण्डपके साथ एक मन्दिर है, जिसका गुम्बज बिना मुलम्मेके ताम्बेके पत्तरोंसे छाया हुआ है।

(ग) मन्दिरमें तीन डेवढीके भीतर सोनहुले भूषण और कौस्तुभ मणिमाल पहने हुए श्यामल स्वरूप मनुष्यसे अधिक लम्बे गोविन्दराज भगवान् भुजङ्गपर शयन किये हुए हैं। इनके पायताबे, दस्ताने और मुकट सुवर्णके हैं। भगवान्के पास लक्ष्मी आदि कई देवमूर्त्तियाँ सुशोभित हैं। मन्दिरके आगे दूरतक मण्डप है।

(घ) एक मन्दिर है, जिसके आगे एक बड़ा स्तम्भ खड़ा है। स्तम्भपर नीचेसे ऊपर तक सोनेका मुलम्मा किया हुआ है।

(५) पार्वतीका मन्दिर शिवगङ्गा सरोवरके पश्चिम है। घेरेके पश्चिम हिस्सेमें तीन ड्योढ़ीके भीतर पार्वतीजी खड़ी हैं। इनके पायताबे, दस्ताने और मुकट सुनहरे हैं। मन्दिरका जगमोहन विचित्र है, जिसके आगे पूर्वके दरवाजे तक उत्तम मण्डप बना हुआ है।

मण्डप और दरवाजेके बीचमें सोनेका मुलम्मा किया हुआ एक बड़ा स्तम्भ है। आँगनके चारो बगलोंपर दीवारोंके पास दो मञ्जिले दालान है।

(६) पार्वतीके मन्दिरसे लगा हुआ उसके दाक्षिण सुब्रह्मण्य (कार्त्तिकेय) का मन्दिर है जिसके घेरेके भीतर ३०५ फीट लम्बी और २५० फीट चौड़ी भूमि है। आँगनके आगे ४ स्तम्भोंका पेशगाह है, जिसके बाहर एक मयूर और दो हाथीकी प्रतिमा बनी हुई है

(७) पार्वतीके मन्दिरके पूर्व और उत्तरके बड़े गोपुरके सामने दक्षिण ३१५ फीट लम्बा १७५ फीट चौड़ा शिवगङ्गा तथा हेमपुष्करणी नामक उत्तम तालाब है जिसके चारों तरफ पानीतक सीढ़ियाँ हैं और चारों बगलोंपर दालान बने हुए है।

(८) तालाबके पूर्व ३४० फीट लम्बा और १९० फीट चौड़ा पुराना मण्डप है, जिसको सहस्रस्तम्भमण्डपम् कहते हैं; लेकिन इसमें ९८४ पायोंसे अधिक नहीं है। मण्डपके चारों बगलोंमें दीवार है; भीतर अँधियारेमें चमगादुर बहुत रहते है।

ऊपर कहे हुए आठ नम्बरोंके अतिरिक्त उस घेरेमें जगह जगह अनेक पुराने मन्दिर और मण्डप है, जिनमेंसे कई मरम्मत होरहे है। वहाँ ४ कूप हैं, जिनमेंसे एक अपूर्व बनावटका है। बड़े बड़े पत्थरोंके बीचमेंसे चाकके समान गोलाकार पत्थर निकाल करके उन्हीं पत्थरोंको नीचेसे ऊपर तक एकके ऊपर दूसरा ऐसाही साज कर कूप बनाया गया है। उस मन्दिरमें ४० फीट ऊँचे बहुतेरे पत्थर लगे हैं और हजारहाँ स्तम्भ, जिनमें जोड़ नहीं हैं, २६ फीटसे अधिक ऊँचे है। वहाँ बहुतसे छत्रम् है, उनमे जो सबसे बड़ा है, उसमें आठ नव सौ आदमी रह सकते हैं।

मन्दिरके अधिकारी दिक्षतर ब्राह्मण करीब २५० हैं, जिनमेंसे २० दिन तक २० आदमी मन्दिरमें काम करते हैं। मन्दिरके कामसे छुट्टी रहने पर वे लोग दक्षिण हिन्दुस्तानमें घूमकर याचना करते हैं विवाह होजाने पर वे लोग मन्दिरकी पूजाके द्रव्य पाने और मन्दिरके प्रबन्ध करनेके पूरे हिस्सेदार होजाते है; इस कारणसे ५ वर्षकी अवस्था होनेके शीघ्रही बाद वे लोग अपने लड़कोंका व्याह कर डालते हैं। उनकी पारीके समय जो द्रव्य या अन्न पूजा चढ़ता है, उसको वे लोग ले लेते हैं; किन्तु किसी मेले या पर्वके समय जब पूजा बहुत अधिक चढ़ती है, तब सब हिस्सेदार बराबर भाग बाँट लेते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण—(सेतुबन्ध खण्ड, ५२ वाँ अध्याय) चिदंबर, कुम्भकोण, वेदारण्य, नैमिष, श्रीशैल, श्रीरंग, शेषाद्रि, वेंकटाद्रि, कांचीपुर, ब्रह्मपुर इत्यादि क्षेत्रोंमें एक वर्ष निवास करनेसे जो फल लाभ होता है वह सेतुबन्धके धनुष्कोटिमें माघ भर बसनेसे मिल जाता है।

शिवभक्तविलास–(१४ वाँ अध्याय) चिदम्बर नामक उत्तम क्षेत्रके दर्शन करनेसे मुक्ति लाभ होती है, जहाँ महर्षि व्याघ्रपाद और पतञ्जलि स्वर्ण-सभाके मध्यमें भगवान् शंकरको नृत्य करते हुए देखकर संसारबन्धनसे मुक्त होगये। उस नगरीका एक कुम्भार नित्यही शिवगङ्गामें स्नान करके शिवकी कथा सुनता था और शिवभक्तोंको नित्य नवीन भांड तथा भोजनकी सामग्री देकर उनकी सेवा करता था। उसकी पतिव्रता स्त्री भी शिवभक्त थी। उस कुम्भारने चिदंबर क्षेत्रके नटेश शिवकी प्रतिमामें अपने चित्तको अच्छी प्रकारसे लगाया। जब उसने

नीलकण्ठ महादेवके कंठनालमें प्रीति की, तब वहाँके लोगोंने उसका नाम नीलकण्ठ रक्खा। बहुत कालके पश्चात् एक समय सन्ध्याकालमें वर्षासे भीजता हुआ शीतसे व्याकुल होकर वह मार्गमे एक वेश्याके गृहमे चलागया। वेश्याने उसको सूखा वस्त्र पहनाया और लेप देकर उसका ठण्ढापन दूर किया। नीलकण्ठ वर्षा छूट जानेपर अंगरागसे भूपित अपने गृह गया। उसने स्त्रीके पूछनेपर सत्य सत्य सब वृत्तान्त कह सुनाया। स्त्रीने नीलकण्ठके विषयमें सन्देह करके उससे कहा कि आजसे तुम मुझको मत छूना। नीलकण्ठने प्रतिज्ञा की कि मैं अब कभी तुझको नहीं छूऊँगा। पतिव्रता स्त्री पतिको शान्त करने लगी, किन्तु उसने अपनी प्रतिज्ञा नहीं छोड़ी। ऐसा देख नटेश शिव उनको मुक्ति देनेकी इच्छासे मुनिका वेष धरकर उनके गृह आये। नीलकण्ठने मुनिका सत्कार करके उनसे पूछा कि किस कार्यके लिये तुम आये हो। मुनि बोले कि एक दुर्लभ पात्र मैं तुम्हारे घर धरोहर रखता हूं, तुम इसको यत्नसे रक्खो। ऐसा कह नीलकण्ठको पात्र देकर वह चले गये। नीलकण्ठ बड़े यत्नसे पात्रकी रक्षा करने लगा। कुछ दिनोंके पश्चात् महादेवजीने उस पात्रको अपनी मायासे अन्तर्द्धान कर दिया और वहाँ आकर नीलकण्ठसे पात्र मांगा। नीलकण्ठने जब अपने गृहमे पात्रको नहीं पाया तब मुनिसे कहा कि पात्र नहीं मिलता है, उसके समान दूसरा पात्र तुम लो। मुनिने कहा कि वैसा पात्र दूसरा नहीं मिलेगा, तुमने उसको चोराया है; तुम अपनी स्त्रीका हाथ पकड़कर शिवगङ्गामें स्नान करके नटेशके निकट शपथ करो कि मैंने पात्र नहीं लिया है। नीलकण्ठने अपनी प्रतिज्ञा पर ध्यान देकर अपनी स्त्रीका हाथ पकड़ना स्वीकार नहीं किया। मुनिने उसको नटेशके पास लाकर वहाँके पुजारियोंसे सब वृत्तान्त कह सुनाया। पुजारियोंके युक्तिके अनुसार एक बाँसके एक छोरको नीलकण्ठने और दूसरे छोरको उसकी स्त्रीने पकडकर शपथ करनेके लिये शिवगङ्गामें स्नान किया। दोनोंने गोता मारकर पानीसे ऊपर होनेपर नन्दीपर चढ़े हुए नटेश शिवको देखा। नटेश भगवान् प्रसन्न हो उनको वांछित मुक्ति देकर दोनोके सहित अपने धाम चिदाकाश (चैतन्याकाश) में चले गये।

इतिहास—चिदंबरम्का मन्दिर दक्षिणी भारतमें अधिक पुराना है। दक्षिण—भारत और सिलोनके लोग उसका बडा मान करते हैं।

ऐसा प्रसिद्ध है कि हिरण्यवर्ण चक्रवर्ती मन्दिरके पासके सरोवरमें स्नान करनेसे कुष्ट-रोगसे मुक्त होगया तब उसने मन्दिरके पहले भागको अच्छे प्रकारसे बनवा दिया। यह नाम काश्मीरके एक राजाका भी था, जिसने सिलोन अर्थात् लङ्काको जीता था। चन्द आदमियोने लिखा है कि सन् ईस्वीकी पांचवीं सदीमें उसी राजाने चिदंबरम्के मन्दिरको बनवाया था। लोग कहते हैं कि वह उत्तरसे अपने साथमें ३००० ब्राह्मणोंको लाया, जिसके कुलके ब्राह्मण अबतक मन्दिरके अधिकारी हैं। बहुतेरे लोग कहते हैं कि वीर चोला राजाने (सन् ९२७–९७७ ईस्वी) नृत्य करते हुए शिवको पार्वतीके सहित समुद्रके किनारेपर देखा, जिनके स्मरणार्थ उसने नाट्येश्वर शिवका कनकसभा अर्थात् सुनहरा मन्दिर बनवाया। दशवीं और सत्रहवीं सदीके बीचमें चोला और चेरा वंशके राजाओं तथा उनके वंशवालोंने चिदंबरम्के मन्दिरको कई बार बढाया। सत्रहवीं सदीके अन्तमे अथवा अठारहवीं सदीके आरम्भमें सुब्रह्मण्यका मन्दिर बना।

मायावरम्।

चिदंबरम्के रेलवे स्टेशनसे ४ मील दक्षिण कोलरम् नदीपर रेलवेका पुल और १४ मील दक्षिण स्वर्णकोइल स्टेशनके पास एक मन्दिरके चारोओर ४ बड़े गोपुर देख पड़ते है। चिदंबरम्से २३ मील और विलीपुरम् जंक्शनसे ७६ मील दक्षिण और मदरास शहरसे १७४ मील दक्षिण कुछ पश्चिम मायावरम्का रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके तञ्जौर जिलेमें रेलवेके स्टेशनसे ३ मील दूर कावेरी नदीके किनारे पर मायावरम् एक कसवा तथा यात्राका स्थान है, जो पूर्व समयमें चोल देशके अन्तर्गत था। कसवेमें १ अस्पताल और कई एक स्कूल है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मायावरम्में २३७६५ मनुष्य थे; अर्थात् २२४२७ हिन्दू, ८१८ कृस्तान और ५२० मुसलमान।

शिवमन्दिर—मायावरम्में एक प्रसिद्ध शिवमन्दिर है। मन्दिरमें एक बड़ा और एक छोटा गोपुर है। बड़ा गोपुर १० मञ्जिला है; जो बाहरके हातेके दक्षिण बगलपर खड़ा है। उसके पश्चिम एक सरोवर है। उत्तर ६ मञ्जिलका छोटा गोपुर है। वहाँ कार्त्तिकमें यात्राका मेला होता है।

रेलवे—मायावरम् जंक्शनसे दक्षिण २३ मील तिरुवालूर जंक्शन और ५३ मील मुतुपेटै और तिरुवालूर जंक्शनसे पूर्व १५ मील नागपट्टनम् और पश्चिम ३५ मील तञ्जोर है। मायावरम्से कुम्भकोणम् होकर केवल ४४ मील दक्षिण-पश्चिम तञ्जोरका रेलवे स्टेशन है।

नागपट्टनम्।

मायावरम् जंक्शनसे २३ मील दक्षिण तिरुवालूरमें रेलवेका जंक्शन है। मदरास हातेके तञ्जोर जिलेमें तिरुवालूर एक कसवा है, जिसमे सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १३९३४ मनुष्य थे। तिरुवालूरसे १५ मील (तञ्जोर शहरसे ५० मील) पूर्व नागपट्टनम्का रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके तञ्जोर जिलेमें (१० अंश ४५ कला ३७ विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश ५३ कला २८ विकला पूर्व देशान्तरमें) नागपट्टनम् एक कसवा तथा प्रसिद्ध बन्दरगाह है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पासके नागर बन्दरगाहके साथ नागपट्टनम्में ५९२२१ मनुष्य थे; अर्थात् २७०४१ पुरुष और ३२१८० स्त्रियाँ। इनमें ३९०११ हिन्दू, १४३४१ मुसलमान, ५८६३ कृस्तान, ३ जैन, १ बौद्ध और २ अन्य थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह मदरास हातेके अंगरेजी राज्यमें सातवाँ और भारतवर्षमें ६२ वाँ शहर है।

रेलवे स्टेशनके पास कृस्तानोंका गिरजा और स्टेशन और बन्दरगाहसे १ मील दूर एक धर्मशाला है। स्टेशनसे थोड़ी दूर पर रेलवेका बड़ा कल कारखाना है, जिसमें हजारों आदमी काम करते हैं। शहरमें कई हिन्दू होटल हैं; जिनमें ब्राह्मण लोग रसोई बनाकर बेचते हैं। इनके अतिरिक्त नागपट्टनम्में एक कालिज, एक अस्पताल, नमककी सरकारी कोठी, ३ देवमन्दिर, लाइट हाउस, तथा सदराला, मुनसिफ, एसिस्टण्ट कलक्टर और तहसीलदारकी कचहरियाँ हैं। बाजारमें केला बहुत बिकता है। कसबेसे कई मील उत्तर कावेरी नदी है।

बन्दरगाहमे ब्रह्मा, सिलोन अर्थात् लंका और दूसरे देशोंके माल उतरते हैं और वन्दरगाहसे उन देशोंमे माल रवाना होते है। सन् १८८३—१८८४ मे नागपट्टनम्के वन्दरगाहमें लगभग ३४ लाख रुपयेका माल आया और वन्दरगाहसे करीव ५७ लाख रुपयेका माल रवाना हुआ।

मन्दिर—शहरके वाहर एक शिवमन्दिर है। खास मन्दिर १८० फीट लम्वा और १२० फीट चौडा है, जिसकी छतके ऊपर तीन तरफ शिवके वाहन नन्दी बैल पंक्तिसे बनाये गये हैं। उनके बीच बीचमे एक एक मूर्त्ति बैठी है। मन्दिरके पूर्वोत्तर पार्वतीका मन्दिर और पूर्व ६ मञ्जिला गोपुर है। नागपट्टनम्में दूसरा मन्दिर सुन्दरराज भगवान्का है। भगवान् पूर्व मुखसे स्थित है।

रामेश्वरको रास्ता—रामेश्वरके कुछ यात्री आगबोट द्वारा नागपट्टनम्से रामेश्वरकी टापूसे पाम्बन जाते है, या पाम्बनसे नागपट्टनम्में आते है। महसूल तीन रुपया लगता है। पाम्बनसे ७ मील पूर्व रामेश्वर पुरी है। सिलोन अर्थात् लंकाके आगबोट सप्ताहमें दो बार पाम्बन, नागपट्टनम् आदि वन्दरगाहोंमे होकर मद्रासकी ओर जाते हैं और मद्रासकी ओरसे नागपट्टनम्, पाम्बन इत्यादि होकर सिलोनके कोलम्बो शहरको जाते है।

इतिहास—नागपट्टनम् आरम्भके पोर्चुगाल वालोंकी आवादियोंमेंसे एक है। सन् १६६० में हालेण्ड वालोंने उसपर अपना अधिकार जमाया। १७८१ में अङ्गरेजोंने उसको ले लिया। सन् १७९९ से १८४५ तक तञ्जोरके कलक्टर नागपट्टनम्में रहते थे।

तेरहवाँ अध्याय।

(मद्रास हातेमें) कुम्भकोणम्, तञ्जौर, तिरुचनापल्ली, श्रीरंगम्, जम्बुकेश्वर, पुडुक्कोटा, दिण्डीगल और मदुरा।

कुम्भकोणम्।

मायावरम् जंक्शनसे १९ मील (मद्रास शहरसे १९३ मील) दक्षिण कुछ पश्चिम कुम्भकोणम्का रेलवे स्टेशन है। मद्रास हातेके तञ्जोर जिलेमें (१० अंश, ५८ कला, २० विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, २४ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमे) तालुकका सदर स्थान और मद्रास हातेके पवित्र जगहोंमेसे एक कुम्भकोणम् कसवा है, जिसको काम्बेकोणम् भी कहते हैं। यह पूर्व कालमे चोल देशकी राजधानी था।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कुम्भकोणम्मे ५४३०७ मनुष्य थे, अर्थात् २६४७१ पुरुष और २७८३६ स्त्रियाँ। इनमें ५१८७७ हिन्दू, १२९४ मुसलमान; १०६७ कृस्तान और ६९ जैन थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह मद्रास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें ९ वाँ और भारतवर्षमें ७२ वाँ शहर है।

कुम्भकोणम्मे एक उत्तम कालिज, मजिष्टरकी कचहरी, और कुम्भेश्वर शिवका प्रसिद्ध मन्दिर है। वहाँ अच्छी सौदागारी होती है तथा यात्री वहुत आते हैं।

मन्दिर—स्टेशनसे करीब १ मील शहरके भीतर मन्दिर है । विष्णुके मन्दिरका ११ खनवाला बड़ा गोपुर लगभग १६० फीट ऊंचा है, जिसके भीतरकी सीढ़ियॉ जगह जगह टूटी हुई और फिसलहट वाली हैं ।

३२० फीट लम्बी और १५ फीट चौड़ी एक मेहराबदार सड़कसे जिसके दोनो बगलों पर दुकान हैं,कुम्भेश्वर शिवके मन्दिरमें जाना होता है । वहॉके मन्दिर मरम्मत है । मन्दिरोके राग भोगके खर्चके लिये बड़ी आमदनी है ।

मन्दिरोसे चौथाई मील दक्षिण-पूर्व महामोहन तालाब है, जिसके किनारोपर जगह जगह १६ मन्दिर बने हुए हैं । प्रधान मन्दिर तालाबके उत्तर बगलपर है । इस स्थानमें १२ वर्षपर महामाघमूका प्रसिद्ध मेला होता है । उस समय एक दिन उस सरोवरमें गङ्गाजी आती है । उसमें स्नान करनेके लिये दूर दूरसे बहुतसे यात्री आते है । इसके अलावे अन्य समयोंमें भी कुम्भकोणम्में मेले हुआ करते है ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण—(सेतुबन्ध खण्ड, ५२ वॉं अध्याय) कुम्भकोण, वेदारण्य, नैमिष, श्रीशैल, श्रीरङ्गम्, चिदम्बरम्, वेङ्कटाद्रि, कांचीपुर आदि क्षेत्रोंमें एक वर्ष निवास करनेसे जो फल लाभ होता है वह माघ मास भर धनुष्कोटिमें बसनेसे मिल जाता है । कुम्भकोण, सेतुमूल, दण्डकारण्य, विरूपाक्ष, वेङ्कट, प्रयाग, कांची, पद्मनाभ, गोकर्ण, नैमिष, अयोध्या, द्वारावती, मथुरा, काशी आदि तीर्थोंमें मुण्डन और उपवास अवश्य करना चाहिये ।

शिवभक्तविलास—(५४ वॉ अध्याय) क्षीरिणी नामक नदीके तटपर ब्राह्मणोंसे भूषित अरण्य नामक पुर है । उसमें शिवभक्तोंकी सेवा करनेवाला एक शूद्र रहता था । महादेवजीने उसपर प्रसन्न होकर उसकी परीक्षाके लिये उसका गृह और सब समान अग्निसे जला दिया और दूसरे दिन तपस्वीका वेष धारणकर उससे अन्न और वस्त्र मॉगा । शूद्रके पास छाया भी नहीं थी । जब वह अतिथिके सत्कारके विषयमें अपनी स्त्रीसे बातें करने लगा,तब तपस्वीरूपी शिव बोले कि मुझको धूपमें खड़ा कराकर तुम स्त्रीसे बात करते हो; मैं कुम्भकोणमे जहॉं तुम्हारे समान बहुत भक्त हैं, चला जाता हूँ; ऐसा कहकर वह अन्तर्द्धान होगये । शूद्रने समझ लिया कि यह तपस्वी साक्षात् महादेव है । इसने कुम्भकोणमें जाकर ७ रात्रि शिवके निकट उपवास किया । तब शिवजीने स्वप्नमें उससे कहा कि तुम इसी स्थानमें बसकर हमारे भक्तोंका पालन करते रहो । जब शूद्रको शिवभक्तोंका पालन करनेके किसी उपायसे धन संग्रह नहीं होसका, तब वह कुम्भकोणके जुआड़ियोंसे जुयेमें धन जीत कर नित्य शिवभक्तोंका पालन करने लगा । अन्तकालमे शिवजीके प्रतापसे उसकी मुक्ति होगई ।

इतिहास–कुम्भकोणम् एक समय चोला राज्यकी राजधानी था । वह मदरास हातेके पुराने तथा पवित्र नगरोंमेंसे एक है । वहॉ विद्याका बडा प्रचार है । वहॉके पण्डित प्रसिद्ध है ।

तञ्जौर ।

कुम्भकोणम्से २५ मील और मदराससे २१८ मील दक्षिण-पश्चिम तञ्जौरका रेलवे स्टेशन है । मदरास हातेमें कावेरी नदीसे दक्षिण जिलेका सदरस्थान तञ्जोर एक छोटा शहर

है। तञ्जौर हुनरकी दस्तकारियोके लिये मशहूर है, जिनमें रेशमी, कालीन, भूपन और ताम्बेके वर्तन सामिल है।

रेलवे स्टेशनसे आधा मील दूर शहरकी तरफ सडकके किनारेपर एक धर्मशाला है, जिससे आगे शहरके पास किलेकी खाईपर करीव १०० फीट चौड़ा ईटोंका पुल वना हुआ है।

तञ्जौरमें दो किले हैं, जिनकी दीवारके वाहर खाई हैं। वडा किला उत्तर और छोटा किला, जिसमें बड़ा मन्दिर है, पश्चिम है। पश्चिमोत्तरके कोनेके पास दोनो मिल गये हैं। वडा किला वहुत जगह उजड गया है। तञ्जौरमे जज, कलक्टर और अन्य हाकिमोंकी कचहरियाँ और वहुतेरी सरकारी इमारतें हैं। वड़े किलेके भीतर शहरका प्रधान भाग और तञ्जौरके राजाका महल है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तञ्जौर कसबेमे ५४३९० मनुष्य थे, अर्थात् २५९४५ पुरुष और २८४४५ स्त्रियाँ। इनमे ४६४०४ हिन्दू, ४३८९ क्रूस्तान, ३४१० मुसलमान और १८७ जैन थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यमे ८ वाँ और भारतवर्षमें ७१ वाँ शहर है।

वडे किलेकी पूर्वकी दीवारके पास २३ फीट लम्बी एक पुरानी तोप पडी है, जिसके मुखका व्यास ३$\frac{3}{4}$ फीट है। किलेके वाहर पूर्व और गल्ले और कपडेका वाजार है।

छोटे किलेमें वडे मन्दिरसे उत्तर शिवगङ्गा नामक सरोवर है, जिसके पास एक गिरजा वना है, जिसके फाटकके ऊपर सन् १७७७ लिखा है। शिवमन्दिरसे पूर्वके मैदानमे दीवानी कचहरिया हैं।

तञ्जौरके राजाका महल—रेलवे स्टेशनसे करीव पौन मील उत्तर वड़े किलेके भीतर सड़कके पश्चिम किनारेपर राजाका उत्तम महल है, जिसका पहला हिस्सा करीव सन् १५५० में वना था। कई मकान वनारसकी इमारतोके ढाचेके वने हुए हैं। महलके आगे उत्तर तरफ वडा चौगान (आंगन) है, जिसके चारो वगलोंमे मकान वने है। वहाँ कई एक हाथी और पाले हुए वाघ रहते है। चौगानके पूर्व और उत्तर एक एक दरवाजा है। उत्तरके दरवाजेके वाहर नित्य वाजार लगता है।

चौगानसे महलमें प्रवेश करनेपर सीधा दक्षिण कई डेवढ़ीके भीतर महाराष्ट्रोंका राजदरवार सून सान मिलता है। वहां आंगनके पूर्व वगलमें राजसी सामानोसे सजा हुआ दालान है, जिसकी दीवारमे महाराष्ट्रकुल भूषण महाराजा शिवाजी और तञ्जौरके महाराष्ट्र राजाओकी सुन्दर तस्वीरें वनी हुई है। उनके पास उनके नाम लिखे हुए है, जो नीचे लिखे जाते हैं,—

नाम राजाओके	राज्यका सन्	नाम राजाओके	राज्यका सन्
शिवाजी (पहिला)	०	सुजानवाई	०
वंकाजी	१६७६	प्रतापसिंह	१७४४
शाहजी	१६८४	तुलजाजी	०
सरभोजी (पहिला)	१७१३	सरभोजी (दूसरा) ...	१७९४
तूकाजी	१७३१	शिवाजी (दूसरा) ...	१८३२
वावासाहव	०	सैदमांवाई	०

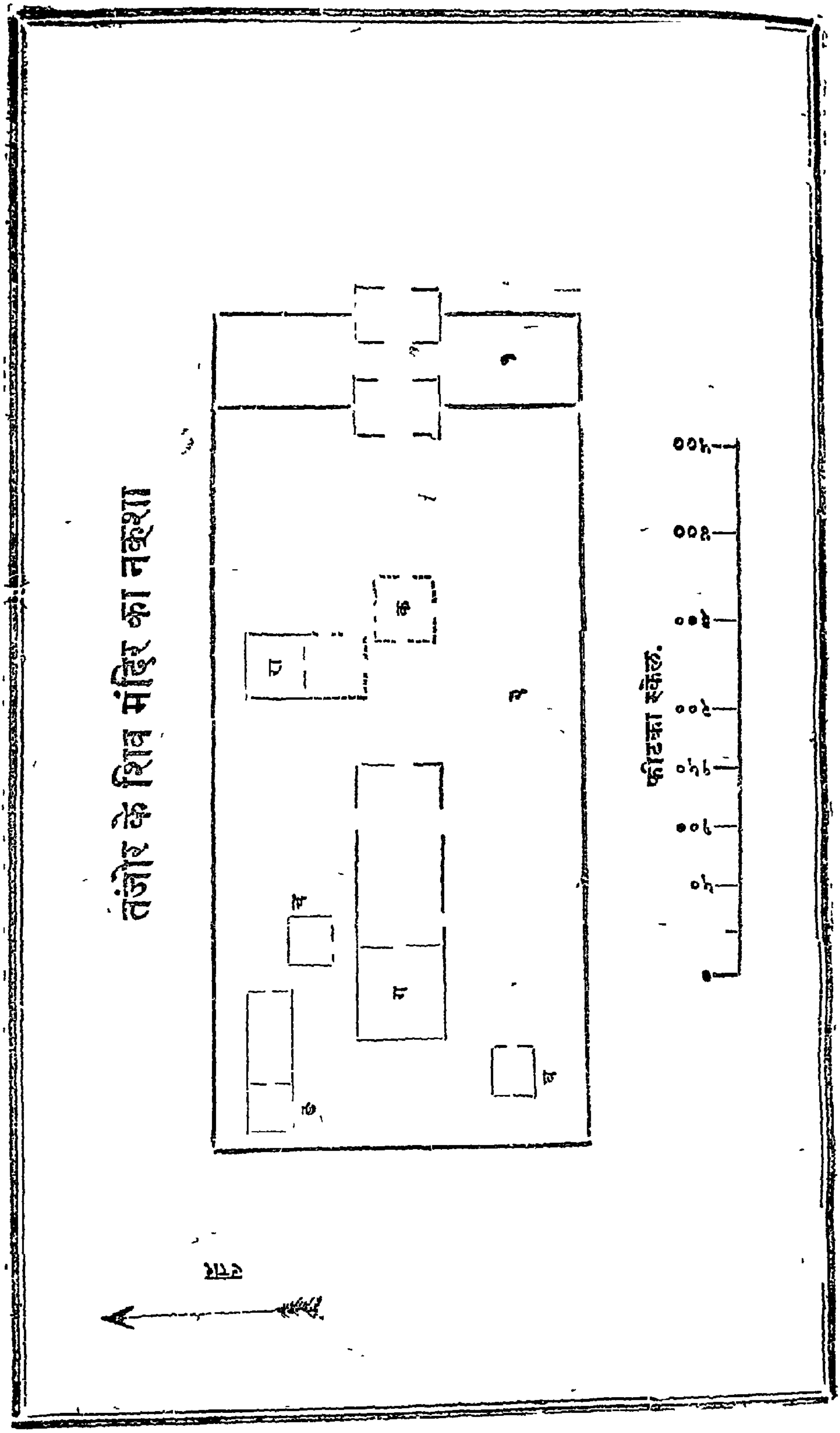

तंजोर के शिव मंदिर का नक्शा

दूसरा शिवाजीके दहिने उनके चीफ सेक्रेटरी और बाये दीवानकी तस्वीर है।

राजदरबारसे पश्चिम एक दूसरे ऑगनके पश्चिम बगलपर पूर्व समयके नायकका दरबार कमरा है, जिसका फर्स मार्बुलका बना हुआ है। कमरेमें दूसरा शरभोजीकी सफेद मरमरकी प्रतिमा तीन कोनेकी नोकदार टोपी पहनी हुई खडी है। दीवारमे लार्ड पिगटकी तस्वीर है। ऑगनके दक्षिण बगलपर ९० फीट ऊँची आठ मञ्जिली इमारत है, जिसमें एक समय हथियार रक्खे जाते थे। पूर्व बगलपर सरस्वतीभवन नामक पुस्तकालय है। जिसमे १८००० सस्कृत एम एस. एस की पुस्तकें हैं। जिनमेंसे ८००० पुस्तके तारके पत्रोपर लिखी हुई हैं। इसके समान संस्कृतका पुस्तकालय हिन्दुस्तानमे दूसरा नहीं है। यह सोलहवीं सदीके अन्त या सत्रहवीं सदीके आरम्भमें नियत हुआ था। आंगनके पश्चिमोत्तरके बगलपर दूरकी चीजे देखनेके लिये एक बहुत ऊँची इमारत बनी हुई है।

शिवमन्दिर—राजाके महलसे आधा मील पश्चिम-दक्षिण छोटे किलेमें दक्षिण तरफ तञ्जौरका बड़ा मन्दिर है। मन्दिरके तीन बगलोंपर किलेकी दीवार और खाई और उत्तर मैदान है। मन्दिरके बाहरकी दीवारके भीतर लगभग १३ बीघा भूमि है। मन्दिरके नकशेके नम्बरोंसे मन्दिरके स्थान देखिये।

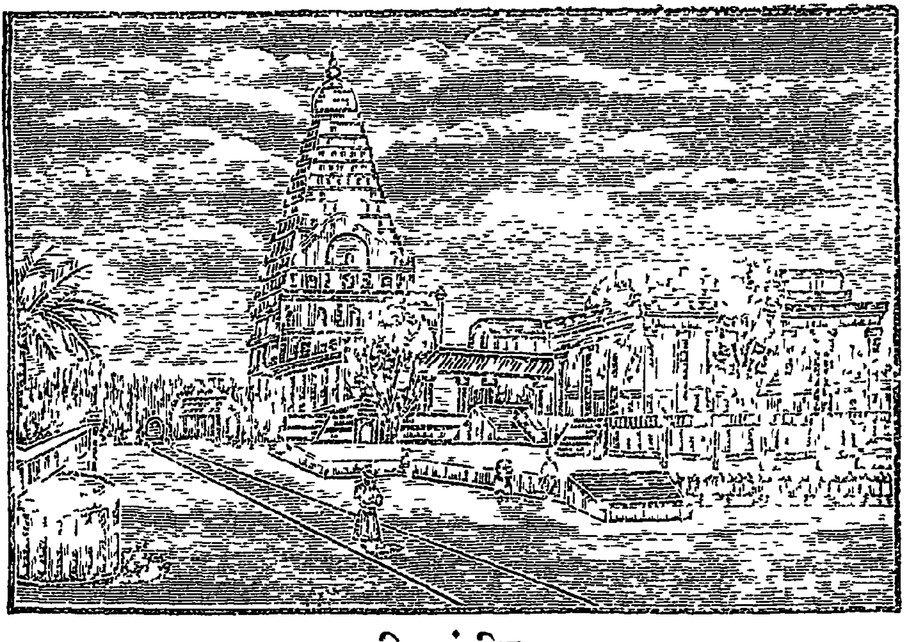

शिवमंदीर

(१) मन्दिरके दो चौगान (कच्छा) हैं। पूर्व वाला चौगान उत्तरसे दक्षिण करीब ३७५ फीट लम्बा और पूर्वसे पश्चिम १७५ फीट चौडा है। उसमें कोई चीज नहीं है। उसके पूर्व बगलपर ९० फीट ऊँचा बाहरका गोपुर और पश्चिम ६० फीट ऊंचा दूसरे चौगानका गोपुर है, जिसके दोनो बगलोपर तामिल अक्षरमे लम्बा लेख है।

(३) पश्चिम वाला चौगान पूर्वसे पश्चिम तक करीब ७५० फीट लम्बा और उत्तरसे दक्षिण तक ३७५ फीट चौड़ा है। उसके चारों बगलोंपर दोहरी दालान और मकान बने हुए हैं। चारों तरफकी दीवारोंके ऊपर शिवके वाहन नन्दी बैलकी पंक्ति और नीचेके दालानोंमें शिवलिङ्गकी पंक्ति है। चौगानके भीतर जगह जगह नीचे लिखे हुए देवमन्दिर, कई एक कूप और बहुतसे वृक्ष है।

(क) शिव मन्दिर और छोटे गोपुरके मध्य भागमें एक चौखूटा मण्डपम् है, जिसमें १३ फीट ऊँचा १६ फीट लम्बा और ७ फीट चौड़ा काले पत्थरका विशाल नन्दी है, जो ४०० मील दूरसे लाया गया था। उसपर सर्वदा तेल लगाया जाता है।

(ख) बड़े नन्दीसे उत्तर पार्वतीका मन्दिर है, जिससे आगे सुन्दर चौड़ा जगमोहन बना है।

(ग) बड़े नन्दीके सामने पश्चिम शिवमन्दिरका जगमोहन है, जिसमें खम्भाओंकी ३ पंक्तियां लगी है। जगमोहनके पश्चिम ७५ फीट लम्बे और ७० फीट चौडे क्रमसे २ अन्धियारे कमरे हैं, जिनमें बहुतसे चमगादुर रहते है। कमरेसे पश्चिम बड़ा शिवमन्दिर है। जगमोहनसे मन्दिर तक कमरोंके मध्य होकर अन्धियारी राह है। खास शिवमन्दिर लगभग ९० फीट लम्बा और इतनाहीं चौड़ा तथा २०० फीट ऊँचा है। मन्दिरका शिखर, इस किसिमके हिन्दुस्तानके मन्दिरोंके सब शिखरोंसे उत्तम है। मन्दिर हिन्दुस्तानके अखीर दक्षिणके सम्पूर्ण मन्दिरोंमे सबसे अधिक मनोहर है। मन्दिर और उसके पासके कमरोंकी नेवपर पुराने तामिल अक्षरोंमें बहुतसे शिला लेख हैं। मन्दिरका शिखर समय समयपर कई बार मरम्मत हुआ है। ऊपरका हिस्सा, जो देव और दैत्योंकी मूर्त्तियोंसे पूर्ण है, अब केवल रेखताका है। मन्दिरके पश्चिम हिस्सेमें शिवलिङ्ग है, जहाँ दिनमें भी दीपकसे प्रकाश रहता है।

(घ) मन्दिरके दक्षिण-पश्चिम गणेशजीका मन्दिर है।

(ङ) मन्दिरके पश्चिमोत्तर सुब्रह्मण्य अर्थात् शिवके पुत्र कार्तिकेयका उत्तम बनावटका मन्दिर है। उसकी नकाशी लकडीपरकी नकाशीके नकल की है। वह मन्दिर ५५ फीट ऊंचा है; उसकी नेव हर तरफसे ४५ फीट लम्बी है। मन्दिरमें ६ मुखवाले कार्तिकेय हैं। खास मन्दिरके आगे कमरा और जगमोहन है। कमरेकी दीवारमें तञ्जौरके महाराष्ट्र राजागण और रानियोंकी १२ चित्र मूर्त्तियाँ है, जिनके नाम ऊपर लिखे गये हैं।

(च) मन्दिरके पूर्वोत्तर चण्डीका मन्दिर है, जिसके पास पूर्व तरफ नारियलका सुन्दर छोटा बाग लगा है।

तञ्जौर जिला—इसके उत्तर कोलेरून नदी अर्थात् कावेरीकी उत्तरी शाखा, जो तिरुचनापली और दक्षिणी आरकाट जिलेसे इसको अलग करती है, पूर्व और पूर्व-दक्षिण बङ्गालकी खाड़ी; दक्षिण-पश्चिम मदुरा जिला और पश्चिम मदुरा तथा तिरुचनापली जिला और पुदुकोटाका राज्य है। तञ्जौर जिलेकी भूमि समतल है; उसमे कोई पहाड़ी नहीं है। सदर स्थान तञ्जौर कसबा है।

मदरास हातेके जिलोंमें तंजौर जिलेकी आबादी बडी घनी है। यह जिला उपजके लिये प्रसिद्ध है और दाक्षिणी हिन्दुस्तानका बाग कहा जाता है। इस जिलेमें बड़ी तिजारत

होती है। इसमे ३००० से अधिक देवमन्दिर हैं, जिनमेंसे बड़े मन्दिरोमेसे बहुतेरे मन्दिरोंकी उत्तम बनावट है और उनके खर्चके लिये बहुत भूमि निकाली हुई है। जिलेके भिन्न भिन्न प्रांतोंमे अनेक मन्दिरोके पास बडे मेले होते हैं। तंजौर जिलेके बने हुए धातुके वर्तन, रेशमी वस्त्र, कालीन इत्यादि वस्तु प्रसिद्ध है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय तंजौर जिलेके ३६५४ वर्गमील क्षेत्रफलमें २१३०३८३ मनुष्य थे, अर्थात् १९३९४२१ हिन्दू, ११३०५८ मुसलमान, ७८३५८ कृस्तान, ६२५ जैन, २ बौद्ध और १९ अन्य। हिन्दुओंमे ६०९७३३ वनिया (मजूरी करनेवाले), ३७२४०९ वेल्लाल (खेतिहर), २९७९२१ परयन् (परिया), १३४५८४ ब्राह्मण १२३२०६ सेवडवन (मछुहा), ७०८०५ इडैयन (भेड़िहर), ६०६८६ कम्भाळन (कारीगर), ५९२५२ कैक्कलर (कपडा बिननेवाले), ४२९५५ सतानी (दो मसला) ३७८६४ सानान (मदक), २५३८१ सेट्टी (व्यापारी), २०९९१ अंबटन (नाई), १५८३५ बनान (धोबी), ११६७७ कुसवन (कुम्भार), ५१५८ क्षत्रिय, और बाकी ४८९६४ मे अन्य जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तंजौर जिलेके कसबे नागपट्टनम्में ५९२२१, तञ्जौरमें ५४३९०, कुम्भकोणम्में ५४३०७ मायावरम्मे २३७६५, मनारगुड़ीमे २०३९५ पोरयारमें १४४६८, वेदारण्यम्में १३४३८, तिरुवाल्लूरमें १२९३४ और अधिरामपट्टनम्में १०७४८ मनुष्य थे। तञ्जौर जिलेमें तामिल भाषा प्रचलित है।

इतिहास—चोला वंशके राजाओंके राज्यके समय तञ्जौर जिला और उसके आसपासके देश उनके अधिकारमे थे, इस लिये उस प्रदेशको चोलदेश कहते है और संस्कृत पुस्तकोंमे भी उसका नाम चोल देश लिखा है। सन् ईस्वीकी दूसरी सदीमें तिरुचनापल्लीके निकटका वोरैयर नामक नगर उनकी राजधानी था। पीछे क्रम क्रमसे कुम्भकोणम्, गङ्गाईकुण्डा, सोरापुरम् और तञ्जौर उनकी राजधानी हुए। सन् १३०३से १३१० तक मुसलमानोने आक्रमण किया। दिल्लीके बादशाह अलाउद्दीनके सिपहसालार मलिक काफूरने चोला राज्यको निर्बल कर दिया। १६ वीं सदीमें विजयानगरके राजाका अधिकार हुआ। उसके सूबेदार नायक वंशवाले नाममात्र विजयानगरके अधीन रह कर दक्षिणमें स्वतन्त्र हुकूमत करने लगे। उस समयसे चोला वंशके राजाओंके विषयमे कुछ नहीं सुना जाता है। ऐसा प्रसिद्ध है कि चोला वंशमें सिलसिलेसे ६६ राजा हुए थे। क्रमसे ४ नायकोंने तञ्जौर पर हुकूमत की। सन् १६७४ मे मदुराके नायकने आक्रमण करके तंजौरके किलेपर घेरा डाला। तंजौरके नायकने जब अपने बचनेका कोई उपाय नहीं देखा, तब अपने महलको गोलोंसे उड़ाकर अपने पुत्रके साथ तलवार लेकर शत्रुओंकी सेनामें घुसकर अपने प्राणका विसर्जन किया। एक बचे हुए लड़केने मुसलमानोसे मेल किया। मुसलमानोंने महाराष्ट्र प्रधान शिवाजीके भाई वंकाजीके अधीन एक फौज भेज कर मदुरावालोको खदेर उस लड़केको तंजौरका प्रधान बना दिया, किन्तु २ वर्ष पीछे वंकाजी स्वाधीन बन गये। उनकी राजधानी तंजौर शहर था। उनके वंशवालोंने सन् १७९९ तक तंजौरमें स्वाधीन राज्य किया।

सन् १७४९ में तंजौरके राजा प्रतापसिंहको गद्दीपर बैठानेके लिये अंगरेजी सेना तंजौरमें आई, किन्तु उसका मनोरथ पूर्ण नहीं हुआ। सन् १७५८ में फरासीसी लोग तंजौर

पर आक्रमण करके महाराष्ट्रोंसे बहुत धन ले गये। आरकाटका नवाब महमदअली मदरासके गवर्नमेण्टकी सहायतासे तंजौरके राजाको दबा कर उनसे 'राजकर' लेने लगा। सन् १७७३ मे अङ्गरेजोने तंजौरके किलेको ले लिया; किन्तु सन् १७७५ मे तंजौरके राजा तुलजाजीको लौटा दिया। सन् १७७६ में अङ्गरेजोने फिर किलेको छीन लिया। सन् १७९९ में राजा दूसरे शरभोजोने एक सन्धि करके अपना स्वाधीन राज्य अङ्गरेजोंके अधीन कर दिया। अङ्गरेजोंने उनके राज्यकी मालगुजारीका पॉचवां भाग और तंजौरके मन्दिरके खर्चके लिये १ लाख रुपया सालाना राजाके देनेको स्वीकार किया और तंजौरका किला तथा शहरके आसपासके चन्द गॉव उनको छोड़ दिये। सन् १८३२ में शरभोजीका देहान्त होने पर उनके पुत्र दूसरे शिवाजी उत्तराधिकारी हुए। सन् १८५५ में शिवाजी मर गये। उनके कोई पुत्र नहीं था, इस लिये उनका बचा हुआ राज्य भी अंगरेज महाराजके अधिकारमें होगया। सैदंसाबाई इत्यादि शिवाजीको ८ स्त्रियां है। उनको सरकारकी ओरसे योग्य पेंशन मिलती है और खानगी जायदाद उनको छोड़ दी गई है। तंजौर जिलेका सदरस्थान प्रथम नागपट्टनम्में था। सन् १८४५ मे ट्रांकूवारमें और सन् १८५५ में शिवाजीकी मृत्यु होनेपर तंजौरमे नियत हुआ।

तंजौरके बड़े मन्दिरका काम एक समयका बना हुआ नहीं है। मन्दिरके सबसे पुराने हिस्सोंमेंसे मन्दिरका गोपुर है, जिसको सन् १३३० ईस्वीमें कांचीवरम्के राजाने बनवाया था। दूसरे काम १५ वीं सदीके पहिलेके नहीं हैं; किन्तु बड़ा नन्दी बहुत पुराना है। सुब्रह्मण्यका मन्दिर सोलहवीं सदीसे पहिलेका नहीं होगा।

तिरुचनापल्ली।

तंजोर शहरसे ३१ मील पश्चिम (मदरास शहरसे २४९ मील दक्षिण-पश्चिम) और मदुरा शहरसे ९६ मील पूर्वोत्तर तिरुचनापल्लीका रेलवे जंक्शन है। जंक्शन पर पहुँचनेके ६ मील पहिलेसे तिरुचनापल्ली शहरके टीले पर गणेशका मन्दिर देख पड़ता है। तिरुचनापल्ली जंक्शनसे सौथ इण्डियन रेलवेकी लाइनें तीन ओर गई है; जिनके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई लगता है;—

(१) तिरुचनापल्लीसे दक्षिण कुछ पश्चिम, बाद दक्षिण,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

५८ दिण्डीगल।

९६ मदुरा।

१६० कुमारपुर।

१७७ मनियार्ची जंक्शन।

मनियार्चीसे १८ मील दक्षिण पश्चिम तिरुनलवेली और १८ मील पूर्व तुतीकुडी।

(२) तिरुचनापल्लीसे पश्चिमोत्तर;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३ तिरुचनापल्ली-फोर्ट।

४८ करुर।

६८ अंजालूर।

८८ ईरोड जंक्शन।

ईरोड जंक्शनसे पश्चिम ओर मदरास रेलवे पर ५८ मील पोडैयनूर जंक्शन ९२ मील पालघाट और १७० मील कलीकोट। पोडैयनूर जंक्शनसे उत्तर ४ मील कोयंबुत्तूर और २६ मील मेडुपालयम् है।

ईरोड जंक्शनसे, उत्तर पूर्व मदरास रेलवे पर ३७

मील सेलम, ११२ मील जाला-रपेट जंक्शन, १३१ मील अम्बूर, १४८ मील कुड़ीआतम्, १६३ मील कटपद्दी जंक्शन, १७८ मील आरकाट २०१ मील आरकोनम् जंक्शन और २४४ मील मद्रास शहर है।

जालारपेट जंक्शनसे पश्चिमोत्तर ४४½ मील कोलार रोड और ८७ मील बंगलोर जंक्शन।

कटपद्दी जंक्शनसे दक्षिणकी ओर ६ मील वेलूर ५७ मील तिरुवन्नामलई और ९९ मील विलीपुरम् जंक्शन और उत्तरकी ओर साथ इण्डियन रेलवे पर ३९ मील पकाला जंक्शन, ६५ मील तिरुपद्दी और ७१ मील रेणुगुण्टा जक्शन।

पकाला जंक्शनसे पश्चिमोत्तर १४२ मील धरमवरम् और २०५ मील गुटकल जंक्शन है।

(३) तिरुचनापल्ली जक्शनसे उत्तरकी ओर,—

मील	प्रसिद्ध स्टेशन।
३१	तञ्जौर जक्शन।
५६	कुम्भकोणम्।
७५	मायावरम् जंक्शन।
८३	स्वर्णकोइल।
९८	चिदम्बरम्।
१०५	पोर्टोनोवे।
१२४	कडालूर नया।
१५१	विलीपुरम् जंक्शन।

तञ्जौर जंक्शनसे पूर्व ३५ मील तिरुवालूर जंक्शन और ५० मील नागपट्टनम्।

मायावरम् ज०से दक्षिण २३ मील तिरुवालूर जंक्शन और ५३ मील मुदूपेटै है।

मद्रास शहरसे एक बड़ी सडक विलीपुरम्, तिरुचनापल्ली, मदुरा और मनियार्ची होकर कन्याकुमारीके पास तक गई है। कुछ यात्री जिनके पास खर्चका रुपया कम है, मदुरा नहीं जाकर तिरुचनापल्लीसे सीधा दक्षिण देहाती मार्गसे रामेश्वर जाते हैं।

तिरुचनापल्ली जंक्शनसे ३ मील उत्तर तिरुचनापल्ली फोर्टका रेलवे स्टेशन है। मद्रास हातेमे कावेरी नदीके १ मील दक्षिण (१० अंश, ४९ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ७८अंश,४२ कला, २१ विकला पूर्व देशान्तरमे) समुद्रसे लगभग ६० मील पश्चिमोत्तर तथा रेलवेके स्टेशनसे १॥ मील पूर्व जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा तिरुचनापल्ली है, जिसकी म्युनिसीपल्टीके भीतर फौजी छावनी और छोटे बड़े १७ गॉव है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तिरुचनापल्लीके म्युनिसिपल्टीमें ९०६०९ मनुष्य थे, अर्थात् ४४०८० पुरुष और ४६५२९ स्त्रियॉ। इनमें ६७२४८ हिन्दू, १२३४१ कृस्तान, ११०१७ मुसलमान,२ बौद्ध और १ अन्य थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ३० वॉ और मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें दूसरा शहर है।

तिरुचनापल्लीका किला १ मील लम्बा और ½ मील चौड़ा समकोण शकलका है। यह पहिले दीवार और खाईसे घेरा हुआ था; किन्तु अब उसकी खाई भर दी गई है। उसमें घनी

आवादी होगई है, उसके भीतरही तिरुचनापल्लीका चट्टान है, जिसपर शिवजी और गणेशजीका मन्दिर बना हुआ है। उस चट्टानसे चन्द सौ गज दक्षिण नव्वाबका महल है, जिसको सत्रहवीं सदीमें चोका नायकने बनवाया था और सन् १८७३ में गवर्नमेण्टने लगभग ३७००० रुपयेके खर्चसे मरम्मत करवाया। उसमें अब सरकारी कचहरियोंके इजलास और आफिसोंके काम होते हैं। चट्टान और किलेके प्रधान फाटकके बीचमें एक सुन्दर तेप्पकुलम् अर्थात् नावका सरोवर है, जिसमें देवतोंकी चल मूर्त्तियाँ नावमें बैठाकर जलमें घुमाई जाती है। सरोवरके चारों तरफके मकानोंमें एक समय यूरोपियन अफसर रहते थे। तिरुचनापल्लीमें एक अबजरवेटरी, २ जेलखाने, कई एक गिरजे, जिनमेंसे २ बड़े हैं एक कालिज, कई स्कूल और कई एक अस्पताल हैं। किलेसे १½ मील पश्चिम फौजी छावनी है; जिसमें सन् १८८४ में देशी पैदलकी दो रेजीमेंट थी। रात्रिमें शहरकी सड़कोंपर लालटेनोंकी रोशनी होती है। दक्षिण वाले सुनहले चट्टानके पश्चिम मद्रास हातेके बड़े जिलेमेंसे एक सेण्ट्रल जेल है। शहरमें सोनेके सुन्दर भूषण और चुरट बहुत तैयार होते है। शहरमें सोनार बहुत हैं। यह जिलेमें सौदागरीका प्रधान स्थान है।

चट्टानके ऊपरके मन्दिर—शहरकी बस्तीके पास २३५ फीट ऊँचा पत्थरका छोटा टीला है, जिसके ऊपरकी सब जगहोंपर मन्दिर बने हुए हैं और दक्षिण ओर नीचेसे ऊपर तक पत्थरकी सीढ़ियाँ हैं। रास्तेके बगलोंपर कई हाथी और बहुतेरे ऊँचे स्तम्भ हैं। ३०४ सीढ़ियोंके ऊपरसे बायें और दहिने दोनों ओर अलग अलग सीढ़ियाँ ऊपरको गई हैं। बायें ८६ सीढ़ियोंके ऊपर बड़ा शिवमन्दिर और दहिने २०८ सीढ़ियोंके ऊपर गणेशजीका छोटा मन्दिर है। शिवके मन्दिरके पास कई एक मन्दिर और मण्डपोंमें शिव, पार्वती, गणेश, सुब्रह्मण्य अर्थात् स्कन्द आदि देवताओंकी मूर्त्तियाँ और चाँदीके पत्तरोंसे मढ़ा हुआ एक बड़ा नन्दी है। गणेशजीके मन्दिरसे चारोओरके सुन्दर दृश्य देखनेमें आते हैं। प्रति वर्षके भादोमें गणेश उत्सवके समय वहां दर्शनका बड़ा मेला होता है। सन् १८४९ के मेलेके समय एक आकस्मिक भयसे घबड़ा कर उतरनेके समय वहाँ लगभग २५० यात्री कुचलकर मरगये।

तिरुचनापल्ली जिला—इस जिलेके पश्चिमोत्तर और उत्तर सेलम जिला; उत्तर और पूर्वोत्तर 'दक्षिण आरकाट' जिला; पूर्व और दक्षिणपूर्व तञ्जौर जिला, दक्षिण पुदुकोटाका राज्य और मदुरा जिला और पश्चिम कोयंबुत्तूर जिला है। जिलेका सदर स्थान तिरुचनापल्ली शहर है। जिलेकी भूमि समतल है; किन्तु स्थान स्थानपर चट्टानी टीले देखनेमें आते हैं। केवल लगभग २५०० फीट ऊँचा पचैमलई नामक एक पहाड़ी है। जिलेकी प्रसिद्ध नदी कावेरी और उसकी शाखा कोलरुन हैं। कावेरी नदी जिलेकी पश्चिमी सीमासे जिलेमें प्रवेश करके पूर्वको बहती है। उसका वृत्तान्त श्रीरङ्गम्के वृत्तान्तमें देखिये। जिलेकी उत्तरीय सीमापर कुछ दूर तक वेलार नदी बहती है। तिरुचनापल्ली और कोयम्बुतूर जिलेके मध्यमें अमरावती नदी है। जिलेमें मकान बनानेके कामका पत्थर और लोहेके ओर होते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय तिरुचनापल्ली जिलेके ३५६१ वर्गमील क्षेत्रफलमें १२१५०३२ मनुष्य थे; अर्थात् ११११४३३ हिन्दू, ६१४४० क्रस्तान, ३४१०४ मुसलमान, ३३ बौद्ध, ६ जैन और १६ अन्य। हिन्दुओंमें ३७८४४२ बनिया (जाति

विशेष) १९३००१ वेल्लाल (खेतिहर), १३९१६२ सतानी (दो मसला), १३३६१३ परियन् (नीच), ६३८४० इडैयन (भेड़िहर), ३५३२८ कैकलर (कपड़ा विननेवाले), ३४११० ब्राह्मण, २९५६६ कंमाड़न (लोहार), १७८७२ सेट्टी (सौदागर), १३८८४ अम्बंटन (नाई), १२३१० वनान (धोवी), १०८३२ सेम्बड़वन (मछुहा), ५९९६ कुसवन (कुम्भार), ५६०० सानान (मदक), २०५७ क्षत्री, २४७ कणकन (लिखने वाले) और ४३६०४ अन्य जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तिरुचनापल्ली जिलेके कसवे तिरुचनापल्लीमे ९०६०९ और श्रीरङ्गम्में २१६३२ मनुष्य थे। तिरुचनापल्ली जिलेमें तामिल भाषा प्रचलित है।

इतिहास-दक्षिणका देश, जिसका एक भाग तिरुचनापल्ली जिला है, चोला, चेरा और पांड्य वंशके राज्योंमे विभक्त था। उनके राज्यके आरम्भका समय ठीक नहीं जाना जाता है; किन्तु अनुमानसे जान पडता है कि सन् ईस्वीके आरम्भसे ५०० वर्ष पहिले उनके राज्य विद्यमान थे। उनके राज्य कई एक शकलमें सोलहवीं सदी तक थे। उनके राज्योंमें तिरुचनापल्ली चोला राज्यका एक भाग था, जिसकी राजधानी एक समय वोरैयर नामक नगर था, जो वर्तमान तिरुचनापल्ली शहरका एक शहरतली है। कहते हैं कि सन् १३० ईस्वीमें वोरैयर नगर विद्यमान था। सोलहवीं सदीके अन्तसे पहिले यह सम्पूर्ण देश नायकोंके अधिकारमे हुआ। उस राजवंशको कायम करनेवाला विजयानगरके राजाके एक अफसरका पुत्र विश्वनाथ नायक था, जो सन् १५५९ मे मदुराका हुकूमत करनेवाला बना और थोड़ही समयके पश्चात् तिरुचनापल्लीको अपने अधिकारमें कर लिया। उसके राज्यके समय तिरुचनापल्ली शहर सँवारा गया और किलेका वडा भाग दुरुस्त किया गया। सन् १५७३ में विश्वनाथकी मृत्यु हुई। नायक वंशके लोगोंने सन् १५५९ से १७४० तक तिरुचनापल्ली और मदुरामें हुकूमत की। उनमें सबसे अधिक प्रतापी तिरुमलई नायक था, जिसका देहान्त सन् १६५९ में हुआ। उसके पोता चोका नायकने मदुराको छोड कर तिरुचनापल्लीको अपनी राजधानी बनाया। उसकी बनाई हुई इमारत अवतक तिरुचनापल्लीमें नवावके महल करके प्रसिद्ध है। सन् १६८२ में चोका नायकका देहान्त हुआ।

सन् १७४० में आरकाटके नवाबके रिस्तेदार चन्दासाहबने तिरुचनापल्लीके नायककी विधवा मीनाक्षीको धोखा देकर तिरुचनापल्लीको लेलिया। सन् १७४९ और १७६२ के बीचमें जब अङ्गरेज और फरासीसी दक्षिणमें लड़ते रहे, अङ्गरेज महम्मदअलीके और फरासीसी चन्दासाहबके सहायक थे। प्रधान लडाइयाँ श्रीरङ्गम्के टापूमे हुईं। सन् १७६३ की पेरिसकी सन्धि द्वारा महम्मदअली कर्नाटकका नवाब बनाया गया। हैदरअली और टीपू सुलतानसे अङ्गरेजोकी लड़ाइयोके समय तिरुचनापल्ली जिला उजाड होगया किन्तु इसमें कोई प्रसिद्ध लडाई नहीं हुई। पीछे यह अङ्गरेजी सरकारके अधिकारमे आगया। तिरुचनापल्ली शहरमे सन् १८६६ मे म्युनिसिपल्टी कायम हुई और सन् १८६८ में म्युनिस्पल बाजार बनाया गया। पहिले सरकारी फौज किलेमें रहती थी, उसके पीछे वोरैयर शहरतलीमें हटाई गई, अब वर्तमान लाइनमें है।

राजा शिवप्रसादने अपने हस्तामलकमें लिखा है कि सेलम, आरकाट, तिरुचनापल्ली, तञ्जौर, मदुरा, तिरुनलवेली और कोयम्बुतूर ये सातों जिले (खास) द्राविड देशमें गिने जाते हैं ।

श्रीरंगम् ।

तिरुचनापल्लीके रेलवे स्टेशनसे एक मील पूर्वसे दो सड़क दो तरफ गई है;–एक आगे पूर्व ओर तिरुचनापल्ली शहरको और दूसरी उत्तर ओर श्रीरङ्गम्के टापूको । स्टेशनपर सवारीके लिये एक्के और बैलगाड़ी मिलती है । रेलवेके स्टेशनसे ३ मील और तिरुचनापल्ली शहरसे लगभग २ मील उत्तर मदरास हातेके तिरुचनापल्ली जिलेमें कावेरी नदीके श्रीरङ्गम् टापूके भीतर श्रीरङ्गम् कसबा तथा श्रीरङ्गम्का प्रसिद्ध मंदिर है । कावेरी नदीपर ३२ मेहराबीका पुल बना है, जिससे उत्तर मन्दिरके निकट कावेरीकी छोटी धारापर छोटा पुल है । लगभग १७ मील लम्बा और १½ मील चौड़ा श्रीरङ्गम् टापू है । श्रीरङ्गजीके मन्दिरसे पांच छः मील पश्चिम टापूकी पश्चिमी सीमा है, जिस स्थानसे कावेरी नदीकी दो शाखा हो गई है; उनमेंसे उत्तरकी शाखा कोलरुन तथा कोलडन और दक्षिणकी शाखा कावेरी करके प्रसिद्ध है । दोनों शाखा श्रीरङ्गम्के मन्दिरसे ग्यारह बारह मील पूर्व जाकर प्रायः मिल गई हैं । जब देखा गया कि क्रम क्रमसे कोलरुन अधिक गहरी और कावेरी कम गहरी होती जाती है, इससे तञ्जौर जिलेके खेतोंकी सिंचाईके काममे बाधा पड़ेगी, तब सन् १८३६ ईस्वीमें कोलरुनके एक किनारेसे दूसरे किनारे तक एक बाँध बना दिया गया । कावेरी नदी कोलरुनसे अलग होनेके बाद कई शाखाओंमें होकर तञ्जौर जिलेको पटाती है; जिनमेंसे प्रधान धाराका नाम बेनार है । तिरुचनापल्लीके रेलवे स्टेशनसे श्रीरङ्गजीके मन्दिरको जानेमें कावेरीकी दो धाराके दो पुल मिलते हैं और मन्दिरसे उत्तर कावेरीकी कोलरुन नामक धारा है ।

कावेरी नदी कुर्गकी पहाड़ियोंसे निकलकर मैसूरके राज्य और कर्नाटकमें बहती हुई ४७२ मील दक्षिण पूर्व बहनेके पश्चात् तञ्जौरसे पूर्व ओर समुद्रके पूर्वी घाटमें मिल गई है । श्रीरङ्गपट्टनम्, शिवसमुद्रम्, श्रीरङ्गम्, तिरुचनापल्ली, तञ्जौर इत्यादि नगर इसके किनारेके पास हैं । कावेरीके भीतर ३ प्रसिद्ध टापू हैं;—(१) मैसूर राज्यमें मैसूर राजधानीके पासका श्रीरङ्गपट्टनम् आदिरङ्गम्; (२) मैसूर राज्यमें शिवसमुद्रम् नामक टापू मध्यरङ्गम् और (३) तिरुचनापल्लीके पास श्रीरंगम्का टापू अन्तरंगम् । महाभारत—वनपर्वके ८५वें अध्यायमें लिखा है कि कावेरी नदीमें स्नान करनेसे हजार गोदानका फल मिलता है । शिवपुराण—विद्येश्वर संहिताके १० वें अध्यायमें है कि पवित्र कावेरी नदी सह्य पर्वतसे निकली है; तुला राशिपर बृहस्पति और सूर्यके होने पर कावेरीमें स्नान करनेसे सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होता है और कूर्मपुराण—उपरिभागके ३६ वें अध्यायमें लिखा है कि पवित्र कावेरी नदीमें स्नान और तर्पण करनेसे सम्पूर्ण पापोंका नाश होता है । इनके अलावे पुराणोंमें स्थान स्थानपर कावेरीका माहात्म्य और उसका नाम मिलता है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय श्रीरंगम् कसबेमें २१६३२ मनुष्य थे, अर्थात् १०२३८ पुरुष और ११३९४ स्त्रियाँ । इनमे २१३७३ हिन्दू, २१२ कृस्तान और ४७ मुसलमान थे । श्रीरंगजीके मन्दिरके घेरेके भीतरही प्रायः सम्पूर्ण कसबा है । उसके भीतरही

बाजार; पण्डाओं और सर्वसाधारण लोगोंके मकान और कई धर्मशालाये हैं। बाजारमें खाने पीनेकी वस्तु सर्वदा तैयार रहती है। धनी यात्रियोंको पण्डे लोग अपने मकानोंमें टिकाते हैं। वहाँ रामानुज संप्रदायके आचारी लोगोंकी प्रबलता तथा आधिक्यता है। इनकी मूलगद्दी तोताद्रीमें है; किन्तु श्रीरंगम् भी उनके मुख्य स्थानहीके समान है। वहाँ रामानुज संप्रदायकी २ गद्दी हैं, आनन्दस्वामीकी और भट्टरस्वामीकी। मन्दिरके एक भागमें रामानुजस्वामीका मन्दिर है।

पूस सुदी १ से ११ तक श्रीरङ्गम्में वैकुण्ठ एकादशीका बडा मेला होता है। उस समय एक बड़ा पण्डाल बनता है। और उसमें बांसकी कमाचियोंपर कागज साटकर और अन्य प्रकारसे भी देव देवियों तथा हाकिम, सिपाहियों, कैदियों इत्यादिकी विचित्र मूर्त्तियाँ बनाकर रक्खी जाती हैं। पण्डाल और प्रतिमाओंके बनानेमें तीन चार हजार रुपया खर्च पड़ता है।

श्रीरङ्गजीका मन्दिर—श्रीरङ्गजीका मन्दिर, जिसके भीतर श्रीरङ्गम् कसबाका बड़ा हिस्सा है, उत्तरसे दक्षिण तक लगभग २९०० फीट लम्बा और पूर्वसे पश्चिमको २५०० फीट चौड़ा है, अर्थात् वह ३६६ बीघे भूमिपर फैला हुआ है। उसका विस्तार दिल्लीके किलेसे करीब डेवढ़ा है। इतना बड़ा देवमन्दिर किसी स्थानमें नहीं है। सात दीवारोंके भीतर श्रीरङ्गजीका निज मन्दिर है। स्थान स्थानपर चारोंओरकी दीवारोंमें छोटे बड़े १८ गोपुर बने हुए है, जिनमें २ बहुत बडे हैं। इनके अतिरिक्त अनेक दरवाजे भी हैं। नीचेके नम्बरोंसे नकशेके नम्बरोंसे मिलाकर मन्दिरके स्थानोंको देखिये। नीचे लिखे हुए मन्दिर और मण्डपोंके अलावे मन्दिरके घेरेके भीतर बहुतसे मन्दिर, मण्डप तथा स्थान हैं।

(नंबर १) बाहरवाली चारोओरकी दीवारोके मध्य भागमें एकही समान एक एक बड़ा फाटक है, जो गोपुरोंकी नेव जान पडते है। अगर इनके ऊपर शुंडाकार गोपुर बनकर तैयार होते तो उनकी ऊँचाई लगभग ३०० फीट होजाती। इनमेसे तिरुचनापल्लीकी ओरके दक्षिणके फाटकके भीतरकी ऊँचाई ४३ फीट, लम्बाई (दहिने बायें) १३० फीट और गहराई अर्थात् आगे पीछे १०० फीट है। फाटकमें बडे बड़े पत्थर खड़े हैं, जिनमेंसे चन्द पत्थर ४० फीटसे अधिक ऊँचे हैं। दक्षिणके फाटकसे यात्री लोग मन्दिरके सातवें कोटमें प्रवेश करते हैं, जहां एक अस्पताल है और नित्य बाजार लगता है। इस कोटके मध्यमें चारो तरफ पक्की सडक बनी है, जिसके बगलोमें सर्व साधारण लोगोंकी वस्ती है। दक्षिण वाले फाटकसे चार पाँच सौ गज दक्षिण, कावेरी नदीकी दक्षिणी शाखाओंमेकी छोटी शाखा है, जिसमें यात्रीगण स्नान और दान करते है। कावेरीकी उत्तरी शाखा, जिसको कोलरून कहते हैं, मन्दिरके उत्तरके फाटकसे आधे मीलसे अधिक उत्तर है।

(नंबर २) छठवें कोटमें तीन ओर छोटे छोटे और दक्षिण ओर सात खनवाला बड़ा गोपुर है। कोटके भीतर चारोंओर सडकके बगलोंमें ब्राह्मण और पण्डोंकी बस्ती तथा दक्षिण ओर दुकानें हैं। चारो बगलोंकी दीवार लगभग २० फीट ऊँची है।

(नंबर ३) पांचवें कोटमें चारों तरफ एक एक छोटे गोपुर और कोटके भीतर चारों ओर सडकके बगलोमें ब्राह्मण और पण्डोंके मकान हैं।

(नंबर ४) चौथे कोटमें दक्षिण और उत्तर एक एक छोटा गोपुर और पूर्व ओर १५२ फीट ऊँचा एक बड़ा गोपुर है, उसके ऊपरका भाग पूरा नहीं हुआ है, अगर पूरा

श्रीरंगजीके मंदिरका नक्शा.

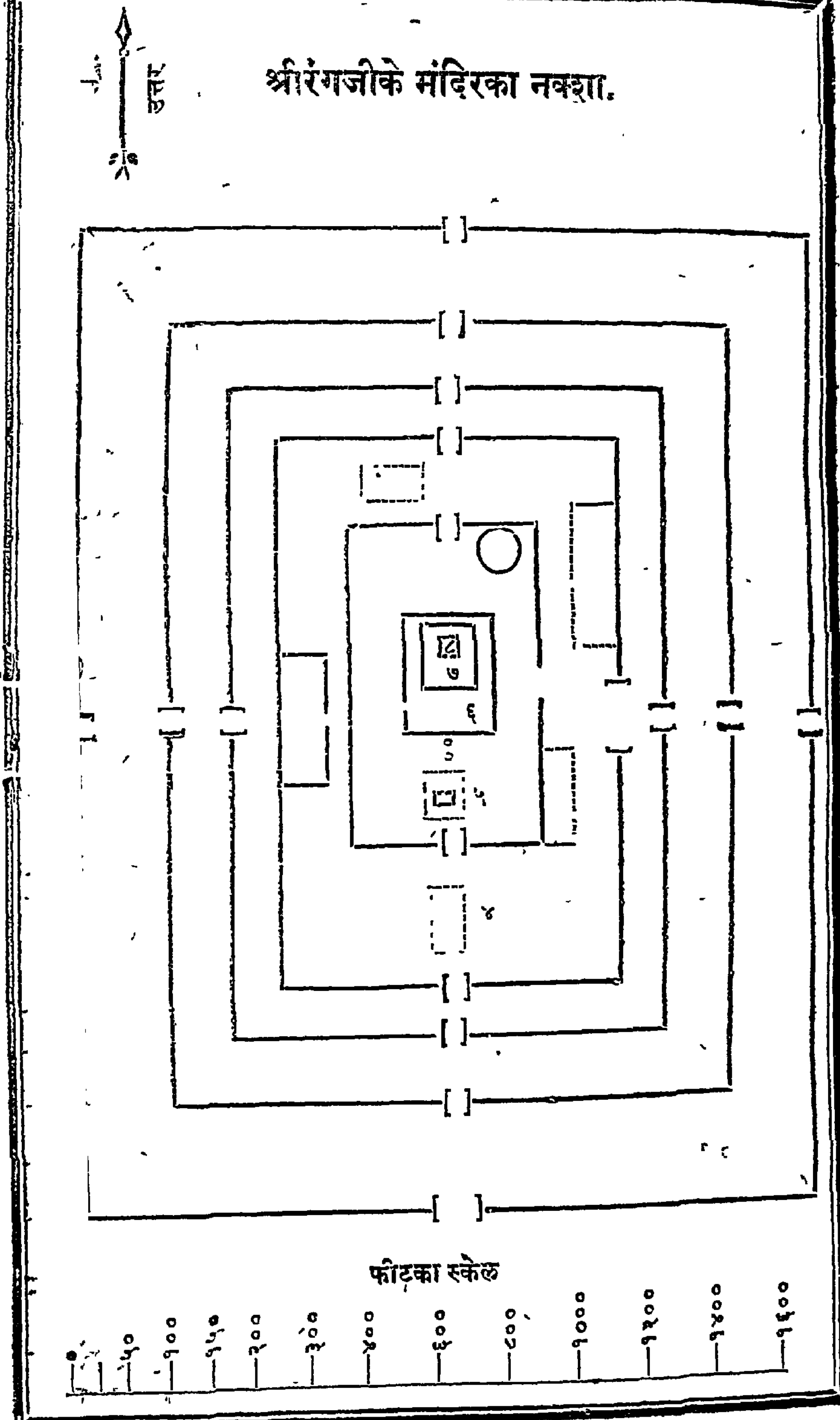

होता तो वह २०० फीटसे अधिक ऊँचा होजाता । उसके नीचेका फाटक ४४ फीट ऊँचा है, इस कोटमें कई एक बड़े बड़े मण्डप बने हुए हैं, जिनमेंसे लगभग ४५० फीट लम्बा और १३० फीट चौड़ा "सहस्र स्तम्भ मण्डपम्" है, जिसमें १६ स्तम्भोंके ६० पंक्तियोंमें १८ फीट ऊँचे ९६० स्तम्भ लगे हुए हैं। इस कोटके पूर्व वाले वडे गोपुरके पश्चिम अपूर्व चित्रकारीका एक सुन्दर मण्डप है। उसके स्तम्भोंमें भांति भांतिके घोड़े घोडसवार इत्यादिके पूरे स्वरूप बने हुए हैं। कोटके दक्षिणके मण्डपमें श्रीरङ्गजी आदि देवताओंके चित्रपट बिकते हैं। कोटके पश्चिमके भागमे एक बावली और केला, नारियलका छोटा बाग है।

श्रीरंगक्षेत्रस्थ गजस्थाने (कोट) अधः।

(५) तीसरे कोटमें दक्षिण और उत्तर एक एक गोपुर और पूर्व एक खिड़की है। दक्षिणके गोपुरके सामने उत्तर गरुड़मण्डपमें नवीन रंगसे रंजित बहुत बड़ी गरुड़की मूर्त्ति है, जिससे उत्तर एक चबूतरेके पास सोनेका मोलम्मा किया हुआ गरुड़स्तम्भ है।

कोटके ईशान कोनेमें चन्द्रपुष्करणी नामक एक गोलाकार सुन्दर सरोवर है, जिसमें यात्रीलोग स्नान वा मार्जन करते हैं। उसके पास महालक्ष्मीका विशाल मन्दिर; कल्पवृक्ष नामक पेड़, श्रीरामचन्द्रकी मूर्त्ति और वैकुण्ठनाथ भगवान्का प्राचीन स्थान है। वहाँ कितने देवता और ऋषियोंकी प्रतिमा हैं।

(६) दूसरा कोट १९० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है, जिसके पश्चिम बगलमें एक दरवाजा और दक्षिण हिस्सेमें दालान और मण्डपम् है।

(७) पहले कोटका दरवाजा दक्षिण है। कोटके उत्तर हिस्सेमें साधारण कदका श्रीरङ्गजीका निज मन्दिर है, जिसके नीचेका भाग पीछेकी ओर अर्थात् उत्तर गोलाकार है और ऊपरके शिखरपर सोनेका मुलम्मा किया हुआ है। मन्दिरके पीछेकी छतमें देवतोंकी चित्र मूर्त्ति हैं। श्रीरङ्गजीके निज मन्दिरके पीछे एक कूप और एक मन्दिर है, जिसके पीछे पीतलका एक पत्तर भूमिमें गड़ा है। वहाँसे श्रीरङ्गजीके निज मन्दिरके शिखरका दर्शन होता है। शिखरपर चार वेदोंके स्थानपर चार सुवर्ण कलश हैं। थोड़ी दूर आगे एक ऊंचे दालानमें भी वैसाही एक पत्तर है, जहाँसे मन्दिरके शिखरपर पीतलमयी श्रीवासुदेवकी मूर्त्ति देख पड़ती है।

श्रीरंगजीकी कृष्णपाषाणमय ६ फीटसे अधिक लम्बी चतुर्भुज मूर्त्ति शेषपर शयन करती है। उनका किरीट, मुकुट, चरण, हाथ सब सुनहरे हैं। वह बहुमूल्य भूषण पहरे हुए हैं। उनके निकट श्रीलक्ष्मीजी और विभीषण बैठे है और श्रीदेवी, भूदेवी इत्यादि ताम्रमयी ३ उत्सवमूर्त्तियाँ खड़ी है। मन्दिरका पुजारी एक रुपया लेकर यात्रीकी ओरसे श्रीरङ्ग-जीकी पूजा और कर्पूरकी आरती कर देता है। जो यात्री रुपया नही देता है, वह दर्शन-मात्र करके चलाजाता है। मन्दिरमें दर्शकोंकी भीड़ रहती है। खास मन्दिर एक कोठरीके समान छोटा है। कोई कोई यात्री वहाँ अटका चढ़ाते हैं। मन्दिरके खजानेमें सोना, चाँदी, पन्ना, हीरा, लाल इत्यादि रत्नोंसे बने हुए लाखों रुपयेके देवभूषण और पात्र हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—श्रीमद्भागवत—(दशम स्कन्ध, ७९ वाँ अध्याय) श्रीबल-देवजी कावेरी नदीमें स्नान कर श्रीरङ्ग नामक विख्यात स्थानमें गये, जहाँ श्रीहरि नित्य निवास करते हैं।

मत्स्यपुराण—(२२ वाँ अध्याय) श्रीरंग नामक तीर्थमें श्राद्ध करनेसे मनुष्योंको अनन्त फल लाभ होता है।

पद्मपुराण—(पाताल खण्ड उत्तरार्द्ध, प्रथम अध्याय) द्रविड़ देशके मनुष्योंने विभी-षणको जंजीरसे बाँध लिया। श्रीरामचन्द्र अयोध्यामें दूतोंके मुखसे यह समाचार सुनकर मुनिगण और वानरोंको संग ले विभीषणको ढूँढ़ते हुए श्रीरङ्ग नामक नगरमें पहुँचे। वहाँके उपस्थित राजाओंने उनकी पूजा की। रामचन्द्रने बहुत खोजनेके पश्चात् बहुत जंजीरोंसे बँधा हुआ भूगर्भमें विभीषणको पाया। उनके पूछनेपर वहाँके ब्राह्मणोंने कहा कि एक वृद्ध धार्मिक, ब्राह्मण ध्यानमें मग्न बैठा था। विभीषणने उसको अपने चरणसे ऐसा मारा कि वह

मरगया। तब हम लोगोंने इस ब्रह्मघातीको बहुत मारा, परंतु यह नही मरा। इसको मार-डालना उचित है। रामचन्द्र बोले कि मैने इसको कल्प पर्यन्त राज्य करनेको कहा है; आप लोग इसके बदलेमें मेरा दण्ड कीजिये। तब वहाँके ब्राह्मणोंने विभीषणसे प्रायश्चित्त करवा कर उसको शुद्ध कर दिया। रामचन्द्र अयोध्यामे आये।

बाल्मीकि रामायण—(उत्तर कांड, १२१ वां सर्ग) श्रीरामचन्द्रजीके परमधाम जानेके समय सुग्रीव आदि वानर और विभीषण आदिक राक्षस उनके साथ जानेके लिये अयोध्यामें आये। उस समय रामचन्द्रने विभीषणसे कहा कि हे राक्षसेन्द्र! जब तक यह प्रजागण हैं, तब तक तुम लंकामें राज्य करो और इक्ष्वाकु वंशके इष्टदेव इन श्रीजयन्नाथका; जो इन्द्रादि देवताओंके पूज्य हैं, आराधन करते रहो। विभीषणने रामचन्द्रका वचन स्वीकार किया।

श्रीरङ्गमाहात्म्य—(प्रथम अध्याय) चन्द्रपुष्करणीके तटपर श्रीरङ्ग क्षेत्र है, जिसमे जानेसे मनुष्यको नर्कवास नहीं होता। चन्द्रपुष्करणीमे स्नान करके रंग मन्दिरका दर्शन करनेसे सम्पूर्ण पदार्थ मिलता है। कावेरी नदीमे स्नान करके पितरोंको तिलांजलि देनेसे उनका उद्धार होजाता है। कन्या राशिके सूर्य होनेपर कृष्णपक्षको त्रयोदशीको रङ्गधाममे पितरकर्म करना उत्तम है। माघके महीनेमे कावेरी नदी और चन्द्रपुष्करणीका स्नान और रंगक्षेत्रका निवास अति दुर्लभ है।

(दूसरा अध्याय) प्रलयके अन्तमे भगवान् नारायणने प्रलयके समुद्रमें शेषके ऊपर शयन किया। उनकी नाभिकी नालसे ब्रह्माजी प्रकट हुए। (तीसरा अध्याय) एक समय ब्रह्माजीने क्षीर समुद्रमे विष्णुका तप किया। विष्णु भगवान् कूर्मरूपसे प्रकट हुए। ब्रह्माने कहा कि हे भगवन्! तुम मुझको अपना दिव्य रूप दिखाओ। विष्णुने कहा कि "ओ नमो नारायणाय" इस अष्टाक्षर मन्त्रसे तुम फिर तप करो, तब हमारा परम रूप देखोगे। जब ब्रह्माने एक हजार वर्षतक फिर तप किया, तब क्षीर सागरसे श्रीरंगम् नामक परम धाम प्रकट हुआ। ब्रह्माने श्रीरंगका दिव्य विमान देखकर उसको प्रणाम किया। विष्णु भगवान् उस आलयमे सोते थे। (चौथा अध्याय) ब्रह्माने धामके द्वारके एक ओर जयको और दूसरी ओर विजयको और धामके भीतर शेषशायी भगवान्को देखा। वह अपनी भुजाओंको तकिये बनाये और अपना एक हाथ फैलाये हुए थे। उनके निकट लक्ष्मीजी बैठी थी इत्यादि। (पांचवां अध्याय) ब्रह्माने वर मांगा कि मै तुम्हारे इसी भांतिके विग्रहसे तुम्हारा पूजन करना चाहता हूं। भगवान् बोले कि तुम्हारी इच्छासे मैंने तुमको विमानके साथ अपना साकार रूप दिखलाया है, तुम इसी प्रकारकी हमारी प्रतिमा स्थापन करो।

(६ छठा अध्याय) ब्रह्माने सत्यलोकमें जाकर विरजा नदीके पार विष्णुका धाम बनवाकर तुला राशिके सूर्यमे भगवान्की स्थापना करवाई और देवताओंको आज्ञा दी कि तुमलोग श्रीरङ्गशायी भगवान्की पूजा करो। बहुत काल तक सूर्य और उनके पश्चात् बहुत समय तक सूर्यके पुत्र वैवस्वतमनु सत्यलोकमें श्रीरङ्गशायी भगवान्की पूजा करते रहे। मनुने अपने पुत्र इक्ष्वाकुको वैष्णव धर्मका उपदेश दिया। इक्ष्वाकुने बड़ा तप करके ब्रह्माजीसे श्रीरङ्गको पाया और उनको अपनी राजधानी अयोध्यामे लाकर स्थापित किया। तबसे श्रीरंग इक्ष्वाकु वंशियोंके इष्टदेव हुए। (८ वाँ अध्याय) त्रेतायुगमें अयोध्याके राजा दशरथने

अपने यज्ञके समय चोल देशके राजा धर्म्मवर्म्माको बुलाया। धर्मवर्म्माने देखा कि श्रीरङ्गके प्रभावसे अयोध्याका वैभव अत्यन्त बढ़ गया है। उसके पश्चात् वह अपने देशमें चन्द्रपुष्करणीके तटपर जाकर रङ्गधामके पानेके लिये तप करने लगा। तब मुनियोंने कहा कि भगवान्ने हम लोगोंको वर दिया है कि थोड़े दिनोंके पश्चात् कावेरीमें चन्द्रपुष्करणीके तटपर हमारा रङ्गधाम आवेगा। राजा धर्मवर्म्मा मुनियोंके वचन सुनकर कावेरीके दक्षिण तीरके निचुला नामक अपनी पुरीमें चला गया। उसके पश्चात राजा दशरथके पुत्र श्रीरामचन्द्रने लङ्काके राजा विभीषणको श्रीरङ्गधाम दे दिया। विभीषणने राक्षसोंके सहित श्रीरङ्गधामको लेकर अयोध्यासे प्रस्थान किया और दक्षिण देशमें पहुंच चन्द्रपुष्करणीके तटके अनन्त पीठपर उसको रक्खा। राजा धर्मवर्म्माने विभीषणका अतिथि सत्कार किया। विभीषण वहाँसे चलनेके समय जब श्रीरङ्गके विमान अर्थात् मन्दिरको उठाने लगा तब किसी प्रकारसे वह नहीं उठा। उस समय वह दुःखी होकर रंगजीके चरणोपर गिरपड़ा। श्रीरङ्गजी बोले कि हे विभीषण! कावेरी नदी और चन्द्रपुष्करणीके निकट यह मनोहर तथा पवित्र देश है, यहाँका राजा धर्मवर्म्मा हमारा परम भक्त है और मैंने पूर्व कालमें कावेरीको वर दिया था कि तुम्हारे मध्यमें हमारा रंगधाम बसेगा इस लिये तुम लङ्कामे चले जाओ; हम तुम्हारी ओर मुख करके सोवेंगे। तब विभीषण लङ्काको चला गया।

इतिहास—ग्यारहवीं सदीमें श्रीरङ्गम्के यामुनाचार्यके पुत्र वररङ्गस्वामीने श्रीरङ्गपुरीमें श्रीरामानुजस्वामीको लाकर श्रीरङ्गनाथका कार्य समर्पण करदिया, तबसे रामानुजस्वामी वहाँही रहकर भारतवर्षमें अपने मतका प्रचार और उपदेश करने लगे। सन् ११३७ ईस्वीमें श्रीरंगनगर अर्थात् श्रीरंगम्में उनका देहान्त हुआ, उस समय उनकी अवस्था १२० वर्षकी थी। (भारतभ्रमणके १० वें अध्यायकी भूतपुरीके वृत्तान्तमे देखिये) श्रीरङ्गजीका वर्तमान मन्दिर सत्रहवीं और अठारहवीं सदीका बना हुआ है। सम्पूर्ण मन्दिर एकही समयमें नहीं बना था; वह क्रम क्रमसे समय समय पर बढ़ाया गया। सन् १८७१ में श्रीरङ्गम्में म्युनिसिपल्टी नियत हुई।

जम्बुकेश्वर।

श्रीरङ्गम्के मन्दिरसे १ मील पूर्व श्रीरङ्गम्के टापूके भीतर मदरास हातेके तिरुचनापल्ली जिलेमें (१० अंश ५१ कला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ४४ कला, पूर्व देशान्तरमें) जम्बुकेश्वरका प्रसिद्ध मन्दिर है। वह मन्दिर शिल्पकारी और मनोज्ञतामे श्रीरंगजीके बड़े मन्दिरका मुकाबला कर रहा है। मन्दिरका विस्तार १०० बीघेसे अधिक होगा। मन्दिरके ३ चौगान हैं।

पहले घेरेके फाटकका रास्ता, जिससे मन्दिरके पहिले आँगनमे प्रवेश करना होता है, ४०० स्तम्भ वाले मण्डपम्को सीधा चला गया है। फाटकके दहिने ४ फीट ऊँचे पत्थरपर तामिल अक्षरका लम्बा लेख है। आँगनमें दहिनी ओर अर्थात् दक्षिण एक तेप्पाकुलम् नामक प्रसिद्ध सरोवर है, जिसमें झरनेका पानी गिरता है। सरोवरके मध्यमें एक मण्डप और दक्षिण पूर्व तथा उत्तर बगलमें दो मञ्जिला दालान बना हुआ है। आँगनमें बाईं ओर एक अधबना बड़ा मण्डपम् है। उससे आगे मन्दिरके दूसरे आँगनमें ७९६ स्तम्भोंका

मण्डप और एक छोटा सरोवर है, जिसके बगलोंमे स्तम्भ लगे है । आँगनके दो तरफ दो गोपुर हैं।

मन्दिरके ५ घेरे है;—भीतरी वाला पहला घेरा, जिसमे विमान अर्थात् जम्बुकेश्वरका निज मन्दिर है, लगभग १२५ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है । उसके चारोंओरकी दीवार ३० फीट ऊँची है। दूसरा घेरा ३०० फीट लम्बा और २०० फीट चौडा है। उसकी दीवार ३५ फीट ऊँची है, जिसमे ६५ फीट ऊँचा एक गोपुर बना हुआ है। उस घेरेमें कई एक छोटे मण्डपम् हैं। तीसरा घेरा ७५० फीट लम्बा है। उसकी दीवार ३० फीट ऊँची है, जिसमें २ गोपुर बने हुए हैं, जिनमेंसे एक १०० फीट और दूसरा ७३ फीट ऊँचा है। चौथा घेरा २४५० फीट लम्बा और १५०० फीट चौड़ा है। उसकी दीवार ३५ फीट ऊँची और ६ फीट मोटी है। उस घेरेमे एक छोटा सरोवर और मन्दिर है। उस स्थानपर प्रति वर्ष श्रीरंगजीके मन्दिरसे उत्सव मूर्त्तियोंकी सवारी आती है। पांचवे घेरेमे, जिसके पश्चिम बगल पर एक छोटा गोपुर है, मकानोंके ४ सड़कें है।

मन्दिरके ३ गोपुर लाँघ जानेपर तीसरे आँगनमें अन्धियारे मण्डपम्से चलकर जम्बुकेश्वरके पास पहुँचना होता है। मन्दिरके प्रायः आधे भागमे जलहीमें चलना होता है। जम्बुकेश्वर शिवलिङ्गके पास एक हाथसे अधिक गहरा जल है। शिवलिंगके ऊपरका भाग पानीके ऊपर देख पड़ता है। मन्दिरका पानी मोरी द्वारा बाहर निकला करता है । जम्बुकेश्वरके पीछे चबूतरेपर जम्बुका वृक्ष है।

दक्षिणके ५ प्रसिद्ध लिगोंमेंसे जम्बुकेश्वर शिवलिङ्ग हैं। पांच लिङ्ग ये है,—(१) शिवकांचीमें एकाम्रेश्वर पृथ्वीलिङ्ग, (२) जम्बुकेश्वर जल लिङ्ग, (३) दक्षिणी आरकाट जिलेमें तिरुवन्नामलई कसबेके पासकी पहाड़ीपर अग्निलिङ्ग, (४) कालहस्तीमे कालहस्तीश्वर वायुलिङ्ग और (५) चिदम्बरमें नटेश आकाश लिंग।

इतिहास—जम्बुकेश्वरके मन्दिरके भीतरका भाग बहुत पुराना है। श्रीरंगम्के वर्तमान मन्दिरके काम आरम्भ होनेसे पहिले वह तैयार हो गया होगा; किन्तु बाहरका भाग श्रीरंगम्के मन्दिरके काम आरम्भ होनेके बादका अर्थात् सत्रहवीं सदीके आरम्भका बना हुआ ज्ञात होता है। मन्दिरके कई एक भागोमें कई एक शिला लेख है, जिनमेंका एक लेख सन् १४८० ईस्वीका लिखा हुआ है।

जम्बुकेश्वरके मन्दिरके खर्चके लिये सन् १७५० में ६४ गॉव थे, किन्तु सन् १८२० में केवल १५ गाँव रह गये थे। सन् १८५१ से इन गाँवोंके बदलेमे मन्दिरके खर्चके लिये लगभग १०००० रुपया वार्षिक मिलता है।

पुदुकोटा।

तिरुचनापल्ली शहरसे लगभग ७० मील दक्षिण कुछ पूर्व (१० अंश, २३ कला, उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ५१ कला, ५१ विकला पूर्व देशान्तरमें) मदरास हातेमें देशी राज्यकी राजधानी पुदुकोटा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पुदुकोटा कसबेमें १६८८५ मनुष्य थे; अर्थात् १५३५३ हिन्दू, ११२९ मुसलमान और ४०३ कृस्तान।

पुदुकोटा कसबा अत्यन्त साफ और अच्छा बनावटका है। उसमें राजाका सुन्दर महल, एक जेलखाना, एक बीमारखाना और एक कालिज है। जिसमें सन् १८८२–१८८३ में ३३७ विद्यार्थी पढ़ते थे।

पुदुकोटाका राज्य—यह राज्य मद्रास हातेके तंजौर, तिरुचनापल्ली और मदुरा इन तीनों अङ्गरेजी जिलोंसे घेरा हुआ है। देश प्रायः समतल है। जगह जगह छोटी पहाड़ियाँ हैं, जिनमेंसे चन्दपर पुराने किले देखनेमें आते हैं। राज्यके दक्षिण-पश्चिमके भागमें पहाड़ियाँ और जङ्गल हैं किन्तु अन्य भागमें उपजाऊ भूमि है। राज्यमें लगभग ३००० तालाब बने हुए हैं, जिनमेंसे कई एक बहुत बड़े हैं।

सन् १७८१ की मनुष्य-गणनाके समय पुदुकोटा राज्यका क्षेत्रफल ११०१ वर्गमील था, जिसमें एक कसबा और ५९६ गाँव और ३०२१२७ मनुष्य थे; अर्थात् २८१८०९ हिन्दू, ११३७२ कृस्तान, और ८९४६ मुसलमान। हिन्दुओंमें ८३९५४ वनिया (जाति विशेष), ५३९६१ संबड़वन (मछुहा), ३०१३९ वेल्लाल (खेतिहर), २६५६८ परयन् २६१५८ इडैयन् (मेंड़िहर) और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे।

पुदुकोटाके राजा कलाल हैं। उनके राज्यसे ५७५००० रुपया मालगुजारी आती है किन्तु जमीनकी बहुत आमदनी राजाके परिवारके लोगोंके पिंशिनमें और मन्दिरोंके खर्च तथा अन्य धर्मार्थ काममें खर्च होजाती है। सन् १८८२—१८८३ मे राजाको राज्यसे ४००००० रुपया मालगुजारी मिली थी। राजा रामचन्द्र तोंडमान् बहादुरके पश्चात् पुदुकोटाके वर्त्तमान नरेश राजा मार्तंडभैरव तोंडमान् बहादुर जिनकी अवस्था १४ वर्षकी है; पुदुकोटाके सिंहासनपर बैठे।

इतिहास—सन् १७५२ में पुदुकोटाके राजासे अङ्गरेज सरकारका संबंध हुआ। पीछे राजाने लड़ाइयोंमें अंगरेजोंकी सहायता की। सन् १८०३ में अङ्गरेजी गवर्नमेण्टने राजाको किलानेली जिला और किला दे दिया, जिनको तंजौरके राजा प्रतापसिंह और उसके बाद अङ्गरेजी अफसरोंने उनको दिया था। पुदुकोटाके राजाका राज्य तोंडमानका राज्य भी कहलाता है। तामिल भाषामें तोंडमानका अर्थ हुकूमत करनेवाला है।

दिण्डीगल।

तिरुचनापल्ली जंक्शनसे ५८ मील दक्षिण-पश्चिम दिण्डीगलका रेलवे स्टेशन है। मद्रास हातेके मदुरा जिलेमें समुद्रके जलसे ८८० फीट ऊपर तालुकका सदर स्थान दिण्डीगल एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय दिण्डीगल कसबेमें २०२०३ मनुष्य थे; अर्थात् १४५८९ हिन्दू, ३३६३ कृस्तान और २२५१ मुसलमान।

दिण्डीगलमें सरकारी कचहरियाँ, पुलिसका स्टेशन, स्कूल, अस्पताल, बँगला और २ गिरजा हैं; तंबाकू, कहवा और चमड़ेकी बड़ी तिजारत होती है। दिण्डीगलका जल वायु मदुराके जल वायुसे अधिक ठण्ढी और स्वास्थ्यकर है। कसबेसे पश्चिम आसे पासके मैदानसे २८० फीट ऊँची पहाड़ीपर दिण्डीगलका किला है, जिसको नायक वंशके राजाने बनवाया था।

इतिहास—दिण्डीगल पहिले मदुरा राज्यके (बराय नामके) अधीन एक स्वाधीन देशकी राजधानी था। उसके पश्चात् दिण्डीगलका किला क्रमसे चन्दा साहब, महाराष्ट्र

लोगो और मैसूरके अधिकारमें रहा। उसके बीच बीचमें देशी प्रधान लोगोंके अधीनमें रहता था। सन् १७५५ में मैसूरके हैदरअलीने किलेमे अपनी फौज रक्खी। सन् १७८१ में अङ्गरेजोंने हैदरअलीके पुत्र टीपूसुलतानसे किला ले लिया, किन्तु सन् १७८४ में टीपूको मिल गया था। सन् १७९२ में एक सन्धि द्वारा वह किला फिर अङ्गरेजी सरकारको मिल गया।

मदुरा।

दिण्डीगलके रेलवे स्टेशनसे ३८ मील दक्षिण-पूर्व (तिरुचनापल्ली जंक्शनसे ९६ मील और मदरास शहरसे ३४५ मील दक्षिण-पश्चिम) मदुराका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेमें (९ अंश, ५५ कला, १६ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ९ कला, ४४ विकला पूर्व देशान्तरमें) पांड्य मण्डलके अन्तर्गत वैगा नदीके दक्षिण किनारेपर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसवा मदुराहै, जिसका नाम संस्कृत पुस्तकमें मधुरा लिखा हुआ है। वैगा नदी मदुरा कसवेसे दक्षिण-पूर्व रामेश्वरके टापूके पास जाकर समुद्रमें मिल गई है। वह नदी स्थान स्थानपर गुप्त होगई है। उसके बालू खोदनेपर पानी मिल जाता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मदुरा कसवेमें ८७४२८ मनुष्य थे, अर्थात् ४३८८० पुरुष और ४३५४८ स्त्रियां। इनमे ७७४३३ हिन्दू, ७०६५ मुसलमान, २९१९ कृस्तान, ९ जैन और २ अन्य थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ३१ वाँ और मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें तीसरा शहर है।

वैगा नदीके पास लालाक्षत्रम् नामक धर्मशाला है, जिसमें रामेश्वरके यात्री टिकते हैं और गाड़ी-भाड़ा करते हैं। इसके अतिरिक्त उसके आस पास कई अन्य धर्मशालाये है। जज साहवकी कोठीके हातेमें एक सरोवरके पास वटका एक बड़ा वृक्ष है, उसकी जडका घेरा ७० फीट और सायाका व्यास १८० फीट है। मदुरामे चौडी सड़कोंके किनारोंपर दूकानें बनी हुई है और बड़ा मन्दिर, जेलखाना, सरकारी कचहरियाँ, अनेक अस्पताल, स्कूल तथा गिरजे है।

मदुरा शहरमे सुन्दर पगडियाँ, जिनके किनारोंपर सुनहला काम बनता है और एक प्रकारके अजीव लाल कपड़े तैयार होते हैं। रामेश्वरके यात्री मदुरामे रेलसे उतरकर वहाँसे पैदल अथवा वैलगाड़ीपर समुद्रके तीर पहुचते है। मार्गमें अच्छी जिनिस नहीं मिलती है इस लिये कोई कोई मदुरासे अपनी गाडीपर ले जाते हैं।

एक अच्छी सडक मदुरा कसवेसे पूर्वोत्तर तिरुचनापल्ली और विलीपुरम् होकर मदरास शहरको और दक्षिण-पश्चिम मनियार्ची होकर कन्याकुमारीके पास तक गई है।

मीनाक्षीदेवी और सुन्दरेश्वर शिवका मन्दिर—रेलवे स्टेशनसे करीव १ मील पश्चिम ८४५ फीट लम्बा और ७२५ फीट चौडा अर्थात् लगभग २२ बीघेमें यह मन्दिर है। बाहरकी दीवार करीव २१ फीट ऊँची है। उसके चारों बगलोपर प्रतिमाओसे पूर्ण रङ्गोंसे चित्रित ग्यारह मञ्जिला ग्यारह कलशवाला एकही समान एक एक गोपुर हैं। उनमेंसे एक गोपुर १५२ फीट ऊँचा, १०५ फीट लम्बा और ६६ फीट चौडा, उसके अतिरिक्त मन्दिरमें स्थान स्थानपर ५ छोटे गोपुर बने हुए है।

उत्तर

मीनाक्षी देवी और सुंदरेश्वर शिव के मंदिर का नकशा

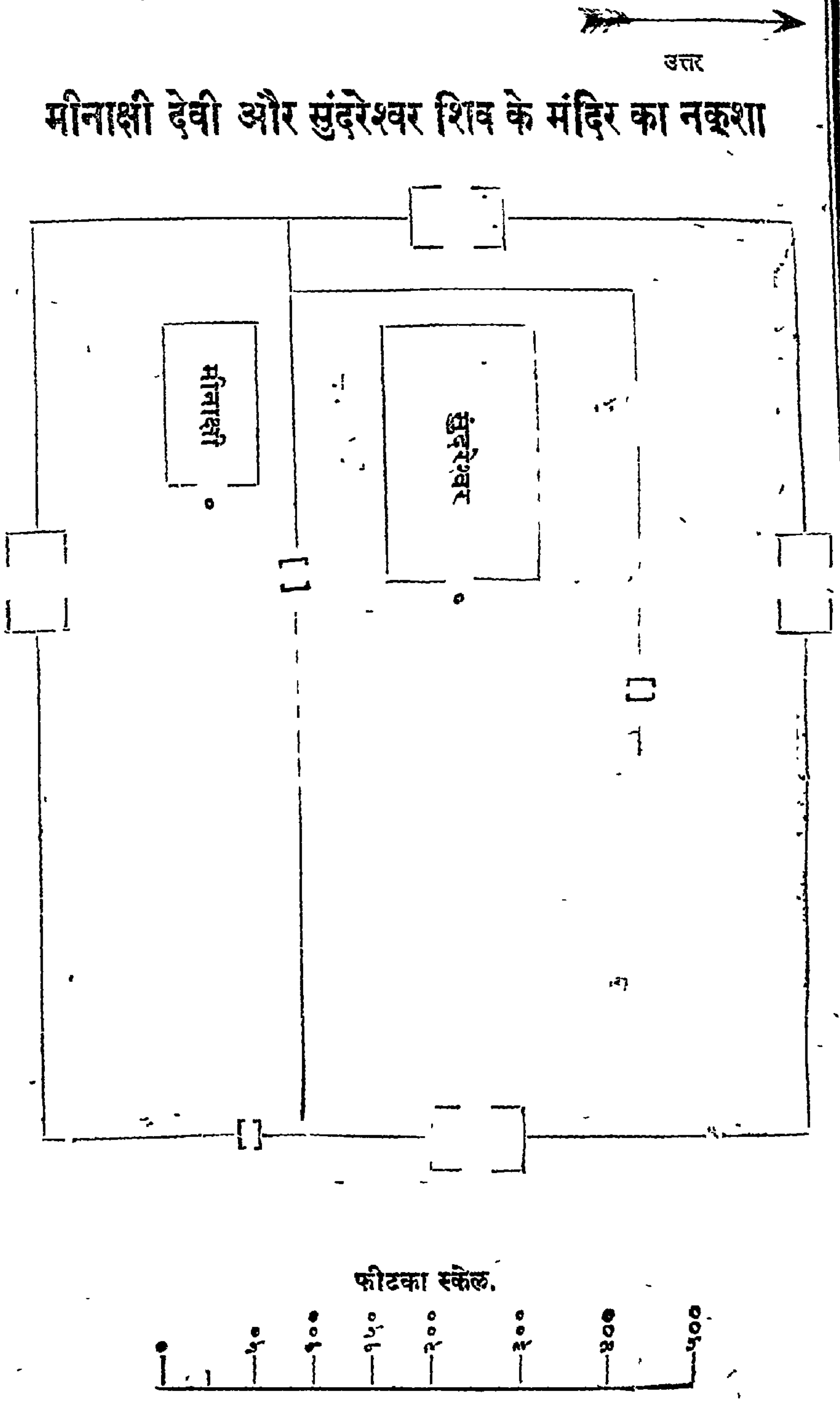

मधुरायां श्रीमीनाक्षीदेव्या मंदिरस्य दक्षिणदिग्द्वारगोपुरम्।

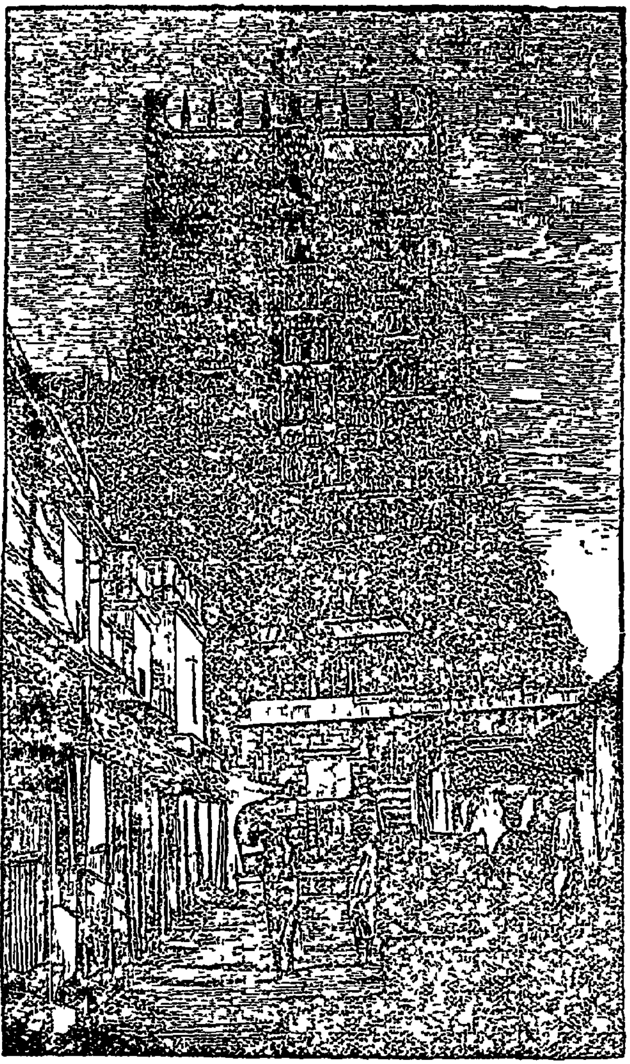

मन्दिरके २ भाग हैं,—दक्षिणके भागमें मीनाक्षी देवीका और उत्तरके भागमें सुन्दरेश्वर शिवका मन्दिर पत्थरका है, जिसमें संगतराशीका उत्तम काम बना हुआ है। यहां मन्दिरके नकशेके नम्बरोंसे मन्दिरके स्थान जान पड़ेंगे।

(नं० १) मीनाक्षीके मन्दिरके फाटकसे अष्टलक्ष्मी मण्डपम् होकर रास्ता गया है। दोनों तरफ छतको थांभती हुई लक्ष्मीकी ८ प्रतिमा हैं, इससे उसका नाम 'अष्टलक्ष्मी मण्डपम्' पडा है। वह ३० फीट लम्बा है। फाटकके रास्तेके दहिने सुब्रह्मण्य (स्कन्द) की और बायें गणेशजीकी मूर्ति है। फाटकका रास्ता 'मीनाक्षी नायक मण्डपम्' को गया है। उसमें रास्तेके दोनों बगलोंमे स्तम्भोंके कतार हैं। मण्डपोंमेंसे एक मण्डप १६६ फीट लम्बा है, जिसके अखीरके पास पीतल जड़ा हुआ बड़ा दरवाजा है, जहाँ रातमें बहुतसे दीप जलते हैं। एक अन्धियारा मण्डपम् छोटे गोपुरके नीचेसे प्रकाश वाले स्थानको गया है, जहां दोनों तरफ तीन तीन मूर्ति हैं। उसके पासके आंगनमें स्वर्णपुष्करणी नामक सुन्दर तालाब है, जिसमें उत्सव मूर्त्तियाँ बेड़ेमें बैठाकर घुमाई जाती हैं। वहाँ रानी मङ्गमलका बनवाया हुआ एक छोटा कमरा है, वह रानी सन् १७०६ में पर पुरुषके साथ कुव्यवहार करनेके कारण अपनी प्रजाओं द्वारा मारी गई। तालावके चारोंओर मेहराबदार मण्डपम् और पश्चिमोत्तर बगलपर घण्टाघर है। छतके नीचे रास्तेके दोनों बगलोंमें दिलेर सूरतोंके साथ १२ स्तम्भ हैं, जिनमेंसे ६ दक्षिणी सिंह हैं, उनके बीच बीचमें पांचों पाण्डवोंकी प्रतिमा है,—पहिले दहिने युधिष्ठिर और उसके सामने बायें अपने प्रसिद्ध धनुषके साथ अर्जुन; तब दहिने सहदेव और बायें नकुल, उसके बाद दहिनी ओर भीमसेन अपनी गदाके साथ देख पड़ते हैं। उसके सामने बायें देवीका स्थान और द्वारपाल हैं। उस घेरेके पश्चिम भागमें दक्षिण वाले बड़े गोपुरसे पश्चिमोत्तर मीनाक्षीका निज मन्दिर है। कई देवढ़ीके भीतर मीनाक्षीकी श्यामवर्ण सुन्दर मूर्त्ति पूर्व मुखसे खड़ी है। मन्दिरमें कई देवमूर्त्तियाँ हैं और प्रकाशके लिये सर्वदा दीप जलते है। मन्दिरके आगे सोनेका मुलम्मा किया हुआ एक बड़ा स्तम्भ है।

(नम्बर २) सोनहले स्तम्भसे उत्तर सुन्दरेश्वर शिवके मन्दिरके घेरेका छोटा गोपुर है। उस मन्दिरके बगलके मन्दिरमे देवताओं ओर ऋषियोंकी बहुतसी मूर्त्तियाँ हैं। उस मन्दिरके पासके कमरोंमे मीनाक्षी और सुन्दरेश्वरके बाहन रक्खे हुए है; उनमेंसे २ सुनहली पालकीका मूल्य दश दश हजार रुपया और २ चांदनीका मूल्य, जिनके बेश कीमती चोप है, बारह बारह हजार रुपया है। वहाँ चाँदीसे मढ़ा हुआ एक हंस और एक नन्दी बैल है। पूर्व वाले बड़े गोपुरसे लगभग ५० गज दूरपर सहस्र-स्तम्भोंका मण्डपम् है, जिसमेंके बहुतेरे स्तम्भ देखनेमें नही आते; क्योंकि कई जगह स्तम्भोंके बीचमें ईटे जोड़कर गृह बनाये गये है। उसकी संगतराशी बहुत उत्तम है। उस मण्डपम्को विश्वनाथ नायकका मन्त्री आर्यनायक मुठलीने बनवाया, जिसकी घोड़ेपर चढ़ी हुई प्रतिमा दरवाजेके बायें बनी है। उसके पीछेकी पंक्तिमें स्त्रियों और पुरुषोंकी चन्द दिलेर मूर्त्तियाँ बनी हुई हैं। पश्चिम वाले गोपुरके पूर्व सुन्दरेश्वर शिवका निज मन्दिर है। कई डेवढ़ीके भीतर उस मन्दिरके पश्चिम भागमें बड़े अर्घेके ऊपर सुन्दरेश्वर शिवलिङ्ग हैं, जिनके पास दिन रात बहुतसे दीप जलते है। मन्दिरमें कई अन्य देवता है। मन्दिरके द्वारपर एक बड़ा सुनहला स्तम्भ है।

बड़े मन्दिरसे पूर्व तिरुमलई नायकका बनवाया हुआ ३३३ फीट लम्बा और १०५ फीट चौड़ा एक उत्तम मण्डपम् है। उसके छतके नीचे ४ कत्तारोंमें भिन्न भिन्न तरहकी सङ्गतराशीके १२० स्तम्भ लगे हैं, जिनमेंसे मध्यके २ कत्तारोंमें दोनों तरफ पांच पांच स्तम्भोंमें नायक वंशके राजाओंकी मूर्त्तियाँ बनी हुई हैं, जिनमें तिरुमला नायककी मूर्त्तिके ऊपर

चान्दनी बनी हुई है। उसके पीछे दो सूरतें हैं बायेंकी सूरत तञ्जौरकी शाहजादी तिरुमलई नायककी स्त्री की है। दरवाजेके पास शिकार खेलने वालों और शिकारोंका झुण्ड है। कहा जाता है कि उसके बनानेमें १०००००० इस्टर्लिङ्ग खर्च पडा था। उसके बगलोंमे दीवारें हैं, उसके भीतर मनिहारी आदिकी दुकाने रहती हैं।

तिरुमलई नायकका महल—रेलवे स्टेशनसे १½ मील पश्चिम मदुराके तिरुमलई नायकका महल है। अब वह सरकारी आफिसोंके काममें आता है। उसका दरवाजा पूर्व बगल पर है। पूर्व बगलके प्रत्येक कोनेके पास एक एक नीचा टावर है। नेपियर फाटक होकर २५२ फीट लम्बा और १५१ फीट चौड़ा चौगानमें जाना होता है, जिसके चारों बगलोंपर दालान हैं। महलके पश्चिम बगलमें ६७ फीट चौड़ी दोहरी दालान और ऊँचा हाल है। उसके बाद एक बड़े गुम्बजके नीचे एक दूसरी इमारत मिलती है, जो तख्तका कमरा थी। उसका व्यास ६१ फीट और ऊँचाई ७३ फीट है। गुम्बजके चारोंओर बालाखाना है। तिरुमलई नायकके राज्यके समय उसमें स्त्रियाँ बैठकर राज्यके स्वागतोंको देखती थीं। बड़े गुम्बजके पश्चिम, उत्तर और दक्षिण एक एक गुम्बजदार कमरा है, जिनमेंसे दक्षिण वाला अच्छे प्रकारसे दुरुस्त किया गया है। उत्तरको जाते हुए उसके पश्चिम ५४ फीट ऊँचा एक कमरा मिलता है, जिसमें तिरुमलई नायकका विस्तर रहता था। सीढी घरके पासके दरवाजेसे मजिस्ट्रेटकी कचहरीमें जाना होता है। वह महलका सबसे उत्तम हिस्सा है और अच्छी तरहसे मरम्मत किया गया है।

वैगा नदीके पुलसे करीब १ मील दूर उस नदीके किनारेपर कलक्टरका मकान है, जिसको तिरुमलई नायकने जङ्गली जानवरोंकी लड़ाई देखनेके लिये बनवाया था।

तेप्पकुलम्—तेप्पकुलम्का अर्थ तामिल भाषामें बेड़ाका तालाब है। जिस तालावमें मन्दिरकी उत्सव मूर्तियाँ नावेंमे बैठाकर फिराई जाती है। उसको लोग तेप्पकुलम् कहते हैं। मदुराके रेलवे स्टेशनसे ३ मील पूर्व रामेश्वरके मार्गमें वैगा नदीके उत्तर १२०० गज लम्बा और इतनाही चौडा तेप्पकुलम् तालाव है। उसके चारों तरफ पत्थरके घाट; तथा सड़क, मध्यमें मोरव्वा टापूपर एक शिखरदार बड़ा मंदिर और प्रत्येक कोनेपर एक छोटा मंदिर है। टापूपर सुन्दर वाटिका लगी है। तालावमें सर्वदा पानी रहता है। प्रति वर्ष उत्सवके समय उस तालाबके किनारे एक लाख दीप जलाये जाते हैं। उसी समय मदुराके बड़े मंदिरकी उत्सव मूर्तियोंकी मंदिरसे ले जाकर तालावमें बेड़ेपर घुमाते हैं।

मदुरा जिला—इसके उत्तर कोयंबुतूर, तिरुचनापल्ली और तंजौर जिला; पूर्व और पूर्व-दक्षिण समुद्रकी खाडी, दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम तिरुनलवेली जिला और पश्चिम तिरुवांकूरका राज्य है। जिलेका सदर स्थान मदुरा कसबा है। जिलेके दक्षिण-पूर्वकी सीमापर पश्चिमी घाटका सिलसिला, जो वहाँ तिरुवांकूरकी पहाडी कहलाता है, तिरुवांकूरके राज्यसे मदुरा जिलेको जुदा करता है। मदुरा जिलाकी भूमि प्रायः समतल है; किन्तु जगह जगह छोटी पहाड़ियाँ हैं और जमीन दक्षिण-पूर्वको ढालू होती गई है। सबसे बड़ी पहाड़ीकी चोटी समुद्रके जलसे लगभग ८००० फीट ऊँची है। मदुरा कसबेके आस पास दिण्डीगल आदि ३ पहाडियाँ हैं। जिलेकी प्रधान नदी वैगा है. जो जिलेके मध्य होकर दक्षिण-पूर्वको बहती है। मैदानोंमें वृक्ष प्रायः नहीं हैं। पश्चिमकी पहाड़ियोंमें अब तक

हाथी, भालू, बाघ और तेंदुए मिलते हैं। जिलेके सब भागोंमें लोहाके ओर मिलते हैं। चन्द नदियोंके वालू धोकर सोना निकाला जाता है। मदुरा जिलेमें ६ तालुका और रामनाद तथा शिवगंगा २ जमीन्दारी हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मदुरा जिलेके ८४०१ वर्गमीलमें २१६८६८० मनुष्य थे; अर्थात् १९४२८२० हिन्दू; १४०९४८ मुसलमान, ८४९०० कृस्तान, ९ बौद्ध और जैन और ३ अन्य। इनमें १५९२१५३ शैव और ३३२६१६ वैष्णव थे। हिन्दुओंमें ४९८०१४ वेल्लाल (खेतिहर), ४७८५९५ बनियाँ (जाति-विशेष मजदूरी पेशे वाले), १४४२८३ इडैयन (भेड़िहर), ११८६५९ सैंवड़वन (मछुहा), ८६२६८ सानान (मदक), ७५९७१ कम्भाडन (लोहार), ५०२६१ कैक्कलर (बिननेवाले), ५००८३ सेटी (सौदागर), ४३५५५ ब्राह्मण, ३३६७५ अंबटन (नाई), ३३५०८ सतानी (दोगला), २८३०० बनान (धोबी), २५५४१ कुसवन (कुम्भार), ४१२३ छत्री और २३७६६६ अन्य मनुष्य थे, जिनका कोई खास पेशा नहीं था। कृस्तानोंमें १७६ यूरोपियन, ३७७ यूरेशियन ८४३४७ देशी कृस्तान थे। मदुरा जिलेमें तामिल भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मदुरा जिलेके कसबे मदुरामें ८७४२८, दिण्डीगलमें २०२०२, पलनीमें १९९४०, पेरियाकुलम्में १६३६३ रामनादमें १३६१९, किलकरायमें १२३९२, अरुपुकोटईमें १२६७३ और परमकुड़ीमें १०००१ मनुष्य थे। इनके अतिरिक्त देवीकोट, शिवगंगा और तिरुमङ्गलम् छोटे कसबे हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(सभा पर्व, ५१ वाँ अध्याय) चोलनाथ और पाण्ड्यनाथ राजा युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञके समय इन्द्रप्रस्थमें आये। वे लोग राजाको भेंट देनेके लिये सुवर्णके घड़ोंमें मलयगिरिसे सुगन्धयुक्त चन्दन रस; दर्दुर पर्वतसे चन्दन और अगरका ढेर; चमकीले मणि, रत्न तथा सुवर्णके तुल्य सुन्दर पतले चीर लाये थे। (बनपर्व, ८८ वाँ अध्याय) पाण्ड्य देशमें अगस्त्य तीर्थ और वरुण तीर्थ हैं, उसी देशमें ताम्रपर्णी नदी बहती है। (कर्णपर्व, २० वाँ अध्याय) पाण्ड्य देशके राजा मलयध्वज कुरुक्षेत्रके संग्राममें राजा युधिष्ठिरकी ओर लड़ते थे। वे कौरवोंकी असंख्य सेनाके विनाश करनेके पश्चात् अश्वत्थामाके हाथसे मारे गये।

वाल्मीकिरामायण—(किष्किन्धा काण्ड, ४१ वाँ सर्ग) सुग्रीवने श्रीजानकीजीको खोजनेके लिये अङ्गद, हनूमान, आदि वानरोंको दक्षिण-दिशामें भेजा और उनसे कहा कि तुम दक्षिणमें जाकर पांड्योंके नगरमें प्राकारका द्वार देखोगे जिसका सुवर्णमय किवाड़ मुक्ता-मणिसे खचित है, उसके पश्चात् तुम लोगोंको समुद्र मिलैगा, तब उसके पार जानेका उद्योग तुम लोगोंको करना चाहिये।

आदि ब्रह्मपुराण–(१३ वाँ अध्याय) चन्द्रवंशी राजा ययातिका पुत्र तुर्वसु, तुर्वसुका वाह्नि, वाह्निका गोभानु, गोभानुका त्रैसानु, त्रैसानुका करंधम और करंधमका पुत्र मरुत हुआ। राजा मरुतकी केवल सम्मता नामक एक कन्या थी। वह राजा संवर्तको दी गई। उस पुत्रीसे दुष्यन्त पुत्र जन्मा। इस भांति राजा ययातिके शापसे तुर्वसुका वंश पौरव वंशमें मिल गया। उसके पश्चात् दुष्यन्तका पुत्र कुरुत्थाम; कुरुत्थामका पुत्र अथाक्रीड और अथा-

क्रीडके ४ पुत्र हुए, अर्थात् पाण्ड्य, केरल, कोल और चोल, जिनके नामसे पाण्ड्य, केरल, कोल और चोल ये ४ देश विख्यात हुए हैं।

शिवभक्तविलास—(३० वॉ अध्याय) दक्षिण दिशाके मधुरा नामक नगरमें मीनाक्षी नाम्नी देवी और पाण्ड्य राजाओंसे पूजित परमेश्वर विराजमान है। मीन अर्थात् मछली-के समान सुन्दर नेत्र होनेके कारण देवीका नाम मीनाक्षी पड़ा है। वह मलयध्वजकी कन्या है। पाण्ड्य वंशके राजा लोग ताम्रपर्णी नदीसे उत्पन्न मोतियोंसे देवीकी नित्यही पूजा करते हैं।

मधुरामें मूर्त्तिनाथ नामक एक धनी वैश्य बड़ा शिवभक्त था। वह हालासनाथ शिवका पूजन किया करता था। अन्ध्र देशका जैन राजा मधुराके पाण्डय राजाको निकालकर वहांका राजा बन गया। उसने ब्राह्मण और देवताओंका पूजन बन्द करवा दिया। मूर्त्तिनाथके अतिरिक्त सब लोग जैन मतालवम्बी होगये। जब जैन राजाके निषेध करने परभी मूर्त्तिनाथने शिवकी पूजाका त्याग नहीं किया तब जैन राजाने ढिंढोरा फिरवाकर चन्दनका बिकना बन्द करदिया मूर्त्तिनाथ अपने गृहके सञ्चित चन्दनसे शिवकी पूजा करने लगा। जब घरका चन्दन चुक गया। तब उसने सुवर्णपुष्करिणीमें स्नान करके अपना हाथ काट डालनेका उद्योग किया। उस समय आकाशवाणी हुई कि हे मूर्त्तिनाथ! तुम ऐसा काम मत करो, जैन राजा शत्रुके हाथसे मारा जावेगा, तुम पाण्डय देशके राजा होकर वैदिक धर्म स्थापित करोगे। मूर्त्तिनाथ हालासनाथके पास चला गया। गजेश्वर राजाने मधुरापर आक्रमण करके जैन राजा अन्ध्रनाथको मारडाला और मूर्त्तिनाथको मधुराके सिंहासनपर बैठा दिया। जैन लोग मारे गये और वैदिक धर्म स्थापित हुआ। एक सौ वर्षके पश्चात् मूर्त्तिनाथकी मुक्ति हुई।

(४८ वॉ अध्याय) द्रोणीपुरके हरदत्त ब्राह्मणने मधुरामें जाकर वहॉके जैन राजाके मन्त्रीसे पूछा कि मीनाक्षी और सुन्दरेश्वर, जिसको हलासनाथ कहते हैं, कितनी दूर हैं। मन्त्रीने उनको दिखला दिया। हरदत्तने मणिके कुम्भोंसे शोभित गोपुरको देखकर बेगवती नदीमें स्नान करके शिव और पार्वतीका पूजन किया और मलयध्वज पाण्ड्यकी कन्या मीनाक्षीदेवी तथा उनके पति हलासनाथकी प्रदक्षिणा करके अपने स्थानपर चला गया। हरदत्तके तेजसे वहॉके जैन राजाको ज्वर लग गया। मन्त्री लोग हरदत्तको राजमहलमें लेगये। उसने भस्म डालकर राजाको आरोग्य करदिया। तब जैन राजाने जैनोको निकाल कर शैव मत ग्रहण किया।

इतिहास–मदुरा हिन्दुस्तानके बहुत पुराने शहरोंमेसे है। वह पुराने समयसे हिन्दुस्तानके दक्षिणीय भागकी राजधानी था और वहॉके पण्डित प्रसिद्ध होते थे। भारतवर्षके राज्योंमे कोई राज्य ऐसा नहीं है, जिसका राजवंश इतनी बड़ी मुद्दत तक बराबर कायम रहा हो। सन् ईस्वीके आरम्भसे चार पॉच सौ वर्ष पहिले पाण्डय वंशके राजाका राज्य विद्यमान था। कई एक शिलालेखो और तांबेके दानपत्रोंपर, जो अबतक विद्यमान हैं, पाण्डय वंशके कई राजाओंके नाम देख पडते है। मधुरस्थलपुराण नामक एक संस्कृतकी

पुस्तकमें पाण्डय राजाओंके चन्द ऐतिहासिक विषय हैं। उनमें लिखे हुए उसवंशके अंतिम राजा सुन्दर पाण्डयने जैनोंका नाश किया और अपने पड़ोसके चोला राज्यको जीता, किन्तु ११ वीं सदीके अन्तमें उत्तरसे आक्रमण करने वालेने, जो कदाचित् मुसलमान था, सुन्दर पाण्डयको परास्त किया। १४ वीं सदीके पहिले भागमें दिल्लीके बादशाहके सेनापति मलिक काफूरने मदुरापर अधिकार किया। मुसलमानोंने मदुरा शहरको लूटा और बड़े मन्दिरके बाहरकी दीवारको, जिसमें १४ बुर्ज थे, और बाहरकी इमारतोंको गिरवा दिया; किन्तु भीतरके दोनों मन्दिर बच गये। उसके पश्चात् हिन्दुओंने मुसलमानोंको निकाल बाहर किया। बाहर वाले वर्तमान बड़े गोपुर फिर बनवाये गये। ऐसा प्रसिद्ध है कि पांड्य वंशमें सिलसिलेसे ११६ राजा हुए थे।

सोलहवीं सदीके मध्यमें विजयानगरके राजाने विश्वनाथ नायकको हुकूमत करनेके लिये मदुरामें भेजा। उसके साथ प्रसिद्ध जनरल आर्य नायक मुठली गया। सन् १५५९ में मदुरा जिला विजयानगरके राज्यका एक भाग बना। विश्वनाथ नायकने मदुराके नायक वंशको नियत किया। सन् १५७२ में विश्वनाथका देहान्त हुआ। उसका जीता हुआ राज्य उसके संतानोंके अधिकारमें चला आया। उसके वंशमें सबसे अधिक प्रतापी तिरुमलई नायक हुआ, जिसका राज्य सन् १६२३ से १६५९ तक था। उसने बहुतेरी इमारतोंसे मदुरा शहरको संवारा। उसका महल अब तक विद्यमान है। उसने अपने राज्यको तिरुवांकूर, कोयम्बुतूर, सेलम, तिरुचनापल्ली, तिरुनलवेली जिलोंपर फैलाया। उसके पुरुषे नाम मात्र विजयानगर राज्यके अधिकारमें थे; परन्तु वह स्वाधीन बन गया, इस लिये बीजापुरके मुसलमान बादशाहने जो विजयानगरके राज्यको अपने अधिकारमें लाया था, मदुरापर आक्रमण किया। तिरुमलई नायकने कर देनेको स्वीकार किया। तिरुमलई नायककी मृत्यु होनेपर मदुरा राज्यके कई एक मालिक हुए। सन् १७४० में कर्नाटकके चन्दासाहबने मदुराको अपने अधिकारमें कर लिया। नायक वंशके राज्यका अन्त होगया। उसके पीछे २० वर्ष तक महाराष्ट्र और मुसलमान लोग मदुरापर आक्रमण करते रहे। सन् १७६३ में कर्नाटकके नव्वाब वालाजाहके लिये अङ्गरेजी अफसर अमानतदार होकर मदुरा जिलेके अधिकारी हुए। सन् १७९० में अङ्गरेजोंने मैसूरके टीपूसे दिण्डीगल तालुक ले लिया। सन् १८०१ में कर्नाटकके नव्वाबने अपना स्वत्त्व ईष्ट इण्डियन कम्पनीको देदिया। सन् १८६५ में मदुरा कसबेमें म्युनिसिपल्टी कायम हुई।

मदुराके मीनाक्षी और सुन्दरेश्वरके वर्तमान मंदिरोंको लगभग सन् १५६० में विश्वनाथ नायकने; सहस्र स्तम्भ मण्डपम्को विश्वनाथनायकके मंत्री आर्यनायक मुठलीने; मीनाक्षी नायक नामके मण्डपको तिरुमलई नायकसे पहिलेके राजाके दीवान मीनाक्षी नायकने; बड़े मन्दिरके अन्य अनेक सुन्दर हिस्सोंको और बड़े मन्दिरसे पूर्व वाले बड़े मण्डपको १७ वी सदीमें तिरुमलई नायकने बनवाया। तेप्पकुलम् सरोवर भी तिरुमलई नायकके राज्यके समय बना।

चौदहवां अध्याय।

(मद्रास हातेमें) रामनाद, रामेश्वर, देवीपत्तन और दर्भशयन।

रामनाद।

. रामेश्वरके यात्री मदुरामे रेलगाड़ीसे उतरकर रामेश्वर जाते है। मदुरासे ९० मील दक्षिण-पूर्व समुद्रके किनारेके हरवोलाकी खाड़ी तक सडक है। सड़कके बगलमें मीलके पत्थर लगे हैं। नित्य सैकड़ो यात्री पैदल और बैलगाडीपर मदुरासे रामेश्वरके लिये प्रस्थान करते हैं। हरवोलाकी खाडी तकका बैलगाड़ीका भाड़ा सात आठ रुपया लगता है। रामनादपुर तक ६७ मील अच्छी सड़क है, किन्तु उससे आगे बालूदार मार्ग है, जिसमें कई यात्रियोंकी गाड़ी उलट जाती हैं। रामनादपुर तक बैलगाड़ी और घोड़े गाड़ीकी डाक जाती है। कोई कोई यात्री डाकगाड़ीमें जाते है, किन्तु घोड़े गाड़ी वाले असवाव नहीं लादते हैं। नाव द्वारा खाड़ी पार होकर पांबनसे ७ मील पूर्व सड़कद्वारा रामेश्वर पहुँचना होता है। (कुछ लोग नागपट्टनमें रेलगाडीसे उतर आगबोटपर चढ़कर पांबनमें उतरते हैं।

मदुरासे रामेश्वरका फासिला इस भांति है,—

मील—मोकाम।	मील—मोकाम।
२ तेप्पकुलम्।	४४ दिवानीकचहरी।
२¾ छोटीबस्ती।	४४½ परमगुड़ी।
७½ छोटीबस्ती।	५७¾ पूलुरक्षेत्र।
१२ त्रिभुवन चट्टी।	६७ रामनादपुर।
१८½ बड़ी बस्ती और चट्टी।	६८ धर्मशाला।
२२¾ भूतनन्दन चट्टी।	८१ ऊँचीपल्ली।
२९ बस्ती और मन्दिर।	९० हरबोलाकी खाड़ी।
३९½ मानामदुरा।	९३ पांबन।
३८ झुदुकोटा वस्ती।	१०० रामेश्वरपुरी।

त्रिभुवनचट्टीपर धर्मशाला, १८॥ मीलके पासकी बड़ी चट्टीपर छोटी धर्मशाला, भूतनन्दन चट्टीपर धर्मशाला, २९ मीलके पास वैगा नदीके पास एक गिरजा; माना मदुरामें धर्मशाला, झुदुकोटामें धर्मशाला, ४१¾ मीलपर नदीका बालू, परमगुड़ी बड़ी वस्तीमें धर्मशाला, पुलुर क्षेत्रमें धर्मशाला, रामनादपुरमें राजा और धर्मशाला, ऊँचीपल्लीमें धर्मशाला और पांबनमें कचहरी तथा धर्मशाला है। परमगुड़ी चट्टीसे देवीपत्तन तीर्थका मार्ग गया है। वहाँसे लगभग २० मील दक्षिण कुछ पूर्व समुद्रके पास देवीपत्तन है। दश बारह घण्टेमें बैलगाड़ी वहाँ पहुँच जाती है।

रामेश्वरके मार्गमें मदुरा कसबेसे ६७ मील दक्षिण-पूर्व (९ अंश, २२ कला, १६ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ५२ कला, ९ विकला पूर्व देशान्तरमें) मदरास हातेके मदुरा जिलेमें वैगा नदीके दहिने सेतुपति राजाओंकी राजधानी रामनाद कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय रामनादमें १३६१९ मनुष्य थे, अर्थात् ११०६८ हिन्दू, १९९६ मुसलमान और ५५५ क्रस्तान।

रामनाद कसबेमें राजाका महल, १ मिशन, ३ गिरजे और कई धर्मशालायें हैं। किलेकी जगहके भीतर खास कर मारवार और वेल्लाल जातिके लोग, जो महल सम्बन्धी काम करते हैं और बाहर चेंटी तथा लवाई जातिके लोग बसे है। कसबेसे १ मील दूर रामेश्वरके मार्गहीपर राजाकी एक धर्मशालामें सदावर्त जारी है।

राजाकी जमीदारी—इसके उत्तर शिवगंगाकी जमीन्दारी और तिरुमङ्गलम् तालुक पूर्व तञ्जौर जिला; दक्षिण मनारकी खाड़ी और पश्चिम तिरुनलवेली जिला है। देश प्रायः समतल है। राजाकी जमीन्दारीमें ताड़ और खजूरके बहुत वृक्ष और लगभग २००० सरोवर हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय राजाकी जमीदारीका क्षेत्रफल लगभग २११२ वर्ग मील था। उस समय उसमें ४३२५४२ मनुष्य थे; अर्थात् ३४४१८८ हिन्दू, ६०४३६ मुसलमान, २७९१० क्रस्तान और ८ अन्य। राज्यसे ७४१००० रुपया मालगुजारी आती है; जिसमेंसे ३१४००० रुपया सरकारको राजकर दिया जाता है।

इतिहास—रामनादका राजवंश मारवार जातिका है। वहाँके राजा सेतुपति करके प्रसिद्ध है। उनके पूर्वज लोग पहिले रामनादसे १० मील पश्चिमोत्तर मदुराकी सड़कके पास एक छोटे गाँवमें रहते थे। १८ वीं सदीके आरम्भमें रामनाद राजधानी बना। वहाँ किला बनाया गया, जो अब नष्ट होगया है। किलेकी चारों ओर खाई थी, जो अब भर गई है। किलेके मध्य भागमें राजाका महल है। १८ वीं सदीके मध्य भागमें झगड़ेके कारण देश उजाड़ होगया। सन् १७२९ में राज्यके ५ भागोंमेंसे २ भाग बागी प्रजाको दे दिया गया, जिनके वंशधर शिवगंगाके राजा है। सन् १७७२ में अङ्गरेजी अफसरने रामनादको ले लिया और राजा अङ्गरेजोंके अधीन हुए। सन् १७९५ में अङ्गरेज महाराजने बगावत करनेके कारण रामनादके राजाको गद्दीसे उतार कर मदरास शहरमें कैद रक्खा। सन् १८०३ में सरकारने उस राजाकी बड़ी बहिनको रामनादकी जमीन्दारी दे दी। सन् १८८९ में रामनादके वर्तमान राजा बालिग होनेपर राज्यके अधिकारी हुए।

रामेश्वर।

रामनाद कसबसे २३ मील और मदुरा कसबेसे ९० मील दक्षिण-पूर्व समुद्रके पास हरबोलाकी खाड़ी है, जिसको वेताल मण्डपम् कहते हैं। उससे पूर्व (९ अंश १७कला, १० विकला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश, ३१ कला, ५५ विकला पूर्व देशान्तरमें) मदरास हातेके मदुरा जिलेके रामनादकी जमीन्दारीके अन्तर्गत मनारकी खाड़ीमें रामेश्वर नामक टापू है, जिसका नाम सेतुबन्ध खण्डमें गन्धमादन पर्वत लिखा हुआ है। टापू उत्तरसे दक्षिणको लगभग ११ मील लम्बा और पूर्वसे पश्चिमको ७ मील चौड़ा है। उस बालूदार टापूमें बबूल ताड़ और नारियलके अनेक बाग तथा बहुतसे वृक्ष लगे हुए हैं। टापूके निवासी, जिनमें

खास करके ब्राह्मण तथा उनके नोकर हैं, रामेश्वरके मन्दिरकी आमदनीसे अपना निर्वाह करते हैं। टापूके उत्तरीय भागके पश्चिमके किनारेपर पांबन सबडिवीजन और पूर्वके किनारेकी ऊँची भूमिपर रामेश्वरपुरी है, जिसके बड़े मन्दिरसे दक्षिण ओर ३ मील घेरेकी मीठे पानीकी झील है।

हरबोलाकी खाड़ीसे ३ मील पूर्वोत्तर रामेश्वरके टापूमे पांबन वस्ती है, जिसमे सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ४८३३ मनुष्य थे। वहाँके निवासी खास करके माझी, डुबुआ और अन्य सामुद्रिक पेशे वाले हैं। यात्री लोग खाड़ीमें नावोंमें बैठकर पांबन उतरते हैं। प्रत्येक आदमीको नावका भाडा चार आना लगता है। समुद्रके नावोंके पाल, त्रिभुजाकार होते हैं। पवन किसी तरफ चलता हो पालके सहारेसे नाव सब दिशाओंमें जाती हैं। पांबनमे लगभग १०० फीट ऊँचा लाइटहाउस,सरकारी कचहरी, धर्मशाला और (धर्मशालेके पास) भैरवजीका एक छोटा मन्दिर है। वहाँ समुद्रके तीरपर भांति भांतिकी सामुद्रिक वस्तु दखनेमें आती हैं। पांबनमे गल्लेकी तिजारत होती है और वर्षमे ६ मास सिलोनकी गवर्नमेण्टकी तरफसे कुली ले जानेके लिये एमीग्रेशन डेपोट कायम रहता है। पांबनके आमने सामने मनारकी खाड़ीके पश्चिम किनारेपर हनूमानजीका मन्दिर है। पांबनके पाससे मन्दिरके निकट तक खाड़ीके आर पार जलके ऊपर बाँधके समान पत्थरकी एक लकीर है। पानीमे थोड़ी दूरतक लकीर नहीं है, उसी मार्गसे समुद्रकी नाव और आगबोट जाते आते हैं। सिलोन अर्थात् लङ्कासे आनेवाले तथा लंका जानेवाले आगबोट पांबनसे मुसाफिरोंको चढ़ाते उतारते है। पांबनसे लङ्का जानेका महसूल प्रति आदमीका दो तीन रुपया लगता है। रामेश्वरके यात्रियोंमेंसे कोई कोई पांबनके पास आगबोटमें चढ़कर उससे पूर्वोत्तर नागपट्टनम्में उतरकर रेलगाड़ीमें चढते हैं और कोई कोई नागपट्टनम्में रेलगाडीसे उतरकर आगबोट द्वारा पाबन जाते हैं। प्रति मनुष्यका महसूल तीन रुपया लगता है। आगबोटपर चढ़ाने अथवा उससे उतारनेवाली नावका भाडा अलग है। आगबोटमें चढने तथा उससे उतरनेके समय अथवा उसके हिलनेसे क्लेश होता है, इस लिये रामेश्वरके प्रायः सब यात्री मदुरा होकर पांबन जाते हैं। कोई कोई यात्री रामेश्वरसे लौटनेपर पांबनसे लगभग ८० मील दक्षिण-पश्चिम नाव द्वारा तुतिकुडीमें जाकर रेलगाड़ीमें चढते हैं। पांबनसे तुतिकुडीका नाव भाड़ा प्रत्येक आदमीका लगभग एक रुपया लगता है। मार्गमें देवीपत्तन और दर्भशयन तीर्थ मिलता है।

पांबनसे ७ मील पूर्व रामेश्वर टापूके पूर्व किनारेपर भारतवर्षके प्रसिद्ध ४ धामोंमेंसे दक्षिणका धाम रामेश्वर नामक वस्ती है। पांबनसे वहाँ तक तांगे और बैलगाड़ीकी सड़क बनी हुई है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय रामेश्वर वस्तीमें ४१६ मकाने और ६११९ मनुष्य थे, अर्थात् ५४६७ हिन्दू; ४१६ कृस्तान और २३६ मुसलमान।

बस्तीके बाजारमें बनियों और हलवाइयोंकी दुकानोंपर खाने पीनेकी सब वस्तु मिलती हैं, पर महंगी। बाजारमें फल और तरकारी सर्वदा रहती है। वहाँके ६ पैसेका एक आना होता है। वहाँ रामनादके राजाका एक मकान, कई धर्मशालायें और सदावर्त हैं। मैं घुरूवाले राजा शिवबक्श बागलाकी धर्मशालामें टिका था। वहाँ नारियलके पत्तल और जल भरनेके लिये ताड़के डोल दर्शनीय होते हैं, जो वीनकरके अथवा सी करके बनाये जाते हैं।

नारियल और ताड़के पत्तोंसे मकानभी छाये जाते है । रामेश्वरमें यात्री सर्वदा जाते हैं, इस कारणसे वहाँके पण्डे तथा दुकानदार लोग सबकी भाषा समझते हैं । वहाँके पण्डाओंने यात्रियोंको लानेके लिये उत्तरीय भारतके बहुत लोगोंको गुमास्ता तथा नौकर रक्खा है । वे लोग सैकड़ों कोसोंसे यात्रियोंको लेजाते हैं ।

लक्ष्मण तीर्थ—रामेश्वरके मन्दिरसे पौन मील पश्चिम पांबनकी सड़कके दक्षिण बगल लक्ष्मण तीर्थमें लक्ष्मण कुण्ड नामक एक उत्तम सरोवर है, जिसके चारों बगलोंपर पानीतक पत्थरकी सीढ़ियां और सीढ़ियोंके शिरेपर दीवार है । सरोवरके उत्तर बगलपर एक मण्डप और ईशान कोणके पास एक मन्दिरमें लक्ष्मणेश्वर शिव हैं । रामेश्वरके यात्री प्रथम लक्ष्मणकुण्डमें स्नान करके लक्ष्मणेश्वरको तीर्थ भेंट देते हैं । जिसका पिता मरगया है, वह वहां मुण्डन कराकर पिण्डदान करता है । पितरजीवी पुरुष मुण्डन करवाकर स्नान दर्शन करते हैं ।

रामतीर्थ—लक्ष्मण कुण्डसे पूर्व उसी सड़कके दक्षिण रामतीर्थमें रामकुण्ड नामक पक्का सरोवर है, उसमें यात्री लोग स्नान वा मार्जन कर लेते है ।

रामझरोखा—रामेश्वरके मन्दिरसे १ मील उत्तर रामझरोखा एक स्थान है । यात्रीगण बालूके मार्गसे पैदलही वहाँ जाते है । वहाँ एक टीलेपर दो मञ्जिला छोटा दालान है, जिसमें रामचन्द्रजीके चरणचिह्नकी पूजा होती है । वहाँसे धनुष तीर्थ और तीन तरफ समुद्र देख पड़ते हैं । टीलेके उत्तर एक छोटे कुण्डमे थोड़ा जल रहता है ।

सुग्रीवतीर्थ—रामेश्वरके मन्दिर और रामझरोखेके बीचमें सुग्रीवकुण्ड नामक सरोवर है, जिसके किनारेपर एक छोटे मन्दिरमें सुग्रीवकी छोटी मूर्त्ति है । सरोवरमें थोड़ा पानी है । मन्दिरमें कोई रहता नहीं ।

ब्रह्मकुण्ड—रामेश्वरपुरीकी परिक्रमा ५ मीलकी है । उस परिक्रमामें हनूमानकुण्ड और उसके पश्चात् समुद्रकी रेतीमें ब्रह्मकुण्ड मिलता है । वहाँ स्वाभाविक विभूति (भस्म) होती है, जिसको यात्री लोग अपने घर लेजाते है । ब्रह्मकुण्डके पास महिषमर्दिनी देवीका मन्दिर है । विजया दशमीके दिन गणेश, रामेश्वर और स्कन्दकी धातुमयी उत्सव मूर्त्तियां रामेश्वरके मन्दिरसे विमानोंमें बैठाकर ब्रह्मकुण्डपर जाती हैं । वहाँ शमी वृक्षकी पूजा होती है ।

सीताकोटि—रामेश्वरपुरीसे चार पॉच मील दूर समुद्रके किनारेपर सीताकोटि नामक तीर्थ है । वहाँके कूपका जल बहुत मीठा है ।

धनुष्कोटि तीर्थ—यह स्थान रामेश्वरपुरीसे करीब १२ मील दक्षिण धनुष तीर्थ करके प्रसिद्ध है । तीन चार रुपयेमें आती जाती दोनों तरफके लिये बैलगाड़ी किराया होती है । अनेक यात्री रामेश्वरपुरीसे समुद्रकी नाव द्वारा धनुष तीर्थ जाते हैं । खुश्की रास्तेसे रामेश्वर पुरीसे ७ मील दक्षिण जानेपर एक छोटी धर्मशाला मिलती है; जिससे २ मील आगे एक सेठकी बड़ी धर्मशाला है, जहां सदावर्त लगा है और बनियोंकी दूकानें हैं । उससे ३ मील आगे धनुष तीर्थ है । वहाँ जमीनकी नोक पानीके भीतर चली गई है । उसके एक बगलके समुद्रको महोदधि और दूसरे बगलके समुद्रको रत्नाकर लोग कहते हैं । बीचमें बालूका मैदान है । यात्रीगण समुद्रमें स्नान करके अपने पण्डेके सुनहरे छोटे धनुषको जो वह अपने पास लेजाते हैं, पूजन करके सेतुकी प्रार्थना करते है । ग्रहण आदि पर्वोंमें वहाँ स्नानका मेला होता है ।

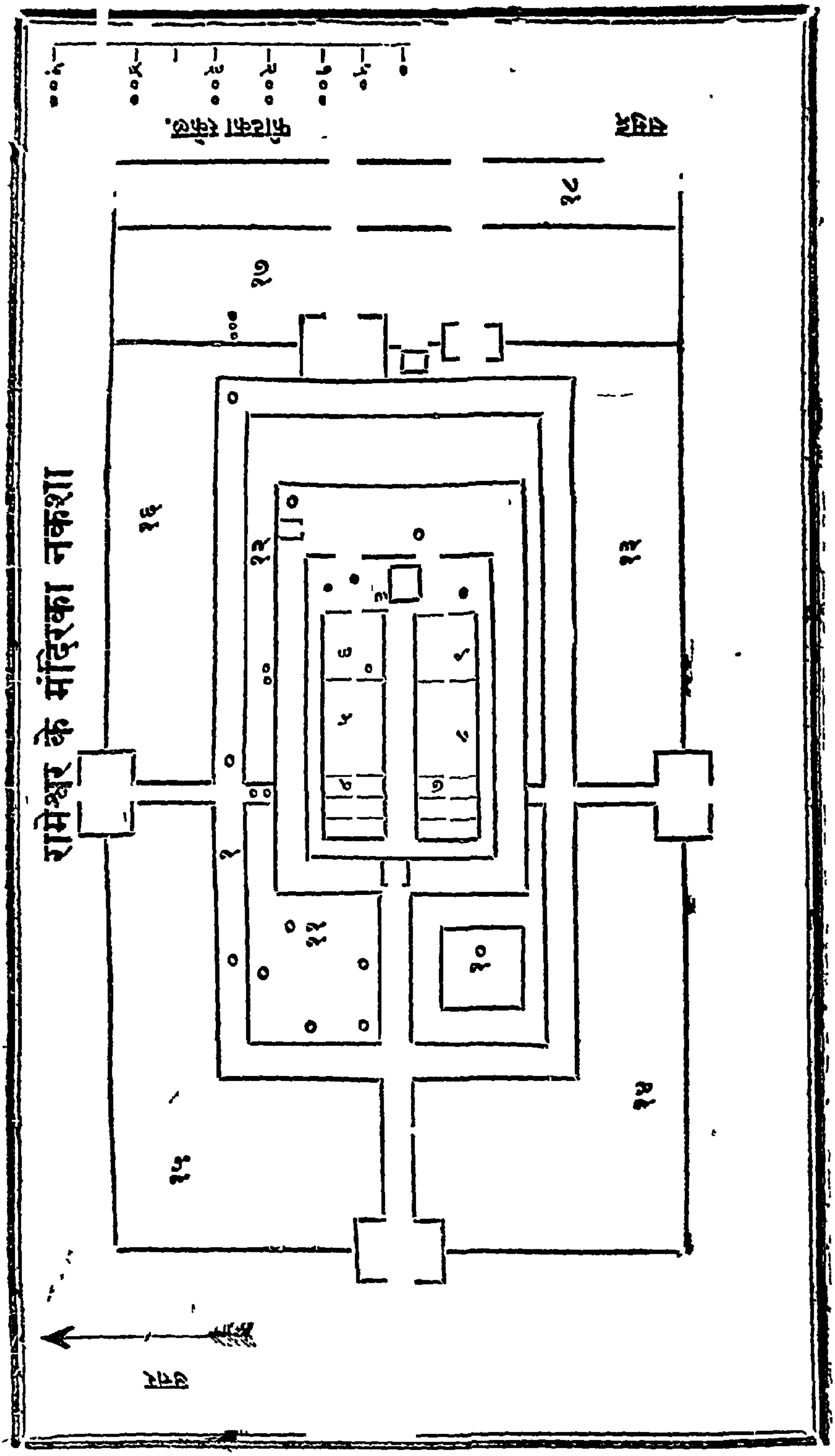
रामेश्वर के मंदिरका नकशा

रामेश्वरका मन्दिर–रामेश्वर वस्तीके पूर्व समुद्रके किनारेपर लगभग ९०० फीट लम्बा और ६०० फीट चौड़ा अर्थात् २० बीघे भूमिपर रामेश्वरका पत्थरका मन्दिर है। मन्दिरके चारोओर २२ फीट ऊँची दीवार है, जिसमें तीन ओर एक एक और पूर्व ओर २ गोपुर हैं, जिनमेंसे केवल पश्चिमवाला सात मञ्जिला गोपुर, जो लगभग १०० फीट ऊँचा है, तैयार हुआ है। उत्तर और दक्षिण वाला गोपुर, जो तैयार नहीं है, दीवारसे थोड़ेही ऊँचा है। गोपुरों और भीतरकी दीवारोंमें नकाशीका विचित्र काम और बहुतसी मूर्त्तियाँ बनी हुई हैं। पश्चिमवाले गोपुरके फाटकके भीतर रामेश्वरजीके चित्रपट और रुद्राक्षकी माला बिकती है। मन्दिरके भीतरकी पाटी हुई सड़कें, जो लगभग ४००० फीट लंबी और २० फीटसे ३० फीट तक चौड़ी है, दर्शकोंके मनको चकित करती हैं और मन्दिरके विभवको जनाती है। जमीनसे ३० फीट ऊपर सड़कोंकी छत हैं। दरवाजेके रास्ते और छतोंमें ४० फीट लम्बे पत्थर लगे ह। रात्रिमें सड़कोंकी छतोंमें सैकड़ों लालटेन बरती हैं। नीच लिखे हुए नम्बरोंसे मन्दिरका नकशा देखिये।

नम्बर १—यह मन्दिरके घेरेके भीतर प्रधान स्थानों और नम्बर २ की सडकको घेरती हुई मन्दिरकी प्रधान सड़क है। पश्चिम; उत्तर और दक्षिणके गोपुरोंसे एक एक सड़क उस प्रधान सड़कको काटती हुई भीतरको गई है। नम्बर १ की सड़कके दोनों तरफ ४ फीटकी ऊँचाई पर दोहरी दालान हैं, जिनमें बड़े बड़े खम्भे लगे हुए हैं। उनमें मनुष्यों और सिंह आदि जानवरोंकी बड़ी बडी मूर्त्तियाँ सुन्दर रीतिसे बनी हुई है। द्वारसे भीतर एक जगह दहिनेके खम्भोंपर राजा सेतुपति और उनके परिवारके कई आदमियोंके चित्र खोदे हुए है। उत्सवके समय जब रामेश्वरजीकी प्रतिनिधि मूर्त्ति मन्दिरकी परिक्रमा करती है तब वह इस स्थानपर ठहरती है। उस समय राजाकी ओरसे उनकी आरती उतारी जाती है और माला तथा ताम्बूल आदि वहाँ राजाके चित्रको प्रसाद मिलता है। उत्तरकी सड़कमें पश्चिम ओर ब्रह्महत्याविमोचन नामक कूप, मध्यमें गंगातीर्थ और यमुनातीर्थ २ कूप और इनसे पूर्व गयातीर्थ एक कूप है। सड़कके पूर्व छोरपर दक्षिण मुखके मन्दिरमें स्कन्द आदिकी धातुमयी उत्सव मूर्त्तियाँ रहती है। इनके अतिरिक्त इस नम्बरकी सडकमें कई देव मन्दिरोंके द्वार है। इस सड़कसे रामेश्वर और पार्वतीके निज मन्दिरोंकी तीसरी परिक्रमा होती है।

नम्बर २—यह सड़क रामेश्वर और पार्वतीके मन्दिरोंकी दूसरी परिक्रमाकी जगह है। सड़कके दोनों बगलोंमे खम्भाओंकी कतार और ऊपर छत है। पश्चिमके गोपुरकी सड़कसे प्रवेश करनेपर सामने छोटे मन्दिरमें गणेशजीकी विशाल मूर्त्तिका दर्शन होता है। ईशान कोणपर छोटे मन्दिरमें शिव और पार्वतीकी धातुमयी उत्सव मूर्त्तियाँ हैं, जिसके पूर्व शंखतीर्थ एक कूप है। पूर्वकी सड़कपर चक्रतीर्थ नामक कूप है।

नम्बर ३—यह रामेश्वर और पार्वतीके मन्दिरोंकी पहिली परिक्रमा है। पूर्व तरफ रामेश्वरजीके निज मन्दिरके सामने सोनेका मुलम्मा किया हुआ बड़ा स्तम्भ है, जिसके पास १३ फीट ऊँचा ८ फीट लम्बा और ९ फीट चौड़ा बड़ा नन्दी (बैल) बैठा है, जो भारतके सब नन्दियोंसे बड़ा होगा। नन्दीके सामने रत्नाकर और महोदधि दोनो समुद्रोंकी और इरबोलाकी खाड़ीकी प्रतिमा हैं। नन्दीके बाम पार्श्वके मण्डपमें बाल हनुमानकी मूर्त्ति है।

नन्दीसे उत्तर कोटितीर्थ नामक कूप और दक्षिण शिवतीर्थ नामक छोटा तालाब है, जिसके दक्षिण अमृततीर्थ नामक कूप है।

नम्बर ४-श्रीरामेश्वरजीका निज मन्दिर १२० फीट ऊंचा है। तीन डेवढ़ीके भीतर शिवके प्रख्यात बारह ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे एक रामेश्वर शिवलिङ्ग हैं। उनके ऊपर शेषजी अपनी फणासे छाया करते हैं। मन्दिरमें सर्व साधारण यात्री नहीं जा सकता, तथापि जगमोहनसे अरघा समेत श्रीरामेश्वरजीका अत्युत्तम रीतिसे दर्शन होता है। रात्रिमें पचासों दीप जलते हैं और आरती होती रहती है, जिसके प्रकाशसे रामेश्वरजी देख पड़ते हैं। फूल माला और बिल्वपत्रकी माला मन्दिरके अर्चक लोग यात्रीकी तरफसे रामेश्वरपर चढ़ा देते हैं। १॥=) देनेपर गङ्गाजल चढ़ानेका टिकट मिलता है और ।=) आना ऊपरसे लगता है। गङ्गाजल मन्दिरके अर्चकद्वारा चढ़ाया जाता है। जिसके पास गङ्गाजल नहीं रहता वह उसको अपने पण्डेसे खरीद लेता है। वहांकी रीतीके अनुसार किसी यात्रीको मन्दिरमें जाकर निज हाथसे रामेश्वरपर जल चढ़ानेका अधिकार नहीं है, परन्तु कोई कोई धनी लोग वहांके अर्चक और पण्डोंको प्रसन्न करके रामेश्वरपर निज हाथसे गंगाजल चढ़ाते हैं।

नम्बर ५-रामेश्वरका बड़ा जगमोहन है, जिसमें खडे होकर यात्रीगण रामेश्वरजीका दर्शन करते हैं। जगमोहनमें कई देव मूर्त्तियां हैं।

जगमोहनसे उत्तर काशीविश्वेश्वरका मन्दिर है। वहां अन्नपूर्णाजीकी भी मूर्ति है और भोगरागका अच्छा प्रबंध है।

काशीविश्वेश्वर शिव लिङ्गको हनूमानने स्थापित किया। आगे स्कन्द पुराणके सेतुबन्ध खण्डके ४४ वे से ४६ वें अध्याय तक देखो। वहां लिखा है कि हनुमान कैलाशसे शिवलिंग लाया और रामेश्वरके उत्तर पार्श्वमें स्थापित किया। रामचन्द्रने कहा कि यह लिंग हनुमानके नामसे प्रसिद्ध होगा। रामचन्द्रकी आज्ञा है कि हनुमानके लाये हुए लिंग (काशी-विश्वेश्वर) का दर्शन करके तब रामेश्वरका दर्शन करना चाहिये। वहां ऐसाही होता है।

नम्बर ६—जगमोहनके पूर्व नीची भूमिपर आंगन है, जिसके नैर्ऋत्य कोणके पास सर्वतीर्थ नामक कूप है।

नम्बर ७-पार्वतीजीका मन्दिर है-तीन डेवढ़ीके भीतर बहुमूल्य वस्त्र और भूषणोंसे सुशोभित पार्वतीजीकी सुन्दर मूर्ति है। रात्रिमें पचासों और दिनमे भी कई दीप मन्दिरमें जलते हैं। मन्दिरका पुजारी दक्षिणा पाने पर यात्रीकी ओरसे पार्वतीजीकी आरती करता है। फूल माला तथा विल्वपत्रकी माला विना दक्षिणा लिये वह चढा देता है। मन्दिरके भीतर सर्व साधारण लोग नहीं जाने पाते, परन्तु वहांका पुजारी कुछ दक्षिणा लेकर दूसरी डेवढीसे यात्रीको पार्वतीका दर्शन कराता है।

नम्बर ८-पार्वतीके मन्दिरका बडा जगमोहन है,-जिसमें खडे होकर यात्रीगण श्रीपार्वतीजीका दर्शन करते हैं। जगमोहनके उत्तर भागमें एक घेरेके भीतर सोनहुले झूलन-पर पार्वतीकी सोनेकी छोटी मूर्ति है। झूलनके चारों चोब चान्दीके बने हैं। पार्वतीके पासमें चन्दनका चँवर रक्खा है। जगमोहनके दूसरे हिस्सेमें कई देव मूर्त्तियां हैं।

नम्बर ९—जगमोहनके पूर्वके आंगनमें एक मण्डपम् और एक ऊँचा स्तम्भ है। स्तम्भ पर सोनेका मुलम्मा किया हुआ है।

नम्बर १०–माधवतीर्थ—नामक सरोवर है; जिसके चारों बगलोंपर पानी तक पत्थरकी सीढ़ियाँ और ऊपर तीन तरफ बड़े बड़े खम्भे लगे हुए दोहरी दालान और पूर्व ओर फर्शके बाद दीवार है। दालानके पीछे चौड़ी सड़क बनी हुई है। माधव तीर्थके पास सेतुमाधव-जीकी मूर्त्ति है।

नम्बर ११–में गवयतीर्थ, गवाक्षतीर्थ, नलतीर्थ, नीलतीर्थ और गन्धमादनतीर्थ–नामक ५ कूप क्रमसे मिलते हैं और पाँच छः देवमन्दिर हैं।

नम्बर १२—के उत्तरके भागमें छोटे दरवाजेके पास सूर्य्यतीर्थ और चन्द्रतीर्थ—दो कूप हैं।

नम्बर १३–में कोई प्रसिद्ध वस्तु नहीं है।

नम्बर १४–में नारियल आदिके बहुत वृक्ष हैं और उसके पश्चिम भागमें एक शिखर-दार मन्दिर है।

नम्बर १५–में नारियल आदिके बहुत वृक्ष हैं। उसके पश्चिम हिस्सेमें सड़कके पास शिखरदार शिव मन्दिर है।

नम्बर १६–में मकान और अनेक वृक्ष हैं।

नम्बर १७–के उत्तर हिस्सेमें सरस्वतीतीर्थ, सावित्रीतीर्थ और गायत्रीतीर्थ नामके ३ कूप और दूसरी जगहोंमें कई मण्डपम् हैं दोनों गोपुरोंके मध्यमें लक्ष्मीतीर्थ नामक एक बावली है।

नम्बर १८–में दोनों गोपुरोंके सामने दो दरवाजे हैं; उसका दक्षिण भाग उजाड़ है।

रामेश्वरजीके बृहत् मन्दिरमें ऊर्द्ध लिखित देवताओंके अतिरिक्त स्थान स्थानमें श्रीरा-मचन्द्र, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सीता, साक्षीगोपाल, जनार्दन,वेङ्कटेश,कोटि देवता,कोटेश्वर महादेव, गणेश,कार्त्तवीर्य, महावीर, नवग्रह आदि देवताओंकी मूर्त्तियाँ;रामेश्वरजीका भण्डार, महसूलका दफ्तर और मन्दिरके अधिकारियोंके अनेक मकान हैं।

अग्नितीर्थ–रामेश्वरजीके मन्दिरके पूर्वके समुद्रके एक घाटको अग्नितीर्थ कहते हैं। यात्रीलोग उस जगह समुद्रमें स्नान करते हैं।

अगस्त्यतीर्थ–मन्दिरके ईशान दिशामें उससे चार पाँच सौ गज दूर अगस्त्यतीर्थ नामक बावली है।

चौबीसतीर्थ–स्कन्द पुराणके सेतुबन्ध खण्डमें रामेश्वरपुरीसे देवीपत्तनतक २४ तीर्थ लिखे हुए हैं, उनमेंसे बहुतेरे तीर्थ ऊपर लिखे हुए २४ तीर्थोंमें नहीं हैं, उनके बदलेमें कई एक दूसरे नामके तीर्थ हैं। वहाँ नीचे लिखे हुए २४ तीर्थ प्रसिद्ध हैं, जिनके जलसे यात्री लोग स्नान करते हैं।

(नम्बर १० में) १ माधवतीर्थ, (नम्बर ११ में) २ गवयतीर्थ, ३ गवाक्षतीर्थ, ४ नलतीर्थ, ५ नीलतीर्थ, ६ गन्धमादनतीर्थ, (नम्बर १ में) ७ ब्रह्महत्याविमोचनतीर्थ, ८ गङ्गातीर्थ, ९ यमुनातीर्थ; १० गयातीर्थ, (नम्बर १२ में) ११ सूर्य्यतीर्थ, १२ चन्द्रतीर्थ, (नम्बर २ में) १३ शंखतीर्थ १४ चक्रतीर्थ (नम्बर ३ में) १५ अमृततीर्थ, १६ शिवतीर्थ (नम्बर ६ में) १७ सर्वतीर्थ, (नम्बर १७ में)१८ सरस्वतीतीर्थ, १९ सावित्री तीर्थ, २० गायत्रीतीर्थ, २१ लक्ष्मीतीर्थ; (समुद्रमें) २२ अग्नितीर्थ, (मन्दिरसे ईशान दिशामें) २३ अगस्त्यतीर्थ और (नम्बर ३ में) २४ वाँ कोटितीर्थ हैं।

इनमें माधवतीर्थ और शिवतीर्थ तालाव, लक्ष्मीतीर्थ और अगस्त्यतीर्थ बावली; अग्नितीर्थ समुद्र और बाकी १९ तीर्थ १९ कूप हैं। २२ तीर्थ मन्दिरके भीतर और २ तीर्थ उसके बाहर हैं। २३ तीर्थोंके जलसे एकही समयमें और कोटितीर्थके जलसे पुरीसे चलनेके समय यात्री लोग स्नान करते हैं।

मन्दिरका उत्सव—मन्दिरकी उत्सव मूर्त्तियाँ फाल्गुनकी शिवरात्रिके दिन ६ विमानोमें सिंहासनारूढ गाजे बाजेके समारम्भसे निकलती हैं। प्रत्येक विमानमें ४ कहार लगते हैं। पहले विमानमें शिव, दूसरेमें पार्वती, तीसरेमें गणेश, और चौथेमें कार्तवीर्य्य, पाँचवेंमें हनूमान् और छठेमें एक अन्य देवता रहते है। श्रावण मासमे शिव पार्वतीके विवाहका उत्सव होता है। उस समय आसपासके प्रदेशोंके बहुत यात्री आते हैं। इनके अलावे समय समयपर रामेश्वरपुरीमे उत्सव हुआ करता है। भारतके सैकड़ो यात्री नित्य रामेश्वरपुरीमे पहुँचते हैं।

मन्दिरका प्रबन्ध—पहिले रामनादके राजा, रामेश्वरके मन्दिरका प्रबन्ध करते थे, किन्तु इस समय अङ्गरेज महाराजने उसको मदुराके जंगमबाबाके अधीन किया है। मन्दिरके खर्चके लिये रामनादके राजाके दिये हुए ५७ गाँव हैं, जिनसे वार्षिक ४५००० रुपया मालगुजारी आती है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—पराशरस्मृति—(१२ वाँ अध्याय) समुद्रके सेतुके दर्शन करनेसे ब्रह्महत्या पाप छूट जाता है। ब्रह्महत्या करनेवाले मनुष्यको उचित है कि वह सेतुबन्ध यात्राके मार्गमे चारो वर्णोंसे भिक्षा मांगे। श्रीरामचन्द्रकी आज्ञासे नल वानरने १०० योजन लम्बा और १० योजन चौडा सेतु बांधा था, उसके दर्शन मात्रसे उसके ब्रह्महत्या पापका नाश होजाता है। उसको उचित है कि सेतुके दर्शनसे विशुद्ध होकर सागरमे स्नान करे।

वाल्मीकिरामायण—(लंकाकाण्ड, १२४ और १२५ वाँ सर्ग) श्रीरामचन्द्रने रावणको जीतकर लक्ष्मण, सीता, विभीषण आदि राक्षस और सुग्रीव आदि वानरोंके सहित पुष्पक विमानपर चढ़ लंकासे प्रस्थान किया। विमान आकाश मार्गसे चला। श्रीरामचन्द्र जानकीजीको स्थानोंको दिखाने लगे, वह बोले कि हे सीते! देखो यह सेना टिकनेका स्थान है; यहाँ सेतुबांधनेके पहले शिवजी मेरे ऊपर प्रसन्न हुए थे, यह समुद्रका घाट सेतुबन्ध नामसे प्रसिद्ध तीनों लोकोंमें पूजित हुआ है, यह पवित्र स्थान पापोंका नाश करने वाला है।

ब्रह्माण्डपुराण—अध्यात्मरामायण—(लङ्काकाण्ड, ४ था अध्याय) सेतु आरम्भके समय श्रीरामचन्द्रने लोकके हितके लिये वहां रामेश्वर शिवको स्थापित किया। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति सेतुबन्धका दर्शन करके रामेश्वर शिवको प्रणाम करेगा, उसका ब्रह्महत्यादि पाप छूट जायगा। जो प्राणी सेतुबन्धमे स्नान और रामेश्वरके दर्शन करके वाराणसीके गङ्गाजलसे रामेश्वरको स्नान करावेगा और जलकी कांवर समुद्रमें डाल देगा उसको निःसन्देह ब्रह्मलोक मिलेगा।

शिवपुराण—(ज्ञानसंहिता, ३८ वाँ अध्याय) शिवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्ग है; (१) सौराष्ट्र देशमे सोमनाथ. (२) श्रीशैलपर मल्लिकार्जुन, (३) उज्जैनमें महाकालेश्वर, (४) ओंकारमे अमरेश्वर, (५) हिमालयमें केदारेश्वर, (६) डाकिनीमे भीमशंकर, (७) वाराणसीमें

विश्वेश्वर, (८) गोदावरीके तटपर त्र्यम्बक, (९) चिता भूमिपर वैद्यनाथ, (१०) दारुका वनमें नागेश, (११) सेतुबन्धमे रामेश्वर और (१२ वाँ) शिवालयमें घुश्मेश्वर।

(५७ वाँ अध्याय) रामचन्द्रजी लक्ष्मण तथा सुग्रीव आदि १८ पद्म सेनाओंके सहित सीताको छुड़ानेके लिये दक्षिण समुद्रके पास पहुँचे। उनको जल पीनेके समय स्मरण हुआ कि आज हमने शिवजीका दर्शन नहीं किया; विना दर्शन किये हम जल कैसे पियेंगे। ऐसा विचार कर उन्होंने वानरोंसे मृत्तिका मँगाकर मृत्तिकाका शिवलिङ्ग बनाया और आवाहन तथा पूजन करके उनसे विनय किया कि हे शंकर! आपकी कृपासे रावण दुर्जेय हुआ है; आप मेरा सहाय कीजिये। शिवजी प्रकट होकर बोले कि हे रामचन्द्र! तुम्हारा मंगल होगा। उसके पश्चात् श्रीरामचन्द्रने शिवजीकी जलधारासे जल पान करके शिवजीसे विनय किया कि हे शंकर! आर्य लोगोंके हितके लिये आप इस स्थानपर निवास कीजिये। शिवजीने रामचन्द्रके वचनसे प्रसन्न होकर वहाँ लिंग रूपसे निवास किया, उसी लिंगको रामेश्वर कहते हैं। रामेश्वर शिवके स्मरण करनेसे सम्पूर्ण पापोंका नाश होजाता है।

गरुड़पुराण–(पर्वार्द्ध, ८१ वाँ अध्याय) सेतुबन्धरामेश्वर एक उत्तम तीर्थ है।

मत्स्यपुराण–(२२ वाँ अध्याय) रामेश्वरतीर्थ श्राद्धके लिये श्रेष्ठ है।

ब्रह्मवैवर्तपुराण–(कृष्ण जन्म खण्ड, ७६ वाँ अध्याय) आषाढ़की पूर्णिमाको सेतुबन्ध रामेश्वरके दर्शन और पूजन करनेसे प्राणीका फिर जन्म नहीं होता है। रातमें महादेवजीके दर्शनके लिये वहाँ विभीषण आते हैं।

स्कन्दपुराण—(सेतुबन्ध खण्ड, पहिला अध्याय) श्रीरामचन्द्रके बाँधे हुए सेतुके समीप सब क्षेत्रोंमें उत्तम रामेश्वर क्षेत्र है। (दूसरा अध्याय) श्रीरामचन्द्रजीकी आज्ञासे वानरगण सहस्रों पर्वतोंके शृङ्ग, वृक्ष, वेलि, तृण आदि लाये। नलने समुद्रके ऊपर १० योजन चौड़ा और १०० योजन लम्बा सेतु बाँधा। जहाँ रामचन्द्रजीने कुश शय्यापर शयन किया, और सेतु बाँधा वहीं स्थान प्रसिद्ध तीर्थ होगया। सेतुबन्धके समीपके तीर्थोंमें नीचे लिखे हुए २४ तीर्थ प्रधान हैं;–१ चक्रतीर्थ (जो देवीपत्तनमें है), २ वेतालवरद (देवीपत्तनकी ओर), ३ पापविनाशन, ४ सीतासर, ५ वाँ मंगलतीर्थ, ६ अमृतवापिका, ७ वाँ ब्रह्मकुण्ड, ८ वाँ हनुमत्कुण्ड, ९ वाँ अगस्त्यतीर्थ, १० वाँ रामतीर्थ, ११ लक्ष्मणतीर्थ, १२ जटातीर्थ; १३ लक्ष्मीतीर्थ १४ अग्नितीर्थ, १५ चक्रतीर्थ, १६ शिवतीर्थ, १७ शंखतीर्थ, १८ यमुनातीर्थ, १९ गङ्गातीर्थ, २० गयातीर्थ, २१ कोटितीर्थ २२ साध्यामृततीर्थ, २३ मानसतीर्थ और २४ वाँ धनुष्कोटितीर्थ।

(तीसरा अध्याय) सेतुमूलके समीप चक्रतीर्थ है। धर्मने दक्षिणके समुद्रके तटपर बहुत कालतक तप किया और स्नानके लिये वहाँ एक पुष्करिणी बनाया, जिसका नाम धर्मपुष्करिणी पड़ा। धर्म शिवजीको प्रसन्न करके उनका वाहन वृष बन गया। उसके पश्चात् ध्यान करते हुए गालव मुनिको एक राक्षसने जा पकड़ा। उस समय मुनि विष्णुको पुकारने लगे। विष्णुकी आज्ञासे सुदर्शन चक्रने वहाँ जाकर उस राक्षसका शिर काट लिया। उसके उपरान्त वह चक्र धर्मपुष्करिणीमें प्रवेश कर गया; तभीसे धर्मपुष्करिणीका नाम चक्रतीर्थ होगया।

(८ वाँ अध्याय) चक्रतीर्थके दक्षिण भागमें वेताल वरद तीर्थ है। (९ वाँ अध्याय) एक ऋषिके आदेशानुसार कपालस्फोट नामक दैत्य दक्षिण–समुद्रके तटपर पवित्र तीर्थमें

पहुँचा। पवनके वेगसे उस तीर्थके जलकण उडकर उस दैत्यके शरीरपर गिरे। जलकणोंके स्पर्शसे उसने अपना वेताल रूप छोडकर पूर्व रूप धारण कर लिया। पूर्व जन्ममें वह विजयदत्त नामक ब्राह्मण था, किन्तु गालव मुनिके शापसे वेताल हुआ था। उसके पश्चात् वह उस तीर्थमें स्नान करके मनुष्य देह छोडकर दिव्य रूप हो स्वर्गमें चला गया। उसी दिनसे उस तीर्थका नाम वेताल वरद हुआ।

(१० वॉ अध्याय) वेतालवरद तीर्थमें स्नान कर गन्धमादन पर्वतको, जो सेतुरूपसे समुद्रमें स्थित है, जाना चाहिये। उसके ऊपर लोकमें प्रसिद्ध पापविनाशन तीर्थ है। सुमति नामक ब्राह्मण करोडों वर्ष नरक भोगकर ब्राह्मणके गृह जन्मा, परन्तु उसको ब्रह्मराक्षसका आवेश होगया। तब अगस्त्यमुनिके उपदेशसे उसके पिताने गन्धमादन पर्वतके पापविनाशन तीर्थमें उसको संकल्प पूर्वक तीन दिन स्नान कराया, जिससे ब्राह्मणका पुत्र आरोग्य होगया और अन्तमे मुक्ति पाया। पापोके नाश करनेसे उस तीर्थका नाम पापविनाशन पडा है।

(११ वॉ अध्याय) गङ्गा आदि तीर्थ सीता सरोवरमें निवास करते है। इसी तीर्थमें स्नान करनेसे ब्रह्महत्याने इन्द्रको छोड़ा। रामचन्द्रजीके संदेह निवृत्त करनेके लिये सीताने अग्निमें प्रवेश किया और अग्निसे निकल अपने नामका यह तीर्थ वनाया। तभीसे उसका नाम सीतासरोवर हुआ।

(१२ वॉ अध्याय) सीताकुण्डमें स्नान कर मङ्गलतीर्थको जाना चाहिये, जिसमें लक्ष्मीजी निवास करती हैं। इन्द्रादि देवता अलक्ष्मीके नाशके लिये नित्य उस तीर्थमे स्नान करते हैं। सेतुवन्धके वीच गन्धमादन पर्वतपर मङ्गलतीर्थ है। उसमें सीता और रामचन्द्र सदा सन्निहित रहते हैं।

(१३ वॉ अध्याय) रामनाथ क्षेत्रमे अमृत वापिका है, जिसमें स्नान करने वाले मनुष्य अजर अमर होजाते हैं। मङ्गल तीर्थके पासके तीर्थमे अगस्त्य मुनिके भ्राताकी मुक्ति हुई, उसीसे उस तीर्थका नाम अमृतवापी हुआ, क्योंकि मोक्षको अमृत कहते हैं।

(१४ वॉ अध्याय) अमृतवापीमे स्नान कर ब्रह्मकुण्ड तीर्थको जाना चाहिये। ब्रह्मकुण्डमे स्नान करनेवाले मनुष्यको यज्ञ, तप, दान, तीर्थ करनेका कुछ प्रयोजन नहीं है। जो मनुष्य ब्रह्मकुण्डसे निकली विभूतिको धारण करता है, उसके समीप ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी सदा निवास करते हैं। एक समय ब्रह्मा और विष्णुका परस्पर विवाद हुआ। दोनों अपनेको वडा कहने लगे। उसी समय मध्यमें एक लिङ्ग प्रकट हुआ। उसके अनन्तर यह निश्चय हुआ कि दोनोंमेंसे जो इस लिङ्गके आदि अन्तको निश्चय करे वही सवसे वडा और लोकका कर्त्ता गिना जाय। ब्रह्मा हंसका रूप धर ऊपरको उडे और विष्णु वाराह रूप धर नीचे चले। १००० वर्षके पीछे विष्णुजीने लौटकर देवताओसे कहा कि हमको लिङ्गका अन्त न मिला। इतनेमे ब्रह्मा भी आ पहुँचे। असत्य वोले कि हम इस लिङ्गके अग्रको देख आये हैं। तव शिवजीने कहा कि हे ब्रह्मा! तुमने हमारे सन्मुख झूठ कहा इसलिये जगत्में कोई तुम्हारी पूजा न करेगा। पीछे ब्रह्माकी प्रार्थनासे प्रसन्न होकर शिवजी वोले कि हमारा वचन तो मिथ्या नहीं होसकता, परन्तु तुम गन्धमादन पर्वतपर जाकर यज्ञ करो जिससे हमारे शापका दोष निवृत्त होजायगा। प्रतिमामें तुम्हारी पूजा न होगी, किन्तु श्रौत स्मार्त

कर्मोंमें तुम्हारा पूजन होगा। ब्रह्माजीने गन्धमादन पर्वतपर जाकर ८८ हजार वर्ष पर्यंत कई यज्ञ किये। तब शिवजीने प्रकट होकर यह वरदान दिया कि अब श्रौत स्मार्त कर्मोंमें तुम्हारा पूजन हुआ करेगा और तुम्हारा यह यज्ञका स्थान ब्रह्मकुण्डके नामसे जगत्में प्रसिद्ध होगा। जो एक बारभी इस ब्रह्मकुण्डमें स्नान करेगा उसके लिये मुक्तिका द्वार खुलजायगा। जो इस कुण्डके भस्मको धारण करेगा, वह आवागमनसे रहित होजायगा।

(१५ वाँ अध्याय) ब्रह्मकुण्डमें स्नान कर हनुमत्कुण्डमें जाना चाहिये। जब रामचन्द्र रावणको मार कर लौटे और गन्धमादन पर्वतपर पहुँचे, तब हनूमान्ने अपने नामसे उत्तम तीर्थ बनाया। साक्षात् रुद्र उस तीर्थका सेवन करते है। धर्मसख राजाने उस तीर्थमें स्नान कर दीर्घायु १०० पुत्र पाये। जो स्त्री उस तीर्थमें स्नान करती है, उसके अवश्य पुत्र उत्पन्न होता है।

(१६ वाँ अध्याय) हनुमत्कुण्डके पश्चात् अगस्त्यतीर्थको जाना चाहिये उस तीर्थको साक्षात् अगस्त्यजीने बनाया है। पूर्व कालमें सुमेरु और विंध्यपर्वतका परस्पर विवाद हुआ, तब विन्ध्याचल इतना बढ़ा कि सब जीवोंका श्वास रुक गया, उस समय शिवजीकी आज्ञासे अगस्त्यजीने उस पर्वतको अपने पैरसे ऐसा दबाया कि वह भूमिके समान होगया। फिर अगस्त्यजी वहाँसे चले और दक्षिण दिशामें विचरते हुए गन्धमादन पर्वतपर पहुँचे। वहां उन्होंने अपने नामसे तीर्थ बनाया; जिसमें वह अपनी भार्य्या लोपामुद्राके साथ आज तक निवास करते है। दीर्घतपा मुनिके पुत्र कक्षीवान्ने उस तीर्थके प्रभावसे स्वनयकी कन्यासे विवाह किया।

(१८ वाँ अध्याय) बाद रामकुण्डको जाना चाहिये। उस सरोवरके तीरपर अल्प दक्षिणाके भी यज्ञ करनेसे सम्पूर्ण फल मिलता है। अगस्त्य मुनिके शिष्य सुतीक्ष्ण मुनिने उस सरोवरके तीरपर बहुत काल तक तप किया। राजा युधिष्ठिर उस तीर्थमें स्नान और शिवलिङ्गका दर्शन करके असत्य भाषणके महादोषसे छूट गये।

(१९ वाँ अध्याय) बाद लक्ष्मणतीर्थको जाकर उसमें स्नान करना चाहिये। उस तीर्थके तटपर लक्ष्मणजीने शिवलिङ्ग स्थापन किया है। बलदेवजी लक्ष्मणतीर्थमें स्नान और लक्ष्मणेश्वरका सेवन कर ब्रह्महत्यासे छूट गये।

(२० वाँ अध्याय) पूर्व कालमें शिवजीने गन्धमादन पर्वतमें सबके उपकारके अर्थ एक तीर्थ बनाया। रामचन्द्रजीने रावणको मारनेके पश्चात उस तीर्थमें जटा धोई थी, इससे उस तीर्थका नाम जटातीर्थ पड़ा।

(२१ वाँ अध्याय) राजा युधिष्ठिरने कृष्णचन्द्रकी प्रेरणासे इन्द्रप्रस्थसे जाकर लक्ष्मी तीर्थमें स्नान किया, जिससे उन्होने बड़ा ऐश्वर्य्य पाया।

(२२ वाँ अध्याय) पूर्व कालमें श्रीरामचन्द्रजी रावणको मार सीता और लक्ष्मणके सहित जानकीकी शुद्धिके लिये सेतु मार्गसे गन्धमादनपर पहुँचे। उन्होंने वहाँ लक्ष्मीतीर्थके तटपर स्थिर हो अग्निका आवाहन किया। अग्नि समुद्रसे निकलकर कहने लगी कि हे रामचन्द्रजी! जानकीके पातिव्रत्य धर्मके प्रभावसे आपने रावणको जीता है; आप इनको ग्रहण कीजिये। तब रामचन्द्रजीने सीताको ग्रहण किया। रामचन्द्रके आवाहन करनेसे जहां अग्नि प्रकट हुई, वहाँही अग्नितीर्थ हुआ। पूर्व कालमें पाटलिपुत्र नामक नगरके रहने-

वाले पशुमान नामक वैश्यका पुत्र दुष्पण्य उस तीर्थके जलके स्पर्शसे पिशाच योनिसे मुक्त हो स्वर्गको गया।

(२३ वाँ अध्याय) पूर्वकालमें अहिर्बुध नामक ऋषि गन्धमादन पर्वतमें सुदर्शन चक्रकी उपासना करते थे। उस समय राक्षस आकर उनको पीड़ा देने लगे, तब सुदर्शन-चक्रने आकर सब राक्षसोंको मारडाला और मुनिकी प्रार्थनासे उस तीर्थमें निवास किया। उस दिनसे उस तीर्थका नाम चक्रतीर्थ पड़ा। पूर्वकालमें जब सूर्य्य भगवान्‌ने उस तीर्थमें स्नान किया, तब उनके कटे हुए हाथ पहिलेकी भाँति पूर्ण होगये।

(२४ वाँ अध्याय) कालभैरव शिवतीर्थमें स्नान करके ब्रह्महत्यासे छूटे। ब्रह्माने कहा कि हे महादेव! तू मेरे ललाटसे उत्पन्न हुआ, इसलिये मेरा पुत्र है। ब्रह्माका अहंकार युक्त वचन सुन शिवजीने कालभैरवको भेजा, भैरवने ब्रह्माका पांचवां शिर काट लिया। पीछे शिवजी ब्रह्मापर प्रसन्न होकर कालभैरवसे बोले कि लोककी मर्य्यादा रखनेके लिये तुम प्रायश्चित्त करो। कालभैरव ब्रह्माका शिर हाथमें लिये हुए पुण्यतीर्थोंमें स्नान करते हुए काशीमें पहुँचे। ब्रह्महत्या भयंकर स्त्रीके रूपसे उनके साथ २ फिरती थी। काशीमें पहुँचने पर भैरवकी ३ भाग ब्रह्महत्या नष्ट होगई, किन्तु एक भाग रह गई तब कालभैरवने गन्धमादन पर्वतमे पहुँच शिवतीर्थमे स्नान किया, जिससे सम्पूर्ण हत्या दूर होगई।

(२५ वाँ अध्याय) पूर्वकालमें शंख मुनिने विष्णुकी प्रसन्नताके लिये गन्धमादन पर्वतमे तप किया और अपने नामसे शंखतीर्थ भी बनाया। उस तीर्थमे स्नान करनेसे कृतघ्न पुरुषभी शुद्ध होजाता है।

(२६ वाँ अध्याय) शंखतीर्थमें स्नान कर गगातीर्थ यमुनातीर्थ और गयातीर्थको क्रमसे जाना चाहिये। उन तीर्थोंमे स्नान कर जानश्रुति नामक राजाने रैक्व मुनिसे दिव्य ज्ञान पाया। पूर्वकालमें रैक्व मुनि गन्धमादन पर्वतमें तप करते थे। वह जन्मके पंगु थे, इस लिये दूरके तीर्थोंमे नहीं जा सकते, किन्तु गन्धमादनके तीर्थोंमें गाड़ीपर बैठकर जाया करते थे। एक समय गगा, यमुना और गया तीर्थोंके स्नान करनेकी मुनिकी इच्छा हुई, तब मुनिने पूर्वाभिमुख बैठ मन्त्रबलसे तीनों तीर्थोंका आवाहन किया। उस समय भूमिको भेदन कर गया, और यमुनाकी धारा पातालसे निकली। मुनिने तीनों तीर्थोंसे प्रार्थना की कि तुम तीनों इस पर्वतमें निवास करो। उस दिनसे तीनो तीर्थ गन्धमादनमें रहगये। उनमें स्नान करनेसे प्रारब्ध कर्मका नाश होता है।

(२७ वाँ अध्याय) कोटि तीर्थको रामचन्द्रजीने अपने धनुषकी कोटि अर्थात् अग्र-भागसे बनाया है। रामचन्द्रजीने रावणके मारनेके उपरान्त ब्रह्महत्याके निवृत्तिके लिये गन्धमादन पर्वतमे रामेश्वर शिवलिङ्ग स्थापन किया। जब लिङ्गके स्नानके लिये जल नहीं मिला, तब उन्होंने गङ्गाका स्मरण कर धनुषकी कोटिसे भूमिको भेदन किया, जिससे गङ्गाकी धारा निकली। तब रामचन्द्रने उस दिव्य जलसे शिवलिङ्गको स्नान कराया। धनुषकी कोटिसे यह तीर्थ बना, इस लिये इसका नाम कोटितीर्थ पड़ा। गन्धमादनके सब तीर्थोंमें स्नानकर शेष पापकी निवृत्तिके लिये कोटितीर्थमें स्नानकरना चाहिये। उसमें स्नान करनेके पश्चात् गन्धमादन पर्वतमें क्षणमात्र भी न रहना चाहिये। उसमें साक्षात् गङ्गा निवास करती हैं। श्रीकृष्णजी कोटितीर्थमें स्नान करके अपने मातुल कंसकी हत्याके पापसे छूटे थे।

(२८ वाँ अध्याय) जबतक साध्यामृततीर्थमें अस्थि पड़ी रहती है, तब तक वह जीव शिवलोकमें निवास करता है। राजा पुरूरवा उस तीर्थमें स्नान कर तुम्बुरके शापसे छूटा और फिर उर्वशीसे उसका समागम हुआ। उस तीर्थमें स्नान करनेवालोको अमृत अर्थात् मोक्ष साध्य है, (असाध्य नहीं है) इस लिये उसका नाम साध्यामृत हुआ है।

(२९ वाँ अध्याय) पूर्व कालमें भृगुवंशमें सुचरित मुनि हुआ। वह जन्मसेही अंधा था। उसने जन्मभर तप किया। वृद्धावस्थामें उसकी इच्छा हुई कि सम्पूर्ण तीर्थोंमें स्नान करना चाहिये; परन्तु तीर्थोंमें जानेकी उसकी सामर्थ्य न थी, इस लिये वह गन्धमादन पर्वतमें शिवजीका तप करने लगा। शिवजी प्रकट हुए। मुनि बोले कि हे नाथ! मुझको इसी स्थानपर सम्पूर्ण तीर्थोंमें स्नान करनेका फल प्राप्त हो। तब शिवजीने एक स्थानमें सब तीर्थोंका आवाहन किया, उसके उपरान्त उन्होंने कहा कि इस स्थानपर हमने सब तीर्थोंका आवाहन किया, इस लिये यह तीर्थ सर्वतीर्थ नामसे प्रसिद्ध होगा और हमने मनसे यहां तीर्थोंका आकर्षण किया है इस लिये इसका नाम मानसतीर्थभी होगा।

(३० वाँ अध्याय) सर्वतीर्थके पश्चात् धनुषकोटितीर्थको जाना चाहिये। जो पुरुष धनुष्कोटिका दर्शन करते हैं; वे अट्ठाईस प्रकारके महानरकोंको नहीं देखते। रामचन्द्र रावणको मारनेके पश्चात् विभीषण और सुग्रीव आदि बानरोंके साथ गन्धमादन पर्वतमे पहुँचे, उस समय विभीषणने प्रार्थना की कि महाराज! आपके बांधे हुए सेतुके मार्गसे प्रतापी राजा लोग आकर मेरी पुरी लङ्काको पीड़ा देंगे। तब रामचन्द्रने अपने धनुषकी कोटि अर्थात् अग्रभागसे सेतुको तोड़ दिया, वहाँही धनुष्कोटितीर्थ हुआ। जो पुरुष धनुष करके कीहुई रेखा देखता है वह गर्भवासका दुःख नहीं भोगता, रामचन्द्रने धनुष्कोटिसे समुद्रमें रेखा की है। जो पुरुष माघमास मकरके सूर्य्यमें धनुष्कोटिमें स्नान करता है, उसका पुण्य वर्णन नहीं होसकता। अर्द्धोदय योगमें वहाँ स्नान करनेसे सब पाप नष्ट होते है। चन्द्र और सूर्य्यके ग्रहणोंमे वहाँ स्नान करनेवालेके पुण्य फलको शेषजीभी नही गिनसकते। वहाँ पिण्डदान करनेसे पितर कल्पभर तृप्त रहते हैं। रामचन्द्रजीने पितरोंकी तृप्तिके लिये तीन स्थान बनाये है; सेतुमूल, धनुष्कोटि और गन्धमादन पर्वत। (आगे ३७ वें अध्याय तक धनुष्कोटिका माहात्म्य है) (यहाँ तक २४ तीर्थोंकी कथा है)

(४० वाँ अध्याय) गायत्रीतीर्थ, और सरस्वतीतीर्थमें स्नान करनेसे गर्भवासका दुःख कभी नहीं होता। गन्धमादन पर्वतमे ब्रह्मपत्नी गायत्री और सरस्वतीके सन्निधानसे २ तीर्थ हैं। शिवजी ब्रह्माका दुराचार देख व्याधका रूप धर हरिण रूप धारी ब्रह्माके पीछे दौड़े। उन्होंने एक बाण ऐसा मारा कि हरिण रूप ब्रह्मा मरगये। तब गायत्री और सरस्वती अति शोकातुर हो ब्रह्माजीके जीवनके लिये गन्धमादन पर्वतमें जाकर तप करने लगीं। उन्होंने स्नानके लिये अपने अपने नामसे एक एक तीर्थ बनाया और त्रिकाल उन तीर्थोंमें स्नान करके बहुत काल तक वहाँ उग्रतप किया। तब महादेवजी प्रकट हुए। उन्होंने गायत्री और सरस्वतीकी प्रार्थनासे प्रसन्न हो अपने गणोंसे ब्रह्माका शरीर वहाँ मँगवाया और शिरको धड़से जोड़कर ब्रह्माको जिला दिया। शिवजीने गायत्री और सरस्वतीसे कहा कि इन दोनों कुण्डोमें स्नान करनेवाले पुरुषोंकी मुक्ति होगी, तुम दोनोंके नामसे दोनों तीर्थ प्रसिद्ध होंगे।

(४२ वॉ अध्याय) गन्धमादन पर्वतपर ऋणमोचनतीर्थ, पंचपांडवतीर्थ, देवतीर्थ, सुग्रीवतीर्थ, नलतीर्थ, नीलतीर्थ, गवाक्षतीर्थ, अङ्गदतीर्थ, गजतीर्थ, गवयतीर्थ, शरभतीर्थ, कुमुदतीर्थ, पनसतीर्थ और विभीषणतीर्थ है।

(४३ वॉ अध्याय) रामेश्वरके दर्शन करनेवालेकी तुल्यता चारो वेदोंको जाननेवाला ब्राह्मण भी नही कर सकता। वेदवेत्ता ब्राह्मणको छोड कर रामेश्वरके भक्त चाण्डालको सब दान देना उचित है। रामेश्वरके दर्शन करनेवाले पुरुषोंको वेद, शास्त्र, तीर्थ, यज्ञ आदिसे कुछ प्रयोजन नहीं है जो पुरुष चन्दन, केसर, कस्तूरी, गुग्गुल, राल आदि रामेश्वरको अर्पण करता है, वह धनाढ्य और वेद शास्त्रका जाननेवाला होता है। जो गङ्गाजलसे रामनाथको स्नान कराता है, उसका सत्कार शिवजी भी करते हैं।

(४४ वॉ अध्याय) रामचन्द्र रावणको मार सबके साथ विमानमे चढ गन्धमादन पर्वत मे पहुंचे। उन्होंने वहॉ अग्निमे सीताका शोधन किया। उस समय वहॉ अगस्त्य मुनिके साथ दण्डकारण्यके सब मुनि आये। रामचन्द्रने मुनियोसे पूछा कि पुलस्त्य मुनिके पौत्र रावणके वधके पापका प्रायश्चित्त क्या है, मुनि बोले कि हे रामचन्द्र! आप इस गन्धमादन पर्वतमे शिवलिङ्ग स्थापन कीजिये। इनके दर्शनका फल काशीविश्वनाथके दर्शनके फलसे कोटि गुणित होगा और आपके नामसे यह लिङ्ग प्रसिद्ध होगा। तब रामचन्द्रने हनूमान्‌को आज्ञा दी कि तुम शीघ्रही कैलासमें जाकर एक उत्तम शिवलिङ्ग लाओ। हनूमान् क्षणमात्रमें कैलास पर्वतपर पहुंचे, परन्तु जब वहॉ लिङ्गरूप महादेव न मिले, तब वह वहॉ तप करने लगे। कुछ कालके अनन्तर शिवजीने एक उत्तम शिवलिङ्ग हनूमान्‌को दिया। यहॉ हनूमान्‌के आनेमें विलम्ब होनेपर मुनियोंने रामचन्द्रसे कहा कि मुहूर्त काल आगया, किन्तु शिवलिङ्ग नहीं आया, इस लिये सीताजीने लीला करके जो वालूका शिवलिङ्ग वनाया है, उसको आप स्थापन कीजिये। तब सीताके सहित रामचन्द्रने ज्येष्ठमास, शुक्लपक्ष, दशमी तिथि, वुधवार, हस्त नक्षत्र, व्यतीपात योग, गर करण और वृषके सूर्यमें रामेश्वर लिङ्गको और रामेश्वरके आगे नन्दिकेश्वरको स्थापित किया।

(४५ वॉ अध्याय) उसी अवसरमें हनूमान्‌जी भी शिवलिङ्ग लेकर आ पहुंचे। उन्होंने जब देखा कि रामचन्द्रजीने शिवलिंग स्थापन करदिया, तव वह वहुत विलाप करने लगे उस समय रामचन्द्र बोले कि हे हनूमान्! कैलाससे लाये हुए लिंगको तुम स्थापन करो; यह लिंग तेरे नामसे प्रसिद्ध होगा; सब मनुष्य तेरे स्थापित लिंगका प्रथम दर्शन करके तब रामेश्वरका दर्शन करेंगे। हमने, सीताने, लक्ष्मणने, तुमने, सुग्रीवने, नलने, नीलने, जाम्बवानने, विभीषणने, इन्द्रादि देवताओंने, शेष नागादिकोंने, जो लिंग स्थापन किये है, इन ११ लिंगोमे शिवजी सदा निवास करेंगे, अगर तू रामेश्वर लिंगको उखाड सके तो हम तेरे लाये हुए लिंगको स्थापन करें। तब हनूमान्‌ने अपने दोनो हाथोंसे रामेश्वर लिंगको पकड़कर उखाडनेके लिये वहुत बल किया। जब वह लिंग न हिला, तब उसको पूंछमें लपेटकर दोनों हाथोंको भूमिपर रख आकाशको उछला, परन्तु लिंग नहीं उखडा। उस समय हनूमान्‌का पुच्छ लिंगसे छूट गया; वह एक कोस दूर जा गिरे और उनके ऑख, नाक, कान आदि इन्द्रियोंसे रुधिर गिरने लगा, जिससे रक्तकुण्ड बन गया। रामचन्द्र लक्ष्मण आदि अपने साथियोंके साथ वहॉ जाकर विलाप करने लगे। पीछे हनूमान् मूर्च्छासे जागे। (४६ वॉ

अध्याय) रामचन्द्र बोले कि हे वायुपुत्र ! आजसे यह कुण्ड तुम्हारे नामसे प्रसिद्ध होगा; इसमें स्नान करनेसे महा पातकोंका नाश होगा। हनूमान्‌जीने रामचन्द्रकी आज्ञासे रामेश्वरके उत्तर भागमें अपना लाया हुआ शिवलिंग स्थापन किया।

(४७ वॉ अध्याय) जहॉ रामचन्द्रकी ब्रह्महत्या निवृत्त हुई, वहॉ ब्रह्महत्याविमोचन-तीर्थ हुआ। उसके आगे एक नागलोकका बिल है, जिसमें रामचन्द्रने ब्रह्महत्याका प्रवेश करा दिया। और बिलके ऊपर मण्डप बनाकर वहॉ भैरवको स्थापन किया। रामेश्वर लिंगके दक्षिण भागमें पार्वतीजी और दोनों ओर सूर्य्य और चन्द्र है और सन्मुख भागमें अग्नि निवास करता है। गणपति,कार्त्तिकेय और वीरभद्र आदि गण रामेश्वरके पासमें विद्यमान हैं।

(५० वॉ अध्याय) पूर्वकालमें मथुरापुरीमे पुण्यनिधि नामक चन्द्रवंशी राजा था; वह अपने पुत्रको राज्य सौंप चतुरङ्गिणी सेना सहित रामसेतुमें जाकर रामेश्वरका सेवन करने लगा। कुछ कालके अनन्तर लक्ष्मीजी विष्णु भगवान्‌से रुष्ट होकर ८ वर्षकी कन्या बन धनुषकोटितीर्थपर जाकर स्थित होगई। राजा पुण्यनिधिने उस कन्यासे पूछा कि तुम कौन हो ? कन्या बोली कि मैं अनाथ हूं, आपकी पुत्री होकर आपके गृहमें रहना चाहती हूं; जो कोई हठसे मुझको आकर्षण करे उसको आप दण्ड दीजिये। राजाने स्वीकार किया और कन्याको पुत्रीकी भांति अपनी रनिवासमें रक्खा। विष्णुभगवान् ब्राह्मण रूपसे लक्ष्मीको ढूंढ़ते हुए रामसेतुके उपवनमें पहुँचे। वहॉ पुष्प बिनती हुई कन्यारूपिणी लक्ष्मी मिली। जब विष्णुने उस कन्याको हाथ पकड़ कर खींचा तब वह पुकारने लगी। उसकी पुकार सुनकर राजा पुण्यनिधि दौड़कर वहॉ आया और उसने ब्राह्मणरूपी विष्णुको पकड़ हथकड़ी बेड़ी पहनाय रामनाथके समीप एक मण्डपमें कैद करदिया। रात्रिके समय राजाने स्वप्नमें देखा कि वह ब्राह्मण शंख, चक्र, गदा, पद्म और भांति २ के भूषण धारण कर शेषशय्या पर शयन करता है; नारद, गरुड़, विष्वक्सेन आदि पार्षद उसकी सेवामें खड़े हैं और वह कन्या हाथमें कमल लिये हुए कमलपर बैठी है। राजाने उठकर कन्याके घरमे जाकर देखा कि वह उसी रूपमें बैठी है, जैसा उसको स्वप्नमें देखा था। प्रभात होतेही उसने उस कन्याके साथ मण्डपमें जाकर उस ब्राह्मणको जैसा स्वप्नमें देखा था वैसाही चतुर्भुज तथा शेषशायी देखा। तब वह राजा विष्णुभगवान्‌को पहचान स्तुति करने लगा। विष्णुभगवान्‌ने प्रसन्न होकर कहा कि हे राजन् ! तुमने जिस प्रकारसे हमको निगड़से बांधा है; अब हम इसी रूपसे यहॉ निवास करेंगे। हमने सेतु बॉधा है; इसकी रक्षाके लिये हम सेतुमाधव नामसे यहॉ रहेंगे। जो मनुष्य सेतुमाधवके विना सेवा किये हुए रामेश्वरकी सेवा करेगा; उसकी सेवाका फल व्यर्थ होजायगा।

(५१ वॉ अध्याय) कण्ठसे ऊपर वपन अर्थात् क्षौरकर्म करवा कर लक्ष्मणतीर्थमें स्नान करना चाहिये। (५२ वॉ अध्याय) किसी तीर्थमें स्नान करनेसे कृतघ्नका उद्धार नही होता किन्तु सेतुबन्धमें स्नान करनेसे उसकी भी सद्गति होजाती है।

इतिहास–रामेश्वरजीका निज मन्दिर बहुत पुराना है। ऐसा प्रसिद्ध है कि मदुराके एक नायकने बड़े मन्दिरके भीतरका भाग बनवाया उसके चारों ओरके मन्दिर, दीवार, गोपुर इत्यादि इमारतोंको १७ वी सदीमें रामनादके सेतुपति राजाओंने बनवाया, उसी समय तिरुमलई नायक मदुराका बड़ा मन्दिर बनवा रहा था। उस समय सेतुपति स्वाधीन थे

और उनका प्रताप चमका था । मन्दिरके गोपुरोंका काम १८ वीं सदीतक बना होगा । जब १८ वीं सदीके आरम्भमें मुसलमानों, महाराष्ट्रों और अन्य आक्रमण करनेवालोंने उस टापूसे जाकर लूटपाट की तब मन्दिर बननेका काम रुक गया ।

देवीपत्तन ।

रामेश्वरके टापूके पश्चिमके हरवोलाकी खाडीसे लगभग २० मील पश्चिम समुद्रके तीर सेतुमूलके पास देवीपत्तन एक तीर्थ है । कोई कोई यात्री पांबनसे समुद्रकी नाव द्वारा देवीपत्तन और दर्भशयन तीर्थ होकर तुतिकुडीमें जाकर रेलगाडीमें चढते हैं । पांबनसे लगभग १२ घण्टेमें समुद्रकी नाव तुतीकुडी पहुँच जाती है । एक आदमीका नाव भाडा लगभग एक रुपया लगता है । कुछ लोग मदुरा कसबे और हरवोलाकी खाडीके बीचके परमगुडीके चट्टीसे देवीपत्तन जाते हैं । वहाँसे लगभग २० मील दक्षिण कुछ पूर्व देवीपत्तन है । दश बारह घण्टेमें बैलगाडी देवीपत्तनमें पहुँच जाती है ।

देवीपत्तनसे सेतुबन्ध रामेश्वरका क्षेत्र माना जाता है । वहाँ सुन्दरी देवी और तिलकेश्वर महादेवका मन्दिर है । देवीपत्तनके पूर्वोत्तर समुद्रकी खाडीमें नव पाषाण अर्थात् नवग्रह हैं, जिनको श्रीरामचन्द्रजीने सेतु बांधनेके समय स्थापन किया । उनमें ग्रहोंके कुछ आकार नहीं है इस लिये लोग उनको नव पाषाण कहते हैं। उनके पास समुद्रके जलमें रामचन्द्रका चरण पादुका, किनारेपर चक्रतीर्थ और वेङ्कटेशकी चतुर्भुज मूर्त्ति है । यात्रीगण चक्रतीर्थमें स्नान करके वहाँके देवताओंका दर्शन करते है ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण—(सेतुबन्धखण्ड, तीसरा अध्याय) सेतुमूलके समीप चक्रतीर्थ है, जो पहिले धर्मतीर्थ तथा धर्मपुष्करिणी नामसे प्रसिद्ध था । पूर्वकालमें धर्मने दक्षिण-समुद्रके तटपर बहुत काल तक महादेवजीका तप किया और स्नान करनेके लिये एक पुष्करिणी रची । शिवजी प्रगट होकर बोले कि हे धर्म ! तुम इच्छित वर माँगो । धर्म बोले कि हे नाथ ! मैं यही चाहता हूँ कि आपका वाहन होऊँ । शिवजीने धर्मको अपना वाहन (अर्थात् नन्दी बैल) बना लिया । उसके पश्चात् महादेवजी बोले कि हे धर्म ! तुम्हारा बनाया हुआ तीर्थ आजसे धर्मपुष्करिणी नामसे प्रसिद्ध होगा । कुछ समयके पश्चात् महर्षि गालव धर्मपुष्करिणीके तीरपर विष्णु भगवान्का ध्यान करने लगे । उस समय एक राक्षसने आकर मुनिको पकडा । मुनि विष्णुको पुकारने लगे । विष्णुकी आज्ञासे सुदर्शनचक्रने वहाँ आकर उस राक्षसका शिर काट लिया । उसके पश्चात् वह धर्मपुष्करिणीमें प्रवेश करगया । चक्रके निवास करनेके कारण धर्मपुष्करिणीका नाम चक्रतीर्थ होगया ।

(सातवाँ अध्याय) महिषासुरके संग्राममें जगदम्बाने उस असुरको एक मूका मारा । वह व्याकुल होकर भागा और दक्षिण समुद्रके तटपर जाकर दश योजन लम्बी चौड़ी धर्मपुष्करिणीके जलमें गुप्त होगया । भगवतीके जानेपर वहाँ आकाश वाणी हुई कि दैत्य धर्मपुष्करिणीके जलमें छिपा है । उस समय जगदम्बाकी आज्ञासे उनके वाहन सिंहने पुष्करिणीके सब जलको पीलिया । तब भगवतीने महिषासुरका शिर काट लिया और दक्षिण समुद्रके तटपर अपने नामसे नगर बसाया, वही देवीपुर और देवीपत्तन नामसे प्रसिद्ध हुआ ।

श्रीरामचन्द्रजीने शिवजीकी आज्ञासे देवीपत्तनके समीप अपने हाथसे नव शिला स्थापन किये । देवीपत्तनसे लङ्का तक १०० योजन लम्बा और १० योजन चौडा सेतु पांच दिनमें

पूरा हुआ । देवीपत्तनसे सेतुका आरम्भ हुआ, इस लिये देवीपत्तन सेतुमूल कहाया। सेतुमूलके पश्चिमका छोर दर्भशयनतीर्थ और पूर्वका छोर देवीपत्तन है । प्रथम नव पाषाणके समीप समुद्रमें स्नान करके चक्रतीर्थमें श्राद्ध करना चाहिये ।

(८ वां अध्याय) चक्रतीर्थके दक्षिणे भागमें वेतालवरद नामक तीर्थ है। (९ वाँ अध्याय) एक ऋषिके वचनके अनुसार सुकर्ण नामक दैत्य अपने भाई कपालस्फोटके साथ दक्षिण समुद्रके तटपर तीर्थमें पहुंचा । इतनेमें पवन चला, जिससे तीर्थके जल कण उड़कर कपालस्फोटके शरीरपर गिरे । जल कणोंके गिरतेही वह गालव मुनिके शापसे निवृत्त हो वेताल रूप छोड़ अपना पूर्व रूप अर्थात् ब्राह्मण-पुत्र विजयदत्त होगया । फिर जब उसने उस तीर्थमें स्नान किया तब मनुष्य देह छोडकर दिव्य स्वरूप हो स्वर्गमें चला गया। उस दिनसे उस तीर्थका नाम वेतालवरद हुआ।

(३७ वाँ अध्याय) देवीपत्तनसे पश्चिम दिशामे थोडी दूरपर पुलग्राम नामक पुण्य क्षेत्र है, जहाँसे रामचन्द्रने सेतुका आरम्भ किया । उसी स्थानमें क्षीर कुण्ड है। पूर्व कालमें जब मुद्गल मुनिने पुलग्राममें यज्ञ किया, तब विष्णु भगवान्‌ने प्रकट होकर वहाँ क्षीरकुण्ड बनादिया ।

दर्भशयन ।

देवीपत्तनसे लगभग २५ मील पश्चिम कुछ दक्षिण और पांवनसे लगभग पचास मील दक्षिण-पश्चिम समुद्रके किनारेसे ३ मील दूर दर्भशयन तीर्थ है । कोई कोई यात्री पांवनमें समुद्रकी नावपर सवार हो देवीपत्तन और दर्भशयन होकर तुतीकुडीमें जाकर रेलगाड़ीपर चढ़ते हैं । प्रति आदमीका भाड़ा लगभग एक रुपया लगता है । दर्भशयनके पास समुद्रके किनारेपर एक धर्मशाला है ।

दर्भशयनमें एक धर्मशाला है और खानेकी वस्तु मिलती है । वहाँके मुख्य देवता शेषशायी चतुर्भुज भगवान् है । उनकी मूर्त्ति मनुष्यके समान बड़ी है । मन्दिरके भीतरकी परिक्रमामें कोदण्डरामस्वामी अर्थात् श्रीरामचन्द्र, कल्याण जगन्नाथ और नृसिंहजी है । श्रीरामचन्द्रने लङ्कापर आक्रमण करनेके समय समुद्रसे मार्ग पानेके लिये उसी स्थानपर ३ दिनों तक दर्भ अर्थात् कुशके आसनपर शयन किया, इस कारणसे उस स्थानका नाम दर्भशयन पड़ा । दर्भशयन तीर्थ सेतुमूलका पश्चिम छोर है ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—वाल्मीकिरामायण–(लङ्काकाण्ड, २१ वाँ सर्ग) श्रीरामचन्द्र समुद्रके तीर अपने बाहुको तकिया बनाकर मौन हो कुशासनपर लेट गये । इस भांति उनको ३ रात बीतगई, किन्तु सागर प्रकट नहीं हुआ; तब वह महाक्रुद्ध हो इन्द्रवज्रके समान बाणोंको छोड़ने लगे । जब वायुसे युक्त समुद्रके जलका महावेग उत्पन्न हुआ (२२वाँ सर्ग) तब समुद्र मूर्तिमान होकर जलसे प्रकट हुआ और रामचन्द्रसे बोला कि हे महाराज ! विश्वकर्माके पुत्र नल वानर तुम्हारी सेनामें है । विश्वकर्माने उनको वरदान दिया है; वह मेरे जलके ऊपर सेतु बनावें । ऐसा समुद्रका वचन सुन नल आदि वानरोंने सेतु बनाया । सब सेना सेतुद्वारा समुद्र पार हुई ।

स्कन्दपुराण–(सेतुबंधखण्ड ७ वाँ अध्याय) सेतुमूलके पश्चिमका छोर दर्भशयनतीर्थ और पूर्वका छोर देवीपत्तनतीर्थ है ।

पन्द्रहवाँ अध्याय।

(मदरास हातेमें) तुतिकुड़ी, (समुद्रमें) सिलोन, (मदरास हातेमें) तिरुचेंदूर, तिरुनलवेली, पालमकोटा, पापनाशनतीर्थ, तोताद्री, कुमारीतीर्थ, तिरुवंद्रम्, कोचीन और राजाका कोचीन।

तुतिकुड़ी।

दर्भशयन तीर्थसे लगभग ४० मील (पावनसे लगभग ९० मील) दक्षिण-पश्चिम तुतिकुड़ीका बन्दरगाह है, जिससे ८ मील दूर तुतिकुडीका रेलवे स्टेशन है। मदुराके रेलवे स्टेशनसे ८१ मील दक्षिण मनियार्चीका रेलवे जंक्शन और मनियार्चीसे १८ मील दक्षिण पूर्व तुतिकुड़ीका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके तिरुनलवेली जिलेमें (८ अंश, ४८ कला, ३ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ११ कला, ३७ विकला पूर्व देशान्तरमें) तुतिकुड़ी बन्दरगाहके पास तुतिकुडी कसवा है, जिसको द्रविड़ियन लोग तुतुगुडी और अङ्गरेजी लोग तूतीकोरिन कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तुतिकुडीमें २५१०७ मनुष्य थे, अर्थात् १३७१३ पुरुष और ११३९४ स्त्रियाँ। इनमें १४८९९ हिन्दू, ७५९१ क्रस्तान, २५८७ मुसलमान, २८ बौद्ध और २ अन्य थे।

तुतिकुडीमे मातहत कलक्टर रहते हैं। वहाँ कई एक गिरजे हैं। तुतिकुडी विदेशी सौदागरीके विषयमें मदरास हातेमें दूसरा और भारतवर्षमें ६ ठा कसवा है। वहाँसे रूई, काफी, मवेसी इत्यादि वस्तु अन्य स्थानोंमें और चावल, मवेसी, घोडे, भेड़, मुर्गे खासकर सिलोनमें भेजे जाते हैं। वहाँ बहुतसे अङ्गरेज सौदागर और रूई दवानेके लिये धूँयेकी कल हैं। कसवेके कूपका पानी खारा है, ताम्रपर्णी नदीसे पानी लाया जाता है। कसवेके आस पासकी भूमि अच्छी नहीं है, उसपर वृक्ष और पौधे प्रायः नहीं होते।

तुतिकुडीके बन्दरगाहका पानी केवल ८ फीट गहरा है, इस लिये किनारेसे २¾ मील भीतर समुद्रमें लंगर पर जहाज तथा आगबोट ठहरते हैं। २० टन वाली नावोंपर जहाजोका माल किनारे लाया जाता है। हालमें हेयर टापूपर एक लाइटहाउस बना है। तुतिकुडीके पासके समुद्रमें मोती वाले सीप और शंख निकाले जाते हैं। तिरुनलवेली और मदुरा जिलेसे बहुतसे कुली काफी रोपने और अन्य काम करनेके लिये सिलोन भेजे जाते हैं।

इतिहास—पहिले तुतिकुड़ी बहुत प्रसिद्ध स्थान था। लोग कहते हैं कि सन् १७०० में उसमें ५० हजार मनुष्य वसते थे। १७ वीं सदीमें हालेण्ड वालोंने पोर्चुगीजोंसे इसको लेलिया। सन् १७८१ में जब अङ्गरेज और हालेण्ड वालोसे लड़ाई आरम्भ हुई तब तुतिकुड़ी हालेण्ड वालोंके अधिकारसे निकल गई।

सिलोन।

तुतिकुडीके बंदरगाहसे लगभग २०० मील दक्षिण—पूर्व सिलोन अर्थात् लंका टापूका सदर स्थान कोलंबो शहर है। साप्ताहिक आगबोट तुतिकुडीसे कोलम्बोको जाता है और कोलंबोसे तुतिकुडी आता है और प्रति सप्ताहमें दो अथवा तीन बार छोटे जहाज जाते हैं।

सिलोनका नाम सिंहलद्वीप—सुद्वीप और लंका है। वहांके निवासी जो बौद्धमतके हैं, सिंहाली कहलाते है। सिलोन टापू उत्तरसे दक्षिण तक २७० मील लंबा और पूर्वसे पश्चिम तक अधिकसे अधिक १४० मील चौड़ा अर्थात् लगभग २५००० वर्गमीलमें है। उस टापूमें ३० लाखसे अधिक मनुष्य वसते हैं, जिनमें २० लाखसे अधिक वहांके निवासी सिंहाली लगभग ८ लाख तामिल और ६ हजारसे कम खालिस युरोपिन है।

उस टापूके मध्य भागकी भूमि समतल है; किन्तु समुद्रके पासकी पृथ्वी नीची है। तीन चार प्रसिद्ध पर्वत हैं। टापूमे महावलीगङ्गा कल्यानीगङ्गा, कालूगङ्गा और वेलवेगङ्गा प्रसिद्ध नदी है। सिलोन एक गवर्नरके अधीन ७ भागोमें विभक्त है। उसमें कोलम्बो निङ्गपू, जाफना, कलतूरा, चिकामली, कांडी, अनिरुद्धपुर इत्यादि १० प्रसिद्ध कसबे है। कोलम्बो सदरस्थान है, जिसमें लगभग १ लाख मनुष्य बसते है। जाफनामें बहुत नमक तैयार होता है। वहाँसे नमक मदरास और कलकत्तेमें भेजा जाता है। पूर्व समयमें कांडी कसवा कांडी वंशेक राजाओंकी राजधानी था। एक समय अनिरुद्धपुर सिलोनकी राजधानी था। सिलोनकी खानोंसे अकीक, लाल, पोखराज, और संगशव जवाहिरात निकलते हैं। टापूमे दारचीनी, नारियल, कहवा, सुपारी आदि बहुत होती हैं। चौपाया जानवरोंमें हाथी बहुत होते हैं। मनारकी खाडीमें मोती निकलते हैं।

इतिहास—सन् १५०५ ईस्वीमें पोर्चुगलवाले पोर्चुगीज लोग सिलोनमें उतरे, उन्होंने शीघ्रही कोलम्बोमें एक कोठी बनाई। वे लोग देशियोंके साथ बराबर लड़ते रहे, तथा कई बार परास्त हुए। सन् १६०२ में हालेण्ड वाले सिलोनमें आये। उन्होंने सन् १६३८ में देशियोंमें मिलकर पोर्चुगीजोंसे लड़ाई आरम्भ की। सन् १६५८ में लड़ाई खतम हुई। हालेण्ड वाले वहाँके मालिक रह गये। उन्होंने कोलम्बोमें किला बनाया, जिसके कई एक बैटरी अब तक समुद्रके किनारेपर विद्यमान हैं। सन् १७९६ मे अङ्गरेजोंने हालेण्डवालोंको निकाल कर सिलोनको अपने अधिकारमें कर लिया, तबसे वह अङ्गरेजी गवर्नमेंटके अधीन है।

तिरुचेंदूर।

तुतिकुडी कसबेसे १८ मील दक्षिण समुद्रके किनारेपर तिरुनलवेली जिलेमें तिरुचेंदूर एक कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य गणनाके समय ७५८२ मनुष्य थे; अर्थात् ६३८६ हिन्दू, ९८४ कृस्तान और २१२ मुसलमान। तिरुचेंदूरमें समुद्रके किनारेपर सुब्रह्मण्य अर्थात् शिवजीके पुत्र स्कन्दजीका बड़ा मन्दिर है। मन्दिरमें सुन्दर शिलालेख हैं; वहाँ यात्री बहुत आते हैं। मदरास हातेमें स्कन्दके ५ मन्दिर प्रधान हैं;—(१) बल्लारी जिलेमें बल्लारी और हुसपेटके बीचमें; (२) दक्षिणी आरकाट जिलेके तिरुवन्नामलईमें; (३) उत्तरी आरकाट जिलेके तिरुत्तनीमें (आरकोनम् जंक्शनसे ८ मील पश्चिमोत्तर) (४) तिरुनलवेली जिलेके तिरुचेंदूरमें और (५) मइलममें। पाँचों स्थानोंमें तिरुचेन्दूर अधिक प्रख्यात है।

वहाँ मन्दिरके खर्चेके लिये भारी आमदनी हैं, प्रति वर्ष एक बडा मेला होता है, जिसमें बहुतसी मवेशियाँ विकनेके लिये आती हैं।

तिरुनलवेली।

तुतिकुड़ीके रेलवे स्टेशनसे १८ मील पश्चिमोत्तर (मदुरासे ८१ मील दक्षिण) मनियार्चीका रेलवे जंक्शन और मनियार्चीसे १८ मील दक्षिण-पश्चिम तिरुनलवेलीका रेलवे स्टेशन है। ताम्रपर्णी नदीके बाये किनारेसे $1\frac{1}{2}$ मील (८ अंश, ४३ कला, ४७ विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, ४३ कला, ४९ विकला पूर्व देशान्तरमे) मद्रास हातेके तिरुनलवेली जिलेमें तिरुनलवेली कसबा है, जिसको तीन्नेवेली भी कहते है। ताम्रपर्णीनदीपर ११ मेहराबियोंका पुल बना है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तिरुनलवेली कसबेमें २४७६८ मनुष्य थे; अर्थात् २२९४८ हिन्दू, १५०४ मुसलमान और ३१६ कृस्तान।

तिरुनलवेली कसबेमे एक कालिज, एक बडा अस्पताल, एक मिशन और एक बड़ा शिवमन्दिर है। कसबेसे ३ मील पूर्व ताम्रपर्णीके दहिने तिरुनलवेली जिलेका सदर स्थान पालमकोटा है।

बड़ा शिवमन्दिर—तिरुनलवेलीका शिवमन्दिर ७५० फीट लम्बा और ५८० फीट चौड़ा अर्थात् १६ बीघेमें है। वह मन्दिर मदुराके बडे मन्दिरके समान दो भागोंमें बँटा हुआ है। दक्षिणके आधे भागमे पार्वतीका और उत्तरके भागमे शिवका मन्दिर है। दोनोंमें तीन तीन गोपुर बने हुए हैं, जिनमेंसे पूर्ववाले गोपुर प्रधान हैं, उनके बाहर पेशगाह बने हुए है। भीतर जानेपर एक बड़ा पेशगाह मिलता है, जिसके दहिने तेप्पकुलम् अर्थात् नाव चलनेका सरोवर, जिसमे उत्सवोंके समय मन्दिरकी उत्सव मूर्त्तियाँ नौकापर चढाकर फिराई जाती है और बाये सहस्रस्तम्भ मण्डपम् है। वह मण्डपम् उस घेरेकी सम्पूर्ण चौडाईमें लम्बा और ६४ फीट चौड़ा है। उसमे १०० स्तम्भोंकी १० पंक्तियाँ है। मन्दिर दर्शनीय है।

इतिहास—मदुराके नायकोंकी हुकूमतके समय उनके सूबेदार तिरुनलवेली कसबेमें रहते थे। लगभग सन् १५६० में मदुराके विश्वनाथ नायकने तिरुनलवेली कसबेको सुधारा और अनेक मन्दिर तथा अन्य इमारतोंको बनाया।

पालमकोटा।

मद्रास हातेके तिरुनलवेली जिलेमें तिरुनलवेली कसबेसे लगभग ३ मील पूर्व ताम्रपर्णी नदीके दहिने किनारेसे १ मील दूर तिरुनलवेलीके रेलवे स्टेशनके पास तिरुनलवेली जिलेका सदर स्थान पालमकोटा एक कसबा है। तिरुनलवेली कसबेसे पालमकोटा तक उत्तम सड़क बनी हुई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पालमकोटामें १८६८६ मनुष्य थे, अर्थात् १५७९३ हिन्दू, २१८४ कृस्तान और ७०९ मुसलमान।

पालमकोटामें सरकारी कचहरियाँ, जेलखाना, अस्पताल और कई एक स्कूल हैं। वहाँका पुराना किला तोड़ दिया गया है। ताम्रपर्णीनदी और किलेके बीचमें ११० फीट

ऊँचा एक गिरजा है। तिरुनलवेली कसबेके बहुत अफसर पालमकोटामें रहते हैं। पालमकोटा स्वास्थ्यकर स्थान है।

तिरुनलवेली जिला—इसके उत्तर और पूर्वोत्तर मदुरा जिला; दक्षिण-पूर्व और दक्षिण मनारकी खाड़ी और पश्चिम तिरुवांकूरका राज्य है। जिलेकी सबसे अधिक लम्बाई उत्तरसे दक्षिणको १२२ मील और सबसे अधिक चौड़ाई पूर्वसे पश्चिमको ७४ मील है। तिरुनलवेली जिलेमें बडा मैदान है। जिलेकी पश्चिमी सीमाके पासकी भूमि मैदानसे ४००० फीट ऊँची है। ६०० से अधिक वर्गमीलके क्षेत्रफलमें ऊँची भूमि और पहाड़ियाँ हैं। लगभग ३०० वर्गमीलमें जङ्गल लगे हैं। जिलेकी ३४ नदियोंमें ताम्रपर्णी नदी प्रधान है, जो तिरुनलवेली और पालमकोटा कसबेके बीच होकर गई है। जिलेके उत्तरी भागमें वृक्ष कम हैं। नदियोंके आस पास धान इत्यादिके खेत और विविध भांतिके वृक्ष हैं। समुद्रके पास बहुतसे चट्टान; रेती और नमकदार दलदल है; बस्ती बहुत कम हैं।

तिरुनलवेली जिलेमें हिन्दू लोगोंके ३ पवित्र स्थान हैं;—(१) समुद्रके पास तिरुचेन्दूर, (२) ताम्रपर्णी नदीके पास पापनाशनतीर्थ और (३) ताम्रपर्णीकी सहायक चित्तारनदीके पास कुट्टालम्। पापनाशन और कुट्टालम्के पासकी पहाडियोंके पादमूलके निकट सुन्दर जल प्रपात है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय तिरुनलवेली जिलेके ५३८१ वर्गमील क्षेत्रफलमें १६९९७४७ मनुष्य थे; अर्थात् १४६८९७७ हिन्दू, १४०९४६ कृस्तान, ८९७६७ मुसलमान और ५७ अन्य। हिन्दुओंमे ३६२३२५ वेल्लाल (खेतिहर जाति), ३३१३९४ वनिया (जाति विशेष), २३२४५७ सानान (मदक), १२३९२५ परिया (परयन) ९०११२ इडैयन (भेड़िहर); ६७९३८ कम्भाड़न (लोहार), ५९१०२ ब्राह्मण, ४३७१८ कैकलर (कपडे बिननेवाले), २४३९७ सतानी (दोमसला), २०७८९ अंबटन (नाई), २०६५४ वन्नान (धोबी), १५१९७ सेट्टी (सौदागर), १०७२४ कुसवन (कुम्भार), ५८१४ क्षत्री, ५५७३ सेंवड़वन (मछुहा), १००८ कणक्कन (लिखनेवाले) बाकीमें अन्य लोग थे। कृस्तानोंमे ५६६ यूरेशियन, १२५ यूरोपियन और अमेरिकन थे। इस जिलेके समान हिन्दुस्तानके किसी जिलेमें कृस्तान नहीं हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तिरुनलवेली जिलेके कसबे तुतिकुडीमें २५१०७ तिरुनलवेलीमें २४७६८, श्रीवल्लीपुत्तूरमें २१४४८, पालमकोटामें १८६८६, कुलसेखरन् पट्टनम्में १५९२४, विरुदुपट्टीमें १४०७५, तेन्काशीमें १२८६१, शिवकाशीमें १२१८४, वीरवनल्लूरमें १३९५१, राजापालयम्में १३३०१, कायरपट्टनम्में ११४६५ और कलडैकुरचीमें ११०९६ मनुष्य थे। तिरुनलवेली जिलेके लगभग ४० कसबेमें ५०० से अधिक मनुष्य हैं। इस जिलेकी प्रधान भाषा तामिल है; कुछ लोग तैलङ्गी बोलते हैं। जिलेमें तुतिकुडी प्रसिद्ध वन्दरगाह है। समुद्रसे शंख और मोतीके सीप निकाले जाते है।

तेन्काशी—तिरुनलवेली कसबेसे २५ मील पश्चिमोत्तर तिरुनलवेली जिलेमें तालुकका सदर स्थान तेन्काशी एक पवित्र कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १२८६१ मनुष्य थे। एक सड़क तिरुनलवेलीसे तेन्काशी होकर कौलन कसबेको गई है। तेन्काशीमें आस पासके देशोंसे तिजारत होती है। तामिल भाषामें तेन्का अर्थ दक्षिण है।

उस स्थानको अधिक पवित्र समझकर वहाके लोगोंने तेन्काशी अर्थात् दक्षिणकी काशी उसका नाम रक्खा था। तेन्काशीमें तिरुवांकूर जानेवाली सड़कके निकट एक सुन्दर मन्दिर है; जिसका लोग बड़ा मान करते हैं।

कुट्टालम्—पालमकोटा कसबेसे ३५ मील दूर तेन्काशीके तालुकमें चिट्टार नदीके पास कुट्टलम् एक पवित्र गॉंव और जलप्रपातोके होनेके कारण प्रसिद्ध है। वहॉंके छोटे जलप्रपातके नीचे (जो१००फीट ऊँचा है) एक सुन्दर कुण्डे और एक मन्दिर है। यात्री लोग जलप्रपातके कुण्डमें स्नान करके मन्दिरमें देव दर्शन करते हैं। जलप्रपातोंका दृश्य आश्चर्यजनक है। उनके आस पास अनेक बङ्गले वने हुए हैं, जिनमे यूरोपियन लोग पालमकोटा और तिरुवन्द्रमूसे आकर जूनसे अकतूबर तक रहते हैं।

श्रीवल्लीपुतूर—मदुराके रेलवे स्टेशनसे ४४ मील दाक्षिण सातूरका रेलवे स्टेशन है जिससे लगभग २५ मील पश्चिम ओर तिरुनलवेली जिलेमें तालुकका सदर स्थान श्रीवल्लीपुतूर एक कसबा है, जिसमें सन् १८९१ में २१४४८ मनुष्य थे। वहाँ रङ्गमन्दार भगवान्का बड़ा मन्दिर है। मन्दिरमें श्रीलक्ष्मीजी और गरुडके सहित रङ्गमन्दार भगवान् विराजते हैं। वहॉं वटपत्रपर भगवान् शयन करते है। मन्दिरके पश्चिमोत्तर पहाडीके ऊपर श्रीनिवास भगवान् हैं और मन्दिरके निकट एक सरोवर है। श्रीवल्लीपुतूरमें प्रति वर्ष रथयात्राका मेला होता है। मेलेमें लगभग १०००० मनुष्य एकत्र होते हैं।

इतिहास—तामिल लोगोंकी कहावतके अनुसार चेरा, चोला और पांड्य वंश वाले ये तीनों राजा ताम्रपर्णी नदीके पास कोलकाई नगरमें रहकर हुकूमत करते थे। पीछे पांड्यवंशके राजा वहांही रहगये और चेरा तथा चोला वंशके राजाओंने उत्तर और पश्चिम जाकर अपना अपना खास राज्य नियत किया। पीछे पांड्य वंशके राजाओंकी राजधानी मदुरा हुआ। कोलकाईके पास समुद्रसे मोती वाली सीप निकलती थी। वह जगह अब समुद्रसे लगभग ३ मील दूर है। जब कोलकाईसे समुद्र हटगया, तब कायल बन्दरगाह हुआ। कुछ समयके बाद कायल भी समुद्रसे दूर होगया। उसके पश्चात् पोर्चुगीजोंने तुतिकुडीको, जो एक छोटा गॉंव था, प्रसिद्ध बन्दरगाह बनाया।

ऐतिहासिक समयके आरम्भसे सन् १०६४ तक तिरुनलवेली जिला पांड्य वंशके राजाओंके अधिकारमे था। सन् १०६४ मे राजेन्द्र चोलाने, जो सुन्दर पांड्यके नामसे मशहूर हुआ, पांड्य वंशके राजाको जीता। उसके पश्चात् २५० वर्ष तक जिलेमें गड़वड था। सन् १३१० में मुसलमानोंने उस जिलेपर आक्रमण किया। उसके वाद फिर पांड्य वंशके राजाका अधिकार हुआ। तबसे मुसलमान लोग, पाण्ड्य वंश वाले और उस देशके अन्य लोग राज्यके लिये झगड़ा करते रहे। सन् १५६५ में मदुराके नायककी हुकूमत कायम हुई। पाण्ड्य वंशके राजाओके राज्यकी घटतीके समय तिरुनलवेली मदुराके नायकके अधिकारमे हुई। लगभग सन् १७४४ में तिरुनलवेली आरकाटके नवावके अधिकारमे हुई, किन्तु वास्तवमे वह कई एक स्वाधीन प्रधानोके अधीन रही। जिलेमें लूट पाट और मार काट होती रही।

सन् १७८१ में आरकाटके नवावने ईष्टइण्डियन कम्पनीको तिरुनलवेली जिलेकी मालगुजारीका अधिकार सौंपा। सन् १७८२ में एक अङ्गरेजी अफसरने जिलेके ३ किलोको

जीता और चन्द पालेगारोंको अपने अख्तियारमें करलिया । सन् १७९९ में जब पालेगार बागी हुए तब उनसे हथियार छीनलिये गये और उनके किले नाकाम करदिये गये । सन् १८०१ में फिर वलवा हुआ, जो दबाया गया। उसी साल तिरुनलवेलीके साथ सम्पूर्ण कर्नाटक अङ्गरेजी अधिकारमें होगया।

पापनाशनतीर्थ ।

पालमकोटा कसवेसे २९ मील (८ अंश, ४८ कला, उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, २४ कला, पूर्व देशान्तरमें) मदरास हातेके तिरुनलवेली जिलेके अम्बासमुद्रम् नामक तालुकमें अम्बासमुद्रम् गाँवसे लगभग ६ मील पश्चिम ताम्रपर्णी नदीके अन्त वाले जलप्रपातके पास पापनाशन नामक पवित्र गाँव है । वहाँ ताम्रपर्णी नदी पहाड़ीके ऊपरसे नीचे गिरती है। बड़े जलप्रपात (बड़े झरने) की बड़ी चौड़ी धारा पहाड़ीसे ८० फीट नीचे देशके सतहपर जोर शोरसे गिरती है । जलप्रपातके निकट एक पूज्य मन्दिर है । वहाँ ब्राह्मण लोग मछलियोंको खिलाते हैं और बहुतसे यात्री जाते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–शिवपुराण–(विद्येश्वरसंहिता, १० वाँ अध्याय ताम्रपर्णी नदीमें स्नान करनेसे ब्रह्मलोक मिलता है, उसके किनारेपर स्वर्ग देने वाले बहुतसे क्षेत्र विद्यमान है ।

कूर्मपुराण—(उपरिभाग, ३६ वाँ अध्याय) तीनों लोकोंमें विख्यात ताम्रपर्णी नदीके जलमें तर्पण करनेसे पितर लोगोंके सम्पूर्ण पाप नाश होकर उनकी मुक्ति होजाती है ।

तोताद्री ।

तिरुनलवेलीके रेलवे स्टेशनसे लगभग ४० मील दूर श्रीरामानुजस्वामीके संप्रदायकी मूलगद्दीका स्थान तोताद्री है । तिरुनलवेलीसे वैलगाड़ी तोताद्री जाती हैं। वहाँ तोताद्रीनाथ भगवान्‌का बड़ा मन्दिर क्षीराब्धिपुष्करिणी नामक सरोवर और रामानुजीय संप्रदायकी मूलगद्दी है । द्रविड़ देशमें रामानुजीय संप्रदाय अर्थात् आचारी लोगोंकी ८ गद्दी हैं;–उनमेंसे तोताद्री, मैलकोटा और वेंकटाचल इन ३ गद्दियोंपर विरक्त आचारी और विष्णुकांची, श्रीरङ्गम् आदि ५ गद्दियोंपर गृहस्थ आचारी रहते है । सम्पूर्ण गद्दियोंमें तोताद्रीकी गद्दी मुख्य है, इस लिये वह मूलगद्दी कहलाती है । वहाँ बहुतसे आचारी यात्री जाते है । रामानुजीय संप्रदायका वृत्तान्त भारतभ्रमणके इसी खण्डमें भूतपुरीके बयानमें लिखा है ।

कुमारीतीर्थ ।

तिरुनलवेली (तिने ·ली) के रेलवे स्टेशनसे साठ सत्तर मील दक्षिण हिन्दुस्तानके अन्तमें उसके दक्षिणके नोकके भीतर (८ अंश ४ कला, उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, ३६ कला, पूर्व देशान्तरमें) तिरुवांकूर राज्यके कुमारी अन्तरीपमें समुद्रके निकट कुमारी नामक बस्ती है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २२४७ मनुष्य थे । कुमारी गाँवमें कुमारीदेवीका बड़ा मन्दिर बना हुआ है । देवीके भोगरागमें बड़ा खर्च होता है । उनके बहुमूल्य भूषण हैं । वहाँ तिहवारोंके समय बहुतसे यात्री जाते हैं । इसी कुमारीदेवीके नामसे उस अन्तरीपका नाम कुमारी अन्तरीप पड़ा है ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–महाभारत–(वनपर्व, ८३ वॉ अध्याय) कन्यातीर्थमे ३ दिन व्रत करनेसे १०० दिव्य कन्या मिलती है और स्वर्ग लोकमे निवास होता है। (८५ वॉ अध्याय) यात्रियोंको उचित है कि कावेरीनदीमें स्नान करनेसे पश्चात् समुद्रके किनारेपर जाकर कन्यातीर्थका स्पर्श करे, जिससे उसका सम्पूर्ण पाप विनाश होजायगा।

मत्स्यपुराण––(१९२ वॉ अध्याय) जो पुरुष कन्यातीर्थके सङ्गमपर स्नान करता है, उसको देवी पार्वतीजीका स्थान प्राप्त होता है।

श्रीमद्भागवत—(दशम स्कंध, ७९ वॉ अध्याय) बलदेवजीके सेतुबंध रामेश्वरके दर्शन करनेके पश्चात् कृतमाला और ताम्रपर्णीनदीमें स्नान करके मलयाचल और कुलाचल पर्वतमें जाकर अगस्त्य मुनिकी स्तुति की। उसके अनन्तर उन्होंने दक्षिणके समुद्रके तटपर जाकर कन्या नामक देवीका दर्शन किया।

तिरुवन्द्रम्।

तिरुनलवेली (तिन्नेवेली) के रेलवे स्टेशनसे साठ सत्तर मील पश्चिम कुछ दक्षिण पश्चिमी घाटके समुद्रसे २ मील दूर (८ अंश २९ कला, ३ विकला, उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, ५९ कला, ९ विकला, पूर्व देशान्तरमे) मद्रास हातेके तिरुवांकूर राज्यके तिरुवंद्रम् तालुकमे तिरुवांकूरके महाराजकी राजधानी तिरुवंद्रम् कसबा है, जिसको द्रविडियन् लोग तिरुवन्दनपुरम् कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तिरुबंद्रम्मे २७८८७ मनुष्य थे, अर्थात् १४७०७ पुरुष और १३१८० स्त्रियॉ। इनमे २४८०४ हिन्दू, १६१० मुसलमान और १४७३ कृस्तान थे।

तिरुवन्द्रम् कसबेके नीचेका भाग रोगवर्द्धक है। पानीके निकासका मार्ग अच्छा नहीं है नारियल आदिके घने वृक्षोंके रहनेके कारण स्वच्छ पवनका आवागमन कम रहता है। किले और कसबेका एक बडा भाग नीची भूमिपर है। कसबेमें बहुत सी अच्छी सड़के बनी हुई है।

तिरुवंद्रम्में १ डाक्टरीका स्कूल, १ लडकियोंका स्कूल, १ हाई स्कूल, ५ दवाखाना, ४ बीमारखाने, १ किला, बहुतेरे आफिस, अङ्गरेजी रेजीडेण्टकी कोठी, महाराज कालिज, एक अबजरवेटरी, २ जेलखाने और कई धर्मशालाये है। पबलिक बागमें देखने लायक नेपियर मिउजियम, बना है। कसबेसे उत्तर फौजी छावनी है, जिसमे हथियारखाना, अस्पताल और फौजी अफसरोंकी कोठियॉ बनी हुई है। एक पहाडीपर एक सुन्दर महल बना है, जिसमे कभी कभी महाराज रहते है। तिरुवंद्रम्के आस पासका दृश्य सुन्दर है।

ऊँची दीवारसे घेरा हुआ तिरुबंद्रम्का किला है। किलेके भीतर पद्मनाभका बड़ा मन्दिर और महाराज तथा राजघरानेके अनेक राजकुमारो और राजकुमारियोंके दर्शनीय महल बने हुए हैं। इनके अतिरिक्त किलेके भीतर एक टकशाल और चन्द आफिस है।

पद्मनाभका मन्दिर–तिरुवंद्रम्के किलेके भीतर पद्मनाभ नारायणका विशाल कोइल अर्थात् मन्दिर है। मन्दिरके बगलोमे दीवार और अनेक गोपुर बने हुए हैं। विमान अर्थात् निज मन्दिरके भीतर पद्मनाभ भगवान्की विशाल मूर्त्ति सिंहासन पर शयन करती है। यात्री लोग मन्दिरके एक द्वारसे भगवानके मुखमण्डलका, दूसरे द्वारसे नाभिका और तीसरे द्वारसे चरणका दर्शन करते हैं। पद्मनाभका मन्दिर तिरुवंद्रम्से पहिलेका बना हुआ बहुत

पुराना है। महाराजकी ओरसे मन्दिरकी मरम्मत पर बड़ा ध्यान रहता है। मन्दिरके खर्चके लिये ७५ हजार रुपये आमदनीकी भूमि है। भगवान्‌के भोगरागकी बड़ी तैयारी रहती हैं। यात्री लोग वहाँका प्रसाद खाते है। तिरुवांकूर राजघरानेके राजकुमारोंके बहुतेरे मजहबी रसम पद्मनाभके पास होते हैं।

महाभारत—वनपर्वके ८३ वें अध्यायमें लिखा है कि तीर्थसेवी पुरुषको पार्वतीके स्थानका दर्शन करके पद्मनाभ नारायणका दर्शन करना चाहिये। उनके दर्शन करनेवाला पुरुष प्रकाशमान होकर विष्णुलोकमें जाता है।

पद्मनाभसे दश बारह मील पूर्व केशव भगवान्‌का विशाल मन्दिर है। पद्मनाभके समान केशव भगवान् भी शयन करते हैं। एक द्वारसे उनके मुखमण्डलका; दूसरे द्वारसे नाभिका और तीसरे द्वारसे चरणका दर्शन होता है।

पद्मनाभसे लगभग ३० मील उत्तर जनार्द्दन भगवान्‌का मन्दिर है। मन्दिरमें भगवान्‌की विशाल मूर्त्ति खडी है।

तिरुवांकूरका राज्य—यह राज्य हिन्दुस्तानके दक्षिणप्रान्तमें मदरास हातेके पश्चिमी किनारेपर कन्याकुमारीसे कोचीन तक फैला है। इसके उत्तर कोचीनका राज्य; पूर्व मदुरा और तिरुनलवेली जिला और दाक्षिण तथा पश्चिम हिन्दका समुद्र है। इसकी सबसे अधिक लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तक १७४ मील और सबसे अधिक चौड़ाई ७५ मील तथा इसका क्षेत्रफल ६७३० वर्गमील है। इस राज्यसे महाराजको लगभग ६६००००० रुपया वार्षिक मालगुजारी आती है, जिसमेंसे अङ्गरेज सरकारको ८००००० रुपया दिया जाता है। इस राज्यमें ३१ तालुक हैं। राज्यका प्रधान कसबा तिरुवन्द्रम् है, जिसमें महाराज रहते है। राज्यमें ४ जेलखाने है–दो तिरुवन्द्रममें, एक कीलन छावनीमें और एक अलोपीमें। महाराजका सैनिक बल—४ तोप, ३० गोलंदाज, ६० सवार और १३६० पैदल हैं।

तिरुवांकूरका राज्य दक्षिण भारतके सबसे अधिक सुन्दर भागोंमेंसे एक है। इसके पूर्व सीमाकी पहाड़ियाँ, जो चन्द स्थानोंमें समुद्रके जलसे लगभग ८००० फीट ऊँची हैं, सुन्दर जंगल तथा पौधोंसे हरी भरी है। पहाड़ी देश फैला हुआ है। उत्तरकी पहाडियाँ ८००० फीट तक ऊँची हैं। चन्द स्थान अगम हैं। पहाड़ियोंमें सबसे अधिक प्रसिद्ध अनामलई पहाड़ीका भाग है। दक्षिण ओर अगस्त्येश्वरमलई नामक पवित्र चोटी है, जिससे ताम्रपर्णी नदी निकली है। तिरुवांकूरकी पहाड़ियोंमे एक पहाड़ी समुद्रके जलसे ८८४० फीट ऊँची है। इतनी ऊँची कोई पहाड़ी हिमालयसे दक्षिण नहीं है।

समुद्रके आस पास बहुत बस्तियाँ, धानके खेत और नारियल तथा ताड़के सुन्दर जङ्गल है। समुद्रके पास चाह और काफी रोपे जाते हैं; धान, नारियल, ताड़, मिर्च, एरका फल इत्यादि बहुत पैदा होते हैं और बेशकीमती लकड़ी होती है। समुद्रके किनारेपर नदियोंके फैलनेसे अनेक झील बन गई हैं। नदियोंसे स्थान स्थानमें नहर निकाली गई हैं। पहाड़ियोंसे बहुतसी छोटी नदियाँ निकली हैं। कोई प्रसिद्ध खान नहीं है, किन्तु लोहा बहुत होता है। फिटकरी; गन्धक इत्यादि धातुओंकी खानि हैं; परंतु किसीमें काम नहीं होता है। हाथी, बाघ, तेंदुए, भालू तथा अनेक भांतिकी हरिन आदि बहुत वनजंतु होते हैं। हाथीके दांतोंसे महाराजको बड़ी आमदनी है।

तिरुवांकूर राज्यमें एरिया ५६ नामक पवित्र स्थान है, जहाँ एक बडा मंदिर है और बहुत धर्मशालायें बनी हुई हैं। महाराजकी ओरसे उस मंदिरके खर्चेके लिये प्रति वर्ष बहुत रुपया दिया जाता है।

तिरुवांकूर राज्यमे सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय २५५७८४० और सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय २४०११५८ मनुष्य थे, अर्थात् १७५५६१० हिंदू, ४१८५४२ कृस्तान, १४६९०९ मुसलमान और ९७ यहूदी। हिंदुओंमे ४६४२३९ नायर, १२८६०० सानान, ९२५७८ कम्भाडन (लोहार), ६६४५४ परयन्, ४५५८३ वेल्लाल (खेतिहर), ३७१३८ ब्राह्मण,२२५२६ बनिया (जाति विशेष), २१८५२ सेट्टी (सौदागर), १४५७८ अम्बटन (नाई), ११९५२ वन्नान (धोबी), बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे। राजपूत केवल २४४०थे। कोचीनके समान तिरुवांकूर राज्यमें भी बहुत कृस्तान हैं।

सन् १८९१की मनुष्य-गणनाके समय तिरुवांकूर राज्यके कसबे तिरुवन्द्रम्मे२७८८७, अलेपीमें २२७६८, कीलनमें १५३७५ और नागर कोयलेम ११९८७ मनुष्य थे। इनके अलावे कोटायल इत्यादि कई अन्य कसबे है। इनमे कीलनमें महाराजकी फौज रहती हैं; अलेपी, कीलन, मनारगुडी इत्यादि बन्दरगाह है।

मनुष्य–संख्याके ५ हिस्सोमेंसे लगभग ४ हिस्से लोग मलेयालम् और १ हिस्सा लोग तामिलभाषा बोलते हैं। मलेबारके लोगोंकी चाल विचित्र है। नम्बूरी ब्राह्मणोमे केवल बड़ा लडका विवाह करता है और अपने पिताके सम्पूर्ण धन सम्पत्ति और मिलकियतका वारिस होता है, अन्य पुत्रोंको अपने पिताकी किसी चीजपर दावा नहीं है। नम्बूरी ब्राह्मण लोग अपनी पुत्रियोंका विवाह बडी अवस्था होजानेपर भी जल्दी नहीं करते। उनके मतमें मरनेके समय तक पुत्रियोंको कुमारी रहना चाहिये। कितनी पुत्री मरनेके समय तक विन व्याही हुई रह जाती हैं। यह चाल पूर्व समयसे उन लोगोंमें चली आती है। महाभारत-वनपर्वके ८८ वे अध्यायमें लिखा है कि पाण्ड्य देशमे बहुतसी पवित्र स्त्रियाँ ऐसी हैं जो अपना व्याहही नहीं करती, उसी देशमे ताम्रपर्णी नदी बहती है।

नायर लोगोंकी लडकियाँ लडकपनमें व्याही जाती है, किन्तु युवा होनेपर किसी ब्राह्मण अथवा अपनी जातिके पुरुषको वे अपना पति बनाकर उसके साथ रह सकती हैं। इसमे उसका विवाहित पति कुछ दावा नहीं कर सकता है। युवा युवतीको एक सारी और कुछ गहने तथा खिलौने दे देवे तो दोनोमे व्याह सिद्ध होजाता है। युवा युवतीको अथवा युवती युवाको अपनी इच्छानुसार छोड सकती है। एक युवतीको एकही समयमें कई पति होना नाजायज नहीं है, किन्तु यह रीति अब बहुत घट गई है। मलेबारकी रीतिके अनुसार नायरोमें बहिनके वंशवाले धन जायदादके वारिस होते है। जिसके बहिन अथवा बहिनकी संतान नहीं है, वह अपनी खानदानी वारिस कायम रखनेके लिये किसी लड़कीको गोद लेकर उसको बहिन बनाता है। तिरुवांकूरके महाराज यद्यपि अपनेको क्षत्रिय मानते है, किन्तु तिरुवांकूरकी राजगद्दीके वारिस होनेकी यही रीति चली आती है। राजाकी बहिनही रानी कहलाती है और बहिनका पुत्र युवराज होता है। बहिनका पुत्र नहीं हो तो वह किसी लड़केको गोद लेती है, वही राजसिंहासनका अधिकारी होता है। नायरका लडका अपने मामाका वारिस होता है। और उसके मरनेपर वही उसका श्राद्ध कर्म करता है।

नायर शूद्र है और खास करके खेती तथा सरकारी नोकरी करते हैं। नम्बूरी ब्राह्मण और नायर बड़े पवित्र रहते हैं; वे दिनमें कई वार स्नान करते है। ब्राह्मण अपने मुर्दोंको जलाते हैं; किन्तु नायर लोगोंमें कुछ लोग अपने मुर्दोंको जलाते है और कुछ लोग अपने वंश परंपराके अनुसार भूमिमें गाड देते हैं। सब लोग अपने वागके किसी कोनेमे मुर्दोंको जलाते है, अथवा गाड देते है। सब हिन्दू लोग अपनी शिखाको पीछे लटकाते हैं, किन्तु वहाँके लोग अपनी शिखाको आगेकी ओर अपने ललाटपर लटकाये रहते हैं। मलेवार देशमें ब्राह्मणोंकी प्रधानता वहुत है। मलेवारमें ब्राह्मण और शूद्र वहुत है।

तिरुवांकूर राज्यकी प्रधान फसिल धान और नारियल, उसके वाद मिर्च, अंगूर, काफी, इलायची इत्यादि हैं। सूखा और हरा नारियल, नारियलका तेल, अदरक, मिर्च, खजूर, लकडी, काफी, इलायची, मधुमक्खियोंका मोम इत्यादि वस्तु दूसरे देशोंमें भेजी जाती है और तम्बाकू, चावल, कपड़ा, रुई, तांवा और अङ्गरेजी चीजें दूसरे देशोंसे वहाँ आती है।

तिरुवांकूर-राज्यमें शिक्षाकी उन्नती है। तिरुवंद्रम् हाई स्कूल और कालिजमें लगभग १७०० विद्यार्थी पढ़ते है। वहाँ लडकियोंका भी एक स्कूल है। इनके अलावे राज्यमें २४ जिला स्कूल, २४४ सरकारी वर्नाकुलर स्कूल और ४४० एडेड स्कूल हैं। ऊपर लिखे हुए स्कूलोंमें लगभग ३६००० विद्यार्थी पढ़ते है, इनके अतिरिक्त लण्डनमिशन और रोमन कैथोलिक मिशनकी ओरसे बहुत स्कूल है, जिनमें लगभग १६००० विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। प्रधानोंके लड़कोंकी शिक्षाके लिये एक खास स्कूल है। राज्यमें कृस्तानोंके वहुत गिरजे हैं।

तिरुवांकूरके राजा वडे धर्मात्मा होते हैं। महाराजकी ओरसे तिरुवांकूरके राज्यमें ४५ सदावर्त लगे हैं, जिनमे देश देशसे आये हुए ब्राह्मण साधु भोजन पाते हैं। वहुतेरे लोग तिरुवांकूर राज्यको रामराज्य और वहाँके राजाओंको रामराजा कहते है। प्रतिवर्ष परमार्थ कामोंमे महाराजका आठ दस लाख रुपया खर्च होता है। तिरुवांकूरके राजा सोनेकी गाय अथवा सोनेके कमलमें होकर निकलनेसे द्विजाति समझे जाते है। और उनको भोजन करते हुए ब्राह्मणोंको देखनेका अधिकार होता है। हिरण्यगर्भ दानकी विधिमें महाराजके तुल्य वजनकी सुवर्णकी गाय वनाई जाती है। उसके गर्भसे वह निकलते है। पीछे उस गौके सोनेको ब्राह्मण लोग वांट लेते हैं। हिरण्यगर्भ दानका विधान भविष्यपुराण-उत्तरार्द्धके १५५ वें अध्यायमें और महाभारतमें लिखा हुआ है।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि महर्षि जमदग्निके पुत्र परशुरामजीने २१ वार क्षत्रियोंका विनाश करनेके पश्चात् विचार किया कि मैने वड़ा पाप किया, इसके प्रायश्चित्तके लिये भूमिदान करना चाहिये। उस समय उन्होंने वरुणजीसे भूमि मांगी। वरुणजीने समुद्रको आज्ञा दी कि तुम हट जाओ। समुद्र कुछ दूर हट गया। परशुरामजी वही समुद्रकी छोड़ी हुई भूमि लेकर नंबूरी ब्राह्मणोंको दान दे निःपाप हुए। वही भूमि मालावार देश है। परशुरामका सन् खास मालावार और तिरुवांकूरके राज्यमें कन्याकुमारी अन्तरीप तक जारी है। नम्बूरी ब्राह्मणोंने दान पाई हुई भूमिपर देश वसाया। उनकी हुकूमत बहुत कालके पश्चात् सन् ईस्वीके आरम्भसे ६८ वर्ष पहिले खतम हुई। उसके पीछे ब्राह्मण लोग प्रति १२ वर्षपर हुकूमत करनेके लिये एक क्षत्रियको राजा चुनते थे; अर्थात् १२ वर्ष तक एक

क्षत्री हुकूमत करता था। उन राजाओंमे सवसे पिछला राजा चेरा राजाका दिपोटी 'चेरमान पेरुमाल' सवसे अधिक प्रतापी हुआ। उसने अन्तमें अपने राज्यको अपने अधीनक अफसरोंको बॉट दिया। उनमेंसे सवसे बड़े हिस्सा पानेवालेको दक्षिणका भाग, मिला, जिसकी राजधानी तिरुवांगोंड़, जो अव छोटा गॉव है, वना था। चेरमान पेरुमालका वृत्तान्त मालावार जिलेमें देखिये।

तिरुवांकूर राज्यके २३ राजाओंने ३०० वर्षसे अधिक राज्य किया। वे लोग अपने पडोसके राजाओसे लगातार लडते रहे। २४ वॉ राजा (सन् १६८९-१७१७) 'एरुमा वर्मा पेरुमाल' था। उसके और उसके २ उत्तराधिकारियोंके राज्यके समय घरऊ लडाई होती रही। वांचीमार्तण्ड पेरुमाल' ने, जिसका राज्य सन् १७२९से सन् १७४६तक था, सन् १७४२ मे एल्लाएदतुन्दको और सन् १७४५ में कायंकुलमूको परास्त किया। उसके वाद 'वांचीवाला पेरुमाल' का राज्य हुआ, जिसने अपने राज्यको वहुत वढाया। जव मैसूरके टीपूसुलतानने मलेवारपर आक्रमण किया, तव तिरुवांकूरके राजाने उससे डरकर सन् १७८८ मे अङ्गरेजोंके साथ सन्धि की। सन् १७८९ में टीपूने तिरुवांकूरपर हमला किया, किन्तु परास्त होकर चला गया। उसके २००० सैनिक मारे गये। दूसरे साल टीपू फिर आक्रमण करके विमुख लौट गया। सन् १७९५ मे तिरुवांकूरके राजा वलराम वर्माने ईष्ट इण्डियन कम्पनीके साथ एक दूसरी सन्धि की, जिसके अनुसार वह विना कम्पनीकी रायसे किसी यूरोपियनके साथ नहीं सम्वन्ध रखनेका और आवश्यकता पडनेपर अपनी सेनासे कम्पनीकी सहायता करनेके पावन्द हुए। थोडेही दिनोंके वाद राजा वलराम वर्मा मर गये। उनके भांजे जिनका नाम भी वलराम वर्मा था, उत्तराधिकारी हुए। जिसके साथ सन् १८०५ में अङ्गरेजोंकी तीसरी सधि हुई, जिससे कई शर्त वदले गये। सन् १८११ में राजा वलराम वर्माकी मृत्यु होनेपर लक्ष्मी रानी उत्तराधिकारी हुई, जिसने अङ्गरेजी रेजीडेण्ट कर्नल मनरोको राज्यका प्रवन्ध सौंप दिया। सन् १८१४ मे लक्ष्मी रानीके मरनेपर उसकी वहिन पार्वती रानीने उसके शिशुपुत्र रामवर्माके वालकपनमें राजकार्यका निर्वाह किया लक्ष्मी रानीके पुत्र ७ वर्ष राज्य करनेके पश्चात् मरगये। सन् १८४६ मे उनके छोटे भाई महाराज मार्तण्ड वर्मा उत्तराधिकारी वने। मार्तण्ड वर्माके पश्चात् लक्ष्मीरानीकी पुत्री लड़के महाराज वांची वलराम वर्मा सन् १८६० मे राजगद्दीपर वैठे। सन् १८८० मे महाराज वांची वलराम वर्माकी मृत्यु होनेपर उनके भाई महाराज सर वलराम वर्मा, जी० सी० एस० आई०, जिनका जन्म सन् १८३७ में हुआ था, तिरुवांकूरके राज सिहासन पर वैठे। सन् १८६२ में भारतवर्षके गवर्नर जनरलने तिरुवांकूरके महाराजको एक सनद दी, जिसके अनुसार उनको अपने वंश कायम रखनेके लिये अपनी वहिनकी पुत्रीको गोद लेनेका अधिकार होगया।

कोचीन।

तिरुवंद्रम् कसवेसे १०० मीलसे अधिक पश्चिमोत्तर (९ अंश, ५८ कला, ७ विकला उत्तर अक्षांश, और ७६ अश, १७ कला, पूर्व देशान्तरमे) समुद्रके वन्दरगाहके पास मदरास हातेके मालावार जिलेमें कोचीन तालुकका स्थान कोचीन कसवा है। कोचीनके वन्दरगाहसे सप्ताहिक आगवोट सिलोनके कोलम्वोको जाते हैं। किनारेसे १½ मील दूर जहाजके

लङ्गरका स्थान है । रेलवेके स्टेशन तुतिकुडीसे अथवा कलीकोटसे समुद्रके आगबोट द्वारा कोचीन जाना चाहिये ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कोचीन कसबेमें १७६०१ मनुष्य थे; अर्थात् ९७६८ क्रस्तान, ४७१६ हिन्दू; ३०९० मुसलमान और २७ यहूदी ।

समुद्रके पास उत्तरसे दक्षिण तक १२ मील लम्बी और १ मीलसे १$\frac{3}{4}$ मील तक चौड़ी भूमि समुद्रके खाल और धारोंकी खाड़ियोंसे बनी है । उसके उत्तरके किनारेके पास कोचीन कसबा है । उसके उत्तर एक टापू है । पहिले कोचीन कसबा कोचीनके राज्यकी राजधानी था । किन्तु अब अङ्गरेजी जिले मालाबारमें है । इसके निवासियोंमें आधेसे अधिक क्रस्तान हैं ।

कोचीन कसबेमें सरकारी कचहरियाँ, जेलखाना, अनेक आफिस, बहुतेरे स्कूल तथा गिरजे और हालेंड वालोंकी बहुतसी पुरानी इमारतें है । अङ्गरेजी कोचीन और देशी राज्यके कोचीनकी सीमाके भीतर कष्टमहौस है । पुराने किलेकी अब कोई निशानी नहीं है । उसकी जगह पर लाइटहाउस बना है । उसके पास यूरोपियन लोगोंके बङ्गले हैं । बन्दरगाहमें जहाज बनाये जाते हैं ।

कोचीन कसबेसे १$\frac{1}{2}$ मील दक्षिण कोचीन राज्यका कोचीन कसबा है, जिसका वृत्तान्त नीचे लिखा है ।

इतिहास—कहावतसे विदित होता है कि सन् ५२ ईस्वीमें सेण्टथामसने कोचीनमें जाकर उन क्रस्तानोंको बसाया, जो नसरानी मापिल्ला कहलाते हैं । ऐसा भी प्रसिद्ध है कि यहूदी लोग सन् ईस्वीके पहिले वर्षमें उस जगह बसे जिस जगहपर वर्तमान समयमें इनकी वस्ती है । पीछे उन्होंने क्रम क्रम अन्य स्थानोंमें अपने मुकाम कायम किये । तांबेके पत्रोंके लेखोंसे जान पड़ता है कि ८ वीं सदीमें यहूदी और सिरियन कोचीनमें वसे थे ।

सन् १५००में पोर्चुगलको पोर्चुगीज लोग कलीकोटपर गोले चलानेके पश्चात् कोचीनमें उतरे और जहाजपर मिर्च लादकर पोर्चुगलको फिर गये । सन् १५०२ में पोर्चुगलके बास्कोडी-गामा अपनी दूसरी यात्रामें कोचीनमें आया । उसने वहाँ एक कोठी नियत की । सन् १५०३ में अलबुकर्क कोचीनमें पहुँचा, जिसने वहाँके किलेको बनवाया । वह हिन्दुस्तानमें पहिले पहिल यूरोपियन किला बना । कलीकोटके राजा जमोरिनने कोचीनके देशपर आक्रमण किया किन्तु पोर्चुगल वालोंने उनको खदेरा । सन् १५२५ में वह किला बढ़ाया गया सन् १५७७ में पहिले पहिल कोचीनमें किताब छापी गई; उससे पहिले भारतवर्षमें कोई किताब नहीं छपी थी । सन् १६१६ के कई वर्ष बाद पोर्चुगीजोंकी रायसे कोचीनमें अङ्गरेजी कोठी बनी । सन् १६६३ में हालेण्ड वालोंने पोर्चुगीजोंसे कोचीन कसबा और किला छीन लिया । अङ्गरेज लोग दूसरी जगह चले गये । हालेण्ड वालोंने कोचीनमें यूरोपियन तरीकेपर अच्छी अच्छी इमारतें बनवाई । उन्होंने वहाँ सौदागरीकी बड़ी उन्नति की । सन् १७७८ में उन्होंने फिरसे किलेको बनवाया और किलेके बगलोंमें खाई बनवाई । सन् १७९५ में अङ्गरेजी अफसर मेजर पेट्रीने आक्रमण करके हालेण्ड वालोंसे कोचीन लेलिया । सन् १८०६ में अङ्गरेजोंने कैथेड्रलको तोपसे उड़ाकर किले और उत्तम इमारतोंका विनाश कर दिया । सन् १८१४ की सन्धिके अनुसार अङ्गरेजोंको कोचीन मिल गया; तबसे वह इन्हीके अधिकारमें है ।

राजाका कोचीन ।

कोचीन कसबेसे १½ मील दक्षिण समुद्रके किनारेपर (९ अंश, ५८ कला, ७ विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, १७ कला, पूर्व देशान्तरमें) मद्रास हातेके कोचीन राज्यके कोचीन सब डिवीजनमें कोचीन एक कसबा है, जिसमें ४ गाँव शामिल है। वहाँसे कोचीन राज्यके कसबे तिरुचर तक नहर बनी हुई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मतनचेररमें १७२५४ मनुष्य थे, अर्थात् ८४६१ हिन्दू, ४८३१ कृस्तान, ३५०४ मुसलमान और ४६८ यहूदी।

कोचीन कसबेसे २ मील पूर्व (९ अंश, ५८ कला, ५१ विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, १९ कला, ३१ विकला पूर्व देशान्तरमें) मद्रास हातेके कोचीन राज्यकी राजधानी एरनाकोलम् एक कसबा है।

कसबेमें कोचीन राज्यके प्रधान अफसर रहते है। वहाँ कई एक सडकें पक्की बनी हैं; महाराजका एक महल, एक हाईस्कूल, कई एक आफिस, कई कचहरियाँ, २ गिरजे और कई अन्य सुन्दर इमारतें है। उसके पासके गाँवमें एक सुन्दर बाजार बना है। वहाँ यहूदी और कुङ्कानी लोग बडी सौदागरी करते हैं।

वर्तमान कोचीन नरेश "राजा सर बीर केरल वर्मा के० सी० आई० ई०" ४४ वर्ष अवस्थाके क्षत्रिय है। महाराज न्यायशास्त्रके पूरे पण्डित हैं और उनको शास्त्रार्थकी बड़ी शौक है।

कोचीनका राज्य–कोचीनको मालावारके लोग कोची कहते हैं। इसके दक्षिण तिरुवांकूरका राज्य, पश्चिम मालावारका समुद्र और उत्तर पूर्वोत्तर और पूर्व मालावार जिला है। यह राज्य कोचीन, कननूर, तिरुचुर, कांगनूर इत्यादि ७ भागोंमें विभक्त है। इस राज्यमें १३३ मील अच्छी सड़कें बनी हैं। इस देशमे (कम गहरी) झीलें बहुत हैं, जिसमें पश्चिमी घाट पहाड़ियोंसे बहुत धारायें गिरती हैं। राज्यमें अनेक छोटी नदियाँ हैं। दलदल भूमिके पास कई टापू हैं। जङ्गलोंमें बेश कीमती लकडी होती है। प्रति वर्ष महाराजको जङ्गलोंसे पचासों हजार रुपयेकी आमदनी होती है। एक समय खानोंसे लोहा और सोना निकाला जाता था, किन्तु अब खानोमें काम नहीं होता है। पहाडियोंमें अनेक भाँतिकी दवा, रङ्ग तथा गोंद और बहुत हिस्सोंमे इलायची होती हैं। जंगलोंमें बहुत हाथी, भालू, सांभर, बाघ, तेंदुए और भाँति भाँतिके हरिन रहते हैं। राज्यसे १६१८००० रुपये मालगुजारी आती है, जिसमेंसे २००००० रुपया अङ्गरेजी गवर्नमेंटको 'राज कर' दिया जाता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कोचीन राज्यके १३६१ वर्गमील क्षेत्रफलमें ६००२७८ मनुष्य थे, अर्थात् ४२९३२४ हिन्दू १३६३६१ कृस्तान, ३३३४४ मुसलमान और १२४९ यहूदी। कोचीनके राज्यमें मलेयालम् भाषा प्रचलित है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कोचीनके राज्यमें ७१५८७० मनुष्य और कोचीन राज्यके कसबे मतनचेररमें १७२५४ और तिरुचरमें १२९४५ मनुष्य थे। कोचीन कसबेके पास आरनीकोलम राजधानी है। राज्यके उत्तर भागमें तिरुचुर एक कसबा है, जिसमें सन् १८९१ में ६८८४ हिन्दू, ५२०३ कृस्तान और ८५८ मुसलमान थे। तिरुचुरमें

कोचीनके राजाका एक छोटा महल, स्कूल, एक सुन्दर मन्दिर, राजाकी कचहरी और जेलखाना है। पालघाट और कोचीनके साथ बड़ी सौदागरी होती है। द्रविडियन लोग कोचीनके राज्यको कोचीका राज्य और कोचीनके राजाको कोचीका राजा कहते हैं।

इतिहास—९ वीं सदीमें चेरा वंशके राजाका डिपुटी प्रसिद्ध चेरमान् पेरुमाल चेरा अर्थात् केरलके सम्पूर्ण देशका, जिसमें तिरुवांकूर और कोचीनका राज्य तथा मालावार जिला है, सूबेदार था। पीछे वह स्वतन्त्र हुकूमत करने वाला बन गया। अन्तमें उसने अपने राज्यको कई आदमियोंको बाँट दिया। उसीमेंसे एक कोचीन राज्य है। कोचीनके राजा अपनेको चेरमान् पेरुमालका वंशधर कहते हैं।

सन् १५०३ में पोर्चुगल वालोंने कोचीनमें एक किला बनाया। सन् १६६३ में हालेंड वालोंने पोर्चुगीजोसे कोचीन कसबेको छीन लिया। उसके लगभग १०० वर्ष पीछे कलीकोटके जमोरिन वंशके राजाने कोचीन राज्यपर आक्रमण किया। तिरुवांकूरके राजाने उसको निकाल बाहर किया। इस कामकी कृतज्ञतामें कोचीनके राजाने तिरुवांकूरके राजाको अपने राज्यका एक भाग दे दिया।

सन् १७७६ में मैसूरके हैदरअलीने और सन् १७९० में हैदरअलीके पुत्र टीपूसुलतानने उस देशको लूटा। देश नाम मात्रके लिये टीपूके अधीन बना। पहिले कोचीन राज्यकी राजधानी कोचीन कसबा था, इसलिये उस राज्यका कोचीन नाम पड़ा। सन् १७९५ में जब अङ्गरेजोंने हालेंड वालोंसे कोचीन कसबेको छीन लिया, तबसे वह मालावार जिलेके भीतर अङ्गरेजी अधिकारमें है। सन् १७९८ में कोचीनके राजाने एक संधिपत्रमें अङ्गरेजी अधीनता स्वीकार की और वार्षिक १००००० रुपया 'राजकर' देनेको कबूल किया। सन् १७९९ में अङ्गरेजोंने टीपूको परास्त करके दूसरे देशोंके साथ कोचीन राज्यको लेलिया। तबसे कोचीनके राजा अङ्गरेजी सरकारकी रक्षामें हुए।

सन् १८०९ में अङ्गरेजी रेजीडेण्टके मारनेके लिये बगावत हुई। उस बगावतके दबाये जानेके पीछे कोचीन राज्यका 'राजकर' २७०००० रुपया नियत किया गया; किन्तु अङ्गरेजी सरकारने सन् १८१९ में उसको घटाकर २४०००० रुपया और उसके पश्चात् केवल २००००० रुपया कर दिया।

सोलहवां अध्याय।

(मदरास हातेमें) करूर, ईरोड, कोयमबुतूर, उत्तकमन्द, पालघाट, कलीकोट तलीचेरी, माही, कननूर, (कुर्गदेशमें) मरकाड़ (मदरास हातेमें) मङ्गलूर और सेलम।

करूर।

तिरुनलवेली अर्थात् तिन्नेवेलीके रेलवे स्टेशनसे १८ मील पूर्वोत्तर मनियार्ची जंक्शन और मनियार्चीसे उत्तर कुछ पूर्व ८१ मील मदुरा और १७७ मील तिरुचनापल्लीका रेलवे जंक्शन है। तिरुचनापल्लीसे ४८ मील पश्चिम कुछ उत्तर करूरका रेलवे स्टेशन है। मद-

रास हातेके कोयम्वुतूर जिलेमें अमरावती नदीके वायें किनारेपर (१० अंश, ५७ कला, ४२ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ७ कला, १६ विकला पूर्व देशान्तरमे) तालुकका सदर स्थान करूर एक क़सवा है, जिसके पास अमरावती नदी कावेरीमें मिल गई है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय करूरमें १०७५० मनुष्य थे, अर्थात् ९६९३ हिन्दू, ७३७ मुसलमान और ३२० क्रुस्तान ।

करूरमे एक उजड़ा पुजड़ा किला, जिसमें एक पुराना जर्जर मन्दिर है और सरकारी कचहरी है । वाजारमे वहुत माल विकता है । कई एक सड़के आकर करूरमें मिल गई हैं ।

इतिहास—पूर्वकालमे करूर चेरा राज्यकी राजधानी था । चेरा, चोला और पांड्य वंशके राजाओके परस्पर झगडेके समय कई वार इसके मालिक वदले थे । नायकोंकी वढ़तीके समय यह मदुराके राज्यके अधीन था । १७ वीं सदीके अन्तमें यह मैसूर राज्यमे मिला लिया गया । कई वार अङ्गरेजोंने इसपर अधिकार किया था किन्तु सन् १७९९ मे टीपूसुलतानके मारे जानेपर यह सर्नदाके लिये अङ्गरेजोंके अधीन होगया । सन् १८०१ में करूरके किलेसे फौज उठा ली गई ।

ईरोड ।

करूरसे ४० मील (तिरुचनापल्ली जंक्शनसे ८८ मील) पश्चिमोत्तर ईरोडका रेलवे जंक्शन है । मदरास हातेके कोयम्वुतूर जिलेमे कावेरीनदीके पास (११ अंश, ३० कला, २९ विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, ४६ कला, ३ विकला पूर्व देशान्तरमें) तालुकका सदर स्थान ईरोड कसवा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ईरोडमें १२३३० मनुष्य थे, अर्थात् १०४८१ हिन्दू, १३९३ मुसलमान, ४५३ क्रुस्तान और ३ जैन ।

ईरोडमें पुलिस स्टेशन, स्कूल, मातहत जेलखाना और सरकारी कचहरियाँ हैं । कसवेसे १ मीलसे अधिक पूर्व कावेरीनदीपर १५३५ फीट लम्वा जिसमें २२ मेहराबियाँ हैं, पुल बना है । उसके वनानेमें ४०८७५० रुपया खर्च पड़ा था । कसवा सुन्दर है । वहाँसे रुई, चावल, सोरा इत्यादि चीजें दूसरे स्थानोंमें भेजी जाती हैं । ईरोडसे करूर और मैसूरको सड़क गई है ।

ईरोड जंक्शनसे रेलवे लाइन २ ओर गई हैं ।

(१) ईरोडसे पश्चिम कुछ दक्षिण मदरास रेलवे, जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई लगता है,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन ।

५८ पौडैयनूर जंक्शन ।
९२ पालघाट ।
१७० कलीकोट ।

पौडैयनूर जंक्शनसे उत्तर ४ मील कोयम्वुतूर और २६ मील मेट्टुपालयम् ।

(२) ईरोड जंक्शनसे पूर्वोत्तर मदरास रेलवे,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन ।

३७ सेलम् ।
११२ जालारपेट जंक्शन ।
१३१ अम्वूर ।
१४८ कुडिआतम् ।
१६३ कटपड़ी जंक्शन ।
१७८ आरकाट ।
२०१ आरकोनम् जंक्शन ।

२१८ तिरुवल्लूर।
२४४ मद्रास शहर।

जालारपेट जंक्शनसे पश्चिमोत्तर ४४ मील कोलार रोड, ८४ मील बङ्गलोर छावनी और ८७ मील बङ्गलोर शहर है।

कटपद्दी जंक्शनसे उत्तर सौथ इण्डियन रेलवे पर ३९ मील पकाला जंक्शन, ५८ मील चन्द्रागिरि, ६५ मील तिरुपद्दी और ७१ मील रेणुगुण्टा जंक्शन है। (रेणुगुण्टामें देखिये)

(३) ईरोड जंक्शनसे पूर्व सौथ इण्डियन रेलवे है, जिसके तीसरे दर्जेका महसूल २ पाई लगता है;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३० ऊंजलूर।
४० करूर।
८५ तिरुचनापल्ली फोर्ट।
८८ तिरुचथापल्ली जंक्शन।

कोयम्बुतूर।

इराड़ जंक्शनसे ५८ मील पश्चिम-दक्षिण पौडैयनूर जंक्शन और पौडैयनूरसे ४ मील उत्तर, नीलगिरिके पास, उत्तकमन्दसे लगभग ५० मील दूर कोयम्बुतूरका रेलवे स्टेशन है। मद्रास हातेमें (१० अंश, ५९ कला, ४१ विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, ५९ कला, ४६ विकला पूर्व देशान्तरमें) समुद्रके जलसे १४३७ फीट ऊपर एक छोटी नदीके बायें किनारेपर जिलेका सदर स्थान और जिलेमे प्रधान कसबा कोयम्बुतूर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कोयम्बुतूर कसबेमें ४६३८३ मनुष्य थे; अर्थात् २२२३८ पुरुष और २४१४५ स्त्रियाँ। इनमें ४०१०६ हिन्दू, ३४१४ मुसलमान, २८२१ क्रस्तान और ४२ जैन थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ८४ वाँ और मद्रास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें ११ वाँ शहर है।

कोयम्बुतूरमें जिलेकी प्रधान कचहरियाँ, पुलिस स्टेशन, अस्पताल, स्कूल, रेलवे स्टेशनसे १ मील पश्चिमोत्तर बड़ा जेलखाना और ३/४ मील पूर्वोत्तर गिरजा है। कसबेकी सड़क चौडी है। कसबेके निकटकी पहाडीसे मकानके कामके लिये पत्थर निकाले जाते हैं।

मेल चिदम्बरम्का मन्दिर—कोयम्बुतूर कसबेसे ३ मील दूर पेरूर गांवमें मेलाचिदम्बरम्का सुन्दर मन्दिर है, शिवको पेरूर सभापति अर्थात् पेरूरका शिव भी कहते हैं। दक्षिण आरकाट जिलेके चिदम्बरम्को किल चिदम्बरम् और पेरूरके चिदम्बरम्को मेलचिदम्बरम् लोग कहते हैं। मन्दिरके आगे ३५ फीट ऊँचा पत्थरका ध्वजा स्तम्भ और मन्दिरके पास पाटेश्वरका छोटा मन्दिर है। वे दोनों मन्दिर मदुराके तिरुमलई नायकके राज्यके समय बने थे। वहाँ ५५ फीट ऊंचा पञ्चमञ्जिला गोपुर और ७२ स्तम्भोंका एक मण्डपम् है। मन्दिरके स्तम्भोंमे ताण्डव नृत्य करते हुए शिव, गजासुरको मारते हुए शिव, शत्रुओंको मारते हुए बीरभद्रकी प्रतिमा और सिंहोंकी मूर्त्तियाँ बनी हुई हैं।

त्रिमूर्त्ति कोइल—कोयम्बुतूर जिलेमें त्रिमूर्त्तिकोइल नामक गांवमें एक पुराना मन्दिर है। वहाँ पहाड़ीमें पत्थर काटकर मन्दिर बना हुआ है और हजार स्तम्भोंका एक पुराना जर्जर

मण्डपम् है। वहाँ पासकी पहाडीसे गिरा हुआ एक पत्थरका बडा टुकडा, जिसपर बहुतसे चरणचिह्न हैं, पडा है, जिसको लोग पवित्र समझते हैं। उस स्थानपर प्रति रविवारको यात्री लोग दर्शनको जाते हैं और प्रतिवर्ष एक बडा मेला होता है।

कोयम्बुतूर जिला—इसके उत्तर और पश्चिमोत्तर मैसूरका राज्य, पूर्व सेलम और तिरुचनापल्ली जिला, दक्षिण मदुरा जिला और तिरुवाकूरका राज्य और पश्चिम नीलगिरि और मालावार जिला तथा कोचीनका राज्य है। इस जिलेमे १० तालुक हैं। जिलेकी भूमि ऊँची नीची है। पश्चिमके भागमें नीलगिरि और दक्षिण अनामलई पहाड़ीका सिलसिला है। लगभग ३००० वर्गमील भूमिमें जङ्गल है, जिनमें वेश कीमती लकडी होती है और बहुतसे वनैले हाथी रहते हैं। जङ्गलों और पहाडियोंमें बहुतसे हाथी, भालू, सूअर, बाघ, तेंदुए, भेडिया और भांति भांतिकी हरिन रहती है। जिलेमें सांप बहुत है। प्रतिवर्ष लगभग १०० आदमी साँपके काटनेसे मर जाते हैं। हिंसक जानवरोंके मारनेके लिये प्रतिवर्ष लगभग २००० रुपया सरकार खर्च करती है। जिलेकी प्रधान नदी कावेरी उत्तरी सीमापर बहती है, जिसमें अमरावती, भवानी और नोइल नदीकी धारा गिरती हैं। कावेरीकी धारा बडी तेज है, क्योंकि १२० मीलमें उसकी धारा लगभग १००० फीट नीचे होजाती है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कोयम्बुतूर जिलेके ७८४२ वर्गमील क्षेत्रफलमें १६५७६९० मनुष्य थे, अर्थात् १६०६३४३ हिन्दू, ३७८५५ मुसलमान, १३३२६ कृस्तान, ६८ जैन, ६३ बौद्ध, ४ पारसी और ३१ अन्य। हिन्दुओंमे ६९०४०२ वेल्लाल (खेतिहर), २१६२७० पारियन्, १०७४८० बनिया (जाति विशेष), ८१६४१ कैक्कलर (बिनाईके काम करने वाले), ६६०६८ सतानी (दोगला), ५५५१७ शानान (मदक), ५५१३६ चेटी (सौदागर), ४३४५८ कम्भाड़न (शिल्पकार), ४२४३२ इडैयन (भेड़िहर) २९७१२ ब्राह्मण, २५००४ सेंवड़वन (मछुहा), ३३३१७ वन्नान (धोबी), ३००६३ अंबटन (नाई), १६३९४ कुसवन (कुम्भार), ३०३९ छत्री, १०६२ कणक्कन (-लिखाईके काम करने वाले) और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कोयम्बुतूर जिलेके कसबे कोयम्बुतूरमे ४६३८३, ईरोडमें १२३३० और करूरमे १०७५० मनुष्य थे। इनके अलावे कई छोटे कसबे है। कोयम्बुतूर जिलेमें तामिल भाषा प्रचलित है।

इतिहास—कोयम्बुतूर जिला चेरा राज्यके अधिकारमे था। ९ वी सदीमें चोला वंशके राजाने चेराके देशको जीता। लगभग २०० वर्षके बाद पाण्डय राज्यके साथ मिलकर दोनो एक राज्य होगया। १६ वी सदीमें कोयम्बतूर जिलेका पूर्वी भाग और कोयम्बुतूर कसबा नाम मात्रके लिये मदुराके नायकके अधिकारमे हुआ। १७ वीं सदीसे सन् १७७३ तक मैसूर वालोंने इस जिलेपर बहुत बार आक्रमण किया। सन् १७७३ में यह जिला मैसूर राज्यमें मिला लिया गया। कई बार कोयम्बतूर कसबेके मालिक बदले। कई बार अङ्गरेजोंने इसको लिया, किन्तु उनको छोड़ देना पड़ा, परन्तु सन् १८९९ में टीपू सुलतानके मारेजाने पर यह जिला अङ्गरेजी अधिकारमे होगया।

उत्तकमन्द।

कोयम्बुतूरके रेलवे स्टेशनसे २२ मील (पोडैयनूर जंक्शनसे २६ मील) उत्तर मदरास रेलवेकी शाखाका अंतिम स्टेशन मेडुपालयम् है। मेडुपालयम्से ९ मीलकी अच्छी सड़क भवानी नदीको लांघकर कोलारको गई है, जहां पहाड़ीकी चढ़ाई आरम्भ होती है। कोलारसें पुरानी सडक द्वारा ९ मील और नई सड़कसे १६ मील दूर कुनूर गॉव है, जहां यूरोपियन लोग हवा खानेके लिये रहते हैं। पुरानी सड़क चढ़ाईकी है, किन्तु नई सडकसे घोड़ा गाड़ी जा सकती हैं। मेडुपालयम्से कुनूर बेलिंटन तथा उत्तकमन्दको तांगे जाते है। अब कुनूर तक तङ्ग लाइनकी रेलवे बनती है। कुनूरके बेलिंटन-बारकसे ९ मील दूर उत्तकमन्द है। कुनूर गॉवसे उत्तकमन्द तक १२ मील पक्की सड़क बनी है।

मदारास हातेमें (११ अंश, २४ कला, उत्तर कक्षांश और ७६ अंश, ४४ कला, पूर्व देशान्तरमें) समुद्रके जलसे ७२२८ फीट ऊपर ऊंची पहाड़ियोंसे घेरी हुई घाटीमें नीलगिरि पहाड़ी जिलेका सदर स्थान उत्तकमन्द नामक स्वास्थ्यकर स्थान है, जिसको उस देशके लोग उदकमण्डलम् कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य—गणनाके समय उत्तकमन्दमें १५०५३ मनुष्य थे, अर्थात् ७९१२ पुरुष और ७१४१ स्त्रियाँ। इनमें ९०७१ हिन्दू, ४१६४ कृस्तान, १७९० मुसलमान, २१ पारसी, ३ बौद्ध और ४ अन्य थे।

वास्तवमें उत्तकमन्द कसबा नहीं है; वहॉकी पहाड़ियोंपर मकान तथा अङ्गरेजोंकी कोठियॉ इत्यादि इमारते छितराई हुई है। मदरास हातेके यूरोपियन लोगोंके गर्मीकी ऋतुओंमें रहनेके लिये उत्तकमन्द प्रधान स्थान है। गर्मीकी ऋतुओंमें मदरासके गवर्नर वहॉ रहते है। वहॉ जिलेका कलक्टर, डिपोटी कलक्टर, सबजज इत्यादि हाकिम सर्वदा रहते है। बहुत यूरोपियन लोग वहॉ जाकर मार्चसे जून तक निवास करते हैं। नवम्बरसे फरवरी तक केवल वहाँके निवासी रह जाते हैं। वहॉ औसतमें सालाना वर्षा ४५ इंच होती है।

पहाड़ियोंके बीचमे समुद्रके जलसे ७२२० फीट ऊपर पूर्वसे पश्चिम तक १½ मील लम्बी झील है, जो बांध बांधकर बनाई गई थी। पूर्वी और पश्चिमी घाटसे बने हुए कोनमें नीलगिरि पहाड़ी है। कसबेमें झीलके चारोंओर गाड़ी दौड़नेके लिये सुन्दर सड़क बनी हुई है। पासकी पहाड़ीपर यूरोपियन लोगोंकी कोठियॉ है।

झीलके पूर्व बगलपर वाजार, पश्चिमोत्तरके बगलपर जेलखाना और दक्षिणके बगलपर सेंटथामसका चर्च है। प्रधान दूकानोंके पास पोष्टआफिस, पबलिक लाइब्रेरी और प्रधान चर्च है। पहाड़ीके पादमूलके पास उसके बगलमें सीढ़ी नामा चबूतरोंपर खूबसूरतीके साथ नबाती बाग लगा हुआ है, जो चंदेके खर्चसे बना था। उसमें उद्यान विद्याकी उन्नतिके लिये भांति भांतिके विदेशी वृक्ष लगाये गये हैं।

पोष्टआफिससे ५ मील दूर यतीमखाना है, जिसका टावर ७० फीट ऊँचा है। उसमें ३०० लड़कोंके भोजन करनेके लायक एक बड़ा कमरा बना है। वहॉ यतीम अर्थात् विना माता पिताके लड़कोंको खानेको मिलता है और उनको टेलीग्राफ, सौदागरी इत्यादिका काम सिखलाया जाता है। उनमेंसे कई लड़के पल्टनमें भरती किये जाते हैं। नारङ्गीघाटीमे

जङ्गली नारङ्गी होती है । इनके अतिरिक्त उत्तकमन्दमें कई एक स्कूल, अनेक अस्पताल और कई होटल है ।

इतिहास–सन् १८१९ में दो सिविलियन अफसरोने तम्बाकूकी चूङ्गीके चोरोंका पीछा करते हुए उत्तकमन्दको पाया । सन् १८२१ में जिलेके कलक्टरने उत्तकमन्दमें पहिले पहिल कोठी बनाई । कुछ दिनोमें वहाँ कसबा बस गया । सन् १८४२—१८४३ में नबाती बाग बना । सन् १८५८ में लारंस यतीमखाना कायम हुआ । सन् १८५९ में पबलिक लाइब्रेरी नियत हुई । सन् १८६६ मे वहाँ म्युनिसिपल्टी कायम हुई ।

नीलगिरि जिला–यह मदरास हातेमें पहाड़ियोंका जिला है । इसमे प्राय' सर्वत्र पहाड़ियोंके सिलसिले है । इसकी सबसे अधिक लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तक ३६ मील और पूर्वसे पश्चिम तक ४८ मील है । जिलेका क्षेत्र फल केवल ९५७ वर्गमील है । इसके उत्तर मैसूरका राज्य, पूर्व और पूर्व–दक्षिण कोयम्बुतूर जिला, दक्षिण कोयम्बुतूर जिला और मालाबार जिलेका एक भाग और पश्चिम मालाबार जिला है । जिलेका सदर स्थान उत्तकमन्द है । इस जिलेमे ५ सबडिवीजन हैं ।

नीलगिरि जिलेकी पहाड़ियां खडी हैं, सबसे ऊँची दोदाबेटी नामक पहाड़ी समुद्रके जलसे ८७६० फीट ऊँची है । उत्तकमन्द पहाडी ७३६१ फीट और कुनूर पहाडी ५८८२ फीट ऊँची है । इनके अतिरिक्त बहुतसी पहाडियाँ है ।

अनेक छोटी नदियाँ है । जिलेमें पहिले बाघ तथा भालू बहुत थे, किन्तु शिकारियोंने मारकर इनको बहुत कम कर दिया है ।

सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय नीलगिरि जिलेमें ९१०३४ मनुष्य थे, अर्थात् ७८९७० हिन्दू, ८४८८ क्रस्तान, ३५३१ मुसलमान, ३४ पारसी और ११ अन्य । हिन्दुओंमें २०३९७ परिया (परयन), १०५८८ वेल्लाल (खेतिहर),३४६३ इडैयर (भेड़िहर), ३८२७ सेटी (सौदागर),२६०९ वनिया (जाति विशेष),१७६० कम्भाडन (शिल्पकार), ८४९ सतानी, ५४७ वन्नान (धोबी), ४४० ब्राह्मण, ४१९ कैक्कलर, ३८७ कुसवन (कुम्भार), २४७ अवंटन (नाई), २९१ सेंवडवन (मछुहा), १६५ सानान (मद्क), १५३ कणक्कन (लिखने वाले), १०७ क्षत्रिय और बाकी ३३७२१ में अन्य जातियोके लोग थे ।

नीलगिरि जिलेमे तामिल, कनडी और अङ्गरेजी भाषा प्रचलित हैं और अन्य कई पहाडी भाषा भी हैं । सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाकेसमय नीलगिरि जिलेके कसबे उत्तकमन्दमें १५०५३ और सन् १८८१ में उत्तकमन्दमें १८११६ मेकनादमे १२७४० और तोडानादमे ११५५७ मनुष्य थे ।

नीलगिरिपर उत्तम स्वाभाविक जङ्गल है, जिनमें भांति भातिके वनजन्तु तथा चिड़ियायें रहती है, जिनमें जङ्गली भेड, वनैले कुत्ते तथा शार्दू बाघभी होते है । वहाँ रङ्गस्वामीका मन्दिर और गगनचुक्कीका किला है । युपालहाटीके निकट और सिगुरघाटके ऊपर कई जलप्रपात हैं । नीलगिरि जिलेमें गेंहू, जव, मटर, लहसुन, प्याज, सरसों, रेंडी, आलू, काफी, चाय, देशी कुनायन इत्यादि फसिल होती हैं, नारंगी, सेव, नाशपाती आदि बहुत प्रकारके फलभी होते हैं । नीलगिरिकी पहाडियोमें अकाल कभी नहीं पडा, किन्तु मैदानोमें

महँगी पड़जानेपर वहाँ भी उसका असर पहुँच जाता है। नीलगिरि जिलेमें लगभग ३०० मील गाड़ी चलने लायक सड़क हैं।

नीलगिरि जिलेमें ठोडा, बडगा; कोटा, कोरवा और इरुला ये ५ पहाड़ी जातियां हैं। इनमें कोरवा और इरुला, जो आलसी हैं, गरीब है, किन्तु दूसरे पहाड़ी लोग अच्छी हालतमें हैं। बडगा, जो परिश्रमी है, तेजीसे धनी होते जाते हैं।

ठोंडा जातिके लोग अच्छे बनावटके बलवान् होते हैं। उनमें पुरुप तथा स्त्रियां नीचेसे ऊपर तक केवल एकही वस्त्र रखते है। स्त्रियाँ अपने कांधेसे नीचे ठेहुने तक एकही कपड़ा लपेटती है। एक स्त्रीके कई पति होते है। सब भाई मिलकर एक स्त्रीसे विवाह करते है। वे लोग तामिल और कनड़ी मिली हुई एक प्रकारकी भाषा बोलते हैं। इनकी झोपड़ियाँ साधारण तरहसे १८ फीट लम्बी, ९ फीट चौडी तथा १० फीट ऊंची होती हैं। दरवाजे ३ फीटसे कम ऊँचे और १½ फीट चौड़े होते है, जो ½ फीट मोटी लकड़ीके टुकडेसे वन्द किये जाते हैं। झोपडियोंकी दीवारें बाँसकी और छप्पर फूस या घासके बनते है। एक झोपडीके भीतर एक तरफ २ फीट ऊँचा मिट्टीका एक चबूतरा, जिसपर हरिन अथवा भैंसेका चमडा या एक चटाई रहती है, बना रहता है, उस पर वे लोग शयन करते है। उसके सामनेके बगलपर थोड़ी ऊंची जगह रहती है, जिसपर रसोईके वर्त्तन रक्खे जाते है और आग रखने-का स्थान होता है। दूध रखनेका घर कुछ अधिक वडा रहता है, जिसमें घेरकर दो भाग बनाये जाते हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय नीलगिरि जिलेमें ६७५ ठोडा थे।

बडगा जातिके लोग जङ्गली जातियोंमें सभ्य है। इनमे पुरुप मैदानके देशी लोगोंके समान कमरमें कपडा पहनते है, शिरपर मुरेठा बांधते है और देहपर चादर ओढ़ते हैं। स्त्रियां उजले कपड़े काखसे ठेहुने तक पहनती है, उसको एक रस्सीसे बाँध देती हैं। बडगा जातिके लोग पीतल, लोहा या चाँदीके कुछ गहनेभी पहनते है। वे लोग पुरानी कनडी भाषा बोलते हैं। इनके प्रधान देवता रंगस्वामी है, जिनका मन्दिर नीलगिरिके पूर्वी छोरके पास रंगस्वामी नामक चोटी पर बना हुआ है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २४१३० बडगा थे।

कोटा जातिके लोग अच्छे बनावटके होते हैं। उनके शिरका लम्बा बाल खुला हुआ रहता है। वे लोग खेती करते हैं, बोझे ढोते हैं, तथा ठोडा और बडगाओंकी नोकरी करते है। इनकी भाषा कनड़ीकी पुरानी तथा मोटी बोली है। कोटा लोगोंकी ७ वस्तियाँ है। प्रत्येक गाँवमें ३० से ६० तक झोपडियाँ है, जिनकी दीवार मिट्टीकी और छप्पर फूसके हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय १०६५ कोटा थे।

कोरवा (भेड़िहर) जातिके लोग पाँचों पहाड़ी जातियोंमें अधिक असभ्य है। वे कदमें छोटे होते हैं। इनका कठोर शरीर, मलीन मुखमण्डल, बड़ा पेट, बड़ा मुख, मोटे होठ और बड़े बड़े दांत होते है। शिरके बालोमे जटा बंधा रहता है। स्त्रियोंके नाक छोटे तथा बन्दरके नाकोके समान होते है। वे कांखोंसे नीचे ठेहुनों तक कपडेका टुकडा पहनती हैं। पुरुष और स्त्रियाँ दोनों अपनी गले, बांह, कान और अंगुरियोंमे पीतल, लोहा, घोंघा, सीसा और अनेक प्रकारके बीजोंके भूषण पहिनते है। इनकी बस्तियाँ पहाड़ियोंके दरारोंमें तथा जङ्गलोंमें हैं। इनके घर ३० फीटसे ५० फीट तक लम्बे और ५ फीटसे कम ऊँचे

होते हैं, जिनकी दीवार झाड़ियों तथा बांसोंसे और छप्पर फूससे बने हुए हैं। उनमें आठ दश फीट मोरब्बे, अनेक कोठरियाँ रहती हैं। उनकी भाषा तामिल भाषाका अपभ्रंश है। वे विना हलकी थोड़ी खेती करते हैं और वनोंमें अनेक भांतिके अन्न, फल, रङ्गके छाल, जानवर, मछली, जड, मधु, मोम इत्यादि एकत्र करते हैं और मैदानोंमें जाकर इनके वद्लेमें अन्न तथा वस्त्र खरीदते हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २१८५ कोरवा जातिके लोग थे।

इरुला जातिके लोग नीलगिरिकी नेवसे मैदानोंतक फैले हुए नीचेकी ढालूपर और जङ्गलोंमें रहते हैं, किन्तु वास्तवमें वे लोग पहाडियोंके निवासी नहीं हैं। वे वलवान् होते है, उनकी स्त्रियॉ वहुत मजवूत होती हैं। उनमें प्रायः सव काले रङ्गकी हैं। वे अपने कमरसे ठेहुने तक कपडा दोहरा लपेटती हैं। उनकी कमरसे ऊपरका भाग नङ्गा रहता है। वे सफेद और लाल गुरियोंके हार और वांह, कान तथा नाकोंमे पतले तारके भूषण पहनती हैं। इरुला जातिके लोगोकी भाषा कनडी और मलेयालम् शब्दोंसे मिला हुआ मोटा तामिल है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय वे ९४६ थे।

इतिहास—जान पड़ता है कि सत्रहवीं सदीम नीलगिरि जिलेकी पहाडियोंपर ३ प्रधान हुकूमत करते थे। १८ वी सदीमें मैसूरके हैदरअली और उसके पुत्र टीपू सुलतानने कुछ पहाडी लोगोंको अपने अधिकारमें किया था। सन् १८३१ तक नीलगिरि पहाड़ी कोयम्वुतूर जिलेका भाग था। उस समय उसका वडा भाग मालावार जिलेमे कर दिया गया। सन् १८४३ मे वह हिस्सा फिर कोयम्वुतूर जिलेमे आया। सन् १८६८ में नीलगिरि नामक जिला कायम हुआ। हाल तक नीलगिरि जिला, जिसकी औसत ऊँचाई समुद्रके जलसे लगभग ६५०० फीट है, ७२५ वर्गमीलमे था, किन्तु सन् १८७३ में अकटरलोनी घाटी जोड़ करके और सन् १८७७ में ३००० फीट औसत ऊँचाईका देश जोड़कर जिला वढ़ाया गया।

पालघाट।

पोडैयनूर जंक्शनसे ३४ मील (ईरोड़ जंक्शनसे ९२ मील) पश्चिम कुछ दक्षिण पालघाटका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेके मालावार जिलेमे तालुकका सदर स्थान पालाघाट एक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पालघाटमे ३९४८१ मनुष्य थे, अर्थात् १९१२८ पुरुष और २०३५३ स्त्रियॉ। इनमे ३२८५८ हिन्दू, ५५२७ मुसलमान, १०८३ कृस्तान और १३ जैन थे।

पालघाटमे सरकारी कचहरियाँ, अस्पताल, स्कूल और एक पुराना किला है, किन्तु उसमें अव कोई सैनिक नहीं रहता है।

इतिहास—पूर्व समयमें पालघाट वहुत प्रसिद्ध था। सन् १७६८ मे अङ्गरेजोंने उसको ले लिया; किन्तु चन्द महीनोंके वाद मैसूरके हैदरअलीने सम्पूर्ण दूसरे किलोंके साथ पालघाटके किलेको अङ्गरेजोंसे छीन लिया। हैदरअलीके मरनेके पश्चात् सन् १७९० में अङ्गरेजोंने टीपू सुलतानसे पालघाटके किलेको ले लिया।

कलीकोट।

पालघाटसे ७८ मील और ईरोड जंक्शनसे १७० मील पश्चिम कलीकोटका रेलवे स्टेशन है। मदरास हातेमें पश्चिमी घाट अर्थात् मालाबारके किनारेपर (११ अंश, १५ कला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ४९ कला पूर्व देशान्तरमें) मालाबार जिले और कलीकोट तालुकका सदर स्थान कलीकोट एक बड़ा कसबा है। मदरास रेलवेकी दक्षिण-पश्चिमकी शाखा कलीकोट तक गई है। कलीकोटका शुद्ध नाम कोलीकोडू अर्थात् (मालाबार भाषाकी) मुर्गाकी बोली है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कलीकोट कसबेमें ६६०७८ मनुष्य थे; अर्थात् ३४५०७ पुरुष और ३१५७१ स्त्रियाँ। इनमें ३७७३३ हिन्दू, २४५४५ मुसलमान, ३७०३ क्रस्तान, ६७ पारसी २७ जैन, २ बौद्ध और १ अन्य थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमे ५४ वाँ और मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें ५ वाँ शहर है।

देशी लोगोंकी बस्ती समुद्रके जलसे थोडी ऊँची है, जिसमें एक लम्बा बाजार बना है। दक्षिण ओर दहिने फैली हुई मपिला मुसलमानोंकी बस्ती आदि, पश्चिमोत्तर पोर्चुगीजोंकी बस्ती, देशी पैदल सेनाके एक भागकी लाइनें, परेडकी भूमि और कलक्टरकी कचहरी है। पोर्चुगीजोंकी बस्तीमें जेलखाना है।

कष्टमहौस, क्लब और यूरोपियन शरीफोंकी कोठियोंके मुख समुद्रकी ओर हैं। समुद्रके पास लाइटहाउस बना हुआ है। एक मीठे पानीके सुन्दर सरोवरके चारों ओर अनेक सरकारी आफिस और बहुतसी प्रसिद्ध इमारतें बनी हुई है। कसबेसे २ मील उत्तर एक पहाडी पर छावनी और कलक्टरकी कोठी है। इनके अतिरिक्त कलीकोटसे जिलेकी प्रधान कचहरियाँ, पागलखाना, दवाखाना, अस्पताल, बंगला, बेङ्क, अनेक स्कूल और कई एक गिरजे हैं। कलीकोटका पवन पानी साधारण तरहसे स्वास्थ्यकर है। वहाँ औसतमें १२० इञ्च सालाना वर्षा होती है। कलीकोट ६ एकड़ भूमिके साथ फरांसीसियोंका एक मकान है; अर्थात् ६ एकड़ भूमि उनके अधिकारमें अब तक है।

बेपुर—कलीकोटसे ६ मील दक्षिण एक नदीके मुहानेके पास बेपुर बस्ती है। कलीकोट और बेपुरके बीचमें शहरतलियोंके गाँव फैले हैं। गाँवोंके चारों ओर ताड, आम और कटहलके वृक्षोंके कुंज लगे हैं। बेपुरके पड़ोसमें लोहेके ओर होत है। पूर्वी घाटकी टीककी लकड़ियाँ पानीमें बहाकर बेपुरमें लाई जाती हैं और वहाँसे दूसरे देशोंमें भेजी जाती है। मालाबार जिला—इसके उत्तर दक्षिणी किनारा जिला; पूर्व कुर्ग, मैसूरका राज्य, नीलगिरि और कोयम्बुतूर जिला, दक्षिण कोचीनका राज्य और पश्चिमीघाटका समुद्र है। जिलेका सदर स्थान कलीकोट है। यह जिला उत्तरी मालाबार ओर दक्षिणी मालाबार नामसे २ भाग होकर २ जजोंके अधिकारमे है।

मालाबार जिला समुद्रके किनोर पर १४५ मील फैला हुआ है। इसकी चौडाई २५ मीलसे ७० मील तक है। पश्चिमी घाटकी पहाडियाँ ३००० फीटसे ७००० फीट तक ऊँची हैं। जिलेमें बहुतेरी अप्रसिद्ध नदियाँ और धारायें है। मालाबारके किनारेके समानांतरमें खारे पानीकी झीलोंका लगातार जंजीर है। लगभग १७०००० रुपयेकी नमकदार मछलियाँ प्रतिसाल माला-

वार जिलेसे सिलोनमें भेजी जाती हैं । मालावारका फैला हुआ जङ्गल वेशकीमत है। जङ्गलों और पहाडियोंमें हाथी, सांभर, वाघ, तेंदुये, सूअर, भालू, हरिन इत्यादि वनजन्तु रहते हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मालावार जिलेके ५७६५ वर्गमील क्षेत्रफलमें २३६५०३५ मनुष्य थे; अर्थात् १६६९२७१ हिन्दू, ६५२१९८ मुसलमान, ४३१९६ कृस्तान, १५७ जैन, ५४ बौद्ध, ४६ पारसी, ३० यहूदी और ८३ अन्य। हिन्दुओमें ५७२२३१ सानान (मदक), ३४८१६९ वेल्लाल (खेतिहर), १००५१ कम्माडन (शिल्पकार), ५०६२४ वनियाँ (जाति विशेष), ४७६८३ ब्राह्मण, ४२६०६ कैकलर (विनाईके काम करनेवाले), ३७५५६ वन्नान (धोवी), २२०४४ संटी (सौदागर), १६१९१ सेंबडवन (मछुहा), १३१०२ अंबंटन (नाई), ११७७० कुसवन (कुम्भार), ७६२७ सतानी (तुमसला), ४९९१ इडैयर (भेडिहर), १५०९ क्षत्रिय और वाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे। मलेवार जिलेमें मलेयालम् भाषा प्रचलित है, किन्तु तलीचेरी, कननूर आदि कई स्थानोमे तुलु भाषा वोलनेवाले लोग बहुत हैं।

मालावारके नायरोंमें, शूद्र है, एक स्त्रीके अनेक पति होते थे, किन्तु वहाँ अव यह रीति नहीं है, परन्तु मालावारके दक्षिण भागमें और तिरुवॉकूर तथा कोचीनके राज्यके कई भागमें अव तक भी कुछ कुछ ऐसा होता है । उसमे एक स्त्रीकी जितनी सन्तान होती है वे एक खानदानकी कहलाती है । स्त्री अपनी जाति अथवा अपनेसे बडी जातिके किसी पुरुषको अपना पति बना लेती है । अङ्गरेजी राज्यके मालावारमे दो भाई एक स्त्रीके साथ अथवा कोई पुरुष अपनी विधवा भौजाईके साथ विवाह नहीं करता है। मालावारके उत्तरीय भागमेकी स्त्रियाँ सर्वदा अपने पतिके घर रहती है और दक्षिणीय भागकी निर्धन पुरुषोंकी स्त्रियॉ वर्षमें ६ मास अपने पतिके घर और ६ मास अपने पिताके गृहमें निवास करती है। प्रधानोकी स्त्रियॉ सर्वदा अपने पिताके घर रहती हैं, उनके पति वहॉही जाते है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मालावार जिलेके कसवे कलीकोटमें ६६०७८, पालघाटमें ३९४८१, कननूरमे २७४१८, तलीचेरीमें २७१९६ और कोचीनमें १७६०१ मनुष्य थे। कलीकोट मालावारकी राजधानी, कननूर और तलीचेरी वन्दरगाह और कननूर फौजी छावनी है। जिलेकी सौदागरी खास करके कननूर, तलीचेरी, पालघाट, कलीकोट और कोचीनमे होती है।

कलीकोटका इतिहास—ऐसी कहावत है कि मालावारके मालिक "चेरमान पेरुमाल" ने नवीं सदीमे कलीकोटको बसाया। उसने मक्का जानेके समय अपना मान, विक्रम और कलीकोट जमोरिनको दे दिया। जमोरिनने मोपला लोगोकी सहायतासे, जो अरवके सौदागरोंकी सन्तान थे, अपने राज्यको दक्षिण और पूर्व फैलाया। कलीकोटका वर्तमान कसबा १३ वीं सदीका है।

तुलुवर्णमाला

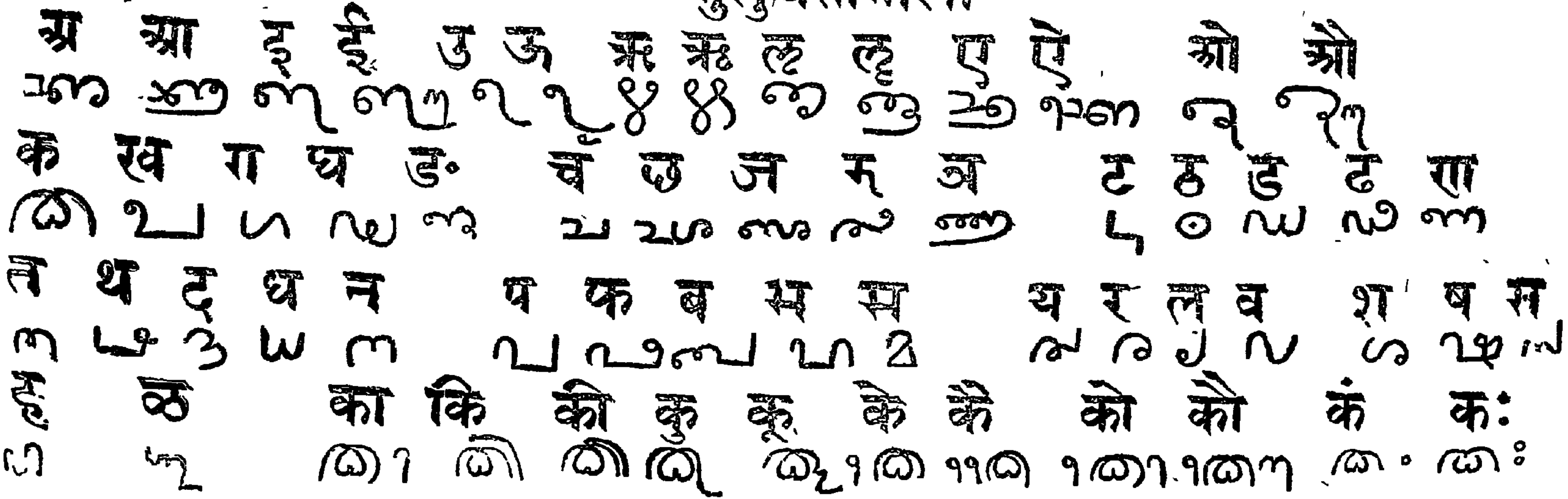
अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ
क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण
त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स
ह ळ का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

पहिले यूरोप वालोंको समुद्रकी राहसे हिन्दुस्तानमे पहुँचनेका मार्ग मालुम न था । सन् १४८६ में पोर्चुगलका कोविल्हम कलीकोटमे उतरा था । उसके पश्चात् कुछ जहाज वस्कोडीगामाके अधीन पोर्चुगलके लिज़्वो शहरसे रवाने हुए। १० महीने और २ दिनके बाद सन् १४९८ की ११ मईको वास्कोडीगामा कलीकोटमे पहुँचा। उस समय कलीकोटमें एक बडा देवमन्दिर और बहुतसी उत्तम इमारतें थीं। वहाँका जमोरिन नामक हिन्दू राजा एक फैले हुए राज्यपर राज्य करता था, जिसके वंश वाले अब तक सरकारसे पिंशन पाते हैं। राजाने वास्कोडीगामाका स्वागत किया। वास्कोडीगामा ६ मास तक मालावारके किनारेपर रहकर यूरोपको लौट गया। सन् १५०१ में पोर्चुगलकी एक कोठी कलीकोटमे कायम हुई। थोडेही दिनोंके बाद मोगलाओने उस कोठीको तोड़ फोड दिया और पोर्चुगीजोके ५० आदमियोंको मारडाला। सन् १५०२ में वास्कोडीगामा बदला लेनेके लिये २० जहाजोंके साथ आपहुँचा। उसने कोचीन और कननूरके राजाओंसे मेल किया और जमोरिनके महलपर गोला चलाया। सन् १५१० मे पोर्चुगीजोंके गवर्नर अलबुकर्कने कलीकोटपर आक्रमण करके जमोरिनके महलको जलाया और कसबेको बरबाद किया, किन्तु देशियोंने उसको वहाँसे कोचीनमें भगादिया। उस समय कलीकोटपर उसका अधिकार नहीं हुआ, परन्तु गोवा उसके अधिकारमे होगया, जो अब तक पोर्चुगल वालोंके हिन्दुस्तानके राज्यका सदर स्थान बना हुआ है। सन् १५१३ में कलीकोटके राजाने पोर्चुगीजोके साथ मेल किया । राजाके हुक्मसे पोर्चुगीजोंने एक किलाबन्दी कोठी बनाई ।

सन् १६१६ मे कलीकोटमे अङ्गरेजी कोठी कायम हुई। सन् १७२२ से फरासीसी लोग कलीकोटमें बसने लगे, जिस समयसे अङ्गरेजोने ३ बार कलीकोटको जीता । सन् १७५२ में हालेण्डवालोंकी कोठी कलीकोटमें बनी, जिसका भाग सन् १७८४ में बरबाद किया गया और उसके थोड़ेही पीछे वह कोठी अङ्गरेजी आबादीमें मिलाली गई। सन् १७६६में मैसूरके हैदरअलीने कलीकोटके देशपर आक्रमण किया। राजा अपने महलमें आग लगाकर अपने घरके लोगोंके साथ जल मरा, किन्तु मुसलमानोकी अधीनता स्वीकार नही की। उस समय हैदरअलीको आरकाटकी लडाईमे जानेकी आवश्यकता हुई, इस लिये कलीकोट उसके अधिकारमें नहीं हो सका, किन्तु सन् १७७३ में मैसूर वालोने फिर कलीकोटको जीत लिया। सन् १७८२ मे अङ्गरेजोने मैसूर वालोंको कलीकोटसे निकाल दिया। सन् १७८९ में मैसूरके टीपूसुलताननें कलीकोटके देशको बरबाद किया। उस समय शहर प्रायः उजाड़ होगया। टीपूने ६ मील दक्षिण-पूर्व फरुंक्खाबाद् नामक नया शहर बसाया और वहाँ किला बनानेका काम आरम्भ किया। सन् १७९० में अङ्गरेजोने टीपूके जनरलको परास्त किया और फरुंक्खाबादको लेलिया । सन् १७९२ में कलीकोटका सम्पूर्ण देश अङ्गरेजोके अधिकारमें होगया। उस समयसे धीरे धीरे देश आबाद होने लगा। सन् १८४९ में यूरोपियन सेनाका एक टुकड़ा कलीकोटमें रक्खा गया। सन् १८५१ में फौज वहाँसे हटा दी गई थी, किन्तु सन् १८५५ में वहाँके कलक्टरके मारे जाने पर कलीकोटमें फिर सेना रक्खी गई।

कलीकोटके राजाके महलके, जिसमें वास्कोडीगामाका स्वागत हुआ था, २ स्तम्भ अब तक विद्यमान है। पुराने महलकी निशानियांभी देखनेमें आती है। कलीकोटमें अब तक फ़रासीसियोका एक मकान है।

मालावार जिलेका इतिहास—पूर्वकालमें तिरुवांकूर और कोचीन राज्यके देशके साथ मालावारका नाम केरल और चेरा देश था। पुराणोंमें उस देशका नाम केरल देश लिखा हुआ है। वम्बईके वृत्तान्तमें देखिये। कहावतके अनुसार चेरा राज्यका पिछला राजा 'चेरमान पेरुमाल' था। वह अपने राज्यको अपने अधीनके लोगोंको वांटकर मुसलमान हो मक्का चला गया। चेरमान पेरुमालके रहनेके समयके विषयमें अनेक मतभेद हैं। साधारण प्रकारसे कहा जाता है कि वह चौथी सदीके मध्यमे था; किन्तु अरबके समुद्रके किनारेपर सफाईमें उसकी कबर विद्यमान है। उसके ऊपरके लेखसे विदित होता है कि सन् २१२ हिजरी (सन् ८२७ ईस्वी) में चेरमान पेरुमाल वहाँ पहुँचा और सन् २१६ हिजरी (सन् ८३१ ईस्वी) में वहाँ मरगया। चेरमान पेमारुलके पश्चात् चेरादेश बहुतसे छोटे राजाओंके अधिकारमें बंट गया।

सन् १४९८ में पोर्चुगलका वास्कोडीगामा मालावारमे आया। उसके थोड़ेही दिन बाद उसके उत्तराधिकारियोंने कलीकोट, कोचीन और कननूरमे रहना आरम्भ किया। सन् १६५६ में हालेंडवाले हिन्दुस्तानमें आये। उन्होंने पहिले कननूरको जीता और उसके पश्चात् सन् १६६३ में कोचीनके किले और तङ्गाचेरीको ले लिया। सन् १७१७ में हालेंडवालोंने जमोरिनसे चेटवाई नामक टापू छीन लिया; किन्तु उसके लगभग ५० वर्ष पीछेसे उनका बल घटने लगा। उन्होंने कननूरके राजाके वंशधरोंके हाथ कननूर बेंच दिया। सन् १७७६ में मैसूरके हैदरअलीने चेटवाई टापूको और सन् १७९५ में अङ्गरेजोंने कोचीनको जीत लिया।

सन् १७२० में फरांसीसी लोग पहले पहल माहीमें बसे। सन् १७५२ में वे लोग कलीकोटमें आये, उन्होंने सन् १७५४ में माउंटडेली और उत्तरके कई स्थानोंपर अपना अधिकार कर लिया, जिनको अङ्गरेजोने सन् १७६१ में ले लिया। अङ्गरेज लोग सन् १६१६ में कलीकोटसे, सन् १६८३ में तलीचेरीमें और सन् १७१४ में चेटवाईमें अपनी कोठियाँ कायम कर चुके थे। उसके बाद मैसूरके हैदरअली और टीपूसुलतानके साथ अङ्गरेजोंको मालावारमें कई बार लड़ना पड़ा। सन् १७९२ में टीपूसे ईष्टइंडियन कम्पनीकी सन्धि हुई, जिसके अनुसार मालावार कम्पनीके अधिकारमें होगया।

तलीचेरी।

कलीकोटके बन्दरगाहसे ३९ मील पश्चिमोत्तर समुद्रके किनारेपर (११ अंश, ४४ कला, ५३ विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ३१ कला, ३८ विकला पूर्व देशान्तरमें) मद्रास हातेके मालावार जिलेमें तलीचेरी बन्दरगाह तथा कसबा है। कलीकोटसे तलीचेरी होकर आगबोट जाते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तलीचेरीमें २७१९६ मनुष्य थे; अर्थात् १३४०३ पुरुष और १३७९३ स्त्रियां। इनमें १५१५२ हिन्दू, १०२८२ मुसलमान, १७४७ क्रस्तान; ८ पारसी, ५ जैन और २ अन्य थे।

तलीचेरीमें उत्तरी मालावार जिलेकी प्रधान कचहरियाँ, जेलखाना, कष्टमहौस, गिरजा और बहुतसे सरकारी तथा तिजारती लोगोंके आफिस हैं। घने वृक्षोंसे युक्त सुन्दर स्वास्थ्यकर

पहाडियों पर, जो समुद्रकी ओर ढालू हैं, तलीचेरी कसवा वसा है। कसवेके उत्तर समुद्रके किनारे पर ४० फीट ऊपर किला है। किले के पश्चिमोत्तरके संपूर्ण वगल पर ऊंची इमारतें वनी हुई हैं; ऊपर के भागमे जजकी कचहरी और अनेक सरकारी आफिस तथा नीचेके भाग में जेलखाना है। देशी लोगोंका कसवा दक्षिण ओर है। बाजारके साथ प्रधान सड़क समुद्रके किनारेके समानान्तर मे एक मील लम्बी है।

तलीचेरीमें बहुत इलायची और काफी दूसरे देशोंमें भेजी जाती हैं। वहाँकी इलायची सब देशोंकी इलायचीमें उत्तम होती हैं। वहाँसे उत्तम चन्दन की लकड़ी दूसरे कसवोंमे जाती हैं।

इतिहास—सन् १६८३ में ईष्टइन्डियन कम्पनीने तलीचेरीमे मिर्च और इलायचीके लिये एक कोठी नियत की। सन १७०८ में चेरिकल राजाने ईष्टइन्डियन कम्पनीको तली-चेरीका किला इनाम दे दिया। सन् १७६६ में वहाँकी कोठी रेजीडेंसी वनाई गई। सन् १७८२ मे मैसूरके हैदरअलीने तलीचेरी पर आक्रमण किया, किंतु वम्बई से अंगरेजी फौज आने पर उसने अपना घेरा उठा लिया।

माही।

तलीचेरी कसवे से ५ मील दक्षिण मद्रास हातेके मालावार जिलेकी सीमाके भीतर, माही नदी के मुहाने से दक्षिण, समुद्र के किनारे पर, फरांसीसियोंके राज्य में माही एक कसवा तथा वंदरगाह है। पश्चिमी किनारे पर केवल यही २ वर्गमील भूमि फरांसी-सियोंके अधिकारमें है. जिसमे लगभग ८००० मनुष्य वसते हैं। वन्दरगाहमें ७० टन वोझेका जहाज आ सकता है। किनारेकी सड़क वेपुरके रेलवे स्टेशनसे माही होकर कननूरके फौजी स्टेशनको गई है।

एक ऊँची भूमिपर माही वस्ती है। वस्तीका अगवास माही नदीकी ओर है। वहाँ फरांसीसियोंकी कोठी, स्कूल, गिरजा और अङ्गरेजी पोष्ट आफिस है।

इतिहास—फरांसीसी लोग मिर्चकी सौदागरी करनेके लिये पहिले पहल माहीमें वसे। सन्१७२२ में उन्होंने वहाँके राजासे कोठीके लिये भूमि प्राप्त की। उसके पश्चात् उन्होंने सन् १७५२ मे नीलेश्वरम् आदि कई वन्दरगाहोंको और सन् १७५४ में मांउटडे-लीको खरीदा। सन् १७६१ में अङ्गरेजोंने माही तथा खरीदी हुई भूमिको उनसे छीन लिया। अङ्गरेजोंने सन् १७६५ में माही फरांसीसियोंको लौटा दी, फिर सन् १७७९ में उनसे छीन ली; फिर सन् १७८५ में उनको लौटा दी, फिर सन् १७९३ मे तीसरी वार छीन ली, किन्तु सन् १८१६ में फिर उनको लौटा दी, तवसे वह उनके अधिकारमें है। माही पहिले बहुत मशहूर तथा वड़ी सौदागरीकी जगह थी, किन्तु सन् १७८२ में सम्पूर्ण कसवा जला दिया गया और वहाँकी किलावंदी तोड़ दी गई। उसकी दिन पर दिन घटती होती जाती है। सन् १८८३ में लगभग १८००० रुपया उसमें मालगुजारी आई थी।

कननूर।

तलीचेरीके वन्दरगाहसे १३ मील पश्चिमोत्तर कननूरका वन्दरगाह है। मद्रास हातेके मलेवार जिलेमें (११ अंश, ५१ कला, १२ विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश,

२४ कला, ४४ विकला पूर्व देशान्तरमें) समुद्रके किनारेपर एक तालुकका सदर स्थान और फौजी स्टेशन कननूर है। लङ्गरकी जगह किनारेसे २ मील दूर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके साथ कननूर कसबेमें २७४१८ मनुष्य थे; अर्थात् १३२७३ पुरुष और १४१४५ स्त्रियाँ। इनमें १२५६८ मुसलमान, ११७०७ हिन्दू, ३११० क्रस्तान, ३० पारसी, और ३ जैन थे।

कननूरके चारों ओर पहाड़ियाँ और तङ्ग घाटियां और जगह जगह नारियलके वृक्षोंके झुण्ड हैं। एक अन्तरीपपर किला है, जो अङ्गरेजी अमलदारी होनेके पीछे मज़बूत किया गया। ३० फीटसे ५० फीट तक ऊँची एक खड़ी पहाड़ीके किनारोंपर अङ्गरेजी अफसरोंके बहुतसे बँगले बने है। कननूरमे सरकारी कचहरियाँ, जेलखाना, स्कूल, अस्पताल, कस्टमहौस, बहुतसे आफिस बहुतेरी मसजिदें (जिनमें २ प्रसिद्ध हैं) और अनेक मिशन हैं। छावनीमें यूरोपियन और एक देशी पैदलकी रेजीमेंट अर्थात् पल्टन रहती है। कननूरका पवन पानी मोलायम, एक रस तथा स्वास्थ्यकर है। वहाँ औसतमें सालाना वर्षा ९७ इञ्च होती है। कननूरमें एक राजा हैं।

इतिहास—सन् १४९८ में पोर्चुगलका वास्कोडीगामा कननूरमें आया। उसके ७ वर्ष पीछे उसने वहाँ एक कोठी बनाई। सन् १६५६ में हालेण्डवाले कननूरमें बसे, उन्होंने अपनी रक्षाके लिये कननूरके वर्तमान किलेको बनवाया। सन् १७६६ मे मैसूरके हैदरअलीने हालेण्ड वालोंसे कननूरका किला छीन लिया। सन् १७८४ में अङ्गरेजोंने कननूरको ले लिया और वहाँका राजा ईष्टइण्डियन कम्पनीके अधीन हुआ। उसके ७ वर्ष बाद अङ्गरेजोंने फिर कननूरको लेकर अपने राज्यमें मिला लिया।

मरकाड़।

कननूर बन्दरगाहसे ७२ मील पूर्वोत्तर, मङ्गलूर बन्दरगाहसे ८६ मील पूर्व-दक्षिण, मैसूर शहरसे लगभग ८० मील पश्चिम (१२ अंश, २६ कला, ५० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ४६ कला, ५५ विकला पूर्व देशान्तरमें) समुद्रके जलसे ३८०० फीट ऊपर कुर्गदेशके मध्य भागमें कुर्गदेशमें प्रधान कसबा और उसकी राजधानी मरकाड़ है। मार्ग पहाड़ी है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मरकाड़ कसबेमें ७०३४ मनुष्य थे; अर्थात् ३९०४ पुरुष और ३१३० स्त्रियाँ। इनमें ४९४१ हिन्दू, १४७१ मुसलमान, ५९१ क्रस्तान और ३१ पारसी थे।

मरकाड़में छः पहला एक किला है। उसकी चारोंओर पत्थरकी दीवार और खाई बनी हुई है और उत्तर ओर एक पुस्ता है। किलेके भीतर राजाका महल, अङ्गरेजोंका गिरजा और हथियारखाना है। किलेमें पूर्व वाले फाटकके पास कमिश्नरसाहबकी कोठी और अनेक सरकारी आफिस हैं। किलेके भीतरका महल ईटोंका दो मञ्जिला है। उसके मध्य भागमें आँगन है। महलके अधिक हिस्सेमें अब सरकारी काम होता है।

देशी लोगोंके महलमें एक ऊँचे बाँधके भीतर दोदावीर राजेन्द्र, लिङ्गराजेन्द्र और दोनोंकी रानियोंके समाधि मन्दिर हैं, उनके मध्यमें गुंबज और कोनोंपर मीनार बने हुए हैं।

समाधिके पास सर्वदा दीप जलता है। प्रति दिन समाधिपर फूल और एक शुक्ल वस्त्र चढ़ाया जाता है। वहाँके लिङ्गायत पुजारियोंको सरकारसे वार्षिक २००० रुपये मिलते हैं।

हिन्दू-मन्दिरोंमें उमेश्वरका मन्दिर प्रधान है, जो ऊपर लिखे हुए समाधि मन्दिरोंके ढाचेका बना हुआ है। उस मन्दिरके ब्राह्मण पुजारीको वार्षिक ४८५० रुपये मिलते हैं। इनके अलावे मरकाडमें अस्पताल, स्कूल और जनाना स्कूल है। वहाँका जल वायु सर्द तथा रोगवर्द्धक है। वहाँ औसतमें सालाना १३९ इञ्च वर्षा होती है। मरकाड़में फौजी छावनी है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ३१५६ मनुष्य थे। कुर्गके राजाके वंशधर मरकाड़में रहते हैं।

इतिहास—लोग कहते हैं कि मधु राजा नामक कुर्गके पहिले राजाने सन् १६८१ में मरकाड़को बसाया। 'राजेन्द्रनामा' में कुर्गके राजाओंका इतिहास लिखा हुआ है। सन् १७८२ में मैसूरकी सेना मरकाड़से निकाल बाहर की गई। सन् १७९० मे मैसूरके टीपूने मरकाड़के राजा दोदावीर राजेन्द्रसे मेल किया। टीपूने किलेकी पत्थरकी दीवारको बनवाया। सन् १८१२ में मरकाड़के राजा लिंगराजेन्द्र वोड़ियरने किलेके भीतरके महलको बनवाया। वह महल हालमें मरम्मत किया गया है। सन् १८३४ में अङ्गरेजोंने विना मुकाबिलाके मरकाडपर अधिकार करके वहाँके राजाको गद्दीसे उतार दिया और कुर्गदेशको अपने राज्यमें मिला लिया।

कुर्गदेश—दक्षिण हिन्दुस्तानमें एक चीफ कमिश्नरके अधीन, जो मैसूरके रेजीडेण्ट भी है, कुर्ग एक देश है, जिसको उस देशके लोग कोड़गु कहते हैं। इसके उत्तर कुमारधारा और हेमवती नदी, जो मैसूरकी ऊँची भूमिसे इसको अलग करती है, पूर्व मैसूरका राज्य और पश्चिम पश्चिमीघाटकी पहाडियाँ, जो मालावार और दक्षिण किनारा जिलेसे इसको जुदा करती हैं, फैली हुई हैं। पूर्वकी सीमापर थोडी दूर तक कावेरी नदी बहती है। इसके देशकी सबसे अधिक लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तक ६० मील और सबसे अधिक चौड़ाई पूर्वसे पश्चिम तक ४० मील है।

सम्पूर्ण कुर्गदेशमें वन और घाससे पूर्ण पहाड़ियाँ फैली हुई हैं। केवल चन्द घाटियोंमें खेती होती है। जिलेमें सबसे ऊँची पहाड़ीका शिखर समुद्रके जलसे ५७२९ फीट ऊँचा और पुष्पगिरीका शिखर ५५४८ फीट ऊँचा है। खानोंमें मकान बनाने योग्य पत्थर निकलता है। लोहाकी खानें हैं, किन्तु किसी खानसे लोहा नहीं निकाला जाता। किसी किसी स्थानमें कुछ कुछ सोना मिलता है। जङ्गल बहुत है। जङ्गलोंमें भालू, बाघ, तेंदुए, हाथी इत्यादि बनैले जन्तु रहते हैं। हाथी अब कम होगये हैं। गवर्नमेंटने अब शिकारियोंको हाथी मारनेके लिये निषेध किया है। कावेरी नदी और उसकी सहायक लक्ष्मणतीर्थ, हेमवती तथा सुवर्णवती नदी कुर्गदेशकी प्रधान नदियाँ हैं, उनमेंसे कोई नदी नाव चलने लायक नहीं है। वे तङ्ग घाटियोंमे सघन जङ्गल होकर बहती हैं। कावेरी नदी कुर्गकी पहाडियोंसे निकली है। कुर्गमें बहुत परिश्रमसे थोड़ी खेती होती है। कहवा बहुत होताहै और इलायची अपने आप उपजती है। मजदूरी बहुत लगती है, इस कारणसे वहाँ दस्तकारीका काम नहीं होता। देशके कामकी प्रायः सम्पूर्ण वस्तु बाहरसे आती हैं।

कुर्गके हेरुमाल गाँवमे तथा उसके पासके एरपो गाँवके निकट फाल्गुनकी शिवरात्रिको मेला होता है। कुर्गके उत्तरीय सीमापर सुब्रह्मण्य नामक पहाड़ीके पादमूलके पास प्रति वर्ष अगहनमें मेला होता है। मेलेमें बहुत यात्री आते हैं और धातुके वर्तन, मूर्त्तियाँ तथा बहुत मवेसियाँ बिकती हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कुर्गदेशका क्षेत्रफल १५८३ वर्गमील और उसकी मनुष्य-संख्या १७३०५५ थी, अर्थात् ९५९०७ पुरुष और ७७१४८ स्त्रियाँ। इनमें १५६८४५ हिन्दू, १२६६५ मुसलमान, ३३९२ कृस्तान, ११४ जैन और ३९ पारसी थे, जिनमें सैकड़े पीछे ४४ कनड़ी भाषावाले, २०$\frac{3}{4}$ कोड़गू भाषावाले, ९$\frac{3}{4}$ तामिल भाषावाले, ७ तुलु भाषावाले, ६$\frac{3}{4}$ मलेयालम् भाषावाले, ४ उर्दू भाषावाले, २ तेलगू भाषावाले, और ६$\frac{3}{4}$ अन्य भाषा बोलनेवाले मनुष्य थे। कुर्गमें ३ हजारसे अधिक आवादीके केवल २ कसबे है, जिनमेंसे सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मरकाड़में ७०३४ और वीरराजेन्द्र पेटमें ४४४७ मनुष्य थे।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कुर्गके हिन्दुओंमें २४४५ ब्राह्मण, जो खास करके शैव हैं; क्षत्रियोंमें ३५१ राजपूत और १२९ पीछेके हुकूमत करनेवालेके वंशधर राजपिंडि; वैश्योंमें २२५ कोमटी और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे। कुर्गके कोड़ागू, जो एक समय उस देशके राजा थे, सन् १८८१ में केवल २७०३३ थे। वे लोग अपनी पुस्तैनी भूमिको जोतते हैं और स्वतन्त्र भावसे हथियार बांधते है। उनके मुखिया अङ्गरेजी सरकारसे परस्पर मित्रताकी शर्तपर अङ्गरेजी अफसरोंसे सुव्यवहार रखते है। हिन्दुस्तानके किसी प्रदेशके किसी जातिके मनुष्योंने कुर्गके लोगोंके तुल्य अङ्गरेजोंको राजभक्तिका प्रमाण नहीं दिया है। वहाँके पुरुष लम्बे चौड़े तथा बलवान् होते है। वे लोग काले रंगके कोट, जो ठेहुने तक लटका रहता है, पहनते हैं; कमरमें लाल अथवा नीले रंगके पटुका बांधते है, जिसमें सर्वदा एक चाकू, जिसमें चाँदीकी सिकड़ी और हाथीदांतका बेंट लगा रहता है, रखते है; शिरपर लाल मुरेठा अथवा विचित्र चालकी पगड़ी बांधते हैं; गलेमें गुरियोंका हार और कानोंमे तथा पहुँचोंपर चाँदी अथवा सोनेके भूषण पहनते हैं। उनकी स्त्रियोंमेंसे चन्द सुन्दर और अच्छी बनावटकी होती है। वे एक लम्बा रूमाल अपने शिरके बालोंपर बांधती हैं। बहुत कम लोग १६ वर्षसे कम अवस्थामें विवाह करते है।

इतिहास—देशी कहावतके अनुसार कुर्गके कोड़ागू लोग कदम्बा राजाके, जो ६ वीं सदीमें मैसूर राज्यके पश्चिमोत्तर भागमें हुकूमत करते थे, सैनिककी संतान है। कुर्गके दक्षिण भागमें मिले हुए लेखोंसे जान पड़ता है कि उस राजाके वंशधर उस प्रदेशमें कुछ अधिकार रखते थे। १६ वीं सदीकी लिखी हुई एक मुसलमानी किताबसे विदित होता है कि उस समय एक खास राजा कुर्गमें हुकूमत करता था। कहावतसे जान पड़ता है कि एक समय कुर्ग १२ जिलोंमें विभक्त था। प्रत्येक जिलेका एक स्वाधीन हुकूमत करनेवाला था। वे प्रधान 'नायक' कहलाते थे; उनको मरकाड़के राजाके पूर्व पुरुषोंने, जिससे राजवंश नियत हुआ था, परास्त किया। कुर्गके लोग इतिहासोंमें बलवान् तथा स्वाधीन लिखे गये हैं। उन्होंने मैसूरके हैदरअलीके प्रतापके समय अपनी स्वाधीनता कायम रक्खी थी; किन्तु पीछे थोड़ेही लड़ाई होनेके पश्चात्, जब अङ्गरेजी सरकारने उनकी रीति, मजहब तथा

मर्यादा पर हस्तक्षेप नहीं करनेका एकरार किया, तब उन्होंने अङ्गरेजोंकी अधीनता स्वीकार कर ली।

सन् १८३४ में कुर्गके राजाके कुप्रबन्धके कारणसे एक छोटी, किन्तु सख्त लडाई हुई। तब राजा नजरबंद करके काशीमें भेजा गया और उसका राज्य अङ्गरेजी राज्यमें मिला लिया गया।

मङ्गलूर।

कननूरके बन्दरगाहसे ७७ मील (कलीकोटके बन्दरगाहसे १२९ मील) पश्चिमोत्तर मङ्गलूरका बन्दरगाह है। मदरास हातेके दक्षिणी किनारा जिलेमें (१२ अंश, ५१ कला, ४० विकला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश, ५२ कला, ३६ विकला पूर्व देशान्तरमें) जिलेका सदर स्थान तथा जिलेमें प्रधान कसबा मङ्गलूर है। कननूरसे मङ्गलूर होकर आगबोट जाते है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मङ्गलूर कसबेमें ४०९२२ मनुष्य थे; अर्थात् २१३५७ पुरुष और १९५६५ स्त्रियाँ। इनमे २३४३८ हिन्दू, ९८४५ कृस्तान, ७५८४ मुसलमान, ३६ जैन, १५ पारसी, और ४ बौद्ध थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारत-वर्षमें ९८ वां और मदरास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें १४ वाँ शहर है।

मङ्गलूर कसबेके दक्षिण-पूर्व मङ्गला देवीका मन्दिर है, उसी देवीके नामसे कसबेका नाम मङ्गलूर पड़ा था। मङ्गलूर कसबा उन्नतिपर है। अच्छी सडकोंके किनारोपर देशी लोगोंके मकान बने हैं। यूरोपियन लोगोकी बस्ती मनोरम है। नारियल तथा ताड़के कुञ्जोंमें कसबा बसा है। कसबेके पास नेत्रवती और गुरुपुर नदीके मुहानेसे बनी हुई एक झील है। बन्दरगाहमें बडे जहाज नहीं जा सकते है। मङ्गलूरसे कुर्ग और मैसूरकी बहुत काफी दूसरे स्थानोंमें भेजी जाती है। समुद्र द्वारा वहाँ बड़ी सौदागरी होती है। बन्दरगाहमें लाइट हाउस बना है।

मङ्गलूरमें सरकारी कचहरियाँ, कष्टमहौस, गिरजा और फौजी छावनी है। छावनीमें देशी पैदलकी एक रेजीमेण्ट अर्थात् पल्टन रहती है।

मङ्गलूरमें यूरोपियन, पोर्चुगीज, बङ्गाली, पारसी, मुगल, अरबवाले, सीदी, मपिला, कनारी, यहूदी और कोकानी इत्यादि लोग देखनेमें आते हैं। वहाँका जरमनमिशन देखने लायक है। वहाँ छापने, जिल्द बाँधने, खपडा बनाने, लकडीकी चीज बनानेके काम सिख-लाये जाते हैं। वहाँ मदरासकी युनीवरसिटीके अधीन २ कालिज हैं। तलीचेरी, कननूर और मङ्गलूरके साधारण लोगोंकी भाषा तुलु है, जिसको तुलुवकु भी कहते हैं। तुलु भाषा उर्दूकी तरहपर बनी है, उसको मुसलमान लोग अधिक बोलते हैं।

मङ्गलूरके इलाकेमें मिर्च, अदरक, दारचीनी और सुपारी बहुत होती है। वहां नफीस और खूबसूरत मोमजामे बनते हैं। लौंग, जटामासी आदि मसाले और रेशम, कपडा, सोना, चाँदी इत्यादि चीजें दूसरे स्थानोंसे मङ्गलूरमे आती हैं।

दक्षिणी किनारा जिला—यह जिला मदरास हातेके पश्चिम किनारेपर है। इसके उत्तर बम्बई हातेमें उत्तर किनारा जिला, पूर्व मैसूरका राज्य और कुर्ग; दक्षिण मालाबार जिला और पश्चिम समुद्र है। जिलेका सदर स्थान मङ्गलोर है। भूमि नीची ऊँची है। ३००० से ६०००

फीट तक ऊँची पहाड़ियाँ हैं। १०० मीलसे अधिक लम्बी कोई नदी नहीं है। नदियोंमें नेत्रवती, गुरुपुर और चन्द्रागिरि नामक नदी प्रधान है। जिलेकी खानोंमें कुछ कुछ सोना और याकूत होते हैं। जिलेमें जङ्गल बहुत हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय दक्षिणी किनारा जिलेके ३९०२ वर्गमील क्षेत्रफलमें ९५९५१४ मनुष्य थे; अर्थात् ७९७४३० हिन्दू, ९३६५२ मुसलमान, ५८२१५ कृस्तान, १००४४ जैन, १६ पारसी और १५७ अन्य थे। हिन्दुओंमें १३६१४६ इडैयन (जिनको इडैगा भी कहते है), १३०००० परयन्, १०६४१५ ब्राह्मण, ९४४६४ वलिजा, ४१३३८ गौढ़ा, ३६०९९ वलयन्, ३४८८३ कुसवन, ३२५१३ कम्माडन, १०९१८ वनियन्, २८७ राजपूत और बाकीमे अन्य जातियोके लोग थे। जिलेमें केवल मंगलूर बड़ा कसवा है। दक्षिणी किनारा जिलेकी प्रधान भाषा मलेयालम् है।

इतिहास—सन् १२५२ में उस देशमें पांड्य वंशके राजाका अधिकार था, जिसके उत्तराधिकारीने (सन् १३३६में) विजयानगरके राजाको जगह दी। सन् १५६४ मे विजयानगरके राजाके परास्त होनेपर वेदनूरके गवर्नरने अपनी स्वाधीनताको छोड दिया। उसी राज्यमें पीछे कनारा जोडा गया। १६ वीं सदीमे पोर्चुगीजोने मंगलूरको ३ बार लूटा था। सन् १७६३ में मैसूरके हैदरअलीने वेदनूरको जीता। वहाँके राजा उसके अधीन हुए। उसके पश्चात् उसने पश्चिम किनारेको जीतनेके लिये अपनी फौज भेजी। राजधानीपर अधिकार होनेके चन्द महीनोंके भीतर मंगलूर और वसरूर, मैसूर वालेके आधीन हो गये। सन् १७६८ में बम्बईकी अङ्गरेजी फौजने हैदरअलीके जहाजको छीन लिया और कुछ दिनो तक मंगलोरपर अपना अधिकार किया। हैदरअलीके समय मंगलूर प्रधान बन्दरगाह था। टीपू सुलतानने किनाराके कृस्तानोंमेंसे बहुतेरोंको मुसलमान बनाया। सन् १७९१ मे टीपूने दक्षिणी किनारा अङ्गरेजोंको दे दिया। १७९९ मे मंगलूर अङ्गरेजी अधिकारमें हो गया। सन् १८६० में देश दक्षिण किनारा और उत्तर किनारा नामसे दो जिलोंमें तकसीम हुआ। सन् १८६२ में उत्तर किनारा जिला बम्बई हातेमे कर दिया गया।

सेलम।

कलीकोटके रेलवे स्टेशनसे १७० मील पूर्व पूर्वकथित ईरोड जंक्शन है। ईरोडके रेलवे स्टेशनसे ३७ मील पूर्वोत्तर सुरमङ्गलम्के पास सेलमका रेलवे स्टेशन है। मद्रास हातेमें (११ अंश, ३९ कला, १० विकला, उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, ११ कला, ४७ विकला पूर्व देशान्तरमें) रेलवेके स्टेशनसे ४ मील दूर समुद्रके जलसे ९०० फीट ऊपर जिलेका सदर स्थान और जिलेका प्रधान कसबा सेलम है।

सन् १८९१ की मनुष्य—गणनाके समय सेलम कसबेमे ६७७१० मनुष्य थे; अर्थात् ३२८६० पुरुष और ३४८५० स्त्रियाँ। इनमे ६०८८० हिन्दू, ५३९३ मुसलमान और १४३७ कृस्तान थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ५२ वाँ और मद्रास हातेके अङ्गरेजी राज्यमें चौथा शहर है।

सेलममें जिलेकी प्रधान कचहरियाँ, जेलखाना, कई एक स्कूल, २ गिरजा, और कई अस्पताल हैं। देशी कसबेके बीचमें होकर एक छोटी नदी निकली है। यूरोपियन लोग एक

शहरतलीमे रहते हैं। खास सेलममे बहुतसे तिजारती लोग और अफसर लोग रहते हैं। शिवपेटमें प्रति बृहस्पतिवारको मेला होता है। सेलमका किला अब नहीं है। उसके पास बहुत सरकारी इमारतें बनी है। सेलममे बडी सौदागरी होती है और बहुत कपड़े तैयार होते है।

सुरमंगलम् बस्तीसे ७ मील दूर शिवराय नामक पहाडियोंपर बहुतसी काफी उत्पन्न होती हैं। वहाँ एक एकड़ भूमिपर एक टन काफी तैयार होती है। काफीके वृक्ष ३० वर्ष तक रहते हैं, ३ वर्षके पश्चात् फलने लगते हैं और ६ वर्षके बाद पूरे तौरसे फलते हैं।

सेलम जिला—इसके उत्तर मैसूरका राज्य और उत्तरी आरकाट जिला, पूर्व तिरुचनापल्ली, दक्षिणी आरकाट और उत्तरी आरकाट जिला, दक्षिण तिरुचनापल्ली और कोयम्बुतूर जिलेका भाग और पश्चिम कोयम्बुतूर जिला और मैसूरका राज्य है। सदर स्थान सेलम कसबा है। जिलेके दक्षिण भागको छोड़कर जिलेके सब हिस्सोंमे पहाडियाँ है। पहाडियोंके सिलसिलेके बीचमे बीचमें बड़े बड़े मैदान हैं। जिलेकी प्रधान नदी कावेरी है। जगलोंमें बेशकीमत लकड़ी होती हैं। चन्दनकी लकड़ी भी पाई जाती है। बनैले जानवर दिन दिन घटते जाते है, क्योंकि सम्पूर्ण पहाडी लोग बन्दूक रखते हैं और अपने खानेके लिये सर्वदा जंगली जानवरोंको मारते हैं। पहाड़ियोंमें भालू और तेंदुए बहुत हैं। कभी कभी हाथी भी देख पड़ते है। उस जिलेमें इस्पात बहुत होता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सेलम जिलेके ७६५३ वर्गमील क्षेत्रफलमें १५९९५९६ मनुष्य थे, अर्थात् १५३१८५५ हिन्दू, ५१०९२ मुसलमान, १६५६७ क्रस्तान, ४६ जैन, १८ बौद्ध और १८ अन्य। हिन्दुओमें ९९८८५३ शैव और ५०६९४५ वैष्णव थे। हिन्दूकी जातियोंमें ३९१२८७ वनिया (जाति विशेष, जो मजूरी करते है), ३७६२२१ वेल्लाल (खेतिहर), २११८५६ परिया, ७७९९४ कैकलर (बिनाईके काम करनेवाले), ५७५३० इडैयन् (भेड़िहर), ४५१५७ सानान (मद्यक), ४३३४३ कम्भाड़न (शिल्पकार), ४०३३५ सतानी (दोमसला), २८३९३ ब्राह्मण, २३५१२ सेटी (सौदागर), २०१४२ वन्नान (धोवी), १७०८६ अंबटन (नाई), १४९५० सेंवड़वन् (मछुहा), ११९४९ कुसवन (कुम्भार), ३१७५ क्षत्रिय, २५२९ कणक्कन और बाकीमें अन्य जातियोके लोग थे। सेलम जिलेमें तामिल भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सेलम जिलेके कसबे सेलममे ६७७१०, तिरुपत्तूरमें १६४९९, वाणियमवाडीमें १५८३८, सैदामगलमूमें १३३५४, और राशिपुरमूमें १०५३९ मनुष्य थे। इनके अतिरिक्त कृष्णगिरि, अत्तर, धर्मपुरी, अम्बापेट इत्यादि छोटे कसबे हैं।

इतिहास—सेलम जिलेके उत्तरीय और दक्षिणीय भागका पुराना इतिहास अलग अलग है, क्योंकि वे भिन्न भिन्न राज्योंके अधिकारमें थे। उत्तरीय भाग पल्लव वंशके राजोओंके राज्यमें शामिल था। वह राज्य पाँचवीं सदीमे उन्नति पर था। एक समय उनका राज्य उत्तरमें नर्मदा नदी और उड़ीसाकी सीमासे दक्षिणमें दक्षिणी पेनार तक और पश्चिममें पश्चिमीघाटके उत्तरी अखीरसे पूर्वमें बङ्गालकी खाड़ी तक फैला था। एक समय कांचीवरम् उनकी राजधानी था। ९ वीं सदीमें जब तञ्जौरके चोला वंशके राजाने पल्लव वंशके

राजाका राज्य छीन लिया; तब उनके राज्यका केवल यही भाग उनके अधिकारमे रह गया। सेलम् जिलेका दक्षिणी भाग पूर्व कालमें कोगा देशके राज्यका हिस्सा था। कोंगाके गङ्गा वंशके तीसरे राजा हरीवर्माने लगभग सन् २९० में अपनी राजधानी स्कन्दपुरको छोडकर तलकाईको राजधानी बनाया।

कुछ कालके पीछे चोला वंशके राजाने और लगभग सन् १०६९ में वल्लाला वंशके राजाने दूसरे देशोंके साथ वर्तमान सेलम जिलेको लेलिया। लगभग २०० वर्षतक दोनो वंशके राजाओंके अधिकारमे वह राज्य था। लगभग सन् १३५० में विजयानगरके राजाओं के अधीन था और सन् १५६५ तक उनके राज्यका एक भाग बना रहा उसके पीछेभी विजयानगरके राज्यके दक्षिणका सम्पूर्ण भाग पुराने राजाओके हाथमें रहा।

१७ वी सदीके आरम्भमे सेलम जिला मदुराके अधीन था। सन् १७६० में मसूरके हैदरअलीने वारहमहालको छीन लिया। सन् १७९२ की सन्धिमें हैदरअलीके पुत्र टीपूने सेलम जिलेके होसुर तालुकको छोड़कर अन्य देशोंके साथ सेलम जिला अङ्गरेजोंको देदिया। सन् १७९९ में टीपूके मारे जाने पर होसुर तालुक भी अङ्गरेजी अधिकारमें होगया।

सत्रहवां अध्याय।

(मैसूरके राज्यमें) कोलार, बंगलोर, सोमनाथपुर, शिवसमुद्रम्, श्रीरंगपट्टनम्, मैसुर और नंजनगुड़ी।

कोलार।

सेलमके रेलवे स्टेशनसे ३७ मील (ईरोड जंक्शनसे ११२ मील) पूर्वोत्तर और कारकोनम् जंक्शनसे ८९ मील (मदरास शहरसे १३२ मील) पश्चिम-दक्षिण जालारपेटका रेलवे जंक्शन है। जालारपेटसे ४४ मील पश्चिमोत्तर ओरींपेटका रेलवे स्टेशन है, जहाँसे एक रेलवे शाखा मैसूर राज्यके कोलारकी सोनाकी खानोंको गई है। ओरीपेटसे ६ मील वालाघाट माइन् अर्थात् वालाघाटकी खानका और १० मील मरकूपम्का रेलवे स्टेशन है।

ओरीपेट जंक्शनसे लगभग १० मील उत्तर (बङ्गलोर शहरसे सड़क द्वारा ४३ मील) पूर्व थोड़ा उत्तर (१३ अंश, ८ कला, ५ विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, १० कला, १८ विकला पूर्व देशान्तरमे) मैसूर राज्यके कोलार जिलेका सदर स्थान और उस जिलेमें प्रधान कसवा तथा सोनेकी खानोंके लिये प्रसिद्ध "कोलार" है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कोलार कसबेमें १२१४८ मनुष्य थे; अर्थात् ९२०७ हिन्दू, २५३४ मुसलमान, ३८९ कृस्तान और १८ जैन।

कोलार कसबेमें जिलेकी प्रधान कचहरियाँ तथा अनेक आफिस और जेलखाना, स्कूल, अस्पताल, हैदरअलीके पिता फतहमहम्मदखांका मकबरा तथा अनेक बारक अर्थात् सैनिकगृह हैं। वहाँ रेशमके कीडोंके पालनेके लिये तूतकी खेती होती है और मोटे कम्बल बनते हैं।

मैसूर राज्यमें (विशेष करके कोलारमें) ८ वर्गमील भूमिसे सोना निकाला जाता है। अब प्रति वर्ष करोडो रुपयेका सोना निकलता है। पचासों हजार कुली उस काममें लगे हैं।

बंगलोर।

ओरींपेटके रेलवे स्टेशनसे ४३ मील (जालारपेट जंक्शनसे ८५ मील) और मद्रास शहरसे २१९ मील पश्चिम बङ्गलोर शहरका रेलवे स्टेशन है। शहरके स्टेशनसे ३ मील पूर्व फौजी छावनीका रेलवे स्टेशन मिलता है। मैसूरके राज्यमें समुद्रके जलसे ३१०० फीट ऊपर बङ्गलोर जिले तथा तालुकका सदर स्थान और मैसूर राज्यका सदर स्थान तथा प्रधान कसबा बङ्गलोर है। यह १२ अंश, ५७ कला, ३७ विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, ४६ कला, ५६ विकला पूर्व देशान्तरमें स्थित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके साथ बङ्गलोर शहरमे १८०३६६ मनुष्य थे, अर्थात् ९१०६२ पुरुष और ८९३०४ स्त्रियां। इनमे १२५२५८ हिन्दू, ३४३६४ मुसलमान, २०३२७ क्रस्तान, ४०३ जैन, ६ पारसी, ५ बौद्ध, २ सिक्ख और ३ अन्य थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें २० वाँ और मैसूरके राज्यमे पहिला शहर है।

बङ्गलोर शहर दो भागोंमे विभक्त है,—एक भाग पेटा। (अर्थात् किलेके सहित पुरानी देशी बस्ती) और दूसरा भाग छावनी है। दोनों १३½ वर्गमीलमे फैले हैं, अर्थात् २½ वर्गमीलमे पेटा और ११ वर्गमीलमे छावनी। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ६२३१७ मनुष्य पेटामें और ९३५४० मनुष्य छावनीमें थे।

बङ्गलोरमें मैसूरके महाराजका एक सुन्दर महल है, जिसको खास आज्ञा होनेपर आदमी देख सकता है। समय समय महाराज उस महलमें रहते है। उससे ३½ मील दक्षिण कोरामङ्गल नामक सरोवरके दक्षिणका किनारा है और बङ्गलोरके पेटा अर्थात् पुरानी बस्तीके पश्चिम बगलसे लगभग ३½ मील पूर्व सैपर्स—प्रेक्टिस ग्राउण्ड है। इन्हींके मध्यमें शहरके दोनो भाग अर्थात् पेटा और छावनी फैलती है।

दक्षिण-पश्चिमके अन्तमे किला और किलाके उत्तर पेटा अर्थात् पुरानी देशी बस्ती है। उससे पूर्वोत्तर छावनी फैली है। देशी बस्तियोके बीचके मैदानमें घोडदौडकी सडक, पार्क, परेडकी भूमि, यूरोपिनोंके मकान और बहुतसे प्रधान सरकारी आफिस है। उत्तर भागमें रेलवे स्टेशन है। बङ्गलोरमें ८ गिरजा, बहुतसी मसजिदें और बहुत देवमन्दिर हैं। पेटा तथा छावनी दोनोंमे रत्नकदार बाजार है। देशी कसबेमें मैसूर फाटक और किलेके बीचमें पबलिक बाजार है, किन्तु कारोबार सर्वत्र होता है। यूरोपियन लोगोंकी अधिक दुकानें छावनीके बाजारमे हैं।

पेटा अर्थात् पुराने देशी शहरमें घनी आबादी है। उसकी सडके तङ्ग और नादुरुस्त है। और जगह जगह सुन्दर मकान बने हुए है। पेटामे खास करके गल्ले और रूईकी सौदागरी होती है। पहिले पेटाके चारों ओर गहिरी खाई और सघन झाडी थी।

पेटासे उत्तर जेलखाना और जेलखानेसे पूर्व-दक्षिण कालिज और लगभग १ मील पूर्वोत्तर गवर्नमेंट हाउस है।

रेलवे स्टेशनसे ३०० गज दक्षिण मिलरका तालाव और उस तालावसे १ मील पूर्व हलसुर तालाव है। एक छोटी धारा दोनोंमें मिली है। दोनों तालावोंके बीचमे छावनीका बाजार, बाजारके दक्षिण–पश्चिम सिपाहियों की लाइनें; लाइनोंके थोड़ा पूर्व सिविल अस्पताल, लन्दन मिशन और एक गिरजा है। इनके अलावे वहाँ पैदल और सवार सेनाओंके बारक अर्थात् सैनिक गृह बने है। गवर्नमेंट हाउसमें मैसूरके रेजीडेंट रहते है। सेंट्रल जेलके चारोंओर बड़ा मैदान है। सेण्ट्रल कालिजमें एक वड़ा कमरा है, जिसमें एकही पत्थरके ३५ फीट ऊँचे स्तम्भ लगे हुए है। गवर्नमेंट हौससे ¾ मील दक्षिण ५२५ फीट लम्बा सरकारी आफिस है। बङ्गलोरकी छावनी दक्षिण भारतमें वड़ी छावनी है।

बङ्गलोर मैसूर राज्यका प्रधान तिजारती शहर है। आसपासकी खानोंके पत्थरसे उसमें बहुत सुन्दर मकान बने हैं। अनेक वड़े सरोवरोंसे बङ्गलोरमें पानी आता है शहर स्वास्थ्यकर होनेके कारण शहरतलियोंमें बहुतसे यूरोपियन बसे है। बङ्गलोरका रेशम बहुत मजबूत और सुन्दर होता है। वहाँ रेशमी किनारोंके साथ सूतके सुन्दर कपड़े बहुत तैयार होते हैं। गलीचेकी दस्तकारीके लिये बङ्गलोर शहर प्रसिद्ध है; वहाँके जेलखानेमें परसियन और तुर्कीचालके गलीचे, जिनको अङ्गरेज लोग भी चाहते है, बहुत बनते हैं। सोने और चाँदीके लैस भी अच्छे तैयार होते है। बङ्गलोर बंक सन् १८६८ से कायम है। सन् १८५८ में सेण्ट्रल कालिज; सन् १८६१ में १ नार्मल स्कूल और उसके दूसरे वर्ष १ इञ्जिनियरिंग स्कूल बङ्गलोरमें कायम हुआ।

किला—पेटाके दक्षिण अण्डाकार शकलमें बङ्गलोरका किला है। उसकी लंबाई उत्तरसे दक्षिणको २४०० फीट और चौड़ाई पूर्वसे पश्चिम को १८०० फीट है। किलेके उत्तर बगलमें पेटाकी ओर पत्थरका बना हुआ दिल्ली फाटक और दक्षिण बगलमे मैसूर फाटक है। किलेकी दीवारोंमें स्थान स्थान पर पुश्ते बने हुए है। किलेमें तोपखाना है और टीपूसुलतानके महलकी चंद निशानियां देखनेमें आती है। मैसूर फाटकके निकट एक छोटा मन्दिर है।

लालबाग—किलेसे लगभग १ मील पूर्व मैसूरके हैदरअलीके समयका लालबाग नामक मनोरम उद्यान है। बागमे देश देशके वृक्ष लगे हुए है, जो पासके तालावसे सींचे जाते है। उसमें चंद वनैले जानवर रक्खे हुए हैं। वहाँ समय समय पर फूल और फलोंकी नुमाइश होती है और साप्ताहिक नियत समयमें अङ्गरेजी बाजा बजते हैं। उस समय बहुत यूरोपियन तथा देशी लोग वहाँ देखने जाते है।

अजायबखाना—पेटासे १ मीलसे अधिक पूर्वोत्तर कैथलिक कैथेड्रलके १०० गज दक्षिण "कुबनपार्क" में जहाँ शामको बहुत लोग टहलनेके लिये जाते हैं, बङ्गलोरका अजायबखाना है। देवढ़ीमें जैन देवताकी सुन्दर प्रतिमा है। नीचेके बड़े कमरेमें खानिक वस्तुएँ इत्यादिके बहुतसे नमूने और ऊपरके मञ्जिलमें भांति भांतिके मृतक जानवर तथा मछलियाँ; अनेक प्रकारके देशी भूषण तथा पोशाक इत्यादि वस्तुएँ रक्खी हुई हैं।

इतिहास—सन् १५३७ मे एक देशी सरदारने बङ्गलोरमें मिट्टीका किला बनाया। सन् १६३८ में बीजापुरके आदिलशाही बादशाहके जनरलने बङ्गलोरको ले लिया। उसके पश्चात् सुप्रसिद्ध महाराज शिवाजीके पिता शाहजी बीजापुरके दक्षिणके नये राज्यके डिपोटी गवर्नर हुए उनको अन्य भूमिके साथ बङ्गलोर जागीरमें मिला। इसके बाद वह जागीर

-शाहजीके पुत्र वंकाजीके हाथमें आई। पीछे वंकाजीने तंजोरकी गद्दी पाने पर मैसूरके वाडियरके हाथ बङ्गलोरको बेंच दिया। उसके उपरान्त मुगल बादशाह औरंगजेबका जनरल कासिमखां कुछ दिनों तक बङ्गलोरके किलेमें था, जिसने सन् १६८७ में बङ्गलोरको ३ लाख रुपये पर मैसूरके राजाके हाथ बेंच दिया। सन् १७३८ में मैसूरके राजाने चारों तरफके जिलेके साथ बङ्गलोरका किला हैदरअलीको जागीरमे दे दिया। हैदरअलीने उसको अपना फौजी सदर स्थान बनाया। उसने अपने स्वाधीन होनेके पहले वर्ष सन् १७६१ में मिट्टीके किलेके बढ़ानेका काम आरम्भ किया और पीछे पत्थरके पुश्तोंके साथ किलेकी दीवारको बनवाया। यद्यपि हैदरअली और उसके टीपूके राज्यके समय श्रीरङ्गपट्टनम् राजधानी था, तथापि बादशाही खानदानके लोग बङ्गलोरके किलेके महलमें बहुधा रहा करते थे।

सन् १७९१ की ७ वीं मार्चको भारतवर्षके गवर्नर जनरल लार्ड कर्नवालिसने भारी फौज लेकर बङ्गलोरपर आक्रमण किया। उन्होंने टीपूसुलतानके दिलेरीके साथ रुकावट-करनेपर भी बङ्गलोरके पेटाको ले लिया। तारीख २१ मार्चको लार्ड कर्नवालिसने रातमें ११ बजेके समय किलेपर आक्रमण किया। उस समय किलेके रक्षक बहादुरखांके अधीन ८०००. आदमी और शहरमें २००० पैदल तथा ५००० नये भरती किये हुए लोग थे। इनके अलावे टीपू सुलतान बड़ी भारी फौजके साथ, जो कर्नवालिसकी सेनासे अधिक थी, अङ्गरेजोकी गफलतका समय देखता था, किन्तु किलेके किसी भागमें उसके बगलका पूरा बचाव नहीं था। उस समयकी लड़ाईमें अङ्गरेजोंके १३१ आदमी मरे तथा घायल हुए और मैसूरकी सेनाके २००० आदमीसे अधिक हत तथा आहत हुए। किलादार मारागया। किला अङ्ग-रेजोंके हाथमें होगया। उस रातमे टीपूसुलतानका कम्प किलेसे ६ मील दक्षिण-पश्चिम जिग-नीके पास था, किन्तु राति गिरनेपर वह किलेके १$\frac{3}{4}$ मील दूर तक आया था।

बङ्गलोरसे ३६ मील उत्तर समुद्रके जलसे ४८५६ फीट ऊपर नंदीदुर्ग नामक एक मजबूत पहाडी किला है, जिसको टीपू सुलतान दुर्गम समझता था, क्योंकि पश्चिमके अति-रिक्त उस पर चढनेका मार्ग नहीं था और पश्चिम ओर मजबूतीके साथ किलाबन्दी किया हुआ था, परन्तु सन् १७९१ की तारीख १९ अक्टूबरको अङ्गरेजी जनरल मिष्टर मेडोजने उसको ले लिया।

सन् १७९९ में श्रीरंगपट्टनम्के युद्धमें टीपूके मारे जानेपर अङ्गरेजी सरकारने मैसूरके पुराने हिन्दू राजाके वंशधरको मैसूरका राज्य लौटा दिया और श्रीरङ्गपट्टनम्में एक अङ्गरेजी फौज रक्खी। सन् १८११ मे श्रीरङ्गपट्टनम् रोगवर्द्धक समझकर वहाँकी सेना बङ्गलोरमें रक्खी गई और सन् १८२३ में किलेमें हथियारखाने बने, जो अब तक हैं।

सन् १८३१ में जब अङ्गरेजी गवर्नमेंटने मैसूरके राज्यको अपने प्रबन्धके अधीन किया तब प्रधान सरकारी महकमे बङ्गलोरके किलेके भीतरके महलमें लाये गये। सन् १८६८ में छावनीमें नये आफिस बनाये गये।

रेलवे—बङ्गलोर शहरसे रेलवे लाइन ४ ओर गई है, जिनके तीसरे दर्जेका महसूल प्रतिमील २ पाई लगता है।

(१) बङ्गलोरसे पश्चिम-दक्षिण सदर्न मरहटा रेलवे;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन ।
४६ मद्यूर ।
७४ फ्रेंचरक्स ।
७७ श्रीरङ्गपट्टनम् ।
८६ मैसूर ।
१०१ नञ्जनगुड़ी ।

(२) बङ्गलोर शहरसे पश्चिमोत्तर सदर्न मरहटा रेलवे है; लोंडा जंक्शनसे आगे लाइन उत्तर गई है;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन ।
४० तमकूर ।
१०० आर्सीकेर ।
११० बानावार ।
१२८ बिरूर ।
१५८ रामगिरि ।
२०७ हरिहर ।
२८८ हुबली जंक्शन ।
३०० धारवाड़ ।
३४४ लोंडा ।
३७७ बेलगांव जंक्शन ।
४१३ गोकाकरोड ।
४६२ मिराज जंक्शन ।
५४४ सितारारोड ।
५५३ बाथर ।
६२२ पूना जंक्शन ।

हुबली जंक्शनसे पूर्व कुछ दक्षिण ३६ मील गदग जंक्शन, ७८ मील होसपेट, १२९मील बल्लारी, और १५९ मील गुन्टकल जंक्शन। गदग जंक्शनसे उत्तर ११५ मील बीजापुर और १७३ मील होतगी जंक्शन ।

लोंडा जंक्शनसे पश्चिम १५ मील कैसिलरक ६६ मील गोआ।

मिराज जंक्शनसे पश्चिम २९ मील कोलापुर ।

(३) बङ्गलोर शहरसे उत्तर सदर्न मरहटा रेलवे,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन ।
६२ हिन्दूपुरम् ।
१११ धरमवरम् जंक्शन ।
१७४ गुंटकल जंक्शन ।

धरमवरम् जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व ४२ मील कादिरी, और १४२ मील पकाला जंक्शन; पकाला जंक्शनसे पूर्वोत्तर १९ मील चन्द्रगिरि, २६ मील तिरुपदी और ३२ मील रेणुगुंटा जंक्शन; पकाला जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व ३९ मील कटपदी जंक्शन, ४५ मील वेलूर और १३८ मील विल्लुपुरम् जंक्शन ।

(४) बङ्गलोर शहरसे पूर्व-दक्षिण मदरास रेलवे;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन ।
३ बङ्गलोर छावनी ।
४३ ओरीपेट जंक्शन ।
८७ जालारपेट जंक्शन ।

ओरीपेट जंक्शनसे पूर्वोत्तर ७ मील बालाघाट और १० मील मरकूपम् ।

जालारपेट जंक्शनसे पश्चिम-दक्षिण ७५ मील सेलम और ११२ मील ईरोड जंक्शन और जालारपेटसे पूर्वोत्तर ५१ मील कटपदी जंक्शन; ६६ मील आरकाट, ८९ मील आरकानम् जंक्शन और १३२ मील मदरास शहर ।

बङ्गलोर शहरसे एक सडक पूर्व ओर जालारपेट और कटपद्दी जंक्शनके पाससे होकर मदरास शहरको; दूसरी सडक पश्चिम कुछ दक्षिण श्रीरङ्गपट्टनम् होकर कननूरको, तीसरी सड़क पश्चिम ओर हसन कसबे होकर मङ्गलूरको और चौथी सडक पश्चिमोत्तर तमकूर, हरिहर, हुबली और बेलगांव होकर कोल्हापुर तथा पूनाको गई है।

सोमनाथपुर।

बङ्गलोर शहरके रेलवे स्टेशनसे ४६ मील दक्षिण-पश्चिम मद्दूरका रेलवे स्टेशन है। मद्दूरके पास शिवसा नदीपर, जिसको कदंबनदीभी कहते हैं, ७ मेहराबियोंका एक पुल और योगनृसिंह स्वामी तथा वरदराजके दो बडे मन्दिर है। मद्दूरसे १२ मील दूर रामगिरि नामक पहाड़के ऊपर कोदण्डराम स्वामी अर्थात् श्रीरामचन्द्रका मन्दिर है। ऐसा प्रसिद्ध है कि इसी स्थानमें सुग्रीवका मधुवन था। मद्दूरके स्टेशनसे १७ मील दक्षिण, बङ्गलोरसे श्रीरङ्गपट्टनम् होकर कननूर जाने वाली सडकके पास मैसूर राज्यमें तालुकका सदर स्थान मडवल्ली नामक प्रसिद्ध गाँव है, जिसको हैदरअलीने अपने पुत्र टीपूको दिया था। मडवल्लीसे १२ मील दक्षिण-पश्चिम मैसूरके राज्यमें सोमनाथपुर गाँव प्रसन्नचन्द्र केशवके मन्दिर होनेके कारण प्रसिद्ध है।

प्रसन्नचन्द्र केशवका मन्दिर—सोमनाथपुरमें एकही स्थानपर शिखरदार ३ बड़े मन्दिर है,—मध्यमें प्रसन्नचन्द्र केशवका, दक्षिण गोपालजीका और उत्तर जनार्दन भगवान्का। मन्दिरोमें नीचेसे ऊपर तक शिल्पकारीका सुन्दर काम बना हुआ है। चारोओरके बाहरकी नेवोंपर महाभारत, रामायण तथा भागवतकी बहुतसी कथाओंकी घटनाओके चित्र पत्थरोकी नकाशीमे अलग अलग बने हुए है। मन्दिरके चारोंओर बहुतसी टूटी फूटी पुरानी प्रतिमा पडी हैं। ऐसा प्रसिद्ध है कि हौसला वल्लाल राजाओके प्रसिद्ध शिल्पकार और इमारतकी विद्यामें प्रख्यात कारीगर डंकनाचारीने बारहवीं सदीमें इन मन्दिरोंको बनाया था। दरवाजेके पासके शिलालेखसे-जान पड़ता है कि हौसला वल्लाल वंशके सोमनाथने, जो राज्यका बडा अफसर भी था; सन् १२७० ईस्वीमे उन मन्दिरोंको बनवाया था। सोमनाथपुरमें उजडा पुजडा एक पुराना बड़ा शिवमन्दिर है।

शिवसमुद्रम्।

मद्दूरके रेलवे स्टेशनसे १७ मील दक्षिण मडवल्ली गॉव और मडवल्लीसे १२½ मील दक्षिण शिवसमुद्रम्के जलप्रपात हैं। मैं मद्दूरके रेलवे स्टेशनके पास किरायेकी बैलगाडीपर सवार हो शिवसमुद्रम् गया। वहाँ कावेरी नदी दो धारा होकर उत्तरको बहती है। दोनो धाराओंसे दक्षिणसे उत्तर तक लगभग ३ मील लम्बा और ¾ मील चौड़ा (शिवसमुद्रम् नामक) टापू बन गया है, जिसको कनडी भाषामें हेगुरा कहते हैं। कावेरीके पश्चिमवाली धारा मैसूरके राज्य और कोयम्बुतूर जिलेकी सीमा बनती है। शिवसमुद्रम् टापू कोयम्बुतूर जिलेमें हैं। दोनो धाराये टापूके उत्तरी छोरके पास ऊपरसे लगभग २०० फीट नीचे गिरकर एकमें मिल जाती है। उन्हीको जलप्रपात कहते है। धाराओंके अलग होनेके स्थानसे उनके मिलजानेका स्थान लगभग ३०० फीट नीचा है। दोनों धाराओमें पश्चिमवाली धारा बड़ी है, जिसमे एक दूसरा छोटा टापू बन गया है। कावेरीकी दोनो धाराओपर पुल

चने है। वर्षा कालमे धारा बडी तेज होजाती है। उस समय वे विना पुलके पार होने योग्य नहीं रहतीं।

श्रीरङ्गनाथका मन्दिर—कावेरीनदीमें श्रीरङ्गम्के ३ टापू हैं—मैसूर शहरके पास श्रीरङ्गपट्टनम्के टापूमें आदिरङ्गम्; शिवसमुद्रम्के टापूको मध्यरंगम् और तिरुचनापल्लीके पासके श्रीरङ्गम् टापूको अन्तरंगम् कहते हैं। शिवसमुद्रम्के टापूमें श्रीरंगनाथ भगवान्का मन्दिर है। विमान अर्थात् खास मन्दिरमें भगवान् पूर्व मुख करके भुजंगपर शयन करते हैं।

शिवसमुद्रम्से दक्षिण विड़िगिरि रंग नामक पर्वतके ऊपर चम्पकारण्य नामक क्षेत्रमें श्रीनिवास भगवान्का मन्दिर और मार्गवनदी तीर्थ है। वहाँ चम्पकका एक बहुत पुराना बड़ा वृक्ष है, जिसमें सर्वदा फूल फूलता है। ऐसा प्रसिद्ध है कि परशुरामजीने अपनी मातृ-हत्याकी निवृत्तिके लिये उस स्थानमे तप किया था।

कावेरीका जलप्रपात—शिवसमुद्रम् टापूके उत्तरके छोरपर कावेरीनदीकी दोनों धारा लगभग २०० फीट ऊपरसे विशाल शब्द करती हुई नीचे गिरती है। उनमेंसे पश्चिमी शाखाकी धाराके जलप्रपातको गगनचुक्की तथा गगनच्युत तीर्थ कहते है उसका पानी एक छोटे टापूके चारो ओर चक्कर लगा कर वड़े गर्जके साथ नीचेकी चट्टान पर गिरता हैं। गगनचुक्कीसे लगभग १ मील पूर्व ओर कावेरीकी पूर्वी शाखासे वना हुआ वडचुक्की नामक जलप्रपातका बड़ा फैलाव है; वह वर्षा कालमे ¼ मीलकी चौड़ाईकी विना टूटी हुई एक धारा होकर वड़े शब्दके साथ ऊपरसे नीचे गिरता है, किन्तु ग्रीष्मकालकी ऋतुओमे वह अनेक धारा होकर नीचे गिरता है, इसलिये उसको लोग सप्तधारा तीर्थ कहते है। कभी कभी उसकी १४ धारा तक होजाती हैं; (उसके पास बहुत सुगमतासे आदमी जा सकता है) पीछे जल-प्रपातका पानी एक संकीर्ण स्थानमें इकट्ठा होकर ३० फीट नीचे एक कुण्डमें तेजीके साथ गिरता है। दोनो जलप्रपातोंका जल नीचे गिरनेके उपरान्त संकीर्ण मार्ग होकर आगे ठेलता है और शिवसमुद्रम् टापूके पूर्वोत्तर जाकर एक धारा होकर पूर्वको बहता है; अर्थात् वहाँ कावेरीकी दोनों शाखा एकमे फिर मिल जाती हैं। जलप्रपातोंको देखनेका वर्षाकाल सबसे अच्छा समय है।

इतिहास—कहावतके अनुसार विजयानगरके राजाके संबन्धी गंगा राजाने १६ वीं सदीके आरम्भमें कावेरीके टापूमें शिवसमुद्रम् नामक नगर बसाया, जिसकी चन्द निशा-नियाँ चारों ओर देखनेमें आती है। उसी नगरके नामसे टापूका नाम शिवसमुद्रम् करके प्रसिद्ध है। टापूका पुराना नाम हेगूरा है। गंगा राजाके वंशधर केवल ४ पुश्त तक थे।

सन् १७९१ में जब लार्ड कर्नवालिसकी सेनाने श्रीरंगपट्टनम् पर आक्रमण किया, तब टीपू सुलतानने चारों ओरके देशको वरबाद करके सम्पूर्ण निवासी और पशुओंको शिवसमुद्रम्के टापूमे खदेर दिया। उसके पीछे सम्पूर्ण टापूमें जंगल लग गया; जंगली जान-वर होगये और नदीके ऊपरके पत्थरके पुल टूट फूट गये। सन् १८२५ में मैसूरके रेजी-डेण्टके कर्मचारी रामस्वामी मुदलेयारने कावेरीकी दोनों धाराओंके ऊपरके पुलोंको और टापूके भीतरके मन्दिरको बहुतसा रुपया खर्च करके दुरुस्त करवा दिया। उसने एक डाक बँगला बनवाया, जिसमें यूरोपियन दर्शक लोग ठहरते हैं।

श्रीरंगपट्टनम् ।

मद्रासके रेलवे स्टेशनसे ३१ मील (वगलोर शहरसे ७७ मील) दक्षिण-पश्चिम और मैसूर शहरसे ९ मील पूर्वोत्तर श्रीरंगपट्टनम्का रेलवे स्टेशन है । मैसूर राज्यमें (१२ अंश, २५ कला, ३३ विकला ऊत्तर अक्षांश और ७६ अंश, ४३ कला, ८ विकला पूर्व देशान्तरमें) कावेरीनदीके श्रीरंगपट्टनम् नामक टापू पर श्रीरंगपट्टनम् कसवा तथा पवित्र स्थान है, जिसको बहुत लोग सेरंगापट्टम् भी कहते हैं । श्रीरङ्गम् नामक विष्णुकी मूर्त्तिके नामसे उस टापू तथा कसवेका ऐसा नाम पड़ा है । श्रीरंगपट्टनम्से एक छोटी सडक दक्षिण-पश्चिम मैसूर शहरको और दूसरी सडक पूर्वोत्तर बंगलोर शहरको और पश्चिम कुछ दक्षिण कननूर बन्दरगाहको गई है । मैसूरकी ओर कावेरी पर पुल बना है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय गञ्जाम शहरतलीके साथ श्रीरंगपट्टनम्में १२५५१ मनुष्य थे, अर्थात् १०५८७ हिन्दू, १७८४ मुसलमान, १७८ क्रस्तान और २ जैन । मनुष्य-संख्याके अनुसार यह मैसूरके राज्यमें तीसरा कसवा हैं ।

श्रीरंगपट्टनम्का टापू पूर्वसे पश्चिम तक लगभग ३ मील लंबा और १ मील चौडा है । टापूके पश्चिम किनारेपर कावेरीके पास किला और पूर्व किनारेके पास गंजाम नामक शहरतलीके निकट लालबाग है । लालबाग और दरियादौलत बागके बीचमें गंजाम शहरतली है । टापूमें धान और ऊखकी फसिल होती है । टापूका जल वायु रोगवर्द्धक है, वहाँ मलेरिया बुखार बहुत होता है । गञ्जाम रवनकदार वस्ती है, उसमे प्रतिवर्ष ३ मेले होते है।

लालबाग—टापूके पूर्व किनारेके पास लालबाग है, जिसमे टीपूसुलतानका बनवाया हुआ हैदरअलीका सुन्दर मकवरा बना हुआ है । मकवरेके ऊपर मध्यमें एक गुम्बज तथा चारो कोनोंपर एक एक मीनार और चारो बगलोंमें काले पत्थरके स्तम्भ लगे हुए सायवान हैं । मकवरेमें हाथीदाँत जड़े हुए दोहरे किवाड लगे हैं, जिनको मार्किस डलहोसीने, जो सन् १८४८ से १८५६ तक भारतवर्षके गवर्नर जनरल थे, दिया था । मकवरेमें हैदरअलीकी कवरके वगलमें टीपूसुलतानकी कवर है । टीपूकी कवरपर उसकी मृत्युका समय सन् १२१३ हिजरी (सन् १७९९ ई०) लिखा हुआ है ।

किला—टापूके पश्चिमके किनारेपर टीपूसुलतानका वनवाया हुआ पंच पहला शकलका किला है । उसकी सवसे अधिक लवाई १$\frac{1}{2}$ मील और चौडाई १ मील है । किलेके उत्तरका बगल, जो सबसे वड़ा है, लगभग १ मील लम्बा है । किलेकी गहरी खाई पत्थर काटकर वनी थी ।

किलेके भीतर पाहिलेके हिन्दु राजाओंके महलकी चन्द निशानियाँ, टीपूसुलतानके महलका खण्डहर, जो चन्दनकी लकड़ीका गोदाम बना है, टीपूसुलतानकी बनवाई हुई एक बड़ी जामामसजिद, जिसकी मीनारोंके ऊपर चढनेसे श्रीरङ्गपट्टनम् और आस पासका सुन्दर दृश्य देखनेमें आता है, और रंगनाथस्वामीका पुराना मन्दिर है । किलेके भीतरके बहुत मकान गिरगये हैं । जो बचे हैं वह हीन दशामें है ।

किलेके वाहर उसकी दीवारके पास दरियादौलतवाग नामक एक उत्तम इमारत है, जिसको टीपूने गरमीके दिनोंमे अपने रहनेके लिये बनवाया था । इमारतमे लड़ाईको जाहिर

करते हुए सुन्दर चित्र बने है। वह इमारत श्रीरङ्गपट्टनम् पर आक्रमण होनेसे पहिलेही बद्-शकल होचुकी थी; किन्तु अङ्गरेजी अफसर वेलस्ली उसको मरम्मत करवा कर उसमें ३ वर्ष रहा था।

श्रीरंगनाथका मन्दिर—कावेरीनदीमें रङ्गम्के ३ टापू है। इस टापूको आदिरंगम्, शिवसमुद्रम्के टापूको मध्यरङ्गम् और तिरुचनापल्लीके पासके टापूको अन्तरङ्गम् कहते हैं; क्योंकि कावेरीमें पहिले श्रीरंगपट्टनम्, उसके बाद शिवसमुद्रम् और उसके पीछे श्रीरंगम् मिलता है।

श्रीरंगपट्टनम्के किलेमें श्रीरंगनाथस्वामीका पुराना बड़ा मन्दिर, जो श्रीरंगपट्टनम् शहरसे पहिले बना था, खड़ा है। मन्दिरमें श्रीरंगनाथस्वामीकी विशाल चतुर्भुज मूर्ति शेष-नागपर शयन करती है।

श्रीरंगपट्टनम्से पूर्व करिगट्ट नामक पहाड़ीके ऊपर श्रीनिवास भगवान्का मन्दिर है। श्रीरंगपट्टनम्से २४ मील पूर्व-दक्षिण कावेरी और कपिलाके संगमके निकट तिरुमकूल नरसी-पुरमें गुञ्जानरसिंहका मन्दिर है।

इतिहास—देशी कहावतसे जान पड़ता है कि गौतम ऋषिने कावेरीके टापूमें रङ्गनाथ-स्वामीका पूजन किया और उस स्थानका नाम श्रीरङ्गपट्टनम् रक्खा। तामिल भाषाकी एक पुस्तकमें लिखा है कि श्रीरङ्गपट्टनम् टापूमें जङ्गल लग गया था। शाका ८१६ (सन् ८९४ ईस्वी) के वैशाख सुदी सप्तमीके दिन गङ्गा वंशके अन्तिम राजाके राज्यके समय तिरुमल-यन्ने टापूके पश्चिम भागमें रङ्गनाथस्वामी बनवाया।

सन् ११३३ में सुप्रसिद्ध रामानुजस्वामीने वल्लाल वंशके राजा हयशालको जैन धर्मसे वैष्णव धर्ममें प्रवृत्त किया। राजाने रामानुजस्वामीको अष्टग्रामके सूबेके साथ श्रीरंगपट्टनम् टापूको दे दिया। रामानुजस्वामीने उनके प्रबन्धके लिये अनेक कर्मचारी नियुक्त किये। ऐसा प्रसिद्ध है कि रामानुजके कर्मचारियोंके वंशधरोमेंसे एकने विजयानगरके राजासे इजाजत लेकर सन् १४५४ में श्रीरंगपट्टनम्में मिट्टीका किला बनवाया और कलशवाड़ीके पासके, जो ३ मील दूर था, वहुतसे जैन मन्दिरोंके असवाबोंसे श्रीरंगनाथस्वामीके मन्दिरको बढ़ाया।

इतिहासोसे विदित होता है कि पीछे विजयानगरके राजाने श्रीरंगरायलकी पदवी देकर श्रीरंगपट्टनम्में एक राजप्रतिनिधि कायम किया, जिसके उत्तराधिकारी श्रीरंगरायलके खिताबके साथ श्रीरंगपट्टनम्में हुकूमत करते चले आये। सन् १६१० में मैसूरके राजा वोडियरने तिरुमलई नामक श्रीरंगरायलको परास्त किया। तिरुमलई मैसूरके अधीन हुआ। इसके पश्चात् मैसूरके हिन्दू राजा तथा हैदरअली और टीपूसुलतानके राज्यके समय श्रीरंगपट्टनम् सर्वदा राज्यका सदर स्थान बना रहा। हैदरअली और टीपूके राज्यके समय वह मैसूर राज्यकी राजधानी था। टीपूके राज्यके समय श्रीरंगपट्टनम्में लगभग १५०००० मनुष्य बसे थे। टीपूने किलेकी वर्तमान किलाबन्दियोंको बनवाया। लोग कहते है कि उसोने गञ्जाम शहरतलीको बसाया था।

सन् १७९१ में हिन्दके गवर्नर जनरल लार्ड कर्नवालिस स्वयं सेनापति बनकर भारी सेनाके साथ श्रीरंगपट्टनम्के पास आये; किन्तु रसदकी कमीके कारण वहाँसे वह लौट गये।

सन् १७९२ की ५ फरवरीको लार्ड कर्नवालिसके मातहत १०००० गोरे, २७००० देशी फौज, जिनके साथ मददके लिये ४५००० महाराष्ट्र और हैदराबादके बहुतसे घोड सवार थे, ४०० तोपोंके साथ टीपू सुलतानके किलाबन्दी कम्पके सामने आये। किलेके बाहर कावेरी नदीके उत्तरकी झाड़ीमें टीपूका कम्प था। उसकी फौजमे ५००० सवार और ४०००० से अधिक पैदल सिपाही थे। ता० ६ फरवरीकी रातमें अङ्गरेजी कम्पके ९००० आदमियोंने ३ दल होकर झाड़ीमे रेल दिया। टीपूकी फौज हटकर किले और पेटा (शहर) में चली गई। कावेरी लांघनेके समय अङ्गरेजी फौजके बहुतेरे आदमी डूब गये। अङ्गरेजोने दुश्मनके कम्पको ले लिया। ता० १६ फरवरीको जब बम्बई हातेसे ९००० आदमियोंकी फौज पहुँच गई, तब ता० २४ फरवरीको टीपूने सुलहका पयगाम किया, जिसके अनुसार टीपूने अपने राज्यका आधा भाग अङ्गरेजों और उनके मददगारोंको छोड़ दिया और लड़ाईके खर्चका ३ करोड़ रुपया उनको दिया।

सन् १७९९ में गवर्नर जनरल लार्ड वेलेज़ली मुहिमके बन्दोबस्तके लिये शाही शानसे मदरासमें दाखिल हुए। बहाना यह था कि टीपूने अङ्गरेजोंके विरुद्ध फरासीसियोंसे साजिश की है। अङ्गरेजोंकी एक फौज निजामकी फौजके साथ मदरासमे मैसूरको रवाना हुई और दूसरी फौज पश्चिमी किनारेसे उतरी। टीपू लड़ाईके मैदानमें थोड़ा मोकाबिला करके श्रीरङ्गपट्टनको लौट गया। जब उसकी राजधानी श्रीरंगपट्टनम् पर हमला हुआ, तब बडी बहादुरीसे लडकर वह मारा गया। उसके पश्चात् लार्ड वेलेज़लीने मैसूरके पुराने हिन्दू राजाओंके घरानेके एक लडके को टीपूके राज्यके मध्य भाग को, जो मैसूर का पुराना राज्य था, देकर मसनद पर बैठाया और बाकी राज्यको निज़ाम, मरहठो और अंगरेजोंने बॉट लिया। लार्ड वेलेज़लीने टीपूके बेटोंके लिये निहायत अच्छी पेंशन मुकर्रर की। वे पहले वेल्लूर में रहते थे, पीछे कलकत्तेमें रहने लगे। उस खांदानका शाहजादा गुलाम महम्मद कलकत्तेका बडा रईस था, जो सन् १८७७ में मरगया।

टीपूकी मृत्यु के बाद मैसूर शहर, उस राज्यकी राजधानी हुआ, तबसे श्रीरंगपट्टनम् की घटती तेजीसे होने लगी। सन् १८११ में श्रीरंगपट्टनम् के जलवायु रोगवर्द्धक होनेके कारण वहांकी अंगरेजी फौज बंगलोरमें हटा दी गई।

मैसूर।

श्रीरंगपट्टनम् से ९ मील और बंगलोर शहरसे ८६ मील दक्षिण–पश्चिम (मदरास शहरसे ३०५ मील पश्चिम) मैसूर का रेलवे स्टेशन है। मैसूर राज्यमे चामुण्डा पहाड़ीके पश्चिमोत्तरकी नेवके पास मैसूर राज्यके दक्षिण भागमें (१२ अंश १८ कला, २४ विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, ४१ कला, ४८ विकला पूर्व देशांतरमे) मैसूरके महाराजकी राजधानी मैसूर एक शहर है। महिषासुर शब्दका अपभ्रंश मैसूर शब्द है, महिषासुर शब्दसे महिसुर और महिसुरसे मैसूर हो गया है। (महिषासुरकी कथा भारत-भ्रमण–५ वें खण्ड के धामाकोटीके वृत्तांत में है) मैसूर शहरसे १ सड़क पूर्वोत्तर श्रीरंगपट्टनमको गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय छावनीके साथ मैसूर शहरमें ७४०४८ मनुष्य थे, अर्थात् ३६६९१ पुरुष और ३७३५७ स्त्रियाँ। इनमें ५६८१६ हिन्दू, १५३०७ मुसलमान,

१६४० क्रस्तान, २३६ जैन, ९७ सिक्ख, १७ पारसी और ५ यहूदी थे । मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारत वर्षमें ४३ वां और मैसूरके राज्यमे दूसरा शहर है ।

मैसूर शहरमें सुन्दर चौड़ी सड़कें बनी हुई हैं। बहुतसे दो मंजिले तीन मंजिले सुन्दर मकान बने हैं और बहुतेरे कपड़े पोश हैं । शहर साफ है। वर्षाकालमें शहरका पानी बड़ी तेजकि साथ दक्षिण ओर जाकर देवराज नामक बड़े जलाशयमें और किलेका पानी देवराज जलाशयसे ४ मील दक्षिण एक दूसरे बड़े जलाशयमें गिरता है।

शहरके दक्षिण किला, किलेके भीतर मैसूरके महाराजका महल, किलेके बाहर उसके पश्चिम वाले फाटकके सामने जगमोहन महल नामक उत्तम मकान (जिसको यूरोपियन अफसरोंके रहनेके लिये महाराजने बनवाया है), शहरके पूर्व यूरोपियन लोगोंकी बहुत सी कोठियाँ, किलेसे लगभग ६०० गज पूर्व महाराजका ग्रीष्म महल और किलेसे ३/२ मील दक्षिण शहरके पूर्वी भागमें ऊँची भूमिपर रेजीडेंसी है। पुरानी रेजीडेंसीमे शेशनकी कचहरी होती है और महाराजके यूरोपियन मेहमान रहते हैं । दीवानके महलको ड्यूक आफ वेलिटनने अपने रहनेके लिये बनवाया था।

इनके अलावे मैसूर शहरमें महाराजका कालिज, वेस्लियन मिशन कालिज और श्वेत-वाराह, लक्ष्मीनारायण, अष्टभुजी इत्यादि देवताओंके मन्दिर तथा किलेके महलके एक भाग-में स्त्रियोंका बड़ा स्कूल है, जिसमें लगभग ६०० स्त्रियाँ पढ़ती हैं।

किला और महाराजका महल—शहरके दक्षिण चतुर्भुज शकलका किला है। किलेके तीन बगलकी पत्थरकी दीवारें प्रत्येक ४५० गज लम्बी और दक्षिणकी दीवार उससे कुछ अधिक लम्बी है। किलेके उत्तर, दक्षिण और पश्चिम फाटक, चारोंओर खाई और पूर्व तरफ देवराज तालाब है। किलेकी बनावट अच्छी नहीं है। किलेके भीतर महाराज तथा राज वंशके लोगों और महलके कर्मचारियोंके मकान हैं। सड़के तंग और टेढ़ी हैं। सामने पश्चिम जेलखाना है।

किलेके भीतर महाराजका अत्युत्तम महल है। उसका अगवास पूर्व ओर है। महलके भीतर और उसके अगवासमें चित्रकारीका काम है। महलके प्रधान फाटकसे एक रास्ता एक आंगनमें गया है, जिसके पश्चिम बगलके दरवाजेसे एक मार्ग महलके पश्चिम भागमें स्त्रियोंके कमरोंमें गया है। उत्तर बगलमें हथियारखाना, लाइब्रेरी और कई एक आफिस हैं। ऊपरके अम्बाविलास नामक उत्तम कमरेमें मैसूरके सम्बन्धी अफसरोंकी तस्वीरें हैं। किवाड़ोंमें चाँदी और हाथीदांत जड़े हुए हैं।

महलके एक भागके विशाल कमरेमें महाराजका राजसिंहासन है। सिंहासन अञ्जीर की लकड़ीका बना हुआ है, जिसपर हाथीदांत तथा सोने चाँदीके जड़ावका सुन्दर काम बना है। लोग कहते हैं कि मुगल बादशाह औरंगजेबने सन् १६९९ में चिका देवराजको यह सिंहासन दिया था। उसके पीछे उसपर सोना चाँदी लगाया गया। मैसूरके सब राजाओंको उसी सिंहासनपर राज तिलक होता है और प्रधान उत्सवोंके समय महाराज उस पर बैठते हैं। महलके आगे मैदान और अन्य बगलोंमें गरीब लोगोंके मकान हैं।

चामुण्डादेवी—मैसूरके किलेसे २ मील दक्षिण-पश्चिम समुद्रके जलसे लगभग ३५०० फीट ऊंची चामुण्डा नामक पहाड़ी है। पहाड़ीके ऊपर चामुण्डादेवीका; जिसको महिषमर्दिनी

भी कहते हैं, मन्दिर बना हुआ है। नीचेसे पहाड़ीके शिखरतक ५½ मीलकी अच्छी सड़क बनी है। दो तिहाई मार्गके ऊपर पहाड़ीके चट्टानमें नन्दीकी बहुत बड़ी प्रतिमा बनी हुई है। बहुत लोग चामुण्डाके दर्शनको जाते हैं।

मैसूर राज्य—यह राज्य डेकानके दक्षिण हिस्सेमें अङ्गरेजी जिलोंसे घेरा हुआ २७९३६ वर्गमीलके क्षेत्रफलमें फैला है। हैदराबादके राज्यके अतिरिक्त भारतवर्षके किसी देशी राज्यकी मनुष्य-संख्या मैसूर राज्यके मनुष्य-संख्याकी बराबर नहीं है। इसमें ६ जिले है, बङ्गलोर, कोलार, तुमकूर, मैसूर, शिमोगा और कदूर। राज्यसे महाराजको लगभग १०६००००० रुपया मालगुजारी आती है। राज्यका सदर स्थान बङ्गलोर और राजधानी मैसूर शहर है। बङ्गलोरकी छावनी अङ्गरेजी सरकारके अधिकारमें है।

मैसूर राज्यके मैदानकी साधारण ऊँचाई समुद्रके जलसे २००० फीटसे ३००० फीट तक है। देशकी भूमि नीची ऊँची है। पश्चिम घाटकी ओर अधिक पहाड़ियाँ हैं। पहाड़ियों के बहुत सिलसिले उत्तरसे दक्षिणको गये हैं, जिनमेंसे ८ पहाड़ियाँ समुद्रके जलसे ५००० फीटसे ६३०० फीट तक ऊँची है। राज्यमें स्थान स्थानपर नन्दीदुर्ग आदि बहुत चट्टान है, जिनमेंसे कई एक समुद्रके जलसे लगभग ४००० तथा ५००० फीट ऊँचे हैं, और बहुतेरेके शिखर पर मीठे पानीके कुण्ड हैं। पूर्व समयमें वे दुर्गम चट्टान किलेका काम देते थे। राज्यका बड़ा भाग मैदान है, जिसपर बहुतसे गाँव और कसबे बसे हुए हैं। सन् १८८१ में मैसूर राज्यके २४७२३ वर्गमील क्षेत्रफलमें लगभग ७०५५ वर्गमील भूमि जोती गई, ५७१७ वर्गमील जोतनेके लायक परती थी और बाकी ११९५१ वर्गमील जोतनेके लायक नहीं थी।

मैसूर राज्यके जङ्गलों और पहाड़ियोंमे जगह जगह बाघ, तेंदुए, भालू, सूअर, सांभर, बनैले भेड, हरिन इत्यादि बहुत बनजन्तु रहते है। मैसूर जिलेके जङ्गलोंमें बनैले हाथी बहुत हैं, जो कभी कभी खेतोंकी हानि करते हैं। सन् १८७४ में खेदा वालोंने ५५ हाथियोंको, जिनमें १३ दन्तैले थे, पकड़ा था। इसके अलावे मैसूर राज्यके शिमोगा, कदूर आदि जिलोंमें कभी कभी हाथी देख पड़ते हैं। दक्षिण हिस्सेमें कावेरी नदी बहती है। पलार और उत्तरी और दक्षिणी दोनों पनार नदी पूर्व भागमें हैं। राज्यके पश्चिमोत्तर भागमें तुंगभद्रा नदी है। तुंग और भद्रा नदी पश्चिमीघाटसे निकलकर तुंगभद्रामे मिली हैं। हेमवती लोकपावनी, शिमशा और अर्कवती नदी कावेरीमें गिरती हैं। मैसूर राज्यकी कोई नदी नाव चलने लायक नहीं है। देशमें लगभग ३८००० तालाब हैं, जिनमें सबसे बड़ा सुलकर नामक तालाबका घेरा ४० मील है। राज्यके दक्षिण भागमे काली भूमिके मैदानोंमें रुई और मिलेट बहुत उपजते है। दक्षिण और पश्चिमके देशमें, जो नदियोंकी नहरोंसे पटाये जाते है, ऊख और धान होते हैं। पूर्वकी लाल जमीनके देशोंमे रागी और दूसरी सूखी फसिल होती है। जंगली लोग तसरके कीड़ोंको लाकर बेंचते हैं।

सन् १८८५ ईस्वीमें मैसूर राज्यमें रागी ३३२९००० एकड़मे और दूसरी सूखी फसिल; ५९७००० एकड़में धान; १६४००० में तेल निकलनेवाली फसिले, १३२००० एकड़मे नारियल और एरकाका सख्त फल, १४२००० एकड़में काफी; २७००० में तरकारियाँ, २१००० एकड़मे रुई, ३४००० में ऊख, २०००० में गेहू और ६००० एकड़में तम्बाकू थी।

रागी वहाँका प्रधान खोराक है। जंगलमें चन्दनकी लकड़ी बहुत होती हैं। मालाबारके किनारे और उसके आस पास श्वेत चन्दन होता है; परन्तु मैसूर राज्य, कुर्ग आदि देशोंमें आपसे आप बहुत श्वेत चन्दनके वृक्ष उपजते हैं। मैसूर राज्यमें चन्दनके पेड़से विशेष आय होती है। सालाना १० लाखसे १४ लाख तक चन्दनका बीज लगाया जाता है। २० वर्षसे लेकर ४०-५० वर्षमें पेड़ पुष्ट होता है। दस्तकारी मशहूर नहीं है; क्योंकि खास करके बहुत लोग खेतिहर हैं। कोलारके पास कई खानोंसे सोना निकलता है। गल्ले, एरकाका फल, काफी, चीनी और पान वहाँसे दूसरे देशोंमें जाते हैं।

सन् १८८३—१८८४ मे मैसूर राज्यसे १ करोड़ ६ लाख रुपये मालगुजारी आई थी, अर्थात् जमीनसे ७३०००००, महसूलसे १२०००००, जंगलसे ६०००००, स्टाम्पसे ४५००००, विदेशी मालके महसूलसे ३००००० और तिकटसे ३००००० रुपये; बाकीमें अन्य आमदनी थी।

सन् १८८४ में राज्यमें ८६ म्युनिसिपलटी थीं। ३०२९ मील सड़क हैं। राज्यकी तरफसे ६३५०००० रुपयेके खर्चसे १४० मील रेलवे बनी है। सन् १८८४ में ६३४९० विद्यार्थियोंके साथ २३८८ स्कूल थे, जिनमें ५९६६२ लड़के और ३८२८ लड़कियाँ पढ़ती थीं। इनके अलावे १ पागलखाना, १ कोढ़ीका दवाखाना, ३ साधारण दवाखाने और १७ मरीजखाने हैं।

मैसूर राज्यकी दस्तकारी बहुत प्रसिद्ध नहीं है, क्योंकि सर्व साधारण लोग खेती करते हैं। राज्यके अनेक हिस्सोंकी खानियोंसे खास कर बंगलोर जिलेमें लोहा निकाला जाता है। लगभग ३८००० मन लोहा प्रतिवर्ष निकलता है; बंगलोर जिलेके पश्चिमोत्तर कोलार जिलेमें खानोंसे बहुत सोना निकलता है। तमकूर जिलेकी चन्द्र पहाड़ी धाराओंमें कुछ कुछ सोना मिलता है। कच्चा रेशम पहिले बहुत होता था; किन्तु अब कम होता है; क्योंकि रेशमके बहुत कीड़े बीमारीसे मर जाते हैं। हरिहर क[illegible]स्बेके बने हुए लाल चमड़े, चितलदुर्गके कम्बल और बंगलोरके भूषण तथा कार्तिक [illegible]न प्रशंसनीय होते हैं। राज्यमें चन्दनकी लकड़ी बहुत होती है, उससे मैसूर राज्यको एक औसत सालाना लगभग १५०००० रुपयेकी आमदनी है। लाइनें

मैसूरके राज्यमें मेले बहुत होते हैं;—मैसूर जिलेमें [illegible]म्बन्ध कावेरीनदीपर चुंचनकटा नामक बाँध है, जिसमें ७० फीट ऊपरसे पानी गिरता है। रा[illegible] समुद्रम् नामक एक नाला बाँधसे निकल कर २६ मील गया है, जिससे खेत पटाये जाते [illegible]हास॥ बाँध और नाला दोनोंको सन् १६७२-१७०४ में मैसूरके राजा चिकादेव वोडियरने बनवाया। प्रतिवर्ष बाँधके पास लगभग १ मास मेला होता है। वहाँ माघमें लगभग २००० आदमी जाते हैं।

मैसूर जिलेके अष्टग्राम सबडिवीजनमें कावेरी और लोकपावनी नदीके संगमके समीप करिगट्टा पहाड़ी पर चैत्रमें मेला होता है। मेलेमें लगभग २०००० यात्री जाते हैं।

मैसूर जिलेके तालकडके निकट कावेरी नदीके किनारे पर मुड़कडोर नामक पवित्र पहाड़ीपर मल्लिकार्जुन नामक शिवका मन्दिर है। वहाँ प्रति वर्ष फाल्गुनमें १५ दिन मेला होता है। लगभग १०००० यात्री वहाँ जाते हैं। (मैसूर जिलेके नञ्जनगुड़ीके मेलेका वृत्तान्त नञ्जनगुड़ीमें देखिये)।

बंगलोर जिलेमें बंगलोर शहरसे ३६ मील दक्षिण अर्कवती नदीके दहिने किनारेपर तालुकका सदर स्थान काकनहल्ली नामक छोटा कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ४३६० मनुष्य थे। वहाँ एक किलेके भीतर रंगनाथका एक पुराना मन्दिर है, जहाँ प्रति वृहस्पतिवारको लगभग २००० आदमियोंका मेला होता है।

बंगलोर जिलेमें बंगलोरसे कोलार जानेवाली सडकके निकट बंगलोर शहरसे १८ मील पूर्वोत्तर एक नदीके बायें किनारे पर तालुकका सदर स्थान होसकोट नामके छोटा कसबा है, जिसमे सन् १८८२ में ४३७७ मनुष्य थे। वहां २ मील लम्बा बांध और एक सरोवर है, जिसके भर जानेपर पानीकी चादरके घेरेका विस्तार १० मील होजाता है। वहां प्रति वर्ष दो मेले होते हैं। प्रत्येक मेलेमें लगभग ५००० मनुष्य वहां आते हैं।

बंगलोर जिलेके तिरुमल नामक गांवमें रंगनाथस्वामी का एक मदिर है। वहां प्रति वर्ष चैत्र की पूर्णमासी से १० दिन तक मेला होता है। मेलेके समय लगभग १००००मनुष्य वहा जाते है।

कोलार जिलेमें अवानी नामक पवित्र गांव है, जिसमे स्मार्त मतके साधुका एक मठ है। लोग कहते हैं कि श्रीरामचन्द्रजी लंका जानेके समय इस स्थान पर ठहरे थे और इस गांवकी पहाडी पर महर्षि वाल्मीकि कुछ दिनों तक रहे थे। वहां रामचन्द्रका मन्दिर है, जहां प्रति वर्ष मवेसीका वड़ा मेला होताहै। मेलेमें लगभग ४०००० मनुष्य आते हैं।

कोलार जिलेमें कोलार कसवेसे ७ मील उत्तर वनरासी नामक छोटा गांव है। वहां प्रति वर्ष तारीख ६ अप्रैलसे ९ दिन तक यरलप्पा देवता का मेला होताहै। मेलेमे लगभग ७५००० आदमी आते हैं और बिकनेके लिये करीब ६०००० मवेसी आती हैं।

कदूर जिलेके शृंगेरीमें श्री शंकराचार्य संप्रदाय का मठ और शारदा देवीका मन्दिर है। वहां नवरात्रमे तथा अन्य समयोंमें वर्षमें कई वार मेले होते हैं (शृंगेरीके वृत्तांतमे देखिए)।

कदूर जिलेमे चिकमंगलूरसे १५ मील पूर्वोत्तर सक्रायमपट्टन नामक वस्ती है। वहां ऐसा प्रसिद्ध है कि इसी स्थान पर महाभारतमे प्रसिद्ध राजा रुक्मांगद की राजधानी थी। वहां एक बडी तोप और ४ स्तंभोंके ऊपर एक चौखूटा पत्थर तथा रंगनाथ देवताका मन्दिर है, जहां प्रति वर्ष रंगनाथ की रथयात्रा के समय बहुत लोग जाते हैं। और उनको भेड़ा बलिदान देते हैं।

तमकूर जिलेके गुव्वीमें मेला होता है, जिसमे दूर दूरसे सौदागर आते हैं और सब तरहके माल बिकते हैं।

तमकूर जिलेके यदीपुर गांवमें प्रति वर्ष चैत्रमासमें सिद्धेश्वरम् की यात्रा का मेला होता है। मेला ५ दिन रहता है। लगभग १०००० मनुष्य आते हैं।

तमकूर जिलेमे तमकूर कसवेसे १५ मील उत्तर शीवी नामक गांव है, जिसमें लगभग १०० वर्ष का वना हुआ नृसिंहजीका प्रसिद्ध मन्दिर है। मन्दिरके चारों ओर ऊंची दीवार है। वहा माघमे १५ दिन मेला होता है। मेलेमे लगभग १०००० मनुष्य आते हैं और बड़ी सौदागरी होती है।

शिमोगा जिलेमें शिमोगा कसवेसे ३० मील दक्षिण-पश्चिम तुंगनदीके बायें किनारेपर हितिथिहल्ली नामक गांवमे एक खाल है। वहां के लोग कहते हैं कि परशुरामजीने इसको

अपने परशासे बनाया था। वहाँ अगहनमे मेला होता है। मेलेमें लगभग ३००००० रुपयेकी मवेसी आदि वस्तु विकती हैं। ३ दिन उस खालमें हजारों आदमी स्नान करतेहैं। उस गांव मे २ पुराने मठ है।

मैसूर राज्यके दुदेरी तालुकमें नया कनहट्टी नामक गांव है, जिसमें लिंगायत लोगोंके महापुरुष प्रसिद्ध टप्पारुद्रका समाधि मन्दिर है। वहां प्रति वर्ष रथयात्राका मेला होता है, जिसमें लगभग १५००० यात्री आते है।

मैसूर राज्यमें हसन कसवेसे २३ मील पश्चिमोत्तर वेलूर नामक पुराना पवित्र गांव है। वहाँ प्रति वर्ष वैशाखमे ५ दिन मेला होता है। (वेलूरमें देखिये)।

मैसूर राज्यमें चुंचनगिरि नामक पहाडीके पादमूलके पास गंगाधरेश्वरका मेला होता है। मेला १५ दिन रहता है; उसमे लगभग १०००० मनुष्य आते हैं।

मैसूर राज्यके अतिकुप्पा तालुकमें मैलकोटा नामक गांव है, जिसमें विशेप करके वैष्णव लोग रहते है। श्रीरामानुजस्वामीने १२ वी सदीमें वहाँ १४ वर्ष निवास किया था। वहाँ रामानुजीय संप्रदायका एक प्रसिद्ध मठ और कृष्णका मन्दिर और ऊंचे चट्टानके ऊपर नृसिंहजीका मन्दिर है। उस गांवके निकट एक प्रकारकी सफेद मिट्टी होती है; दूर दूरके आचारी लोग अपने ललाट पर तिलक करनेके लिये उसको लेजाते हैं। उस गांव के निकट एक पर्वके समय प्रति वर्प लगभग १०००० मनुष्य आते हैं। रामानुजीय संप्रदायकी ८ गद्दी प्रधान हैं, जिनमेंसे मैलकोटा, तोताद्री और तिरुपदीकी गद्दीपर विरक्त आचारी रहते हैं।

मैसूर जिलेकी सीमाके पास कुर्गके पश्चिमोत्तरकी सीमाके निकट मदरास हातेके दक्षिणीकिनारा जिलेमें पश्चिमीघाटके एक कंटा पहाड़ियोंके सुब्रह्मण्य सिलसिलेकी एक चोटीको पुष्पगिरि कहते है। आदमी कठिन चढ़ाईसे ३ घण्टेमें वहाँ पहुंचता है। उसके नीचेके ढालू बगलके सघन वनमें बनैले हाथी रहते है। वहाँ प्रति वर्ष माघके मेलेमें बहुत यात्री आते है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मैसूरके राज्यके २७९३६ वर्गमीलके क्षेत्रफलमें ४९४३६०४ मनुष्य थे; अर्थात् २४८३४५१ पुरुष और २४६०१५३ स्त्रियां। इनमें ४६३९१२७ हिन्दू, २५२२७४ मुसलमान, ३८१३५ कृस्तान, १३२७८ जैन, ३५ पारसी, २९ सिक्ख, २१ यहूदी और ५ बौद्ध थे। इनमें सैकड़े पीछे ७४ कनड़ी बोलने वाले, १५ तेलगु अर्थात् तैलंगी भाषावाले, ४$\frac{3}{4}$ उर्दू भापावाले, ३$\frac{1}{4}$ तामिल बोलने वाले और ३ अन्य भापावाले थे। मैसूर राज्यमें नीचे लिखी हुई जातियोंके लोग इस भांति पढ़े हुए थे, प्रति हजारमें ८१९ बनिया, ६७८ ब्राह्मण, ३८ ब्राह्मणी और ६६४ कोमटी पुरुष तथा १३ कोमटीकी स्त्रियाँ। राज्यके पूर्वके एक छोटे भागके अतिरिक्त राज्यके सब लोग कनड़ी भाषा बोलते है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मैसूर राज्यके २४७२३ वर्गमील क्षेत्रफलमें ४१८६१८८ मनुष्य थे; अर्थात् ३९५६३३६ हिन्दू, २००४८४ मुसलमान, २९२४९ कृस्तान, ४७ पारसी, ४१ सिक्ख, ९ बौद्ध, १ यहूदी और २१ अन्य, जिनमेंसे हिन्दुओंमें ८०३५२१ बकिलिगा (खेती और मजूरी करने वाले), ४७०३६९ लिंगायत, २९१९६५

कनडी वर्णमाला

अ आं इ ई उ ऊ ऋ ॠ ए ऐ ओ औ

ಅ ಆ ಇ ಈ ಉ ಊ ಋ ೠ ಎ ಐ ಒ ಔ

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त

ಕ ಖ ಗ ಘ ಙ ಚ ಛ ಜ ಝ ಞ ಟ ಠ ಡ ಢ ಣ ತ

थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह ळ

ಥ ದ ಧ ನ ಪ ಫ ಬ ಭ ಮ ಯ ರ ಲ ವ ಶ ಷ ಸ ಹ ಳ

ऴ ऱ का कि की कु कू के कै को कौ कं कः १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

ೞ ಱ ಕಾ ಕಿ ಕೀ ಕು ಕೂ ಕೆ ಕೈ ಕೊ ಕೌ ಕಂ ಕಃ ೧ ೨ ೩ ೪ ೫ ೬ ೭ ೮ ೯

कुरुनेवर (भेडिहर), १६७७५५ नेयिगर (बिनाईके काम करने वाले) १६२६५२ ब्राह्मण, ८४५८३ उपार (नमक बनाने वाले), ८४४०७ इदगा (ताड़ी वाले), ८२४७४ कुंचिगर (पीतल तथा तांम्बेकी चीज बनाने वाले) ६९९२८ अगासा (धोबी), ५७९१६ गोल्लार (चरवाहा), डम्बेरा इत्यादि, ४४२८३ टिगलर (बागवान्), ४१२३९ महाराष्ट्र, ३१२६९ कुम्भार, ३०३७६ नापित (नाई), २९४४९ धनिगा (तेली), २५९८५ कोमटी (व्योपारी), १६८७३ सतानी (मन्दिरोंके पुजारी), १३२५१ क्षत्री, ५७१८ आदि निवासी जातियोंके लोग और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे। मुसलमानोमे १७९२१६ सुन्नी, ५०५५ पिंडारी, ४६५६ लब्बा, ४२४८ सीया, ३७७७ दइरा, ५१६ बहावी, ३८५ मपिला और २५५१ अन्य किसिमके थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मैसूर राज्यके नीचे लिखे हुए कसबोंमें १०००० से अधिक मनुष्य थे;—बङ्गलोर जिलेके बङ्गलोर कसबेमें १८०३६६, मैसूर जिलेके मैसूर कसबेमें ७४०४८ और श्रीरंगपट्टनम् में १२५५१, कोलार जिलेके कोलार कसबेमें १२१४८ और चिकबालापुरमें १०६२३, शिमोगा जिलेके शिमोगामें ११३४० और तमकूर जिलेके तमकूर कसबेमें ११०८६।

मैसूर राज्यके आस्तिकोंमें शंकराचार्यके अद्वैत मतके स्मार्त, माधवाचार्यके द्वैत मतके लोग और रामानुजीय संप्रदायके विशिष्टाद्वैत मतके वैष्णव लोग बहुत हैं;—स्मार्त लोग कहते हैं कि जीव ईश्वरसे अलग नहीं है, वह उन्हीका हिस्सा है; माधवाचार्यके मतके लोगोंका कथन है कि ईश्वर और जीव अलग अलग हैं और रामानुजीय संप्रदायके लोग कहते हैं कि मायाविशिष्ट ब्रह्म है, जीव ईश्वरसे अलग होकर जन्म लेता है और मरनेपर ईश्वरमें मिल जाता है।

माधवाचार्यके संप्रदायके लोग मैसूर राज्यमें बहुत हैं। कोडगु (कुर्ग) देशके पश्चिमके भागमें उडपीपुर गाँव है; उसीमें माधवाचार्यका जन्म हुआ था। उस गाँवमें माधवाचार्यका मठ है।

मैसूरके राज्यमें जङ्गली जातियोंमेंसे, एक प्रकारसे लोगोंकी झोपड़ियाँ वृक्षोंकी डाल पातसे बनती हैं। वे लोग शिकारसे अपना निर्वाह करते है; किन्तु अब कुछ लोग वृक्षोंको काटते है और काफीकी रोपाईमें काम करते हैं। वे लोग जाति भेद नही रखते। प्रत्येक गाँवमें उनका एक मुखिया रहता है। उनके शिरका बाल मोटा तथा १५ इञ्च तक लम्बा होता है, जिसको वह पीछे एक रस्सीसे बाँधते हैं। उनकी स्त्रियाँ पुरुषोंके साथमें काम नहीं करती हैं। जङ्गली लोगोंमें एक जातिके लोग केवल जङ्गली पैदावारोसे अपना निर्वाह करते हैं। वे लोग वृक्षोंसे मधुमक्खियोंके मधु निकालकर इकट्ठे करते हैं। पुरुष तथा स्त्री दोनोंके मुख मोटे तथा वेडौल होते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(अश्वमेधपर्व, ८३ वाँ अध्याय) राजा युधिष्ठिरने कौरवोंको जीतनेके पश्चात् अश्वमेध यज्ञका सामान किया। अर्जुनकी रक्षामें यज्ञ-अश्व छोड़ा गया। अर्जुन देश देशके राजाओंको जीतते हुए दक्षिण समुद्रकी ओर गये। उन्होंने उस तरफके द्राविण अर्थात् द्राविड, अन्ध्र, माहिषक अर्थात् मैसूर वाले, कालगिरीय अर्थात् नीलगिरि वाले बीरोंको संग्राममें परास्त करके सुराष्ट्रकी ओर गमन किया।

आदिब्रह्मपुराण—(२६ वाँ अध्याय) भारतवर्षके दक्षिण भागमें माहिषक, मैलेय अर्थात् मलयगिरि इत्यादि देश है।

इतिहास—मैसूर राज्यमे कई एक शिलालेख तथा तावके पत्तरोंके लेख मिले हैं, जिनसे महाभारत और रामायणमे लिखे हुए कई एक स्थान पहचाने गये हैं। जान पडता है कि ईसासे लगभग ३०० वर्ष पहिले बौद्धोंके भेदिया अर्थात् गुप्त दूतने उस देशको देखा था। जैन लोग बहुत दिनोतक मैसूरमे प्रधान बनकर रहे। उनके बनाये हुए बहुतेरे सुन्दर मन्दिर और अन्य स्मरण चिह्न विद्यमान है।

ऐतिहासिक समयमें प्रथम मैसूरका उत्तरी भाग कदम्ब वशके राजाओके अधीन था। उन्होंने १४ वीं सदीमें राज्य किया, पीछे वे लोग चालुक्यवशके राजाओको "कर" देते थे। उस समय गङ्गा वशके राजा मैसूरके दक्षिणी भाग और कोयम्बतूरमे राज्य करते थे। उनकी राजधानी पहिले कोयम्बतूर जिलेके करूरमे और पीछे कावेरी नदीके पास तालकदमे थी। ९ वी सदीमे चोला वशके राजाने तालकदके गङ्गा वंशके राजाका विनाश किया। मैसूर राज्यके पूर्वी बगलका एक भाग पहिले पल्लव वशके राजाओंके अधिकारमें था। ७ वी सदीमें चालुक्य वंशके राजाने पल्लव वंशके राजाको परास्त किया, किन्तु पल्लव वंशवाले १० वीं सदी तक उनके बडे दुश्मन बने रहे। चालुक्य वंशवालोने चौथी सदीमे हिन्दुस्तानके उत्तरसे आकर एक फैले हुए देशको जीता, जिसका एक भाग १२ वी सदीके अन्ततक उनके अधिकारमे था। बाद बल्लाला वंशके राजाने उनको परास्त करके उनका राज्य अपने राज्यमे मिला लिया। जान पडता है कि चोला वंशके राजाओंने मैसूरमे १५० वर्षसे अधिक राज्य नही किया। कलचुरिया वंशवालोका राज्य भी ऐसाही बहुत समय तक नही रहा।

हौसला बल्लाल वंशके राजा, जो जैन धर्मी थे, बडे लडाके थे। उन्होंने मैसूरके वर्त्तमान राज्यके सम्पूर्ण पश्चिमी, दक्षिणी तथा मध्य भागको और कोयम्बुतूर, सेलम और धारवाडके हिस्सेको जीता। उनकी राजधानी द्वार समुद्र (द्वारकावती पाटन) था। सन् १३१० में दिल्लीके अलाउद्दीनके जनरल मलिक काफूरने बल्लाल वंशके राजाको कैद किया और शहरको लूटा। सन् १३२६ में महम्मद तुगलककी भेजी हुई सेनाने द्वार समुद्रको अच्छी तरहसे बरबाद किया। जैन राजाओं और उनके पीछेके राजाओंके समयके बहुत मन्दिर अबतक विद्यमान हैं। पीछेके राजाओके मन्दिरोंमेंसे हौसलेश्वरका मन्दिर हिन्दुस्तानके विचित्र मन्दिरोंमेंसे एक है।

हौसला बल्लाल वशके राज्यका अन्त होनेपर सन् १३३६ मे वारंगलकी कचहरीके अफसर बूका और हरिहरने विजयानगरका राज्य कायम किया। विजयानगरके हिन्दू राजा और बहमनी वंशके मुसलमान बादशाहसे कई बार लडाई हुई। ऐसा प्रसिद्ध है कि मैसूर शहरके स्थान पर पहिले एक गाँव था। मैसूरके वोडियरके पूर्वजने सन् १५२४ मे उस गाँवके पास एक किला बनाया और उसका नाम महिषासुर जिसको उसके वंशकी इष्ट देवी चामुण्डाने मारा था, रक्खा। वही नाम शहरका भी पडा, किन्तु पीछे महिषासुर नाम बदलकर मैसूर हो गया। सन् १६६५ में दक्षिणके ५ मुसलमान बादशाहोंमेंसे ४ ने मिलकर विजयानगरके रामराजाको तालीकोटमें परास्त करके मार डाला। रामराजाके वंशधर अपनी राजधानी को छोड़ कर पेनुकुण्डा और चन्द्रगिरिमें हुकूमत करने लगे।

पेनुकुंडाके नरसिंह राजाके निर्बल होनेपर छोटे २ अनेक देशी प्रधान स्वाधीन बन गये, जिनमें एक दक्षिणके मैसूरका बोडियर था। कनड़ी भाषामें मालिक तथा प्रभुको बोडियर कहते हैं। मैसूर बोडियरकी राजधानी था। पहले मैसूरके प्रधान लोग विजयनगरके राजाके प्रतिनिधिको, जो श्रीरंगपट्टनम्में रहते थे, खिराज देते थे। सन् १६१० में मैसूरके बोडियरने पेनुकुंडाके सूबेदार तिरुमलईसे श्रीरङ्गपट्टनम्का किला छीन लिया; तबसे मैसूर राज्य नियत हुआ। ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा बोडियरका पूर्व पुरुषा विजयराज नामक यादव क्षत्री अपने भाई कृष्णराजके साथ सन् १३९९ में काठियावाड़के द्वारकासे आये; उनकी ९ वीं पीढ़ीमें राजा बोडियर थे। चमाराज और कंठीराज राजा बोडियरके उत्तराधिकारी हुए। कंठीराजने सन् १६३८ से १६५८ तक योग्यताके सहित राज्य किया। उन्होंने राजधानीकी किलाबन्दी किया और एक टकशाल बनाया। उनके सिक्के सन् १७६१ तक चलते थे।

सन् १६७० में चिका देवराज मैसूरके राजसिंहासन पर बैठे। उन्होंने अपने राज्यको दक्षिणी भारतमे प्रख्यात राज्य बनाया। सन् १६८७ में राजवंशके लोग शैवसे वैष्णव होगये। सन् १७०४ में चिकादेवराज मरगये। उसके बाद दो राजा हुए; उनमेंके पिछले राजा सन् १७३१ में निःसन्तान मरगये; तब राजाके कुलका रामराज नामक एक आदमी मैसूरका राजा बना था; किन्तु दीवानने उसको गद्दीसे उतार कर कैद कर दिया, वह कैदखानेहीमें मर गया। सन् १७३४ में उस वंशके चिका कृष्णराज राजसिंहासन पर बैठे।

चिका कृष्णराजके राज्यके समय हैदरअली एक मामूली सिपाही था, जिसने सन् १७६२ में मैसूरके राजासे उनका राज्य छीन लिया और बिदनोरकी लूटसे मालामाल होगया। मैसूर राज्यके कोलार जिलेके बुड़ीकोट नामक गॉवमें सन् १७२२ में हैदरअलीका जन्म हुआ था। उस समय उसका पिता फतह महम्मदखॉ सीराके नवाबके अधीन कोलारका फौजदार होकर बुड़ीकोटामें रहता था। हैदरअलीके पुत्र टीपूसुलतानने हिन्दू राज्यका चिह्न मिटा देनेके लिये मैसूरके किलेको तोड़वा दिया और उसके सामानसे उससे एक मील पूर्व एक टीले पर नजराबाद नामक किला बनवाया, जिसकी चन्द निशानियॉ अब तक देखनेमें आती हैं।

सन् १७९९ में अङ्गरेजोंने श्रीरङ्गपट्टनम्की लड़ाईमें टीपूसुलतानको परास्त किया। टीपू मारा गया। अङ्गरेजी सरकारने मैसूरके राजवंशके चमाराजके पुत्र कृष्णराजको मैसूरका पुराना राज्य, जिसको हैदरअलीने छीन लिया था, देदिया। टीपूके मरनेपर नजराबाद किलेके पत्थर उजाड़ कर मैसूरके पुराने किलेके स्थान पर फिर किला बनाया गया और किलेके भीतर राजमहल इत्यादि इमारतें बनाई गईं। श्रीरङ्गपट्टनम् शहरकी घटती और मैसूर शहरकी बढ़ती होने लगी। राजा लड़के थे इस कारणसे राज्यका प्रबन्ध एक योग्य महाराष्ट्र करने लगे। सन् १८१० में सबालिग होने पर राजा कृष्णराज राज्याधिकारी हुए। उन्होंने महाराष्ट्र सरदारके जमा किये हुए धनको खर्च कर दिया। उनसे राज्यका प्रबन्ध उचित भॉतिसे नहीं चला, इस लिये सन् १८३१ मे अङ्गरेजी गवर्नमेंटने अपने कर्मचारियों द्वारा मैसूर राज्यका प्रबन्ध करना आरम्भ किया। बङ्गलोर शहर मैसूर राज्यका सदरस्थान बना। राजाको खर्चके लिये मालगुजारीका पॉचवॉ भाग मिलने लगा। सन् १८६८ में

राजा कृष्णराज ७५ वर्षकी अवस्थामे मर गये । उसके उपरान्त कृष्णराजके गोद लिये हुए पुत्र जो उसी वंशके थे, चमाराजेन्द्र वोडियरके खितावके साथ उत्तराधिकारी हुए, जिनकी अवस्था छः सात वर्षकी थी ।

सन् १८७६ से १८७८ तक मैसूरके राज्यमें बड़ा भारी अकाल था । इस समय मैसूर राज्यकी तरफसे ७० लाख रुपये खर्च किये गये और मालगुजारीके २८ लाख रुपये छोड़ दिये गये, तथा १५ लाख ५० हजार रुपये चन्दासे आये, तिस पर भी राज्यके १० लाख मनुष्य और २ लाख ५० हजार मवेसी अकालसे मरगये ।

सन् १८८१ के मार्चमें अङ्गरेज महाराजने नये महाराज सर चमाराजेन्द्र वोडियर जी० सी० एस० आईको राजाका पूरा अधिकार दे दिया । मिष्टर आर० सी० रंगाचार्ल्र दीवान बने * ।

नंजनगुड़ी ।

मैसूरके रेलवे स्टेशनसे १५ मील दक्षिण नजगुड़ीका रेलवे स्टेशन है । मैसूर राज्यके मैसूर जिलेमें चामुण्डा पहाड़ीसे दो मील दूर कब्बानी और गुण्डल नदीके किनारेपर नञ्जनगुड़ी कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ५२०२ मनुष्य थे । कनड़ी भाषामें नञ्जनका अर्थ विष पीनेवाला अर्थात् शिव और गुड़ीका अर्थ नगर है (अर्थात् शिव का नगर) नञ्जनगुडीसे १ मील दूर मैसूरके रेजीडेंटका एक बंगला है, जिसके पास कब्बानी नदीपर पत्थरका पुल बना हुआ है ।

नञ्जनगुड़ीमें ३८५ फीट लम्बा और १६० फीट चौड़ा जिसमें १४७ खम्भे लगे हैं; नंजुडेश्वर शिवका बड़ा मन्दिर है । नंजुडेश्वरको लोग नीलकण्ठभी कहते हैं । मन्दिरके खर्चके लिये मैसूर राज्यकी ओरसे २०३०० रुपये प्रति साल मिलते हैं । वह मैसूर राज्यमें पवित्र स्थान है । वहाँ प्रति महीनेकी पूर्णिमाको रथयात्राका उत्सव होता है । चैत्र और अगहनकी रथयात्राके समय दक्षिण भारतके सब विभागोंसे हजारों यात्री वहाँ आते हैं ।

इतिहास—सन् १७४० में मैसूरके एक दीवानने नंजुडेश्वरके पुराने छोटे मन्दिरके स्थानपर नंजुड़ेश्वरका वर्तमान मन्दिर बनवाया और एक दूसरे दीवानने उसको सुधारा ।

अठारहवाँ अध्याय ।

(मैसूर राज्यमें) तमकूर, श्रावन बड़गुला, हलेविडके मन्दिर, बेलूर, शृंगेरीमठ और हरिहर, (बम्बई हातेमें) हुवली, धारवाड़, (पोर्चुगीजोंके राज्यमें) गोआ, (बम्बई हातेमें) कारवार, गोकर्णतीर्थ, जरसोपाके जलप्रपात और रत्नागिरि ।

तमकूर ।

बङ्गलोर शहरके रेलवे स्टेशनसे ४० मील पश्चिमोत्तर तमकूरका रेलवे स्टेशन है । मदरास हातेमें (१३ अंश, २० कला, २० विकला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश, ८ कला,

* सन् १८९४ के अंतमें महाराज सर चमाराजेंद्र वोडियरकी मृत्यु होगई । उसके पश्चात् उनके पुत्र महाराज श्रीकृष्णराजेंद्र वोडियर बहादुर जिनकी अवस्था लगभग ११ वर्षकी थी उत्तराधिकारी हुए ।

५० विकला पूर्व देशान्तरमें) देवरायदुर्ग नामक पहाड़ीके दक्षिण-पश्चिमकी नेवके पास तमकूर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा तमकूर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय तमकूर कसबेमें ११०८६ मनुष्य थे, अर्थात् ८५७१ हिन्दू, २०३३ मुसलमान, ३७४ कृस्तान और १०८ जैन।

केले, कसइली, नारियल इत्यादि वृक्षोंके कुञ्जोंसे घेरा हुआ तमकूर कसबा है। कसबेमें कई एक चौड़ी सड़कें बनी हुई है। देशी लोगोंके मिट्टीके मकान खपड़ेसे छाये हुए है। यूरोपियन लोग उत्तर ओर बसते है। डिपुटी कमिश्नरकी कचहरीका विशाल मकान बना हुआ है, जो गोलाकार ढाँचेका तीन मञ्जिला है। अन्य इमारतोंमें इस्टेट कमिश्नर, एञ्जिनियर और अमलदारके आफिस, कई एक स्कूलोंके साथ एक मिशन जेलखाना, जिला स्कूल, अस्पताल, बंगला और गिरजा है। वहाँ १२० लोहारखाने है, जिनमें लड़ाईके हथियार और छूरियाँ बनती हैं। वहाँ भाँति भाँतिकी पत्थरकी मूर्त्तियाँ और विविध प्रकारके बाजे तैयार होते है। प्रति वृहस्पति वारको मेला होता है। ऐसा प्रसिद्ध है कि मैसूर राजवंशके एक राजाने तमकूरको बसाया।

तमकूर जिलेमें बहुत देशी कपड़े तैयार होते है। उस जिलेमें लगभग ४००० कपड़े बिननेकी ढरकियाँ तथा कारिगह और लगभग ३५००० सूत कातनेके चरखे हैं।

श्रावन बड़गुला।

तमकूरके रेलवे स्टेशनसे ६० मील (बङ्गलोर शहरसे १०० मील) पश्चिमोत्तर अर्सीकेराका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे ८ मील दक्षिण-पश्चिम मैसूरके राज्यमें श्रावन बड़गुला नामक गाँव है, जिसमें जैन लोगोंके धर्मप्रचारक रहते है। उस गाँवके निकट इन्द्रवेत्ता और चन्द्रगिरि नामक २ पहाड़ियाँ हैं, जिनमेसे इन्द्रवेत्ता पहाडीके ऊपर मैदानमें जैनोंके तीर्थकरोंमेंसे गोमतराय अर्थात् गोमतेश्वरकी ७० फीट ऊँची प्रतिमा है। उसके आगेके शिलालेखसे जान पड़ता है कि उस प्रतिमाको चामुण्डारायने बनवाया था। लोग कहते हैं कि ईसासे ६० वर्ष पहिले चामुण्डाराय था। वहाँ पुराने समयके बहुतसे शिलालेख हैं। घेरेके भीतर कमरोंमे लगभग ७० छोटी जैन मूर्त्तियाँ हैं। चन्द्रगिरि पहाड़ीके ऊपर १५ जैन मन्दिर हैं।

हलेवीड़के मंदिर।

अर्सीकेराके रेलवे स्टेशनसे १० मील (बङ्गलोर शहरसे ११०) मील) पश्चिमोत्तर चानावारका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे २० मील दक्षिण-पश्चिम मैसूर राज्यके बेलूर तालुकमें हलेवीड एक प्राचीन गाँव है, जिसके पास पूर्व समयके अनेक मकान तथा मन्दिरोंकी निशानियाँ और हौसलेश्वर तथा केदारेश्वरके २ मन्दिर हैं।

हौसलेश्वरका मन्दिर—५ फीट ऊँचे चबूतरेपर १६० फीट लम्बा और १२२ फीट चौड़ा हौसलेश्वरका प्राचीन मन्दिर है, जिसको हौसला बलाल वंशके राजाने बनवाया था; मन्दिरके चारोंओर लगभग ३० फीट चौड़ी उस चबूतरेकी हाँसिया है। चबूतरेसे २५ फीट ऊपर मन्दिरका कार्निस है। मन्दिरकी-कारीगरी और बनावट विचित्र है। मन्दिरमें एक ओर हौसलेश्वर नामक बहुत बड़ा शिवलिङ्ग और दूसरी ओर पार्वतीजीकी सुन्दर प्रतिमा है।

मन्दिरके आगे जगमोहनमें नन्दी बैल बैठा है। जगमोहनके आगे एक मण्डपमें १६ फीट लम्बा, ७ फीट चौड़ा और १० फीट ऊंचा दूसरा नन्दी है। मन्दिर हालमें मरम्मत किया गया है।

केदारेश्वरका मन्दिर—यह मन्दिर हौसलेश्वरके मन्दिरसे बहुत छोटा है, किन्तु इसकी कारीगरी उससे भी अधिक बारीक है। इसकी नेवसे इसके शिरतक उत्तम सङ्गतरासीका काम है। मन्दिर १६ पहला है।

मन्दिरके शिखरपर लगकर एक वृक्षने पत्थरोंको हटा दिया, बहुतसी प्रतिमा अपने स्थानोंसे हट गई, जो बङ्गलोरके अजायबखानेमें रखी हुई है। मन्दिर हीन दशामें है। उसका जगमोहन उजड़ रहा है, तथा उसमें पौधे जम गये हैं।

बेलूर।

बानावारके रेलवे स्टेशनसे २० मील दक्षिण-पश्चिम ऊपर लिखा हुआ हलेवीड, और हलेवीडसे १० मील दक्षिण-पश्चिम, तथा हसन कसबेसे २३ मील पश्चिमोत्तर मैसूर राज्यमें एक नदीके दहिने किनारेपर ताल्लुकका सदर स्थान बेलूर एक म्युनिस्पल कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २९१७ मनुष्य थे। पुराणोंमें बेलूरका नाम वेलापुर लिखा है। उसको उस देशके लोग दक्षिणकी काशी कहते है।

चन्नकेशवका मन्दिर—ऊँची दीवारके भीतर ४४० फीट लम्बा और ३६० फीट चौड़ा अर्थात् ६ बीघे विस्तारका आँगन है। आँगनमें चन्नकेशवका विशाल मन्दिर और चार पाँच अन्य छोटे मन्दिर है। आगे पूर्व तरफ २ उत्तम गोपुर बने हुए हैं। मन्दिर और जगमोहनमें सङ्गतरासीका बारीक काम है। चन्नकेशव ७ फीटसे अधिक ऊँचे हैं। वहाँ प्रति वर्षके वैशाखमें ५ दिनों तक उत्सव होता है, जिसमें लगभग ५ हजार मनुष्य आते है।

१२ वीं सदीके मध्यमें हौसला बल्लाला वंशके राजा विष्णुवर्द्धनने, जैन धर्मसे वैष्णव-धर्ममें आनेके पश्चात् चन्नकेशवका मन्दिर बनवाया। उसके प्रसिद्ध कारीगर डंकनाचारीने मन्दिरमें विचित्र कारीगरीका काम बनाया था।

शृंगेरी मठ।

बानावारके रेलवे स्टेशनसे १८ मील (बङ्गलोर शहरसे १२८ मील) पश्चिमोत्तर और हुबली जंक्शनसे १६० मील दक्षिण-पूर्व बिरूरका रेलवे स्टेशन है, जहाँसे एक रेलवे शाखा पश्चिमोत्तर शिमोगा कसबेको गई है। बिरूरके रेलवे स्टेशनसे लगभग ६० मील पश्चिम मैसूर राज्यके कदूर जिलेमें तुंग नदीके उत्तर अर्थात् बायें किनारे पर (१३ अंश, २५ कला, १० विकला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, १७ कला, ५० विकला पूर्व देशान्तरमें) शृंगेरी एक पवित्र गांव है। शृंगेरीसे ९ मील पश्चिम शृङ्गगिरि, जिसको लोग ऋषिशृङ्गभी कहते हैं, पहाड़ी है, जिसके नामसे शृंगेरी नाम पडा है। ऐसा प्रसिद्ध है कि वहाँही शृंगी ऋषिका जन्म हुआ था। शृङ्गगिरिका अपभ्रंश शृंगेरी नाम है। शृंगेरी बस्तीमें मैसूर राज्यकी एक तहसीली कचहरी, एक लम्बी सडक और मल्लिकार्जुन नामक शिवका मन्दिर है। शृंगेरीमें लगभग १७०० मनुष्य बसते हैं।

श्रृंगेरी गांवके पास टीले पर शारदा देवीका प्रसिद्ध मन्दिर है। वहाँ श्रृंगेरीमठ तथा मठके स्वामी विद्याशंकर और श्रृंगेरीभट्टका मन्दिर बना हुआ है। श्रृंगेरीके आस पास चंदनके वृक्ष बहुत हैं और छोटी इलायची, काली मिर्च और सुपारी बहुत उत्पन्न होती हैं। वहाँ नृसिंहजीका एक मन्दिर है।

श्रृंगेरीमठमें शंकराचार्यकी नियत कीहुई गद्दी पर तबसे इस समय तक लगातार गद्दीके उत्तराधिकारी लोग होते आते है। एक अङ्गरेजी किताबमें श्रृङ्गेरीमठकी गद्दी पर क्रमसे रहने वाले ३९ उत्तराधिकारियोंके नाम हैं।

श्रृङ्गेरीमठके वर्त्तमान स्वामी श्रीजगत्गुरु शिवाभिनव नृसिंह भारती बड़े भारी पण्डित है। वह भारत वर्षके विविध प्रांतोंमें पर्य्यटन करके बहुत द्रव्य लाते हैं और पुण्य कार्यमें खर्च करते है। तुंग नदीकी घाटीमे मांगनी नामक उपजाऊ भूमि श्रृङ्गेरीमठकी जायदाद है और मैसूरके राज्यकी ओरसे मठको वार्षिक १००० रुपये मिलते हैं। वर्षमें नवरात्र आदि पर्वों-के समय कई बार मठमें बड़ा उत्सव होता है, जिनमें ३००० से १०००० तक लोग आते हैं। उस समय सब जातिके लोगोंको मठकी ओरसे भोजन कराया जाता है। और पुरुषोंको मुद्रा तथा स्त्रियोंको पहननेके कपड़े और चोली बांटी जाती हैं।

श्रृंगेरीमठकी शाखा ४ मठ हैं;—(१)मैसूर राज्यमें तुंगभद्रा नदीके तट पर कूडली गाँवमें, (२)मैसूर राज्यके बङ्गलोर जिलेके शिवगंगा नामक गाँवमें, (३) मदरास हातेके बल्लारी जिलेमें किष्किन्धाके विरूपाक्षके मन्दिरके पास और (४)बम्बई हातेके पूना शहरके पास संकेश्वरमें।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—कूर्मपुराण—(ब्राह्मी-संहिता, २९ वां अध्याय) नील लोहित शङ्कर भक्तोंके मंगलके लिये प्रकट होंगे और श्रौत तथा स्मार्त मतकी प्रतिष्ठाके लिये सकल वेदांतका सार ब्रह्मज्ञान और निर्दिष्ट धर्म अपने शिष्योंको उपदेश देंगे।

दूसरा शिवपुराण—(उर्दू अनुवाद, ७ वां खण्ड, पहिला अध्याय) अधर्मियोंके मत प्रबल होनेके समय शिवजी एक ब्राह्मणके गृह जन्म लेकर शंकर नामसे प्रसिद्ध हुए। उन्होंने अधर्मका विनाश करके संन्यास धर्म तथा अद्वैत मतको प्रकट किया।

भक्तमाल—लगभग ३०० वर्ष हुए कि नाभाजीने भक्तमाल नामक पद्य भाषाकी पुस्तक बनाई। उसके ४३ वें अंकमें लिखा है कि शंकराचार्य धर्म पालन करनेके लिये कलियुगमें प्रकट हुए। उन्होंने अनीश्वरवादी बौद्धों और कुतर्की जैनोंको परास्त करके धर्मविमुखोंको सत मार्गमें कर दिया। वह सदाचारकी सीमा थे। उनकी कीर्ति विश्वमें फैली है। वह ईश्वरके अंशसे अवतार लेकर मर्यादाका पालन करते थे।

शंकराचार्यजीका जीवन चरित्र–शंकरदिग्विजय आदि संस्कृत पुस्तकोंमें लिखा है कि केरल (अर्थात् मालाबार) देशमे वृष पर्वतके ऊपर पूर्णा नदीके किनारेपर ज्योतिर्लिंग रूपसे शिवजी प्रकट हुए। वहाँके राजशेखर नामक राजाने उस लिंगकी प्रतिष्ठा करवाई। उस लिंगके समीप काटली नामक नगरमें विद्याधिराज नामक पण्डितके गृह शिवजीने जन्म लिया। उनके पिता विद्याधिराजने उनका "शिवगुरु" नाम रक्खा। और उचित समय पर मध्व पण्डितकी कन्यासे उनका विवाह कर दिया। जब २५ वर्षकी अवस्था होनेपरभी शिवगुरुके कोई सन्तान नहीं हुई, तब वह अपनी भार्याके सहित नदीमें

स्नान करके वृष पर्वतपर शिवजीकी आराधना करने लगे। शिवजीके प्रकट होने पर शिव-गुरुने उनसे पुत्र मांगा। शिवजीने पूछा कि तुम अल्प बुद्धिवाले बहुत पुत्र कि थोड़ी आयु वाला सर्वज्ञ एक पुत्र लोगे? शिवगुरुने कहा कि मुझको थोड़ी आयुवाला सर्वज्ञ एकही पुत्र स्वीकार है। शिवजी उनको यही वर देकर चले गये। उसके अनन्तर गर्भ धारण करनेसे १० मासपर शिवगुरुकी भार्याके पुत्र उत्पन्न हुआ। श्रीशङ्करजीकी आराधना करनेसे पुत्रका जन्म हुआ, इस लिये शिवगुरुने उसका नाम शङ्कर रक्खा। शङ्करकी ४ वर्षकी अवस्था होनेपर उनके पिता शिवगुरुका देहान्त होगया। शङ्करने ८ वर्षकी अवस्थामें अपनी मातासे आज्ञा लेकर नर्मदा नदीके तीरपर जाकर श्रीगौड़पादजीके शिष्य गोविन्दनाथ, अर्थात् गोविन्दानन्दसे, जिनको गोविन्द योगीन्द्रभी कहते है, संन्यास धर्मकी शिक्षा ली।

कुछ समयके पश्चात् गोविन्दानन्दने शंकरको आज्ञा दी कि तुम काशीपुरीमे जाकर ब्रह्मसूत्रोंपर भाष्यकी रचना करो। शङ्करने काशीमें जाकर कावेरी तटके निवासी एक ब्राह्मण कुमारको संन्यासकी दीक्षा देकर उसका सनन्दन नाम रक्खा और अन्य बहुतेरे लोगोको संन्यासकी दीक्षा देकर अपना शिष्य बनाया। उसके उपरान्त वह अपने शिष्योके सहित तीर्थ भ्रमण करते हुए बदरिकाश्रम पहुँचे। उन्होंने वहां कुछ दिन निवास करके व्यासजीके रचे हुए सूत्रोंपर भाष्य बनाया। उसके पश्चात् शंकराचार्यने ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माडूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छांदोग्य और बृहदारण्य, इन १० उपनिषदों पर भाष्यकी रचना की। उसके पीछे उन्होंने भगवद्गीतापर भाष्य किया। इन्ही तीनों भाष्योको "प्रस्थानत्रयी" कहते हैं। इनके अतिरिक्त शंकराचार्यजीने अनेक वेदान्त ग्रन्थोको बनाया और अपने बनाये हुए ग्रन्थोंको अपने शिष्योंको पढ़ाया। उन्होंने अपने प्रेमपात्र शिष्य सनंदनका नाम पद्मपाद रक्खा।

शंकराचार्यजीने प्रयागमे जाकर भट्टपाद नामक महात्माका, जिसका नाम कुमारिलभी है, दर्शन किया। भट्टपादने कहा कि हे शकर! यदि तुम अद्वैत मतका प्रकाश करना चाहते हो तो माहिष्मतीमें जाकर चारो दिशाओमें प्रसिद्ध कर्ममीमांसाके सिद्ध करनेवाले मण्डन मिश्रको शास्त्रार्थमें परास्त करो। उसके परास्त होने पर सम्पूर्ण पण्डित परास्त होनेके तुल्य हो जायँगे। भट्टपाद ऐसा कह कर परमधामको चले गये।

शंकराचार्यजीने नर्मदा नदीके तटपर माहिष्मतीपुरीमें जाकर पण्डित मण्डनमिश्रसे कहा कि तुम हमारे साथ शास्त्रार्थ करो, जिसका पराजय होगा वह जीतने वालेके मतको ग्रहण कर उसका शिष्य होजायगा। तुमने वेदानुकूल अद्वैत मार्गको छोडकर कर्म मार्गहीका आश्रय लिया है; कि तो तुम अद्वैत मत ग्रहण करलो नहीं तो हमसे शास्त्रार्थ करो। मंडन-मिश्र बोले कि मुझको शास्त्रार्थ करनेकी सर्वदा इच्छा रहती है, किन्तु ऐसा कोई मुझको नहीं मिलता। मैं तुम्हारे साथ शास्त्रार्थ करूंगा, परन्तु हमारे तुम्हारे बीचमे अवश्य कोई मध्यस्थ होना चाहिये, जो जीत हारका निर्णय करे। उस समय दोनो आदमीकी सम्मतिसे मण्डनमिश्रकी सरस्वती नामक स्त्री मध्यस्थ बनाई गई। शंकराचार्यने कहा कि परास्त होजाने पर मैं गेरुआ वस्त्र और संन्यास कर्मको छोडकर श्वेत वस्त्र धारण करके पुनः गृहस्थ हो जाऊँगा। मण्डनमिश्रने प्रण किया कि शास्त्रार्थमें हार जाने पर मै श्वेत वस्त्र और गृहस्थाश्रम धर्मका परित्याग करके गेरुआ वस्त्र और संन्यास धर्मको ग्रहण

करलूंगा । उस समय मण्डनमिश्रकी भार्या सरस्वतीने दोनोंके कण्ठमें पुष्पकी एक एक माला पहना करके उनसे कहा कि शास्त्रार्थ करते करते जिसके कंठ की माला कुंभलाय जाय-वह अपने को परास्त हुआ समझ ले । श्रीशंकराचार्यजी और मंडनमिश्र का परस्पर शास्त्रार्थ होने लगा । दोनों अपने अपने अनुकूल युक्तिसे वेदका प्रमाण देने लगे । पांच छः दिनसे अधिक शास्त्रार्थ होनेके पश्चात् शंकराचार्यने जब अनेक रीतियोंसे श्रुतियोंके प्रमाणसे जीव और ब्रह्मका अभेद सिद्ध किया तब मंडनमिश्रके गलेकी माला कुंभला गई । सरस्वतीने मंडनमिश्रका पराजय स्वीकार करके शंकराचार्यसे कहा कि हे यतिराज ! तुमने मेरे पतिको पूर्ण रीतिसे नहीं जीता; क्योंकि वेदमें लिखा है कि पत्नी पुरुष का आधा अंग है, इसलिये तुम मुझको भी शास्त्रार्थमें जीत कर इनको अपना शिष्य बनाओ । शंकराचार्यने सरस्वतीका वचन स्वीकार किया । शंकराचार्य और सरस्वतीका १७ दिनों तक शास्त्रार्थ हुआ किन्तु किसी का पराजय नहीं हुआ, तब सरस्वतीने विचार किया कि शंकराचार्य आजन्म ब्रह्मचारी है, इस कारणसे यह "कामशास्त्र" को कुछ भी नहीं जानते होंगे; इनसे कामशास्त्रमें प्रश्न करनेपर मेरा विजय होगा; ऐसा विचार उसने शंकराचार्यसे प्रश्न किया कि काम की कला कितनी हैं, उसका स्वरूप क्या है, वह किस स्थान पर रहता है, उसकी पूर्व की तथा अंतकी स्थिति किस भांति है और स्त्री पुरुषमें उसकी विलक्षणता क्या है इत्यादि ; शंकराचार्य कुछ काल तक मौन रह शोच करके बोले कि हे सरस्वती ! इन प्रश्नोंके उत्तर देनेके लिये तुम मुझको एक एक मासका समय दो, तब म कामशास्त्रमें भी तुम्हारा पराजय करूंगा । सरस्वतीने उनका वचन स्वीकार किया ।

शंकराचार्यजी कामशास्त्र जाननेके लिये अपने शिष्योंके सहित मंडनमिश्रके घरसे चल दिये । उन्होंने जाकर एक स्थान पर एक गुहामें अमरुक नामक राजाका मृत शरीर देखा । तब उन्होंने पद्मपाद आदि शिष्योंसे कहा कि मैं इस राजाके शरीरमें प्रवेश करके इसकी स्त्रियोंसे काम शास्त्रका ज्ञान प्राप्त करूंगा और फिर अपने योग बलसे इस शरीरको छोड़ कर अपने शरीरमें आजाऊंगा । जब तक मैं लौट आऊं तब तक तुम लोग इस गुहामें मेरे मृत शरीरकी रक्षा करते रहो ऐसा कह वह योग बलसे अपने स्थूल शरीरको वहां छोड़ कर ज्ञानेंद्रियोंके सहित लिंग शरीर द्वारा राजाके शरीर में प्रवेश कर गये । तब वह राजा जीवित होकर अपने घर गया । राजा को देख पुरवासी और प्रजाओंको परम आनंद हुआ । राजा इंद्रके समान प्रजापालन करने लगा, किंतु राजाका अलौकिक प्रभाव देखकर मंत्रियोंके चित्तमें बड़ा संदेह उत्पन्न हुआ । वे कहने लगे कि जान पड़ता है कि किसी योगिराजने राजाके शरीरमें प्रवेश किया है, इसलिये ऐसा उपाय करना चाहिये जिससे योगी फिर अपने शरीरमें न जासके । ऐसा विचार कर मंत्रियोंने गुप्त भावसे दूतोंको आज्ञा दी कि तुम लोग मृतकोंको खोज खोज अग्निमें भस्म करदो । इधर राजा संपूर्ण राज्य भार मंत्रियोंपर छोड़कर स्त्रियोंके साथ अनेक प्रकारके विषय भोग भोगने लगे । उसके उपरान्त उन्होंने कामशास्त्रके जानने वालोंके साथ विचार करके भाष्य सहित वात्स्यायन सूत्रोंका अभ्यास कर लिया और शृंगारका निधि रूप "अमरु शतक" नामक एक ग्रन्थ बनाया । उधर शंकराचार्यजीके शिष्योंने देखा कि अवधिके एक मासमे पाँच छः दिन अधिक बीत गये; किंतु स्वामीजी लौट कर नहीं आये । तब वे लोग स्वामीजीके शरीरकी रक्षाके लिये कुछ चेलोंको छोड़कर उनको

खोजनेके लिये वहांसे चलकर अमरुक नामक राजाके राज्यमें पहुँचे । उन्होंने वहाँ जब सुना कि अमरुक राजा मरकर फिर जी गया है और वह बड़े न्यायसे अब प्रजा पालन करता है तब समझ लिया कि इसी राजाके शरीरमें गुरु महाराज हैं। शिष्योंने जब उस राजाके शरीरमें स्थित शंकराचार्यको अपनी गान विद्याकी चतुरता दिखलाई तब शंकराचार्यने शिष्योंको पहचानकर अपने शरीरमें जानेकी इच्छा की। आचार्यजीने राजाके शरीरको वहाँ छोड कर लिंग शरीर द्वारा अपने पूर्वके शरीरमें प्रवेश करनेके लिये चल दिया। उन्होंने गुहामें जाकर देखा कि राजाके मंत्रियोंके भेजे हुए दूत गण उनके मृतक शरीरको भस्म करनेके निमित्त चिता पर रखकर उसमें अग्नि लगा रहे हैं । उस समय शंकराचार्यजीने अपने शरीरमें प्रवेश करके संकटसे छूटनेके लिये नृसिंहजीका स्मरण किया। जब नृसिंहजी प्रकट हुए तब अग्नि शांत होकर बुझ गई। उसके पश्चात् शंकराचार्यजीने मण्डनमिश्रके घर जाकर उनकी स्त्री सरस्वतीको कामशास्त्रमे परास्त कर दिया। तब मण्डनमिश्रने विधि पूर्वक संन्यास धर्म ग्रहण किया। शंकरजीने उनको अपने शिष्योमें श्रेष्ठ बनाया और उनका नाम सुरेश्वराचार्य रक्खा।

शंकराचार्यजी दक्षिण दिशामें गये। वहाँ सुरेश्वराचार्य आदि उनके शिष्योंने शैव, पाशुपत, गाणपत्य, शाक्त आदि मतवादियोंको शास्त्रार्थमें परास्त किया। उसके पश्चात् जब शंकराचार्यजीने सिद्ध स्थानके पास श्रीवल्ली नामक ग्राममे निवास किया था तब उस ग्रामके प्रभाकर नामक विद्वान् ब्राह्मणने अपने १३ वर्षकी अवस्थाके मूढ़ पुत्रको उनके चरणोंपर डाल दिया। शंकराचार्यजीने उस पुत्रसे पूछा कि जडवृत्तिवाला तू कौन है? उस समय शंकरजीके दर्शनके प्रभावसे उसने विज्ञान लाभ करके १२ श्लोकोंमे आत्मतत्त्व वर्णन किया। तब शंकराचार्यने प्रभाकर ब्राह्मणसे कहा कि इन श्लोकोंसे आत्मतत्त्व हस्तामलकवत् प्रकाशित होता है, इस लिये इनको रचनेवाले तुम्हारे पुत्रका नाम अबसे हस्तामलक होगा उसके पश्चात् शंकरस्वामी हस्तामलकको अपने साथमें लेकर तुङ्गभद्राके तटपर शृङ्गेरी नामक पुरीमें आये, जहाँ पहिलेहीसे वह शारदादेवीकी स्थापना कर चुके थे। उन्होंने वहाँ शृंगेरीमठ स्थापन किया। शंकरस्वामीके शिष्योंमे गिरि नामक एक मूर्ख शिष्य था, जिसने स्वामीजीके अनुग्रहसे तत्कालही सम्पूर्ण विद्या प्राप्त करके तोटक छन्दमे शंकराचार्यकी स्तुति की; इस कारणसे उसका नाम तोटकाचार्य करके प्रसिद्ध हुआ। स्वामीजीके मुख्य शिष्योंमें उसकी गणना हुई। उस समय पद्मपाद, सुरेश्वराचार्य, हस्तामलक और तोटकाचार्य शंकरस्वामीके शिष्योंमे प्रधान हुए । इनके अतिरिक्त समितपाणि, चिद्विलास, ज्ञानकन्द, विष्णुगुप्त, शुद्धकीर्त्ति, भानुमरीचि, कृष्णदर्शन, बुद्धिवृद्धि, विरंचिवाद, अनन्तानन्द इत्यादि उनके बहुत शिष्य थे। स्वामीजीकी आज्ञासे उनके शिष्योंने बहुतसे ग्रन्थ बनाये। शंकरस्वामी ऋषिशृंगपर बहुत दिनोंतक निवास करनेके पश्चात् अपन घर गये क्योंकि एक बार घरपर जानेको उन्होंने पहिले अपनी मातासे कहा था। उनके घर जानेपर उनकी माताका देहान्त होगया।

श्रीशंकराचार्यजी पृथ्वीमें दिग्विजय करके नास्तिक तथा द्वैतमत वाले लोगोंको परास्त कर उनको शुद्ध अद्वैत मतमें लाये। उनका मत है कि इस प्रपंचमें जो कुछ देखनेमें आता है वह सब मिथ्या है। ब्रह्मसे भिन्न कोई पदार्थ नहीं है। ईश्वर और जीव एकही वस्तु है। इस

कारणसे उन्होंने किसी आस्तिक मतको, जिसमें ईश्वरकी सत्ता मानी जाती है, खण्डन नहीं किया; अद्वैत भावसे सब मतोंको स्थापित किया। विष्णु, शिव आदि देवताओंमे भेद रखनेवाले लोगोंको उनमें अभेद बुद्धि रखनेको उपदेश दिया। उन्होंने कहा कि केवल ब्रह्मही उपासना करने योग्य है; किन्तु उसकी उपासना करना कठिन है, इस कारणसे शिव, विष्णु, सूर्य, गणेश, दुर्गा इत्यादि देवताओंकी, जो उसके अंश हैं, समान भावसे उपासना करो। शंकराचार्यजी जैन, बौद्ध आदि मताभिमानियोंको परास्त करनेके पश्चात् कुछ शिष्योंके साथ बदरिकाश्रममें गये। वहाँ केदाराश्रममें उनका देहान्त होगया। उस समय उनकी ३२ वर्षकी अवस्था थी।

श्रीशंकराचार्यजीके जन्मका कोई ठीक समय अभी तक ज्ञात नहीं हुआ है; परन्तु शिष्य परम्परासे, जो शंकराचार्यके बादसे अभीतक चली आती है, अनुमान होता है कि सन् ईस्वीकी ९ वीं सदीमें वह थे। कुछ लोग उससे पहिले उनके रहनेका समय अनुमान करते हैं।

भारतवर्षकी चारों दिशाओंकी सीमाओंके पास शंकराचार्यजीके ४ प्रधान मठ हैं, जो उनके ४ शिष्योंसे हुए हैं—दक्षिणकी सीमाकी ओर मैसूर राज्यके शृंगेरी गाँवमें उनके शिष्य पृथ्वीधराचार्यका शृंगेरीमठ है, जिसका भुवार संप्रदाय; भूर्भुवगोत्र सरस्वती, भारती और पुरी उपाधि; रामेश्वर क्षेत्र; आदि वाराह देवता; कामाक्षी देवी; तुङ्गभद्रा तीर्थ; ब्रह्मचारी; यजुर्वेद; और अहं ब्रह्मास्मि महावाक्य है। पश्चिमकी सीमापर द्वारिका शंकराचार्यके शिष्य विश्वरूपाचार्यका शारदामठ है, जिसका कीटवार संप्रदाय, ... गोत्र, तीर्थ, आश्रम और श्रीपाद उपाधि, द्वारिका क्षेत्र, सिद्धेश्वर देवता, भद्रकाली देवी, गंगागोमती तीर्थ, स्वरूप ब्रह्मचारी, सामवेद और तत्त्वमसि महावाक्य है। उत्तरकी सीमाके पास गढ़वाल जिलेकी जोशीमठ नामक बस्तीमें शंकरजीके शिष्य तोटकाचार्य का जोशीमठ है, जिसका आनन्दवार संप्रदाय; भृगु गोत्र; गिरि, पर्वत, और सागर उपाधि, बदरिकाश्रम क्षेत्र, नारायण देवता, पुण्यागिरि देवी, अलकनन्दा तीर्थ, नन्द ब्रह्मचारी, अथर्व वेद और अहमात्मा ब्रह्म महा वाक्य है। पूर्वकी सीमा पर उड़ीसेके पुरी जिलेके जगन्नाथपुरीमें शंकरजीके शिष्य पद्मपादाचार्यका गोवर्द्धनमठ है, जिसका भोगवार संप्रदाय, कश्यप गोत्र, वन और अरण्य उपाधि, पुरुषोत्तम क्षेत्र, जगन्नाथ देवता, विमला देवी, महोदधि तीर्थ, प्रकाश ब्रह्मचारी, ऋग्वेद और प्रज्ञानमानन्दं ब्रह्म महावाक्य है। ऐसा मठाम्नाय आदि ग्रन्थोंमें लिखा है।

हरिहर।

बिरूरके रेलवे स्टेशनसे ७९ मील उत्तर (बङ्गलोर शहरसे २०७ मील पश्चिमोत्तर) ...बली जंक्शनसे ८१ मील दक्षिण-पूर्व हरिहर का रेलवे स्टेशन है। मैसूर राज्यमें मैसूर और बम्बई हातेके अङ्गरेजी जिलेकी सीमाके पास तुङ्गभद्रा नदीके दहिने किनारेपर ... ३० कला, ५० विकला उत्तर अक्षांश और ७६ अंश, ५० कला, ३६ विकला ...) हरिहर एक छोटा कसबा है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय

हरिहरके निकट तुङ्गभद्रा नदी पर, जो बम्बई हाते और मैसूर राज्य की सीमा बनी है, सन् १८६८ का बना हुआ १४ मेहराबियोंका एक सुन्दर पुल है, जिस पर होकर बङ्गलोर की सड़क धारवाड को गई है। पुलके बनानेमें ३०००० रुपयेसे अधिक खर्च पड़े थे।

हरिहर पुराना कसबा है। हरिहरका वर्त्तमान मंदिर सन् १२२३ का बना हुआ है। सन् १८६५ तक कसबेके २ मील पश्चिमोत्तर फौजी छावनी थी। हरिहरके बने हुए लाल चमड़े प्रसिद्ध हैं।

हुबली।

हरिहर कसबेसे ८१ मील (बङ्गलोर शहरसे २८८ मील) पश्चिमोत्तर और धारवाड़ कसबेसे १२ मील दक्षिण–पूर्व हुबलीका रेलवे जंक्शन है। बम्बई हातेके धारवाड़ जिलेमें (१५ अंश, २० कला, उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, १२ कला, पूर्व देशांतरमे) सब-डिवीजनका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा हुबली है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय हुबलीमें ५२५९५ मनुष्य थे, अर्थात् २६८१८ पुरुष और २५७७७ स्त्रियाँ। इनमे ३४७५५ हिन्दू, १५५१६ मुसलमान, १४४२ क्रस्तान, ८०१ जैन, ६० पारसी, १६ यहूदी और ५ एनिमिष्टिक थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ७४ वा और बम्बई हातेके अङ्गरेजी राज्यमें ८ वां शहर है।

हुबलीमे सबडिवीजनकी प्रधान कचहरियां, खैराती अस्पताल और स्कूल हैं। वहाँ रुई, रेशम, नमक और गल्लेकी बडी तिजारत होती है। तांबेके वर्त्तन बहुत बनते हैं। दाक्षिणी महाराष्ट्र देशके रुईके व्यापारका वह केंद्र हुआ है। पूना वाली सडक हुबली होकर हरिहर और उससे दक्षिण-पूर्व बङ्गलोरको गई है।

रेलवे–हुबली जंक्शनसे "सदर्न मरहटा रेलवे" की लाइन ३ ओर गई है, तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई लगता है—

(१) हुबली जंक्शनसे पश्चिम,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१२ धारवाड़।
५६ लोडा जंक्शन।
७१ कैसिलरक्।
१२२ मोरमूगांव बंदरगाह।

लोडा जंक्शनसे उत्तर ३३ मील बेलगांव, ६९ मील गोकाकरोड, ११८ मील मीराज जंक्शन, १२४ मील संगली, १३४ मील तासगांव-रोड, १४२ मील कुंडलरोड, १६४ मील करदा कसबा, २०० मील सितारा रोड, २०९ मील वाथर, २३० मील नीरा, २४६ मील जेजुरी और २७८ मील पूना जंक्शन।

मीराज जंक्शनसे पश्चिम ६ मील शिरोलरोड, और २९ मील कोल्हापुर।

(२) हुबली जंक्शनसे पूर्व-दक्षिण—

मील–प्रसिद्ध स्टेशन।

३६ गदग जंक्शन।
४७ हरपालपुर।
८८ होसपेट।
१०४ गादिगनूर।
१२९ बल्लारी शहर।
१५९ गुंटकल जंक्शन।

गदग जंक्शनसे उत्तर ४२ मील बादामी, ५८ बगलकोट कसबा, ११५ मील बीजापुर और १७३ मील होतगी जंक्शन ।

गुंटकल जंक्शनसे दक्षिण ६३ मील धरम्वरम् जंक्शन, ११२ मील हिन्दूपुरम् और १७४ मील बङ्गलोर शहर (गुंटकलसे रेलवे लाइन ५ ओर गई हैं, (पृष्ठ ९५१ में देखिये)

(३) हुबली जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व;–

मील–प्रसिद्ध स्टेशन ।

८१ हरिहर ।

१६० बिरुर ।

१७८ बानावार ।

१८८ अर्सीकेरा ।

२४८ तमकूर ।

२८८ बङ्गलोर शहर ।

धारवाड़ ।

हुबली जंक्शनसे १२ मील पश्चिमोत्तर धारवाड़का रेलवे स्टेशन है । बम्बई हातेमें (१५ अंश, २७ कला, उत्तर अक्षांश और ७५ अंश, ३ कला, २० विकला पूर्व देशान्तरमें) जिलेका सदर स्थान धारवाड़ एक कसबा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय धारवाड़ कसबेमें ३२८४१ मनुष्य थे अर्थात् १६७४९ पुरुष और १६०९२ स्त्रियाँ । इनमें २३८९६ हिन्दू, ७६६७ मुसलमान, ८८३ क्रुस्तान, ३४८ जैन, ४२ पारसी और ५ यहूदी थे । उस जिलेके हिन्दुओंम ब्राह्मण और लिङ्गायत शरीफ हैं ।

धारवाड़ कसबेमें ७ महल्ले हैं । चन्द मकान दो मञ्जिले तीन मञ्जिले बने हुए हैं । प्रति मङ्गलवारको बाजार लगता है । सबसे ऊँची भूमि पर कलक्टरका आफिस है; वहाँसे कसबा और उसके पासकी बस्तियाँ तथा चारोंओरका देश देख पड़ता है । उसके पास एक मन्दिर है । कसबेके उत्तर ओर नीची भूमिपर धारवाड़का किला है । किलेकी दीवारके भीतर तथा बाहर २५ फीटसे ३० फीट तक चौड़ी दो खाई है । किलेके भीतर कोई दर्शनीय वस्तु नहीं है । किला हीन दशामें है । किलेसे लगभग २ मील पश्चिमोत्तर देशी पैदलकी छावनी, १ मील पश्चिम मुसाफिरोंके लिये बँगला, थोड़ा पश्चिम–दक्षिण कबरगाह, और बगलेसे १ मील दक्षिण जरमन मिशनका बँगला है । धारवाड़ कसबेसे लगभग १½ मील दक्षिण एक पहाड़ी है; जिसके ऊपर पत्थरसे बना हुआ जैन ढांचेका एक चौकोना मन्दिर है । उसके खम्भोमेंसे एक खम्भेपर पारसी लेख है, जिसमें लिखा है कि सन् १६६० में बीजापुरके बादशाहके डिपुटीने इस मन्दिरको मसजिद बना लिया । दो जलाशयोंसे कसबे में पानी आता है, क्योंकि कसबेके प्रायः सब कूओंका पानी खारा है ।

धारवाड़ कसबेमें ब्राह्मण, लिङ्गायत, पारसी, मारवाड़ी इत्यादि लोग सौदागरी करते हैं । रुई, चावल इत्यादि माल धारवाड़से अन्य देशोंमें भेजे जाते हैं और शोरा; नारियल, खजूर, कसैली, नील, तांबा इत्यादि धातु और अङ्गरेजी चीजें अन्य स्थानोंसे धारवाड़में आती हैं । जेलखानेके कैदी लोग कपड़े, कालीन और बेंतकी चीजें बहुत सुन्दर बनाते हैं । धारवाड़में 'सदर्न मरहटा रेलवे' का सदर स्थान है ।

धारवाड़ जिला—बम्बई हातेके दक्षिण महाराष्ट्रदेश (दक्षिणी किस्मत) में धारवाड़ जिला है। इसके उत्तर बेलगॉव और बीजापुर जिला, पूर्व हैदराबादका राज्य और तुंगभद्रा नदी, जो मद्रास हातेके बल्लारी जिलेसे धारवाड़को अलग करती है, दक्षिणी मैसूरका राज्य और पश्चिम ओर उत्तरी कनारा जिला है। जिलेकी भूमि उपजाऊ है। धारवाड़ जिलेमें कोई बडी नदी नहीं है। पहिले इस जिलेमें सोना बहुत मिलता था। जिलेके पूर्व भागके डम्बलके पडोसकी पहाड़ियोंमे और उनसे निकली हुई नदियोंमें अबतक कुछ सोना मिलता है। एक प्रकारके लोग, जो जलगर कहलाते हैं, सोना निकालनेका काम करते हैं। जिलेक जंगल और पहाडियोंमें भालू, बाघ, तेंदुए इत्यादि बनैले जन्तु रहते हैं। धारवाड़ जिलेका जलवायु बम्बई हातेके सब जिलोंसे अधिक स्वास्थ्यकर समझा जाता है।

इस जिलेमें ३ मेले होते हैं,—(१) बॉकीपुर सबडिविजनके हलगुरगांवमे एक मुसलमान फकीरके दरगाहके पास फागुनमे ३००० यात्रियोंका मेला, (२) नवगढ़ सबडिविजनके अमनूरगॉवमे एक मुसलमान फकीरके यादगारममें चैत्रमें लगभग ६००० मनुष्योंका मेला और (३) रानी बेनूर सबडिविजनके गुरगूडापुर गॉवमे हिन्दू देवता मल्हार मार्तण्डके स्मरणार्थ आश्विनमें लगभग ९००० मनुष्योका मेला होता है। जिलेमें लिंगायत लोगोंके अनेक मठ हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय धारवाड जिलेके ४५३५ वर्गमील क्षेत्रफलमें ८८२९०७ मनुष्य थे, अर्थात् ७६९३४९ हिन्दू, १००६२२ मुसलमान, १०५२६ जैन, २३५६ कृस्तान, ३१ पारसी, १८ यहूदी और ५ बौद्ध। हिन्दुओंमे १३५३५७ पंचमशाली ८७५६८ धॉगर, ५४३५४ बिराद, ४४३४५ कुनबी, ३९११६ जंगम, २८४०३ ब्राह्मण; २७६१२ मॉंग, २३४९९ तेली, २१६८६ रेडी, १८९५३ कोस्ती (बिनाईके काम करनेवाले), ११३९२ महारा और बाकीमें कोर्ली, सीपी, सुतार (बढ़ई), इत्यादि जातियोके लोग थे। राजपूत केवल ३४५० थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय धारवाड़ जिलेके कसबे हुबलीमें ५२५९५, धारवाड़में ३२८४१, गदगमें ३३८९९ और रानीबेनूरमे १३७६१ मनुष्य थे। इनके अलावे धारवाड जिलेमें बंकापुर, नरगढ़, नवलगढ़ इत्यादि छोटे कसबे हैं।

इतिहास—लोगोकी कहावतसे विदित होता है कि विजयानगर राज्यके आनागुंदीमें रामराजा रहते थे। उनके अधीनके जंगल महकमेके अफसर धारावने सन् १४०३ में धारवाडके किलेको बनवाया। सन् १५६४ में तालीकोटकी लड़ाईमें विजयानगरके राजाके परास्त होनेपर धारवाड़ जिला बीजापुरके राज्यमे मिलगया। सन् १५६८ में बीजापुरके महम्मद आदिलशाहने आनागुदीके राज्यका विनाश कर दिया। सन् १६७५ में शिवाजीके अधीन महाराष्ट्रोंने धारवाड जिलेमे उपद्रव मचाया। उस समयसे एक सौ वर्षतक वह देश महाराष्ट्रोंके अधिकारमें रहा। सन् १६८५ मे दिल्लीके बादशाह औरंगजेबने धारवाड़का किला लेलिया। सन् १७५३ में वह किला महाराष्ट्रोंके अधीन हुआ। सन् १७७६ में मैसूरके हैदरअलीने धारवाड जिलेपर अधिकार करके धारवाड़ कसबेको ले लिया। सन् १७९१ में महाराष्ट्रोंने अङ्गरेजी सहायता पाकर धारवाड़ कसबा और वहॉका किला मुसलमानोंसे छीन लिया। सन् १८१८ में पेशवाके परास्त होनेपर किलेके समेत धारवाड़ जिला अंगरेजी अधिकारमें होगया।

पहिले धारवाड़ जिलेके कसबों और बड़े बड़े गाँवोंके पास एक एक किले थे; उनके भीतर शरीफ तथा धनी लोगों और बाहर गरीब लोगोंके मकान थे। अब तक बहुतेरे किलोंकी निशानियाँ देख पड़ती हैं। पूर्व समयमें बहुतेरे गावोंके चारों ओर लुटेरोंके आक्रमणसे बचनेके लिये मिट्टी तथा ईटोंकी दीवार बनी हुई थीं, जिनमेंसे बहुतेरी दीवार अब गिर गई हैं।

गोआ।

हुबली जंक्शनसे पश्चिम १२ मील धारवाड़का रेलवे स्टेशन और धारवाड़के रेलवे स्टेशनसे पश्चिम ४४ मील लोंडा जंक्शन, ५९ मील सदर्न मरहटा रेलवे और इण्डिया पोर्चुगीज रेलवेका जंक्शन, कैसिलरक् और ११० मील मोरमूगांव बन्दरगाहका रेलवे स्टेशन है। कैसिलरक् स्टेशनके पास अङ्गरेजी और पोर्चुगीजोंके राज्यकी सीमा है। कैसिलरक्से पश्चिम १० मीलके भीतर १७ जगह पहाड़ फोड़ करके उसके भीतर रेलवे लाइन बैठाई गई है। सुरंगी मार्ग, जो पहाड़ फोड़ कर बने हैं, १५० फीटसे ८३८ फीट तक लम्बे हैं। कैसिलरक्से ८½ मील पश्चिम दूधसागर नामक स्टेशनके पास एक उत्तम झरना है, जिसको लोग दूधसागर कहते हैं। खड़ी पहाड़ीके पादमूलके पास मोरमूगाँवका रेलवे स्टेशन है। मोरमूगाँव वन्दरगाहसे ब्रिटिस इण्डिया स्टीम् नवीगेशन कम्पनीके आगबोट लगभग २६ घंटेमें बंबई शहरमें पहुंच जाते है। बंदरगाहसे पश्चिमोत्तर १०१ मील रत्नागिरि और २२७ मील बंबई है।

गोआ शहर समुद्रके किनारे पर (१५ अंश, ३० कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, ५७ कला पूर्व देशांतरमे) पोर्चुगीजोंके हिन्दुस्तानके राज्यकी राजधानी है। वास्तवमें ३ कसबोंका नाम गोआ है;—पहिला गोआ, पुराना गोआ और पांजिम। इनमेंसे पहिला गोआ, जो ज्वारीनदीके किनारे पर कदंब वंशके राजाओं द्वारा बनाया गया था; वह मुसलमानोंके आक्रमणसे पहिले हिंदुओंका पुराना शहर था; किंतु उसकी इमारतोंकी अब कोई निशानी नहीं है। दूसरा गोआ, जिसको लोग पुराना गोआ कहते हैं, पहिले गोआसे लगभग ५ मील उत्तर है। उसको वास्कोडीगामाके हिन्दुस्तानमें आनेसे १९ वर्ष पहिले (सन् १४७९ ई० में) मुसलमानोंने वसाया। उस प्रसिद्ध शहरको जब पोर्चुगल वालोंने जीता तब वह पोर्चुगीजोंके एशियाके राज्यकी राजधानी हुआ। १६ वी सदीमें वह खूब बढ़ा चढ़ा था, किन्तु पीछे महामारीसे मनुष्य-संख्या घट जानेसे और पोर्चुगल गवर्नमेंटका सदर स्थान पांजिम होनेके कारण वह शहर खंडहर होगया; परंतु अब तक वह हिन्दुस्तानके रोमन कथोलिक पादड़ियोंका सदर स्थान बना है। वहां अब जंगल जमगया है, गिरजों और पादड़ियोंके मकानके अतिरिक्त कुछ नहीं है। उनमें चार पांच गिरजे मरम्मतसे हैं। सन् १८९० में पुराने गोआमे केवल ८६ मनुष्य थे।

पांजिम–पाँजिमको नया गोआभी कहते हैं। मोरमूगाँव ४ मील उत्तर पाँजिम शहर तक अच्छी सड़क बनी हुई है। समुद्रके पासकी एक जमीनकी पट्टीके ऊपर मंडावी नदीके बायें किनारे पर उसके मुहानेसे लगभग ३ मील दूर पोर्चुगीज वालोंके राज्यका सदर स्थान पाँजिम है, जिसमें सन् १८८१ में ११८५ मकान और ८४४० आदमी थे और इस समय

लगभग ९५०० मनुष्य हैं; जिनमेंसे आधेसे अधिक लोग देशी क्रस्तानोंके वंशधर हैं। पॉजिमके बीच वाले महल्लेसे रिवंदर शहरतली तक लगभग ३०० गज लंबी एक ऊंची सडक बनी है, जिससे होकर प्रधान सडक पुराने गोआ को जाती है। पॉजिम शहर निहायत सुंदर और साफ है। उसमें पोर्चुगल गवर्नमेंट की बहुतसी सुन्दर इमारतें बनी हुई हैं। बारक अर्थात् सैनिकगृह दूर तक फैले हुए हैं, जिनमें ३०० सेना रहती हैं। बारकके पास पोर्चुगीजोंके पूर्व गवर्नर अलबुकेर्ककी ५ फीटसे अधिक ऊंची प्रतिमा खडी है। पुराने किलेमें गोआके गवर्नर रहते हैं। इनके अलावे पॉजिममें हाईकोर्ट, कष्टमहौस, अस्पताल, जेलखाना, स्कूल, म्युनिसिपल आफिस और अन्य अनेक आफिस हैं।

गोआका राज्य-यह पश्चिमी किनारे पर पोर्चुगीजोंका राज्य है। इसके पश्चिम ओर समुद्र और ३ ओर अंगरेजी जिले है, अर्थात् इसके उत्तर सावंत वाडीका राज्य; पूर्व-पश्चिमी घाट पहाडियोंका सिलसिला, जो बेलगाव जिलेसे इसको अलग करता है, दक्षिण तरफ उत्तरी किनारा जिला और पश्चिम समुद्र है। इसकी सबसे अधिक लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तक ६२ मील और सबसे अधिक चौडाई पूर्वसे पश्चिम तक ४० मील तथा संपूर्ण क्षेत्रफल प्राय. १०६२ वर्गमील है।

गोआ राज्य पहाडी देश है। उसकी सबसे ऊँची पहाडीकी सोनसागर नामक चोटी, जो राज्यके उत्तरीय भागमें है, समुद्रके जलसे ३८२७ फीट ऊँची है। छोटी नदिया बहुत हैं। बहुतेरी नदिया एक दूसरीको काटती हुई बहती हैं, जिससे बहुतसे छोटे टापू बन गये हैं, जिनमें १८ प्रधान हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय गोआ राज्यके आठों जिलोंमें ४४५४४९मनुष्य थे, अर्थात् २७,६६११ यूरेशियन और देशी क्रस्तान, ६१५ यूरोपियन और अमेरिकन, २३० अफ्रिकन और बाकीमें हिन्दू, मुसलमान इत्यादि। उस समय गोआ राज्यके कसबे मोरमूगावमें २५२२ मकान और ११७९४ मनुष्य, मपुकामें २२८५ मकान और १०२८६ मनुष्य तथा पॉजिममें ११८५ मकान और ८४४० मनुष्य थे।

गोआके राज्यमें अब तिजारत बहुत कम होती है; किन्तु वहाँके बढ़ई, लोहार, सोनार तथा जूता बनानेवाले बड़े कारीगर हैं। वे अपनी कारीगरीकी चीजोंको बनाकर बेंचते हैं। नारियल, कसैली, आम, तरबूज, कटहल इत्यादि फल, दारचीनी, मिर्च आदि मसाले और नमक आदि चीजें उस राज्यसे अन्य स्थानोंमे भेजी जाती हैं और कपड़ा, चावल, तमाकू, चीनी, शराब, धातु और शीशेके बर्तन इत्यादि विविध प्रकारकी वस्तु अन्य स्थानोंसे गोआ राज्यमें आती है। सन १८७३-१८७४ में गोआके गवर्नमेंटको गोआ राज्यसे १०८१४८० रुपये मालगुजारी आई थी। और १०७१४४० रुपये खर्च पड़े थे।

पोर्चुगीजोंके हिन्दुस्तानका राज्य-हिन्दुस्तानमें पोर्चुगलके बादशाहके अधीन गोआ दमन और ड्यू है। ये तीनो बम्बई हातेमें हैं,-गोआ उत्तरी किनारा जिलेके उत्तर दमन, सूरत और थाना जिलेके मध्यमें और ड्यू काठियावारके दक्षिण भागमें। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पोर्चुगीजोंके हिन्दुस्तानके सम्पूर्ण राज्यका क्षेत्रफल १०६६ वर्गमील था और सम्पूर्ण मनुष्य-संख्या ५६१३८४ थी।

इतिहास—सन् १०९ ईस्वीसे गोआ कदम्ब वंशके राजाओंके; जिनमें पहिले राजाका नाम तिलोचन कदम्ब था, अधिकारमें चला आया। सन् १३१२ में दिल्लीके

अलाउद्दीनके सेनापति मलिक काफूरने उसको अपने अधिकारमें किया । सन् १३७० में विजयानगरके हरिहरके मन्त्री विद्यारण्य माधवने मुसलमानोंको परास्त करके गोआ छीन लिया । सन् १४४९ में वहमनी खानदानके बादशाह दूसरे महम्मदने गोआको जीतकर वहमनी राज्यमें मिला लिया । लगभग १५ वीं सदीके अन्तमें यह बीजापुरके आदिलशाही खानदानके हस्तगत हुआ । सन् १५१० की १७ वीं फरवरीको पोर्चुगलके बादशाहके गवर्नर "अल्फंसोडी अल्बुकर्क" ने बीजापुरवालोंसे गोआ छीन लिया । उसने वहाँ किलावन्दी करके पोर्चुगीजोंका राज्य नियत किया । उसके पश्चात् वह बहुत शीघ्रतासे प्रसिद्ध होकर पोर्चुगीजोंके पूर्वी राज्यकी राजधानी हुआ । जब गोआ शहर बढ़ा चढ़ा था तब उसमें लगभग २००००० मनुष्य बसते थे और उसमें बड़ी भारी तिजारत होती थी । पोर्चुगीजोंने अनेक गिरजे बनवाये । हालैंडवालों तथा महाराष्ट्रोंके कई बार आक्रमणसे तथा देशी लोगोंकी बगावतसे गोआकी बड़ी हानि हुई । बार बारकी लूट पाटसे तथा वहाँके जल वायु रोगवर्द्धक होनेके कारण उसके निवासी लोग उसको छोड़ने लगे ।

पहिले पुराने गोआ कसबेमें पोर्चुगीजोंके गवर्नर रहते थे । सन् १७५९ में पांजिम अर्थात् नया गोआ, जो मछुहोंका छोटा गाँव था, गवर्नरका सदर स्थान बना । वहाँ बीजापुरके यूसुफ आदिलशाहका बनवाया हुआ किला पहिलेहीसे था । उस समयसे पुराने गोआकी आबादी तेजीसे घटने लगी । सन् १८४३ में गोआ कसबा पोर्चुगीज वालोंके हिन्द-के राज्यकी राजधानी हुआ ।

कारवार ।

मोरमूगांवके बन्दरगाहसे ४८ मील दक्षिण-पूर्व कारवारका बन्दरगाह है । बम्बई हातेके पश्चिमीघाटपर उत्तरी किनारा नामक जिलेका सदर स्थान और उस जिलेमें प्रधान कसबा कारवार है । एक सप्ताह पर बम्बईके आगबोट मोरमूगांव तथा कारवार होकर दक्षिण जाते है । कारवारके बन्दरगाहके किनारेसे ५०० गज दूर समुद्रमें लङ्गरकी जगह है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कारवार कसबेकी म्युनिसिपल्टीके भीतर १४५७९ मनुष्य थे, अर्थात् ११६६६ हिन्दू, १८१६ कृस्तान, १०८३ मुसलमान, ९ जैन, १ पारसी, १ यहूदी और ३ अन्य ।

कारवारकी म्युनिसिपलटीके भीतर ९ बस्तियां है । कारवारमे जिलेकी प्रधान कचह-रियां, अस्पताल, टेलीग्राफ आफिस, स्कूल इत्यादि सरकारी मकान हैं । किनारेके आसपास कई टापू है, जिनमेसे सबसे बड़े टापूपर एक लाइट हाउस बना है, जो समुद्रके जलसे २१० फीट ऊँचा है और समुद्रमें २५ मील दूरसे देख पड़ता है ।

उत्तरी किनारा जिला—बम्बई हातेके दक्षिणी महाराष्ट्र देशमे उत्तरी किनारा नामक जिला है । इसके उत्तर बेलगाँव जिला, पूर्व धारवाड़ जिला और मैसूरका राज्य; दक्षिण मद-रास हातेमें दक्षिणी किनारा जिला; पश्चिम पश्चिमीघाटका समुद्र और पश्चिमोत्तर गोआका राज्य है । जिलेका सदर स्थान कारवार है ।

पश्चिमीघाटका सह्याद्रि सिलसिला, जो ३५०० से ३००० फीट तक ऊंचा है, जिलेमें उत्तरसे दक्षिणको गया है । जिलेमें वरदा, काली, गंगावली, शिरावती आदि छोटी नदियाँ बहती हैं । होनावर कसबेसे ३५ मील उत्तर जरसोपाका प्रसिद्ध जलप्रपात अर्थात्

बड़ा झरना है। कारवारसे होनावर तक समुद्रके किनारेके पासकी पहाडियोंसे मकान बनाने योग्य सुन्दर पत्थर निकलते हैं। जिलेके चन्द भागोंमे लोहेकी खान है। जिलेमें जङ्गल बहुत हैं। उत्तरी किनारा जिलेमें बम्बई हातेके सब जिलोंसे अधिक बनैले जन्तु रहते हैं। उसमें अब तक अनेक प्रकारके बाघ, भालू, बनैले कुत्ते, साँभर, बनैले सूअर और भांति भांतिके हरिन बहुत हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय उत्तरी किनारा जिलेके ३९११ वर्गमील क्षेत्र-फलमे ४२१८४० मनुष्य थे, अर्थात् ३८१३२८ हिन्दू, २४२८२ मुसलमान, १४५०९ कृस्तान, १६६९ जैन, २५ यहूदी, १७ पारसी और १० बौद्ध। हिन्दुओमे ६३८६५ ब्राह्मण, ५१०५७ कुनबी, १५७६५ धेद, १०१५८ सोनार, ३२२२ सुतार (बढई), २१६१ कुम्भार, १९७१ तेली, ८३४ लोहार, ३४४ राजपूत और बाकी २३१९३३ में अन्य जातियोंके मनुष्य थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय उत्तरी किनारा जिलेके कसबे कारवारमें १४५७९ और कुमटामें १०७१४ मनुष्य थे। इनके अतिरिक्त ५ हजारसे अधिक और १० हजारसे कम आबादीवाले ६ छोटे कसबे और गोकर्ण प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। गोकर्ण और बनवासीमें उत्तम पुराने मन्दिर, जरसोपामें प्रसिद्ध जैन मन्दिर और मीरजान तथा सदाशिव-गढ़में पुराने किले हैं। जिलेमें १२ बन्दरगाह हैं, जिनमेसे कारवार, कुमटा, अकोला, भट-कर और होनावर प्रसिद्ध हैं।

इतिहास—पुराना कारवार कसबा एक समय कारवार कसबेसे २ मील पूर्व काली नदीके किनारेपर बहुत प्रसिद्ध तिजारती स्थान था। वहाँ सन् १६३८ मे अङ्गरेजोंने एक कोठी कायम की। सन् १६६० में कारवार कसबा बीजापुर राज्यके अधिकारमे था। उस समय वहाँ ५० हजार जोलाहे रहते थे। सन् १६६५ मे शिवाजीने अङ्गरेजोंसे ११२० रुपया खिराज लिया। सन् १६७४ मे शिवाजीने कारवार कसबेको लूटा और जला दिया; किन्तु अङ्गरेजोंकी कुछ हानि नहीं की। सन् १६७६ में वहाँके देशी प्रधानोने अङ्गरेजी कोठीपर जुल्म किया। सन् १६७९ में अङ्गरेजोंने कोठीका काम उठा लिया; किन्तु सन् १६८३ मे उन्होने फिर काम आरम्भ किया। सन् १६८४ में प्राय. सब अङ्गरेज कारवार कसबेसे निकाल दिये गये। सन् १६९७ में महाराष्ट्रोने कारवारको उजाड़ दिया। सन् १७१५ में वहाँका पुराना किला तोड़ दिया गया। एक देशी प्रधानने सदाशिवगढ़में किला बन-वाया। सन् १७२० में अङ्गरेजोंको फिर वहाँसे अपना कारवार उठा लेना पड़ा। सन् १७५२ में फिर अंगरेजी कोठी कायम हुई। सन् १८०१ मे पुराना कारवार कसबा हीन दशामें पड़चुका था।

उत्तरी किनारा जिलेका इतिहास मदरास हातेके दक्षिणी किनारा जिलेके इतिहासमें शामिल है। पहिले उत्तरी किनारा जिला मदरास हातेमें था, किन्तु सन् १८६२ में बम्बई हातेमें कर दिया गया। उसके पीछेका वर्तमान कारवार कसबा है, जो पहिले मछुहोंका छोटा गाँव था।

गोकर्ण तीर्थ।

कारवारके बन्दरगाहसे ४० मील और मोरमूगाँवके बन्दरगाहसे ८८ मील दक्षिण-पूर्व उत्तरी किनारा जिलेमें समुद्रके किनारेपर कुमटा एक कसबा है, जिसमें सन् १८९१

की मनुष्य-गणनाके समय १०७१४ मनुष्य थे। कुमटाके बन्दरगाहसे १० मील उत्तर, समुद्रके किनारेसे लगभग १ मील दूर बम्बई हातेके उत्तरी किनारा जिलेमें गोकर्ण एक गाँव तथा प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। मोरमूगाँवमें रेलगाड़ीसे उतरकर वहाँसे आगबोट द्वारा गोकर्ण जाना चाहिये। कुछ यात्री हुबलीके रेलवे स्टेशनसे गोकर्ण जाते हैं। हुबलीसे लगभग १२५ मील दक्षिण-पश्चिम गोकर्ण तक बैलगाड़ीका मार्ग है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय गोकर्ण गाँवमें ४२०७ मनुष्य थे; अर्थात् ४१९१ हिन्दू, ९ कृस्तान और ७ मुसलमान।

गोकर्ण गाँवमें महाबलेश्वर शिवका द्राविडियन ढाँचेका बड़ा मन्दिर बना हुआ है। बड़े घेरेके भीतर महाबलेश्वर शिवका खास मन्दिर है; उसके आस पास अनेक मन्दिर और गोपुर बने है। मन्दिरमें सर्वदा १०० से अधिक दीप जलाये जाते हैं। भारतवर्षके सब विभागोंके यात्री खास करके पर्यटन करनेवाले साधु लोग गोकर्णमें जाते हैं। प्रति वर्ष फाल्गुनकी शिवरात्रिको वहाँ मेला होता है, जिसमें २००० से ८००० तक आदमी एकत्र होते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–महाभारत—(वनपर्व, ८८ वां अध्याय) दक्षिणकी ताम्रपर्णी नदीके देशमें विख्यात गोकर्ण तीर्थ है। (२७७ वां अध्याय) लंकापति रावण खर की सेनाका विनाश सुनकर रथारूढ हो त्रिकुलाचल और कालपर्वतको लांघ आकाश मार्गसे रमणीय समुद्रको देखता हुआ गोकर्णमें पहुँचा। उसने वहाँ मारीच राक्षसको, जो रामके डरसे उस स्थानमें आ पड़ा था, देखा। (२७८ वाँ अध्याय) वह मारीचको साथ लेकर पंचवटीके पास पहुँचा। मारीच मृगका विचित्र रूप धारण कर रामको वनांतरमें लेगया। रावणने सीताको हरकर चल दिया।

(अनुशासनपर्व, १८ वाँ अध्याय) चारुशीर्षने गोकर्ण तीर्थमें जाकर १०० वर्ष पर्यन्त तप किया। तब महादेवजीने उसको सौ हजार वर्षकी परमायु तथा एक सौ पुत्र दिये।

अध्यात्मरामायण—(उत्तरकांड, प्रथम अध्याय) रावणने कुम्भकर्ण और विभीषणके सहित गोकर्णमें जाकर कठिन तप किया था। जब एक सहस्र वर्ष बीत जाते थे, तब वह अपना एक शिर काटकर अग्निमें होम कर देता था। इसी प्रकारसे दस सहस्र वर्ष बीतने पर जब वह अपना दसवाँ शिर काटनेके लिये उद्यत हुआ, तब उसको वर देनेके लिये ब्रह्मा प्रकट हुए। रावणने ऐसा वर मांगा कि मैं सुर, असुर, नाग, यक्ष आदि देवताओंसे अवध्य होजाऊं, मनुष्यसे मुझको कोई भय नहीं है। ब्रह्माजी उसको यह वर देकर कुम्भकर्णके पास गये। कुम्भकर्णने सरस्वतीकी प्रेरणासे मोह युक्त होकर ऐसा वर मांगा कि मैं ६ मास निद्रित रहकर एक दिन भोजन करूं। उसको यह वरदान देकर ब्रह्माजी विभीषणके निकट गये। विभीषणने यह वरदान मांगा कि मेरा मन सर्वदा धर्ममें तत्पर रहे। ब्रह्माजी इनको भी, ऐसाही होगा कहकर चले गये। (यह कथा वाल्मीकिरामायण, उत्तरकांडके १० वें सर्ग में है)।

लिंगपुराण—(२४ वाँ अध्याय) शिवजीने कहा कि सोलहवें द्वापरमें गोकर्ण नामसे हम अवतार लेंगे। जिनके नामसे वह स्थान गोकर्णवनके नामसे प्रसिद्ध होगा।

पद्मपुराण—(उत्तरखण्ड, २२२ वाँ अध्याय) गोकर्ण क्षेत्रमें मृत्यु होनेसे मनुष्य निःसंदेह शिवरूप होजाता है; उसका फिर जन्म नहीं होता।

गरुड़पुराण—(पूर्वार्द्ध, ८१ वाँ अध्याय) भारतवर्षमें गोकर्ण नामक उत्तम तीर्थ है।

कूर्मपुराण—(उपरि भाग, ३४ वाँ अध्याय) तीर्थोंमें उत्तम गोकर्ण तीर्थ है, जिसमें गोकर्णेश्वर शिवलिंगके दर्शन करनेसे मनोवाञ्छित फल लाभ होता है, तथा वह मनुष्य शंकरको अति प्रिय हो जाता है।

वाराहपुराण—(उत्तरार्द्ध, २०७ वाँ अध्याय) एक समय महर्षि सनत्कुमारने सुमेरु पर जाकर ब्रह्मासे पूछा कि शिवजीका नाम उत्तर गोकर्ण, दक्षिण गोकर्ण और शृंगेश्वर किस भाँतिसे हुआ ? इन लिङ्गोंके स्थान कहा हैं। ब्रह्माजीने कहा कि मंदराचलके उत्तर किनारेपर मुंजवान पर्वत हैं, वहाँ पार्वती और स्वामिकार्त्तिक आदि गणोंके साथ भगवान् शङ्कर विराजते थे। शिलाद मुनिके नंदी नामक पुत्र उस स्थान पर बहुत कालसे उग्र तप कर रहे थे। शिवजीने नंदीको बहुत वरदान दिया और कहा कि आजसे सर्वत्र हमारे तुल्य तुम्हारा पूजन होगा। उन्होंने अपने जानेके समय नंदीसे कह दिया कि हम श्लेष्मातक वनमें जाते हैं, किसीके पूछने पर तुम उस स्थानको बतलाना नहीं। (२०८ वाँ अध्याय) शिवजीके जाने पर नन्दीश्वरने चतुर्भुज तथा त्रिनेत्र होकर दिव्य रूप धारण किया और हाथोंमें त्रिशूल परिघ, दंड और पिनाक धारण करके दूसरे शिवके समान वह होगया। देवताओंने नन्दीश्वरके विलक्षण तेजको देखकर यह वृत्तान्त इन्द्रसे कहा। इन्द्रको भय हुआ कि यह तपस्वी अवश्य तीनों लोकोंको अपने वशमें करेगा, इस लिये शिवजीसे मिलकरके इसकी शांतिके लिये कोई उपाय पूछना चाहिये। ऐसा विचारकर ब्रह्मा और विष्णुको साथ ले वह नन्दीके पास पहुँचे। नन्दीने ब्रह्मादि देवताओंका बड़ा सत्कार किया और इनके दर्शनसे अपने को कृतकृत्य माना, परन्तु उनके पूछने पर शिवका पता नहीं बताया। (२०९ वाँ अध्याय) तब देवता मुञ्जवान पर्वतसे शिवजीको खोजने चले और ढूँढते ढूँढते श्लेष्मातक वनमें पहुँचे। वहाँ उन्होंने मृगरूप धारण किये हुए शिवजीको देखकर उनको पहचान लिया। सब लोग मृगको पकड़नेके लिये चारोओरसे दौड़े। इन्द्रने उस मृगके शृंगका अग्रभाग जाकर पकड़ा, बिचला भाग ब्रह्माने पकड़ लिया और शृंगका मूल विष्णुके हाथमें आया। तब वह शृंग तीन टुकड़े होकर तीनोंके हाथमें रह गया और मृग अन्तर्द्धान होगया। उस समय आकाशवाणी हुई कि हे देवताओ! तुम सब हमको नहीं पासकोगे। अब शृंग मात्रके लाभसे सन्तुष्ट हो जाओ।

(२१० वाँ अध्याय) इन्द्रने शृंगके निज खण्डको विधि पूर्वक अमरावतीपुरीमें स्थापित किया और ब्रह्माने उसी भूमिमें स्थापित कर दिया। दोनो खण्डोंका नाम लोकमें गोकर्ण प्रसिद्ध हुआ। विष्णुनेभी अपने हाथके शृंगके खण्डको लोकके हितके लिये स्थापित किया, जिसका नाम शृंगेश्वर हुआ। जहां जहा शृंगका खण्ड स्थापित हुआ, वहाँ शिवजी निज अंशकलासे स्थित होगये।

लङ्कापुरीका रावण सम्पूर्ण पृथ्वीको जीत अपने पुत्र मेघनादके साथ स्वर्गमे गया। उसने वहाँ इन्द्रादि देवताओंको जीत स्वर्गमें निज राज्य स्थिर किया। रावणने अपने घर जानेके समय अमरावतीके गोकर्णेश्वरको लंकामें स्थापित करनेके लिये अपने साथ ले लिया। वह अपने मार्गके एक स्थानमें गोकर्णेश्वर शिवलिङ्गको रख संध्योपासन करने लगा। जब चलनेके समय वह शिवलिङ्गको उठाने लगा, तब वह नहीं उठा। उस समय रावण उसी भांति लिङ्ग-

को वहाँही छोड़कर लङ्काको चला गया। उसी लिङ्गका नाम दक्षिण गोकर्ण प्रसिद्ध हुआ। उसकी किसीने प्रतिष्ठा नहीं की, लोककी रक्षाके लिये शिवजी अपनेआप भूमिमें स्थिर होगये (ब्रह्माके स्थापित शृंगके खण्डका नाम उत्तर गोकर्ण है, उनका वृत्तान्त भारत-भ्रमण दूसरे खण्डके गोलागोकर्णनाथमें और विष्णुके स्थापित शृंगके खण्डका वृत्तान्त तीसरे खण्डके शृंगेश्वरनाथमें लिखा हुआ है)।

स्कन्दपुराण–(ब्रह्मोत्तर खण्ड, दूसरा अध्याय) शिवजी कैलास और मन्दराचलके समान गोकर्ण क्षेत्रमें भी सर्वदा निवास करते हैं। वहां महाबल नामक शिवलिङ्ग है, जिसको रावणने बड़ा तप करके पाया और गोकर्णक्षेत्रमें स्थापित किया।

उस क्षेत्रमें अगस्त्य, सनत्कुमार, उत्तानपाद, अग्नि, कामदेव, भद्रकाली, गरुड, रावण, विभीषण, कुम्भकर्ण आदि व्यक्तियोंने तप करके अपने अपने नामसे शिवलिङ्ग स्थापित किये थे। वहाँ ब्रह्मा, विष्णु, स्कन्द, गणपति, धर्म, क्षेत्रपाल, दुर्गा आदि देवताओंके स्थान हैं। वहाँके सब तीर्थोंमें कोटितीर्थ मुख्य है और सब लिङ्गोंमे महाबल नामक शिवलिङ्ग श्रेष्ठ है। पश्चिमके समुद्रके तीरपर ब्रह्महत्यादि पापोंको नाश करने वाला गोकर्ण क्षेत्र है। उस क्षेत्रमें फाल्गुनकी शिवरात्रिको बेलपत्रसे शिवके पूजन करनेसे सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होते हैं।

दूसरा शिवपुराण–(८ वाँ खण्ड, १० वाँ अध्याय) पश्चिमके समुद्रके तटपर गोकर्ण नामक तीर्थ है। शिवजीको मन्दराचल आदि स्थानोंके समान गोकर्णभी प्रिय है। वहाँ असंख्य मनुष्योंने तप करके मोक्ष पाया है। उस तीर्थके महाबल नामक शिवलिङ्गको रावणने तप करके पाया था और गणपतिने उसको वहाँ स्थापित किया।

(४३ वाँ अध्याय) एक समय लंकापति रावणने हिमालय पर्वत पर शिवलिङ्ग स्थापित करके शिवका बड़ा तप किया। जब शिवजी प्रकट नहीं हुए, तब उसने अपने ९ शिरोंको काटकर शिवलिङ्ग पर चढ़ा दिया। जब वह अपना दसवां शिर चढानेको उद्यत हुआ तब शिवजी प्रकट हुए। शिवजीने उसके शिरोंको उसके धड़से जोड़ दिया और उससे कहा कि हे दशानन! तुम क्या चाहते हो? रावणने कहा कि मैं बलवान् होऊँ और तुम्हारे लिङ्गको अपने नगरमें स्थापित करके उसका दर्शन करूं, यही वरदान आप मुझको देवें। शिवजीने कहा कि ऐसाही होगा; किन्तु मार्गमें किसी स्थानपर तुम हमारे लिंगोंको रक्खोगे तब वह वहांही रह जायंगे। ऐसा कह शिवजी दो लिंग रूप होगये। रावण दोनोंको मंजूषोमे करके कांवर पर लेचला। मार्गमें शिवकी मायासे रावणको बड़े वेगसे लघुशंका लगी। वह एक मुहूर्तके लिये एक गोपको कांवर थंभा कर मूत्र करने लगा। (४४ वाँ अध्याय) जब रावणके मूत्र करते हुए विलंब होगया और उसका मूत्र नहीं रुका, तब अहीरने थककर धरनी पर कांवर रख दिया। उसके पश्चात् रावण बडा जोर करके लिंगोंको उठाने लगा; किन्तु वे नहीं उठे। तब वह दोनों लिंगोको अपने अँगूठेसे दबाकर अपने घर चला गया। जो लिंग कांवरमें रावणके आगे था, वह गोकर्णमें चंद्रभाल नामसे और जो पीछे था वह चिताभूमिमें वैद्यनाथ नामसे प्रसिद्ध हुआ।

जरसोपाके जलप्रपात।

कुमटाके बंदरगाहसे १० मील, कारवारके बंदरगाहसे ५० मील और मोरमू गांवके रेलवे स्टेशनसे ९८ मील दक्षिण-पूर्व (मङ्गलूरके बंदरगाहसे १०३ मील पश्चिमोत्तर) होना–

वरका बंदरगाह है। उत्तरी किनारा जिलेमें समुद्रके तीर पर समुद्रके एक बड़े कोलके उत्तर सबडिवीजन का सदरस्थान होनावर एक छोटा कसबा है, जिसमे सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ६६५८ मनुष्य थे; अर्थात् ५२५२ हिंदू, ८६८ क्रुस्तान और ५३८ मुसलमान। कोलके दक्षिण-पूर्व जरसोपा नामक नदी, जिसको शिरावती भी कहते हैं, समुद्रमें गिरती है। होनावरमें बडा कारवार होता है। बम्बईके आगबोट मोरमूगांव, कारवार, कुमटा और होनावर होकर दक्षिणकी ओर जाते है।

होनावरसे १८ मील पूर्व नदीकी धाराके पीछे जरसोपा नामक वस्ती और उस वस्तीसे २० मील पूर्वकी ओर कोदकानी वस्ती है। होनावरसे जरसोपा वस्ती तक नदीमें नाव जाती है और जरसोपासे कोदकानी तक जंगलका मार्ग है। जलप्रपातोके पास जानेके लिये सवारीके लिये मंचोला भी मिलता है।

कोदकानी वस्तीके पास जरसोपा नदीके ४ जलप्रपात, अर्थात् बड़े झरने हैं। लोग कहते है कि ऐसा विचित्र जलप्रपात किसी जगह नहीं है। अमेरिकाके नियागरा नामक जलप्रपात भी इसका मुकाबला नहीं कर सकता है। दूरहीसे जरसोपाके पानीका शब्द आकर कानो पर बजडता है। कोदकानीके आस पास २ डाक बगले है। वहांके जंगलोमे बनैले सूअर, बाघ इत्यादि वनजतु रहते है। कोदकानीके पाससे उसके नीचे अजीब तरहसे खौलता हुआ जलप्रपातोंका पानी देख पडता है। तीन स्थानोंसे जलप्रपात देख पड़ते हैं। घूम घामकर खडी उतराईसे उन स्थानोपर जाना होता है। जलप्रपातोके निकटकी एक वस्तीमें खास करके जैन लोग बसे हैं।

वहाँ ४ जलप्रपात है—पहिले का नाम ग्रेटफल, अर्थात् बडा जलप्रपात, दूसरेका नाम रोरर अर्थात् गर्जने वाला; तीसरेका नाम राकेट अर्थात् अग्निबाण और चोथेका नाम डैमब्लांची अर्थात् घूंघट वाली दुलहिन है। इनमेंसे पहिला जलप्रपात ८३० फीट ऊपरसे १३२ फीट गहरे कुण्डमें गिरता है। देखनेवाला नीचे कुण्डमे गिरते हुए जलको देख सकता है। रोरर नामक दूसरे जलप्रपातका अग पहिले जलप्रपातसे बड़ा है, किन्तु वह पहिलेके समान तेजीसे नहीं गिरता है। जलप्रपातका पानी कुडमें होकर नदीके विस्तरमें गिरता है। राकेट नामक तीसरे जलप्रपातका पानी फव्वारा बन कर बाणोके समान वर्षता है और डैमब्लांची नामक चौथा जलप्रपात ऊपरसे निहायत मुलायम देख पडता है, वह देखनेमें नफीस तथा बहुत सुन्दर है।

रत्नागिरि।

मोरमूगांवके बंदरगाहसे १०१०मील पश्चिमोत्तर ओर बम्बई शहरसे १२६ मील दक्षिण कुछ पूर्व रत्नागिरिका बंदरगाह है। बम्बई हातेके दक्षिणी विभागमे (१६ अंश, ६९ कला, ३७ विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, १९ कला, ५० विकला पूर्व देशांतरमें) जिलेका सदर स्थान रत्नागिरि नामक कसबा है। बम्बईसे आगबोट रत्नागिरि, मोरमूगांव, कारवार इत्यादि बंदरगाहोसे होकर दक्षिण जाते है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय रत्नागिरि कसबेमें १४३०३ मनुष्य थे, अर्थात् १०४२७ हिन्दू, ३७०८ मुसलमान, ९९ क्रुस्तान, ५३ जैन, २ पारसी और १४ अन्य।

रत्नागिरिमें जज, कलक्टर आदि हाकिमोंकी कचहरियाँ, कोढ़ियोंके लिये एक अस्पताल और अनेक स्कूल हैं। दो कोलोंके बीचके एक चट्टानी टीलेके ऊपर पुराना किला है। कसबेसे उत्तरकी छावनीमें थोड़ी फौज रहती है। प्रधान सड़कों पर और बंदरगाहमें रातको लालटेनोंकी रोशनी होती है। लाइट हाउस पर समुद्रके जलसे २५० फीट ऊपर लालटेन जलती है। कसबेसे १½ मील दूरकी एक नदीसे कसबेमें नल द्वारा पानी आता है। जयगढ़, रत्नागिरि और पूरनगढ़ प्रधान बंदरगाह हैं। गल्ले, नमक और मकान बनानेके कामकी लकड़ी अन्य स्थानोंसे रत्नागिरिमें आती है और जलानेकी लकड़ी, मछली तथा बांस रत्नागिरिसे दूसरे स्थानोंमे भेजे जाते हैं।

रत्नागिरि जिला–इसके उत्तर जंजीराका राज्य और कुलाबा जिला; पूर्व सितारा जिला और कोल्हापुरका राज्य; दक्षिण सावंतवाड़ी देशी राज्य और पोर्चुगीजोंका गोआ राज्य और पश्चिम समुद्र है। रत्नागिरि जिलेको दक्षिण कोकन भी कहते है। साधारण तरहसे जिलेकी भूमि नीची ऊँची तथा पत्थरीली है। जिलेमें जङ्गल अब कम हैं, सर्प बहुत है। गर्मपानीके झरने राजापुर, खेडगाँव, संगमेश्वर गाँव, अर्वली गाँव, तोरला गाँव और डपोली सबडिवीजनमें है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय रत्नागिरि जिलके ३९२२ वर्गमीलके क्षेत्रफलमें ९९७०५० मनुष्य थे, अर्थात् ९२१०४६ हिन्दू, ७१०५१ मुसलमान, ३२७५ कृस्तान, १६९९ जैन, १६ पारसी, २ बौद्ध और १ यहूदी। हिन्दू और जैनोंमे ४८६७८४ कुन्बी, ८४१९४ मांग और महारा, ६८१७८ ब्राह्मण, ६८०३९ भंडारी (ताड़ीके काम करनेवाले), १६६३८ तेली १५१०८ सुतार (बढ़ई), १२५४२ सोनार, १०५०६ कुम्भार, १०६२४ चमार, ८६ राजपूत और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय रत्नागिरि जिलेके कसबे मालवनमें १७०५३, रत्नागिरिमे १४३०३, चिपळूनमें ११७१७ और विगुरलामें १०१३४ मनुष्य थे। जिलेमें राजापुर इनसे छोटा कसबा है।

इतिहास–रत्नासुर दैत्यके नामसे कसबेका नाम रत्नागिरि पड़ा है। उस देशमें ऐसा प्रसिद्ध है कि शिवजीके अवतार ज्योतिबाने यहाँ रत्नासुरको मारा था। कोल्हापुरके पास एक प्रसिद्ध मन्दिरमें ज्योतिबाकी पूजा होती है। चिपळून और कोलकी गुफासे विदित होता है कि सन् ईस्वीके २०० वर्ष पहिलेसे५०वर्ष पीछे तक रत्नागिरिके उत्तरीय भागमें बौद्ध लोग बसते थे। उसके पश्चात् जिलेमें अनेक राजा हुए, जिनमें चालुक्य वंशके राजा अधिक बलवान् थे। सन् १३१२ में मुसलमानोंने उस जिलेमें लूट पाट किया। वे लोग दभोलमें बसे; किन्तु जिलेका संपूर्ण भाग सन् १४७० तक उनके अधीन नहीं हुआ। सन् १५०० में सावित्रीके दक्षिणका संपूर्ण कोकन बीजापुरके अधीन हुआ। पोर्चुगीजोंके बल घटनेके समय शिवाजीने बीजापुरकी फौज और पोर्चुगीजोंको जीत करके रत्नागिरि जिलेमें अपना अधिकार करलिया। सन् १७५५ में अङ्गरेजोंने पेशवाके साथ मिल करके सुवर्णदुर्ग नामक प्रधान किलेका विनाश किया और उसके दूसरे वर्ष विजयदुर्गको छीन लिया; तब पेशवाने इन कामोंके बदलेमें अंङ्गरेजोंको नव गावोंके साथ बानकोटको देदिया। उन्होंने सन् १७६५ में मालवान और रेडोको जीत कर, मालवान कोल्हापुरके राजाको और रेडी सावंतवाड़ीके राजाको वापस दिया। उसके पश्चात् २३ वर्ष तक कोल्हापुर और सावंतवाड़ीके

राजा परस्पर लडते रहे। अन्तमें दोनों राजाओंने अङ्गरेजी सरकारको मालवान और वेंगुरला देकरके उससे मेल किया। सन् १८१८ में अङ्गरेजोने पेशवासे अन्य जिलोंके साथ रत्नागिरि जिलेको लेलिया।

उन्नीसवां अध्याय।

(बम्बई हातेमें) बेलगाँव, गोकाकका जलप्रपात, मीराज, कोल्हापुर, सगली, सतारा, बाई और महाबलेश्वर।

बेलगांव।

हुवली जंक्शनसे ५६ मील पश्चिम और मोरमूगांवके रेलवे स्टेशनसे ६६ मील पूर्व लोंडा जंक्शन और लोंडा जंक्शनसे ३३ मील उत्तर बेलगाँवका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके दाक्षिणी महाराष्ट्र देश (दक्षिणी किस्मत) में (१५ अंश, ५१ कला, ३७ विकला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश, ३३ कला, ५९ विकला पूर्व देशान्तरमें) समुद्रके जलसे लगभग २५०० फीट ऊपर जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसवा बेलगाँव है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजीछावनीके साथ बेलगाँव कसबेमें ४०७३७ मनुष्य थे, अर्थात् २२१३७ पुरुष और १८६०० स्त्रियां। इनमे २७२४० हिन्दू, ८६४५ मुसलमान, ३१८४ कृस्तान, १६१३ जैन, और ५५ पारसी थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें ९९ वाँ और बम्बई हातेके अङ्गरेजी राज्यमें १२ वाँ शहर है।

बेलगाँव कसबा चट्टानी भूमिपर वसा है, उसमें वृक्ष बहुत हैं। उसके पूर्व किला है और पश्चिमी फौजी छावनी फैली है। बेलगाँवमें जिलेकी प्रधान कचहरियां, जेलखाना, अस्पताल और छोटे बडे लगभग १५ स्कूल हैं। कसबेके चारोंओर दूर दूरपर छोटी २ पहाडियाँ हैं। वहाँ नमक, सूखी मछली, नारियल और नारियलके छिलकेके रस्सेकी खास करके सौदागरी होती है। चीनी तथा अनेक प्रकारके गल्ले चारोओरसे बेलगाँवमे आते है। एक अच्छी सडक बेलगाँव कसबेसे कोल्हापुर राज्य होकर पूनेको गई है।

किला—लगभग १००० गज लम्बा और ७०० गज चौडा अंडाकार शकलमें बेलगाँवका किला है। उसके चारोओर पत्थरकी दीवार और चौडी खाई है। किलेके उत्तर एक बडा तालाव और पश्चिमोत्तर फाटक है। उसके भीतर तोपखाना, बारक (सैनिक गृह) और सिविलियन तथा अन्य लोगोंके चन्द बङ्गले है। नकारखानेके पूर्व एक सादी मसजिद, दक्षिण एक जैन मन्दिर, कमसरियट स्टोरके आंगनमें दूसरे जैन मन्दिरके दक्षिण-पूर्व सन् १५१९ की बनी हुई मसजिद है।

बेलगाँव जिला—इसके उत्तर मीराजका राज्य; पूर्वोत्तर बीजापुर जिला, पूर्व जमखण्डी और मधोलका राज्य, दक्षिण और दक्षिण-पूर्व धारवाड और उत्तरी किनारा जिला और कोल्हापुरका राज्य. दक्षिण-पश्चिम गोआका राज्य और पश्चिम सावन्तवाडी और

कोल्हापुरका राज्य है। जिलेकी सीमाके भीतर आसपासके कई छोटे राज्यकी भूमि है। जिलेमें बड़ा मैदान है, किन्तु जगह जगह झाड़ियोंसे हरे भरे नीची पहाड़ियोंके सिलसिले है। अनेक चोटियोंपर छोटे छोटे किले हैं। कृष्णा; घटपर्वा और मलपर्वा जिलेकी प्रधान नदियां हैं. इनमेसे किसीमें सर्वदा नाव नहीं चल सकती हैं । जिलेमें अनेक प्रकारके पत्थर है। पहिलेकी अपेक्षा अब जङ्गल कम है। जिलेके पश्चिमके भागके मकान फूस या खपड़ेसे छाये गये है, परन्तु पूर्वके भागमें, जहां वर्षा कम होती है, मिट्टीकी छत वाले मकान बने हैं।

वेलगॉव जिलेके परसगढ़ नामक सबडिवीजनमें वेलगॉव कसबेसे ४१ मील पूर्व कुछ दक्षिण सौंदती नामक कसबा है। उससे ५ मील पश्चिमोत्तर वर्षमें दो बार यल्लमादेवीका प्रसिद्ध मेला होता है,—दोनो मेले तीन दिनो तक रहते हैं; उनमें १५००० से २०००० तक लोग आते है। अगहनकी पूर्णमासीके मेलेके समय यल्लामाके पतिकी मृत्यु होनेका और वैशाखकी पूर्णिमाके मेलेके समय उसके जी जीनेकी लीला होती है। वेलगॉव जिलेमें महाराष्ट्री कनडी और हिन्दी भाषा प्रचलित हैं; सरकारी काम कनडीमें होता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय वेलगॉव जिलेके ४६५७ वर्गमील क्षेत्रफलमें ८६४०१४ मनुष्य थे, अर्थात् ७४६२८६ हिन्दू; ६६२६२ मुसलमान, ४४९९१ जैन, ६३२२ कृस्तान, ८९ यहूदी और ६४ पारसी। हिन्दुओंमें ९०८४८ लिङ्गायत, ३०४०४ ब्राह्मण, २७११ राजपूत और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१की मनुष्य-गणनाके समय वेलगॉव जिलेके कसबे वेलगांवमें ४०७३७, गोकाकमें १२१०६, निपानीमें ११७२८ और अथनीमे १०४१६ मनुष्य थे।

इतिहास—सन् १४४२ मे महम्मदशाहके जनरल ख्वाजा महम्मद गवनने वेलगांव कसबेको जीता। सोलहवीं सदीके आरम्भमें कुछ समय तक वह खुरम तुर्कके अधिकारमें था। १९ वीं सदीके आरम्भमे वेलगांव जिला धारवाड़ जिलेके नामसे पेशवाके अधीन था। सन् १८१८ में अङ्गरेजोंने पेशवाको परास्त करके धारवाड़ जिले तथा वेलगांवके किलेको ले लिया। अङ्गरेजी राज्य होनेपर वेलगांव कसबेकी उन्नति होने लगी। सन् १८३६ में धारवाड जिलेके उत्तरी भागको वेलगांव जिला बनाया गया।

गोकाकका जलप्रपात।

वेलगांवके रेलवे स्टेशनसे ३६ मील (लौंडा जंक्शनसे ६९ मील) उत्तर कुछ पूर्व गोकाकरोडका रेलवे स्टेशन है। वेलगांव जिलेमें गोकाक एक कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १२१०६ मनुष्य थे; अर्थात् ९६४१ हिन्दू, २२५२ मुसलमान और २१२ जैन।

गोकाकरोडके रेलवे स्टेशनसे ४ मील दूर गोकाकका जलप्रपात है। वहॉ गतपर्व नदीकी धारा १७५ फीट ऊपरसे चादरकी तौरपर नीचे गिरती है; गोकाक कसबेके पास रहनेके कारण उसको गोकाकका जलप्रपात कहते हैं। नीचेका कुण्ड बड़ा गहरा है; वहॉसे गोकाक नहर निकाली गई है। कुण्डके पास महादेव आदि देवताओंके कई एक पुराने मन्दिर है। वर्षा कालमें जलप्रपातका दृश्य बहुत मनोरम रहता है, उस समय जलकी चादरकी चौड़ाई लगभग २०० फीट होजाती है।

मीराज।

गोकाकरोडके रेलवे स्टेशनसे ४९ मील (लोंडा जंक्शनसे ११८ मील) उत्तर मीराजका रेलवे जंक्शन है । बम्बई हातेमें कृष्णानदीसे पूर्व मीराज राज्यकी राजधानी मीराज एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मीराज कसबेमें २६०६० मनुष्य थे, अर्थात् १३१०५ पुरुष और १२९५५ स्त्रियाँ । इनमे २००४६ हिन्दू, ५२४४ मुसलमान, ७०२ जैन, ५६ कृस्तान, ६ यहूदी और ५ पारसी थे।

मीराज राज्यके दो राजा हैं, एक राजा, जो बडी शाखासे हैं, मीराजमे और दूसरे जो छोटी शाखासे हैं, वडगाव्में रहते हैं।

मीराजका वर्त्तमान राजा गङ्गाधरराव गणपति जातिके कोकन ब्राह्मण हैं । मीराज कसबेमें उनका महल और १ अस्पताल बना हुआ है । उनके राज्यका क्षेत्रफल ३४० वर्गमील है, जिसमे सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २ कसबे और ५५ गाँव तथा ६९७३२ मनुष्य थे । उनका राज्य शोलापुर और धारवाड़ जिलेसे तथा कृष्णानदीकी घाटीमें है, जिससे उनको ३ लाख रुपयेसे अधिक मालगुजारी आती है, जिसमेसे १२५६० रुपये अङ्गरेजी गवर्नमेंटको दिये जाते हैं । राजाको ५५४ फौज और ३३८ पुलिस रखनेका अधिकार है।

वडगांवके वर्तमान राजा लक्ष्मणराव हरिहर कोंकन ब्राह्मण हैं । उनके राज्यमें, जो धारवाड, सतारा तथा शोलापुर जिलेमें है, सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ३', गॉव और ३०५४१ मनुष्य थे । राज्यका क्षेत्रफल ३०८ वर्गमील है, जिससे उनको १६०००० रुपयेसे अधिक मालगुजारी आती है, जिसमेंसे ६४१० रुपये अङ्गरेजी सरकारको 'कर' स्वरूप दिये जाते है । राजाको २७० फौज और २१९ पुलिस रखनेका अधिकार है।

मीराज राज्य वम्बई हातेके दक्षिणी महाराष्ट्र देशके पोलिटिकल एजेंसीके अधीन है। दोनों राजा दक्षिणी महाराष्ट्र देशमें औवल दर्जेके सरदार समझे जाते है।

इतिहास-पेशवाने पटवर्द्धन वंशके एक ब्राह्मणको मीराजका राज्य दे दिया । (संगली-के इतिहास में देखिये) उसके उपरांत उसमेंसे संगलीका राज्य अलग होगया । उसके पीछे (पेशवाका राज्य अङ्गरेजी अधिकारमे होजानेपर) सन् १८२० में अंगरेजी सरकारकी मंजूरीसे वह राज्य चार भागोंमें बट गया । उनमेंसे एक भागका मालिक सन् १८४२ में और दूसरे भागका मालिक सन् १८४५ में निष्पुत्र मरगया, इस कारणसे उस दो भाग राज्यका अंत होगया, वाकी दो भाग, जिनमेंसे एक के राजा मीराज कसबेमें और दूसरेके वडगांवमें रहते हैं; विद्यमान हैं ।

कोल्हापुर।

गोकाकरोडके रेलवे स्टेशनसे ४९ मील (लोंडा जंक्शनसे ११८ मील) उत्तर मीराज जंक्शन और मीराजसे २९ मील पश्चिम कुछ दक्षिण कोल्हापुरका रेलवे स्टेशन है । कोल्हा-पुर राज्यके खर्चसे मीराजसे कोल्हापुर तक रेलवे शाखा बनी है । बम्बई हातेके (१६अंश, ४२ कला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश, १६ कला पूर्व देशांतरमें) एक प्रसिद्ध देशी राज्यकी राजधानी कोल्हापुर है, जिसको अनेक लोग करवीर कहते हैं; उसके निकट पुराने करवीरकी छोटी वस्ती है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके साथ कोल्हापुर शहरमें ४५८१५ मनुष्य थे; अर्थात् २३३९३ पुरुष और २२४२२ स्त्रियां। इनमें ४००७० हिन्दू, ४१९३ मुसलमान, १२७९ जैन, २६० कृस्तान और १३ पारसी थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमे ८७ वॉ और (बड़ोदाको छोड़कर) बम्बई हातेके देशी राज्योंमें तीसरा शहर है।

कोल्हापुर शहरके आस पास पहाड़ियां हैं, इस लिये शहरके छोटे बड़े प्रायः सब मकान पत्थरसे बने हैं। शहर उत्तम मकानोंसे भूषित है। अनेक सड़कें पक्की तथा चौड़ी बनी हुई हैं। शहरकी सफाईमें बड़ी उन्नति हुई है। हालमे चंद सरकारी इमारत उत्तम बनी है। पबलिक बागमें टाउनहाल है। इनके अलावे कोल्हापुरमे पोलिटिकल एजेंटकी सुन्दर कोठी, गिरजा, जेलखाना, अनेक अस्पताल तथा स्कूल हैं और अनेक शहर तथा कसबोंके लोग आकर सौदागरी करते हैं।

कोल्हापुर शहरके उत्तर ब्रह्मपुरी नामक पवित्र पहाड़ीके पास ब्राह्मणोंके मुर्दे जलाये जाते है; उससे लगभग १०० गज उत्तर पंचगङ्गा नामक नदीके निकट रानीबागमें राजवंश-के मुर्दोंका अग्नि संस्कार किया जाता है। रानी बागके समीप एक घेरेके भीतर महाराष्ट्र प्रधान शंभाजी, शिवाजी, ताराबाई और आईबाईके समाधि मन्दिर है। बौद्ध लोगोंके मंदिर तथा मकानोंकी अनेक निशानियां शहरके आस पास मिली है। कोल्हापुरके पास ३ मील घेरेकी एक गहरी झील है। कोल्हापुर कसबेसे ३ मील दूर बावरा गांवके पास कोल्हापुरकी पैदल सेना रहती है।

महाराजके महल–कोल्हापुरमें कोल्हापुर नरेशके दो राजमहल हैं,—पुराना महल शह-रके मध्यमे और नया महल शहरके बाहर है। पुराने महलका घेरा बहुत बडा है, उसके चौकके दरवाजेपर नकार खाना बना है, जिससे भीतर प्रवेश करनेपर दहिने ओर राजवाडा अर्थात् पुराना महल देख पड़ता है। उसके दूसरे मंजिलके दरबार कमरेमें कोल्हापुरके मृत महाराज राजारामको गोद लेनेवाली अहल्याबाई और दूसरे किसी प्रधानकी माता अकाबाई की तस्वीर और तीसरे मंजिलमें एक हथियारखाना है। चौकके दक्षिण बगलमें खजानाका मकान और उस मकानमें लगा हुआ राज्यका आफिस है। पुराने महलके पास हाईस्कूल और उसके आगे देशी पुस्तकालय है।

शहर और रेजीडेंसीके बीचमें ७००००० रुपयेके खर्चसे अंगरेजी ढंगका नया राज-महल बना है। एक बहुत बड़े रमनेके भीतर राजमहल और एक बड़ा सरोवर है। राजभ-वनमें एक लम्बा चौड़ा मनोहर दरबार गृह बना है। उसकी छत तथा दीवारोंमें सफेद पालिस पर सुनहली गिलटी द्वारा विविध भांतिके फूल पत्र और पक्षियोंकी मूर्तियां बनी हुई है। वहां ऊपर अनेक बरामदे भी हैं। दरबार गृहके फर्शमें विविध रंगके बहुमूल्य पत्थरोंकी सुन्दर पच्चीकारी कीहुई है। उसके ऊपर बड़ा कालीन बिछा है। उस गृहके द्वारके सामने मार्बुलका अर्द्धचन्द्राकार सुन्दर चबूतरा है, जिसके ऊपर सुन्दर सिंहासन रक्खा है। दरबार गृहके एक ओरकी दीवारके पास पूर्वोक्त सिंहासन और तीन ओरकी दीवारोंमे गाथिक ढंगके द्वार बने हैं, जिनके ऊपरकी मेहराबियोंमें भांति भांतिके चित्रोंसे चित्रित शीशे जडे गये है। दरबार गृहके कमरेके पास उससे लगे हुए अङ्गरेजी ढंगसे सजे हुए दो मनोरम कमरे है, जिनमें महाराजसे भेंट करने वाले अङ्गरेज लोग आकर ठहरते हैं।

महालक्ष्मीजीका मन्दिर—शहरके भीतर पुराने राजमहलके निकट खजाना घर और खजानाघर तथा राज्यके आफिसके पीछे कोल्हापुरकी प्रसिद्ध महालक्ष्मीजीका विशाल मन्दिर है, जिसको बहुत लोग अम्बाका मन्दिरभी कहते हैं। उस मन्दिरसे पुरानी कारीगरीके अनेक उदाहरण विद्यमान है। मन्दिरका प्रधान भाग देशी खानोंसे निकले हुए नीले रंगके पत्थरोंसे बना हुआ है। एक बड़े घेरेके पूर्व बगलमें महालक्ष्मीजीका निज मन्दिर है। मन्दिरके गुम्बजके नीचेकी नकाशीका काम जैन मन्दिरोंके ढांचेका है। जैन लोग कहते है कि यह हमारी इष्ट देवी पद्मावतीका मन्दिर है। प्रति वर्ष वैशाखमासमें महालक्ष्मीजीकी प्रतिनिधि स्वरूप पीतलकी प्रतिमा शहरमें चारोंओर फिराई जाती है, उस समय बहुतसे लोग एकत्र होते हैं। महालक्ष्मीजीके मन्दिरके पास पद्मसरोवर, काशी और मणिकर्णिकातीर्थ और विश्वनाथ, जगन्नाथ आदि देवता हैं।

देवीभागवत—सातवें स्कन्धके ३८ वें अध्यायमें लिखा है कि, दक्षिण देशमें सह्याद्रि नामक पर्वतपर कोल्हापुर नामक नगरमे लक्ष्मीजी सदा स्थित रहती हैं (लोग कहते है कि करवीर माहात्म्यमे महालक्ष्मीजीकी महिमाका विशेष विवरण लिखा है)।

मन्दिर और गुफा—पनालाके किलेके पास जानेवाली सडकके समीप समुद्रके जलसे लगभग २६०० फीट ऊँची ज्योतिवा नामक पहाडी है। उसके ऊपर बहुतेरे मन्दिर बने हुए हैं, जिनमेंसे ३ शिव मन्दिर प्रधान हैं। उन मन्दिरोंमें कोई बहुत पुराना मन्दिर नहीं है। उस पहाडीके बगलमें पत्थर निकालकर बनाईहुई कई एक पुरानी कोठरियाँ अर्थात् गुफायेहैं।

ज्योतिवा पहाड़ीके पास पावलाकी गुफामें ३४ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा एक बड़ा कमरा है, उसमें चट्टानके १४ स्तम्भ लगे है और भीतरकी दीवारोंमें काटकर छोटी कोठरियाँ बनाई हुई है। कमरेके बायेंके बगलमें (आगेसे पीछे तक) ३० फीट लम्बी और १५ फीट चौड़ी बेडौल शकलकी चैत्यगुफा अर्थात् बौद्ध मन्दिर है।

पनालाका किला—कोल्हापुर शहरसे १२ मील पश्चिमोत्तर समुद्रके जलसे लगभग ३००० फीट ऊपर पनालाका पहाडी किला है। ७ मील तक सुगम मार्ग और ५ मील खड़ी चढ़ाईकी राह है। पूर्व समयमें वह किला दुर्गम तथा दुर्भेद्य था, किन्तु अब उसमें जानेका सुगम मार्ग बना दिया गया है, जिसपर तांगा चला जाता है। पहाडीके शिरपर किला है। किलेके "चार दरवाजे" के पास मारुतिका मन्दिर है। उससे आगे जानेपर बाई ओर एक स्कूल देख पड़ता है, जो पहिले मुसलमानोका मकबरा था। उससे थोड़े आगे सडकके उसी बगलमें शम्भाजीका मन्दिर है। खड़ी पहाडीके बगलपर शिवाजीकी दो मञ्जिली इमारत है, जिसमें गर्मीकी ऋतुओंमें कोल्हापुरके पोलिटिकल एजेंट रहते हैं। उसके ½ मील दक्षिण-पश्चिम १३० फीट लम्बा, ५७ फीट चौड़ा तथा ३० फीट ऊँचा पत्थरसे बना हुआ मालखाना है। शिवाजीके समयमें उसमें फौजके खानेके लिये गल्ले रक्खे जाते थे। सन् १६५९ और १६६०में जब बीजापुरकी सेनाने उस किलेमें ४ मास तक शिवाजीको घेर रक्खा था, तब उसी मालखानेके गल्लेसे उनकी सेनाका निर्वाह हुआ था। किलेके पश्चिम बगल पर नकाशीदार तेहरा फाटक है। एक देव मन्दिरके पास सन् १४९७ का बना हुआ एक सरोवर है। किलेके पूर्ववाले फाटकसे लगभग १ मील दूर पवनगढ़का किला है।

कोल्हापुरका राज्य–बम्बई हातेके अङ्गरेजी जिलोंके बीचमें कोल्हापुरका राज्य है। इसके उत्तर सतारा जिला; पूर्वोत्तर कृष्णानदी, जो सांगली, मीराज आदि देशी राज्योंसे कोल्हापुरको अलग करती है, पूर्व तथा दक्षिण बेलगॉव जिला और पश्चिम सह्याद्रि पर्वत है। कोल्हापुर राज्यमें महाराष्ट्र देश तथा करनाटकके पुराने हिन्दू राज्यका भाग शामिल है, इसलिये राज्यमें महाराष्ट्री तथा कनड़ी दोनों भाषा प्रचलित हैं। राज्यकी राजधानी कोल्हापुर शहर है। राज्यके पश्चिम ऊंची पहाड़ियाँ और मध्यमें नीची पहाड़ियोंकी कई लाइनें और पूर्वके भागमे खेतोंका मैदान है। राज्यके पश्चिम भागमे पनाला, विशलगढ़, बावरा, भूधरगढ़ आदि पहाड़ियों पर कोल्हापुरके प्रधानोंके पुराने किले हैं। पनाला, विशालगढ़, भूधरगढ़ और कोल्हापुरकी पहाड़ियोंमे लोहेके ओर मिलते हैं। राज्यमें अनेक पहाड़ियोंसे पत्थर निकाला जाता है। कोल्हापुर राज्यकी आठों नदियोंमेंसे कोई ऐसी नहीं है, जो गर्मीकी ऋतुओंमें हिल कर पार जाने लायक न होय। इस राज्यमें धान, मिलेट, ऊख, तंबाकू, कपास और अनेक भांतिकी तरकारियां बहुत पैदा होती हैं। धातु और मिट्टीके वर्त्तन, ऊन और सूतके कपडे; कागज; इतर, लाह इत्यादि वस्तु तैयार होती हैं। रुई, चीनी, तंबाकू, और अनेक प्रकारके गल्ले उस राज्यसे बाहरके कसबोंमें भेजे जाते हैं और रेशम, नमक, गंधक, अनेक भॉतिके मसाले और खुरदा वस्तुएँ अन्य स्थानोंसे उस राज्यमे आती हैं। कोल्हापुर, शिरोल, वड़गांव, अलटा, इंचल करंजी, कागल और मलकापुरमे देशी सौदागरी होती है। कोल्हापुरको 'कर' देने वाली विशलगढ़, बावरा, कागल, इंचलकरंजी आदि १३ मिलकियतें हैं। कोल्हापुर कसबेमें बड़ा जेलखाना और राज्यमे १३ मातहत जेल हैं। कोल्हापुर राज्यमें एक प्रविंशियल कालिज, एक देशी पुस्तकालय और छोटे बड़े लगभग १७५ स्कूल है। राज्यसे महाराजको वार्षिक लगभग २३००००० रुपये मालगुजारी आती है।

सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय कोल्हापुर राज्यके २८१६ वर्गमील क्षेत्रफलमें ८००१८९ मनुष्य थे; अर्थात् ७१९१६४ हिन्दू, ४६७३२ जैन, ३३०२२ मुसलमान, १२५३ क्रस्तान, १२ बौद्ध, ५ यहूदी और १ पारसी। हिंदुओंमे ३६२१५८ कुनबी, ७२३९१ लिंगायत, ६५३१४ महारा, ३८३२६ धांगड़, २९४४६ ब्राह्मण, १३३२३ मांग, ११४५१ सोनार, १०२१९ चमार, ८५०९ कुम्भार, ७४७६ नापित (नाई), ५९२४ कोष्टी, ५६६६ दर्जी, ५२७७ विराध, ५२०८ धोबी, १५०० राजपूत और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कोल्हापुर राज्यके कसबे कोल्हापुरमें ४५८१५, इंचल करंजीमें ११२०० और शिरोल, कागलमें दस दस हजारसे कम मनुष्य थे।

इतिहास—देशी कहावतोंसे विदित होता है कि पूर्वकालमें कोलापुरके पासका 'करवीर' नासक नगर बहुत प्रसिद्ध तथा एक पवित्र स्थान था। महालक्ष्मीजीका बड़ा मंदिर उन कहावतोंका साक्षी है। उस मंदिरके चारोओरके बरामदे अब नहीं हैं। कोल्हापुर कसबेके उत्तर बगलमें अब तक करवीर नासक एक छोटा गांव है। प्रथम करवीर राजधानी था; पीछे कोल्हापुर राजधानी बनाया गया। कोल्हापुर शहरके आस पास बौद्धोंकी इमारातोंकी अनेक निशानियां मिली हैं। लगभग सन् १८८० में एक बौद्ध स्तूपमें बिल्लोरका एक डब्बा मिला था, जिसके ऊपर सन ईस्वीके आरंभ से लगभग ३०० वर्ष पहिलेके राजा अशोकके समय-

का लेख था; इससे जान पड़ता है कि कोल्हापुर अति प्राचीन स्थान है। आस पासकी भूमि खोदने पर अनेक छोटे मंदिर तथा अन्य इमारतें मिली हैं, जो किसी समयमें भूकंपसे पृथ्वीमें धस गई थीं।

पश्चिमीघाट पर बसने वाले सिलहार वंशके प्रधानके तीसरे पुत्रके वंशधरोंने कोल्हापुर शहरके चारो ओरके देश और बेलगांव जिलेके पश्चिमोत्तरके भागको १० वीं सदीके अंतमें अपने अधिकारमें किया। सन् १२१३—१२१४ में देवगिरिके यादववंशके राजाने उनसे वह देश और पनालाका किला छीन लिया। पीछे बहमनी खांदानके बादशाहने यादवोंको निकालकर वहां अपना अधिकार जमाया। पीछे उस देशको बीजापुरके बादशाहने अपने अधिकारमें किया। उसने सन् १५४९ में पनालाके किलेकी मरम्मत करवाई। सन् १६५९ में महाराष्ट्रकुलभूषण महाराज शिवाजीने बीजापुर वालोंसे कोल्हापुरका देश और पनालाका किला छीन लिया। सन् १६९० में दिल्लीके बादशाह औरंगजेबने शिवाजीके वंशधरोंसे पनालाका किला ले लिया।

सन् १६८० ई० में महाराज शिवाजीके देहान्त होने पर उनके पुत्र शंभाजी उनके उत्तराधिकारी हुए, जिनको सन् १६८९ में औरंगजेबने मार डाला और शंभाजीके पुत्र शाहूजीको कैद कर रक्खा। सन् १७०० मे जब शिवाजीके छोटे पुत्र राजाराम मर गये; तब उनकी विधवा स्त्रीने शिवाजी नामक अपने पुत्रको कोल्हापुरमें रक्खा। सन् १७०७ में औरंगजेबके मरनेके पश्चात् शाहूजी, दिल्लीकी अधीनता स्वीकार करके अपने दादा शिवाजीकी जायदादके अधिकारी बने। उन्होंने सितारोको अपनी राजधानी बनाया। बड़े शिवाजीके बडे पुत्र शंभाजीके और छोटे पुत्र राजारामके वंशधरोंसे कई वर्षों तक अपने अधिकारके लिये झगडा जारी रहा। सन् १७३१ मे संधि हुई, जिसके अनुसार राजारामके वंशधरोंके अधीन कोल्हापुर स्वतंत्र राज्य माना गया। सन् १७६० मे राजारामके पुत्रकी मृत्यु होने पर भोंशला वंशके एक मनुष्य उस राज्यके उत्तराधिकारी हुए। उसकी कई पुश्तके पीछे तीसरे शिवाजी कोल्हापुरकी गद्दी पर थे। सन् १८४५ में कोल्हापुर राज्यकी निगरानीके लिये अङ्गरेजी पोलिटिकल सुपरिण्टेंडेंट कायम हुआ और शहरके पास एक कंप नियत किया गया। सन् १८५७ के बलवेके समय कोल्हापुरके बलवाइयोंने हथियारखानेसे हथियारोंको और सरकारी खजानेसे ४५००० रुपये ले लिये। तीसरे शिवाजीने सन् १८६६ में अपने मरनेके समय राजाराम नामक भानजेको गोद लिया। सन् १८७० में राजाराम इंगलेंडसे हिंदुस्तानको लौटते समय मार्गमें मर गये। तब उनकी विधवा रानीने एक लड़केको गोद लेकर कोल्हापुरके सिंहासन पर बैठाया। वह लडका महाराज शिवाजी छत्रपतिके नामसे प्रसिद्ध हुआ। सन् १८८३ में शिवाजी छत्रपति उन्मत्त होकर मर गये। उनका कोई पुत्र नहीं था इस लिये उनकी रानीने कोल्हापुर राज्यके अधीनके कागल नरेशके बड़े पुत्र यशवंत रावको, जिनका जन्म सन् १८७४ मे हुआ था, गोद लिया। यशवंतराव सन् १८८४ के मार्चमें महाराज शाहू छत्रपतिके नामसे कोल्हापुर राज्यके उत्तराधिकारी हुए। सन् १८९१ में बडोदाके एक राजपुरुषकी राजकुमारीसे उनका व्याह हुआ। कोल्हापुरके राजाओंको दत्तक पुत्र बनानेका अखतियार है। उनको अङ्गरेज महाराजकी ओरसे १९ तोपोंकी सलामी मिलती है।

संगली।

मीराज जंक्शनसे ६ मील पश्चिमोत्तर (लोंडा जंक्शनसे १२४ मील उत्तर) संगलीका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके दक्षिणी महाराष्ट्र देशमें कृष्णा नदीके पास संगली नामक देशी राज्यकी राजधानी संगली कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय संगली कसबेमें १४७९८ मनुष्य थे; अर्थात् ११७५५ हिन्दू, २०५७ मुसलमान, ९३७ जैन और ५९ कृस्तान।

संगलीमें एक छोटा किला है, जिसके भीतर वहाँके राजाका महल और उनके अनेक आफिस बने हुए हैं। बाहर अनेक आफिस और कसबेकी बस्तियाँ हैं। कसबेसे दक्षिण एक छोटी नदी कृष्णामें मिली है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय संगली राज्यके ८९६ वर्गमीलमें १९६८३२ मनुष्य थे। यह राज्य बम्बई हातेके दक्षिण महाराष्ट्र देशके पोलिटिकल एजेंसीके अधीन ६ टुकड़ोंमें है। राज्यसे राजाको ९८१३५० रुपये मालगुजारी आती है। संगलीके राजा कोकन ब्राह्मण हैं।

इतिहास—पेशवाने पटवर्द्धन वंशके हरिभट्ट नामक ब्राह्मणको मीराजका राज्य दे दिया। सन् १७७२ में गोविंदरावहरिके पोते चिंतामणि राव राज्यके अधिकारी हुए। चिंतामणि राव केवल ६ वर्षके लड़के थे, इस लिये उनके लड़कपनमें उनके चाचा गंगाधर रावने राज्यका प्रबंध किया। लडकेके बडे होने पर चचा भतीजेमें राज्यके लिये झगड़ा उठा। अन्तमें उस राज्यमेंसे मीराजका राज्य गंगाधर रावको और संगलीका राज्य चिंतामणि रावको मिला। उस समय मीराजकी मालगुजारी ४७९८०० रुपये और संगलीकी ६३५१८० रुपयेथी। सन् १८१८—१८१९ मे पेशवाके परास्त होनेके पश्चात् चिंतामणि राव अङ्गरेजी गवर्नमेण्टके अधीन हुए। सन् १८५१ मे चिन्तामणि रावका देहान्त होगया। अब उनके पुत्र वर्तमान संगली नरेश चंडीराव चिन्तामणि है।

सतारा।

संगलीके रेलवे स्टेशनसे ७६ मील (लोंडा जंक्शनसे २०० मील) उत्तर कुछ पश्चिम और पूनाके रेलवे स्टेशनसे ७८ मील दक्षिण सतारा रोडका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके दक्षिणी विभागमें (१७ अंश, ४१ कला, २५ विकला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश, २ कला, १० विकला पूर्व देशान्तरमे) कृष्णा और येना नदीके संगमके निकट जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसबा सतारा है। सतारा रोडके रेलवे स्टेशनसे पश्चिम १० मीलकी पक्की सड़क सतारा कसबेको गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके सहित सतारा कसबेमे २९६०१ मनुष्य थे, अर्थात् १५४०६ पुरुष और १४१९५ स्त्रियाँ। इनमें २४६८९ हिन्दू, ३७६० मुसलमान, ५५९ कृस्तान, ४३७ जैन, ७८ पारसी, ७६ यहूदी और ६ अन्य मनुष्य थे।

सताराके मकान छोटे तथा सादे है; किन्तु कसबा साफ तथा उसकी सडके चौडी हैं। वहाँ एक हाई स्कूल, जेलखाना, अस्पताल और जिलेकी कचहरियाँ है। सताराके पूर्व और

पश्चिम पहाडियाँ हैं। पश्चिमकी पहाडीसे कसबे तक ४ मील लम्बी एक नाली लाई गई है; जिस द्वारा कसबेमें पानी आता है। १३⁄४ मील लम्बी और इतनीही चौड़ी भूमिपर फौजी छावनी फैली है। उसके दक्षिण किनारेपर पुरानी रेजीडेन्सीका हाता है, जिसके उत्तर फाटकके बाहर यूरोपियन सिपाहियोंकी लाइनें, लाइनोंके उत्तर देशी सिपाहियोंकी लाइनें और सदर बाजार है। अङ्गरेजी बारकके ३⁄४ मील पश्चिम एक वृक्षके चारों ओर पत्थरका चबूतरा है, जिस पर सताराके राजा शाहूजी और वहाँके मृत कमिश्नरके स्मरणार्थ एक हृदय-ग्राहक लेख देखनेमें आता है। यूरोपियन बारकसे १⁄२ मील पूर्वोत्तर नया कब्रगाह है।

कसबेके बीचमें सताराके राजा आपासाहबका बनवाया हुआ पुरान महलके पास उससे लगा हुआ नया महल है, जिसके आँगनके उत्तर बगल पर एक बहुत बडा कमरा, आँगनके आगे कलक्टर साहबका आफिस और बड़े कमरेके पश्चिम जज साहबका आफिस है। नये महलसे १⁄२ मीलकी सड़क पूर्व ओर पुराने कबरगाहको गई है। पुराना महल अब छोड दिया गया है। उससे लगभग २०० गज दूर राजारामका जिला (बाहरका मकान) और बाग है।

राजारामको सताराकी मृतरानीने दत्तकपुत्र बनाया था, किन्तु अङ्गरेजी सरकारने उसको उत्तराधिकारी स्वीकार नहीं किया। राजारामके पास सताराके राजाओंके भूषण और शिवाजीके जयभवानी नामक प्रसिद्ध तलवार तथा अनेक दूसरे हथियार, अर्थात् एक बघनखा नामक हथियार, जिससे उन्होंने अफजलखाँको घायल किया था, एक गैंडेका ढाल, जिस पर हीरेके ४ फूल जडे हुए हैं, एक डब्बा जिसपर हीरा, लाल आदि रत्न जडे हैं, रत्न जड़े हुए कलम तथा दावात, लड़ाईका बखतर और १½ फीट लम्बा (जिसकी मूठमें हीरे आदि रत्न जड़े हुए है) सुन्दर खञ्जर है।

एक छोटी खड़ी पहाडीके शिरपर सतारेका किला है। किलेके उत्तर बगलपर मजबूत फाटक बना हुआ है। नीचेसे चढावका मार्ग फाटक तक गया है। किलेके भीतर अब चन्द बँगलोंके अतिरिक्त कुछ नहीं है, प्रायः सर्वत्र उजाड़ होरहा है। किलेसे चारों ओर पहाड़ियाँ देख पड़ती है, जिनमेंसे चन्द पहाडियों पर उजड़े पुजडे किले है। ऐसा प्रसिद्ध है कि पनालाके राजाने, जो सन् ११९२ में राज्य करता था, सताराके वर्त्तमान किलेको बनवाया था।

सतारासे ३ मील पूर्व कृष्णा और येना नदीके सङ्गमके पास महुली नामक गाँव है, वहां चारों तरफके लोग मुर्दे लाकर जलाते हैं। नदीके तीरपर सन् १७०० का बना हुआ रामेश्वरका मन्दिर सन् १७४२ का बना हुआ भोलेश्वर महादेवका मन्दिर और सन् १८२५ का बना हुआ राधाशंकरका मन्दिर और संगमके पास सन् १७३५ का बना हुआ वहाँके सब मन्दिरोंसे बड़ा विश्वेश्वर महादेवका मन्दिर और सन् १६७९ का बना हुआ सङ्गमेश्वर महादेवका मन्दिर है। सङ्गमेश्वरके मन्दिरके बाहरके फाटकसे नीचे कृष्णा नदीके तीर तक सीढ़ियाँ बनी हैं। इनके अतिरिक्त वहाँ बहुतेरे अन्य मन्दिर और सतियोंके स्थान हैं।

सतारा जिला—इसके उत्तर नीरानदी, जो पूना जिलेसे सताराको जुदा करती है और दो छोटे देशी राज्य, पूर्व शोलापुर जिला और कई मिलकियते, दक्षिण कोल्हापुर और संगलीका देशी राज्य तथा बेलगाँव जिलेके चन्द गाँव और पश्चिम सह्याद्रि पहाड़ियोंकी

श्रेणी है, जो कुंलावा और रत्नागिरि जिलेसे इस जिलेको जुदा करती है। जिलेका सदर स्थान सतारा कसबा है। जिलेमें पहाडियाँ वहुत हैं। लगभग ६५० वर्गमील भूमिपर जङ्गल है। पश्चिमकी पहाड़ियोंमें वनैले सूअर, भालू, सांभर, हरिन इत्यादि वनजन्तु रहते है। सतारा कसबेसे ४६ मील पूर्वोत्तर सिहनपुर गाँवके पासकी पहाड़ी पर महादेवजीका मन्दिर है। वहाँ यात्री बहुत जाते है, फाल्गुनमें मेला होता है, जिसमें ५०००० तक मनुष्य जाते है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सतारा जिलेके ४९८८ वर्गमील क्षेत्रफलमे १०६२२३५ मनुष्य थे; अर्थात् १००८९१८ हिन्दू, ३६७१३ मुसलमान, १५६७९ जैन, ८८६ कृस्तान, ९९ पारसी, २९ सिक्ख, २१ यहूदी और ६ बौद्ध। हिन्दुओंमें ५८३५६९ कुन्वी; ८७६७९ महारा, ४८३६२ ब्राह्मण, ४१५४७ धांगर, २४७८४ माली, २०९११ मांग, १७०३५ लिंगायत, १६१०५ चमार, १४२५१ नापित (नाई), १२३२१ कुम्भार, ११०४३ सुतार (वढ़ई), ८६३२ कोस्ती, १३२८ राजपूत, ३७९६ जंगम, २०४६ बनजारा और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे। सतारा जिलेमें महाराष्ट्री और कुछ कनडी भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सतारा जिलेके कसबे सतारामें २९६०१, बाई में १२४३८, करदामें १२०८६, अस्तामें ११४०३, तासगाँवमें ११२७१ और इसलामपुरमें १०६५७, मनुष्य थे। इसी जिलेमें गर्मीकी ऋतुओंमें अङ्गरेजोंके रहनेका स्थान महावलेश्वर है।

इतिहास—एक समय सताराके किलेमें दीवार; बुर्ज तथा फाटक, सब मिलकर गिनती में १७ थे, उसी कारणसे शहरका नाम सतारा पड़ गया। संभव है कि वम्बई हातेके कोकनके समान सतारा जिलाभी सन् ईस्वीके ९० वर्ष पहिलेसे सन् ३०० ईस्वी तक अन्ध्रभृत्य या शातकर्णी वंशके राजाओंके अधिकारमें था। कदाचित् उस वंशकी शाखाके कोल्हापुर वालोंने तीसरी अथवा चौथी सदी तक सतारापर अपना अधिकार रक्खा था। उसके पीछेसे १४ वी सदीके आरम्भ तक सताराके विषयमें कोई इतिहासिक समाचार नहीं मिलता है। शिला तथा तांवेके पत्तरपरके लेख रत्नागिरि और वेलगाँव जिले तथा कोल्हापुर राज्यके पड़ोसमें मिले हैं, इससे सम्भव है कि लगभग सन् ५५० से सन् ७६० तक चालुक्य वंशवाले, सन् ९७३ तक राष्ट्रकूटा वंशवाले सन् १२१० तक पश्चिमी चालुक्य और उनके अधीनके शोलापुरके शिलहरा और लगभग सन् १३००तक देवगिरिके यादव वंशवाले राजा सतारा जिलेपर अधिकार रखते थे। सन् १३१८ में यादव वंशके राजाके राज्यका विनाश होनेपर मुसलमानोंने और सन् १३४५ में बहमनी खानदानके बादशाहने सतारापर अधिकार किया। १५ वीं सदीके अन्तमें बहमनी खानदानके अन्त होने पर सताराके कई राजा बने; किन्तु, पीछे सतारा जिला बीजापुरके अधीन हुआ। उसके पश्चात् पासके पूना और शोलापुर जिलेके साथ सतारा जिला महाराष्ट्रोंके राज्यका केंद्र बना। सन् १६७३ में शिवाजीने सताराका किला ले लिया। सन् १६९८ में सतारा महाराष्ट्रोंके राज्यका सदर स्थान बना। दूसरे वर्ष औरंगजेबने सतारामें जाकर महाराष्ट्रोंको परास्त किया। अठारहवीं सदीके आरम्भसे लगभग सन् १७५० तक मुगल बादशाहोंके निर्वल होनेके समयमें महाराष्ट्रोंके अधिकारका

मार्ग खुला । सन् १७०५ में महाराष्ट्रोंने आनाजी पन्तकी चातुर्य्यतासे फिर मुसलमानोंसे किला छीन लिया । लगभग सन् १७१८ में बालाजी पेशवाका प्रताप चमका । सन् १७४९ में ब्राह्मण पेशवाने सताराके राजपूत राजाओंका राज्य ले लिया । पेशवाका सदर स्थान पूनामें हुआ । शिवाजीके वंशके सताराके राजा पेंशन पाने लगे ।

सन् १८१८ में जब पूनाके दूसरे बाजीराव पेशवा परास्त हुए, तब अङ्गरेजी सरकारने शिवाजीके वंशधर दूसरे शाहूजीके पुत्र प्रतापसिंहको, जिसको पेशवाने राजकैदी-के समान पिंशन देकर रक्खा था, आसपासके देशके साथ सतारा देदिया और पेशवाके बाकी राज्यको अपने राज्यमें मिला लिया । सन् १८३९ में जब राजा प्रतापसिंहने बगावत-की इच्छा की, तब अङ्गरेजोंने उनको राजकैदी बना कर बनारस में भेजदिया और उनके भाई शाहूजीको, जिनको आपासाहब भी कहते हैं, सताराकी गद्दी पर बैठाया । सन् १८४८ में आपासाहब निष्पुत्र मरगये, तब अङ्गरेज महाराजने उनका राज्य अपने राज्यमें मिला लिया और उनकी ३ रानियोंको उचित पेंशिनका प्रबंध कर दिया । वे सताराके महलमें रहती थीं । सन् १८७४ तक तीनोंका देहांत होगया ।

वाई ।

सताराेडके रेलवे स्टेशनसे ९ मील उत्तर और पूनाके रेलवे स्टेशनसे ६९ मील दक्षिण बाथरका रेलवे स्टेशन है । बाथरसे पश्चिम ओर ४० मीलकी सडक महाबलेश्वरको गई है; उसी सडक पर बाथरसे १८ मील पश्चिम ओर सतारा कसबेसे २० मील उत्तर कुछ पश्चिम बम्बई हातेके सतारा जिलेमें कृष्णा नदीके बांयें किनारे पर सबडिवीजनका सदर स्थान वाई एक कसबा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वाई कसबेमें १२४३८ मनुष्य थे, अर्थात् ११४०१ हिन्दू, ९९८ मुसलमान, २१ जैन, १६ कृस्तान, और २ यहूदी ।

वाई कसबा कृष्णानदीके किनारोंके अतिपवित्र स्थानोंमेंसे एक है । उसमे लगभग २० मन्दिर है, जिनमें माधवजी, लक्ष्मीजी, गणेशजी और महादेवजीके मंदिर प्रधान हैं । कसबे-मे ब्राह्मण बहुत बसते हैं । नदीके तीरपर $\frac{1}{2}$ मील तक सीढ़ियाँ बनी हुई है । दिनभर वहाँके लोग घाटों पर स्नान करने तथा अपने वस्त्र धोनेके काममे लगे हुए देखनेमें आते हैं, क्योंकि उस देशके प्रायः सब हिंदू लोग अपने वस्त्र आप धोते हैं । वाईमें सबजजकी कचहरी, अस्पताल और बङ्गला है । वहाँ बड़ी तिजारत होती है । वहाँ ब्राह्मणोका एक कालिज है, जो एक समय बहुत प्रसिद्ध था ।

वाईके निकट एक पहाड़ीपर पांडुगढ़ नामक किला है । बस्तीसे थोड़ीही दूरपर मुसल-मानी ढाचेका सुन्दर नमूना रास्तिया खान्दानके राजाका मकान है, जिसको लोग मोतीबाग कहते हैं । वाईसे लगभग ५ मील पश्चिम ओर कृष्णानदीके पास डोमगांवमें एक बहुत सुन्दर मंदिर है । उसके आंगनमे श्वेत संगमर्मरका फर्श लगा है । वहाँ ५ फीट ऊंचे मार्बुलके स्तंभ पर पंचमुखी महादेवकी प्रतिमा और अनेक सर्पोंके आकार बने हुए हैं । वाईसे लग-भग ८ मील दूर एक पहाडीके पादमूलके पास $\frac{3}{4}$ एकड भूमि पर छाया करता हुआ पुराना वटवृक्ष है ।

महाबलेश्वर।

सताराराेडके रेलवे स्टेशनसे ९ मील उत्तर और पूनाके रेलवे स्टेशनसे ६९ मील दक्षिण वाथरका रेलवे स्टेशन है, जहांसे पश्चिम ४० मीलकी सडक महाबलेश्वरको गई है। वाथरसे १८ मील पश्चिम वाई कसबेके पास तक समतल सड़क है। और वाईसे पश्चिम चढ़ाईकी राह है। वाथरसे २९ मील पर पंचगनीगांवके पास अङ्गरेजोंके बहुतसे बङ्गले; उससे आगे ½ मील तक उतराईकी सड़क; वाथरसे ३९ मील सताराके राजाकी बनवाई हुई लगभग ८०० गज लंबी और २०० गज चौड़ी एक झील और ४० मील पर महाबलेश्वर है। महाबलेश्वर जानेका दूसरा मार्ग पूना शहरसे है। पूनासे ७४ मीलकी अच्छी सडक गई है। पसरनीघाट तक घोड़ा गाड़ी जासकती है; किन्तु घोड़ोंकी सहायता देनेके लिये दस बारह कुलियोंकी साथ रहनेकी जरूरत रहती है।

बम्बई हातेके सतारा जिलेमें (१७ अंश, ५८ कला, ५ विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, ४३ कला, ३५ विकला पूर्व देशांतरसे) पश्चिमीघाटके महाबलेश्वर नामक सिलसिलेके ऊपर, जिसकी साधारण उंचाई समुद्रके जलसे लगभग ४५०० फीट है, बम्बई हातेका प्रधान स्वास्थ्यकर स्थान महाबलेश्वर है।

महाबलेश्वर पहाड़ीके ऊपर लगभग ७ मील लम्बी और ३ मील चौडी प्रायः समतल जगह है। उस मैदानसे पश्चिम पहाड़ियाँ हैं, जो समुद्रसे २५ मील पूर्व चली आई हैं। महाबलेश्वरमें गाडी दौड़ने योग्य अच्छी सड़कें बनी हैं। मामूली सरकारी इमारतें तथा जगह जगह यूरोपियन लोगोंके रहनेके लिये लगभग १०० बँगले बने हुए है। वहाँ एक अमीर आदमीके रहने योग्य कमरोंके मासिक भाड़े ४० रुपये लगते हैं। स्टेशनके मध्यमें बाजार है, जिसमें विविध प्रकारकी वस्तु, जो वहाँ लाई जासकती हैं, मिलती हैं। महाबलेश्वरगांवसे ३ मील दक्षिण यूरोपियन लोगोंकी बस्तीमें एक अच्छी लायब्रेरी, क्लब, गिरजा और कबरगाह है।

गर्मीके दिनोंमें महाबलेश्वरमे बम्बईके गवर्नर, बम्बईकी फौजके कमाण्डर इनचीफ और बम्बई आदि शहरोके अनेक अन्य प्रधान अफसर तथा अमीर लोग आकर रहते हैं।

महाबलेश्वरकी मनुष्य-संख्या समयके अनुसार बढ़ती घटती है। सन् १८८१ की फरवरीकी मनुष्य-गणनाके समय मलकोलमपेट नामक गाँवके सहित महाबलेश्वरके ६५ टोलों अर्थात् झुण्डोंमें ३२४८ मनुष्य थे।

वहाँ सालाना औसतमें लगभग २६४ इंच वर्षा होती है। वर्षाकालमें महाबलेश्वरका दृश्य अति मनोरम होजाता है; क्योंकि उस समय सम्पूर्ण नदियों और झरनोकी धारा गिरती हैं।

कृष्णानदीके निकसनेका स्थान–महाबलेश्वर गाँवके समीप जहाँसे कृष्णानदी निकली है, एक खड़ी पहाड़ीके पादमूलके निकट मन्दिरके भीतर एक कुण्ड बना हुआ है, जिसमे गोमुखी होकर पानीकी धारा गिरती है। महाबलेश्वर गाँवमें महाबलेश्वर शिवका पुराना मन्दिर तथा ग्वाली राजाका बनवाया हुआ काले पत्थरका एक बहुत पुराना मन्दिर और उसीका बनवाया हुआ गोटेश्वरका मन्दिर है। वहाँके सब मन्दिरोंमे महाबलेश्वर शिवका मन्दिर प्रधान है। कृष्णाके निकासका स्थान होनेके कारण महाबलेश्वर पवित्र स्थान समझा

जाता है, वहाँ बहुतसे यात्री जाते हैं। वह नदी उस स्थानसे निकल कर बम्बई हाते, हैदराबादके राज्य और मदरास हातेमें दक्षिण-पूर्व और पूर्वको बहती हुई लगभग ८०० मील बहनेके उपरान्त मछली बन्दरके नीचे समुद्रमें गिरती है। मालपर्व, गतपर्व, भीमा, तुङ्गभद्रा आदि नदियाँ उसमें मिली हैं। वाई, सतारा, सङ्गली, वेजवाड़ा, मछली बन्दर आदि कसबे उसके किनारो पर बसे हैं।

प्रतापगढका किला—महाबलेश्वरसे ६ मील दूर पहाडीके बगलके नीचे तक गाडी जाने लायक सडक है। वहाँसे किलेके फाटक तक कड़ी चढ़ाईका मार्ग है। खड़ी पहाड़ीके ऊपर प्रतापगढ़का सुन्दर पहाड़ी किला है, जिसको शिवाजीके किला होनेके कारण बहुत लोग जानते हैं। शिवाजीने उसके आस पासके देशको जीत करके उस किलेको बनवाया और उसी किलेके पास सन् १६५९ में बीजापुरके सेनापति अफजलखाँको मार डाला था। (पूनाके इतिहासमें देखिये)।

महाबलेश्वरका इतिहास—सन् १८२८ में बम्बईके गवर्नर सर जान मलकोलमने सताराके राजासे महाबलेश्वरको लेकर वहाँ अपना ग्रीष्म भवन बनाया और राजाको उसके बदलेमें कोई दूसरी जगह दे दी, तभीसे वह स्थान प्रसिद्ध हुआ। महाबलेश्वरके पास उसके नामसे मलकोलमपेट नामक गाँव बसा है।

बीसवाँ अध्याय।

(बम्बई हातेमें) पूना, भीमशंकर, कारलीके गुफामन्दिर और अमरनाथ।

पूना।

सताारोडके रेलवे स्टेशनसे ७८ मील उत्तर, धोंद जंक्शनसे ४८ मील पश्चिमोत्तर और बम्बई शहरसे ११९ मील दक्षिण-पूर्व पूनामें रेलवेका जंक्शन है। मैं दक्षिणसे आकर रेलवेके पासकी धर्मशालामें टिका। बम्बई हातेके मध्य विभागमें (१८ अंश, ३० कला, ४१ विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, ५५ कला, २१ विकला पूर्व देशान्तरमें) सीधी लकीरसे समुद्रके किनारेसे लगभग ६५ मील पूर्व, समुद्रके जलसे १८५० फीट ऊपर बम्बई हातेकी सेनाका सदर मुकाम और पूना जिलेका सदर स्थान पूना एक सुन्दर शहर है। वहाँ जुलाईसे नवम्बर तक बम्बईके गवर्नर रहते है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके साथ पूना शहरमे १६१३९० मनुष्य थे, अर्थात् ८७०९७ पुरुष और ७४२९३ स्त्रियाँ इनमे १२८३३३ हिन्दू, १९९९० मुसलमान, ८१८५ कृस्तान, २३०४ जैन, १६९५ पारसी, ७८७ यहूदी और ९६ अन्य थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें १६ वाँ और बम्बई हातेमें दूसरा शहर है। पूना शहरकी मनुष्य-संख्या बढ़ रही है। सन् १८५१ में फौजी छावनी छोड़ करके उसमें केवल ७३२०९ मनुष्य और सन् १८८१ में ९९६२२ मनुष्य थे।

शहर पूर्वसे पश्चिम तक २ मील लम्बा और उत्तरसे दक्षिणको १¼ मील चौडा, २¾ वर्गमीलमें फैला है। दक्षिणसे मोटा नदी और पश्चिमोत्तरसे मूला नदी आकर शहरके उत्तर

शहर तथा छावनीके बीचमें मिल गई है। सङ्गमके पास कई एक देवमन्दिर और मोटा नदी-पर ४८२ फीट लम्बा और २८ फीट चौड़ा वेलेस्लीब्रिज नामक पत्थरका पुल है, जो सन् १८७५ में १११००० रुपयेके खर्चसे तैयार हुआ था। सङ्गमसे थोड़ीही दूर पर मोटा नदीके दहिने किनारेपर मैदानमें शहर बसा है। शहर और छावनीके बीचमें सरकारी आफिसोंके पास रेलवे स्टेशन है। शहरके दक्षिण पार्वती पहाड़ी और चन्द मील पूर्व तथा पूर्वोत्तर अनेक पहाड़ियाँ हैं, जो सतारेकी ओर गई हैं। शहरसे दक्षिण एक झील है। एक नहर शहर होकर निकली है, जिसको एक महाराष्ट्र सरदारने बनवाया था। वह लगभग २००००० रुपयेके खर्चसे सुधारी गई है, जिसमें १७५००० रुपये बम्बईके पारसी सर जमसिद जीजी भाईने दिया था।

शहरकी प्रधान सड़कें, जो चौड़ी हैं, उत्तरसे दक्षिणको और तङ्ग सड़के पूर्वसे पश्चिमको गई हैं। शहरके अधिक मकान दो मञ्जिले तथा तीन मञ्जिले हैं। बहुतेरे मकान खपड़ेपोश हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय १२२७१ मकानोंमेंसे ७१६ मकान औवल दरजेके थे। कई जगह सड़कके पास पानीकी नलमें लोहेकी पुतली बनी हैं; जलकल-का पानी उसके शिरसे निकल कर छत्राकार वर्षता है। और किसी किसीमें फव्वारेके समान पानी निकलता है।

पूना शहर १८ महल्लोंमें विभक्त है। पेशवाओंके राज्यके समय वह सातों दिनोंके नामसे सात महल्लोमें बंटा था। जिस दिनके नामसे जो महल्ला है उसी दिनको उस महल्लेमें बाजार लगता है, जैसे कि बुधवारीपेठ अर्थात् बुधवारी महल्लेमें बुधके दिन बुधवारी नामक बाजार होता है। शनिवारी महल्लेमें पेशवाके महलका खण्डहर विद्यमान है, जिसको वहाँके लोग जूनाबाड़ा अथवा पुराना महल कहते हैं। उसको अंतिम पेशवा बाजीरावके दादाने बनवाया था, वह बड़ी भारी इमारत थी, जो सन् १८२७ में जला दी गई; अब लगभग १७५ गज लम्बा और इतनाही चौड़ा केवल एक घेरा है।

बुधवारी महल्लेमें महाराष्ट्रोंके चन्द पुराने महल तथा नाना फरनवीसकी हवेली है, जिसमें छोटा आंगन, एक हौज और बहुतसी छोटी कोठरियाँ बनी हुई हैं। उस महल्लेमें एक बहुत सुन्दर अठपहला बाजार है। उसके मध्यमें एक अठपहला मकान, जिसकी आठों दिशा-ओंमें आठों पहलोंसे बाहरको निकले हुए ८ चौकोने खुले हुए मकान हैं, जिनमें एक ओरसे अर्थात् लम्बाईमें छः छः और चौड़ाईमें चार चार लकड़ीके खम्भे लगे हैं। आठोंके बाहरके छोर पर दीवार और भीतरके छोर पर अन्तर देकरके केवल ४ पहलोंमें दीवार हैं। वह बाजार सुन्दर अङ्गरेजी खपड़ोंसे छाया हुआ है। उसके भीतर ऊँचे चबूतरों पर, जो तरह दार बने हुए हैं, भांति भांतिके मेवे, फल, तरकारियाँ और अनेक प्रकारकी अन्य वस्तुयें बिकती हैं। चबूतरोंके नीचे सड़क बनी है।

बाजारसे थोड़ीही दूरपर तुलसीबाग नामक स्थानमें राम, लक्ष्मण तथा जानकीजीका सुन्दर शिखरदार मन्दिर और बुधवारी महल्लेके पास बेलबाग नामक स्थानमें लक्ष्मीनाराय-णका मंदिर है। मंदिरके पासके कूपमें रहट लगा है।

वेलेस्ली पुलके पार होनेपर बांई ओर पुराना इंजिनियरिंग कालिज मिलता है, जिसके पूर्व जिलेकी कचहरियां फैली हैं। पुलके पूर्व बगलसे एक रास्ता एक उत्तम बागको गया है,

जिसमे कई एक सुंदर शिवमंदिर बने हुए हैं। इंजिनियरिंग कालिजसे ३०० गज दूर "सर एलवर्ट मैसून हौस" नामक एक उत्तम इमारत है। उस जगहको लोग गार्डनरीच भी कहते है। वहाँ सुन्दर वाग नदीके किनारेपर फैला है। वागमें सर एलवर्ट मैसून हौस है, जिसके कमरोमे मार्बुलके टुकडोके फर्श हैं। वागमें एक सुदर हौज तथा पानीका टावर बना है। मूलानदीके पास ६ एकड़ भूमि पर एक मनोरम वाग है। शहरके बाहरकी सीमाके पास एक वडा जैन मंदिर है। किर्की कसवेकी ओर २४६००० रुपयेके खर्चसे डेकान कॉलिज बना हुआ है, जिसका आधा खर्च सर जमसिदजी जीजीभाईने दिया था। कालिजके मध्यका ब्लक दो बाजुओंके साथ दो मजिला है। उसकी लोहेकी छत रंगी हुई है। प्रधान ब्लकके पश्चिमोत्तरके कोणके पास १०६ फीट ऊंचा टावर है। ७० फीट लंबा कालिजका हल है। प्रधान इमारतमे क्लासोके कमरे है और बाजुओके कमरोंमे विद्यार्थी रहते हैं।

शहरके उत्तर फौजी छावनी है, जिसकी सीमाके भीतर सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ३०१२९ मनुष्य थे। छावनीमे यूरोपियन और देशी घोड़सवार तथा पैदल सेना रहती है। सीमाके भीतर मोटा और मूला नदीके किनारोंके पास तथा किर्कीकी छावनीको जाने वाली सडकके बगलमें दो मील तक यूरोपियन लोगोकी बहुतसी कोठियां बनी हुई है। पूना शहरसे ३½ मील दूर किर्कीके रेलवे स्टेशनसे १½ मील पर गवर्नमेन्ट हौस है।

पूनामे एक हाईस्कूल, दो कालिज और कई एक छोटे स्कूल और देशी लड़कियों तथा यूरोपियन और यूरेशियन लड़कियोंके अलग अलग कई स्कूल हैं। इनके अलावे एक यतीमखाना, उत्तम चित्रशाला, एक खेती विद्याका कालिज, खेतीकी फसिलोंकी परीक्षाके लिये गवर्नमेंट वाग, तीन अङ्गरेजी कबरगाह, अनेक अस्पताल, कई एक मिशन, बहुतेरे गिरजा, एक कागज बनानेकी मिल, दूसरे कई एक कल कारखाने और एक पिंजरापोल है, जिसमें असमर्थ तथा दुःखी पशु पाले जाते है। शहरकी सडको पर रात्रिमें लालटेनोंकी रोशनी होती है। जलकल सर्वत्र लगी है।

पूनामें सुप्रसिद्ध पण्डिता रमाबाईकी "शारदा सदन" नामक प्रसिद्ध पाठशाला है, जिसमें स्त्रियां पढ़ाई जाती हैं। रमाबाई पूनाके महाराष्ट्र ब्राह्मणकी पुत्री है। उसने सस्कृत, महाराष्ट्री, अङ्गरेजी तथा डाक्टरी विद्या अच्छी तरहसे पढ़ी है। इंगलेंड, अमेरिका आदि देशोमे पर्यटन करके क्रस्तान होकर वह अब पूना में रहती है।

यद्यपि पूनेकी सौदागरी और दस्तकारी पेशवाओके राज्यके समयके समान अब नहीं है, तथापि वहां अब तक कपडे, रेशमी वस्त्र, पीतल, तांबे, लोहे तथा मिट्टीके वर्त्तन इत्यादि वस्तु बहुत बनती है। वहाँके कारीगर सोने चांदीके भूषण, हाथी दांतकी कंघी इत्यादि चीजें बनानेमे बहुत प्रसिद्ध हैं। वे लोग मोरपंख लगा करके खसके सुन्दर पंखे तथा दौरी बनाते है। वहाँ मिट्टीकी प्रतिमा अत्युत्तम तैयार होती हैं। पूना शहरका जल वायु स्वास्थ्यकर है। वहाँ औसतमे सालाना वर्षा लगभग २९ इञ्च होती है।

गणेशचौथ का उत्सव-जैसे बङ्गाल देशमें दुर्गा पूजा, राजपूतानेमे दीवाली और पश्चिमी हिंदुस्तानमें होलीकी धूमधाम होती है, वैसेही बम्बई हातेमें गणेशचौथके महोत्सवका समारोह दिखाई देताहै। जैसे बङ्गालमें दुर्गाकी प्रतिमा बनाकर लोग पूजते हैं और अत समयमें उसको जलमे विसर्जन कर देते हैं, वैसेही बम्बई हातेके लोग गणेशकी प्रतिमाको

बनवाते और जलमें विसर्जन करते हैं। गणेशचौथका उत्सव भादों सुदी चौथसे चौदस तक १० दिन पर्यन्त होता है।

बम्बई हातेके अन्य नगरोंके समान गणेशचौथका उत्सव पूनेमें सैकड़ों जगह होता है। कुंभार द्वारा मिट्टीकी गणेशकी सुन्दर प्रतिमा बनाई जाती हैं। भादों सुदी ४ के दिन, जिस तिथिमें गणेशजीका जन्म है; बड़ी धूमधामसे गणपतिजीकी प्रतिमाकी सुन्दर सिंहासनपर प्रतिष्ठा होती है और बड़े समारोहसे गणेशजीकी सवारी निकलती है। लोग डण्डोंके तालपर मधुर स्वरसे भजन गाते हैं। बहुतेरे लोग उन्मत्त होकर नाचते हैं। नाचने वालोंमें कोई स्त्री, कोई शराबी तथा कोई मल्लाह बनता है और सब मिल जुलकर नाचने लगते है। नित्य गणेशजीकी प्रतिमाकी पूजा होती है। उसको नैवेद्य चढ़ाया जाता है। भादों सुदी १० के दिन सब मूर्त्तियाँ समुद्र, नदी अथवा सरोवरमें विसर्जन करदी जाती हैं। उस दिन प्रतिमाओंको लेजाने वाले दलोंकी बड़ी भीड़ होती है। लोग नाच गान करते हुए विविध सवारियोंपर प्रतिमाओंको जलके किनारेपर ले जाते है।

गणेशपुराण–(उपासना खण्ड, ५० वॉ अध्याय) मनुष्योंको उचित है कि भादों मासकी दोनों चौथको बड़ा उत्सव करैं; बाजा बजाते हुए तथा गान करते हुए रात्रिमें जागरण करें, प्रभात होनेपर गणेशजीकी प्रतिमाकी पूजा करके होम करें, दूसरे दिन प्रतिमाको पालकीमें रखकर लेचलें; आगे आगे किशोर अवस्थाके बालक डण्डोंसे युद्ध करते हुए चलें; प्रतिमाको लेजाकर जलमें विसर्जन करें और बाजे गाजेसे युक्त अपने गृह लौट आवें।

(८७ वॉ अध्याय)–भादों मासकी दोनों चौथमे गणेशजीकी प्रतिमा बनाकर गाने बजाने आदि उत्सवोंके साथ सुन्दर विधानसे उस प्रतिमाकी पूजा करके रात्रिमें जागरण करना चाहिये। उत्सव करनेवालोंको उचित है कि धातुकी प्रतिमा होवे तो ब्राह्मणोंको देवें; किन्तु दूसरी वस्तुकी प्रतिमाको परम उत्साहसे पालकीमें रखकर जलके किनारे ले जावें। पालकीके साथ छत्र, ध्वजा, पताका तथा गान करते हुए और डण्डे बजाते हुए बालकोंका दल जाना चाहिये। इस भॉति प्रतिमाको ले जाकर जलमें पधरा देना उचित है।

(उत्तर खण्ड, ८१ वाँ और ८२ वॉ अध्याय) श्रीपार्वतीजीने भादों सुदी चौथके दिन गणेशजीकी पार्थिव प्रतिमा बनाकर पूजन किया। उस समय गणेशजीके प्रसन्न होनेपर वह प्रतिमा चैतन्य होकर बालरूप होगई। पार्वतीजी उस बालकको स्तन पिलाने लगीं। भादों सुदी चौथ सोमवारको गणेशजीका जन्म हुआ था; तभीसे चौथ तिथि वरदाता कहाती है। मनुष्योंको उचित है कि उस तिथिमें गणेशजीका उत्सव करें; उनकी मृत्तिकाकी प्रतिमा बनाकर यथा विधिसे पूजन करें और मण्डप बनाकर व्रत तथा रात्रिमें जागरण करें। जो मनुष्य उस तिथिमें मृण्मय गणेशकी पूजा नहीं करता, वह नाना प्रकारके रोगोंसे पीड़ित होता है।

किर्की–पूनाके रेलवे स्टेशनसे ३ मील पश्चिमोत्तर किर्कीका रेलवे स्टेशन है। बम्बईकी आरटिलरीका सदर मुकाम किर्की फौजी छावनी है। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय किर्कीमें १०९५१ मनुष्य थे, अर्थात् ७७०६ हिन्दू, १५३४ क्रस्तान, १४६० मुसलमान, १२५ जैन, ७४ पारसी, ४७ यहूदी और ५ अन्य। किर्कीके बारकोंके ½ मील पूर्वोत्तर

लड़ाईके सामान रखनेकी कोठी और उत्तर ओर बारूदका कारखाना है। किर्कीके रेलवे स्टेशनसे १½ मील दूर गणेशखण्डके पास गवर्नमेंट हौस है। उसमें ८० फीट ऊँचा एक बुर्ज है, जिसपर चढ़नेसे मनोरम दृश्य देखनेमे आता है। गवर्नमेंट हौसमे दरबार कमरा, मेहमानोके रहनेका कमरा, नाचका कमरा इत्यादि सुन्दर इमारतें-बनी हुई है और ९० फीट लम्बी फूलोके गमलोंकी गेलरी है।

पार्वतीका मन्दिर—पूना शहरसे दक्षिण-पश्चिम रेलवे स्टेशनसे लगभग ४ मील दूर पार्वती नामक पहाडीपर पार्वतीजीका विशाल मन्दिर बना हुआ है। सिंहगढ़ जानेवाली सड़क पूनासे पार्वती पहाडीके उत्तर होकर गई है, जिसके पास हीरा बागमे एक झील, मसजिद, मन्दिर और पेशवाओका बिला अर्थात बाहरका बैठक है।

पहाडीके नीचेसे पार्वतीके मन्दिरके पास तक सीढियाँ बनी हुई हैं। पूनेके बालाजी बाजीराव पेशवाने सन् १७४९ मे मन्दिरको बनवाया था। मन्दिरके बनानेमें लगभग १०००००० रुपये खर्च पडे थे, किन्तु बहुत लोग उसको सताराके राजाका मन्दिर कहते है। मन्दिरके पहिले चौगानमें कोनेके पास विष्णु, सूर्य, दुर्गा और स्कन्दके छोटे छोटे मन्दिर और मध्यमे पार्वतीजीके खास मन्दिरमे, जो बृहत् है, पार्वतीजी, महादेवजी तथा गणेशजी है। उस पहाडीके ऊपर इनके अलावे अन्य कई मन्दिर तथा स्थान है। वहाँ सावन मासमें बडा मेला होता है। दिवारीके दिन उत्तम रीतिसे मन्दिरमे रोशनी की जाती है।

मन्दिरके घेरेकी दीवारके ऊपर चढनेसे नीचे पूर्व ओर पार्वती तालाब, तालाबके दक्षिण पार्वती गाँव, हीराबाग और संटमेरीका चर्च और दक्षिण-पश्चिम पेशवाओंके एक महलका खण्डहर देखनेमे आता है।

सिंहगढका किला—पूना शहरसे १५ मील दक्षिण-पश्चिम सह्याद्रि पर्वतके बडे सिलसिलेके पूर्व बगलकी पहाडीपर समुद्रके जलसे ४१६२ फीट ऊपर सिंहगढका पुराना किला है। पूनासे सिंहगढ पहाडीकी नेवके पास तक १४ मील तक गाड़ी जाती है। वहाँसे टट्टू या झंपान पर जाना होता है। पूनासे १० मील आगे उस मार्गमें ६ वर्गमीलके क्षेत्रफलमे एक बडी झील, जो पत्थर बाँध बाँध करके बनाई गई थी, मिलती है। उस झीलसे किर्की तथा पूना शहर और २ नहरोमे पानी जाता है। पहाड़ीके ऊपर पुरानी दीवारके भीतर लगभग ४० एकड भूमिपर नादुरुस्त शकलमे सिंहगढका किला है। ३ फाटक होकर किलेके भीतर जाना होता है। फाटकसे थोड़ीही दूर शिवाजीके समयका अस्तबल है, जो उसी जगहके चट्टानमें उसके भीतरसे पत्थर निकाल कर बनाया गया था। फाटकसे ¼ मील पूर्व रामराजाका मन्दिर है, जिसके पास पत्थर निकालकर बनाया हुआ एक सरोवर और इसी भाँति बने हुए कई एक कूप है। उस पहाडीके ऊपर यूरोपियन लोगोंके गर्मीके दिनोंमे रहनेके लिये कई एक बँगले बने हुए हैं।

पूनासे सीधी लाइन द्वारा १७ मील और जाने आनेके मार्गसे २४ मील दक्षिण-पूर्व पहाड़ीके बगल पर पुरंधरके २ किले हैं, एक नीचे और दूसरा ऊपर।

खण्डोबाका मन्दिर—पूनाके रेलवे स्टेशनसे ३२ मील दक्षिण-पूर्व जेजुरीका रेलवे स्टेशन है। जेजुरीमें खण्डोबाका, जो एक राजा था और शिवका अवतार समझा गया, प्रसिद्ध

मन्दिर है । उस देशके लोगोंमेंसे अनेक लोग, जिनके सन्तान नहीं होतीं, मानता करते हैं कि हमारे सन्तान होगी तो पहिली संतान हम खण्डोबाको देंगे । उस आदमीका जो प्रथम पुत्र होता है वह उस मन्दिरके पास रहा करता है और खण्डोबाका कुत्ता समझा जाता है। अगर पहिले पुत्र नहीं हुआ, पुत्री हुई तब उसका पिता उस पुत्रीका व्याह विधानके साथ खण्डोबासे कर देता है; वह पुत्री मुरली कहलाती है ।

पूना जिला—इसके उत्तर अहमदनगर जिला; पूर्व अहमदनगर और शोलापुर जिला, दक्षिण नीरानदी, बाद सतारा जिला और फलतानाकी मिलकियत और पश्चिम कुलाबा और थाना जिला है । जिलेका सदर स्थान पूना शहर है । जिलेकी भूमि ऊँची नीची है। पश्चिमकी सीमाके पास सह्याद्रिकी प्रायः अगम चोटियाँ हैं । भीमानदी उस जिलेमें पश्चिमोत्तरसे दक्षिण-पूर्वको बहती है । सह्याद्रिके सिलसिलेसे बहुत धारायें निकलकर भीमानदीमें गिरती है । उस जिलेमें खानिक पैदावार बहुत नहीं हैं; किन्तु सड़क और मकान बनानेके योग्य पत्थर निकाले जाते है । पश्चिमके भागमें बाघ, तेंदुए, सांभर और भालू कभी कभी मिलते है ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय पूना जिलेके ५३४८ वर्गमील क्षेत्रफलमें ९००६२१ मनुष्य थे; अर्थात् ८३४८४३ हिन्दू, ४२०३६ मुसलमान, १०८८० जैन, ९५०३ क्रस्तान, १५७४ पारसी, १०५८ पहाडी और जङ्गली जातियाँ, ६१९ यहूदी, ७८ बौद्ध और ३० सिक्ख । हिन्दुओंमें ३९६५८६ कुन्बी, ८८०१९ मांग और महारा, ५२५४३ माली, ४९०६० ब्राह्मण, ४२८२९ कोली, १५७९० चमार, ९५३५ सुतार (बढ़ई) और बाकीमें लिङ्गायत, दरजी इत्यादि जातियोंके लोग थे; राजपूत केवल ३३६४ थे । पूना जिलेमें महाराष्ट्री भाषा प्रचलित है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पूना जिलेके कसबे पूनेमें १६१३९०, जुनीरमें ११९०५ और किर्कीमें १०९५१ मनुष्य थे ।

इतिहास—पूना, सतारा और शोलापुर इन तीनों जिलोंका प्राचीन इतिहास एकही है । ऐसा प्रसिद्ध है कि सन् ईस्वीके आरम्भमें राजा शालिवाहनने, जिसकी राजधानी गोदावरीके किनारे पर पैठन थी, महाराष्ट्रदेशमें हुकूमत किया । उसके पश्चात् चालुक्य वंशके बलवान राजपूत राजाओंने महाराष्ट्र देशके एक बड़े भागको तथा कर्नाटकको अपने अधिकारमें करलिया । उनकी राजधानी कल्यानी कसबा था । उस राज्यको नियत करनेवाले जयसिंहने पल्लववंशके राजपूत राजाको जीता था । १० वीं सदीमें चालुक्य वंशका एक राजा बड़ा प्रतापी हुआ । १२ वीं सदीके अंतमे देवगिरिके यादव वंशके राजाने चालुक्य वंश वालोंको परास्त करके उस देशपर अपना अधिकार किया । बारहवीं सदीके अन्तमें एक राजा, जिसका राज्य उत्तर ओर नीरानदी तक था, कोल्हापुरके निकट पुनलामें रहता था । उसको देवगिरिके राजा सिंहनने परास्त किया ।

मुसलमानोंके आक्रमणोंसे सन् १३१२ ई० तक देवगिरिके यादव वंशके राज्यका अन्त होगया । सन् १३४५ में दक्षिणके मुसलमान सरदारोंने दिल्लीके बादशाह मुहम्मद तोगलकसे बागी होकर बहमनी वंशके बादशाहको अपना शासक बनाया । उसकी राजधानी गुलबर्गा थी । सन् १४२६ में बहमनी खांदानके बादशाह अहमदशाहने गुलबर्गाको छोड़

मोडी बर्णमाला

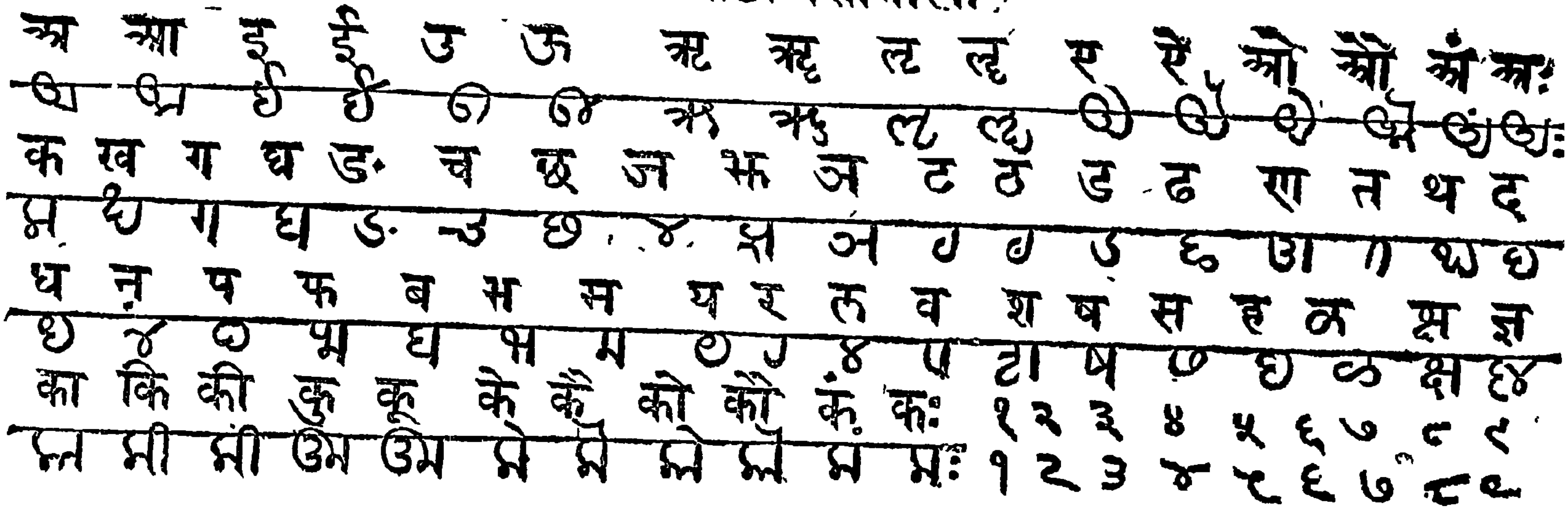

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः
क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द
ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह ळ क्ष ज्ञ
का कि की कु कू के कै को कौ कं कः १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

कर बीदरको राजधानी बनाया। सन् १४७२ में बहमनी खांदानके पिछले स्वाधीन बादशाहने पश्चिमी घाटके पासके छोटे किलोंको तथा खेलनाको जीता। उसके पीछे उसने बहमनी राज्यका नया विभाग किया, जिसके अनुसार जुनीर एक सूबाका सदर स्थान बना, जिसके अधीन वाई, वेलगांव इत्यादि तथा कोकनका एक भाग था। भीमानदीके पासका अन्य देश बाजीपुरके अधीन हुआ। शोलापुर, गुलबर्गा और पुरंधर एक अलग देश बना। बीजापुरका राज्य कायम करनेवाला यूसफ आदिलशाह बीजापुरका गवर्नर बनाया गया। अहमदनगरका राजवंश कायम करनेवाला अहमदशाह जुनीर भेजा गया। दस्तुर दीनार नामक एक अबिसिनियन गुलबर्गाका हाकिम बनाया गया। जीनखां तथा ख्वाजाजहां नामक दो भाइयोंके अधिकारमें पुरंधर, शोलापुर और अन्य ११ जिले हुए। सन् १४८९ में अहमदशाह स्वाधीन बन गया। लगभग उसी समय बीजापुरका यूसफ आदिलशाह भी स्वाधीन बनकर भीमानदीके पास तकके देशका मालिक बना। सन् १४९१ में दक्षिणके नये राजाओंने एक प्रकारकी संधि की, जिसके अनुसार नीरानदीके उत्तर और करमारानदीके पूर्वके देश वर्त्तमान शोलापुर जिलेके एक भागके साथ अहमदनगरके निजामशाही बादशाहको और भीमा तथा नीरा नदीके दक्षिणका देश बीजापुरके बादशाहको मिला। गुलबर्गाका दस्तुरदीनार कई लड़ाइयोंके पश्चात् सन् १५०४ में मारागया और गुलबर्गाका राज्य बीजापुरके राज्यमें मिलगया। सन् १५११ में बीजापुरके राज्यमें शोलापुर मिला लिया गया। पुरंधर और उसके पासका देश बहुत वर्षोंतक अहमदनगरके अधीन ख्वाजाजहांके अधिकारमें था।

बीजापुर और अहमदनगरके बादशाह आपसमें लड़ते रहे; किन्तु उन्होंने विजयानगरके हिंदू राजा राजारामसे डरकर परस्पर मेल किया और सन् १५६५ की जनवरीमें तालीकोटमें राजारामको परास्त करके उनका राज्य लेलिया।

सन् १५९२ के पीछे दिल्लीके मुगल बादशाहोंने दक्षिण देश पर आक्रमण आरंभ किया। सन् १६०० में अकबरने अहमदनगरको परास्त किया। वह देश थोडे दिनोंतक मुगलोंके अधीन रहा।

सन् १६०४ में अहमदनगरके बादशाहने शिवाजीके दादा मालोजीको पूना देदिया। सन् १६१६ में दिल्लीके शाहजहांने अहमदनगर राज्यके बड़े भागको जीता; किंतु सन् १६२९ में वह राज्य अहमदनगरको लौटा दिया गया। सन् १६३३ में मुगलोंने दौलताबादको लेलिया और वहांके बादशाहको कैद किया, परंतु शिवाजीके पिता शाहजी भोंसलेने सन् १६३४ में बादशाही खानदानके एक आदमीको बादशाह बनाया; गंगाधरी और पूना शहरको लूटा तथा बीजापुरकी सेनाकी मददसे मुगलोंको पुरंधरसे भगाया। तब शाहजहांने सेनाओंके साथ स्वयं जाकर बीजापुर पर घेरा डाला। सन् १६३६ में वहांका बादशाह सुलह करनेके लिये मजबूर हुआ। शाहजहांको शाहजी द्वारा छीना हुआ देश मिलगया। सन् १६३७ में अहमदनगरका बादशाह मुगलोंके अधीन बनगया। निज़ामशाही खानदानका अन्त होगया। जुनीरके साथ भीमानदीके उत्तरका देश मुगलोंके राज्यमें मिला लिया गया और उसके पश्चिमका देश बीजापुरके बादशाहको मिला। शाहजी बीजापुरके अधीन रहकर काम करने लगे; उनको कई बस्तियोंके साथ पूना और सूपाकी जागीर मिली।

बीजापुरके बादशाहोंके अधीन महाराष्ट्र लोग प्रसिद्ध होने लगे; और उनका बल क्रम क्रमसे बढ़ने लगा। शाहजी भोंसलेके पुत्र शिवाजी महाराष्ट्रोंके अगुआ हुए (उनका जीवनचरित्र आगे है)। सन् १६६३ में औरङ्गजेबका सेनापति साइस्ताखाँने शिवाजीसे पूना छीन लिया, किन्तु उसके चन्द रोज बाद शिवाजीने अचानक चढ़ाई करके साइस्ताखांके पुत्र और उसके रक्षकको मार कर उसको घायल कर दिया। मुसलमानी सेना भाग गई। उसके पीछे औरङ्गजेबने फिर पूना पर अधिकार किया। सन् १६६७ में औरङ्गजेबने शिवाजीको पूना लौटा दिया। शिवाजीके पुत्र संभाजीके राज्यके समय औरङ्गजेबके अफसर खांजहांके अधिकारमें पूना शहर था।

औरङ्गजेबके मरनेके पश्चात् १८ वीं सदीमें पूना, सतारा और सोलापुर ये तीनो ज़िले महाराष्ट्रोंके बैठक थे, जिनका राज्य पञ्जाबसे बङ्गाल तक और दिल्लीसे मैसूर पर्यन्त पहुँचा था। पहिले पेशवाओंका सदर स्थान सतारा था, किन्तु जब उनका अधिकार बहुत बढ़ गया तब उन्होंने पूनाको अपना सदर स्थान बनाया। सन् १७६३ मे हैदराबादके निजामअलीने पूनाको लूटा और उसके एक भागको जलादिया। उसके पश्चात् पीछेके पेशवाओं और संधिया तथा हुल्करके परस्परके झगड़ोंसे बहुत बार पूनाका परिवर्त्तन हुआ था। सन् १८०२ में पेशवाने बेसीनकी संधि द्वारा अपनी सहायताके लिये अङ्गरेजी सेनाको पूनाके पास रखना स्वीकार किया। अन्तमें अङ्गरेजी गवर्नमेण्टने बड़ी लड़ाइयोंके पश्चात् बाजीराव पेशवाको परास्त करके सन् १८१८ में पूनाको लेलिया। उसके उपरान्त पूना शहर अङ्गरेजी जिलेका सदर स्थान और दक्षिणमें सर्व प्रधान फौजी छावनीका मुकाम हुआ।

शिवाजीकी कथा–चित्तौरगढ़के राणाओके वंशमें शिवरायके ३ पुत्र थे, दो तो समरमें मारे गये, किन्तु तीसरे सबसे छोटे भीमसिंहने भोंसला नामक दुर्गमें भाग कर अपना जान बचाया, इसीसे उनके वंशवाले भोंसला कहाये। भीमसिंहके पुत्र विजयभानु थे। विजयभानुके पुत्र खेलकर्ण यवनोंसे दिक होकर दौलताबादके पास वेरुलमें जा बसे। उनके पुत्रका नाम जयकर्ण था। जयकर्णके पुत्र महाकर्ण, उनके पुत्र राजा शिव, राजा शिवके पुत्र शम्भाजी और शम्भाजीके पुत्र मालोजी थे।

सन् १५५२ ईस्वीमें मालोजीका जन्म हुआ। मालोजीके पिता शम्भाजी कई छोटे गांवोंके जमीन्दार थे। मालोजी २५ वर्षके होनेपर अहमदनगरके राज्यमें कुछ घुड़सवारोंके स्वामी हुए। पीछे वह ५००० घोड़सवारोंके मालिक बनाये गये।

सन् १५९४ ई० में मालोजीके पुत्र शाहूजीका जन्म हुआ। सन् १६०४ में निजामशाही गवर्नमेण्टने सूपा और पूनाके परगनोंको मालोजीको दे दिया। सन् १६१८ में मालोजी भोंसलाका परलोक हुआ।

शाहजीका विवाह सन् १६०१ में लुखजी यादवरावकी पुत्रीसे हुआ था। लुखजी यादवराव निजामशाही दरबारके अधीन एक बड़ी जागीरके अधिकारी थे। जब दिल्लीके बादशाहका अधिकार अहमदनगरके राज्यपर फैला, तब सन् १६२१ ई० में लुखजी यादवराव मुगलोंकी तरफ चले गये। उस समय निजामशाही और मुगलोंके बीचमें घोर शत्रुता

चल रही थी। जमाई शाहजी निजामशाहीके पक्षमें और ससुर लुखजी मुगलोंके पक्षमें थे; किसी किसी लड़ाईमें ससुर और दमादका भी सामना हो जाता था।

सन् १६२६ की एक लड़ाईमें शाहजी हारकर भाग चले। उस समय उनके ज्येष्ठ पुत्र शम्भाजी और उनकी पत्नी जीजी बाई भी युद्धस्थलमें उपस्थित थी। जीजी बाई गर्भवती थी। तीनों एक एक घोड़े पर भाग रहे थे और लुखजी यादवराव मुगल सेना लेकर अपनी बेटी, दमाद और नातीको पछिया रहे थे। जब गर्भवती जीजी बाई भागनेमें असमर्थ होगई, तब शाहजी उसको छोड़ अपने बालक पुत्र शंभाजीको लेकर निरापद स्थानमें चले गये।

लुखजी यादवराव अपनी पुत्री जीजीको शिवनेरी किलेमें कैद कर शाहजीसे शत्रुता साधने लगे। शाहजीके मांगने परभी उसने कन्याको उनके पास नहीं भेजा। जीजी बाई अपना समय शिवनेरी दुर्गकी शिवाई देवीके पूजनमें बिताती थी। सन् १६२७ ई० की वैशाख शुक्ला द्वितीयाको जुनीरके शिवनेरी किलेमें जीजीबाईके गर्भसे शिवाजीका जन्म हुआ। शिवाई देवीके प्रसादसे पुत्र जन्मा इस लिये उसका नाम शिवाजी रक्खा गया। जब दूसरे सुलतान मुरतिजा निजामशाह बालिग होगये, तब उन्होंने सन् १६३० ई० में लुखजी यादवरावको दगासे दौलताबादमें बुलाया और वहाँ आनेपर उसको मरवाडाला।

पीछे मुरतिजा निजामशाह मुगलोंकी कैदमें पड़े और दौलताबाद मुगलोंके हाथमें गया। उसी समय शाहजीकी पत्नी जीजीबाई मुगलोंके हाथ गई, पर अनेक महाराष्ट्रोंने मिलकर बड़ी बड़ी दिक्कतोंसे, जीजीबाईका उद्धार किया; तबसे जीजीबाई शिवाजीके साथ कुण्डाने दुर्गमें रहने लगी।

जब निजामशाही राज्य मुगलोंके राज्यमें मिल गया। तब शाहजीने बीजापुरके आदिलशाहीकी नौकरी कबूल करली। उस समयसे वह अपनी नई ब्याही पत्नी तुक्का बाई और बड़े पुत्र शम्भाजीको अपने साथ रखने लगे। जीजीबाई कुछ दिन पतिके साथ रहकर पीछे शिवाजीके साथ पूनामें जाकर रहने लगी। शाहजीके अधीन अनेक ब्राह्मण कर्म्मचारी थे, जिनमेंसे नारूपन्तपर कर्नाटककी जागीरका और दादाजीपर पूनाकी जागीरका भार दिया हुआ था। दादाजीकी पूनाकी जागीर तथा पूनाकी जन-संख्या दिन पर दिन बढ़ने लगी। दादाजी शिवाजीको विरोचित शिक्षा देने लगे।

शिवाजी जब १६ वर्षके हुए, तब वह पहाड़ी मावली वीरोंके सहारेसे धनियोंका धन लूटकर अपने आवश्यकीय कामोंके लिये धन इकट्ठा करने लगे। शाहजीकी पूनाकी जागीरमें कोई पहाड़ी किला नहीं था। सन् १६४६ ई० में शिवाजीने बिना लड़ाईके तोरनका किला लेलिया, जो पूनासे २० मील दक्षिण–पश्चिम नीरानदीके किनारेपर मजबूत पहाड़ी किला था। पीछे उन्होंने किलेको मजबूत करके उसमें मावली वीरोंको नियुक्त किया। और किलेका नाम पूर्णचन्द्रगढ़ रक्खा। उसके पश्चात् उन्होंने सन् १६४७ में बड़ी फुर्तीके साथ एकही वर्षमें वहाँसे ६ मील दूर महोर बद्ध पहाड़ीपर दूसरा किला तय्यार करके उसका नाम राजगढ़ रक्खा। शिवाजीके उन कामोंकी खबरसे बीजापुर दरबारमें हलचल मच गई; परन्तु जब शाहजीने अपनी कर्नाटककी जागीरसे मुलायम चिट्ठी लिखी, तब दरबार शान्त रह गया। दादाजीकी मृत्यु होजाने पर शिवाजीने अपनी जागीरके अन्तर्गत कोंडाने

दुर्गनामक किलेको मुसलमान किलेदारसे छीन लिया और उसका नाम सिंहगढ़ रक्खा तथा पुरंधरके हिन्दू किलेदारके मरजानेपर उस किलेको भी ले लिया । अब शिवाजीकी जागीर चाकुनसे नीरानदी तक फैल गई ।

सन् १६४८ में शिवाजी बीजापुर राज्यका खजाना, जो कल्याणसे बीजापुर जाता था, लूट कर अपने वर्तमान वासस्थान राजगढ़मे उठालाये । उस समय उन्होंने बीजापुरके राज्यके कई छोटे किलोंको लेलिया और कल्याणके पास बीरवारी और लिङ्गाना नामक दो किले बनवाये ।

उस समय कर्नाटकमें शाहजीकाभी विलक्षण प्रभाव हुआ था । सन् १६४९ में बीजापुरके सुलतान आदिलशाहकी अनुमतिसे सुधौलके बाजी घोरपुरेने, जो शाहजीके साथ काम करता था, उनको नेवता देकर घरमें बुलाया और पकडकर बीजापुरके दरबारमे भेज दिया । महम्मद आदिलशाहने शाहजीको कैदखानेमे रक्खा, पर कुछ दिनोंके बाद शिवाजीकी गुप्त प्रार्थनासे जब महम्मद आदिलशाहके ब्राह्मण मन्त्री मुरार पन्तने कोशिश की, तब आदिलशाहने शाहजीको कारागारसे मुक्त करके चार वर्षके लिये राजधानीमें नजरबन्द रक्खा। उधर शिवाजी मुगलोंसे लिखा पढ़ी कर रहे थे, इसी भयसे सुलतान आदिलशाहको चारों वर्ष तक शिवाजीके विरुद्ध सेना भेजनेका साहस न हुआ । उधर कर्नाटककी दशा बहुत बिगड़ गई। शाहजीके बड़े पुत्र शम्भाजी विद्रोहियोंके हाथसे मारेगये । सन् १६५३ में सुलतानने शाहजीको नजरबन्दसे रिहाई कर पुनः कर्नाटकमें भेजा ।

शिवाजीने नये जीते हुए देशोंकी रक्षाके लिये कृष्णाके तटके पर्वत पर प्रतापगढ़ नामक किला बनाया । शिवाजीके प्रधान मंत्री श्यामराजे पन्तने राज्यका अच्छा प्रबंध किया । इस लिये शिवाजीने उसको पेशवाकी पदवी दी । सन् १६५७ में शिवाजीने मुगल राज्यके जुनीर शहरको लूट लिया, जिससे उनको बहुत धन और घोडे मिले । उसी वर्ष शिवाजीके पुत्र शम्भाजीका जन्म हुआ । सन् १६५९ मे जब मंत्री श्यामराजे पन्त कंकणके फतहखा सिद्धीसे युद्धमे हारगये, तब वह मंत्रीके कामसे च्युत किये गये और मोरो त्रिमल पिंगलेको पेशवाका पद प्राप्त हुआ ।

उसी सालके अकटूबर महीनेमें बीजापुर दरबारके सिपहसालार अफजलखाँने शिवाजीको पकड़नेका बीड़ा उठाया और दरबारके कर्मचारी पन्तोजी गोपीनाथको दूत बनाकर शिवाजीके पास भेजा , पन्तोजीने मित्रता दृढ करनेके लिये परस्पर मिलन होनेकी बात शिवाजीसे कही । शिवाजीने दगाको जान लिया । उसनेभी कृष्णजी भास्करको अपना दूत नियुक्त कर अफजलखांके पास भेजा । मिलनेका स्थान प्रतापगढ किलेके नीचे मुकरर हुआ। अफजलखांके साथ शस्त्रधारी हजारों सिपाहियोंको देख शिवाजीने अपने कर्मचारियोंके अधीन बहुतसी सेना छिपा रक्खी और अपने वस्त्रके नीचे जिरहबखतर पहिन लिया तथा बिछुआ और बाघनखा हथियार धारण किया । जब शिवाजी और अफजलखां नियत स्थान पर एकत्र हुए, तब शिवाजीने अपने बिछुए और बाघनखा हथियारसे अफजलखांको घायल करके उसको मारडाला । उसी समय छिपे हुए महाराष्ट्रोंने मुसलमानोंकी सेना पर आक्रमण किया । मुसलमानी सेनाके बहुत लोग मारेगये, कुछ भाग गये और जो पकड़े गये उनको शिवाजीने छोडवा दिया । नवम्बर बीतनेसे पहिलेही अगणित स्थान और दिसम्बरमें कोल्हापुर जिला शिवाजीके अधिकारमे होगया ।

अफजलखांकी फौज का नाश सुन कर बीजापुरकी फौजने चारों तरफसे शिवाजीके किलोंपर आक्रमण किया। पहले तो बहुत मुसलमानी सेना मारी गई; परंतु पीछे मुसलमानोंने पनालाके किलेमें शिवाजीको घेर लिया। शिवाजी ४ मास तक किलेमें आत्मरक्षा करके उसके पश्चात् चुने हुए मावली वीरोंके साथ एक ओरका व्यूह भेद कर निकल गये।

सन् १६६२ में शिवाजीने वम्बई हातेके उत्तरी सरहद तक बड़ा मुल्क ले लिया और बादशाही शहर सूरतको खूब लूटा। सन् १६६४ में अपने पिताके मरनेपर उन्होंने राजाकी पदवी ली और अपने नामका सिक्का जारी किया। सन् १६६५ में उन्होंने मुगलोंके लशकरको बीजापुरकी रियासतपर चढ़ाई करनेमे मदद दी। सन् १६७४ में शिवाजी अपनी राजधानी राजगढ़में बड़ी धूमधामसे राज सिंहासनपर बैठे। उस समय उन्होंने सोनेका तुलादान किया। उसके पश्चात् उन्होंने छोटे छोटे राजाओंसे राज्यकर और बम्बईके अङ्गरेजोंसे बहुत नजर लिया। सन् १६७६ में शिवाजीने कर्नाटक तक अपनी सेना भेजी। सन् १६८० में ५३ वर्षकी अवस्थामें उनका देहांत होगया। राजगढ़ में उनका समाधि मन्दिर बना हुआ है।

सन् १६८० में शम्भाजी, जिनका वय २३ वर्षका था, अपने बाप शिवाजीकी जगह गद्दीपर बैठे; परन्तु उनकी जिन्दगीका समय पोर्चुगीजों और मुगलोंकी लड़ाइयोंमें कटा। औरंगजेबने सन् १६८९ मे उनको पकड़ा और मार डाला। उनका पुत्र शाहूजी, जो उस समय ६ वर्षका था, गिरफ्तार होगया, जो औरङ्गजेबके मरने तक कैद रहा। सन् १७०७ मे शाहूजी मुगलोंकी अधीनता स्वीकार करके अपने पिताके राज्य पर बहाल हुआ; किन्तु उसने रियासतका प्रबन्ध अपने दीवान बालाजी विश्वनाथके, जो ब्राह्मण थे, सिपुर्द कर दिया।

पेशवाओंका वृत्तान्त–जब शिवाजीके पोते शाहूजीने बालाजी विश्वनाथको अपनी रियासत सिपुर्द करदी, तब धीरे धीरे पेशवाका उहदा मौरूसी होगया। शिवाजीके परिवारके अधिकारमें केवल सतारा और कोल्हापुरकी छोटी रियासत रहगई।

(१) पहले पेशवा बालाजी विश्वनाथने सन् १७१८ में दिल्लीके बादशाहकी सहायताके लिये एक फौज भेजी और सन १७२० ई० में जोर डालकर दक्षिणकी मालगुजारीपर बादशाह फरमानके जरियेसे चौथ हासिल की।

(२) दूसरे पेशवा बाजीराव बालाजी अपने पिताके मरनेपर सन् १७२१ में राजसिंहासन पर बैठे। उन्होंने सन् १६३६ में मालवापर भी अपना अधिकार कर लिया और विंध्याचलके उत्तर और पश्चिमको नर्मदा और चम्मल नदीके बीचके मुल्कपर अपना राज्य फैलाया तथा सन् १७३९ मे बसीनका किला पोर्चुगीजोंसे छीन लिया।

(३) बाजीरावके मरनेपर उनके पुत्र बालाजी बाजीराव सन् १७४० में तीसरे पेशवा बने, जिनके राज्यके समय महाराष्ट्रोंका भय सम्पूर्ण मोगल राज्य पर छा गया। उनने निजामसे दो लड़ाइयाँ लड़कर अपने राज्यको बढ़ाया; सन् १७५० में पूना शहरको राजधानी बनाया और उत्तरी हिन्दको पञ्जाब तक लूटा। उस समय पञ्जाबका शासक अहमदशाह दुर्रानी क्रोध करके चढ़ आया और सन् १७६१ में पानीपतकी लड़ाईमें महाराष्ट्रोंको परास्त किया।

(४) दूसरे बालाजीकी मृत्यु होनेपर उनके पुत्र माधवराव सन् १७६१ में पूनाकी गद्दीपर बैठे; सन् १७६३ मे निजामअलीने पूनाको लूट कर बरबाद किया। माधवरावसे इतना बन पड़ा कि उसने अपने जोरको हैदराबाद, मैसूर और बरारके हाकिमोंके मुकाबलेमें कायम रक्खा।

(५) माधवरावके देहान्त होने पर सन् १७७२ में नारायणराव, जिसकी अवस्था १७ वर्षकी थी, पाँचवाँ पेशवा बना। वह सन् १७७३ में राज्य पानेके ९ महीने बाद अपने अङ्ग रक्षक द्वारा मारा गया।

(६) नारायणरावके मरनेपर उसके पुत्र माधवरावका जन्म हुआ। राज्यका सम्पूर्ण काम दीवान नानाफरनवीस करने लगा, परन्तु दूसरे बालाजीके भाई रघोबाने माधवराव नामक लड़केको दोगला कहकर खुद छठवाँ पेशवा होनेका दावा किया। नाना फरनवीसने फ्रांसीसियोंसे सहायता माँगी और अङ्गरेजोंने बम्बईसे रघोबाकी सहायता की। मरहटों और अङ्गरेजोंसे सन् १७७९ से १७८१ तक लड़ाई होती रही। सन् १७८२ मे सुलह हुई, जिसके अनुसार सालसट और एलिफेंटाके टापू और दो दूसरे टापू अङ्गरेजोंके हाथ लगे, रघोबाको अच्छी पेंशन मिली और नाबालिग माधवराव अपनी हुकूमत पर पक्का हुआ, परन्तु २१ वर्षकी अवस्थामें वह फाटकके ऊपरकी बालकानीसे गिर कर मर गया।

(७) माधवरावके मरने पर उसके चचेरे भाई दूसरे बाजीराव सन् १७९५ में सातवाँ पेशवा बनकर पूनाकी गद्दीपर बैठे। उनका बल दिनपर दिन घटता गया। जशवन्तराव हुलकरने पेशवा और सिंधियाकी मिली हुई फौजोंको पूनामें परास्त किया और सिन्धियाके सम्पूर्ण तोप, असबाब और भण्डारको लूट लिया।

सन् १८१७ की पहिली नवम्बरको बाजीराव पेशवाकी फौजने पूनाकी अङ्गरेजी छावनी और नदीके सङ्गमके पासके रेजीडेंसीको लूट करके जला दिया। ता० ५ नवम्बरको अङ्गरेजी रेजीडेण्ट किर्कीके पास, जो उस समय एक छोटी बस्ती थी, चला गया। पेशवाकी सेनामें १४ तोपोंके साथ ८००० पैदल सेना और १८००० घोड़सवार थे। उनके अलावे पार्वती पहाड़ीके निकट पेशवाके साथ २००० पैदल फौज और ५००० सवार थे। अंगरेजोंके पास केवल २८०० सेना थी, जिनमें ८०० यूरोपियन थे। कई लड़ाइयां हुईं, जिनमें पेशवाकी ओरके बहुत लोग मारे गये। तारीख ११ नवम्बरको जब अङ्गरेजी जनरल इस्मीथके अधीनकी सेना सिरूरसे आगई तब थोड़ी लड़ाईके पश्चात् पेशवाकी सेना पीछे हटी। अन्तमे पेशवा परास्त हुए। सन् १८१८ में उनका राज्य अङ्गरेजी राज्यमें मिला लिया गया। बाजीराव पेशवाको वार्षिक ८ लाख पेंशन नियत हुआ। वह कानपुरके पास बिठूरमें रहने लगे, जो सन् १८५३ में वहाँही मर गये।

बाजीरावकी मृत्यु होनेपर अङ्गरेजी सरकारने उनके दत्तक पुत्र नाना धुंधूपन्तको उनका उत्तराधिकारी स्वीकार नहीं किया और बाजीरावकी पेंशन बन्द कर दी। सन् १८५७ के बलवेके समय नाना धुंधूपन्तने कानपुरमें बहुतसे अङ्गरेजोंको मार डाला (कानपुरमें देखिये)।

रेलवे—पूनासे रेलवे लाइन ३ तरफ गई है;—

(१) पूनासे पश्चिमोत्तर ग्रेट इण्डियन पेनिन-सूला रेलवे, जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई है;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

३ किर्की।
१० चिचवाड़ा।
२१ तलेगाँव।
२३ वाड़गाँव।
३४ कार्ली।
३९ लोनवली।
४१ खण्डाला।
५७ कर्जत।
६५ नेरल।
८१ अमरनाथ।
८६ कल्याण जंक्शन।
९८ थाना।
१०२ भंडूप।
११३ दादर जंक्शन।
११९ बम्बई (विक्टोरिया टर्मिनस)।

कल्याण जंक्शनसे पूर्वोत्तर ८३ मील नासिक, १२९ मील मनमार जंक्शन, और २४३ भुसावल जंक्शन।

(२) पूना जंक्शनसे पूर्व-दक्षिण ग्रेट इण्डियन पेनिन सुला रेलवे;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

४८ धोंद जंक्शन।
६६ डिकसल।
१०५ केम।
११६ बारसी रोड।
१४५ मोहल।
१६५ शोलापुर।
१७४ होतगी जंक्शन।
२३५ गुलबर्गा।
२५२ शाहाबाद।
२५८ वाड़ी जंक्शन।
३२५ रायचूर।

धोंद जंक्शनसे उत्तर ५१ मील अहमद नगर और १४६ मील मनमार जंक्शन।

होतगी जंक्शनसे दक्षिण सदर्न मरहटा रेलवे पर ५८ मील बीजापुर, १३१ मील बादामी और १७३ मील गदग जंक्शन।

वाडी जंक्शनसे पूर्व निजाम स्टेट रेलवे पर ११५ मील हैदराबाद १२१ मील सिकन्दराबाद और २०८ मील वारंगल।

(३) पूना जंक्शनसे दक्षिण सदर्न मरहटा रेलवे, जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई है;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

६९ बाथर।
७८ सितारारोड।
१६० मीराज जंक्शन।
२०९ गोकाकरोड।
२४५ बेलगाँव।
२७८ लोंडा जंक्शन।

मीराज जंक्शनसे २९ मील पश्चिम कोल्हापुर।

लोंडा जंक्शनसे ६६ मील पश्चिम मोरमूगांव बन्दरगाह।

लोंडा जंक्शनसे पूर्व ४४ मील धारवाड़, ५६ मील हुबली जंक्शन, ९२ मील गदग जंक्शन; १४५ मील होसपेट, १८५ मील बलारी और २१५ मील गुण्टकल जंक्शन।

हुबली जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व ८१ मील हरिहर, १७८ मील बनावार, ३४८ मील तमकूर और २८८ मील बङ्गलोर शहर।

भीमशङ्कर।

पूनाके रेलवे स्टेशनसे ३१ मील पश्चिमोत्तर तलेगाँवका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे २४ मील दूर भीमशङ्कर महादेवका मन्दिर है। मार्गमें पहाड़की चढ़ाई उतराई नहीं मिलती। भीमशङ्करके पास जानेका दूसरा मार्ग तलेगांवके स्टेशनसे ४४ मील पश्चिमोत्तर नेरलके रेलवे स्टेशनसे है। उस स्टेशनसे केवल १६मील दूर भीमशङ्कर हैं, किन्तु उस मार्गमें १० मील गाड़ी जाने वाली सड़कके बाद ६ मील पहाड़ीकी चढ़ाई उतराई मिलती है।

इस भीमशङ्करको लोग शिवके १२ ज्योतिर्लिङ्गोका भीमशङ्कर कहते हैं, परन्तु शिव पुराणमें, जहां १२ ज्योतिर्लिङ्गोकी कथा हैं, कामरूपदेश अर्थात् आसामदेशके कामरूप जिलेमें भीमशङ्कर लिखा हुआ है, जो नीचे लिखी हुई कथासे विदित होगा।

शिवपुराण—(ज्ञानसंहिता, ३८ वां अध्याय) शिवजीके १२ ज्योतिलिंगोमेंसे भीम-शंकर शिवलिंग डाकनीमें विराजते है। (४८ वां अध्याय) लंकाके कुम्भकर्णका पुत्र भीम नामक राक्षस अपनी माता कर्कटीके सहित सह्याचल पर रहता था। उसने १० हजार वर्ष तक कठोर तप करके ब्रह्माजीसे अप्रमेय वर पाया। उसके पश्चात् वह कामरूपके राजाको परास्त कर उसको बंदीखानेमें रख कामरूप देशका स्वामी बनगया और देवगण तथा ऋषी-श्वरोंको क्लेश देने लगा। कामरूपका राजा बंदीखानेमे पड़ा हुआ अपनी स्त्रीके सहित पार्थिव बना कर शिवजीकी आराधना करने लगा। उधर देवताओंने शिवजीको प्रसन्न करके भीम दैत्यके विनाशके लिये उनसे प्रार्थना की। भीमने जब सुना कि राजा बंदीगृहमे भी शिवका पूजन करता है, तब राजाके निकट जाकर उसके ऊपर तलवार चलाई। शिवजीने उसी समय पार्थिवसे निकल कर भीमकी तलवारको अपने पिनाकसे सौ टुकडे करडाला। तब महादेवजी और भीमका भयंकर युद्ध होने लगा। उस समय पृथ्वी डोलने लगी, समुद्र उछ-लने लगा और देवता गण भयसे अति त्रसित हुए। जब नारदने आकर दैत्यके वधके लिये शिवजीकी प्रार्थना की, तब भगवान् शंकरने हुंकाररूपी अस्त्रसे संपूर्ण राक्षसोंके सहित भीम-को भस्म कर दिया। उस समय देवताओंने शिवजीसे प्रार्थना की कि हे भगवन्! आप लोकके हितके अर्थ इस स्थानमे निवास करके इस दुष्ट देशको पवित्र कीजिये। शिवजी देवताओंके वचन स्वीकार करके उस स्थानमें रहगये और भीमशंकर नामसे प्रसिद्ध हुए। उनके दर्शन और स्मरण करनेसे संपूर्ण पापका विनाश होता है।

कारलीके गुफामंदिर।

तलेगांवके रेलवे स्टेशनसे १३ मील (पूनाशहरके रेलवे स्टेशनसे ३४ मील) पश्चिमो-त्तर कारलीका रेलवे स्टेशन और कारलीके रेलवे स्टेशनसे ५ मील पश्चिमोत्तर लोनवलीका रलवे स्टेशन है। दोनों स्टेशनोंसे ६ मील दूर आसपासके मैदानसे लगभग ६०० फीट ऊंची पहाड़ीके बगलमें कारलीके प्रसिद्ध गुफा मन्दिर हैं। लोनवलीसे ४½ मील तक तांगा जाने लायक मार्ग और १½ मील टट्टू जानेकी राह है।

कारली की गुफा

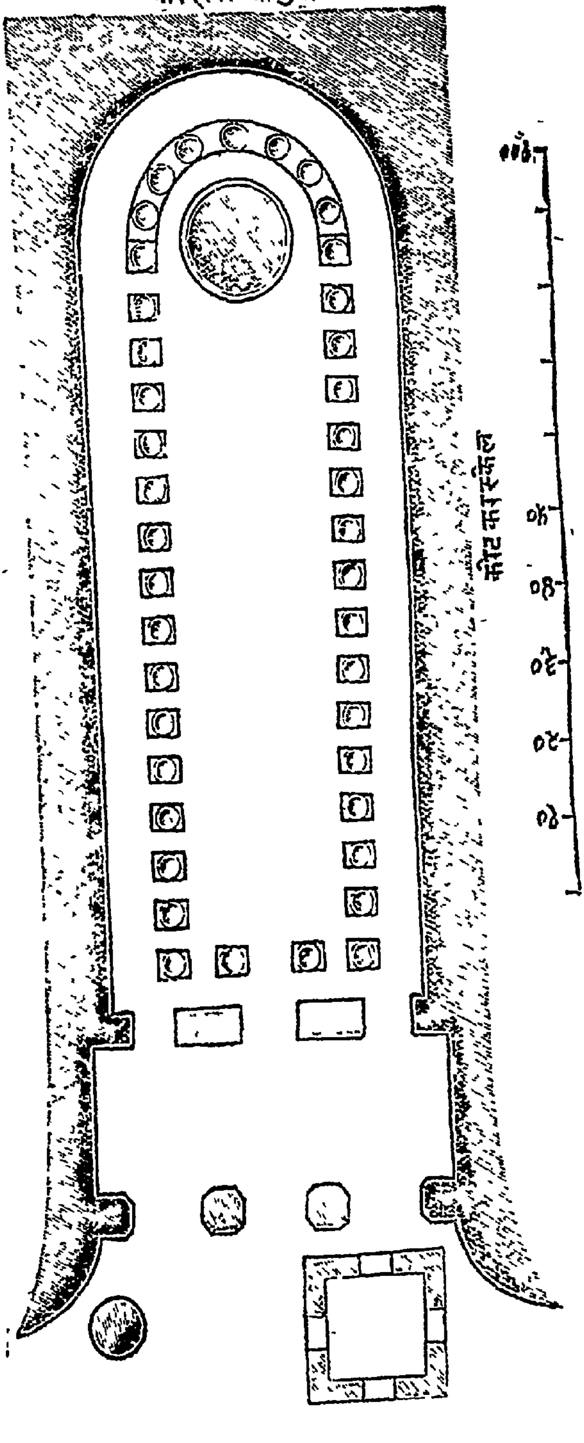

बम्बई हातेके पूना जिलेमें (१८ अंश, ४५ कला, २० विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, ३१ कला, १६ विकला पूर्व देशांतरमें) कारलीके गुफामंदिर है। वहां अनेक विहार गुफाओंके सहित एक वृहत् चैत्यगुफा अर्थात् बौद्ध मंदिर निशन पहाडी चट्टानमे पत्थर खोद कर अर्थात् भीतरसे पत्थर निकाल कर बनाया हुआ है। इतनी बड़ी तथा सुन्दर चैत्यगुफा भारतवर्षमें दूसरी नहीं है। गुफाके पेशगाह अर्थात् आगेके ओसारेके बगलमे और आगेके सिंह स्तंभपर पुराने लेख हैं, जिनसे विदित हुआ है कि महाराज भूतिने (जो सन् ईस्वीके आरंभसे ७८ वर्ष पहिले राज्य करते थे) इसको बनवाया था। वह गुफा अपने पेशगाहके पीछेसे अपनी पीछेकी दीवार तक १२५ फीट लंबी और दहिने बायेंकी दीवारके भीतर ४५ फीट चौड़ी तथा नीचेके तलसे छतके तल तक ४६ फीट ऊंची है। उसके भीतरकी पिछली दीवार गोलाकार है। गुफाके भीतर चारो ओरकी दीवारोंसे लगभग ६ फीट भीतर चट्टानके बने हुए स्तंभोकी एक पंक्ति है, जिनमेसे दहिने और बायें पंद्रह पंद्रह अठपहले स्तभ हैं। प्रत्येक स्तंभोंकी नेव लंबी, मध्य भाग अठपहला और ऊपरका भाग सुन्दर नक्काशीसे भूषित है, जिसमें दो हाथी दो दो सुन्दर सवारोंके सहित बने हुए हैं। गुफाके पीछेके भागके ७ स्तंभ सादे अठपहले हैं। गुफाके आगे पेशगाहकी ओर ४ अठपहले स्तंभ हैं। स्तंभोंके भीतर उस गुफाका मध्य भाग लगभग १०५ फीट लंबा और २५ फीट चौड़ा है। वह गुफा अब शिवका मन्दिर समझी जाती है। सामने उसके पीछेके भागमें प्राय. शिवलिंगके समान दघोब है। दघोब छोटे स्तूपके समान होता है; पर उसमें बुद्धदेव अथवा उनके शिष्यकी अस्थि रहती है। गुफा और उसके पेशगाहके बीचकी दीवारसे ३ दरवाजे है; मध्यका बड़ा और बगलोंके दोनो छोटे। पेशगाह दहिने बायें ५२ फीट लंबा और आगेसे पीछे तक १५ फीट चौड़ा है। उसके आगे पहलदार मोटे मोटे ४ स्तंभ बने हुए है। पेशगाहके आगे उसके दहिने बगलमें १ मोटा सिंहस्तंभ, जिसके शिरोभागमें ४ सिंह बने हुए हैं, और बायें एक छोटा मन्दिर है।

अन्य गुफायें—कारलीके पास बहुतसी विहार गुफा भी हैं। प्रधान विहार नीचे ऊपर ३ पंक्तियोंमें हैं। उनके मध्यमें छतके नीचे बड़ा कमरा और कमरेके बगलोंमें छोटी कोठरियाँ बनी हुई हैं। ऊपरवालेमें केवल एक बरण्डा है, जिसके पास भवानीका छोटा मन्दिर है। पहाड़ीके कदमके पास एक छोटा गाँव है, जिसकी गुफा एकविराकी गुफा कहलाती है।

रेलवे स्टेशनसे ३ मील दक्षिण मैदानसे १२०० फीट उँचाई पर लोगढ़ और ईशापुरके पहाड़ी किले हैं।

भाजाकी गुफायें—कारली गाँवसे ३ मील दक्षिण-पूर्व भाजा नामक बस्तीसे लगभग १ मील दूर सन् ईस्वीके २०० वर्ष पहलेकी बनी हुई १२ जगह १८ गुफायें हैं। वह स्थान भारतवर्षके दिलचस्प स्थानोंमेंसे एक है।

बेदसाकी गुफायें—भाजागाँवसे ५½ मील पूर्व और बाडगाँवके रेलवे स्टेशनसे ६ मील दक्षिण-पश्चिम बेदसा गाँव है। वहाँकी गुफायें भाजाकी गुफाओंसे थोडे पीछेकी हैं। वहाँके प्रधान गुफा मन्दिरमें एक दघोब है, छतके नीचे २७ सादे स्तम्भ बने हुए हैं। स्थानके दोनों बगलोपर पत्थर काट कर दो मञ्जिली गुफा बनी हुई हैं, जिनमें छोटी कोठरियोंके साथ मामूली कमरे हैं। वहाँ १४ दघोवोंमें अजीब सङ्गतराशीके काम हैं, जिनमेंसे

५ भीतर और दूसरे सब गुफाके बाहर हैं। गुफाके आगे मेहराव दार ४ स्तम्भोंपर बहुतेरे घोडे, बैल और हाथी बने हैं। गुफा-मन्दिरका नकशा कार्लीकी चैत्य गुफाके समान है, लेकिन न तो उतना बड़ा है और न उसके समान उत्तम है और उससे यह नया जान पड़ता है। इसमें एक दृघोव है, जिसकी छतके नीचे १० फीट ऊँचे २६ स्तंभ बने हुए हैं। आगेमें करीब २५ फीट ऊँचे ४ स्तम्भ हैं, जिनके शिरके पास बहुतसे घोड़े, बैल और हाथी बने है। मन्दिरके पास मेहराव दार छतवाला अण्डाकार शकलका एक हल है, जिसके बगलोंमें ११ छोटी कोठरियाँ बनी हुई हैं।

खण्डाला—लोनवलीरेलवे स्टेशनसे २ मील खण्डालागांवका रेलवे स्टेशन है। खण्डाला एक बड़ा गाँव है। उसके पास एक अस्पताल एक अङ्गरेजी बँगला और एक तालाब है। गर्मीके दिनोंमें बम्बेके बहुतेरे धनी लोग उस गाँवमें रहते हैं। डाक बंगलेसे सीधी लाइनमें आधा मील और एक नालेके घुमावकी राहसे १½ मील दूर एक जलप्रपात है, जो नीचे और ऊपर दो भागोंमें बँटा हुआ है, जिनमेंसे ऊपरवाला जलप्रपात ऊपरसे ३०० फीट नीचे गिरता है।

अमरनाथ।

लोनवलीके स्टेशनसे ४२ मील (पूनाके स्टेशनसे ८१ मील) पश्चिमोत्तर और कल्याण जंक्शनसे ५ मील दक्षिण अमरनाथका रेलवे स्टेशन है। लोनवलीसे कर्जतके रेलवे स्टेशन तक १८ मीलके भीतर रेलगाड़ी चलनेके लिये १६ जगह पहाड़ फोड कर उसके भीतर रेलवे सड़क बनी है। सम्पूर्ण सुरंगी सड़ककी लम्बाई ३५३५ गज है, जिसके बनानेमें लगभग ६० लाख रुपये खर्च पड़े थे। लाइन चढ़ाव, उतार तथा घुमावकी है। बोर घाटकी चढ़ाईकी जगहपर दोनों ओरसे गाडियोंमें जोरावर एञ्जिन लगाया जाता है। कर्जतसे दक्षिण ९ मीलकी लाइन कम्पवलीको गई है, जिसपर वर्षाकालमें गाड़ी नही चलती है।

अमरनाथ नामक स्टेशनके पास बम्बई हातेके थाना जिलेमें अमरनाथ नामक छोटा गाँव है, जिसमें लगभग ३०० मनुष्य बसते हैं। गाँवसे ¾ मील पूर्व एक सुन्दर घाटीमें अमरनाथ शिवका विचित्र मन्दिर है। उसके एक दरवाजेके पास शिलालेख है, जिससे विदित होता है कि वह मन्दिर शाका ९८२ (सन् १०६०) ई० में बना। निज मन्दिरमें खण्डित तथा चिपटा शिवलिङ्ग है। उत्तर बगलके ताकमें एक पुरुषकी तीन शिरवाली प्रतिमा है, उसकी जंघापर एक स्त्री बैठी है। अनुमानसे जान पड़ता है कि शिव पार्वतीकी प्रतिमा होगी। मन्दिरके दक्षिण-पूर्व बगलपर कालीजीकी प्रतिमा है। मन्दिरके आगे अर्थात् पश्चिम २२ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा मण्डपम् अर्थात् जगमोहन है, जिसमें पश्चिम, दक्षिण तथा उत्तर द्वार बने हुए हैं। प्रत्येक द्वारके आगे एक ओसारा और प्रत्येक ओसारेमें ४ स्तम्भ लगे हैं, जिनमेंसे २ स्तम्भ दीवारसे मिले हुए है। मण्डपमूकी छतमें उत्तम कारीगरीसे विविध भांतिके फूल, पत्ते, चिड़ियायें तथा सिंहके शिर बनेहुए हैं। मन्दिरके द्वारपर विचित्र शिल्पकारीका काम है। मन्दिरके बाहर चारो तरफ और मण्डपमूके चारों स्तम्भोंमें विचित्र कारीगरीका काम है। बम्बई हातेके किसी मन्दिरमें इससे बढ़कर काम नही देखपड़ता। दरवाजेका फाटक, जिससे अमरनाथके निज मन्दिरमें जाना होता है, अनेक हाथी और सिंहोंसे, जिनके बीचमें महादेवकी प्रतिमा है, भूषित है।

इक्कीसवाँ अध्याय।

(बम्बई हातेमें) कल्याण, नासिक, त्र्यंबक, थाना, और अलीबाग।

कल्याण।

अमरनाथके रेलवे स्टेशनसे ५ मील उत्तर (पूना शहरसे ८६ मील पश्चिमोत्तर), नासिकसे ८३ मील और मनमार जंक्शनसे १२९ मील दक्षिण-पश्चिम तथा बम्बईके विक्टोरिया स्टेशनसे ३३ मील पूर्वोत्तर कल्याणमें रेलवेका जंक्शन है। बम्बई हातेके उत्तरीय विभागके थाना जिलेमें (१९ अंश, १४ कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, १० कला पूर्व देशान्तरमें) सबडिवीजनका सदर स्थान कल्याण नामक तिजारती कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कल्याणमें १२६०८ मनुष्य थे, अर्थात् ९७०२ हिन्दू; २४५३ मुसलमान, २७२ पारसी, ११५ कृस्तान, ४६ जैन; ७ यहूदी और १३ अन्य।

कल्याणमें सबजजकी कचहरी, अस्पताल, स्कूल, ८ छोटे जलाशय, एक जलाशयके पास सदानन्दका मन्दिर और बहुतसे कूप है। म्युनिसिपल्टीने एक बाजार बनवाया है, जिसमें तरकारी आदि वस्तु बिकती है। कल्याणमें नमक, चावल, तम्बाकू इत्यादिकी बडी तिजारत होती है। सड़के पक्की बनी हैं।

इतिहास—पहिली, दूसरी, पांचवीं तथा छठवीं सदीके शिलालेखोंमें कल्याणका नाम मिलता है। दूसरी सदीके अन्तमे कल्याण प्रसिद्ध हुआ। छठवीं सदीमे वह एक प्रतापी राजाका सदर स्थान और भारतवर्षके ५ प्रसिद्ध बाजारोंमेंसे एक बाजार था। १४ वीं सदीके आरम्भमें वह एक जिलेका सदर स्थान इस्लामाबाद नामसे प्रसिद्ध था। सन् १५३६ में पोर्चुगल वालोंने कल्याणको ले लिया, किन्तु सन् १५७० में उनको छोड़ देना पड़ा। उसके पश्चात् वह अहमदनगरके राज्यके अधीन हुआ। सन् १६३६ में बीजापुर वालोंने उसको अपने राज्यमें मिला लिया। सन् १६४८ मे शिवाजीने कल्याणको ले लिया, किन्तु सन् १६६० में मुसलमानोंने फिर उसपर अपना अधिकार कर लिया। सन् १६६२ में शिवाजीने फिर उसपर अपना अधिकार किया। उन्होंने सन् १६७४ में अङ्गरेजोंको कल्याणमें एक कोठी नियत करनेकी आज्ञा दी। सन् १७८० में अङ्गरेजोने महाराष्ट्रोंसे कल्याण ले लिया, तबसे वह उनके अधिकारमें है। पहिले कल्याणकी चारोओर दीवार थी; जिसमें ११ बुर्ज ४ फाटक बने थे।

नासिक।

कल्याण जंक्शनसे २६ मील पूर्वोत्तर अठगांवके रेलवे स्टेशनके पास बांध बनाकर एक बड़ी झील बनाई गई है, जिसको सन् १८९२ में भारतवर्षके गवर्नर जनरल लार्ड लैसडौनने खोला था। झीलका बांध २ मील लम्बा और ११८ फीट ऊंचा है, जिसकी चौड़ाई नेवके पास १०३ फीट और शिरके समीप २४ फीट है। बांधसे टन्सा नदीका जल रुककर ८

वर्गमीलके विस्तारकी झील बन गई है, जो ३ करोड़ ३० लाख गेलन पानी जुमा सकती है। उस झीलसे बम्बई शहरमें पानी जाता है।

अठगांवके रेलवे स्टेशनसे १६ मील (कल्याण जंक्शनसे ४२ मील) पूर्वोत्तर कसाराके रेलवे स्टेशनसे तालघाटकी चढ़ाई आरम्भ होती है। उस जगहसे पूर्वोत्तर इगतपुरीके स्टेशनके पास तक ९½ मीलमें रेलवे लाइन १०५० फीट ऊपर गई है। एक खास एञ्जिन कसारा स्टेशन पर गाड़ियोंमें जोड़ा जाता है और इगतपुरीके पास हटा दिया जाता है। कसारा और इगतपुरीके बीचमें ११ जगह पहाडियोंमें छेद करके उनके भीतर रेलवे लाइन बैठाई गई है, जिसपर रेलगाड़ी चलती हैं।

इगतपुरीसे २८ मील (कल्याण जंक्शनसे ८० मील) पूर्वोत्तर और नासिकरोडसे ३ मील दक्षिण-पश्चिम देवलालीका रेलवे स्टेशन है। देवलालीसे ७ मीलकी सुन्दर सड़क नासिक कसबेको गई है। देवलालीमें १००० सेनाके रहने लायक बारक अर्थात् सैनिक गृह बने हैं। यूरोपको जाती हुई अथवा वहाँसे आती हुई सेना बारकोंमें ठहरती हैं।

देवलालीके रेलवे स्टेशनसे ३ मील, कल्याण जंक्शनसे ८३ मील और बम्बईके विक्टोरिया स्टेशनसे ११६ मील पूर्वोत्तर और मनमार जंक्शनसे ४६ मील दक्षिण-पश्चिम नासिकरोडका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनके पास धर्मशाला बनी हुई है। बम्बई हातेके मध्य विभागमें नासिकरोडके रेलवे स्टेशनसे ५ मील पश्चिमोत्तर गोदावरी नदीके दोनों किनारोंपर समुद्रके जलसे १९०० फीट ऊपर जिलेका सदर स्थान तथा एक प्रसिद्ध तीर्थ नासिक कसबा है। रेलवे स्टेशन और नासिक कसबेके बीचमें सन् १८९१ से ट्रामगाड़ी चलती है; प्रति आदमीका महसूल एक आना लगता है। सवारीके लिये बैलगाड़ी तथा तांगे बहुत मिलते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नासिक कसबेमें २४४२९ मनुष्य थे, अर्थात् १२५४० पुरुष और ११८८९ स्त्रियाँ। इनमें २०६९७ हिन्दू, ३४५२ मुसलमान, १७५ जैन, ७३ क्रस्तान, २८ पारसी और ४ यहूदी थे।

नासिक कसबेका बड़ा भाग गोदावरी नदीके दहिने; अर्थात् उसके दक्षिण-पूर्वके किनारेपर ३ छोटे टीलों पर फैलता हुआ लगभग १ मील चला गया है, जिसका क्षेत्रफल २ वर्गमील होगा। उसके दक्षिणके भागको पुराना कसबा और उत्तरके भागको नया कसबा कहते हैं। कसबेके बहुतेरे मकानोंके अगवासोंमे उत्तम नकाशीदार लकड़ीके काम हैं और जगह जगह गलियोंमे फाटक बने हैं। पेशवाके महलोंमें कलक्टरकी कचहरी और अनेक आफिस हैं। नासिकमें एक अस्पताल, एक हाईस्कूल और ८ देशी भाषाके स्कूल हैं। उसमें कागज, कपड़ा, लंप, वाक्स, चेन, मूर्तियां आदि चीजें बनती हैं। पीतल और तांबेके वर्त्तनकी दस्तकारीके लिये नासिक प्रसिद्ध है। भारतवर्षके किसी कसबेमें नासिकसे बढ़कर वर्त्तन नहीं बनते। वहाँ पाव भरका एक लोटा दस रुपये तक विकता है। कसबेकी सड़कों पर रात्रिमें लालटेनोंकी रोशनी होती है।

लोग कहते हैं कि नासिकमें लगभग १३०० घर ब्राह्मण हैं। वहांके बहुत ब्राह्मण विद्यावान् तथा शुद्धाचरण होते हैं। वहाँकी स्त्रियाँ पर्देमें नहीं रहतीं। ब्राह्मण और ब्राह्मणी एकही पंक्तिमें बैठकर भोजन करते हैं। उस देशके लोग नासिकको पश्चिमी भारतकी काशी

कहते हैं। नासिकतीर्थमें बहुत यात्री जाते हैं। १२ वर्ष पर जब सिंहराशिके बृहस्पति होतेहैं तब नासिकमें बहुत बड़ा मेला होता है।

गोदावरीके बायें किनारेके नासिक कसबेको लोग पंचवटी कहते हैं। नासिक कसबेके लगभग सातवां भाग मनुष्य उसमे बसते हैं। उसमे बहुतेरे मन्दिर और मकान हैं, जिनमें खास करके ब्राह्मण लोग रहते हैं।

गोदावरी नदी—नासिकसे १८ मील पश्चिम गोदावरीके निकासका स्थान त्र्यंबक है। वहांसे ६ मील पर चक्रतीर्थमे गोदावरी नदी प्रकट हुई है। चक्रतीर्थसे नासिक, पैठन, गंगाखेड़, नादेड, राजमहेंद्री और धवलेश्वरम् होती हुई करीब ९०० मील पूर्व-दक्षिण बहनेके उपरान्त राजमहेंद्रीके पास समुद्रमें मिल गई है। वह निजाम राज्यमें ओरसे छोर तक बहती है।

नासिकके पास नदीकी धारा सूखे मौसिममें बहुत छोटी रहती है। करीब ४५० गजकी लम्बाईमें गोदावरीके किनारोंपर पत्थरकी सीढियां बनी हुई हैं और नदीके मध्यमे १२ पक्के कुंड तथा पोखरे बने हैं, जिनमेंसे एकका नाम रामकुण्ड और रामगया है। गोदावरीका जल क्रमसे एक कुण्डसे दूसरेमें गिरकर बाहर निकलता है। नदी पार जानेमें नावकी आवश्यकता नहीं होती। उस प्रदेशके हिन्दू लोग कपड़ोको अपने हाथसे धोते हैं। मैंने एकही समयमें पचासों मनुष्योंको गोदावरीमें वस्त्र धोते हुए देखा जिनमें स्त्री बहुत थीं।

लोग कहते हैं कि वनवासके समय श्रीरामचन्द्रने जिस स्थानपर गोदावरीमे स्नान कर दशरथजीको पिंड दिया, उसी स्थानका नाम रामगया वा रामकुण्ड हुआ। वहाँ पिंडदानका बड़ा माहात्म्य है। बायें किनारेसे एक छोटे झरनेका जल आकर पत्थरके गोमुखीसे रामकुण्डमे गिरता है, उस स्थानको अरुणसंगम कहते हैं। रामकुण्डके सामने एक धर्मशाला है, जिसमें पानी कम होने पर साधू लोग रहते हैं। रामकुण्डके एक किनारेपर मुर्देकी राखी लोग डालते हैं। एक दूसरे झरनेका जल रामकुण्डके पूर्व एक कुण्डमे गिरता है, उस स्थानको वरुणासंगम लोग कहते हैं। गोदावरी नदीके किनारेपर कई छत्तरी बनी हैं। कपूरथलेके महाराज इंगलैंड जाते समय अदनमें मरगये, उनकी छत्तरी अर्थात् समाधिमन्दिर वहां बना हुआ है। यात्री लोग प्रथम नारियल फलसे गोदावरीकी भेंट करके तब स्नान करते हैं। गोदावरीकी उत्पत्ति आदिका वृत्तान्त त्र्यम्बककी प्राचीन कथामे लिखा है।

देवमन्दिर—गोदावरीके किनारोंपर तथा उसके भीतर बहुतसे मन्दिर और स्थान हैं। सुन्दरनारायणका मन्दिर रामके मन्दिरसे छोटा है, लेकिन उसमें कारीगरीका काम उससे अधिक है। उस मन्दिरको सन् १७२५ में होलकरके एक सरदारने बनवाया। उसके नीचे एक बालाजीका मन्दिर और एक दूसरा मन्दिर है। नदीके बायें किनारेपर रामकुण्डके पास ५० सीढ़ियोंके ऊपर ६०० वर्षका पुराना कपालेश्वर शिवका मन्दिर है।

नदीके बायें किनारेसे ½ मील दूर ९३ फीट लम्बा; ६५ फीट चौड़ा और ६० फीट ऊंचा रामचन्द्रजीका उत्तम मन्दिर है। उसके बाहरका घेरा २६० फीट लम्बा और १२० फीट चौड़ा है, जिसके भीतर ९६ मेहराब बने हैं। वर्तमान मन्दिर करीब १०० वर्षका बना हुआ है। मन्दिरके पासका मण्डप बहुत सुन्दर है। वहाँके लोग कहते है कि इस मन्दिरके बननेमें ७ लाख रुपये खर्च पड़े थे।

पञ्चवटी—गोदावरीके बायें किनारेसे $\frac{1}{2}$ मील दूर कई आँठियोंका एक वटवृक्ष है, जिसको लोग पञ्चवटी कहते हैं।

वटवृक्षके पास सीतागुफा नामक एक भुवेवरा है, जिसमें सूत, बैठकर कर प्रवेश करना होता है। वहाँका पुजारी प्रति यात्रीसे गुफाके द्वारपर एक पाई लेता है। गुफाके भीतर एक दूसरी गुफा है। प्रत्येक गुफा करीब ५ फीट लम्बी चौड़ी और ४ फीट ऊँची है। पहली गुफामें ९ सीढ़ियोंके नीचे राम, लक्ष्मण, जानकीकी छोटी मूर्त्तियाँ और ७ सीढ़ियोंके नीचे दूसरी गुफामें पञ्चरत्नेश्वर महादेव हैं।

तपोवन—नासिक कसबेसे २ मील दूर गोदावरीनदीके बायें गौतमऋषिका तपोवन है। पञ्चवटीसे आगे जानेपर लक्ष्मणजीका स्थान मिलता है, जिससे आगे हनूमानजीकी मूर्ति है। उससे आगे पहाड़से गिरती हुई गोदावरी और कपिलानदीका संगम है। वहाँ पञ्चतीर्थ नामके ५ कुण्ड हैं; (१) ब्रह्मयोनि, (२) विष्णुयोनि, (३) रुद्रयोनि, (४) मुक्तियोनि और (५) अग्नियोनि। पहलेके तीनों कुण्ड एक साथ मिले हैं, अन्दर अन्दर एकसे दूसरेमें और दूसरेसे तीसरेमें जाना होता है। अग्नियोनि विशेष गहिरा है।

पूर्वकथित पञ्चतीर्थमें सौभाग्यतीर्थ, कपिला संगम और सूर्पणखातीर्थ मिलकर अष्टतीर्थ बनते हैं। गोदावरी और कपिलाके संगमके पार सप्तऋषियोका स्थान है। एक जगह गोदावरीके किनारेपर सूर्पणखाकी पाषाण प्रतिमा है।

लोग कहते हैं कि पञ्चवटीसे कई एक कोस दक्षिण जटायुकी मृत्युका स्थान और कई एक कोस पूर्व अकोल्हा नामक गांवमें अगस्त्यमुनिके आश्रमका स्थान, अगस्त्यकुण्ड, सुतीक्ष्ण मुनिके आश्रमका स्थान और अमृतवाहिनीनदी तीर्थ है। अकोल्हासे कई एक कोस पश्चिम साईखेड़ा नामक गाँवमें मारीचकी मृत्युका स्थान है।

पाण्डव गुफा—इसको अङ्गरेज लोग लेनाकेव्ज अर्थात् लेनाकी गुफा कहते हैं। नासिक कसबेसे ४$\frac{3}{4}$ मील पश्चिम-दक्षिण एक पहाड़ीके पादमूलके पास तक पक्की सड़क है। पहाड़ीके नीचेसे गुफाके पास तक पगडण्डी मार्ग है। पासकी भूमिसे लगभग ४५० फीट ऊपर उस पहाड़ीके उत्तर बगलपर लगभग ५०० गजकी लम्बाईमें छोटी बड़ी २१ गुफा हैं; जिनको चौथी सदीमें बौद्ध लोगोने बनवाया था, जो अब पाण्डव गुफा करके प्रसिद्ध हैं। उनमेंकी अनेक बौद्ध मूर्त्तियोंको लोग हिन्दुओंके देवता कहते हैं। गुफाओंमे जोड़ किसी जगह नहीं है, क्योंकि पहाड़ीके भीतरसे पत्थर निकालनेसे वे सम्पूर्ण गुफा मन्दिर तैयार हुए है। पगडण्डी मार्गके शिरके पास ३७ फीट लम्बी, २९ फीट चौड़ी और १० फीट ऊँची चिपटी छत वाली एक गुफा है। उसके मध्यके कमरेके चारों ओर १६ कोठरी और मध्यमें भैरवकी मूर्त्ति है जिसके दोनों तरफ एक एक स्त्रीकी प्रतिमा बनी हुई हैं।

दूसरी गुफा अर्थात् कमरा ५७ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है। उसके तीन बगलोंमे १८ कोठरियाँ और आगे ६ खम्भे लगे हुए सुन्दर दालान है। पश्चिम ओर एक गुफामें विश्वकर्मा आदिकी १२ मूर्त्तियाँ हैं। विश्वकर्माके दहिने तथा बायें एक एक स्त्री और सामने उसके भाई और पिताकी प्रतिमा है। पश्चिम ३$\frac{1}{2}$ फीट ऊँची गौतमकी मूर्त्ति है। वहाँ जलसे पूर्ण २० फीट लम्बा एक सीताकुण्ड है। उसके बाद एक दूसरा कुण्ड मिलता है। उससे आगे सीढ़ियों द्वारा एक कमरेमें जाना होता है, जिसके चारों बगलोंमें ७ छोटी कोठरियाँ और उत्तर अखीरमें पार्वतीकी घिसी हुई मूर्त्ति है।

उससे पूर्व ४६ फीट लम्बी और २७ फीट चौडी एक बड़ी गुफा है, जिसके चारों बगलोंमे २२ कोठरियाँ बनी हुई हैं। उस गुफामे भीम, अर्जुन, युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव, द्रौपदी और कृष्णकी पुरानी मूर्त्ति है।

कभी कभी एक आदमी वहाँ रहता है। गुफा निर्जन स्थानमें है। बहुत लोग देखनेके लिये वहाँ जाते हैं।

नासिक शहरसे करीब २ मील पूर्व रामसेजकी पहाड़ीमें गुफाओका एक झुण्ड है, परन्तु वह प्रसिद्ध नहीं है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत— (वनपर्व, ८३ वाँ अध्याय) पंचवटी तीर्थमें जानेसे बड़ा फल होता है और स्वर्ग मिलता है। वहाँ साक्षात् वृषवाहन शिव निवास करते हैं, उनकी पूजा करनेसे मनुष्य सिद्ध होजाता है।

(८४ वाँ अध्याय) गोदावरी नदीमें स्नान करनेसे गोमेध यज्ञका फल होता है और वासुकीका उत्तम लोक मिलता है। वहाँ वेणनदीके सङ्गममें स्नान करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल होता है।

वाल्मीकिरामायण-(अरण्य काण्ड, १३ वाँ सर्ग) रामचन्द्रजीने अगस्त्य मुनिके आश्रम पर जाकर उनसे अपने रहनेका स्थान पूछा। मुनि बोले कि हे राघव! यहाँसे एक योजन पर गोदावरी नदीके समीप पंचवटी नामसे विख्यात एकांत पवित्र तथा रमणीय देश है, तुम वहाँ जाकर आश्रम बनाकर रहो। देखो वह महुओंका महावन देख पड़ता है, उत्तरकी ओरसे जानेपर एक वटका वृक्ष मिलेगा, उसीके पास पर्वतके समीप पंचवटी नामक वन है।

राम और लक्ष्मण अगस्त्य मुनिसे विदा हो ऋषिके कहे हुए मार्गसे पंचवटीको पधारे। (१४ वाँ सर्ग, रास्तेमें जटायु गृद्धसे भेंट हुई। (१५) रामचन्द्रजी पंचवटी पहुँच कर लक्ष्मणसे बोले कि देखो यह गोदावरी नदी, जो अति दूर भी नहीं है, देख पड़ती है। यहाँके पर्वत अनेक कन्दरों तथा स्थान स्थानमें सुवर्ण, रजत और ताम्र धातुओसे सुशोभित हैं, जान पड़ता है कि इनमें खिड़कियाँ बनी हैं। वे श्रृङ्गार किये हुए हाथियोके समान मनोरम देख पडते है। उस समय लक्ष्मणजीने मिट्टीके अनेक स्थान और बाँसके खम्भाओं, शमी वृक्षकी शाखाओंकी टट्टियोंकी दीवारो और पत्तोंके छप्परसे मनोहर पर्णकुटी बनाई। उसमें वे लोग निवास करने लगे। (१६ वाँ सर्ग) शरदृऋतु बीत कर हेमन्तऋतु प्राप्त हुई।

(१७ वाँ सर्ग) एक समय रावणकी बहिन शूर्पणखा नामक राक्षसी वहाँ आई। वह रामचन्द्रकी सुन्दरता देख कामसे मोहित होगई। उसने रामचन्द्रसे कहा कि मैं तुम्हारे भाई सहित सीताको खा जाऊंगी; तुम मेरे पति होकर मेरे साथ दण्डक वनमें विहार करो। (१८ वाँ सर्ग) रामचन्द्र बोले कि मैं तो ब्याहा हूँ, मेरा छोटा भाई लक्ष्मण यदि भार्य्याकी आकांक्षा रखता हो, तो तुम उसीको अपना पति बनाओ। तब वह राक्षसी शीघ्र लक्ष्मणके पास जाकर उनसे बोली कि तुम्हारे रूपके योग्य मैं भार्य्या हूँ, तुम मेरे साथ दण्डकारण्यमें विहार करो। लक्ष्मणने कहा कि मैं तो रामचन्द्रका दास पराधीन और असमर्थ हूँ, तुम उन्हींकी छोटी पत्नी बनो। तब शूर्पणखा रामचन्द्रके पास जाकर बोली कि हे राम! तुम अपनी पत्नीको अङ्गीकार कर मुझे नहीं मानते हो; मैं अभी इस

मानुषोंका भक्षण कर जाऊंगी। ऐसा कह वह सीतापर झपटी। रामचन्द्र उसको रोककर लक्ष्मणसे बोले कि इस राक्षसीको कुरूप करो। तब लक्ष्मणने क्रोध कर खड्ग निकाल शूर्पणखाके नाक और कान काट लिये।

शूर्पणखा महाभारी नाद करती हुई महावनमें घुस गई। उसके अनन्तर उसने जन-स्थानमें खर नामक अपने भाईके समीप जाकर उससे सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया। (१९ वाँ सर्ग) खरने रामचन्द्रको मारनेके लिये शूर्पणखाके साथ १४ महाबली राक्षसोंको भेजा। (२० वाँ सर्ग) जिनको रामचन्द्रने मार डाला। शूर्पणखाने खरके पास जाकर सब वृत्तान्त कह सुनाया। (२२ वाँ सर्ग) खरने चुने हुए १४००० राक्षसोंकी सेना लेकर प्रस्थान किया। (२३ वाँ सर्ग) राक्षस वीरोंकी सेना शीघ्र आकर राम, लक्ष्मणके पास उपस्थित हुई। (२४ वाँ सर्ग) रामचन्द्रने लक्ष्मणसे कहा कि तुम वैदेहीको लेकर दुर्गम पर्वतकी गुहामें जा बैठो। तब लक्ष्मण सीताको लेकर धनुष बाण धारण कर, बड़ी दुर्गम गुहामें चले गये। (२५ वाँ सर्ग) रामचन्द्र और राक्षसोंका युद्ध होने लगा। (२६ वाँ सर्ग) अकेले रामचन्द्रने क्षणमात्रमें १४ सहस्र राक्षसोंके साथ दूषणको मार डाला। उस समय संग्राम भूमिमें खर और त्रिशिरा बच गये थे। (२७ वाँ सर्ग) रामचन्द्रने तीन बाणोंसे त्रिशिरा सेना-पतिके तीनों मस्तक काट गिराये। (३० वाँ सर्ग) खर राक्षसभी बड़ा युद्ध करनेके उपरान्त रामचन्द्रके हाथसे मारा गया।

(३१ वाँ सर्ग) रावणने अकम्पन राक्षसके मुखसे जन-स्थानके रहनेवाले खर आदि राक्षसोंके मारे जानेका वृत्तान्त सुना। उसी समय वह खर युक्त रथ पर चढ़ मारीचके आश्रममें जा पहुँचा। रावण मारीचसे बोला कि रामने मेरा समाज नष्ट कर डाला; मैं उसकी स्त्रीको हर लाऊंगा; तुम मेरी सहायता करो। मारीचने रावणको जब बहुत समझाया, तब वह जानकी हरणके कामसे निवृत्त हो लंकामें लौट गया।

(३२ वाँ सर्ग) शूर्पणखा खर आदि राक्षसोंके वधसे बड़ी व्याकुल हो लंकामें गई। (३५ वाँ सर्ग) उसने रावणसे सब वृत्तान्त कह कर उसको धिक्कार दिया। तब रावण रथारूढ़ हो समुद्रके पार एकान्त पवित्र वनमें तपस्वी रूपी मारीचके पास फिर पहुँचा। (३६ वाँ सर्ग) रावण बोला कि हे मारीच! जिसने मेरी बहिनकी नाक और कान काट-कर उसको विरूप कर दिया है; मैं उसकी भार्य्या सीताको हर लाऊंगा। इस काममें तुम मेरी सहायता करो। (४० वाँ सर्ग) मारीचने फिर बहुत समझाया; तब रावण बोला कि यदि तुम मेरा यह कार्य्य नहीं करोगे, तो मैं अभी तुम्हें मार डालूंगा।

(४२ वाँ सर्ग) जब किसी तरहसे रावणने मारीचका वचन नहीं माना तब वह रावणके साथ रथमें बैठ रामचन्द्रके आश्रममें पहुँचा और झट मृग बनकर रामचन्द्रके द्वारपर चरने लगा। उस कालमें वह अति अद्भुत रूप मृग बना था। (४३ वाँ सर्ग) सीता मृगको देख प्रसन्न हो रामचन्द्रको देख लक्ष्मणको पुकारने लगी। तब दोनों भाई उधर देखने लगे। मृगको देख लक्ष्मण शंका युक्त हो बोले कि मैं तो इसको मारीच राक्षस जानता हूँ, यह मायासे चमकीला रूप बना है। सीताने लक्ष्मणकी बातको सुनी, अनसुनी कर रामचंद्रसे कहा कि हे आर्य्य पुत्र! यह परम मनोहर मृग मेरे मनको हरे लेता है, तुम इसको हमारी क्रीडाके लिये ले आओ, यदि यह जीता न मिलेगा, तब भी इसकी खाल बहुत सुन्दर होगी।

(४४ वॉ सर्ग) रामचन्द्र भाईको सावधान कर धनुष वाण और खड्ग ले मृगके पीछे दौड़े। वह मृग वारवार छिप जाता था और दूर जाकर प्रकट होता था। इस प्रकारसे वह रामको आश्रमसे दूर लेगया। तव रामचन्द्रने मृगकी छातीमें वाणसे मारा, जिससे वह राक्षस उछलकर भूमिपर गिर पड़ा। वह मरनेके समय रामचन्द्रके तुल्य शब्द चिल्लाकर बोला कि हा सीते! हा लक्ष्मण! मरनेके समय वह मृगरूपको छोड़कर विशालरूप राक्षस होगया। (४५ वॉ सर्ग) सीता अपने पतिके तुल्य आर्त नादको सुन लक्ष्मणसे बोली कि तुम शीघ्र दौड़ो, रामचन्द्रको बचाओ। जव लक्ष्मण रामचन्द्रके शासनका स्मरण कर सीताके कहने परभी नहीं गये, तव सीता क्रुद्ध होकर बोली कि तुम अपने भाईके मित्र रूप शत्रु हो इत्यादि। लक्ष्मण सीताके दुर्वचनसे क्रुद्ध हो शीघ्रतासे रामके पास चले।

रावण एकान्त अवसर पाकर संन्यासीका वेष धर सीताके पास पहुँचा। वैदेहीने रावणका; जो ब्राह्मण अतिथिके वेषसे आया था, अतिथि सत्कार किया (४७ वॉ सर्ग) और उससे अनेक बातें की। उसके पश्चात् रावण बोला कि हे सीते! मैं राक्षसोंका राजा रावण हूँ; तुम मेरी पटरानी बनो। (४९ वॉ सर्ग) ऐसा कह रावणने संन्यासी वेष छोड़ अपने रूपको धारण कर सीताको पकड़ रथमें बैठाकर वहॉसे चल दिया। सीता किसी वन वृक्ष पर बैठे हुए जटायुको देखकर बोली कि हे जटायु! देखो यह पापी रावण अनाथके समान मुझको हर लेजाता है। (५१ वॉ सर्ग) ऐसा सुन जटायु रावणसे युद्ध करने लगा। प्रथम तो उसने रावणके रथको चूर कर दिया, परन्तु अन्तमे रावणने उसके दोनों पक्षो, पैरों और अगल बगलके देहके भागोंको खड्गसे काट डाला। तव जटायु गिर पड़ा, उसकी थोड़ी सांस रह गई। (५२ वॉ सर्ग) रावण सीताको लेकर आकाश मार्गसे चला और (५४ वॉ सर्ग) लङ्कामे जा पहुँचा।

(६० वॉ सर्ग) रामचन्द्रने लक्ष्मणके साथ अपने आश्रममें आकर अपनी पर्णकुटीको शून्य पाया। (६७ वॉ सर्ग) लक्ष्मणने कहा कि हे प्रभो! आप इसी जन स्थानमें सीताको ढूँढिये; क्योंकि यहॉ वहुत राक्षस निवास करते हैं और अनेक वृक्ष, लता, दुर्गमपर्वत, गड्हे और कन्दरायें हैं। यहॉकी भयंकर कन्दरायें नाना मृगगणोसे भरी है। उसके अनन्तर रामचन्द्रने उस वनमें ढूँढते २ रुधिरसे भरे हुए जटायुको देखा।

(६८ वॉ सर्ग) जटायु बोला कि हे राघव! राक्षसराज रावण माया करके सीताको हर लेगया। वह मेरे दोनों पक्षोको काट कर सीताको दक्षिण दिशामें लेगया है। ऐसा कहकर गृध्रराज जटायु मरगया। रामचन्द्रने चितामें जटायुका अग्निसंस्कार करके उसके नामसे पिण्डदान दिया। उसके पश्चात्दोनों भाइयोंने गोदावरी नदीमे स्नान करके गृध्रके नामसे तर्पण किया। उसके अनन्तर श्रीरामचन्द्र और लक्ष्मण सीताको ढूँढनेके लिये उससे आगे चले।

(अध्यात्मरामायणमें आरण्यकाण्डके तीसरे अध्यायसे ८ वें अध्याय तक यह कथा है; किन्तु उसमें लिखा है कि जब मारीच नामक राक्षस मायाका विचित्र मृग बनकर सीताके सन्मुख दौड़ने लगा, तब रामचन्द्रने जानकीजीसे कहा कि हे सीते! तुमको हर लेजानेके लिये रावण यहॉ आवेगा, इस लिये तुम अपनी आकृतिकी छाया कुटीमें छोड़कर एक वर्ष पर्यंत अग्निमें निवास करो। सीताजी अपनी पर्णकुटीमें अपनी मायाका स्वरूप छोड़कर अग्निमें प्रवेश करगई। मायाकी सीताको रावण हर लेगया)

कूर्मपुराण—(उपरि-भाग, ३६ वाँ अध्याय) गोदावरी नदी सब पापोंका नाश करने वाली है। उसमें स्नान तथा पितर और देवताओंके तर्पण करनेसे सम्पूर्ण प्रायश्चित्त छूट जाता है और सहस्र गोदानका फल मिलता है।

नासिक जिला—इसके उत्तर खानदेश जिला; पूर्व हैदराबादका राज्य; दक्षिण अहमदनगर जिला और पश्चिम थाना जिला है। सदर स्थान नासिक कसबा है। इस जिलेके पश्चिम भागके चन्दगांपके अतिरिक्त जिलेके सम्पूर्ण गाँव ऊँची भूमिपर हैं। पश्चिमी भाग, जिसमें बहुत छोटी पहाड़ियाँ तथा नाले हैं, डांग और पूर्वका भाग, जिसमें अच्छी तरहसे खेती होती है, देश कहलाता है। इस जिलेमें बहुतेरे पहाड़ी किले और लगभग १६०० वर्गमील जङ्गल है, जिसमें बाघ, तेंदुए, हरिन, भालू इत्यादि बनैले जन्तु रहते हैं।

सन् १८८१की मनुष्य-गणनाके समय नासिक जिलेके ५९४० वर्गमील क्षेत्रफलमें ७८१२०६ मनुष्य थे; अर्थात् ६८३५७९ हिंदू, ५१६८७ एनिमिष्टिक (जिनमें प्रायः सब भील हैं), ३५२९४ मुसलमान, ७६०९ जैन, २६४४ क्रुस्तान, ३८८ पारसी, १०१ यहूदी, २ सिक्ख और २ बौद्ध। हिंदुओंमें २७६३५९ कुन्बी, ७८५५८ कोली, ७०३५१ भेद, ३९३९३ बनजारा, २९०५३ ब्राह्मण, २५०९४ माली, १४८८९ धांगर, ११९५८ तेली, १०००३ चमार और बाकी में राजपूत, विराध, भंडारी, जंगम, कोस्टी, लिंगायत, मांग, सुतार इत्यादि जातियोंके लोग थे। नासिक जिलेमें महाराष्ट्री भाषा प्रचलित है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नासिक जिलेके कसबे नासिकमें २४४२९, मालेगांवमें १९२६१, योलामें १८८६१ और सिन्नेरमें १००१२ मनुष्य थे। इनके अतिरिक्त इगतपुरी और त्र्यंबक छोटे कसबे है।

सह्याद्रि पर्वतके बगलके नीचेके पश्चिमकी बस्तियोंके कोली, भील, कथोड़ी; वारली, ठाकुर इत्यादि जंगली जातियोके निवासी प्रायः सर्वदा एक स्थानपर नहीं रहते। जब उनके खेतोंके अन्न खर्च होजाते हैं, तब वे लोग खास करके गर्मीके दिनोंमें वनोंमें जाकर अपना निर्वाह करते हैं। वहाँ वे लोग वनोंकी ककड़ी काट २ बेंचते हैं और फल, मूल तथा जङ्गली जानवर और मछली खा करके रहते हैं।

इतिहास—जिस स्थान पर लंकाके राजा रावणकी बहिन शूर्पणखाकी नासिका अर्थात् नाक काटी गई, उस स्थानका नाम नासिक होगया। सन् ईस्वीके आरम्भसे लगभग २०० वर्ष पहिलेसे २०० वर्ष पीछे तक नासिक जिला अन्ध्रभृत्य वंशके राजाओंके, जो बौद्ध मतके थे, अधिकारमें था। उसके पीछे वह जिला समय समय पर चालुक्य, राठौर, चण्डोर और देवगिरिके यादव वंशवाले हिन्दू राजाओंके अधीन था। सन् १२९५ से सन् १७६० तक वह मुसलमानोंके अधिकारमें था, अर्थात क्रमसे देवागिरि सेनापति; गुलबर्गाके बहमनी खानदानके बादशाहके अहमदनगरके निजामशाही खानदानवाले और औरङ्गाबादके मुगल बादशाहके अफसर उस पर हुकूमत करते थे। मुसलमानोंने नासिक कसबेको अपने राज्यके एक विभागका सदर स्थान बनाया था। सन् १७६० से सन् १८१७ तक नासिक जिला महाराष्ट्रोंके अधीन था। पेशवाने नासिक कसबेको अपने राज्यकी एक राजधानी बनाई थी। उस समय कसबेकी उन्नति हुई थी। सन् १८१८ में बाजीराव पेशवाके परास्त होनेपर वह जिला अङ्गरेजी राज्यमें मिल गया। अङ्गरेजी राज्यमें होनेपर कस-

वेकी घटती होने लगी; किन्तु उसके पीछे रेलवे बन जानेसे तथा जिलेका सदर स्थान बननेसे कसवेकी अब बड़ी उन्नति हुई।

त्र्यम्बक।

नासिक कसवेसे १८ मील पश्चिम कुछ दक्षिण (१९ अंश, ५४ कला, ५० विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, ३३ कला, ५० विकला पूर्व देशान्तरमे) नासिक जिलेमें त्र्यम्बक एक म्युनिसिपल कसबा तथा पवित्र तीर्थ स्थान है। नासिकसे त्र्यम्बक तक पक्की सडक बनी है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय त्र्यम्बक कसबेमें ३८३९ मनुष्य थे; अर्थात् ३६८४ हिंदू, १३० मुसलमान, १६ जैन और ९ क्रस्तान।

त्र्यम्बक जाने आनेके लिये मैंने नासिकमें ४ रुपये पर एक तांगा किराया किया था। मार्गमें पत्थरके कई एक कूप; सड़ककी दहिनी ओर निर्वादीके समीप अहिल्याबाईका बनवाया हुआ पत्थरका एक सुन्दर तालाब और दो छोटे मन्दिर और वाड़ीके पास लगभग ९०० फीट ऊँची २ गावदुमी पहाड़ियाँ हैं। सडकके दोनो तरफ जगह जगह स्वाभाविक सुन्दर शकलकी कई पहाड़ियाँ देखनेमें आती हैं। वाल्मीकिरामायणके आरण्य काण्डमें लिखा है कि रामचन्द्रने लक्ष्मणसे कहा कि देखो यहाँके पर्वत शृङ्गार किये हुए हाथियोके समान मनोरम देख पड़ते हैं। त्र्यम्बक कसवेके आस पास द्वितियाके चन्द्रमाकी शकलमें १२०० फीटसे १५०० फीट तक ऊँची पहाड़ियोंकी श्रेणी है। एक पहाड़ी पर पुराना किला है।

त्र्यम्वक कसवेमें अनेक जलाशय, देवमन्दिर तथा बड़े मकान हैं। वहाँ बहुतसे पण्डोके मकान बने हुए हैं और खाने पीनेकी सब वस्तु सर्वदा मिलती हैं। उसके पासकी पहाड़ीसे सुप्रसिद्ध गोदावरी नदी निकली है। वहाँ शिवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे त्र्यंवक शिवका सुन्दर मन्दिर बना हुआ है। नासिक जानेवाले प्रायः सब यात्री त्र्यंवक जाते हैं। जब १२ वर्ष पर सिंह राशिके बृहस्पति और सूर्य होते हैं, तब त्र्यंवक तथा नासिकमें कुम्भयोगका बडा मेला होता है, जो संवत १९४१ (सन् १८८४ ईस्वी) के सिंहमासमें हुआ था और संवत १९५३ (सन् १८९६ ईस्वी) के सिंहमासमें होगा। (कुम्भयोगकी कथा भारतभ्रमणके पहिले खण्डमें प्रयागके वृत्तान्तमें देखियेगा)। उस मेलेके समय भारतवर्षके सब प्रान्तोंसे सब सम्प्रदाय वाले लाखों यात्री त्र्यंबकमें आकर स्नान करते हैं। त्र्यंबकतीर्थकी परिक्रमा करनेके समय पहाड़ियोंकी चढ़ाई उतराई मिलती है।

कुशावर्त तालाब–त्र्यवक बस्तीके पास कुशावर्त कुण्ड नामक चौकोना तालाब है। उसके चारों बगलोंपर पत्थरकी सीढ़ियाँ, तीन बगलोंमें २५ फीट ऊंचा मेहराबदार दालान, अनेक देवालय तथा धर्मशालायें, प्रत्येक कोनेके पास एक मन्दिर, पूर्व ओर पत्थरका फर्श और पूर्वोत्तर कनखलतीर्थ नामक पत्थरका छोटा तालाब है। वहाँके स्नानका मुख्य स्थान कुशावर्त तालाब है। गोदावरी नदीका जल पर्वतके शिखरसे उसके भीतर आता है। और भूगर्भमें बहता हुआ उस स्थानसे ६ मील दूर चक्रतीर्थमे जाकर प्रगट होता है। यात्रीगण कुशावर्तमें नारियल भेट देकर स्नान करते हैं। उसमें स्नानके समय धोती कचारना निषेध है।

कुशावर्तसे दूर एक पहाड़ीके पास गंगासागर नामक बड़ा तालाब है। उसके किनारे पर निवृत्ति देवीका मंदिर बना हुआ है।

त्र्यम्बक शिवका मन्दिर—कुशावर्तसे पूर्व २२५ फीट लम्बे घेरेके भीतर लगभग ८० फीट ऊँचा शिवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे त्र्यम्बक शिवका शिखर दार मन्दिर है। मंदिर अच्छे डौलका पहलदार है। उसके आगेका जगमोहन अर्थात् मंडप ४० फीट ऊंचा है, जिसके फर्शमें मार्बुलका एक कछुआ बना हुआ है। जगमोहनके आगे एक छोटे मंदिरमें नंदी बैल है। घेरेके भीतर सर्वत्र पत्थरका फर्श और मन्दिरके पश्चिम-दक्षिण अमृतकुण्ड नामक तालाब है। त्र्यंबक शिवके वर्तमान मंदिरको पहिले वाजीराव पेशवाने, जिसका राज्य सन् १७२१ से सन् १७४० तक था, बनवाया। उसके बनवानेमें ९ लाख रुपये खर्च पड़े थे। सर्व साधारण यात्री त्र्यम्बक शिवके निज मंदिरके भीतर नहीं जाने पाते हैं; जगमोहनमें खड़े होकर दर्शन करते हैं; पूजा वहांके पुजारी द्वारा चढ़ाई जाती है; किंतु ऐसा नियम मेलेके दिनोंमें नहीं रहता। लोग कहते हैं कि त्र्यंबक शिवके मंदिरके खर्चके लिये सरकारसे मासिक १००० रुपये मिलते हैं। प्रति सोमवारको शिवकी प्रतिनिधि मूर्तिकी पालकी धूमधामसे निकलती है।

ब्रह्मगिरि—त्र्यम्बक गांवके तीन ओर पहाड़ियां हैं। जिनमेंसे कुशावर्तसे ½ मील दूर गोदावारी नदीका मूल स्थान ब्रह्मगिरि नामक पहाड़ी है। वह वहांकी सब पहाड़ियोंसे ऊँची है। पहाड़ीके नीचेसे गोमुखी तक बम्बईके करमजी नामक भाटियाने सीढियां बनवा दी हैं। लगभग ३५७ सीढ़ियोंके ऊपर रामकुण्ड और लक्ष्मणकुण्ड और ६९० सीढ़ियोंके ऊपर गोदावरीके निकासका स्थान है। वहां एक मंडपमें डेढ़ हाथ लम्बा, १ हाथ चौड़ा और १ हाथ गहिरा पत्थरका कुण्ड है, जिसमें एक गोमुखीसे गोदावारीकी धारा गिरती है। उस स्थानको वहांके लोग गंगाद्वार कहते है। कितने लोग उस जलको कांवरमें भर कर दूर दूर तक ले जाते हैं। वहां गंगाजीकी मूर्ति है। यात्री लोग उस कुण्डमें पैसे तथा रेजकी डालते हैं। उसी कुण्डका जल नीचे होकर रामकुण्डमें, रामकुण्डसे लक्ष्मणकुण्डमें और लक्ष्मणकुण्डसे पत्थरकी नाली द्वारा, जो लगभग ९०० फीट लम्बी और १५ फीट चौड़ी है, त्र्यम्बक गांवके पास आया है। वह धारा कुशावर्तमें गुप्त होकर चक्रतीर्थके कूपमें प्रकट होती है। उस बड़े कूपसे सर्वदा जल निकलता है और नासिककी ओर जाता है।

ब्रह्मगिरिके पास जटाफटका और नील पर्वत नामक पहाड़ी है। जटाफटकासे झरनेका पानी गिरता है; नीलपर्वत पर धर्मशाला बनी है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—पद्मपुराण—(सृष्टि खंड, ११ वां अध्याय) त्र्यंबक तीर्थमें त्रिलोचन महादेव सदा निवास करते हैं।

कूर्मपुराण—(ब्राह्मी संहिता, उत्तरार्द्ध, ३४ वां अध्याय) त्र्यंबक तीर्थमें रुद्रकी पूजा करनेसे ज्योतिष्टोम यज्ञका फल मिलता है।

स्कंदपुराण—(सेतुबंध खंड, २० वां अध्याय) सिंहके बृहस्पति होने पर गोदावरी नदीमें स्नान करनेसे महत् पुण्य होता है।

जैमिनिपुराण—(११ वां अध्याय) सिंह राशि पर सूर्यके होने पर गोदावरी नदीमें स्नान करनेसे अन्य तीर्थोंमें स्नान करनेकी आवश्यता नहीं रहती।

सौरपुराण-(६९ वां अध्याय) गोदावरी नदीके निकास स्थान पर त्र्यम्बक नामक शिवलिंग है। उसके निकट ब्रह्मगिरि पर स्नान, जप, दान तथा ब्रह्मयज्ञ करनेसे सबका फल अक्षय होता है। जो मनुष्य वहाँ स्नान और शिवजीका दर्शन करता है, वह स्कंद और नंदीके समान शिवजीके समीप खेलता है।

वायुपुराण-(४३ वां अध्याय) सिंह राशिके बृहस्पति होने पर संपूर्ण तीर्थ गौतम क्षेत्रमें निवास करते हैं। सिंहस्थ बृहस्पतिमें गौतम क्षेत्रके अतिरिक्त अन्य तीर्थमे जाना निषेध है, किन्तु उससमय भी गयामें पिंडदान करना निषेध नहीं है।

वाराह पुराण-(७० वां अध्याय) गौतम ऋषिने दंडक वनमें घोर तप करके ब्रह्माजी-से ऐसा वर मांग लिया कि हमारे यहाँ अन्न आदि सब पदार्थ सर्वदा परिपूर्ण रहे। उसके पश्चात् वह भजनमें तत्पर रह कर अभ्यागतोको भोजन देने लगे। एक समय जब १२ वर्षका अवर्षण हुआ, तब वनके ऋषिगण गौतमके आश्रम पर जाकर इच्छाभोजन करते हुए दारुण समयको विताने लगे। जब वृष्टि होने पर पृथ्वी पर अन्न तथा शाक उत्पन्न हुए, तब ऋषि-योंने गौतमके शाण्डिल्य नामक शिष्यसे अपने जानेकी आज्ञा माँगी। शांडिल्यने कहा कि तुम लोग महर्षि गौतमसे आज्ञा लेकर जाओ। ऐसा सुन मरीचि ऋषि क्रोध युक्त होकर बोले कि क्या हम लोगोंने भोजनके लिये अपनी देहको बेंच दिये हैं, हम लोग अपनी इच्छासे जब चाहेंगे तब चले जायँगे। उस समय सब ऋषियोंने मायाकी एक गौ प्रकट करके उसको गौतमकी अन्नशालामें छोड़ दिया। गौतमजीने गौको देख कर उसके ऊपर जलका छींटा दिया। छिट्टाके लगनेसे वह गौ मर गई। ऋषियोंने कहा कि हे गौतम! तुमने गोवध किया, जब तक तुम्हारी गौहत्या नहीं छुटेगी तब तक हमलोग तुम्हारा अन्न नहीं भोजन करेंगे। उसके पश्चात् गोतमकी प्रार्थना करने पर ऋषियोंने कहा कि जब तुम इस गौको गंगाके जलसे स्नान कराओगे, तब यह मूर्छाको छोड़ कर सजीव होजायगी।

गौतमजी हिमालयमें जाकर गंगाके पानेके लिये शिवजीका तप करने लगे। कुछ कालके उपरान्त महादेवजी प्रकट हुए। गौतमने उनसे गंगाको मांगा। शिवजीने गौतमको अपनी जटाका एक खंड दिया। गौतमने अपने आश्रममें आकर उस जटाका जलविंदु गौके ऊपर छिटका, जिससे वह मायाकी गौ जीवित होगई और उस जलविंदुसे पवित्र नदी वह चली, जिसका नाम गोदावरी है। शिवजी प्रकट होकर गौतमजीसे बोले कि जो मनुष्य इस गोदावरी नदीमे स्नान करके पितरोंका पिंडदान और तर्पण करेगा उसके पितरगण नरकसे मुक्त हो स्वर्गमे जा बसेंगे।

शिवपुराण-(ज्ञान संहिता, ३८ वां अध्याय) शिवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे त्र्यंबक शिवलिङ्ग गोदावरीके तट पर विराजते हैं।

(५२ वां अध्याय) पूर्वकालमें महर्षि गौतमने अपनी पत्नी अहल्याके साथ दक्षिण दिशामें ब्रह्मगिरिके पास दशसहस्र वर्ष तक तप किया था। एक समय १०० वर्ष तक वर्षा नहीं हुई; उस समय बहुतेरे जीव मर गये और बहुतेरे वहाँसे भाग कर देशांतरोंमें चले गये। तब गौतमजीने वरुण देवताकी तपस्या की। वरुण प्रसन्न होकर प्रकट हुये। गौतमजीने वरुणसे यह वर मांगा कि यहाँ वर्षा होवे और मेघका जल मुझको मिले। उस समय वरुणकी आज्ञानुसार गौतमने एक गढ़ा खोदा; वरुणने उसको अक्षय जलसे पूर्ण कर दिया।

उसके पश्चात् वरुण बोले कि हे गौतम ! आजसे यह गढ़ा तीर्थ रूप होगा; यह क्षेत्र तुम्हारे नामसे लोकमें विख्यात होगा; इस क्षेत्रमें दान, हवन, जप तथा श्राद्ध करनेसे उनका फल अक्षय होगा। वरुणजीके चले जानेपर दुर्लभ जलको पाकर गौतमजी अपना नित्य नैमित्तिक कर्म करने लगे। उस स्थानपर अनेक प्रकारके वृक्ष, फल; फूल और धान्य उत्पन्न होने लगे। पृथ्वीमंडलमें गौतमका वन सबसे श्रेष्ठ हुआ। बहुतसे महर्षि अपने शिष्यों तथा स्त्री पुत्रोंके सहित वहां आकर निवास करने लगे। उन्होंने वहां धान्यकी खेती भी की। कुछ समयके पश्चात् ऋषियोकी पत्नियोंने ऋषियोंसे झूठ मूठ कहा कि अहल्या जल लानेके समय हम लोगोंको नित्य दुर्वचन कहती है; हम लोगोंके जीनेको धिक्कार है। (५३ वां अध्याय) उस समय ऋषिगण गणेशजीकी आराधना करने लगे। गणेशजीके प्रकट होनेपर उन्होंने उनसे ऐसा वर मांगा कि हे देवेश ! तुम ऐसा उपाय करो जिससे गौतम इस आश्रमसे निकाल दिए जायँ। गणेशजी दुर्वल गौका रूप धारण करके गौतमके यवके खेतमें चरने लगे। यह देख गौतमजी हाथमे एक तृण लेकर गौको निवारण करने लगे। उस तृणसे छूतेही वह गौ गिर कर प्राण रहित होगई। तब ऋषिगण अपने शिष्य और अपनी पत्नियों सहित गौतमको दुर्वचन कहने लगे तथा पाषाणोंसे उनकी ताड़ना करने लगे और कहने लगे कि तुम अपने परिवार सहित इस वनसे चले जाओ; तुम्हारे आश्रममें रहनेसे अग्नि तथा पितर हमारे दिये हुए अन्नको ग्रहण नहीं करेंगे। गौतमने ऋषियोकी अज्ञानुसार अपने आश्रमसे एक कोस दूर आश्रम बनाया। कुछ दिनोंके उपरान्त गौतमकी बड़ी प्रार्थना करने पर ऋषियोंने गौतमको प्रायश्चित्तका विधान वतलाया। ऋषियोंकी आज्ञानुसार गौतमने ब्रह्मगिरिकी परिक्रमा करके विधि पूर्वक पार्थिव पूजनका काम आरंभ किया। कुछ समयके पश्चात् पार्वतीके सहित महादेवजी प्रकट होकर गौतमसे बोले कि तुम इच्छित वर मांगो। गौतम बोले कि हे स्वामिन् ! आप मुझको पापसे रहित कीजिये और गंगाको दीजिये। पूर्व कालमे अपने व्याहके समय शिवजीने ब्रह्माको गङ्गाजल दिया था और उसका कुछ भाग रखलिया था। उन्होंने वही गङ्गाजल गौतमको दिया। तब गङ्गाजी स्त्री रूप होकर वोलीं कि हे ऋषीश्वरो ! मैं गौतमको पवित्र करके यहाँसे चली जाऊँगी। उस समय शिवजी वोले कि हे देवी ! २८ वें युगके वैवस्वत मन्वन्तर तक तुम यहाँ निवास करो। गङ्गाने कहा कि हे गौतम ! यदि पार्वती और अपने गणों सहित महादेवजी इस स्थानपर निवास करें, तो मैं यहाँ रहसकती हूँ। गङ्गाका ऐसा वचन सुन शिवजी बोले कि हे देवी ! मैं यहाँ स्थित होऊँगा। गङ्गाने भी शिवका वचन स्वीकार किया। (५४ वाँ अध्याय) उसी समय देवगण, ऋषिगण, अनेक तीर्थ तथा क्षेत्र वहाँ आकर गङ्गा और शिवकी स्तुति करने लगे। उन्होंने कहा कि हे गङ्गे ! जिस समय बृहस्पतिजी सिंह राशि पर स्थित होंगे, उस समय हम सब यहाँ आवेंगे और मनुष्योंके ११ वर्षके धोये हुए पापोंको दूर करदेंगे। अब लोकके हितके लिये तुम और शिवजी यहाँ निवास करो। जब तक सिंह राशिके बृहस्पति रहेंगे, तब तक हम लोग यहाँ निवास करेंगे। ऐसा सुन शिवजी वहाँ रह गये और गङ्गा भी स्थित होगई। उस समयसे जब सिंहके बृहस्पति होते हैं, तब सब क्षेत्र, पुष्करादि तीर्थ, गङ्गादि नदी और वासुदेवादिक देवता गोदावरीके तीर पर निवास करते हैं। जब तक वे वहाँ स्थित रहते हैं तब तक उनके स्थानोंमें जानेसे कुछ फल नहीं मिलता। जब तक सिंहके

गुरु रहें तब तक अन्य किसी तीर्थमें जाना उचित नहीं है। गौतमीके निकट महापातकके नाश करने वाले त्र्यंवक नामक ज्योतिर्लिंग शिव विख्यात हुए। ब्रह्म पर्वतके उदुम्बर वृक्षकी शाखासे गङ्गाकी धारा निकली। गौतमजीने उसमें स्नान किया। उसी दिनसे उस स्थानका नाम गङ्गाद्वार हुआ। जब गौतमके द्वेषी ऋषिगण गङ्गामें स्नान करने आये तब गङ्गा वहाँ अन्तर्द्धान होगई। जब आकाशवाणीके अनुसार गौतमके द्वेषी ऋषियोंने १०१ बार ब्रह्मगिरिकी प्रदक्षिणा की और गङ्गाकी आज्ञासे गौतमने गङ्गाद्वारसे कुछ आगे कुशाओंसे आवर्त किया, तब वहाँ गङ्गाजी प्रकट हुईं। उस दिनसे वह तीर्थ कुशावर्तके नामसे विख्यात होगया। उसमें स्नान करने वाला मनुष्य मुक्त होजाता है। गङ्गाद्वार, कुशावर्त और त्र्यंवक शिवके निकट कोटितीर्थमे स्नान करनेसे फिर जन्म नही होताहै। जो मनुष्य प्रथम (नासिकमे) रामचन्द्रका दर्शन करके त्र्यंवक शिव और गङ्गाद्वारका दर्शन करता है, उसका सम्पूर्ण पाप नष्ट होजाता है।

(विद्येश्वरसंहिता, १० वाँ अध्याय) महापवित्र गोदावरी नदी ब्रह्महत्या और गोहत्या पापको छुड़ानेवाली तथा रुद्रलोकको देनेवाली है। सिंह राशिपर बृहस्पति और सूर्यके होनेपर गोदावरीनदीमें स्नान करनेसे शिवलोक मिलता है।

थाना।

कल्याण जंक्शनसे १२ मील (नासिक रोडके रेलवे स्टेशनसे ९५ मील) पश्चिम-दक्षिण और बम्बईके विक्टोरिया स्टेशनसे २१ मील पूर्वोत्तर थानाका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके उत्तरी विभागमें सालसटके कोलके पश्चिम किनारेपर जिलेका सदर स्थान थाना नामक कसवा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय थाना कसवेमें १७४५५ मनुष्य थे, अर्थात् १३९१८ हिन्दू, १६११ मुसलमान, ११५८ कृस्तान, ३७८ पारसी, २७९ यहूदी १४३ जैन और ३८ अन्य।

थाना कसवेमें एक किला, पोर्चुगलवालोंका कथेड्रल, सरकारी कचहरी, खजाना, अस्पताल और कई एक जलाशय है। वहुतेरे सरकारी अफसर और अन्य लोग भी थाना कसवेमें रहते है और प्रतिदिन बम्बई शहरमें जाकर अपना अपना काम करते हैं। पूर्व समयमें थाना कसवेमें रेशमका वड़ा काम होता था, अब उसमें केवल १४ लूम अर्थात् बीननेकी कल हैं।

थाना जिला—इसके उत्तर पोर्चुगलके बादशाहके राज्यका दमन और अङ्गरेजी राज्यका सूरत जिला, पूर्व नासिक, अहमदनगर और पूना जिला, दक्षिण कुलावा जिला और पश्चिम समुद्र है। जिलेमें वैतरणी नामक एक छोटी नदी बहती है। सम्पूर्ण जिलेमें पहाड़ियोंके सिलसिले देखनेमें आते हैं। जिलेसे जलानेकी बहुत लकडी बम्बई शहरमे जाती है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय थाना जिलेके ४२४३ वर्गमील क्षेत्रफलमें ९०८५४८ मनुष्य थे, अर्थात् ८०६८४५ हिन्दू, ४२३५१ मुसलमान, ३९५४५ कृस्तान, १३०७८ पहाड़ी और जङ्गली जातियोंके लोग, ३३१५ पारसी, २५१७ जैन, ८९२ यहूदी और ५ अन्य। हिन्दुओंमे २२१३३५ कुन्वी, ११७७३२ अग्रिया (खेती करनेवाले),

८९४६७ कोली, ५२६४५ महारा, २४२९५ ब्राह्मण और बाकीमें भण्डारी, दुबला, बनजारा इत्यादि जातिके लोग थे; उनमें राजपूत केवल २७७२ थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय थाना जिलेके कसबे बन्दरामें १८३१७, थानामें १७४५५, भिवाड़ीमें १४३८७, कल्याणमें १२६०८, कुरलामें ११४६९ और बसीनमें ११२९१ मनुष्य थे।

इतिहास—१३ वीं सदीमें थाना कसबा एक प्रसिद्ध शहर तथा एक स्वाधीन राज्यकी राजधानी था। सन् १३१८ में मुबारकखिलजीने थानाको जीता। सन् १५२९ से थानाका मालिक पोर्चुगीजोंको कर देने लगा। सन् १५३३ में पोर्चुगीजोंने उसको ले लिया। १६ वीं सदीमें थाना कसबेमें ६००० आदमी रेशमका काम करते थे। सन् १७३७ में महाराष्ट्रोंने पोर्चुगीजोंसे थाना छीन लिया। सन् १७७४ में अङ्गरेजोंने थाना पर अपना अधिकार किया; किन्तु उसके पीछे महाराष्ट्रोंने उसको अङ्गरेजोंसे ले लिया। सन् १८१८ में बाजीराव पेशवाके परास्त होनेपर थाना जिला अङ्गरेजी राज्यमें मिल गया।

अलीबाग।

बम्बई शहरसे १९ मील दक्षिण समुद्रके किनारेपर बम्बई हातेके कुलाबा जिलेका प्रधान कसबा और अलीबाग सबडिवीजनका सदर स्थान अलीबाग नामक छोटा कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय अलीबागमें ६३७६ मनुष्य थे; अर्थात् ५६७४ हिन्दू, ४०७ मुसलमान, ६६ जैन, ५५ कृस्तान, २ पारसी और १७२ अन्य लोग।

अलीबागमें सबजजकी कचहरी, जेलखाना, अस्पताल, स्कूल, कष्टमहौस और एक उत्तम बाग है। कसबेसे लगभग १½ मील पूर्वोत्तर सन् १८७६ की बनी हुई एक झील है, जिससे कसबेमें पानी आता है। वह ३० फीट गहरी ७ एकड भूमिपर है। समुद्रके किनारेसे लगभग २०० गज दूर एक छोटे चट्टानी टापूपर कुलाबाका पुराना किला है। किलेसे दक्षिण पश्चिम समुद्रके जलमे लगभग ६० फीट ऊँचा गोलाकार चट्टान है, जिसपर अनेक जहाज ठोकर खाकर डूब गये हैं।

कुलाबा जिला—यह बम्बई हातेके कोकन अर्थात् दक्षिणी विभागमें एक जिला है। इसके उत्तर और पूर्वोत्तर बम्बईका बन्दरगाह और थाना जिला, पूर्व सह्याद्रि पहाड़ी और पूना तथा सतारा जिला, दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम रत्नागिरि जिला और पश्चिम जंजीराका राज्य और थोड़ी दूर तक समुद्र है। जिलेका प्रधान कसबा अलीबाग है। यह जिला १५ मीलसे ३० मील तककी चढ़ाईमें बम्बईके बन्दरगाहसे ७५ मील दक्षिण-पूर्व महाबलेश्वर पहाड़ीके पास तक सह्याद्रि पर्वत और समुद्रके बीचमें फैला हुआ है। समुद्रके पास बहुत जलाशय हैं; जिनमेंसे चन्द जलाशय भूमिसे पत्थर निकालकर बनाये गये हैं। इस जिलेमें बाघ और तेंदुए बहुत हैं। समुद्रके किनारेके पासके गांवोंमें बहुतसे मछुहे बम्बई भेजनेके लिये मछलियाँ एकत्र करते हैं। इसी जिलेमें रायगढ़का किला है, जहां सुप्रसिद्ध शिवाजी सन् १६७४ में राजसिंहासनपर बैठे और सोनेका तुलादान किया।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कुलाबा जिलेके १४९६ वर्गमील क्षेत्रफलमें ३८१६४९ मनुष्य थे; अर्थात् ३६०११७ हिन्दू, १७८९१ मुसलमान, २१३९ यहूदी, ११६४

जैन, ३०५ कृस्तान और ३३ पारसी। हिन्दुओंमें १५९३३५ कुन्वी, ४४१९१ अग्निया, ३४८४७ महारा, १४८६९ कोली, १३७८९ ब्राह्मण, ११२६० माली, ७३३२ गावली और वाकीमें भंडारी, लिङ्गायत, भांगर, जङ्गम आदि जातियोंके लोग थे; राजपूत केवल १६७ थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कुलावा जिलेके कसवे ऊरनमें ११४३२ और पनवेलमें १०४२० मनुष्य थे। अलीवाग इत्यादि कई इनसे छोटे कसवे हैं।

इतिहास—सन् ईस्वीके आरम्भके वाद अंध्रभृत्य वंशके राजा, जिनकी राजधानी कोल्हापुर था, कुलावाके मालिक थे। ६ ठीं सदीमें सम्पूर्ण उत्तरीय कोकनके सहित वह चालुक्य वंशके राजाके अधीन हुआ। १३ वीं सदीमें कुलावा जिलेपर देवगिरिके राजाका, १४ वीं सदीमें वहमनी वंशके वादशाहका और उसके पश्चात् क्रमसे गुजरातके वादशाह, मुगल वादशाह और महाराष्ट्र लोगोंका अधिकार हुआ। शिवाजीने २ छोटे किले वनवाये। जिनमेंसे एक रायगढ़का किला है। उन्होंने सन् १६६२ में कुलावाके किलेकी मरम्मत करवाई।

अग्रिया जातिका कांधोजी सन् १६९८ में महाराष्ट्रोंके जहाजोका अफसर था। उसका सदर स्थान वर्तमान वम्बई शहरसे दो तीन मील दूर कुलावाके किलेमें था। उसने सन् १७१३ में पेशवाकी अधीनता छोड़कर और जंजीराके सीदियोंको परास्त करके कोकनके किनारेके आस पास अपनी हुकूमत कायम की। उसकी राजधानी "विजयदुर्ग" था। सन् १७५६ में पेशवा और अङ्गरेजोंकी संमिलित सेनाओंने कांधोजीके वंशधरोंको परास्त करके विजयदुर्ग किलेको ले लिया। विजयदुर्ग पेशवाके अधीन हुआ। सन् १८१८ में जव पूनाके पेशवाका राज्य अङ्गरेजी सरकारने ले लिया, तव कांधोजीके वंशके मानाजी और रावोजी पेशवाके अधीन कुलावाके अधिकारी थे; जो उस समयसे अङ्गरेजी गवर्नमेंटके अधीन हुए। सन् १८४० में उस खानदानके दूसरे कांधोजीकी मृत्यु होने पर उसका राज्य वम्बईके अङ्गरेजी राज्यमें मिल गया।

लगभग २०० वर्ष हुए कि अली नामक एक धनी मुसलमानने वर्तमान अलीवाग कसवेके पास वहुतसे कूप और वाग वनवाये, जिनमेंसे वहुतेरे अवतक विद्यमान हैं, उसी कसवेका नाम अलीवाग पड़गया।

बाइसवां अध्याय।

(बंबई हातेमें) बंबई और एलिफेंटाके गुफामंदिर।

बंबई

पश्चिमके समुद्रके किनारे पर (१८ अंश, ५५ कला, ५ विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, ५३ कला, ५५ विकला पूर्व देशान्तरमें) प्राय. द्वीपके भीतर बंबई हातेकी राजधानी और उस हातेका प्रधान शहर तथा पश्चिमी भारतका वन्दरगाह वम्बई है। वम्बई शहरके विक्टोरिया नामक रेलवे स्टेशनसे पूना जंक्शन, धौंद जंक्शन और रायचुर होकर

७९५ मील दक्षिण-पूर्व मदरास शहर; पूना जंक्शन, धोंद्जंक्शन, वाड़ीजंक्शन, सिकन्दराबाद और देजवाड़ा जंक्शन होकर १२१९ मील पूर्व कुछ उत्तर कटक शहर; भुसावल जंक्शन, नागपुर, विलासपुर जंक्शन और आसनसोल जंक्शन होकर १२७८ मील पूर्वोत्तर कलकत्ता शहर; और अहमदाबाद, अजमेर, बाँदीकुई जंक्शन और रेवाड़ी जंक्शन होकर ८८८ मील उत्तर कुछ पूर्व दिल्ली शहर है।

बम्बई शहरसे पश्चिमोत्तर समुद्रके मार्गसे १९२ मील वेरावल बन्दर, ३४२ मील द्वारिका, ५०० मील करांची बन्दर, १६६४ मील अदन और ७९४७ मील इङ्गलैण्डका लन्दन शहर है।

बम्बई शहरसे एक सड़क पूर्वोत्तर कल्याण, अठगाँव, नासिक, धूलिया, मऊ, इन्दौर, फतेहाबाद, ग्वालियर इत्यादि नगर होकर आगे गई है और दूसरी सडक पूर्व कुछ उत्तर अहमदनगर, पैठन; नागपुर, भण्डारा, राजनन्दगाँव, रायपुर, फुलझर, सम्भलपुर, क्यौंझोर, मेदनीपुर, उलबड़िया होकर कलकत्तेमें पहुँची है।

बहुतसे आगबोट और जहाज बम्बईके बन्दरगाहोंमें लगते हैं तथा बन्दरगाहोंसे खुलते है। उनमेंसे "बृटिस इण्डिया स्टीम नेवीगेसन कंपनी" का आगबोट एक सप्ताहपर बम्बईसे खुलता है और गोआ, कारवार, मङ्गलूर, कलीकोट, तुतिकुड़ी इत्यादि पश्चिमी किनारेके बन्दरगाहोंमें होकर सिलोनके कोलम्बो शहरको जाता है। एक कम्पनीके आगबोट सप्ताहमें ३ दिन बम्बईके बन्दरगाहसे खुलते हैं और बिरावल, बंगलोर, पोरबन्दर, द्वारिका, मांडवी इत्यादि बन्दरगाह होकर करांची बन्दरमें पहुँचते हैं। उन आगबोटोंमें द्वारिकाके बहुत यात्री जाते हैं। द्वारिकाके यात्री २५—३० अथवा ३५ घंटेमें बम्बईसे द्वारिका पहुँच जाते हैं। आगबोटका महसूल एक आदमीका दूसरे क्लासके ४ रुपये और तीसरे क्लासके [illegible] रुपये, लगते हैं।

बम्बई शहरसे दो रेलवेकी दो लाइन दो तरफ गई हैं, तीसरे दरजेका महसूल प्रति मील २ पाई लगता है;—

(१) बम्बई शहरके कुलाबाके रेलवे स्टेशनसे उत्तर बम्बे, बड़ोदा और सेंट्रल इण्डियन रेलवे;—

मील—प्रसिद्ध-स्टेशन।

मील	स्टेशन
३	चरनी रोड।
८	दादर।
१०	माहिम।
११	बान्दरा कसबा।
१८	गुरगाँव।
२२	बोरवली।
२८	भयदर।
३३	वेसीन रोड।
९५	संजान।
१०९	दमनरोड।
११५	उदबादा।
१२५	बलसर कसबा।
१४९	नवसारी।
१६७	सूरत।
१९८	अङ्कलेश्वर।
२०४	भड़ोंच।
२२९	मियागाँव जंक्शन।
२४६	विश्वामित्री जंक्शन
२४८	बड़ोदा।
२७०	आनन्द जंक्शन।
२८१	नड़ियाद।
२९२	महम्मदाबाद।

३१० अहमदाबाद जंक्शन।

मियागाँव जंक्शनसे २० मील पूर्वोत्तर डभोई जंक्शन; डभोईसे १० मील दक्षिण चन्दोद और ९ मील पूर्व बहादुरपुर।

विश्वामित्री जंक्शनसे पूर्व १२ मील डभोई जंक्शन और २१ मील बहादुरपुर।

आनन्द जंक्शनसे पूर्व कुछ उत्तर १४ मील अमरेठ कसबा, १९ मील डाकौर, ४९ मील गोधड़ा, ९४ मील दोहड कसबा, और १६४ मील रतलाम जंक्शन और आनन्दसे पश्चिम-दक्षिण १४ मील पेतलाद कसबा। (आगे अहमदाबादमें देखो)।

(२) बम्बई शहरके विक्टोरिया नामक रेलवे स्टेशनसे पूर्वोत्तर ग्रेट इण्डियन पेनिनसूला रेलवे,—

मील-प्रसिद्ध स्टेशन।

६ दादर।
१७ भण्डूप।
२१ थाना
३३ कल्याण जंक्शन।
५९ अठगाँम।
७५ कसारा।
८५ इगतपुरी।
११३ देवलाली।
११६ नासिक।
१४६ लासलगाँव।
१६२ मनमार जंक्शन।
१७८ नन्दगाँव।
२०४ चालीस गाँव।
२३२ पचौरा।
२६१ जलगाँव कसबा।
२७६ भुसावल जंक्शन।
३१० बुरहानपुर।
३२२ चाँदनी।
३५३ खण्डवा जंक्शन।
४१६ हरदा।
४४२ सिउनी।
४६३ इटारसी।
५३६ गाडरवाडा जंक्शन।
५६४ नरसिंहपुर।
६१६ जबलपुर।

कल्याण जंक्शनसे दक्षिण पूर्व ४ मील अमरनाथ, २१ मील नेरल, २९ मील कर्जत, ४५ मील खण्डाला, ४७ मील लोनवली, ५२ मील कारली, ६३ मील वाडगाँव, ६५ मील तलेगाँव, ७६ मील चिचवाड़ा, ८३ मील किर्की और ८६ मील पूना जंक्शन।

मनमार जंक्शनसे दक्षिण ९५ मील अहमदनगर और १४६ मील धोंद जंक्शन।

भुसावल जंक्शनसे पूर्व ओर ५६ मील जलंब जंक्शन, ६४ मील सेगाँव, ८७ मील अकोला, १३६ मील बडनेरा जंक्शन, ९५ मील वरधा जंक्शन और २४४ मील नागपुर शहर।

खंडवा जंक्शनसे पश्चिमोत्तर राजपूताना मालवा रेलवे पर ३७ मील मोरतका, ७३ मील मऊ, ८६ मील इन्दौर, १११ मील फतेहाबाद जंक्शन १६० मील रतलाम

जंक्शन और २७७ मील चित्तौरगढ़।

इटारसी जंक्शनसे उत्तरकी ओर इण्डियनामिडलेण्ड रेलवे पर ११ मील हुशङ्गावाद, ५७ मील भोपाल जंक्शन, ९० मील भिलसा, १४३ मील वीना जंक्शन, १७९ मील ललितपुर और २३८ मील झाँसी जंक्शन।

जबलपुरसे पूर्वोत्तर ईष्ट इण्डियन रेलवे पर ५७ मील कटनी जंक्शन, १६६ मील मानिकपुर जंक्शन २२४ मील नैनी जंक्शन और २२८ मील इलाहाबाद।

बम्बई शहरमें रेलवेके १३ स्टेशन हैं;—शहरके उत्तरके दादरके स्टेशनसे दक्षिण-पश्चिम ग्रेटइण्डियन पेनिनसुला रेलवे पर १ मील परेल, २ मील कर्रीरोड, ३ मील चिंचपोकली, ४ मील भायखला, ५ मील मसजिद और ६ मील विक्टोरिया स्टेशन और दादरके स्टेशनसे दक्षिण बम्बे, बड़ोदा, सेंट्रल इण्डियन रेलवेपर १ मील एलफिस्टोन रोड, ३ मील महालक्ष्मी, ४½ मील ग्रेंटरोड, ५¼ मील चरनीरोड, ६ मील मरीन लाइन, ६¾ मील चर्चगेट और ८ मील कुलावाका रेलवे स्टेशन है।

भोलेश्वर अथवा माधोदासकी धर्मशालामें उतरनेवालोंको मसजिदके रेलवे स्टेशनमें उतरना उचित है। विक्टोरिया स्टेशनपर बहुत लोग रेलगाड़ियोंसे उतरते हैं।

बम्बईमें ट्रामवे कम्पनीका काम कलकत्तेके ट्रामवेसे अधिक फैला हुआ है। कुलावामें ट्रामवेका खतमी स्टेशन है, जिसके अस्तवलमें लगभग ६५० घोड़े रहते हैं। *

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बम्बई शहरमें ८२१७६४ मनुष्य थे; अर्थात् ५१८०९३ पुरुष और ३०३६७१ स्त्रियाँ। इनमें ५४३२७६ हिन्दू, १५५२४७ मुसलमान, ४७४५८ पारसी, ४५३१० क्रुस्तान, २५३२५ जैन, ५०२१ यहूदी, १९० बौद्ध और ३७ अन्य थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें पहिला शहर है, किन्तु कलकत्तेमें हवड़ाको मिला देनेसे वही पहिला शहर होता है।

बम्बई शहरका क्षेत्रफल २२ वर्गमील है। उसकी लम्बाई कोलाबाकी दक्षिणी सीमासे जियन कसबे तक, जिसपर होकर रेलवे लाइन सालसट टापूको गई है, ११½ मील और इस्लेनेड (कोटका मैदान) के उत्तरके भागकी चौड़ाई ३ मीलसे ४ मील तक है। उत्तरके अतिरिक्त बम्बई टापूके तीन तरफ समुद्र है। उसके दक्षिणका भाग क्रम क्रमसे घटकर दक्षिणमें नोकके समान होगया है, जिसको लोग कुलावा पाइन्ट कहते हैं। टापूके किनारेकी भूमि नीची है। वहाँका सबसे ऊँचा मालावार नामक शिखर समुद्रके जलसे केवल १८० फीट ऊँचा है।

बम्बई टापूके आस पास खास करके उसके उत्तर और पूर्व बेसीन, ट्राबी, वरसोवा, सालसट, ट्रम्बे, बोल्ड, बोमन्स, आइलेंड, कुलावा, एलिफेंटा; बुचरस आइलेंड, जीवेंट आइलेंड और करेंजा नामके ११ टापू हैं; जिनमेंसे कई टापुओंपर अनेक पहाड़ियाँ हैं। बम्बई शहरसे उत्तर सालसट नामक बड़ा टापू है। बम्बई शहर और सालसटके बीचमें

* १९०९ सन्से ट्रामवे बिजलीसे चलने लगी है।

कजवे और पुल बना है, जिसपर होकर रेलवे लाइन निकली है । सालसट टापू थाना जिले-का एक सबडिवीजन है, उसका क्षेत्रफल २४१ वर्गमील है । उसके मध्य भागमें उत्तरसे दक्षिण तक पहाड़ियोंका चौडा सिलसिला है, जिसका एक शिखर समुद्रके जलसे लगभग १५३५ फीट ऊँचा है । सालसटकी पहाड़ियोंमे बहुतसे गुफा मन्दिर बने हुए है, जिनमें कनारीके गुफामन्दिर अधिक प्रसिद्ध है ।

बम्बई शहरके देशी महल्लोंकी सड़के कम चौड़ी तथा जगह जगह पर टेढ़ी है, किन्तु वे बहुत साफ रहती हैं । सड़कोके बगलोमें तीन मञ्जिले, चौमञ्जिले तथा पञ्चमञ्जिले, कोई कोई छः मञ्जिले मकान बने हुए हैं, जिनमेंसे चन्द मकानोंमे बहुत कारीगरीका काम है । जगह जगह मन्दिर और मसजिद देखनेमें आती है । शहरका वह भाग, जो किला कहलाता है, शहरके सम्पूर्ण भागोंसे अधिक प्रसिद्ध है । उसमें अधिक यूरोपियन लोग रहते हैं, चौड़ी सड़कें तथा बड़े बड़े मकान बने है और बड़ी भीड़ देखनेमें आती है । उस भागमें बहुतसे सरकारी आफिस, कारोबारके मकान और दूकाने घनापनके साथ बनी हुई हैं । इनमेसे बहुतेरे मकान बहुत बड़े है, उनके मुकाबलेके मकान कलकत्तेके अतिरिक्त हिन्दुस्तानके दूसरे शहरोंमें प्रायः देखनेमें नहीं आते है । उस भागके और खास देशी शहरके वीचमे एक बड़ा मैदान है । बम्बई शहरकी सड़कोंपर आदमियोंकी बडी भीड रहती है । वहां प्राय. सब देशों तथा टापुओंके लोग अपनी अपनी पोशाक पहने हुए देखनेमें आते है । कोटके मैदानमें सरकारी इमारतोंकी सुन्दर लाइने हैं, जिनमें सेक्रेटरियट, यूनिवरसिटी, सिनेटहाल, नई हाईकोर्ट, पोष्टआफिस, टेलीग्राफ आफिस, सरकारी कामोंके मुहकमेके अनेक आफिस इत्यादि उत्तम इमारतें हैं । किलेकी भूमिपर रात्रिमें विजुलीकी रोशनी होती है । बम्बईके बहुत प्रसिद्ध इमारतोंमेंसे एलिफिष्टोन सर्किल, कष्टमहौस, टाउनहाल, टकसाल और कथेड्रल है । बन्दरगा-हमें भांति भांतिके जहाजों और आगबोटोंका उत्तम दृश्य दृष्टिगोचर होता है ।

पश्चिम किनारेपर कुलाबाचर्च और यूनिवरसिटी अर्थात् विश्वविद्यायल, जिसमें घडीका बड़ा बुर्ज है, देखने लायक है । ग्रेंटरोडपर नार्थबुक बाग, मुम्बा देवीसे दक्षिण जुमा मसजिद है ।

किलेकी जगहसे ३½ मील पश्चिमोत्तर मालाबार पहाडी है; जिसपर यूरोपियन, पारसी तथा अन्य अमीर लोगोके विले और बङ्गले बने हुए हैं और सुन्दर बाग लगे है । उसके दक्षिणी नोकपर गवर्नमेट हौस । पहाड़ीके चारोओर यूरोपियन लोगोकी बहुतसी को-ठियाँ हैं । शहरके पश्चिम बेकुला और मेंजगन, शहरतलीमे बहुतसे कल कारखाने हैं ।

बम्बईमें बहुतसे स्कूल हैं, जिनमें कई एक स्कूलोंमें खास करके लड़कियाँ पढ़ती है । वहाँ "आर्यमहिला समाज" नामक स्त्रियोंकी एक सभा है, जिसमें प्रायः शिक्षिता स्त्रीही वक्तृता देती हैं । पहिले पूनावाली पंडिता रमाबाई उस सभाकी सम्पादिका थी, उसके पश्चात् अहिल्याबाई नामक एक महाराष्ट्री स्त्री उस पदपर नियुक्त हुई । बम्बई शहरमें महाराष्ट्री, गुजराती इत्यादि भाषा प्रचलित हैं ।

बम्बई शहरमे प्रति वर्ष भादों सुदी चौथसे चौदस तक बहुत स्थानोंमें धूमधामसे गणेशचौथका महोत्सव होता है (पूनाके वृत्तान्तमें देखिये) । कार्तिकमें ५ दिनों तक दिवा-लीका उत्सव रहता है । दिवालीके दिन लोग बड़े धूम धामसे समुद्रकी पूजा करते हैं । बस-

न्तोत्सव बड़े समारोहसे होकर चैत्र वदी पंचमीको समाप्त होता है। दादरके रेलवे स्टेशनसे एक मील दूर माटुंगा नामक स्थानमें आषाढ़ सुदी एकादशीको विठोबा देवके उत्सवका मेला होता है। वहाँ विठोबा देव और अन्य देव देवियोंके मन्दिर बने हुए हैं।

बम्बईकी म्युनिसिपल्टीकी सफाई सराहनीय है। उसकी लगभग ८० लाख रुपयेकी वार्षिक आमदनी और इसी भांति खर्च है। शहरमें सर्वत्र जलकलकी नलें फैली हैं। रात्रिमें सड़कोंपर गैशकी रोशनी होती है। शहरका जल वायु उत्तम है। वहाँ न जाड़ेके दिनोंमें बहुत सर्दी और न धूपके दिनोंमें बहुत गर्मी पड़ती है। औसतमें सालाना वर्षा लगभग ७० इञ्च होती है। वहाँ समुद्रका साधारण ज्वार १४ फीट और पूर्णिमासीका ज्वार १७ फीट ऊँचा होता है।

कलकत्तेके सूर्योदयसे १ घण्टा और ३ मिनट पीछे बम्बई शहरमें सूर्योदय होता है। जब बम्बई शहरकी लोकल घड़ीमें ५ बजके ३० मिनट होते हैं; उस समय दिल्लीमें ५ बजके ४७ मिनट; आगरामें ५ बजके ५० मिनट, मद्रास शहरमें ६ बजके शून्य ० मिनट, इलाहाबादमें ६ बजके ७ मिनट और कलकत्तामें ६ बजके ३३ मिनटका समय रहता है; अर्थात् बम्बई शहरके सूर्योदयसे १७ मिनट पहिले दिल्लीमें, २० मिनट पहिले आगरामें, ३० मिनट पहिले मद्रास शहरमें, ३७ मिनट पहिले इलाहाबादमें और १ घण्टा ३ मिनट पहिले कलकत्तामें सूर्योदय होता है।

धर्मशालायें—मार्केट (बाजार) के पास माधोदासजीकी धर्मशाला मुसाफिरोंके आरामकी जगह है। भोलेश्वर महादेवके मन्दिरके पास एक बड़ा मकान बना है, उसमें भी मुसाफिर उतरते हैं। बम्बा देवीके सरोवरके पास कुछ लोग टिकते हैं ❀। मैं माधोदासजीकी धर्मशालेमें टिका था।

महारानी बाग—(विक्टोरिया गार्डन)—शहरके उत्तरी भागमें परेल रोडके पूर्व किनारेपर ३४ एकड भूमिपर महारानी बाग है, जिसमें म्युनिसपालिटीके प्रति वर्ष १०००० रुपये खर्च पड़ते हैं। बागमे एक घड़ीका टावर है। बागके वृक्ष, झाड़ी और फूल सभी खूबसूरतीके साथ लगाये तथा सजाये गये हैं। उसके भीतर सड़के और फौआरे उत्तम रीतिसे बनाये गये है। बागके एक भागमें जगह जगह पशु पक्षी और जल जन्तुओंके रहनेकी जगह बनी है, जिनमें बहुतेरे बाघ, भालू, हरन, सर्प, मूसा, सुतुरमुर्ग आदि जन्तु रहते हैं। एक गोलाकार हौजमें पत्थरके ढोंकोंके नीचे और छोटे अशोकके वृक्षोंपर बहुत सर्प हैं।

अजायबखाना—महारनी बागके पश्चिमी हिस्सेमें सड़कसे थोड़ेही पूर्व एलबर्ट मिउजियमकी दो मञ्जिली इमारत है, जिसका काम सन् १८६२ में आरम्भ और सन् १८७१ में समाप्त हुआ। भीतर मार्बुलका फर्श और दीवार, छत तथा खम्भोंमें जगह जगह सुनहरा काम है। उसके नीचेकी मञ्जिलमें महारानी विक्टोरियाके स्वामी प्रिन्स एलबर्टकी मार्बुलकी प्रतिमा है। छोटा अजायबखाना होनेपर भी उसमें बहुतसी मनोहर वस्तुयें देखनेमें आती हैं। उसमें विविध भांतिके अन्न, बीज, लकड़ी, पत्थर, धातु, हथियार, कपड़ा, नकली फल तथा तरकारी, दरियाई चीज, प्रतिमा, मरी हुई चिड़ियायें और बड़ीबड़ी हड्डियाँ, एक बखतर, एक बखतर पहना हुआ घोडसवार इत्यादि सामान रक्खे हुए हैं।

❀ पासही हीराबाग नामकधर्मशाला बहुत उत्तम सबके टिकनेलायक बनगई है।

महालक्ष्मीका मन्दिर—परेलसे दक्षिण-पश्चिम महालक्ष्मी स्थानमें महालक्ष्मीजीका सुन्दर मन्दिर वना हुआ है। महालक्ष्मीजीका स्थान प्राचीन है।

पिञ्जरापोल–भोलेश्वर नामक स्थानमें पिञ्जरापोल अर्थात् पशु आश्रम है। बम्बेके धार्मिक लोग चन्दा करके वहाँ जन्तुओंको पालते हैं। बम्बेके लोग रास्तेमें कुत्तेको भी पानेपर पिञ्जरापोलमें रख देते हैं, इसी तरह दुर्बल जन्तु प्रतिपालित होते हैं। वह कई एकड़ भूमिपर वना है। पहले भागमें रोगी और बूढ़े जानवर, दूसरेमें बकरे, भेड़ और गदहे, तीसरेमें भैंस और चौथे भागमे कुत्ते रहते हैं।

मुम्बा देवी–उसी देवीके नामसे शहरका नाम मुम्बई और बम्बई है। कालबा देवी सड़कके पास एक सरोवरके समीप बम्बा देवीका लम्बा मन्दिर है। उसमें मुम्बा देवी, शिव, हनूमान और गणेशकी अलग २ कोठरी हैं; सबके आगे एक दालान है, जिसका फर्श उजले और काले मार्बुलके टुकडोंसे वना है। मुम्बा देवीके सिंहासनमे चाँदी पत्र जड़ा है, उनका मुकुट सुनहरा है। मन्दिरमें समय समय पर दर्शकोंकी भीड़ रहती है।

द्वारिकाधीशका मन्दिर–इस्प्लेनेडके पास परेल जानेवाली सड़कके दहिने तरफ ४० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा द्वारिकाधीशका मन्दिर है। मन्दिरके दरवाजेपर चाँदीका पत्तर जड़ा हुआ है। वह मन्दिर बम्बई शहरमे प्रसिद्ध है।

मालावार पहाड़ी–जैसे बम्बेका दक्षिणी भाग दोनों तरफसे घटता हुआ समुद्रमें चला गया है, जिसके दक्षिणके नोकको कुलावा पाइन्ट कहते हैं, वैसेही मालावार पहाडी बम्बेके पश्चिम प्रान्तसे समुद्रमें दक्षिण-पश्चिम गई है, जो समुद्रके जलसे १८० फीट ऊँची है। उस पर पारसियोंका समाधि स्थान, वालकेश्वरका मन्दिर और गवर्नमेंट हौस आदि उत्तम इमारत बनी हुई हैं। मालावारके उत्तर कम्बाला पहाड़ी है, दोनोंके बीचमें होकर एक राह पश्चिम ओर समुद्रके किनारे तक चली गई है।

पारसियोंका दोखमा–ग्रेंटरोडके रेलवे स्टेशनसे पश्चिम-दक्षिण और चरनीरोड स्टेशनसे सीधा पश्चिम मालावार पहाड़ीके ऊँचे शिखरपर समुद्रसे करीब १०० फीट ऊपर पारसियोंका दोखमा अर्थात् मुर्दे रखनेका मकान है। पारसी जातिके अतिरिक्त दूसरे मनुष्योंको पारसी पंचायतके सेक्रेटरीसे दोखमा देखनेके लिये आज्ञा लेनी होती है। एक सड़क दोखमाके टावरोंके उत्तर तरफ गई है, जिसको सर जमसिदजी जीजी भाईने वनवाया। उसने टावरोंके पूर्व और उत्तर १००००० गज मुरब्बा भूमिभी दी थी। वह दोखमा देखने लायक उत्तम इमारत है।

दोखमाके बाहरीके हातेके फाटकके भीतर ८० सीढ़ियाँ हैं। सीढ़ियोंको लांघ कर हातेके दहिने ओर फिरनेपर एक पत्थरकी इमारत मिलती है, जिसमें पारसी लोग मृतककी क्रियाके समय एबादत करते हैं। उस स्थानसे बम्बे शहरका उत्तम दृश्य हासिल होता है। समुद्रके पास रहनेसे वहाँकी हवा ठण्ढी रहती है। वहाँ एकही जगह गोलाकार ५ मीनार हैं। उनमेसे एक मीनारके बनानेमें जो १७६ फीट ऊँची है ३००००० रुपये और चार मीनारोंमेंसे प्रत्येकमें २००००० रुपये खर्च पड़े हैं।

प्रत्येक मीनारके भीतर मध्यमें कूपके समान गाड़ है। उनमें नीचेसे रास्ता है। गाड़के चारों तरफ मृत पुरुष, स्त्री और लड़कोंके रखनेके लिये अलग अलग पत्थरके बहुतेरे गोला-

कार स्थान बने हुए हैं। एक स्थानमें एक पारसीका मुर्दा रख दिया जाता है। मांसभक्षी पक्षियोंके आनेके लिये ऊपर रास्ते हैं। दोखमाके समीपके वृक्षोंपर गृद्ध, काक, सकुनी आदि पक्षी झुण्डके झुण्ड रहते हैं। वे मृतकको खा लेते हैं। पीछे उसकी हड्डियाँ बीचवाले गाड़में जलसे बहादी जाती हैं। उसके पश्चात् गाड़के नीचेके मार्गसे हड्डियोंको निकालकर गाड़ साफ किया जाता है। पारसी लोग अपने मृतकोंको न जलाते हैं और न भूमिमें गाड़ते हैं। वे लोग इसी भांति दोखमामें रखकर उनको पक्षियोंको खिला देते हैं। कोई कोई धनी पारसी अपने मकानहीमें खास दोखमा बना लिये हैं।

पारसियोंका वृत्तान्त—छठवीं सदीके पीछे जब मुसलमान लोग दूसरे देशोंमें जाकर बलसे लोगोंको अपने धर्ममें लाने लगे, तब बहुतसे पारसी अपने देश पारसको त्यागकर खुरासानमें जा बसे और बहुतेरे अपने प्राणके डरसे मुसलमान होगये। पारसके वर्तमान मुसलमान उन्हींके वंशधर हैं। भागे हुए पारसियोंने कुछ समयके पश्चात् मुसलमानोंके अत्याचारसे खुरासानसे भागकर पारसके समुद्रके अर्मज द्वीपमें आश्रय लिया। उसके कुछ दिन पीछे करीब ७०० पारसी मुसलमानोंके अत्याचारसे पीड़ित हो वहाँसे पूर्व दिशाको चले और समुद्रके रास्तेसे हिन्दुस्तानके निकट आकर काम्बे समुद्रके डिऊ नामक टापूमें रहने लगे; किन्तु वह द्वीप रहने योग्य नहीं था इस लिये वे वहाँ कुछ दिन रहकर सन् ७१७ ई० में दमनसे प्रायः २० मील दक्षिण संजान नामक स्थानमें आये। वहाँके राजा जयदेव राणाने उनको अपने राज्यमें रहनेकी आज्ञा दी। मुसलमानोंने हिन्दुस्तानमें आनेपर पारसियोंको मुसलमान बनानेके लिये जयदेव राणासे युद्ध किया। राणाके पराजय और निहत होनेपर पारसीगण संजानसे भागकर बाहारत नामक पहाड़पर १२ वर्ष तक छिपे रहे। उसके पश्चात् क्रमशः वंश विस्तार होनेपर पारसी लोग वहाँसे बान्सा और बान्सासे नौसारीमें जाकर रहने लगे। कुछ दिनोंके पीछे वे लोग नौसारीसे बारियामें चले गये। वहाँ कुछ समयके पश्चात् उन्होने सबल होकर वहाँके राजाको कर देनेसे इनकार किया। राजाने एक विवाहके समय बहुतेरे पारसियोंको मारडाला। जो पारसी वहाँसे प्राण लेकर भागे, उन्हीकी सन्तान क्रमशः बढ़कर भडौच, सूरत, बम्बे आदि शहरोंमें फैल गई। वर्तमान पारसी उन्हींके वंशधर हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय हिन्दुस्तानमें ८९९०४ पारसी थे; जिनमेंसे ४७४५८ बम्बे शहरहीमें रहते थे। इस समय भी थोड़े पारसी, पारस (ईरान) देशमें देखनेमें आते हैं।

पहले पारसी भी हिन्दुओंके समान अनेक देव देवीकी उपासना करते थे; परन्तु जौराष्ट्रा स्पिटामाके नये धर्म प्रचारके पीछेसे वे अहुर मज्दा नामक एक ईश्वरके उपासक हुए। पारसी कहते हैं कि जौरास्ट्रा स्पिटामा एक पवित्र अग्निको स्वर्गसे पृथ्वीमें लाया; इससे वे लोग अग्निको अति पवित्र समझकर पूजते हैं और अग्नि पूजक कहे जाते हैं।

बम्बेमें प्रायः प्रति पारसी आवासके निकट अग्नि पूजाके लिये एक२ अग्निमन्दिर प्रतिष्ठित हैं। उनमें नवसारीके अग्निमन्दिर सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। सब मन्दिरोंमें जौरास्ट्रा स्पिटामाकी लाई हुई पवित्र अग्नि दिन राति प्रज्वलित रहती है। किसी घटनासे किसी मन्दिरकी अग्नि बुझ जाय तो पारसी लोग अमङ्गल सूचक समझते हैं और दूसरे मन्दिरसे अग्नि

लाकर उस मन्दिरमे पुनः संस्थापन करते हैं। वर्तमान पारसी जल और सूर्य्यकी उपासना भी करते है। वे लोग अपने प्रत्येक अग्निमन्दिरमे एक एक श्वेत वृषभ पालते है और गोमूत्रसे निराङ्ग नामक एक पदार्थ बनाकर अग्निमन्दिरमें रखते हैं।

पारसियोंके रीति व्यवहार हिन्दुओके रीत व्यवहारसे कुछ मिले हुए और कुछ भिन्न हैं। कोई कोई पारसी किसी हिन्दूसे अपना जल नहीं छुआता और कोई मुसलमानका बनाया पाक खा लेता है। उनमे कन्याका विवाह चचेरे भाईके साथ होता है। पारसी मद्य-पान करते हैं, पर चुरट अथवा किसी तरहका धूम्रपान कोई नहीं करता। क्रस्तान, हिन्दू, मुसलमान, जैन, सिक्ख इत्यादि सब लोगोंमें बहुत भिक्षुक देख पडते हैं, किन्तु पारसी जातिमें भिक्षुक अथवा वेश्या एक भी नहीं है। पारसियोंमें दूसरी जातियोंसे अधिक विद्याकी रिवाज है। उनमें सैकड़े पीछे ७८ पुरुष और ५१ स्त्रियाँ पढ़ी हुई हैं। उनमें बहुतेरोंने अङ्गरेजी विद्या पढ़कर बड़े बडे सरकारी ओहदे पाये है। लगभग ९० हजार पारसियोंमें दस पन्द्रह करोड़पति, सैकड़ो लखपति और हजारों पारसी सहस्रपति हैं। बहुतेरे पारसी अपनी कीर्तिके लिये लाखों रुपये दान कर देते हैं।

पारसियोंमें बहुत लोग गुजराती पोशाक और बहुत लोग कोट पतलून पहनते हैं। उनकी टोपी दो तरहकी होती हैं, बडी टोपी सन्मानित लोग पहनते हैं। पारसियोंकी स्त्रियाँ रेशमी साडी पहनती है, पाँवमें जूता या बूट लगाती हैं और शिरपर सर्वदा एक सादा रुमाल बांधती हैं। उनमें हीरा मोतीके भूषण पहननेकी चाल अधिक है। किसी पारसी-की मृत्युके समय पारसी लोग उस रोगीके मुख पर कोई गन्ध द्रव्य लगाकर उसको एक कुत्तेसे चटवाते हैं। जिस रोगीके मुखको कुत्ता नहीं चाटता उसके शरीरमें पाप समझा जाता है। उस समय उस रोगीके स्वजन किसी उपायसे रोगीका मुख चटाकर उसको निः-पाप करते हैं। उस कामके लिये प्रायः सब पारसीके गृहमें एक या अधिक कुत्ते पाले जाते हैं।

पारसियोंकी धर्म पुस्तकोंमे लिखा है कि मृत आत्मा मरनेके तीन दिन पीछे मित्थ नामक देवताके पास जाता है। वाजे वेशो नामक अप देवता वहाँसे उसको भारत वर्षमें लाता है, जहांसे सदात्मा और असदात्मा दोनो एक रास्तेसे आत्मसंग्राहक सेतुके निकट पहुँचते हैं। वहाँसे कुत्ता सदात्माको स्वर्गमें लेजाता है और असदात्मा अन्धकार पूर्ण नर्कमें गिरता है। जान पडता है कि इसीसे पारसी कुत्तोंका मान करते हैं।

पारसी धर्मशाला—दोखमासे दक्षिण गाँवदेवीरोडपर गरीब पारसियोके लिये पारसी धर्मशाला बनी है। एक बड़े बागमें वह साफ सुन्दर इमारत है। बागमें एक सरोवर है। धर्मशालामें कभी कभी ३०० तक पारसी स्त्री, पुरुष और लड़के रहते है।

जल कलके हौज—दोखमासे थोड़ी दूरपर बम्बईकी जलकलके हौज हैं। सालसट टापूके विहारझील और तुलसीझीलसे पानी आकर वहाँके हौजोंमें रहता है और वहाँसे नल द्वारा सम्पूर्ण शहरमें जाता है।

वालकेश्वरका मन्दिर—मलाबार पहाड़ीके दक्षिणी भागमें पश्चिम किनारेपर वालकेश्वर शिवका दर्शनीय मन्दिर है। वह मन्दिर बम्बेके सम्पूर्ण मन्दिरोंमें प्रसिद्ध है। वहाँ बाणगङ्गा तीर्थ नामक एक बहुत सुन्दर छोटा सरोवर है, जिसके चारों तरफ ब्राह्मणोंके मकान और देव स्थान बने हुए हैं।

वहाँके लोग कहते हैं कि श्रीरामचन्द्रने सीताहरण होनेके पश्चात् यहाँ आ करके वालूका शिवलिङ्ग स्थापित किया। जब प्यास लगनेपर उनको यहाँ पानी नहीं मिला, तब उन्होंने एक बाण पृथ्वीमें चलाया; जिससे एक सरोवर बन गया, जिसको बाणतीर्थ कहते हैं।

गवर्नमेंट् हौस–मलावार पोंइन्टके अखीर दक्षिण-पश्चिम गवर्नमेंट हौस है, जिसको वालकेश्वरका गवर्नमेंट हौस कहते हैं। समुद्रकी तरफ बड़े बड़े ठण्ढे कमरे और वरण्डे बने हैं। सन् १८८० से बम्बेके गवर्नर खास करके उस कोठीमें रहते हैं और कभी कभी जाड़ेमें बागकी सैरके लिये परेलकी कोठीमें ठहरते हैं। मलावार पोइन्टमें दूसरे अङ्गरेजोंकीभी कई कोठियाँ बनी हुई है। गवर्नमेंट हौसके दक्षिण एक बैटरी है।

प्रिंस आफ वेल्स बाग—उसको साधारण लोग चरनी रोडका बाग कहते हैं। मलावार पहाड़ी और कुलाबाके बीचके पश्चिमी किनारेको वेकवे कहते है। उसके पूर्व तरफ प्रिंस आफ वेल्स बाग है, बाग छोटा होने परभी समुद्रके तीरमें रहनेके कारण बहुत मनोरम बना है।

क्रैफोर्ड मार्केट–विक्टोरिया स्टेशनसे लगभग आधा मील उत्तर बम्बेमे बहुत प्रसिद्ध और देखने योग्य क्रैफोर्ड मार्केट नामक एक उत्तम बाजार है। क्रैफोर्ड नामक कमिश्नरके नामसे १११८००० रुपयेके खर्चसे वह बाजार बना। लम्बे चौड़े मकानमें बाजार सजा है। फर्समें मार्बुलके टुकड़े जड़े गये है। दीवारोंपर खूबसूरत फूलोंकी लता चढ़ी हुई हैं। हिन्दू, मुसलमान, इसाई आदि सब मजहबके लोगोंके खानेकी हर किसिमकी वस्तु अलग अलग कमरोंमें सजी रहती है। एकसे दूसरीका सम्बन्ध नहीं रहता। किसीके धर्ममें किसी तरहका फर्क नहीं पड़ता। चीजोंके मोल करनेकी कुछ जरूरतही नहीं है। सब चीजोंका भाव मोटे कागजपर छपा हुआ या लिखा हुआ रहता है।

विक्टोरिया स्टेशन–एस्प्लेनेड मार्केट रोड और बोरीबन्दर रोडके बीचके कोनेपर किलेकी जगहसे थोड़ा उत्तर ग्रेटइण्डियन पेनिनसुला रेलवेका विक्टोरिया नामक खतमी स्टेशन है, जिसको बोरीबन्दरका स्टेशन भी लोग कहते हैं। स्टेशनकी इमारत बम्बेकी सबसे उत्तम इमारतोंमेंसे एक है। वह सन् १८८८ में २७००००० रुपयेके खर्चसे तय्यार हुई थी। वह दो मञ्जिली तथा तीन मञ्जिली इमारत है। उसके छतमें सुनहरी मीनाकारी की हुई है। मारवरी पत्थरके खूबसूरत खम्भे लगे हैं। ऊपर एक ऊँचे गुम्बजपर बड़ी घड़ी लगा है, जिसकी आवाज दूरसे सुन पड़ती है। घड़ीके पास महारानी विक्टोरियाकी सुन्दर तस्वीर है। स्टेशनमें रातको बिजलीकी रोशनी होती है। स्टेशनकी इमारत १५०० फीट लम्बी है। यह स्टेशन भारतके सब रेलोंके स्टेशनोंसे बड़ा और सुन्दर है।

यूरोपियन जनरल अस्पताल—वह विक्टोरिया स्टेशनके पासही दक्षिणपूर्व बोरीबन्दर रोडके दरवाजेपर है। मुसाफिर बीमार पड़े तो उसमें जानेसे दूसरी जगहोंसे अधिक सुभीता है। मुफ्तमे और दाम लेकर दोनों तरहके मरीज उसमें रखे जाते हैं। उसके पास उसके अधीन सेंट जर्जका नया अस्पताल है।

म्युनिसिपल आफिस–वह विक्टोरिया स्टेशनके पश्चिम बन रहा है, जो बम्बेमें सबसे मशहूर इमारत है। उसके खर्चके लिये १३ लाख रुपये अनुमान किये गये हैं। उसका गुम्ब-

जदार टावर २५५ फीट ऊँचा है, जो बम्बेके हर हिस्सोंसे देख पडता है, । उसमें १३ फीट ऊँची एक अङ्गरेजी प्रतिमा है। बड़े सीढ़ी घरके ऊपर एक गुम्बज बना है।

गवर्नमेण्ट इमारतोंकी बड़ी लाइनका अगवास बैकवेकी तरफ है, जो उत्तरसे दक्षिण क्रमसे लिखी जाती है,—

महारानी विक्टोरियाकी प्रतिमा—टेलीग्राफ आफिसके पास सफेद मार्बुलकी बनी हुई महारानी विक्टोरियाकी प्रतिमा बैठी है। प्रतिमाके ऊपर गथिक ढाचेकी चाँदनी बनी हुई है। वह प्रतिमा सन् १८७२ में १८२००० रुपयेके खर्चसे तैयार हुई, जिसमें खांडोजी राव गायकवाडने १६५००० रुपये दिये थे। यही न्याय परायण महारानी विक्टोरिया, जिनका जन्म सन् १८१९ ईस्वीकी चौबीस मईको हुआ था, भारतवर्षकी स्वामिनी हैं।

टेलीग्राफ आफिस—यह एक उत्तम इमारत है, इसका अगवास मार्बुलसे बना हुआ १८२ फीट लंबा है, जिसमे नीले रङ्गके पत्थरके स्तम्भ लगे हुए हैं।

पोस्ट आफिस—यह टेलीग्राफ आफिसके दक्षिण २४२ फीट लम्बा तीन मञ्जिला है। इसके उत्तर तरफ गिर्जा है। जिस पत्थरका टेलीग्राफ आफिस है, उसीसे यह भी बना है।

पबलिक वर्क्स सेक्रेटरियट—यह पोस्ट आफिसके दक्षिण है इसमें रेलवे, सिंचाई इत्यादि कामोंके मुहकमे हैं। इसका अगवास २८८ फीट लम्बा और मध्यका हिस्सा ६ मञ्जिला है।

हाईकोर्ट—यह पबलिक वर्क्स सेक्रेटारियटसे दक्षिण ५६० फीट लम्बी पांच मञ्जिली इमारत है। इसकी चौडाई एक तरहकी नहीं है। बाहर चारों तरफ बालकानी बनी हैं, जिनमें जगह जगह एक एक, दो दो तथा चार चार मेहराबदार स्तम्भ लगे हैं। १७५ फीट ऊँचा १ टावर है। प्रधान दरवाजेके दोनों तरफ १२० फीट ऊँचा टावर है। ऊपर न्याय और दयाकी प्रतिमा बनी हैं। प्रधान सीढ़ी पूर्व है। काले, सफेद और सुर्ख पत्थरोंका फर्श है। यह इमारत १००००० पाउंडके खर्चसे तय्यार होकर सन् १८७९ में खुली। इस इमारतकी पहली और तीसरी मञ्जिलमे इब्तदाई कचहरियाँ, दूसरी मञ्जिलमें अपीलकी कचहरियाँ और मध्य भागमें फौजदारीकी कचहरियाँ हैं। कचहरियोंके मकानोंमे सब साधारण लोगोंके बैठनेको बहुतसी कुर्सियाँ रक्खी हैं। हाईकोर्टके पूर्व बम्बे क्लब है।

राजाबाईका टावर—हाईकोर्टसे दक्षिण यूनिवरसिटीके पास २६० फीट ऊँचा और १५२ फीट लम्बा पोरबन्दरके खूबसूरत पत्थरोंसे बना हुआ राजाबाईका टावर (बुर्ज) है, जिसको रायचन्द प्रेमचन्द नामक एक गुजराती धनीने सन् १८७८ ई० में अपनी माता राजाबाईकी यादगारके लिये ३००००० रुपयेके खर्चसे बनवाया और पुस्तकालयके लिये भी १००००० रुपया दिया। उसके नीचेकी मञ्जिलमें यूनिवरसिटीके दफ्तर, मध्यकी मञ्जिल में यूनिवरसिटीका पुस्तकालय और सबसे ऊपर टावरका बुर्ज है, जिसपर चढ़नेसे बम्बे शहरका उत्तम दृश्य हासिल होता है। टावरके ऊपर एक बड़ी घड़ी लगी है, जिसके पास रातमें बिजलीकी रोशनी होती है।

उसके पास १०४ फीट लम्बा, ४४ फीट चौड़ा और ६४ फीट ऊँचा यूनिवरसिटीका हाल है, जो सन् १८७४ में तय्यार हुआ था।

प्रेसीडेंसियल सेक्रेटरियट—यूनिवरसिटीके दक्षिण ४४३ फीट लम्बा प्रेसीडेंसियल सेक्रेटरियट है। उसके २ बाजू ८१ फीट लम्बे हैं। सीढ़ीघरके ऊपर १७० फीट ऊँच

टावर है। पहली मञ्जिलमें कौंसिल हाल कमेटीके कमरे, गवर्नर और कौंसिलके मेम्बरोंके लिये खानगी कमरे और मालगुजारी मुहकमेके अनेक आफिस और दूसरी मञ्जिलमें जुडिसियल और फौजी मुहकमे हैं।

कालेज—प्रेसीडेंसियल सेक्रेटरियटके पूर्व कालिज है।

प्रिंस आफ वेल्सकी प्रतिमा—कालिजके पूर्व सेसन इष्टीटिउटके सामने महारानी विक्टोरियाके बड़े पुत्र प्रिंस आफ वेल्सकी धातुकी प्रतिमा है, जो सन् १८७९ में करीब १५०००० परुयेके खर्चसे तय्यार हुई।

तैरनेका हौज—प्रेसीडेंसियल सेक्रेटरियटसे पश्चिम-दक्षिण समुद्रके तीरपर तैरनेका हौज बना है।

सेंटजानका मेमोरियल चर्च—यह सन् १८५८ में कुलावामें बना। इसका टावर १९८ फीट ऊँचा है, जो समुद्रमें दूरसे देख पड़ता है।

अपोलो बन्दर—बम्बेके दक्षिणी भागके पूर्व किनारेपर अपोलो बन्दर है। वहाँ समुद्रके किनारे किनारे दूर तक एक बड़ी चौड़ी मजबूत दीवार बनाई गई है, जिसको समुद्र किसी तरह तोड़ नहीं सकता। थोडी थोड़ी दूर पर नीचे उतरनेको सीढ़ियाँ बनी हैं। विलायतसे आये हुए जहाज वहाँ खड़े होते है और मुसाफिरोंको उतारकर डौकयार्डमे चले जाते हैं और विलायत जानेवाले लोग उसी जगह जहाजमें बैठते हैं। शामके वक्त बहुतेरे अङ्गरेज और हिन्दुस्तानी अमीर लोग वग्गियोंपर या पैदल समुद्रकी हवा खाने वहाँ जाते हैं। वहाँ नित्य अङ्गरेजी बाजा बजता है। बन्दरगाहके पास नया यूरोपियन महल्ला है।

गवर्नमेंट डौकयार्ड—बम्बेके बन्दरगाहोंमें छोटे बड़े बहुत डौक हैं, जिनमें रहनेसे जहाजोंको समुद्रके तूफानका डर नहीं रहता। समुद्रके जलमे बढ़कर चारों तरफसे दीवार खैंच दी गई है, एक तरफ जहाजोंके प्रवेश करनेका रास्ता है। जब ज्वारके साथ जहाज भीतर चले जाते है तब रास्तेको लोहेके तखतेसे बन्द कर देते हैं। उनमें गवर्नमेंटडौक, प्रिंसेस डौक, विक्टोरिया डौक प्रधान है। अपोलोगेटसे उत्तर और कष्टमहौससे दक्षिण समुद्रके किनारेपर लगभग ७०० गज लम्बा गवर्नमेंट डौकयार्ड है। उसके पास रात्रिमें बिजलीकी रोशनी होती है। जब ईष्टइण्डियन कम्पनीने सन् १७३५ ई० में उसको बनवाया था तब वह बहुत छोटा था, जो बढ़ते बढ़ते हद्दसे बाहर अवस्थाको पहुँच गया है। डौकयार्डके घेरेके मुतअलुक करीब २०० एकड़ भूमि है। उसमें ५ ग्रेवी डौक हैं, जिनमेंसे ३ मिलकरके एक बड़ा बम्बे डौक बन जाता है, जिसकी लम्बाई६४८फीट; चौडाई शिरके पास५७ फीट और तलीमें ३४ फीट और खड़ी गहिराई १२ फीट है। दूसरे २ ग्रेवीं डौक एकडौक बनता है, जिसकी लम्बाई ५५० फीट, चौड़ाई शिरके पास ६८ फीट और तलीमें ४६ फीट और खड़ी गहराई २६ फीट है।

किनारेपर बड़ी बड़ी कल है, जो जहाजोंपरसे मालको जंजीरों द्वारा उठाकर किनारेपर गिरा देती है। डौकोंके पास बड़े २ मकान बने है, जिनमें जहाजोंके माल हिफाजतसे रक्खे जाते हैं। डौकके पास दिन भर आदमियोंकी भीड़ रहती है। सुबह और शामको बहुत लोग हवा खानेके लिये वहाँ जाते हैं।

टकशाल—किलेकी तबाहीके उत्तर बम्बेका टकशाल घर है, जो सन् १८२९ में बना। इमारत सादी है। उसके आगे एक सरोवर है।

एलफिंस्टोन सर्किल—टकशालसे पश्चिम किलेकी भूमिके प्रायः मध्य भागमें एलफिंस्टोल सर्किल है। वहाँ मध्यमें वृत्ताकार छोटा बाग सड़कसे घेरा हुआ है, सड़कके वाहर गोलाकार मकान वने हैं।

टाउनहाल—एलफिंस्टोन सर्किलके पूर्व भागमें वम्बेका टाउनहाल है, जो सन् १८३५ में ६००० पाउंडके खर्चसे तैय्यार हुआ। उसमें वम्बेके गवर्नर और दूसरे प्रसिद्ध लोगोंकी पत्थरकी प्रतिमा वनी हैं इमारतके आगे स्तम्भोंका कतार है। अगवास २६० फीट लम्बा है। पहली मञ्जिलमें मेडिकल वोर्डके आफिस और मिलीटरी आडिटर जनरलका आफिस है। ऊपरकी मञ्जिलका कमरा १०० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है, जिसमें कमेटी होती है और समय समय पर अङ्गरेज लोग नाचते हैं।

किलेकी तवाही—टकशाल और कष्टमहौसके वीचमें वन्दरगाहकी तरफ अव केवल किलेकी छोटी दीवार है। वहाँ एक झण्डा है, जिससे जहाजोंको इसारा दिया जाता है। और क्लव टावर भी है। दक्षिण तोपखाना है। पश्चिम किलेकी लम्वी चौड़ी भूमिपर शहर वस गया है। पहले वहाँ सेंट देविड किला था, जो छोड दिया गया। अङ्गरेजी सरकारने वम्बेकी रक्षाके लिये समुद्रके तीरके छोटे टापुओंमें वैटरी (मोर्चा) वनाई है। प्रत्येक वैटरी पर २ या ३ तोपें रखी हुई हैं।

जङ्गी जहाज—समुद्रके अपोलो वन्दरके सन्मुख अविसिनिया और मेगडैला नामक २ जङ्गी जहाज रहते हैं। कप्तानसे आज्ञा लेकर उनको देखनेके लिये वोट द्वारा जाना होता है। वे जहाज जलके ऊपर केवल २ हाथ रहते हैं। उनके पहले तहमें युद्धके हथियार और सिपाहियोंके रहनेके स्थान, दूसरे तहमें अस्पताल और जेलखाना और तीसरे तहमें खानेकी सामग्री और पीनेका जल रहता है। आगे और पीछेके हिस्सोंमें २ किले हैं। प्रत्येक किलेमें २ वडी तोपें रहती हैं। जहाजोंमें एक एक कल हैं, जव शत्रुओंके अधिक गोले वर्षने लगते हैं, तव उससे जहाजको डेक तक जलमें डुवा दिया जाता है। एक तलसे दूसरे तलके आदमीसे वातचीत करनेके लिये तार लगा है।

प्रिंसेस डौक—मसजिदके रेलवे स्टेशनसे पूर्व ४८५ गज लम्वा और ३३३ गज चौडा प्रिंसेस डौक है, जिसका पानी ३० एकड भूमि पर फैला हुआ है। महारानी विक्टोरियाके वडे पुत्र, हम लोगोंके भावी वादशाह प्रिंस आफ वेल्सने सन् १८७५ में उसकी नेव दी थी। सन् १८८० में ६८ लाख रुपयेके खर्चसे वह तैयार हुआ।

विक्टोरिया डौक—प्रिंसेसडौकके दक्षिण ४२४ गज लम्वा और ३३३ गज चौडा २५ एकड भूमिपर विक्टोरिया डौक है। प्रिंसेसडौकसे विक्टोरिया डौकमें जहाज जानेके लिये दोनोंके वीचमें ६४ फीट चौड़ा जहाजी मार्ग बना है।

लाइटहाउस—(रोशनीघर) वम्बेमें ३ लाइट हाउस हैं,—प्रंग्स, सेंकेराक और डालफिन लाइटहाउस। उनमें प्रंग्स लाइटहाउस सवसे ऊँचा और दर्शनीय है। उसको देखनेके लिये पोर्टकमिश्नरसे पास लेना चाहिये। वह वम्वेसे दश वारह मील दक्षिण-पश्चिम एक जञ्जीरे पर वना है। अपोलो वन्दरसे नाव पर चढ़कर वहाँ जाना होता है। उस लाइटहाउसके वनानेमें ७५०००० रुपये खर्च पड़े हैं। वह १५० फीट ऊँचा, तीन तला है। सके नीचेके तहकी दीवारकी मुटाई १७ फीट है। उसके ऊपर जहाँ रातमें रोशनी होती

है, और दिनमें झण्डा खड़ा किया जाता है, उसकी रोशनी चढ़नेकी सीढ़ियाँ बनी हैं। १८ मील तक देख पड़ती है। जहाजवाले उस रोशनी या झण्डेसे जहाजोंके ले आने या रोक रखनेके लिये इशारा समझ लेते हैं।

बम्बेका व्यापार और दस्तकारी—रुईका बहुत बड़ा बाजार कोलाबामें है। वहाँसे प्रतिसाल बहुतसी रुई दूसरे मुल्कोंमें भेजी जाती हैं और बहुतसी बम्बेके लगभग ७० कल-कारखानोंमें खर्च होती है। लगभग ३० हजार आदमी रुईका काम करते हैं।

परेलमें कपड़ोंके बहुत मिल अर्थात् कल कारखाने हैं। वहाँ बड़े बड़े मकानोंमें कल द्वारा एक जगह कपाससे रुई निकाली, दूसरी जगह तूमी और तीसरी जगह धुनी जाती है; चौथी जगह उसकी पिउनी; पांचवीं जगह पतली पिउनी और छठवीं जगह उससे भी पतली पिउनी होती है। इसी क्रमसे सूता तय्यार होकर एक कलमें करची बनती है। किसी जगह करचियोंसे नारा बनते हैं, किसी जगह नाराओंसे कपड़ेकी तानी, किसी जगह भरनी होती है; इस तरहसे कपड़े तय्यार होते हैं। एक जगह कलही द्वारा कपड़ोंकी तह लगती है। इसी तरहसे रेशमके मिलमें रेशमी कपड़े तय्यार होते हैं।

वम्बेमें करीब ३००० जवाहिरी हैं, जिनका काम सर्वदा जारी रहता है। वहाँकी प्रसिद्ध दस्तकारियोंमेंसे पीतल और ताम्बाके वर्तनकी दस्तकारी है। मुम्बा देवीके तालावके सामने ताम्बाका बाजार है। बम्बेकी काली लकड़ीकी नकाशी प्रसिद्ध है। चन्दनकी लकड़ी और दूसरी लकड़ियोंमें खासकर नकाशी होती है। बंबईका आम बहुत प्रसिद्ध है; वहासे दूर दूर तक रेलगाड़ीमें आम भेजे जाते हैं। बंबईमें सोना और चाँदीके तारका लैस बनता है। कारचोबीका बेश कीमत काम होता है। कुम्हारके काम सीखनेका स्कूल है। २८, ५६ और ८० रुपये भरीके सेर चलते हैं। बम्बे शहरमें कारबारकी २१९ कम्पनी हैं, जिनकी पूँजी १३ कोटि रुपयेसे अधिक है।

देशी सौदागरोंमें पारसी प्रधान है; उनके बाद मारवाड़ी और गुजराती हैं। बंबईमें अरब, पारस, अफगानिस्तान, तुरकिस्तान, अफ्रिका इत्यादिके मुसलमान सौदागर रहते हैं, जो खास करके पारसकी खाड़ी, जञ्जीबार और अफ्रिकाके पूर्व किनारेके साथ तिजारत करते हैं। पारसी और यहूदी यूरपके साथ तिजारत करते हैं।

बम्बई शहरका इतिहास—मुम्बा शब्दका अपभ्रंश बम्बे तथा बम्बई है। महाराष्ट्र भाषामें महाअम्बाको मुम्बा कहते हैं। महाअम्बा शिवरानी देवीजीका नाम है। कुछ लोगोंका मत है कि जब पोर्चुगल वालोंने बम्बईमें अपना वाणिज्य कायम किया, तब उन्होंने उसक नाम बन्बे अर्थात् उत्तम बन्दर रक्खा। उसके पीछे लोग बन्बेको बम्बे कहने लगे, जिसको मुम्बई तथा बम्बई भी कहते हैं।

सन् १५३२ में पोर्चुगल वालोंने बम्बई टापूपर अपना अधिकार किया। सन् १६६१ में पोर्चुगलके बादशाहने लंदनके शाहजादे दूसरे चार्लससे अपनी लड़की कैथरिनका ब्याह किया और दूसरी वस्तुओंके साथ बम्बई टापूको भी दहेजमें दिया; किन्तु पोर्चुगीजोंने सन् १६६५ तक बम्बई अङ्गरेजोंके हवाले नहीं किया। सन् १६६८ में चार्लसने ईष्टइंडियन कम्पनीको १० पाउंड सालाना खिराजपर बम्बईको ठीका देदिया। उस समय बम्बई शहरमें केवल लगभग १०००० मनुष्य बसते थे; किन्तु उसकी उन्नति बड़ी तेजीसे होने लगी।

कम्पनीने किलेबन्दीको दृढ किया; और यूरोपियन लोगोंको बसाया। दस्तकारी और तिजारतकी उन्नति होने लगी।

सन् १६७३ मे बम्बईके किलेमें १२० तोपें और टापूमे पोर्चुगीजोंकी कई एक गिरजा थीं। उस समय बम्बईको मनुष्य-सख्या लगभग ६०००० होगई थी और कम्पनीकी प्रधान कोठी सूरत शहरमें थी, किन्तु सन् १६८७ में कम्पनीका सदर स्थान बम्बई हुई। सन् १७०८ में बम्बई एक स्वाधीन हाता बनाई गई। सन् १७७३ में वह कलकत्ताके गवर्नर जनरलके अधीन बनी। सन् १७८० में बम्बई शहरकी मनुष्य-संख्या लगभग ६००००० होगई। सन् १८१८ में पूनाके बाजीराव पेशवाके परास्त होनेके पश्चात् बम्बई पश्चिमी भारतमे बहुत प्रसिद्ध और भारतवर्षके एक बडे देशकी राजधानी हुई।

बम्बई हाता—यह भारतवर्षके पश्चिम भागमे एक हाता है। इसके पश्चिमोत्तर और उत्तर बलोचिस्तान, और खिलात, उत्तर और पूर्वोत्तर पञ्जाब देश और राजपूतानेके देशी राज्य, पूर्व मध्यदेशके देशी राज्य, मध्यदेश, बरार और हैदराबादका राज्य, दक्षिण मैसूरकी राज्य और मद्रास हाता और पश्चिम अरबका समुद्र है। इसकी चौडाई बहुत कम है, किन्तु लम्बाई उत्तरसे दक्षिण तक १०००मीलसे अधिक होगी। बम्बई हातेके उत्तर भागमें सिन्ध, मध्यमें गुजरात और दक्षिण भागमे महाराष्ट्र देश है। गुजरातके पश्चिमी भागको काठियावार प्रायःद्वीप कहते हैं। बम्बई हातेके गवर्नर लगभग ८ मास बम्बई शहरमे और जुलाईसे लगभग ४ मास तक पूनामे रहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सिन्ध छोड करके बम्बई हातेका क्षेत्रफल ७७२७५ वर्गमील और सिन्धदेशका क्षेत्रफल ४७७८९ वर्गमील और दोनो मिल कर अङ्गरेजी राज्यका क्षेत्रफल १२५०६४ वर्गमील और बडोदाको छोड़ करके बम्बई हातेके देशी राज्योंका क्षेत्रफल ६९०४५ वर्गमील तथा बड़ोदाका क्षेत्रफल ८२२६ वर्गमील और दोनों मिलकर देशी राज्योंका क्षेत्रफल ७७२७१ वर्गमील और अङ्गरेजी राज्य तथा देशी राज्योंके साथ बम्बई हातेका क्षेत्रफल २०२३३५ वर्गमील था।

बम्बई हातेमें पहाड बहुत हैं,–हातेके पश्चिमोत्तर सिन्धनदीके दहिने किनारेपर सुलेमानी पर्वतका भाग हाला और खरतरी पहाडी, सिन्ध प्रदेशमें बालूदार नीची पहाडियोंके सिलसिले, कच्छ और काठियावारमें अर्वली पहाडके भागकी बहुतसी छोटी पहाड़ियाँ, उससे दक्षिण-पूर्व गुजरात और मध्य भारतके बीचमें फैला हुआ पहाडका जंजीरा, असीरगढ़के किलेके पड़ोससे गुजरात तक सतपुडा पहाड़का सिलसिला, खानदेश और हैदराबादके राज्यकी सीमाके पास अजन्ता पहाडियाँ और पश्चिमी घाटपर सह्याद्रि पहाड़ है।

सिन्धदेशमें सिन्धनदी, गुजरातमें साबरमती और माही, जो माहीकण्ठा पहाडियोंसे निकलकर दक्षिण ओर बहती हुई कांबेकी खाडीमें गिरती है, और माहीसे दक्षिण नर्मदा, तापती, सरावती, गोदावरी, कृष्णा और भीमा इत्यादि नदियाँ बहती हैं। बम्बई हातेमें कच्छकी खाड़ी और कांबेकी खाडी, कच्छ कारन, सिन्धनदीके दहिने किनारेपर सेहवन कसबेके पास मच्छर झील और बम्बई शहरके पास बनाई हुई विहार झील तथा तुलसी झील है।

बम्बई हातेकी प्रधान फसिल अन्न और कपास है। समुद्रके पासके जिलोंमें नारियलके फल बहुत होते हैं, काली मिट्टीकी भूमिमें कपास और भूरी मिट्टीमें अन्न आदि फसिल होती है। गुजरात और उसके दक्षिणके देशमें कपास और ज्वार बाजड़ा बहुत उत्पन्न होता है। एकही समयमें किसी खेतमें ज्वार बोया जाता है और किसीमें काटा जाता है। कपासका खलिहान लगता है। पश्चिमी घाटपर अधिक वर्षा होनेके कारण गर्मी अधिक पड़ती है, किन्तु सिन्ध प्रदेशमें पानी कम वर्षता है और गर्मी बहुत अधिक होती है। गुजरातके बैल तथा गाय प्रसिद्ध हैं। वहाँके बैल और गाय बहुत बड़े बड़े तथा सुन्दर होते हैं। महाराष्ट्र देशमें शोलापुरके आसपास बहुत बड़ी सींग वाली भैंस देखनेमें आई, जिनमेंसे किसी किसीकी सींग ३ फीटसे अधिक लम्बी थीं। बम्बई हातेके सिन्ध प्रदेश और राजपूतानेमें बहुतसे ऊंट लादे जाते हैं और सवारीके काममें आते हैं।

भारतवर्षके अन्य प्रदेशोंकी अपेक्षा बम्बई हातेमें कल कारखाने बहुत अधिक हैं। कपड़े आदि अनेक भांतिकी वस्तु कल द्वारा तैयार करके वहाँसे भारतवर्षके शहरों तथा चीन आदि परदेशोंमें भेजी जाती हैं। इस समय बम्बई हातेके लगभग ९० कारखानोंमें ७०००० आदमी काम करते हैं।

महाराष्ट्र लोगोंमें अधिक लोग शैव और गुजरातियोंमें अधिक लोग वैष्णव मतके होते हैं। महाराष्ट्री और गुजराती लोगोंमें पुरुष धोती पहनते है और शिरपर बहुत बड़ी पगड़ी बाँधते हैं। महाराष्ट्र लोगोंकी स्त्रियाँ कच्छा देकर कमरमें रंगीन कपड़ा और देहमें चोली पहनती हैं तथा शिर उघार रखती हैं और गुजराती स्त्रियां घांघरी पहनकर ऊपरसे सारी ओढ़ती हैं। महाराष्ट्र और गुजराती हिन्दू प्रायः सब लोग अपने वस्त्र आपही धोते हैं। शहरोंमें नदियोंके किनारोंपर कपड़े धोने वालोंका दल देखनेमें आता है। वे लोग भीगाहुआ वस्त्र छू जानेपर उसको अपवित्र समझते हैं। बंबई हातेमें स्त्रीकी स्वाधीनता अति प्रबल है; उनमें महाराष्ट्री और पारसियोंकी स्त्रियाँ प्रधान हैं। ब्याहकी वरातके साथ पुत्री वालेके घर स्त्रियाँभी जाती हैं। स्त्रियोंमें सोनेके भूषण पहननेकी अधिक चाल है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बंबई हातेकी जातियोंमेंसे नीचे लिखी हुई जातियोंके लोग इस भांति पढ़े हुए थे, प्रतिहजारमें ७६१ प्रभु और १६४ प्रभु जातिकी स्त्रियाँ, ६९७ बनिया श्रीमाली और १५ उस जातिकी स्त्रियां, ६८७ कायस्थ और २१२ उनकी स्त्रियां; ६४८ ब्रह्मशास्त्री और ३६८ उनकी स्त्रियाँ; ६४५ ब्राह्मण और ३३ ब्राह्मणी और ५१८ साधारण बनियां और १८ उनकी स्त्रियां।

बम्बई हातेके (सिन्धको छोड़कर) महाराष्ट्री, गुजराती, पारसी आदि सब लोग अपने नामके पीछे अपने पिताका नाम लिखते हैं तथा उच्चारण करते हैं। प्रत्येक आदमीके नामके बाद एक अन्य नाम सुना जाता है, वह पीछेवाला नाम उसके पिताका रहता है।

जैसे उत्तरी भारतमें विक्रमीय संवत् लिखनेकी बहुत चाल है, वैसे गुजरात और महाराष्ट्र तथा उसके पड़ोसके देशोंके सर्व साधारण लोगोंमें शालिवाहन शाकाका प्रचार है। वे लोग चैत सुदी एकमसे चैत मासका आरम्भ मानते हैं, इस कारणसे फागुनकी महा शिवरात्रिको वे लोग माघकी शिवरात्रि कहते है, क्योंकि उनका फागुन-फागुन सुदी एकमसे आरम्भ होता है।

विक्रमीय संवत्का प्रारम्भ उत्तरीय भारतमे चैत सुदी एकमसे होता है, किन्तु पश्चिमी भारतके लोग उसका आरम्भ कार्तिक सुदी एकमसे मानते हैं, इस लिये पश्चिमी विक्रमी संवत् उत्तरी विक्रमी संवत्से ७ मास पीछे आरम्भ होता है। जान पडता है कि विक्रमी संवत्का आरम्भ कार्तिक सुदी १ से और शक संवत्का चैत सुदी १ से था, किन्तु उत्तरी भारतवालोंने पीछे विक्रमी संवत्का आरम्भ भी शक संवत्के साथ चैत सुदी १ को मान लिया।

बम्बई आदि पश्चिमी भारतमें बडी धूमधामसे होली होती है। फाल्गुनकी पूर्णिमाको प्रायः प्रति महल्लों अथवा टोलोमें लोग पवित्र लकड़ियाँ या गोइठोंसे, होलिका दहन करते हैं। चैत्रकी प्रतिपदाके दिन सब लोग इकट्ठे होकर परस्पर डण्डेका खेल खेलते हैं, अर्थात् अपने दोनों हाथोंमे एक एक डण्डा लेकर एक आदमी दूसरे तथा तीसरे आदमीके डंडोमें और दूसरा तथा तीसरा आदमी उसके डण्डोंमें मारता है। चैतवदी पञ्चमीको फाग उत्सव समाप्त होता है। महाराष्ट्र लोग प्रतिवर्ष भादोंमे बड़ी धूमधामसे गणपति उत्सव करते हैं (पूनाके वृत्तान्तमें देखिये)।

बम्बई हातेके अङ्गरेजी राज्यमे बम्बई शहरको छोड़ करके ४ विभागमे २३ जिले हैं;—दक्षिणी विभागमें शोलापुर, सतारा, बेलगांव, धारवाड, बीजापुर, उत्तरी किनारा और रत्नागिरि नामक ७ जिले, मध्य विभागमें खानदेश, नासिक, अहमदनगर और पूना नामक ४ जिले, उत्तरी विभागमें अहमदाबाद, खेडा, पञ्चमहाल, भडाच, सूरत, थाना, और कुलावा ये ७ जिले, जिनमेंसे अहमदाबाद, खेड़ा, पंचमहाल, भडौच और सूरत ये ५ जिले गुजरातमें हैं, और सिन्ध देशमे करांची, हैदराबाद, "थर और परखर," सिकारपुर और अपरसिन्ध फन्टियर ये ५ जिले।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सिन्धको छोड़ करके बम्बई हातेके अङ्गरेजी राज्यमें १५९८५२७० मनुष्य थे अर्थात् ८१९४४७७ पुरुष और ७७९०७९३ स्त्रियां। इनमें १४०८९६७४ हिन्दू, १२८६७६३ मुसलमान, २३९५१३ जैन, १५१००१ कृस्तान, १३५६८३ जङ्गली जातियाँ इत्यादि, ७२४११ पारसी, ९४२९ यहूदी, ६७१ बौद्ध, ९८ सिक्ख और २७ अन्य थे। इनमें सैकड़े पीछे ५३$\frac{3}{4}$ महाराष्ट्री भाषावाले २०$\frac{3}{4}$ गुजराती भाषावाले, १५$\frac{1}{2}$ कनड़ी भाषावाले, ५$\frac{3}{4}$ उर्दू भाषावाले और ४$\frac{1}{4}$ अन्य भाषा बोलनेवाले मनुष्य थे।

बम्बई हातेके सिन्ध प्रदेशमें २८७७७७४ मनुष्य थे, अर्थात् १५६८५९० पुरुष और १३०३१८४ स्त्रियाँ। इनमें २२१५१४७ मुसलमान, ५६७५३९, हिन्दू, ७७९३५ जङ्गली जातियाँ, ७७६४ कृस्तान, १५३४ पारसी, ९२३ जैन, ७२० सिक्ख, २१० यहूदी और २ बौद्ध थे, जिनमें सैकड़े पीछे ८३ सिन्धी भाषावाले, ६$\frac{3}{4}$ बलोच भाषावाले, ४$\frac{3}{4}$ माडवारी भाषावाले और ६ अन्य भाषा बोलनेवाले मनुष्य थे।

बम्बई हातेके अङ्गरेजी राज्यके शहर और कसबे, जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १०००० से अधिक मनुष्य थे;—

नं०	नाम शहर	नाम जिला	जन-संख्या	नं०	नाम शहर	नाम जिला	जन-संख्या
१	बम्बई	बम्बई	८२१७६४	३६	कपड़वञ्ज	खेड़ा	१४८०५
२	पूना	पूना	१६१३९०	३७	बलसर	सूरत	१४७७९
३	अहमदाबाद	अहमदाबाद	१४८४१२	३८	गोधड़ा	पंचमहाल	१४६९१
४	सूरत	सूरत	१०९२२९	३९	जलगाँव	खानदेश	१४६७३
५	करांची	करांची	१०५१९९	४०	कारवार	उत्तरी किनारा	१४५७९
६	हैदराबाद	हैदराबाद	५८०४८	४१	परोला	खानदेश	१४४७८
७	शोलापुर	शोलापुर	६१९१५	४२	भिम्बाड़ी	थाना	१४३८७
८	हुबली	धारवाड़	५३५९५	४३	रत्नागिरि	रत्नागार	१४३०२
९	अदन	अदन	४४०७९	४४	रनबेनूर	धारवाड	१३७६१
१०	शिकारपुर	शिकारपुर	४२००४	४५	भुसावल	खानदेश	१३१६९
११	अहमदनगर	अहमदनगर	४१६८९	४६	दोहड़	पंचमहाल	१२९३५
१२	बेलगाँव	बेलगाँव	४०७३७	४७	कल्याण	थाना	१२६०८
१३	भड़ौंच	भड़ौंच	४०१६८	४८	राण्डोल	खानदेश	१२५५७
१४	धारवाड़	धारवाड़	३२८४१	४९	बाई	सतारा	१२४३८
१५	सतारा	सतारा	२९६०१	५०	जकोबाबाद	अपरसिन्ध	१२३९६
१६	सक्कर	शिकारपुर	२९३०२	५१	बोरसाद	खेड़ा	१२१५९
१७	नड़ियाद	खेड़ा	२९०४८	५२	गोकाक	बेलगाँव	१२१०६
१८	नासिक	नासिक	२४४२९	५३	करदा	सतारा	१२०८६
१९	गदग	धारवाड़	२३८९९	५४	जम्बुसर	भड़ौंच	१२०७२
२०	वीरमगाँव	अहमदाबाद	२३२०९	५५	लरखना	शिकारपुर	१२०१९
२१	धूलिया	खानदेश	२१८८०	५६	जुनीर	पूना	११९०५
२२	बारसी	शोलापुर	२०५६९	५७	निपानी	बेलगाँव	११७२८
२३	पण्ढरपुर	शोलापुर	१९९५४	५८	चिपलून	रत्नागिरि	११७१७
२४	मालेगाँव	नासिक	१९२६१	५९	कुरला	थाना	११४६९
२५	योला	नासिक	१८८६१	६०	नसीराबाद	खानदेश	११४६२
२६	बन्दरा	थाना	१८३१७	६१	ऊरन	कुलाबा	११४२२
२७	बगलकोट	बीजापुर	१८०३४	६२	अस्ता	सतारा	११४०३
२८	थाना	थाना	१७४५५	६३	सङ्गमनेर	अहमदनगर	११३६५
२९	मालवन	रत्नागिरि	१७०५३	६४	बसीन	थाना	११२९१
३०	बीजापुर	बीजापुर	१६७१९	६५	तासगाँव	सतारा	११२६१
३१	धोलका	अहमदाबाद	१६४९४	६६	इलकाल	बीजापुर	११२१६
३२	धोपड़ा	खानदेश	१५६५५	६७	किर्की	पूना	१०९५१
३३	अमरेठ	खेड़ा	१५६३८	६८	नान्देर	सूरत	१०९३६
३४	कलाडगी	बीजापुर	१५४८१	६९	यावल	खानदेश	१०८००
३५	धरनगाँव	खानदेश	१५०७२				

नं०	नाम शहर	नाम जिला	जन-संख्या	नं०	नाम शहर	नाम जिला	जन-संख्या
७०	कुमटा	उत्तरी कनारा	१०७१४	७५	शेरपुर	खानदेश	१०१४२
७१	अंकलेश्वर	भड़ौंच	१०६९२	७६	विगुरला	रत्नागिरि	१०१३४
७२	इसलामपुर	सतारा	१०६५७	७७	खेड़ा	खेड़ा	१०१०१
७३	पनवेल	कुलाबा	१०४२०	७८	धोलेडा	अहमदाबाद	१००८८
७४	अथनी	वेलगॉव	१०११६	७९	शिनेर	नासिक	१००१२

बम्बई हातेमे बहुत देशी राज्य तथा जागीर हैं, किन्तु उनमेंसे बहुतसे अत्यन्त छोटे है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वडोदा राज्यको छोड़ करके बम्बई हातेके देशी राज्योंमें ८०५९२९८ मनुष्य थे, अर्थात् ४१२०१२५ पुरुष और ३९३९१७३ स्त्रियॉ। इनमे ६७८१०६५ हिन्दू, ८५३८९२ मुसलमान, ३१४७७३ जैन, ९७६४१ जंगली जातियॉ, ८२३९ कृस्तान, २५११ पारसी, १०८२ यहूदी और ९५ सिक्ख थे, जिनमे सैकड़े पीछे ६०¾ गुजराती भाषा वाले, २२¼ महाराष्ट्री भाषा वाले, ७¾ कनडी भाषा वाले, ४¾ कच्छी भाषा वाले, ३ उर्दू वाले और २ अन्य भाषा बोलने वाले मनुष्य थे।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके अनुसार बम्बई हातेके गवर्नमेण्टके अधीनके देशी राज्योंका त्रिज;–

नं०	देशी राज्य	क्षेत्रफल वर्गमील	कसवा और गॉव	मकान	मनुष्य-संख्या
१	काठियावाड़ एजेसी ...	२०५५९	४१६८	४७९४३५	२३४३८९९
२	कोल्हापुर	२८१६	१०६१	१२९१४८	८००१८९
३	पालनपुर एजेंसी ..	८०००	११०८	१२५२३७	५७६४७८
४	रवाकण्ठा एजेसी .. .	४७९२	११०४	१०९७३८	५४३४५२
५	दक्षिणी मरहटा जागीरे ..	२७३४	६०२	९०७९९	५२३७५३
६	माहीकण्ठा एजेसी ..	११०४९	१८१६	११७११२	५१७४८५
७	कच्छ	६५००	८९७	१८२००७	५१२०८४
८	सताराकी जागीरे .	३३१४	७३६	४५६४६	३१८६८७
९	सावंत वाडी ...	९००	२२६	३०४४४	१७४४३३
१०	सूरत एजेसी	१२२०	३७९	२७८९४	१५११३२
११	खैरपुर (सिन्ध) ..	६१०९	०	२५७२०	१२९१५३
१२	कांबे	३५०	८५	२१७०२	८६०७४
१३	जञ्जीरा .. .	३२५	२२६	१४४२१	७६३६१
१४	खानदेश एजेंसी . .	३८४०	४८६	११३१३	६०२७०
१५	अकलकोट	४९८	१०५	८४९३	५८०४०
१६	जवहर	५३५	११६	८३०७	४८५५६
१७	सवानूर	७०	२४	२६४६	१४७६३
१८	नारूकोट	१४३	५२	१३१३	६४४०
	जोड़	७३७५४	१३१९१	१३५१३६७	६९४१२४९

वम्बई हातेके वड़े देशी राज्योंका त्रिज;—

नं०	देशी-राज्य	देश	क्षेत्रफल वर्गमील	मनुष्य-संख्या सन् १८८१	मालगुजारी
१	भावनगर	काठियावाड़	२८६०	४००३२३	३४०००००
२	कच्छ...	कच्छ....	६५००	५१२०८४	३००००००
३	नवानगर	काठियावाड़ ...	३७९१	३१६१४७	२४०००००
४	कोल्हापुर	महाराष्ट्र	२८१६	८००१८९	२३०००००
५	जूनागढ़	काठियावाड़ ...	३२७९	३८७४९९	२१०००००
६	गोंडल	तथा	१०२४	१३५६०४	१२०००००
७	मोरवी	तथा	८२१	८९९६४	१००००००
८	सङ्गली	दक्षिणी महाराष्ट्र	८९६	१९६८३२	९८१०००
९	ध्रांगड्रा	काठियावाड़ ...	११५६	९९६८६	७५००००
१०	कांबे	गुजरात	३५०	८६०७४	६२५०००
११	राधनपुर	पालनपुर एजेंसी	११५०	५८१२९	६०००००
१२	खैरपुर	सिन्ध	६१०९	१२९१५३	५५००००
१३	पोरवन्दर	काठियावाड़ ...	६३६	७१०७२	५५००००
१४	पालनपुर	पालनपुर एजेंसी	३१५०	२३४४८१	५०००००
१५	वाढ़वान	काठियावाड़ ...	२३६	४२५००	४५००००
१६	सावंतवाड़ी ...	महाराष्ट्र	९००	१७४४३३	३२५०००
१७	मीराज	दक्षिणी महाराष्ट्र	३४०	६९६७२	३०००००
१८	लिंवड़ी	काठियावाड़ ...	३४४	४३०६३	२६४०००
१९	राजकोट	तथा	२८३	४६५४०	२०५०००
२०	वड़गॉव	दक्षिणमहाराष्ट्र	२०८	३०५४१	१६००००

वम्बई हातेके देशी राज्योंके शहर और कसवे, जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १०००० से अधिक मनुष्य थे;—

नं०	नाम कसवा	नाम राज्य	नाम, एजेंसी	मनुष्य-संख्या
१	भावनगर	भावनगर	काठियावाड़	५७६५३
२	नवानगर	नवानगर	काठियावाड़	४८५३०
३	कोल्हापुर	कोल्हापुर	महाराष्ट्र	४५८१५
४	मांडवी	कच्छ	कच्छ	३८१५५
५	जूनागढ़	जूनागढ़	काठियावाड़	३१६४०
६	कांबे	कांबे	गुजरात	३१३९०
७	राजकोट	राजकोट	काठियावाड़	२९२४७
८	मीराज	मीराज	दक्षिणी मरहटा जागीर	२६०६०

नं०	नाम कसबा	नाम राज्य	नाम एजेंसी	मनुष्य-संख्या
९	भुज	कच्छ	कच्छ	२५४२१
१०	वाढ़वान	वाढवान	काठियावाड़	३४६०४
११	पालनपुर	पालनपुर	पालनपुर	२१०९२
१२	धोराजी	धोराजी	काठियावाड़	२०४०६
१३	पोरबन्दर	पोरबन्दर	काठियावाड़	१८८०५
१४	महुआ	महुआ	काठियावाड	१६७०७
१५	मोरवी	मोरवी	काठियावाड़	१६३२५
१६	गोंडल	गोंडल	काठियावाड़	१५३४३
१७	विरावल	जूनागढ़	काठियावाड़	१५३३९
१८	ध्रांगड्रा	ध्रांगड्रा	काठियावाड	१५२०९
१९	सङ्गली	सङ्गली	दक्षिणी मरहटा जागीर	१४७९८
२०	अञ्जर	कच्छ	कच्छ	१४४३३
२१	राधनपुर	राधनपुर	पालनपुर	१४१७५
२२	जैतपुर	जैतपुर	काठियावाड़	१३६४६
२३	लिंबड़ी	लिंबडी	काठियावाड़	१३४९७
२४	मङ्गरोल	मङ्गरोल	काठियावाड	१३००५
२५	जमखण्डी	जमखण्डी	दक्षिणी मरहटा जागीर	१२५०४
२६	मङ्गलवेधा	मङ्गलवेधा	तथा	१२२७०
२७	शाहपुर	शाहपुर	तथा	११९६१
२८	लक्ष्मणेश्वर	लक्ष्मणेश्वर	तथा	११८४३
२९	इचलकरंजी	कोल्हापुर	महाराष्ट्र	११२००
३०	नांदोद	नांदोद	रेवाकण्ठा	१०८१९
३१	फलताना	फलताना	सताराकी जागीर	१०५६४
३२	पालीटाणा	पालीटाणा	काठियावाड़	१०४४२
३३	मांडवा	कच्छ	कच्छ	१०४३३
३४	लुनवाड़ा	लुनवाड़ा	रेवाकण्ठा	१०१०१
३५	सिहोर	सिहोर	काठियावाड़	१०००५

बम्बई हातेका इतिहास—प्राचीन समयमे वर्त्तमान बम्बई हाता बहुतसे स्वाधीन राजाओंके अधिकारमें बँटा हुआ था। अजंता आदिकी गुफाओ और गिरिनार आदिके चट्टानी लेखोंसे विदित होता है कि सन् ईस्वीके आरम्भके पहिले तथा आरम्भके समय बम्बई हातेमें बौद्ध तथा जैन लोगोंके मतकी प्रबलता थी। अब तक बम्बई हातेमें जैन लोग बहुत हैं। महाभारत तथा पुराणोंसे विदित होता है कि अति पूर्वकालमें भारुकच्छ, कच्छिक, आनर्त, सिन्ध, सौवीर, महाराष्ट्र, गुजराष्ट्र या गुर्जर, जिसको अब गुजरात कहते हैं, सौराष्ट्र, जिसको काठियावाड़ कहते हैं, इत्यादि देशोंके नामसे वर्त्तमान बम्बई हाता बहुतसे हिन्दू राजाओंके राज्यमें विभक्त था। पुराने सिक्कों, शिला लेखों और तांबेके दानपत्रोंके लेखोंसे, जो कई एक स्थानोंमें बहुत मिले हैं, ज्ञात हुआ

है कि सन् ईस्वीके आरम्भसे लगभग १००० वर्षसे भीतर उन देशोंमें राजपूतोंने राज्य किया था। उनमें अधिक प्रतापी वल्लभी और चालुक्य वंशके राजा थे।

मुसलमानोंने पहिले सिन्धमें अपना अधिकार किया। सन् १०२४ में गजनीके महमूदने गुजरातपर चढ़ाई करके सोमनाथके मन्दिरका धन लूटा। उस समय गुजरातके हिन्दू राजा, जिनकी राजधानी अनहिलवाड़ा, जिसको अब पाटन कहते है, था, मुसलमानोंके आक्रमणसे बच गये। सन् १२९७ में दिल्लीके अलाउद्दीनके सेनापति अलफखाँने उनके राज्यका विनाश किया। उस समयसे सन् १४०३ तक दिल्लीके नियत किये हुए डिपोटी लोग गुजरातपर हुकूमत करते रहे। उनमेंसे जाफरखाँने एक स्वाधीन राज्य कायम किया। सन् १४१३ में पहिले सुलतान अहमदने असावलके पास अहमदाबाद शहरको बसा कर उसको अपनी राजधानी बनाया। अहमदके वंशधर बड़े प्रतापी और विभवशाली हुए थे। सन् १५७३ में दिल्लीके अकबरने स्वयं सेनापति बनकर गुजरातको जीता। १७ वीं सदीमें महाराष्ट्रोंके प्रभाव बढ़नेपर भी उस देशके दक्षिण भागमें मुसलमानोंका अधिकार कायम था; किन्तु सन् १७०७ में औरङ्गजेबके मरनेके पश्चात् उनके सम्पूर्ण देखलाऊ अधिकार जाते रहे। सन् १७५७ में महाराष्ट्रोंने अहमदाबादके साथ गुजरातको लेलिया।

सन् १२९४—१२९५ में अलाउद्दीनने डेकान अर्थात् दक्षिणके कई शहरोंको जीता। १४ वीं सदीमें महम्मद तुगलकके राज्यके समय बहमनी खानदानके अहमदशाहने तुगलकसे बागी होकर अपना एक स्वाधीन राज्य कायम किया। उसकी राजधानी पहिले गुलबर्गा और पीछे बीदर था। लगभग सन् १४९० में बहमनी बादशाहत टूट गई और बीजापुर तथा अहमदनगरका राज्य कायम हुआ। १६ वीं सदीके अन्तके भागमें दिल्लीके बादशाहने उन स्वाधीन राज्योंका दबाना आरम्भ किया। सन् १६३७ में अहमदनगरका राज्य दिल्ली और बीजापुरके बादशाहोंमें बांट लिया गया। सन् १६८४ में दिल्लीके औरङ्गजेबने बीजापुरको ले लिया। महाराष्ट्र प्रधान शिवाजी, जिनका जन्म, सन् १६२७ में था, औरङ्गजेबसे लड़ते हुए दक्षिणमें स्वाधीन बनकर सन् १६७४ में रायगढ़में बड़े शानसे राजसिंहासनपर बैठे। सन् १६८० में शिवाजीका देहान्त होगया। १८ वीं सदीमें पूनाके पेशवा और बड़ोदाके गायकवाड़ बम्बई हातेमें अधिक प्रसिद्ध हुए; उन्होंने उस देशके बड़े हिस्सेसे 'कर' लिया।

यूरोपियन लोगोंमें पोर्चुगाल वाले पहिले पहिल हिन्दुस्तानमें आये। सन् १४९८ में पोर्चुगलका "वास्कोडीगामा" पश्चिमी किनारेके कलीकोटमें उतरा। उसके ५ वर्ष बाद बड़े अलबुकर्कने गोआको जीता। सन् १५३२ में पोर्चुगाल वालोंने बम्बई टापूको अपने अधिकारमें किया। सन् १६०८ में अङ्गरेजोंका जहाज सूरत शहरमें पहुँचा। उस समय सूरत हिन्दुस्तानकी तिजारतका प्रधान स्थान थी। सन् १६१३ मे अङ्गरेजोंने दिल्लीके बादशाह जहाँगीरसे इजाजत लेकर सूरतमें अपनी कोठी कायम की। सन् १६१८ मे हालेण्ड वालोंने भी वैसीही इजाजत ली। सन् १६६१ में पोर्चुगालके बादशाहने लन्दनके बादशाहको दहेजमें बम्बईका टापू देदिया (बम्बई शहरके इतिहासमें देखिये)। सन् १७०८ में ईष्टइण्डियन कम्पनीने बम्बई हाता नियत किया। सन् १७७३ में बंबई हाता कलकत्तेके गवर्नर जनरलके अधीन बनाया गया।

सन् १७५६ में बम्बईके गवर्नरने पेशवाके साथ मिलकर सुवर्णदुर्गके बन्दरगाहको छीन लिया और अङ्गरेजोंने विजयदुर्गको जीता, जिससे समुद्रके डाकू निर्बल होगये । सन् १७७४ में महाराष्ट्रोंके साथ अङ्गरेजोंकी लडाई आरम्भ हुई । सन् १७८२ में सालवाईकी सन्धि द्वारा अङ्गरेजोंको सालसट, एलिफेंटा, करंजा और हाग इन ४ टापुओंपर अधिकार होगया । बसीन और गुजरातकी जीती हुई सब वस्तु अङ्गरेजोंने पेशवाको लौटा दीं । सिन्धियाको भड़ौच शहर मिला । सूरतका किला सन् १७५९ में अङ्गरेजोंके अधिकारमें होचुका था । सन्१८००में वहाँके नव्वावने उस शहरका सम्पूर्ण प्रबन्ध अङ्गरेजोंके अधीन करदिया । सन् १८०३ और १८०४ में दूसरी वार महाराष्ट्रोंसे अङ्गरेजोंकी लड़ाई हुई, जिससे वर्तमान सूरत, भड़ौच और खेड़ा जिलेके साथ गुजरातका बहुत बड़ा भाग अङ्गरेजी अधिकारमें होगया । सन् १८१७ में महाराष्ट्रोंकी तीसरी लडाई आरम्भ हुई । पेशवाके परास्त होनेपर पूना, अहमदनगर, नासिक, शोलापुर, बेलगांव, बीजापुर, धारवाड, अहमदाबाद और कोंकन जिला अङ्गरेजी राज्यमे सब मिल गये । उसी समय हुलकरने खानदेश जिलेका अपना अधिकार अङ्गरेजोंको दे दिया । सन् १८४८ में सतारा जिला अङ्गरेजी राज्यमें मिला लिया गया । सन् १८६१ में उत्तरी किनारा जिला मदरास हातेसे बम्बई हातेमें कर दिया गया ।

एलिफेंटाके गुफामन्दिर ।

बम्बई शहरके किलेके स्थानसे ६ मील दूर (१८ अंश, ५७ कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, पूर्व देशान्तरमें) थाना जिलेमे एलिफेंटा नामक टापू है, जिसको देशी लोग धारापुरी तथा गोरापुरीका टापू कहते हैं । टापूका घेरा समुद्रके ज्वार और भाटाके अनुसार ४ मीलसे ४½ मील तक और क्षेत्रफल ४ वर्गमीलसे ६ वर्गमील तक रहता है । उस टापूमें एक तङ्ग घाटीके दोनों ओर एक एक लम्बी पहाड़ी हैं । पहाड़ीका सबसे ऊँचा शृङ्ग समुद्रके जलसे ५६७ फीट ऊँचा है । पूर्व और पूर्वोत्तरके अतिरिक्त टापूके सम्पूर्ण बगलोंमें जङ्गली झाडी लगी है । टापूके पश्चिमोत्तर बगलमें नाव लगनेकी जगह है । प्रतिवर्ष हजारों आदमी बम्बईके अपोलो बन्दरसे नावमें अथवा स्टीमलंचमें सवार होकर एलिफेंटाकी गुफाओंको देखनेके लिये उस टापूमें जाते हैं । शिवरात्रिको वहाँ एक मेला होता है । शिवके त्यौहारोंमें बहुत लोग त्रिमूर्त्तिके दर्शनको जाते हैं । उस टापूमें पानीका एक गाड है ।

गुफामन्दिरोंके होनेके कारण एलिफेंटा टापू प्रसिद्ध है । वहाँ हिन्दुओंके ५ गुफा मन्दिर हैं, जिनमेसे ४ दुरुस्त अथवा प्रायः दुरुस्त हैं, किन्तु पांचवाँ (एक बड़ा गुफा मन्दिर) पत्थरोंसे भर गया है । वहाँके गुफामन्दिरों तथा देव मूर्त्तियोंमें पत्थर अथवा ईटोंके जोड़ नहीं हैं, उसी पहाड़ीके भीतरसे पत्थर खनकर, उसी जगह मन्दिर, स्तम्भ और प्रतिमा सब कुछ बनाई गई थीं, जो अबतक विद्यमान हैं ।

उनमें टापूके पश्चिमवाली बड़ी पहाड़ीके बगलमें समुद्रके ज्वारके पानीसे २५० फीट ऊपर त्रिमूर्त्तिकी गुफा अधिक मनोरम है । उसमें बहुत यात्री जाते हैं । नावसे उतरनेके स्थानसे ¾ मील दूर उस गुफाका दरवाजा है । उत्तर मुखकी गुफा है । वह आगेके दरवाजेसे पीछेकी दीवार तक १३० फीट लम्बी और पूर्वके बगलसे पश्चिमके बगल तक इतनीही चौड़ी है, किन्तु उसका फर्श चौकोना नहीं है । आगेका ओसारा, जो तीन ओरसे खुला

हुआ है, ५५ फीट लंबा और आगेसे पीछे तक १६ फीट चौड़ा है। ओसारे और पीछेके भागको छोड़ करके गुफाका खास अंग ९१ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा है। उसमें ६ पंक्तियोंमें २६ स्तंभ और १६ बगलवाले स्तंभ थे, जिनमेंसे ८ स्तंभ टूट फूट गये हैं और दूसरोंको भी हानि पहुँची है। नीचेका फर्श और ऊपरकी छतकी ऊँचाई एक समान नहीं है, इससे स्तंभ १५ फीटसे १७ फीट तक ऊँचे होते है।

गुफा अर्थात् गुफामन्दिरके भीतर उसकी पिछली दीवारके पास एकही साथ ब्रह्मा, विष्णु और रुद्रकी मूर्त्ति बनी हुई है, जिनको त्रिमूर्त्ति कहते हैं। उनमेसे सामने अर्थात् उत्तर ब्रह्मा, पश्चिम विष्णु और पूर्व रुद्रकी मूर्त्ति है। तीनों मूर्त्तियोंके केवल गले और मुख-मण्डल मात्र हैं। इस मूर्त्तिकी ऊँचाई १८ फीट और आंखके सामनेके सिरका घेरा २३ फीट है। त्रिमूर्त्तिके पास अङ्ग भङ्ग किये हुए तेरह तेरह फीट ऊँचे दो द्वारपाल हैं। त्रिमूर्त्तिके दोनो तरफ दो कमरोमें बहुतसी मूर्त्तियाँ बनाई हुई हैं, जिनमेंसे पूर्ववाले कमरेमें १७ फीट ऊँचा अर्द्धनारीश्वर शिव, शिवके दहिने कमलासन पर बैठे हुए ब्रह्मा और कमलासनके नीचे हंसोंकी ५ प्रतिमा और अर्द्धनारीश्वरके बायें गरुड़पर चढ़े हुए विष्णु हैं। त्रिमूर्त्तिके पश्चिमवाले कमरेमे १६ फीट ऊँची शिवकी और १२ फीट ऊँची पार्वतीकी प्रतिमा है। एक दूसरे कमरेमें शिव और पार्वतीके ब्याहके समयकी प्रतिमा बनी हुई हैं;—शिवजीके दहिने पार्वती खडी हैं। हिमवान् और उनकी भार्या शिवको पार्वतीको समर्पण कर रहे है। एक कमरेमें शिवलिंग और अनेक बडे द्वारपाल है। गुफाके पश्चिम भागके कमरेमें कपालभृत् शिवकी ११ फीट ऊँची मूर्ति है। गुफाके भीतर एक स्थानमें रावण कैलास पर्वतको उठा रहा है। पर्वतपर शिव और पार्वतीकी मूर्त्ति है। एक स्थानपर शिवके गण दक्षके यज्ञका विध्वंस कर रहे है।

व्याघ्र मन्दिर लगभग ५० फीट लम्बा और १८ फीट ऊँचा है। उसके आगे ६ स्तम्भ बने हैं। सीढ़ीके दोनों ओर बाघकी प्रतिमा खड़ी हैं। भीतर शिवलिङ्ग और बहुत देवमूर्तियाँ हैं। अन्य गुफा मन्दिर हीन दशामें विद्यमान हैं, जिनमेंसे एक बड़ी गुफासे दक्षिण-पूर्व उत्तर-वाले मान्दिरके साथ ११० फीट लम्बा है, उसका अगवास ८० फीट लम्बा है। एक गुफा एलि-फेण्टा टापूकी दूसरी पहाड़ीके बगलमें है। गुफाओंकी बहुतसी मूर्त्तियोंके अङ्ग भङ्ग होगये हैं।

इतिहास—उस टापूके दक्षिण बगलमें १३ फीट लम्बा और ७½ फीट ऊँचा पत्थरका हाथी था, इस लिये पोर्चुगाल वालोंने उस टापूका नाम एलिफेण्टा रक्खा; क्योंकि अङ्गरे-जीमें हाथीको एलिफेण्ट कहते हैं। सन् १८१४ में उस हाथीका गला और सिर गिर गया। सन् १८६४ मे उसका धड़ बंबईके विक्टोरिया बागमें रक्खा गया।

अनुमान किया जाता है कि तीसरी सदीसे दशवीं सदी तक उस टापूपर एक नगर और प्रसिद्ध पवित्र स्थान था, जहाँ बहुत यात्री लोग जाते थे। पहाड़ीके पास धानके खेतमें ईंटे और पत्थरकी नेव, टूटे हुए स्तम्भ; शिवकी अनेक प्रतिमा और एक पुराने नगरके अनेक चिह्न मिले हैं।

एलिफेण्टाकी गुफाओके बनानेका ठीक समय जान नहीं पड़ता; उनको कोई कोई पाण्डवोकी गुफा, कोई कोई किनाराके बाणासुर नामक राजाकी बनवायी हुई और कोई बड़े सिकन्दरकी बनवाई हुई कहते हैं। गुफाओंमें कोई शिला लेख नहीं है। अङ्गरेज वैज्ञानिक लोग त्रिमूर्तिकी बड़ी गुफाको ९ वीं अथवा १० वीं सदीकी बनी हुई कहते हैं।

तेइसवां अध्याय।

(बम्बई हातेमें) योगेश्वरका गुफामन्दिर, मण्डपेश्वरके गुफा-मन्दिर, कनारीके गुफामन्दिर, बसीन, (पोर्चुगीजोंके राज्यमें) दमन, (बम्बई हातेके गुजरात देशमें) नौसारी, सूरत, भड़ौंच, शुक्लतीर्थ, डभोई, चन्द्रोदय तीर्थ और बड़ोदा।

योगेश्वरका गुफा मन्दिर।

बम्बईके विक्टोरिया स्टेशनसे ६ मील पूर्वोत्तर और कुलावाके रेलवे स्टेशनसे ८ मील उत्तर दादरका रेलवे स्टेशन है। दादरमें 'ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे' और 'बम्बे बड़ोदा सेण्ट्रल इण्डियन रेलवे' का अलग अलग स्टेशन बना है। स्टेशनके पास एक धर्मशाला है। मैं दादरसे बम्बे बड़ोदा सेंट्रल इण्डियन रेलवेकी गाड़ीमे सवार हो उत्तरकी ओर चला।

दादरके रेलवे स्टेशनसे २ मील उत्तर माहिमके स्टेशनके पास बम्बई टापू और साल-सटके टापूके बीच वाले कजवे अर्थात् पहाड़ी पुलको रेलगाड़ी पार होती हैं। माहिमके स्टेशनसे १ मील उत्तर बान्दरा कसबेका रेलवे स्टेशन है। थाना जिलेमें बान्दरा सबसे बड़ा कसबा है। उसमे सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १८३१७ मनुष्य थे। बान्दराके रेलवे स्टेशनसे ७ मील (बम्बईके कुलावाके स्टेशनसे १८ मील) उत्तर गुरगाँवका रेलवे स्टेशन है।

गुरगाँवके रेलवे स्टेशनसे २½ मील दक्षिण और योगेश्वर गाँवसे २ मील पूर्वोत्तर थाना जिलेके सालसट टापूमे अम्बोली नामक गाँवके पास योगेश्वरका गुफा मन्दिर है। यह इलो-राके कैलासको छोड़ करके भारत वर्षके सब गुफा मन्दिरोंसे बड़ा है। लोग अनुमान करते हैं कि यह गुफा ८ वीं सदीकी बनी हुई है। इसकी लम्बाई २४० फीट और चौड़ाई २०० फीट है। पूर्वके दरवाजेकी बनावट अच्छी है; किन्तु पश्चिम वाले दरवाजेसे प्रायः सब लोग आते जाते हैं। प्रथम४ सीढ़ियोंके ऊपर एक छोटे कमरेमे टूटी हुई बहुत प्रतिमा देख-नेमें आती हैं। उसके आगे एक दरवाजे होकर मध्य वाले बड़े कमरेमें, जो १२० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है, जाना होता है। कमरेमें २० स्तम्भ बने हुए हैं। बड़े कमरेके भीतर २४ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा महादेवका निज मन्दिर है, जिसमें ४ द्वार बने हुए है। गुफामन्दिरके पूर्वके दरवाजेके ऊपर एक आश्चर्य प्रतिमा है, जो तैयार नहीं हुई थी। इनके अतिरिक्त उस गुफामें जगह जगह बहुतसी पुरानी मूर्त्तियाँ बनी हुई हैं। योगेश्वरगुफासे ६ मील उत्तर मगथानाकी गुफा है।

मण्डपेश्वरके गुफामन्दिर।

गुरगाँवके रेलवे स्टेशनसे ४ मील (बम्बईके कुलावाके स्टेशनसे २२ मील) उत्तर बोरवलीका रेलवे स्टेशन है। बोरवलीसे १ मील दूर और कनारीकी पहाड़ीसे, जिसमें

कनारीके गुफा मन्दिर हैं, ४ मील पश्चिम मण्डपेश्वरकी गुफायें हैं। रेलवे स्टेशनसे घोड़े जानेका मार्ग है।

वहाँ पहाड़ीमें काटकर बनाये हुए ३ गुफामन्दिर हैं। लोग अनुमान करते हैं कि वे ९ वीं सदीके बने हुए हैं। पूर्व वाला पहला गुफामन्दिर ५७ फीट लम्बा और १८ फीट चौड़ा है। उसके पश्चिम पत्थरका कुण्ड है, जिसमें सर्वदा पानी रहता है। दूसरा गुफामन्दिर २७ फीट लम्बा और १५ फीट चौड़ा है। उसके पश्चिमकी दीवारमें २५ प्रतिमाओंके साथ एक चतुर्भुज मूर्त्ति है, जिसको लोग भीम कहते हैं; कदाचित् अपने गणोंके साथ वह शिव होवें। बहुत प्रतिमाओंके अंग भङ्ग हैं, पश्चिम वाले तीसरे गुफा मन्दिरमें ताला बन्द करके उसका पुजारी अपने घर चला जाता है। उसमें कमरे और अनेक छोटी कोठरियाँ बनी हुई हैं। दक्षिण और उससे अधिक ऊँचाईपर ४० फीट ऊँचा गोलाकार टावर है। बाहरसे उसपर चढ़नेकी सीढ़ी बनी है। पूर्व वाली गुफाके दक्षिण–पश्चिम पोर्चुगीजोंका उजड़ा पुजड़ा गिरजा है।

कनारीके गुफामन्दिर।

बोरवलीके रेलवे स्टेशनसे, जो बम्बईके कुलाबा स्टेशनसे २२ मील उत्तर है, ५ मील दूर और तुलसी झीलके बाँधसे २ मील उत्तर तथा थानाके डाक बङ्गलेसे ६ मील दूर साल-सट टापूके मध्य भागकी एक पहाड़ीके बगलमें नीचे ऊपर छोटे बड़े १०९ गुफा मन्दिर बने हुए हैं। बोरवलीके स्टेशनसे वहाँ तक घोड़े जाने लायक मार्ग है। सम्पूर्ण गुफामन्दिर पहाड़ीसे पत्थर खोदकर बनाये गये थे, उनमें कोई जोड़ नहीं है। वहाँके गुफा मन्दिर इलोरा, अजंता तथा कारलीके गुफामन्दिरोंके समान मनोहर नहीं हैं; तिसपर भी दर्शनीय वस्तु हैं। पहाड़ीके नीचेसे सब गुफाओंके पास पत्थरमें काटकर पगडण्डी राह बनाई हुई है। गुफा मन्दिरोंमें स्थान स्थानपर बुद्धदेव और बहुत बौद्ध मूर्त्तियाँ बनी हुई हैं। लोग अनुमान करते हैं कि बड़ा चैत्य ५ वीं सदीका है; किन्तु ९ विहार उससे पहिलेके होंगे (विहार उसे कहते हैं, जिसके मध्यमें बड़ा कमरा और बगलोंमें बौद्ध मतके भिक्षुकोंके रहनेके लिये कोठरियाँ हों)। ९ वीं सदीके पीछे तक कनारीकी गुफा बनी थीं। वहाँ बुद्ध देवका एक दाँत था, इस लिये वह स्थान पवित्र समझा गया।

कनारीके गुफामन्दिरमें बड़ा चैत्य गुफा अर्थात् बौद्ध मन्दिर प्रधान और दिलचस्प है। वह कारलीके बड़े चैत्यके नकलका है, किन्तु उसके समान यह सुन्दर नहीं है। इसके दोनों बगलोंमें बुद्ध देवकी २३ फीट ऊँची एक एक प्रतिमा है। बरण्डाके दरवाजेके स्तम्भपर चौथी सदीका शिलालेख है। बरण्डा और गुफामन्दिरके बीचमें पानीका एक कुण्ड है।

बड़े चैत्यसे थोड़ी दूरपर वहाँके विहार गुफाओंमें सबसे उत्तम 'दरबार गुफा है। छोटी कोठरियोंको छोड़ करके उसकी लम्बाई ९६ फीट और चौड़ाई ४२ फीट है। एक गुफा मन्दिरमें बुद्ध देव कमलासनपर बैठे हैं, उनके पास ७ पुजारी और सेवकोंकी छोटी मूर्त्तियाँ हैं।

तुलसी झील—कनारीके गुफामन्दिरोंसे २ मील दक्षिण सालसट टापूमें तुलसीझीलका बाँध है। वह झील सन् १८७२ में ४ लाख रुपयेके खर्चसे तैयार हुई। उससे बम्बईके पासकी मालावार पहाड़ीपर पानी पहुँचाया जाता है।

विहारझील-तुलसीझीलसे २ मील दक्षिण और भण्डूपके रेलवे स्टेशनसे लगभग ५ मील दूर सालसट टापूमें २ मील लम्बी और १½ मील चौड़ी तथा १४०० एकड़ भूमिपर विहारझील वनी है। उसको एक अङ्गरेजने गरपर नदीको बाँध करके लगभग ३८००००० रुपयेके खर्चसे बनवाया था। झीलका बाँध ३० फीट चौड़ा और पानीके ऊपर ३० फीट ऊँचा है। उसमें ७५ फीट तक गहरा पानी रहता है पानीमें बहुत मछलियाँ हैं।

वसीन।

बोरवलीके रेलवे स्टेशनसे ६ मील उत्तर भयंदरके स्टेशनके पास एक बड़ी नदीपर रेलवेका पुल बना हुआ है। बोरवलीसे ११ मील (बम्बईके कुलावाके रेलवे स्टेशनसे ३३ मील) उत्तर वसीनरोडका रेलवे स्टेशन है। स्टेशनसे ५ मील दूर (१९ अंश, २० कला, २० विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, ५१ कला, २० विकला पूर्व देशान्तरमें) बम्बई हातेके थाना जिलेमें समुद्रके पूर्व सबडिवीजनका सदर स्थान वसीन एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वसीनमें ११२९१ मनुष्य थे, अर्थात् ७१४७ हिन्दू, ३०८९ कृस्तान, १०३२ मुसलमान, १५ जैन और ८ पारसी।

पुराने शहरके चारों तरफ दीवार है। उसके भीतर १४ वीं और १५ वीं सदीके बने हुए कई एक गिरजे उजड़ रहे हैं। समुद्रके किनारेसे थोड़ीही दूर पर वसीनका खण्डहर और किला विद्यमान है। वहाँ हालका बना हुआ एक शिव मन्दिर है। वसीनमें सरकारी कचहरियाँ बनी हुई हैं।

इतिहास-सन् १५३४ में पोर्चुगालवालोंने गुजरातके सुलतान बहादुरशाहसे दमनके साथ, जो अब तक पोर्चुगीजोंके अधिकारमें है, वसीनको लेलिया। उसके २ वर्ष पीछे वसीनमें एक किला बनाया गया। लगभग २०० वर्ष वसीन पोर्चुगालवालोंके अधिकारमें था। उस समय उसका विभव बहुत बढ़ गया था। अन्य शहरोंके धनी लोगोंको वसीनके धनी लोगोंकी उपमा दी जाती थी। बहुतसे उत्तम मकान बने थे। उस समय वहाँ १ यतीमखाना, १ कैथेड्रल और १३ गिरजे थे। सन् १६९५ में महामारीसे शहरके निवासियोंमेंसे एक तिहाई लोग मर गये। सन् १७६५ में महाराष्ट्रोंने वसीनको लेलिया। सन् १७८० में अङ्गरेजोंने वसीनको महाराष्ट्रोंसे छीन लिया था, किन्तु सन् १७८२ में उनको लौटादिया। सन् १८१८ में पेशवाके परास्त होजानेपर वह फिर अङ्गरेजोंको मिल गया।

दमन।

वसीन रोडके रेलवे स्टेशनसे ७६ मील (बम्बईके कुलावाके स्टेशनसे १०९ मील) उत्तर दमन रोडका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके गुजरात प्रदेशमें पोर्चुगालके बादशाहके हिन्दुस्तानके राज्यका एक भाग, गोआके गवर्नरके अधीन दमन एक राज्य है। उस राज्यके दो भाग हैं, एक खास दमन परगना और दूसरा नागरहवेली परगना। सन् १७८१ की मनुष्य-गणनाके समय दोनों परगनोंके ८२ वर्गमील क्षेत्रफलमें १०२०२ मकान और ४९०८४ मनुष्य थे।

खास दमन परगनेका क्षेत्रफल २२ वर्गमील है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय २९ गाँवोंमे २१६२३ मनुष्य थे। दमन परगना दमन गंगा नामक नदी

द्वारा दो भागोंमें विभक्त है;—नदीके दक्षिण थाना जिलेके पास बडा दमन और नदीके उत्तर सूरत जिलेकी सीमाके पास छोटा दमन है।

दमन गंगा नामक नदीके दोनों बगलोंपर एक एक किला है। दोनोंकी दीवारोंपर तोपें रक्खी हुई हैं। नदीके बायेंका पत्थरका किला, जिसके बगलमें जमीनकी ओर खाई है, प्रायः मुरब्बा शकलमें है; उसमें वहाँके गवर्नर और उनके अधीन कर्मचारियोंके आफिस तथा मकान बने हुए हैं और म्युनिसिपल आफिस, अस्पताल, जेलखाना, अनेक बारक, ६ नया चर्च और बहुतसे खानगी मकान हैं। उस किलेमें पोर्चुगीजोंके गवर्नर, फौजी सामान, पोर्चुगाल सरकारके कर्मचारी लोग और चन्द खानगी निवासी रहते हैं, जो प्रायः सब क्रस्तान हैं। नदीके दहिनेका छोटा किला नये बनावटका है। उसकी दीवार बड़े किलेकी दीवारसे अधिक ऊँची है। उसके भीतर एक गिरजा, एक पादड़ीकी कोठी, एक भजनालय इत्यादि इमारतें हैं।

दमन परगनेके पूर्व ओर ६० वर्गमील क्षेत्रफलमें नागरहवेली परगना है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय ७२ गाँव और २७४६२ मनुष्य थे।

इतिहास—सन् १५३१ में पोर्चुगाल वालोंने दमनको लूटा। देशियोंने फिर उसको सँवारा। सन् १५५९ में पोर्चुगाल वालोंने उसको ले लिया। सन् १७८० में पूनाकी सन्धिके अनुसार महाराष्ट्रोंने पोर्चुगीजोंको नागरहवेलीका परगना दे दिया। पोर्चुगाल वालोंके हिन्दुस्तानके राज्यकी बढ़तीके समय दमनमें बड़ी सौदागरी होती थी, किन्तु अब बहुत कम होती है।

नौसारी।

दमनरोडके रेलवे स्टेशनसे ६ मील उत्तर उदवादाका रेलवे स्टेशन है। उदवादा बस्तीमें पारसी लोगोंका सबसे पुराना अग्नि मन्दिर है। लगभग सन् ७०० ईस्वीमें पारसी लोगोंने पारससे अग्नि लाकर वहाँ स्थापित किया था; वही अग्नि अबतक वहाँ जलता है। उदवादासे १० मील उत्तर सूरत जिलेके बलसर कसबेका रेलवे स्टेशन है।

उदवादाके स्टेशनसे ३४ मील और दमनरोडके स्टेशनसे ४० मील (बम्बईके पासके दादरसे १४१ मील) उत्तर नौसारीका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके सूरत जिलेके भीतर बड़ौदाके राज्यमें पूर्ना नदीके बायें अर्थात् दक्षिण किनारेपर समुद्रसे लगभग १२ मील पूर्व नौसारी एक सुन्दर कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नौसारीमें १६२७६ मनुष्य थे, अर्थात् ९२८२ हिन्दू, ४४५२ पारसी, २३२९ मुसलमान, २१२ जैन और १ क्रस्तान।

नौसारीमें एक उत्तम टाउनहाल, पारसी लोगोंका एक सुन्दर मन्दिर, अस्पताल, लायब्रेरी और महाराज गायकवाड़का जेलखाना है। उसमें पारसी लोग बहुत बसते हैं। पारसी लोगोंने यूरोपियन तरीके पर वहाँ अर्क और साबुनका कारखाना जारी किया है। समुद्रसे पूर्ना नदी होकर नौसारीमें बहुत माल आता है। मलाह लोग पूर्ना नदीको नौसारी नदी कहते है। पारसी लोग नौसारीमें तांवा, पीतल, लोहा, कपड़ा; लकड़ी आदिके काम करते है। नौसारीकी खाड़ीके पास पारसी लोगोंके मुर्दे रखनेका दोखमा अर्थात् श्मशान मन्दिर बना हुआ है। पारसियोंके आनेके समयसे नौसारी उनकी जमायतका सदर स्थान है।

सूरत।

नौसारीके रेलवे स्टेशनसे १८ मील (बम्बईके कुलाबाके स्टेशनसे १६७ मील) उत्तर और भड़ौचके स्टेशनसे ३७ मील दक्षिण सूरतका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके गुजरात प्रदेशमे तापती नदीके बायें अर्थात् दक्षिण किनारेपर (२१ अंश, ९ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, ५४ कला, १५ विकला पूर्व देशान्तरमें) समुद्रसे १० मील पूर्व जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसवा सूरत है,। *

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके साथ सूरत शहरमे १०९२२९ मनुष्य थे, अर्थात् ५६०७४ पुरुष और ५३१५५ स्त्रियाँ। इनमें ७८२४० हिन्दू, ३०४२० मुसलमान, ५८९३ पारसी, ४२६३ जैन, ३७७ क्रस्तान और ३६ यहूदी थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें २६ वाँ और बंबई हातेके अङ्गरेजी राज्यमें चौथा शहर है।

सूरत शहर तापती नदीके झुकावपर है। वह नदी वहाँसे पश्चिम अपने मुहानेकी ओर घूम गई है। नदीके किनारेकी ओर छोड़ करके शहरके बगलोंमें पुरानी दीवार है। एक अच्छी सड़क स्टेशन रोडसे किलेकी ओर गई है। दूसरी सड़कें कम चौडी हैं। रेलवे स्टेशनके पास एक सरकारी धर्मशाला बनी हुई है।

खास शहरके भीतर घनी वस्ती है। सड़कोंके बगलोंमें पारसी लोगों, उच्च जातिके हिन्दुओं तथा बोरा मुसल्मानोंके मकान सुन्दर बने हुए हैं। सूरतमें ये तीनों खास करके धनी हैं। शहरके पश्चिम नदीके पास परेडकी जगहके साथ फौजी छावनी फैली है। नदीकी ओर जिलेकी कचहरियाँ हैं।

सूरत शहरमें तापती नदीके किनारेके पास सन् १५४० का बना हुआ एक किला है। किलेकी दीवार ८ फीट मोटी है, उसके प्रत्येक कोनेपर गोलाकार बुर्ज बना हुआ है। किलेके पूर्व वाले फाटकके ऊपर शिलालेख है। किलेके पास उससे लगा हुआ ८ एकड़ भूमिपर विक्टोरिया बाग है। किले और कष्टम हौसके बीचमें सन् १८२० का बना हुआ अङ्गरेजी गिरजा है, जिसमें १०० आदमी बैठ सकते हैं।

सूरतमें हिन्दुओंके अनेक मन्दिर हैं, जिनमेंसे स्वामीनारायणका मन्दिर और हनूमानजीके २ मन्दिर प्रधान हैं। स्वामीनारायणके विशाल मन्दिरमें ३ गुम्बज हैं, वह शहरके सब स्थानोंसे देख पड़ते हैं।

सूरतमें मुसलमानोंकी बहुत मसजिदें हैं, जिनमें ४ प्रधान हैं—(१) गोपीतालाव नामक पुराने तालावके पश्चिम किनारेपर नवसैयद साहबकी मसजिद है, जो एक समय गुजरातकी अत्युत्तम इमारतोंमें गिनी जाती थी। (२) सैयदपुरामे सैयद इद्रुसकी मसजिद सूरतकी प्रसिद्ध इमारतोंमेंसे एक है, जिसको सन् १६४० में एक मुसलमान सौदागरने बनवाया था। उस मसजिदमे एक बड़ा मीनार है। सैयद इद्रुस सूरतके वर्तमान काजी साहबके पुरुषे थे। (३) मिर्जा सामियाकी मसजिद है, जिसको सूरतके किलेको बनवाने वाले खोदाबन्दखाँने सन् १५४० में बनवाया था। उसमें संगतरासीका अच्छा काम है। (४) सन्

* हालमें एक रेलवे लाइन सूरत शहरसे पूर्व खानदेश जिलेके जलगावके रेलवे स्टेशनमें जा मिली है। उस लाइन पर सूरत शहरसे १५९ मील अमलनेर १७५ मील धरनगाव और १९४ मील जलगावका स्टेशन है।

१५३० की बनी हुई ख्वाजा दीवान साहबकी मसजिद है। इनके अतिरिक्त बोरा मुसलमानोंके अनेक सुन्दर मकबरे हैं।

सूरतमे पारसियोंके २ अग्नि मन्दिर, जैन लोगोंके ४० से अधिक मन्दिर और अङ्गरेजोंके कई एक गिरजे और बहुतसी कबरें हैं। दिल्ली जाने वाली सड़कके निकट सन् १८७१ का बना हुआ ८० फीट ऊँचा घड़ीका बुर्ज है, जिसपर चढ़नेसे सूरत शहरकी सुन्दर शोभा देखनेमें आती है। इनके अतिरिक्त सूरतमें एक हाइ स्कूल, जिसमें ५०० लड़के बैठ सकते हैं, २ खैराती अस्पताल, जानवरोंके लिये १ अस्पताल और रूई तथा कपड़ेके कई एक मिल अर्थात् कल कारखाने हैं। शहरसे १२ मील पश्चिम सूरतका बन्दरगाह है।

प्रधान सड़कोंपर रातमें लालटेनोकी रोशनी होती है। सूरतकी चन्दनकी लकड़ीकी नकाशीदार चीजें प्रसिद्ध हैं। वहाँका सामुद्रिक व्यापार पहिलेसे अब बहुत घट गया है। सन् १८०१ में वहाँकी आमदनी और रफतनीके मालका दाम १०४३२२२ पाउंड था, किन्तु सन् १८८३–१८८४ में वह केवल ३२७२२१ पाउंड रह गया, इसमेंसे १४६६९५ पाउंडका माल आया और १८०५२६ पाउंडका माल सूरतसे अन्य स्थानोंमें गया। बहुत रुई और अन्न सूरतसे अन्य शहरोंमें भेजे जाते हैं। शहरमें ३६ रुपये और ७२ रुपये भरके सेरसे सौदा बिकते हैं। शहरके कई एक मील दूर देहातमें एक मेला होता है।

तापती नदी–रेलवे स्टेशन और तापती नदीके बीचमें सूरत शहर है। स्टेशनसे १½ मील दूर तापती नदीका प्रधान घाट है। वहाँ शहरकी ओर दूर तक पत्थरकी सीढ़ियाँ बनी हुई हैं, जिसपर पचासहाँ आदमी अपने कपड़े धोते हुए देखनेमें आये; क्योंकि वहाँके प्रायः सब हिन्दू अपने कपड़े आप धोते हैं। घाटके पास तापती नदीपर १७ पायोंका पुल है। उस घाटपर आषाढ़ मासमें एक महीना स्नानका मेला होता है।

तापती नदी सतपुडाकी पहाड़ीसे निकलकर लगभग ४४० मील पश्चिम बहनेके पश्चात् सूरत, शहरसे १४ मील पश्चिम डुमसा गाँवके पास खंमातकी खाडीमें गिरती है। बुरहानपुर, सूरत इत्यादि नगर उसके किनारे पर हैं। तापी अर्थात् तापती नदीका निकास स्थान किसी पुराणमें विन्ध्याचल; किसीमें ऋक्षवान् पर्वत और किसी पुराणमें पारिपात्र पहाड़ लिखा है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—भविष्यपुराण—(पूर्वार्द्ध, ४२ वाँ अध्याय) सूर्यकी पत्नी संज्ञासे यम नामक पुत्र और यमुना नामक पुत्री और छायासे सावर्णि मनु और शनिश्चर दो पुत्र और तपती नामक एक कन्या उत्पन्न हुई। एक दिन यमुना और तपतीका परस्पर विवाद हुआ। उस समय परस्परके शापसे दोनों नदी होगई। सूर्य भगवानने कहा कि यमुनाका जल गङ्गाजलके समान और तपतीका जल नर्मदाके जलके तुल्य माना जायगा।

आश्चर्य फकीर–जिस समय मैं सूरतकी धर्मशालामें टिका था; उसी समय एक मुसलमान फकीर, जिसकी अवस्था ४० वर्षकी होगी, रेलगाड़ीसे उतर कर बैलगाडीमें सवार हो धर्मशालामें पहुँचा और धर्मशालाके एक भागमें उतरा। उसके जाने पर शहरसे दर्शकोंका तंता लग गया। सैकड़ों मनुष्योंकी भीड लग गई। कई मुसलमान उसकी सेवामें नियुक्त होगये। बहुतेरे लोग फकीरके पास पैसा रखने लगे। मैंने पहिले अखबारोंमे पढ़ा था कि एक फकीर, जिसकी देहमें लोहेके बहुत सीकड़ हैं, जब रेलगाड़ीमें बैठा तब रेल कर्मचारियोंने उसको माल समझकर पसेंजर गाड़ीसे उतारकर मालगाड़ीमें चढ़ा दिया। मुझको अनुमान होता है कि यह वही फकीर है।

फकीरके शरीरमें ३ मनसे अधिक लोहेके सींकड़, मेख तथा कड़ियां थी. उसके गले, कमर, जंघाओं तथा भुजाओंमें मोटी मोटी कड़ी लगी थीं, जिनमेंसे गलेकी कड़ियोंमें ४ फीटसे अधिक लम्बे पचीस तीस मोटे मोटे सींकड़, जिनके नीचेके छोरोंपर लोहेके मेख थे। और दोनो भुजाओंकी दोनो कडियोंमें ग्यारह सींकड़ लटके थे। इसी भांति उसकी कमर और जंघाओंकी कड़ियोंमे बहुत सींकड़ लगे थे। वह फकीर सींकड़ोंके बोझसे चल फिर नहीं सकता था; दो आदमियोंके सहारेसे थोड़ी दूर चलता था।

सूरत जिला—यह जिला गुजरात देशके दक्षिण भागमें है। इसके उत्तर भड़ौंच जिला और बड़ौदाका राज्य, पूर्व बड़ौदा, राजपिपला, बांसड़ा और धर्मपुरके देशी राज्य; दक्षिण थाना जिला और पोर्चुगीजोंका स्वतन्त्र दमन राज्य और पश्चिम अरबका समुद्र है। जिलेका सदर स्थान सूरत शहर है। डांगा पहाड़ियों और समुद्रके बीचमे केम नदीसे दक्षिण और दमनगंगासे उत्तर जिलेका मैदान लगभग ८० मील फैला है। जिलेकी औसत ऊँचाई समुद्रके जलसे लगभग १६० फीट है। जिलेमें चन्द छोटी पहाडियाँ हैं। नदियोंमे तापती और केमनदी बड़ी हैं। पहाड़ियोमे मकान बनाने लायक पत्थर बहुत है। कोई प्रसिद्ध जङ्गल नहीं है। जङ्गलोंमें तेंदुए, भालू, बनैले शूअर, भेड़िया इत्यादि बनजंतु रहते हैं। सूरत जिलेमे गुजराती और कुछ महाराष्ट्री भाषा प्रचलित है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सूरत जिलेके १६६२ वर्गमील क्षेत्रफलमें ६१४१९८ मनुष्य थे; अर्थात् ४१५०३१ हिन्दू, ११८६६४ पहाडी और जङ्गली जातियाँ, ५५५४७ मुसलमान, १२५९३ पारसी, ११६७० जैन, ६२१ क्रस्तान, ६१ यहूदी, और ११अन्य। हिन्दुओमें ७६८६३ दुबला, ४९४५२ कोली (खेतिहर), ४००५९ ब्राह्मण, ३६८०१ कुन्बी (खेतिहर), ३१५०६ महारा, ९५८१ तेली, ८६५९ राजपूत, केवल १४१६ धोबी और बाकीमे अन्य जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सूरत जिलेके कसबे सूरतमे १०९२२९, बलसरमे १४७७९ और रांडेरमे १०९२६ मनुष्य थे। बलसर एक बन्दरगाह है। सूरत शहरसे २ मील दूर तापतीके पीछे उसके किनारे पर रांडेरमें रुईकी तिजारत होती है। बुढ़ानमें एक बडा मन्दिर है; वहाँ हिन्दू यात्री जाते हैं। उनाईमे एक सालाना मेला होता है।

इतिहास—१३ वीं सदीके आरम्भमें दिल्लीका कुतबुद्दीन अनहिलवाडाके राजा भीमदेवको परास्त करनेके पश्चात् सूरत शहर तक गया। उस समय यह जिला एक हिन्दू राजाके राज्यका एक भाग था। वह राजा सूरत शहरसे १३ मील पूर्व कारेंजके किलेमें रहता था। उसने मुसलमानोंकी अधीनता स्वीकार की। सन् १३४७ में महम्मदतुगलककी फौजने सूरत शहरको लूटा। सन् १३७३ में फीरोज तुगलकने सूरतमें एक किला बनवाया। १६ वी सदीके आरम्भमे जब गोपी नामक एक धनी हिन्दू सौदागर वहाँ बसा, तब सूरतका वर्तमान शहर कायम हुआ। उस समय सूरतमें बडी तिजारत होती थी। पोर्चुगाल वालोंने अपने हिन्दुस्तानमें आनेके बाद जब सूरत शहरको लूटा, तब अहमदाबादके सुलताननें मजबूत किला बनानेकी आज्ञा दी। सन् १५४० में खुदावन्दखां नामक तुर्कीने सूरतमें किला बनवाया। सन् १५७३ में अकबरने स्वयं जाकर ४७-दिन घेरा देनेके बाद सूरत शहरको ले लिया। उस सन्से १६० वर्ष तक मुगलोंके नियत किये हुए अफसर

सूरत शहर और जिलेका प्रबन्ध करते थे। अकबर, जहांगीर और शाहजहांके राज्यके समय सूरतमें सर्वदा शांति बनीरही। १७ वीं सदीमें सूरत भारतवर्षके प्रथम तिजारती शहरोंमेंसे एक थी, बहुतेरे यूरोपियन सौदागर वहाँ आते थे।

सन् १५७३ से पोर्चुगाल वाले सूरतमें तिजारत करते थे। सन् १६०८ में एक अङ्गरेजी जहाज तापतीके मुहानेपर पहुँचा। सन् १६१२ में दिल्लीके बादशाह जहांगीरने ईष्ट इण्डियन कम्पनीको सूरत, कांबे, अहमदाबाद और गोगोमें तिजारत करनेकी आज्ञा दी। सन् १६१५ में अङ्गरेजोंने पोर्चुगीजोंको परास्त किया। उस समय अङ्गरेजोंकी ओर ४ जहाजोंपर ८० तोपें थीं और पोर्चुगीजोंकी ओर ४ गैलियन, ३ अन्य बड़े जहाज और ६० छोटे जहाज तथा १३४ तोपें थीं। उस समय अङ्गरेजोंकी कोठी सूरतमें कायम हुई। सन् १६१६ में हालेंड वालोंने बादशाहसे आज्ञा लेकर सूरतमें अपनी कोठी नियत की। कुछ फरांसीसीभी सूरतमें रहने लगे।

सन् १६६४ की ५ जनवरीको शिवाजी ४००० घोड़सवारोंके साथ सूरतमें आपहुंचे उन्होंने ६ दिनों तक शहरको खूब लूटा। शिवाजी अङ्गरेजी कोठी पर महासरा करके कामयाब नहीं हुए, इस लिये मुगल बादशाह औरङ्गजेबने अङ्गरेजो पर प्रसन्न होकर उनका महसूल माफ कर दिया। सन् १६६८ में फरांसीसियोंकी कोठी सूरतमें कायम हुई। सन् १६७० में महाराष्ट्रोंने सूरत शहरको फिर लूटा। उसके बाद सन् १७०२ और १७०७ में सूरत शहर महाराष्ट्रों द्वारा लूटा गया। सूरत शहर १७ वीं सदीके अन्तमें सर्वदासे अधिक धनी था; उस समय उसमें पृथ्वीके प्रायः सब देशोंके लोग तिजारत करते थे। उसके पश्चात् बम्बईकी बढ़तीके साथ साथ सूरतकी घटती होने लगी। सन् १७५९ में सूरतके नवाबने २ लाख रुपये वार्षिक पेंशन कबूल करके अङ्गरेजोंको शहर और किला दे दिया। उस प्रबन्धको दिल्लीके बादशाहने स्वीकार किया। सन् १८०० में सूरत और रांडेर कसबा अङ्गरेजी अधिकारमें होगया। सन् १८११ में सूरतमें २५०००० और सन् १८१६ में १२४४०६ मनुष्य थे। सन् १८३७ में सूरतमें आग लगी, जिससे ९३७३ मकान बरबाद होगये। आग १० मील तक फैल गई थी। उसी साल तापतीकी बाढ़ने सम्पूर्ण शहरमें फैल कर लोगोंको निरालम्ब कर दिया। बहुतेरे सौदागर सूरतको छोड़कर बम्बई चले गये। सन् १८४२ तक नवाबके उत्तराधिकारी नवाब कहलाते थे। सन् १८४७ से सूरत शहरकी धीरे धीरे फिर उन्नति होने लगी। सन् १८६२ में सूरतके किलेसे फौज उठा ली गई।

भड़ौच।

सूरतके रेलवे स्टेशनसे २ मील उत्तर तापती नदी पर रेलवेका बड़ा पुल और ३१ मील उत्तर भड़ौच जिलेमें अङ्कलेश्वर कसबा है *। अङ्कलेश्वरसे ६ मील और सूरतसे ३७ मील (बम्बईके कुलाबाके रेलवे स्टेशनसे २०४ मील) उत्तर और बड़ोदाके रेलवे स्टेशनसे ४४ मील दक्षिण कुछ पश्चिम भड़ौचका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके गुजरात

* अंकलेश्वरसे पूर्वोत्तर एक लाइन राजपरदी होकर रेलवे एजेंसीमें राजपिपलाके राज्यकी राजधानी नंदोद कसबेको गई है। अङ्कलेश्वरसे १९ मील राजपरदी और ३७ मील नंदोद कसबा है।

दशमे (२१ अश, ४३ कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, २ कला पूर्व देशान्तरमें) नर्मदा नदीके दहिने अर्थात् उत्तर किनारेपर उसके मुहानेसे लगभग ३० मील पूर्व भडौंच जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान कसवा भड़ौच है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय भड़ौंच कसवेमें ४०१६८ मनुष्य थे, अर्थात् २०७९० पुरुष और १९३७८ स्त्रियाँ। इनमे २५२५७ हिन्दू, ११३५४ मुसलमान, २२४३ पारसी, ७३२ जैन, ४८८ एनिमिष्टिक अर्थात् जङ्गली जातियाँ, और ९४ कृस्तान थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ३६ वाँ और वम्बई हातेके अङ्गरेजी राज्यमें १३ वाँ शहर है।

पहिले भडौच कसवेके चारोओर पक्की दीवार थी; अब जमीनकी ओरकी दीवार गिर रही है, चन्द स्थानोमें उसकी निशानी भी नहीं है, किन्तु नर्मदाके वाढ़से कसवेको बचानेके लिये कसवेके दक्षिण नदीके पासकी दीवार मरम्मत करके रक्खी हुई है। वह लगभग १ मील लम्बी और ३० फीटसे ४० फीट तक ऊँची पत्थरसे बनी हुई है। नर्मदाके पास १०० फीटसे अधिक ऊँची पहाड़ीपर पुराना किला है। उसमें जेलखाना, अस्पताल, गिरजा, स्कूल, म्युनिसिपल आफिस, लायब्रेरी, हालेंड वालोंकी पुरानी कोठी और जिलेकी कचहरियाँ हैं।

कसवेके अधिक मकान ईटोके, दो मञ्जिले तथा खपड़ेपोश हैं। कसवेके पूर्व भागमें चन्द बड़े मकान हैं। कसवेके पास नर्मदा नदीकी चौड़ाई १ मील है। कसवेके दक्षिण नर्मदा नदीपर रेलवेका सुन्दर पुल बना हुआ है, ऐसा पुल उस रेलवेपर किसी जगह नहीं है। पूर्व वाले फाटकके बाहर नर्मदाके तीरपर भृगुऋषिका मन्दिर है, जिसको लोग कसवेसे पहिलेका बना हुआ कहते हैं। कसवेमें पत्थरकी एक सुन्दर मसजिद, रुई कातने और कपड़े विननेकी ३ मिल (कल कारखाने) और रुई ओटने तथा दवानेके कई कारखाने हैं।

किलेसे ३०० गज पश्चिमोत्तर एक मकवरा, और २ मील पश्चिम (सडकसे १०० गज वायें) हालेंडवालोंकी चन्द वडी कबरें हैं। उनके सामने पारसियोंके ५ दोखमा अर्थात् मुर्दे रखनेके मकान हैं। उनमेंसे ४ पुराने हैं और पाँचवेंको बम्बईके एक धनी पारसीने हालमें बनवाया है।

भड़ौंच पश्चिमी भारतके पुराने बन्दरगाहोंमेंसे एक है। नर्मदानदी मध्य देशमें अमर कंटकके पाससे निकलकर लगभग ७५० मील पश्चिम बहनेके पश्चात् भड़ौंचसे ३० मील पश्चिम लोहार नामक गाँवके पास समुद्रमें मिली है। सन् १८८०-१८८१ में लगभग ४५ लाख रुपयेका महुआ, गेहूँ, रुई, जलानेकी लकड़ी इत्यादि चीजें भडौंचसे नर्मदा तथा समुद्र द्वारा अन्य स्थानोंमें भेजी गई और लगभग १५ लाख रुपयेका चावल, कसइली, कोयला, लोहा, पत्थर, मकान बनानेकी लकड़ी इत्यादि वस्तु अन्य जगहोसे समुद्र तथा नर्मदा द्वारा भड़ौंचमें लाई गई।

भड़ौंच जिला—यह जिला गुजरात देशमें है। इसके उत्तर माही नदी वाद कावे; पूर्व और पूर्व-दक्षिण वड़ोदा और राजपिपलाका राज्य, दक्षिण केम नदी वाद सूरत जिला और पश्चिम कांवेकी खाड़ी है। इस जिलेकी लम्बाई कांबेकी खाड़ीके किनारेपर ५४ मील और चौड़ाई २० मीलसे ४० मील तक है। जिलेमें केवल समुद्रके किनारेके पास चन्द छोटी

पहाड़ियाँ और भड़ौंच शहरके पड़ोसमें चन्द टीले हैं। भड़ौंच जिलेके बैल बहुत अच्छे होते हैं।

भड़ौंच जिलेमें भड़ौंच कसबेसे लगभग ८ मील दूर नर्मदा नदीके किनारेपर भादभूत गाँवमें भादेश्वर महादेवका मन्दिर है। भादोंके मलमासमें वहाँ एक मास मेला होता है, जिसमें लगभग ६० हजार आदमी जाते हैं। भड़ौंच जिलेके जम्बुसर सबडिवीजनमें धाँधर नदीके मुहानेके पास देवजा गाँवमें दीवारसे घेरा हुआ मन्दिर है। वहाँ सालमें २ बार मेला होता है। प्रति मेलेमें लगभग २ हजार मनुष्य जाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय भड़ौंच जिलेके १४५३ वर्गमील क्षेत्रफलमें ३२६९३० मनुष्य थे, अर्थात् २२२८३८ हिन्दू, ६७२४८ मुसलमान, २९८९६ पहाड़ी जातियाँ, जिनमें प्रायः सब भील हैं, ३७६८ जैन, ३०४२ पारसी, ११५क्रस्तान,१८ यहूदी और ५ अन्य। हिन्दुओंमें ५२५०० कोली, २७१४२ कुन्बी, १६७१९ राजपूत, १५५५३ महारा और धेर, १३१६१ ब्राह्मण, ८०३७ दुबला, ४४५१ कुम्भार, केवल १०९४ धोबी. और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे। भड़ौंच जिलेमें गुजराती भाषा प्रचलित है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय भड़ौंच जिलेके कसबे भड़ौंचमें ४०१६८, जम्बुसरमें १२०७२ और अंकलेश्वरमें १०६९२ मनुष्य थे।

इतिहास—उस देशके लोग कहते हैं कि भड़ौंचको भृगु ऋषिने बसाया था; यह पूर्वकालमें भृगुपुरके नामसे प्रसिद्ध था। सन् ६० से सन् २१० तक भड़ौंचका नाम बड़गजा था। उस समय एक जैनमत वाला राजपूत वहाँका स्वाधीन राजा था। चीनका हायनशांग, जो सन् ६२९ से सन ६४५ तक भारतवर्षमें रहा था, लिखा है कि भडौंच कसबेमें १० बौद्ध-मठ, ३०० बौद्ध फकीर और १० मन्दिर हैं। सन् ७४६ से सन् १२९७ तक भड़ौंचका बन्दरगाह अनहिलवाड़ाके राजपूत राजाओंके अधिकारमें था। सन् १३९१ से सन् १५७२ तक भड़ौंच शहर अहमदाबादके मुसलमान बादशाहोंके अधिकारमें था। सन १५७३ में दिल्लीके बादशाह अकबरने भड़ौंचको अहमदाबादके तीसरे मुजफ्फरशाहसे छीन लिया।

सन् १६१६ मे बादशाह जहांगीरकी आज्ञासे अङ्गरेजोंने और सन् १६१७ में हालेंडवालोंने भड़ौंचमें कोठी कायम की। सन् १६७५ और सन् १६८६ में महाराष्ट्रोंने भडौंचको लूटा। सन् १७७२ में अङ्गरेजोंने भड़ौंचके नवाबसे भड़ौंच शहर और जिलेको छीन लिया, किन्तु उनका सेनापति मारागया, जिसकी कबर किलेके पश्चिमोत्तरके कोनेके पास है। सन् १७७३ में अङ्गरेजोंने सिंधियाको भड़ौंच दे दिया था; किन्तु सन् १८०३ में उससे ले लिया।

शुक्लतीर्थ।

भड़ौंच कसबेसे १० मील पूर्व नर्मदा नदीके दहिने किनारेपर प्रसिद्ध शुक्लतीर्थ है। वहाँ कवि, ओंकारेश्वर और शुक्ल नामक ३ पवित्र कुण्ड और अनेक देवमन्दिर हैं। ओंकारेश्वरके निकट एक मन्दिरमें शुक्लनारायणकी मूर्त्ति है। वहाँ कार्तिकमें एक मेला होता है, जिसमें लगभग २५००० मनुष्य आते हैं। चन्द्रगुप्तने अपने ८ भाइयोंके मारनेके पातकसे

छूटनेके लिये शुक्लतीर्थमें जाकर स्नान किया था। ११ वीं सदीमें अनहिलवाड़ाके राजाने पश्चात्ताप करके शुक्लतीर्थमें निवास कर अपना जीवन व्यतीत किया था।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–कूर्मपुराण—(उत्तरार्द्ध, ३९ वाँ अध्याय) नर्मदा नदीमें शुक्लतीर्थके तुल्य अन्य तीर्थ नहीं है। उसके दर्शन, स्पर्श तथा स्नान करनेसे महान् फल लाभ होता है। उस तीर्थका परिमाण एक योजन है। उस तीर्थके वृक्षोंके शिखरोंके दर्शन मात्रसे ब्रह्महत्या पाप छूट जाता है। प्रतिवर्ष वैशाख वदी १४ को पार्वतीके सहित महादेवजी शिवलोकसे आकर वहाँ निवास करते हैं। उस तीर्थमें अहोरात्र उपवास करनेसे सम्पूर्ण पाप विनष्ट होजाता है। जो मनुष्य कार्तिक बदी १४ को उपवास करके वहाँ परमेश्वरको घृतसे स्नान कराता है, वह अपने २१ पुर्षाओंके सहित ईश्वरके समीप निवास करता है। उस तीर्थमें स्नान करनेसे फिर जन्म नहीं होता। अयन संक्रांति, चतुर्दशी अथवा विषुवत् संक्रांतिको वहाँ उपवास करके स्नान करनेसे मनुष्य हरि और शंकरजीका प्रिय होता है।

कबीरवट–शुक्लतीर्थसे १ मील पूर्व मङ्गलेश्वरके सामने नर्मदा नदीके टापूमें कबीरवट नामसे प्रसिद्ध एक बहुत बडा वटवृक्ष है। लोग कहानी कहते हैं कि कबीरजीकी दातुअनसे यह वृक्ष हुआ था। वृक्षकी प्रधान जड़के पास १ मन्दिर है।

एक आदमीने, जिसको सन् १७७६ और १७८३ के बीचमें उस वृक्षको देखा था, लिखा है कि कबीरवटमे ३५० बडी और लगभग ३००० छोटी जटा अर्थात् बरोह हैं और इसके प्रधान भागकी शाखाओंका घेरा २००० फीट है। मार्गमें जाते समय ७००० सेना इसकी सायामें बैठती है। सन् १८२५ में कबीरवटका बडा भाग नर्मदाकी बाढसे बहगया, तिसपर भी वह संसारके उत्तम वृक्षोंमेंसे एक था, किन्तु बहुत पुराना होजानेसे तथा नदीकी बाढ़ोसे क्रम क्रमसे उस वृक्षका विस्तार अब बहुत घट गया है।

डभोई।

भड़ौचके रेलवे स्टेशनसे २५ मील उत्तर कुछ पूर्व मियागांवका रेलवे जक्शन है। मियागांवसे२०मील पूर्व और बड़ोदाके रेलवे स्टेशनसे १४ मील दक्षिण-पूर्व डभोईमें रेलवेका जंक्शन है। गुजरात देश बडोदाके राज्यमें (२० अंश, १० कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, २८ कला पूर्व देशान्तरमें) डभोई एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय डभोईमे १४५३९ मनुष्य थे, अर्थात् १०७४९ हिन्दू, ३०८२ मुसलमान, ५०१ जैन, १९५ एनिमिष्टिक और १२ पारसी।

कसबेके चारोओर शहरपनाहकी पुरानी दीवार है। वड़ोदाकी ओरका वड़ोदाफाटक ३१ फीट ऊँचा है, उसके दोनो बाजुओंपर सुन्दर नकाशीका काम वना हुआ है, जिसमें विष्णुके अनेक अवतार और स्वर्गीय घड़ियालोंके साथ खेलती हुई स्त्रियोंकी मूर्त्तियाँ बनी हुई हैं। फाटकके भीतर किलेकी दीवारमे दालानोंके स्तम्भोंकी सुन्दर पंक्तियां हैं। कच्ची सड़कसे उससे आगे जानेपर ईंटोंके मकान मिलते हैं। उससे और आगे कसबेके दक्षिणका फाटक ३० फीट ऊँचा है। कसबेके पूर्वका हीराफाटक ३६ फीट ऊँचा है, उसमें बारीक नकाशीका काम है। उसके पास महाकालीका मन्दिर है, जो नया रहने पर बहुत सुन्दर होगा। कसबेसे उत्तरके पुराने महलमें अब बडोदाके महाराजकी कचहरी होती है। उस

तरफ एक उत्तम तालाब है। इनके अलावे डभोईमें नरनारायणका मन्दिर, लक्ष्मीवेंकटेशका मन्दिर, एक बङ्गला, एक अस्पताल, एक जेलखाना, एक कपास ओटनेकी कोठी, पुलिस लाइन और कई एक स्कूल हैं। वहाँ खिर्नीके वृक्षमें एक खोखला है। लोग कहते हैं कि पापी आदमी उससे होकरके नहीं निकल सकता है। डभोईमें पगड़ी और सारी अच्छी बनती हैं।

ऐसा प्रसिद्ध है कि ११ वी सदीमें डभोईका नाम धर्मवती था। १३ वी सदीमें अनहिलवाड़ाके राजाने वहाँके किलेको बनवाया।

डभोईसे पूर्व ९ मील बहादुरपुर और १८ मील सोनगिरिका रेलवे स्टेशन है। सोनगिरिके पास मार्बुलकी उत्तम खानि है। बहादुरपुरके पास एक किला है।

बहादुरपुरके रेलवे स्टेशनसे १५ मील पूर्वोत्तर चम्पानीरका पुराना किला है। चम्पानीरमें बहुतसे मकबरों, मसजिदों और तालाबोंके खण्डहर विद्यमान है। चारों ओर जङ्गलमें अनेक दीवार, मीनार तथा महलोंकी निशानियाँ देख पड़ती हैं। लोग कहते हैं कि अनहिलवाड़ाके राजाने ८ वी सदीमें चंपानीरको बसाया था। १२९७ तक यह उस वंशके राजाओंके अधिकारमें था।

चन्द्रोदय।

डभोईके रेलवे स्टेशनसे १० मील (बड़ोदासे २४ मील) दक्षिण कुछ पूर्व चन्द्रोदयका रेलवे स्टेशन है। गुजरातदेशके बड़ोदा राज्यमें नर्मदा नदीके दहिने किनारेपर नर्मदा और ऊर्ज नदीके सङ्गमके पास चन्द्रोदय नामक एक बडा गाँव और पवित्र तीर्थ स्थान है। उसमें लगभग ४२०० मनुष्य बसते हैं। चन्द्रोदयके निकट नर्मदाके किनारेपर करनाली नामक एक पवित्र गाँव है। चन्द्रोदयमें बहुत देव मन्दिर; स्थान, पाठशाला; और दो धर्मशालायें हैं।

चन्द्रोदय पश्चिम भारतमें सबसे अधिक पवित्र स्थानोमेंसे एक है। उस देशके लोग कहते हैं कि नर्मदाके किनारेपर चन्द्रोदयके समान कोई पवित्र तीर्थ स्थान नहीं है। जैसे गङ्गाके किनारेपर विद्वान् पण्डितोंका मुख्य स्थान काशी है, वैसेही नर्मदाके किनारेपर चन्द्रोदय है।

चन्द्रोदय यात्राका प्रसिद्ध स्थान है। प्रति पूर्णिमाको वहाँ हजारों मनुष्य स्नानके लिये जाते हैं। कार्तिक और चैतकी पूर्णिमाको वहां प्रधान मेला होता है। प्रति मेलेमें वहां २० हजारसे ३५ हजारतक यात्री जाते है।

बड़ोदा।

मियागाँव जंक्शनसे १७ मील पूर्वोत्तर विश्वामित्री जंक्शन है। विश्वामित्री जंक्शनसे २ मील, मियागाँव जंक्शनसे १९ मील, सूरतसे ८१ मील और बम्बईके कुलाबाके स्टेशन से २४८ मील उत्तर बड़ोदाका रेलवे स्टेशन है। बड़ोदा राज्यके गुजरात प्रदेशमें खम्भातकी खाड़ीसे पूर्व (२२ अंश, १७ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, १६ कला पूर्व देशान्तरमें) विश्वामित्री नामक छोटी नदीके पूर्व बड़ोदाके महाराजकी राजधानी और उस राज्यका प्रधान शहर बड़ोदा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय फौजी छावनीके साथ बड़ोदा शहरमे ११६४२० मनुष्य थे, अर्थात् ६२८७१ पुरुष और ५३५४९ स्त्रियाँ। इनमे ९१९३८ हिन्दू, २०८७९ मुसलमान. २४७५ जैन, ५८२ पारसी, ५०४ कृस्तान, ३० यहूदी, ९ एनिमिष्टिक और ३ अन्य थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें २५ वाँ, बम्बई हातेमें चौथा और गुजरातमें दूसरा शहर है।

रेलवे स्टेशनके पास २ धर्मशालायें हैं,जिनमेंसे दीवान साहबकी धर्मशाले बड़ी है। रेलवे स्टेशनसे १ मील उत्तर फौजी छावनी और रेजीडेंसी और छावनीसे १ मील दक्षिण-पूर्व शहर है। छावनी और शहरके मध्यमें शहरके पश्चिम विश्वामित्री नदी बहती है, जिसपर पत्थरके ४ पुल बने हुए हैं।

बडोदाका खास शहर शहरपनाहके भीतर १७ महल्लोंमें विभक्त है। वह शहरपनाहसे बाहर नदी तथा छावनीकी ओर पश्चिमको फैला है, जिसमें महाराज, गायकवाडकी सेनाकी रसदका मुहकमा है। सियाजी, रावजी, आपाजी, बप्पाजी, आनन्दराव, गङ्गाधरशास्त्री इत्यादि प्रसिद्ध लोगोंके नामसे महल्लोंके नाम हैं। उत्तरकी शहर तलियोंमें १२ महल्ले हैं, जिनमेंसे फतहसिंह महल्लेमें मृत महाराज खण्डेजीरावके दीवान भाऊ सिन्धियाका मकान, अस्तबल, गाड़ीके मकान, महाराजका हाथीखाना और मल्लोंके-२ स्कूल हैं। पूर्वकी शहरतलीमें, जिसमें अखाड़ा, जन्तुशाला और आनन्दरावका पुराना महल है, केवल ५ महल्ले है। दक्षिणकी शहरतलीमें ११ महल्ले हैं, जिनमेंसे एक खण्डोबाके मन्दिरका महल्ला कहलाता है।

शहरके अधिक मकान बहुत तङ्ग हैं, किन्तु हालमें कई एक अत्युत्तम इमारतें बनी हैं। इस सदीमें राजधानी बहुत बढ़ गई है। शहर तलियेंमें सरकारी तथा शरीफोंके बहुतसे अच्छे मकान बने है। शहरतलीके पश्चिम और दक्षिण तरफ बङ्गलोंके साथ महाराजके सुन्दर बाग हैं। शहरतलियोंमें जेलखाना, सरकारी आफिस, हाईस्कूल, यमुनाबाईका अस्पताल, महाराजकी लायब्रेरी इत्यादि सुन्दर मकान हैं। बड़ोदेमें रुई कातनेकी कल है; कपड़ा बुननेकी मिल अर्थात् कल कारखाना बना हुआ है और बहुत कोठीवाल तथा जवाहिरी रहते हैं। महाराजकी ओरसे सदावर्त जारी है। जल कल ३५ लाख रुपयेके खर्चसे तैयार होकर सन् १८९२ मे खुली। शहरसे १८ मील दूर अजवा झील, जिसका क्षेत्रफल ४¾ वर्गमील है, बनाई गई है, उसीसे नलो द्वारा शहरमे पानी आता है। रात्रिमें बड़ी सड़कोपर लालटेनोंकी रोशनी होती है।

शहरके गेण्डाफाटकसे ३ मील दक्षिण मकरपुरामें महाराज खण्डेजीरावका बनवाया हुआ एक सुन्दर महल है। शहरसे पूर्व ओर १४ मील डभोईका, २३ मील बहादुरपुरका और ३८ मील चम्पानीरका किला है।

देवमन्दिर—बडोदा शहरमें विट्ठलजीका मन्दिर (जिसके खर्चके लिये महाराजकी ओरसे बहुतसी जागीर निकाली हुई है), गायकवाड़के वशकी रक्षक खण्डोवा देवीका मन्दिर, स्वामीनारायणका मन्दिर, सिद्धनाथका मन्दिर, कालिकाका मन्दिर, रामचन्द्रका मन्दिर, गोवर्द्धननाथजीका मन्दिर, बलदेवजीका मन्दिर, काशीविश्वेश्वरका मन्दिर, गणपतिजीका मन्दिर, वेचराजीका मन्दिर, भीमनाथका मन्दिर, इत्यादि बहुतसे देव मन्दिर है।

भीमनाथके मन्दिरके पास महाराज गायकवाड़की ओरसे ब्राह्मण लोग पुरश्चरण करते हैं। एक स्थानमें दो शिव मन्दिर और बड़ोदाके राजा गोविन्दराव और आनन्दराव तथा रानी गेनाबाई और मृत मल्हाररावकी रानी इन चारोंकी ४ छतरियाँ हैं। छतरियोंमें उनके सम्पूर्ण शरीर अथवा शरीरके एक भागकी प्रतिमा है। देवताओंके समान उनका मान किया जाता है। वहाँ उनकी प्रसन्नताके लिये बहुतसे ब्राह्मण और ब्राह्मणियोंको नित्यही खिचरी खिलाई जाती है।

बड़ोदा-कालिज—रेलवे स्टेशनसे थोड़ी दूर आगे शहरके मार्गमें सड़कके बायें बड़ोदा कालिजकी उत्तम इमारत है; जिसको वर्तमान बड़ोदा नरेशने बनवाया है। वह इमारत लगभग ४०० फीट लम्बी और दोनों छोरोंके पास तथा मध्यमें लगभग १३५ फीट चौड़ी है। उसके दोनों मञ्जिलोंमें चारोंओर मेहराबदार सुन्दर ओसारे बने हैं। इमारतके ऊपर ७ बड़े गुंबज हैं। उस कालिजमें बी. ए. तककी शिक्षा दी जाती है।

बड़ा बाग—छावनी और शहरके बीचमें एक उत्तम बाग है, जिसमें होकर विश्वामित्री नदी निकली है। बागमें भांति भांतिके वृक्ष, पौधे और फूल लगे हुए हैं और जगह जगह फूलों और पत्तियोंके गमलोंकी पंक्तियाँ सजी हुई हैं। फूल पत्तियोंका एक बङ्गला है, जिसमें छोटी सड़कें निकाली गई हैं, उनके बगलोंमें भांति भांतिके फूल पत्तियां लगी हैं तथा गमले रक्खे हुए हैं। उस बागमें एक छोटा चिड़ियाखाना है, जिसमें बाघ इत्यादि बनैले जन्तु और अनेक भांतिके पक्षी रक्खे हुए हैं।

खास शहर—खास शहरके चारोंओर प्रत्येक बगलमें ½ मील लम्बी पक्की दीवार है। चारों बगलोंके मध्यमें एक एक फाटक है। पूर्वके फाटकसे पश्चिमके फाटक तक और उत्तरके फाटकसे दक्षिणके फाटकतक सड़क बनी हुई है; जिससे शहर ठीक चार चौखुटे भागमें बँट गया है। मध्यमें चारों सड़कोंके मेलपर एक छोटा चौखुटा बङ्गला है, जिसके चारोंओर तीन तीन मेहराबियाँ बनी हुई हैं। उत्तर वाली सड़कके बगलोंमें महाराज पहिले सियाजी रावका बनवाया हुआ पुराना महल और अन्य लोगोंके मकान तथा दूकानें और अन्य सड़कोंके बगलोंपर शहरके मकान और दूकानें हैं। शहरपनाहके बाहर चारोंओर शहरतलियाँ हैं। पश्चिमके फाटकसे बाहर एक बड़ा तालाब है।

राममहल—शहरपनाहके भीतर उत्तर वाली सड़कके दोनों बगलोंमें पहिले सियाजीराव गायकवाड़का बनवाया हुआ तीन मञ्जिला राजमहल है। महलका विस्तार बड़ा है किन्तु उसमें पुराने ढबके छोटे छोटे कमरे तथा घुमावकी सीढ़ियाँ हैं।

नजरबागका महल—राजमहलके पासही पूर्व नजरबाग नामक उत्तम उद्यान है। पूर्व वाली सड़कके बगलमें बागके दक्षिणका फाटक है। बागमें पक्की सड़कें बनी हैं और भांति भांतिके वृक्ष, पौधे तथा फूल उत्तम रीतिसे लगे हैं।

नजरबागमें मृत महाराज मल्हारराव गायकवाडका बनवाया हुआ चौमञ्जिला महल है। कोई बड़े हाकिम अथवा राजा आते हैं तो उसी महलमें उनका स्वागत होता है। उस महलमें महाराजके ३ करोड़ रुपयेसे अधिककी जवाहिरात और भूषण रक्खे हुए हैं। महलके नीचेकी मञ्जिलमें मार्बुलका फर्श है। मैं पहरे वालोंसे इजाजत लेकर ऊपरकी मञ्जिलोंमें गया। ऊपरकी मञ्जिलें राजसी सामानसे सजी हैं। किसी जगह सीढ़ियोंपर बनात

बिछे हैं, किसी जगह गलीचेका फर्श है; किसी किसी स्थानमें भांति भांतिके सुन्दर टेबुल, बेंच, पलंग, आलमारी, आइने, सोने चाँदीसे भूषित कुर्शियाँ इत्यादि सामान रक्खे हुए हैं। छतोंमें सुनहरा रङ्ग दिया हुआ है।

सोने और चाँदीकी तोपे—पूर्व वाली सड़कके दक्षिण बगलमें नजरबागके दक्षिणके फाटकसे लगभग २० गज पूर्व एक अस्तवलके मकानमें महाराज मल्हारराव गायकवाड़की बनवाई हुई २ सोनेकी और २ चाँदीकी तोपे रक्खी हुई हैं। दो गाडियों पर, जिनमें चाँदीके पत्तर जड़े हुए हैं, तीन तीन हाथ लम्बी २ सोनेकी और दो गाड़ियोंपर, जिनमें पीतलके पत्तर जडे हुए हैं, तीन तीन हाथसे कुछ कम लम्बी २ चाँदीकी तोपें रक्खी हैं। उस समय उस अस्तवलमें अनेक गाडियाँ और पंदरह बीस घोडे थे।

अखाड़ा—नजरबागसे पीछे शहरके पूर्ववाले फाटकके पास अखाडा है, जिसमें समय समय पर हाथी, गेंडे, भैंसे, भेड़े तथा मल्ल लड़ाये जाते हैं। वहाँ घेरेके भीतर एक बड़ा आंगन है। घेरेकी दीवारमें जगह जगह छोटे द्वार बने हैं। दीवारमें लगा हुआ घेरेसे बाहर एक ओर महाराज तथा सरदार लोगोके बैठनेका मकान और तीन ओर साधारण दर्शकोके बैठनेके लिये ऊँची छत है। आँगनके मध्यकी बडी कोठरीमें कई एक छोटे द्वार हैं। हाथियों तथा गेडोकी लड़ाईके समय आवश्यक होने पर लडानेवाले उन छोटे द्वारोंसे आँगनकी कोठरीमें चले जाते हैं अथवा दीवारके छोटे द्वारोंसे बाहर निकल जाते हैं।

हाथीखाना—चम्पानीर फाटकसे उत्तर, उत्तरकी शहरतलीमें, हाथीखाना है, जिसमे महाराज खण्डेजीरावके समय लगभग १०० हाथी रहते थे, किन्तु अब बहुत कम हाथी हैं। हमारे जानेके समय उसमें २३ हाथी थे। वहाँ हाथियोंके रहनेके लिये बडा घेरा बना हुआ है।

चम्पानीर फाटकसे थोडीही दूर पर शहरपनाहसे बाहर शेरशाह नामक बडा तालाव है। लड़ीपुरा फाटकके पास वाले सुरसागर नामक बड़े तालावसे उस तालाव तक लोहेकी नल लगी है।

लक्ष्मीविलास महल—शहरसे पश्चिम एक वडे मैदानमे वर्त्तमान बडोदा नरेश महाराज सर सियाजीराव बहादुरका बनवाया हुआ लक्ष्मीविलास नामक राजमहल है। महाराजने २७ लाख रुपयेके खर्चसे उस महलको बनवाया है। रेलवे स्टेशनसे वह महल विस्तृत भूमिपर शहरके मकानोंसे ऊँचा देख पडता है। महलका मध्य भाग ११ मञ्जिलका और चारों ओरके भाग तीनमञ्जिले चौमंजिले हैं, जिनमें स्थान स्थानपर बहुत गुम्बज बने हैं।

महलसे ५० गज उत्तर बावलीकी शकलका नवलखा कूप है, उसका पानी धुयेंकी कलसे उठा करके नालोद्वारा मोतीबाग, नजरबाग तथा शहरके अन्य स्थानोंमें पहुँचाया जाता है। महलके मैदानके पूर्व बगलमें सड़कके पासकी दो मंजिली और तीन मंजिली इमारतोंमें महाराजकी न्याय विभागकी कचहरियाँ होती हैं तथा दफतर रहते हैं।

वड़ोदाका राज्य—यह राज्य गुजरात देशके अनेक भागोंमें और काठियावाडमें है। राज्यके ४ डिवीजन अर्थात् विभाग हैं; जिनमेंसे (१) वड़ोदा विभागमें बड़ोदा, चोरंदा, पेटलाद, डभोई आदि ८ सबडिवीजन, (२) काड़ी विभागमें काड़ी, पाटन, बीजापुर वीसनवर, देहगांव, सिद्धपुर, कलोल, महसाना आदि १० सबडिवीजन, (३) नौसारी विभागमें नौसारी,

टोनगढ़ इत्यादि ८ सबडिवीजन, और (४) अमरेली विभागमे अमरेली, ऊखमण्डल, धारी इत्यादि ५ सबडिवीजन हैं। इनमें अमरेली विभागके अतिरिक्त, जो काठियावाड़में हैं, अन्य तीनों विभाग अङ्गरेजी राज्य और बड़ोदाको कर देनेवाले छोटे प्रधानोंके राज्योंमें मिले हुए हैं। बड़ोदाके राज्यका क्षेत्रफल ८२२६ वर्गमील है। राज्यसे महाराजको वार्षिक मालगुजारी एक करोड़४० लाख रुपये आती है। बड़ोदा राज्यकी आमदनी हैदराबादको छोड़ करके हिन्दुस्तानके सम्पूर्ण देशी राज्योंकी आमदनीसे अधिक है। बड़ोदाके महाराजको अङ्गरेजी गवर्नमेन्टको 'कर' नहीं देना पड़ता है। बम्बई हातेके अन्य देशी राजाओंके समान यह बम्बईके गवर्नरके अधीन नहीं हैं; वह भारतवर्षके गवर्नर जनरलके अधीन हैं। बड़ोदाका राज्य खुला हुआ मैदान है। उसमें सरस्वती, साबरमती, माही, नर्मदा, तापती, पूर्ना, केम इत्यादि बहुतसी नदियां बहती हैं। काठियावाड़के अमरेली विभागका ऊखमण्डल सबडिवीजन, जिसमें द्वारिका है, तीन ओरसे समुद्रसे घेरा हुआ है। राज्यके प्रायः सब भागों अच्छे अच्छे जलाशय और देवमन्दिर हैं। राजपिपला पहाड़ियोंके अतिरिक्त राज्यके किसी भागमें पहाड़ियोंका कोई सिलसिला नहीं है। काठियावाड़के ऊखमण्डल सबडिवीजनको छोड़ करके राज्यकी प्रायः सब भूमि उपजाऊ हैं। बड़ौदाके राज्यमें कपास बहुत होती है।

नौसारी सबडिवीजनके सोनागढ़ और सालेरमें २ पहाड़ी किले हैं सोनागढ़से १० मील दक्षिण रूपागढ़ भी पहाड़ी किला है, किन्तु उसमें फौज नहीं रहती है। इनके अलावे डभोई, बहादुरपुर और चम्पानीरमें भी किले हैं। बड़ोदा राज्यका सोजित्रा गाँव चाकूके लिये, डभोई पगड़ी और सारीके लिये और पाटन छुरी तथा मिट्टीके वर्तनके लिये प्रसिद्ध है।

बड़ोदाके राज्यमें कई मेले होते हैं;—बड़ोदा विभागमें नर्मदाके किनारेपर चन्द्रोदयमें कार्त्तिक और चैत्रकी पूर्णिमाको, राजपूताना मालवा रेलवेपर कलोलके स्टेशनसे १४ मील पश्चिम काडी विभागके काडी कसबेमें सालमें कई वार, सिद्धपुरसे ८ मील दक्षिण काडी विभागके ऊँझा कसबेमें वर्षमें एक बार और वीरमगाँवसे २५ मील दूर काडी विभागके पाटन सबडिवीजनमें बचराजीके मन्दिरके पास आश्विनमें मेला होता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बड़ोदाके राज्यमें २४१५३९६ मनुष्य थे; अर्थात् १२५२९८३ पुरुष और ११६२४१३ स्त्रियाँ। इनमें २१३७५६८ हिन्दू, १८८७४० मुसलमान, ५०३३२ जैन, ३९८५४ जङ्गली जातियाँ, ८२०६ पारसी, ६४६ कृस्तान, ३६ यहूदी, ११ सिक्ख और ३ अन्य थे। इनमें सैकड़े पीछे ९३ गुजराती भाषा वाले, ३½ उर्दू भाषा वाले, २ महाराष्ट्री भाषा वाले और १½ अन्य भाषा बोलनेवाले थे। उस समय बड़ोदा राज्यके हिन्दूकी जातियोंमेंसे नीचे लिखी हुई जातियोंके लोग इस भाँति पढ़े हुए थे;—प्रति हजारमें ७९० प्रभु और ८७ उस जातिकी स्त्रियाँ; ७७६ बनिया और ११ उनकी स्त्रियाँ, और ५५९ ब्राह्मण और २४ ब्राह्मणी।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय बड़ोदा राज्यमें १९५४३९० हिन्दू थे; जिनमें ३९१९८४ कुन्वी, १३८५०६ ब्राह्मण, ७९८५३ राजपूत, ५७०२७ बनिया, १४८३५ मलाह इत्यादि और शेषमें अन्य जातियोंके लोग थे।

बड़ोदा राज्यके शहर और कसबे जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १०००० से अधिक मनुष्य थे, बड़ोदा विभागके बड़ोदा शहरमें ११६४२०, पेटलादमें १५५२८

डभोईमे १४५३९, सोजित्रामें ११४१२ और वासोमे १०३७१, काडी विभागके पाटनमें ३२६४६, वीसनगरमें २१३७६, काडीमें १६३३१, सिद्धपुरमें १६२२४, वाडनगरमें १५९४१ और ऊँझामें ११८८७, नौसारी विभागके नौसारीमें १६२७६, और अमरेली विभागके अमरेलीमें १५६५३।

बडौदाके-राज्यमें कपडे और लोहेकी चीजें तथा मिट्टीके वर्तन बहुत तैयार होते है। सैकडो आदमी दङ्गल कुस्तीके पेशे करते हैं। राज्यमें ३५ से अधिक अस्पताल हैं। राज्यके ५११ स्कूलोंमें ५४००० से अधिक विद्यार्थी पढ़ते हैं, जिनमें बम्बैकी यूनिवरसिटीके अधीन एक कालिज है। लडकियोंके ४२ स्कूलोंमें लगभग ५०००लड़कियाँ और स्त्रियोंके ५स्कूलोंमें लगभग २२० स्त्रियाँ पढती हैं।

वडोदा राज्यके मामूली सैनिक विभागमें ३८ तोपें, सोने और चाँदीकी ४ तोपे, १५४ गोलन्दाज, आरटिलरीकी २ बैटरी, २४७ घोड़सवार सेना, और पैदलकी ६ रेजीमेण्ट है। ये सब सेना अङ्गरेजी तरीकेसे सिखलाई गई हैं। इनके अलावे गैर मामूली फौजमे लगभग ४४०० सवार और १८०० पैदल है। प्रतिवर्ष मामूली फौजमें लगभग ७५०००० रुपये और गैर मामूली फौजमे लगभग २८००००० रुपये खर्च पडते है।

इतिहास—बडोदाके राजा लोग गायकवाड़ कहलाते है, जिसका अर्थ गायका पालने वाला है। उनको अङ्गरेजी गवर्नमेण्टकी ओरसे २१ तोपोकी सलामी मिलती है। बडोदाके किसी राजाने किसी समय अङ्गरेजोके विरुद्ध युद्ध नहीं किया था। सन् १७२०—१७२१ में केरूजीराव पटेलके पुत्र दामाजी पटेलने बालापुरकी लडाईमे वडी वीरता दिखलाई। महाराज शिवाजीके पौत्र साहूजीने, जिसकी राजधानी सतारा था अपने सेनापति खण्डेराव धवरेके मुखसे दामाजीकी प्रशंसा सुनकर उनको शमशेर बहादुरकी पदवीसे भूषित करके अपना सहायक सेनापति बनाया। थोडेही दिनोंके बाद दामाजीका देहान्त होगया, तब उनके भतीजे पीलाजी राव गायकवाड़ उनके पदपर नियुक्त होकर सेनापतिके पुत्र त्र्यम्बक धवरेके सहायक सेनापति बने।

सन् १७३१ में त्र्यम्बक धवरे और पीलाजी पूनाके पेशवाके शत्रु महाराष्ट्रोंमे मिलकर पेशवाके विरुद्ध खड़े हुए। तारीख पहिली अपरैलको बड़ोदाके पास लड़ाई हुई, जिसमें त्र्यम्बक धवरे मारा गया और उसकी सेना परास्त हुई। उसके पश्चात् त्र्यम्बकका बच्चा पुत्र यशवन्तराव सेनापति बनाया गया और पीलाजीको सेना खास खेलकी एक और पदवी मिली। शमशेर बहादुर और सेना खास खेल ये दोनो उपाधिया अबतक बड़ोदाके राजवंशमे चली आती है। पीलाजीने बादशाही अफसरोंको संग्राममे परास्त करके गुजरातके बहुतसे प्रधान नगरोंको अपने अधिकारमे कर लिया।

सन् १७३२ में मुगल बादशाहके कर्मचारी जोधपुरके राजा अभयसिंहने पीलाजीरावको छलसे मारडाला। उस समय पीलाजीके दो पुत्र थे, दामाजी और प्रतापराव, जिनमेंसे बड़े पुत्र दामाजी उत्तराधिकारी हुए, जिन्होंने अपने २६ वर्षके अधिकारमें मुगलोंसे सम्पूर्ण गुजरात देश छीन लिया था। सन् १७३२ में पीलाजीके भाई महाजी गायकवाड़ने वड़ोदा नगरको अपने अधिकारमे कर लिया, तबसे वह शहर गायकवाड राजाओंकी राजधानी है। सयाना होने पर यशवन्तराव सेनापतिके योग्य नहीं था; इसलिये धवरेवंशके

स्थान पर दामाजी सेनापति नियत हुए। दामाजीने सताराकी ताराबाईकी, जो अपने पोतेको पेशवाकी अधीनतासे निकाल कर स्वतन्त्र बनानेका उद्योग करती थी, सहायता की; किन्तु पेशवाने दामाजीको छलसे पकड लिया। जब दामाजीने "राजकर" का ६५ लाख बकाया रुपया और अपने भविष्यजीतका आधा भाग देनेको इकरार किया तब पेशवाने उनको छोड़ दिया। उसके दूसरे वर्ष दामाजीने अपने अधिकारमें किये हुए काठियावाड देशका एक भाग पेशवाको दे दिया और आवश्यक समयमें पेशवाकी सहायता करनेका एकरार किया। सन् १७५३ में अहमदाबाद जीता गया; उसकी मालगुजारीको दामाजी और पेशवाने बांट लिया। सन् १७६१ में पानीपतकी लड़ाईके समय एक बड़ी सेना दामाजीके अधीन थी। दामाजीने अपने राज्यको बहुत बढ़ाया। सन् १७६८ में उनका देहान्त होगया।

दामाजीकी ३ स्त्रियां थीं;–पहिली स्त्रीके पुत्र गोविन्दराव, दूसरीके पुत्र सियाजीराव और फतहसिंह; और तीसरी स्त्रीके पुत्र मानाजी थे। इनमें सियाजी और फतेहसिंह बड़े पुत्र थे। दामाजी की मृत्युके समय गोविन्दराव पूनामें थे। वह माधवराव पेशवाको नजर देकर अपने पिताके उत्तराधिकारी बने। उधर बुद्धिमान फतहसिंहने अपने भाई सियाजीरावको बड़ोदाकी गद्दी पर बैठा दिया और पूनामें जाकर उनको राजा स्वीकार करनेके लिये पेशवा माधवरावसे विनय किया। माधवरावने परस्परके झगड़ेसे उनके बल घटानेके निमित्त सियाजीको राजा स्वीकार कर लिया। गोविन्दराव और फतहसिंहका परस्पर झगड़ा होने लगा। सन् १७८९ में जब फतहसिंहका देहान्त होगया, तब मानाजी पेशवाको नजर देकर सियाजीरावके राज्यका प्रबन्ध करने लगे। सन् १७९३ में मानाजीकी मृत्यु होने पर गोविन्दराव उत्तराधिकारी बने, जिनको पेशवाने अहमदाबादके जिलोंकी मालगुजारीका अपना भाग ठेका दे दिया। सन् १८०० में गोविन्दरावके देहान्त होने पर पेशवाने उनके पुत्र आनन्दरावको उत्तराधिकारी स्वीकार किया।

सन् १८१५ में जब बड़ोदाके राजपूत प्रसिद्ध गङ्गाधर शास्त्री मारे गये तबसे पेशवा और गायकवाड़के बीचका सम्बन्ध टूट गया। पेशवाने केवल ४ लाख रुपये वार्षिक खिराज स्वीकार करली। गायकवाड़ स्वतन्त्र बन गये। सन् १८१७ में अङ्गरेजोंने पेशवाको परास्त किया; उस समयसे गायकवाड़ अङ्गरेजोंके करद मित्र बने।

सन् १८१९ में आनन्दराव गायकवाड़के देहान्त होने पर उनके छोटे भाई सियाजीराव और सन् १८४७ में सियाजीरावकी मृत्यु होने पर उनके बडे पुत्र गणपतिराव राज्याधिकारी हुए। सन् १८५६ में गणपतिरावके अपुत्र मरनेपर उनके भाई खांडेरावको राजसिंहासन मिला। सन् १८५७–५८ के बलवेके समय खांडेराव गायकवाड़ने अङ्गरेजी सरकारकी सहायता की, इस लिये उनकी खिराज, जो ३ लाख रुपये थे, सब माफ कर दी [illegible] छोटे भाई मल्हारराव [illegible] तद्वार करनेके अपराधने पहिले कई वर्षोंतक [illegible] मल्हाररावने [illegible] ४ तोप, हीरेका हार, हीरेका पगड़ी, [illegible] बहुमूल्य वस्तु बनाकर अपनी उदारताका खूब परिचय दिया। उनसे बहुत प्रजन असंतुष्ट होगई; राज्यमें अप्रबध फैला। उनके राज्यके ३ वर्षके भीतरही अङ्गरेजी गव-

र्नमेंटने उनके अप्रबंधके विचार करनेके लिये एक कमीशन नियत किया। कमीशनकी रिपोर्ट देनेपर भारत गवर्नमेण्टने आज्ञा दी कि महाराज मल्हारराव १७ महीनेके भीतर अपना प्रबन्ध सुधारैं। उस अवधिके भीतरही सन् १८७४ में मल्हाररावपर अङ्गरेजी रेजीडेण्ट कर्नल आर फेअरको विष देनेके उद्योग करनेका सन्देह हुआ। उसकी जाँचके लिये ६ मेम्बरोंका एक कमीशन नियत हुआ, जिनमेसे ३ ने महाराजको दोषी कहा। भारत गवर्नमेण्टने मल्हाररावको राज्यकार्यमें अयोग्य समझ कर सन् १८७५की २२ वी अपरैलको पदच्युत करके मदरास भेज दिया। अङ्गरेज गवर्नमेण्टकी आज्ञासे महाराज खांडेरावकी विधवा महारानी यमुना बाईने खानदेशके एक छोटे गाँवके एक साधारण कृपकके पुत्र गोपालरावको दत्तक पुत्र बनाया। बडोदा राज्यके नियत करनेवाले पीलाजीरावके पुत्र और दामाजीरावके छोटे भाई प्रतापराव थे, जिनके वंशधर गोपालराव हैं। जब दामाजीराव बडोदाके राजा हुए तब उनके भाई प्रतापराव अपनी हीन आर्थिक अवस्थाके कारण खानदेशके किसी गाँवमे जा बसे। प्रतापरावसे पाँचवी पीढीमें काशीराव हुए, उन्हींके पुत्र गोपालराव हैं। सन् १८७५ की १७ वीं मईको गोपालराव बड़ोदाके सिंहासनपर वैठाये गये, जो महराज सर सियाजीराव गायकवाड सेना खास खेल शमशेर बहादुर जी० सी० एस० आई० के नामसे विख्यात हुए हैं। सन् १८८१ में उनको राज्यकार्यका पूर्ण अधिकार मिल गया। महाराजकी अवस्था ३१ वर्षकी है। यह अङ्गरेजी आदि विद्याओंमे अति निपुण है। कई वार विलायतसे हो आये हैं। इनके राज्यमे विद्याकी बड़ी उन्नति हुई है। प्रति बड़े गाँवोंमे एक स्कूल कायम होनेका प्रबन्ध हुआ है।

चौबीसवां अध्याय।

(बम्बई हातेके गुजरात देशमें) डाकौर, गोधड़ा, कांबे, नड़ियाद, खेड़ा और अहमदाबाद।

डाकौर।

वड़ोदाके रेलवे स्टेशनसे २२ मील उत्तर कुछ पश्चिम आनंद जंक्शन है, जहाँसे पूर्व कुछ उत्तर रेलवे लाइन अमरेठ, डाकौर, गोधडा, दोहद इत्यादि स्टेशन होकर रतलाम जंक्शनको गई है (अहमदाबादके रेलवेकी फिहरिस्तमें देखिये)। वडोदा और आनंदके बीचमे माही नदीपर रेलवेका पुल मिलता है। आनन्द जंक्शनसे पूर्व कुछ उत्तर १४ मील अमरेठ कसबेका रेलवे स्टेशन है। खेड़ा जिलेमें अमरेठ एक कसबा है, जिसमे सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १५६३८ मनुष्य थे। अमरेठसे ५ मील और आनन्द जंक्शनसे १९ मील डाकौर कसबेका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेमे गुजरात प्रदेशके खेडा जिलेमें (२२ अंश, ४५ कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, ११ कला, पूर्व देशान्तरमें) डाकौर एक छोटा कसबा तथा तीर्थस्थान है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय डाकौरमें ७७७१ मनुष्य थे; अर्थात् ७४०१ हिन्दू, ३५४ मुसलमान, ८ जैन, ५ पारसी और ३ अन्य।

डाकौरमें एक तालाब, जिसको गोमती तड़ाग कहते हैं; रणछोड़ भगवान्‌का बड़ा मन्दिर; त्रिविक्रमजीका मन्दिर; एक अस्पताल और पोष्टआफिस है। डाकौर पश्चिमी भारतमें यात्राका एक प्रधान स्थान है। वहाँ मन्दिरोंमें भगवान्‌के भोगरागका बड़ा प्रबंध रहता था। प्रतिमहीनेमें वहाँ बहुतसे यात्री जाते हैं। कार्तिककी पूर्णिमाको वहाँ बड़ा मेला होता है, जिसमें लगभग १००००० मनुष्य जाते हैं।

डाकौरकी कथा—ऐसा प्रसिद्ध है कि बुढ़ानभक्त नामक एक ब्राह्मण, जिसको रामदास भी कहते हैं, डाकौरमें रहता था। वह प्रतिवर्ष गोमती द्वारिकामें जाकर बड़ी श्रद्धा, भक्तिसे रणछोड़जीका दर्शन किया करता। संवत् १२७२ (सन् १२१५ ईस्वी) में रणछोड़ भगवान्‌ने उससे कहा कि हे विप्र ! तुम अति वृद्ध होगये; इस लिये यहाँ आनेमें तुमको क्लेश होता है। तुम आधीरातके समय गाड़ा लेआओ, मैं तुम्हारे संग तुम्हारे नगरमे चलूँगा। तुम वहाँही हमारा दर्शन करते रहना। भगवान्‌की आज्ञानुसार वह ब्राह्मण आधीरातमें गाडा लाया। रणछोड़जीकी मूर्त्ति गाड़ापर विराजमान हुई। ब्राह्मण गाड़ा लेकर डाकौरमे पहुँचा।

भोर होनेपर गोमतीद्वारिकाके पुजारी लोग बुढ़ानभक्तपर सन्देह करके रणछोड़जीको खोजते हुए डाकौरकी ओर दौड़े। रणछोड़जीने बुढ़ानभक्तसे कहा कि द्वारिकाके पुजारी आते हैं; तुम मुझको तालाबमें छिपा दो। ब्राह्मणने वैसाही किया। पुजारियोंने जब बुढान भक्तके गृहमें मूर्त्तिको नहीं पाया; तब तालाबमें भालेसे टटोलकर मूर्त्तिको निकाल लिया। भालेकी नोकका चिह्न मूर्त्तिके कटि स्थानमें देख पड़ता है। बुढानभक्तने पुजारियोंसे कहा कि तुम लोग मुझसे मूर्त्तिके बराबर सोना लेकर इसको छोड़ दो। पुजारियोंने लोभवश यह बात स्वीकार की। ब्राह्मण बहुतसा सोना लाकर मूर्त्तिको तौलने लगा, किन्तु मूर्त्तिका पलरा नहीं उठा। जब रणछोड़जीके स्वप्नके अनुसार उसने सब सोनेको पलरेसे उतारकर अपनी स्त्रीके कानकी बारी उस पलरेपर रक्खी, तब मूर्त्तिका पलरा उठ गया।

उस समय रणछोड़जीने पुजारियोंको स्वप्न दिया कि तुम लोग यहाँसे चले जाओ। गोमतीद्वारिकामें गोमतीगङ्गाका माहात्म्य रहेगा। लाड़ुवा गाँवके पास पृथ्वीके गर्भमें एक मेरी मूर्त्ति है। तुम लोग उसको निकालकर बेटद्वारिकामें स्थापित करो। मैं नित्यही ७ पहर डाकौरमे और १ पहर बेटद्वारिकामें निवास करूँगा। पुजारियोंने भगवान्‌की आज्ञानुसार लाड़ुवा गाँवसे मूर्त्तिको लाकर बेटद्वारिकामें स्थापित किया। एक दूसरी मूर्त्ति गोमतीद्वारिकामें स्थापित कीगई।

गोधड़ा।

डाकौरके रेलवे स्टेशनसे ३० मील (आनन्द जंक्शनसे ४९ मील) पूर्व कुछ उत्तर और बड़ोदा शहरसे सड़कद्वारा ५२ मील पूर्वोत्तर गोधड़ाका रेलवे स्टेशन है। एक सड़क नीमच छावनीसे गोधड़ा होकर बड़ोदा शहरको गई है। बम्बई हातेके गुजरात देशमें (२२ अंश, ४६ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश, ४० कला पूर्व देशान्तरमें) पंचमहाल जिले तथा रेवाकण्ठाके पोलिटिकल एजेंसीका सदर स्थान और जिलेमें सबसे बड़ा कसबा गोधड़ा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय गोधड़ामें १४६९१ मनुष्य थे; अर्थात् ७५२३ मुसलमान, ६४५२ हिन्दू, ५३५ जैन, १०९ एनिमिष्टिक, ४६ पारसी और २६ कृस्तान।

गोधडा कसबेके आसपास जंगल है। गोधड़ामें एक अस्पताल, ३ स्कूल, एक मातहत जेलखाना और सरकारी कचहरियाँ हैं। कसबेके पास एक बडा तालाव है, जिससे धानके खेत पटाये जाते है। गोधडासे ४५ मील पूर्व रेलवे स्टेशनके पास पंचमहाल जिलेका दोहद कसवा है।

पंचमहाल जिला—यह गुजरात देशके पूर्वी विभागमे वारियाके राज्य द्वारा दो भागोंमें विभक्त है। दक्षिण-पश्चिम वाले भागके उत्तर लोनवाडा, सुन्थ और संजेलीके राज्य, पूर्व वारियाका राज्य, दक्षिण वडोदाका राज्य और पश्चिम वडोदाका राज्य और माही नदी है, नदीके वाद खेडा जिला है और पंचमहाल जिलेके पूर्वोत्तर वाले भागके उत्तर चिलकारी और कुशालगढ़का राज्य; दक्षिण-पूर्व मालवा देश और अनासनदी, दक्षिण और पश्चिमी मालवा और पश्चिम सुन्थ, सजेली और बारियाका राज्य है। जिलेका सदर स्थान गोधडा है। जिलेमें गोधडा, कलोल और दोहद ये तीन सवडिवीजन हैं। जिलेके मध्य भागमें खास करके जङ्गल है। जिलेमें २५०० फीटसे अधिक ऊँची कोई पहाडी नहीं है। पंचमहाल जिलेमे गुजराती भाषा प्रचलित है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय पंचमहाल जिलेके १६१३ वर्गमीलमें २५५४७९ मनुष्य थे, अर्थात् १५९६२४ हिन्दू, ७७८४० जङ्गली जातियाँ, १६०६० मुसलमान, १८६७ जैन, ४४ क्रस्तान, ३० पारसी, ७ यहूदी और ७ अन्य। हिन्दुओमे ८१७३७ कोली, ६०८६ ब्राह्मण, ५९३४ कुन्वी, ५५९५ राजपूत, ५०२३ महारा, २१७७ चमार, १८५८ नापित (नाई) और वाकी में अन्य जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पंचमहाल जिलेके कसवे गोधडामे १४६९१ और दोहदमे १२९३५ मनुष्य थे।

इतिहास-पचमहाल जिलेका इतिहास चम्पानेरके इतिहासमे शामिल है। चम्पानेर अब पुराने शहरका खण्डहर है। लगभग सन् ३५०से लगभग सन् १३०० ई० तक चंपानेर अनहिलवाड़ाके तोमर राजपूतोंका किला था। उसके पश्चात् सन् १४८४ तक चम्पानेर और उसके चारोंओरका देश चौहान राजपूतोके अधिकारमें था। सन् १४८४ से सन् १५३६ तक चम्पानेर गुजरातकी राजधानी था। सन्। १५३५में दिल्लीके हुमायूँने चम्पानेर शहरको लूटा। सन् १५३६ में अहमदावाद गुजरातकी राजधानी बना। १८ वीं सदीमें महाराष्ट्रोंने जिलेको अपने अधिकारमें कर लिया। सन् १८५३ में अङ्गरेजी प्रवन्ध हुआ। सन् १८६१ में सिंधियाने अङ्गरेजी गवर्नमेण्टसे झांसीके पासकी भूमि लेकर पंचमहाल उनको दे दिया। वह देश रेवाकण्ठाके पुलिटिकल एजेण्टके अधीन रक्खा गया। सन् १८७७ में पंचमहाल एक अलग जिला कायम हुआ। एक समय गोधड़ा कसवा अहमदावादके मुसलमान वाद-शाहोंके राज्यके एक भागका सदर स्थान था।

कांबे।

आनन्द जंक्शनसे दक्षिण-पश्चिम १४ मीलकी रेलवे शाखा पेटलाद तक गई है। पेटलाद बडोदाके राज्यमें सवडिवीजनका सदर स्थान और एक तिजारती कसवा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १५५२८ मनुष्य थे, अर्थात् १०९८२ हिन्दू, ४२०२

मुसलमान, ३१८ जैन, ३० पारसी और ५ कृस्तान । वहाँ पुलिस-स्टेशन, जेलखाना, स्कूल, कष्टम हौस और बहुतसी सराय हैं ।

पेटलाद कसबेसे १५ मील दक्षिण-पश्चिम बम्बई हातेके गुजरात देशमें कांबेकी खाड़ीके शिरके पास (२२ अंश, १८ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, ४० कला पूर्व देशान्तरमें) माही नदीके मुहानेसे उत्तर कांबे नामक देशी राज्यकी राजधानी कांबे कसबा है, जिसको खम्भातभी कहते हैं । *

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कांबे कसबेमें ३१३९० मनुष्य थे, अर्थात् १५२७३ पुरुष और १६११७ स्त्रियाँ । इनमें २०९५२ हिन्दू, ७४६६ मुसलमान, २८२५ जैन, १३५ पारसी और १२ कृस्तान थे । मनुष्य-गणनाके अनुसार यह (बडोदा राज्यको छोड करके) बम्बई हातेके देशी राज्योंमें ६ वाँ कसबा है ।

पहिले कसबेके चारोंओर ईंटोंकी दीवारका ३ मीलका घेरा था । अब तक किसी किसी जगह दीवारके हिस्से और उसके पासके टावर देखनेमें आते हैं । नवाबका महल, जिसकी बनावट अच्छी नहीं है, अच्छे प्रकारसे मरम्मत है । महम्मदशाहके राज्यके समय सन् १३२५ की बनी हुई जामामसजिद है, जिसमें जैन मन्दिरके खम्भे लगे हुए हैं । बहुतेरी इमारतोंके खण्डहर कांबेके पूर्वके विभवको जनाते हैं । कांबेमें लकडी और पत्थरकी चीजें अच्छी तैयार होती हैं । वहाँके बने हुए भूषण बहुत सुन्दर होते हैं । वहाँ समुद्रके साधारण ज्वारका पानी २५ फीट और बड़े ज्वारका पानी ३३ फीट ऊँचा होता है; इस कारणसे वहाँ जहाजोंके आनेमें बड़ा भय रहता है और माही तथा साबरमती नदीकी मिट्टी आनेसे कांबे-की खाडीमें पानी कम होगया है, इस लिये कांबे कसबेके पास जहाज नहीं आसकते, इन्हीं कारणोंसे कांबेकी तिजारत अब घट गई है ।

कांबेका राज्य–गुजरातके पश्चिमी भागमें कांबेकी खाडीके पास कांबेका राज्य है । इसके उत्तर खेड़ा जिला, पूर्व खेडा जिला और बडोदा राज्यका पेटलाद सबडिवीजन और दक्षिण तथा दक्षिण पश्चिम कांबेकी खाड़ी है । बड़ौदाके राज्य और अङ्ग-रेजी राज्यके कई गाँव कांबेके राज्यके भीतर तथा कांबेके राज्यके चन्द गाँव अङ्गरेजी राज्यके खेडा जिलेमें है । देश खुला हुआ मैदान है । भूमि उपजाऊ है । गुजराती भाषा प्रचलित है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कांबे राज्यके ३५० वर्गमील क्षेत्रफलमें २ कसबे ८३ गाँव और ८६०७४ मनुष्य थे, अर्थात् ७०७०८ हिन्दू, १२४१७ मुसलमान और २९४९ अन्य । कांबेके नवाब मुगल खानदानके सीया मुसलमान है । उनको अङ्गरेजी गवर्नमेण्टकी ओरसे ११ तोपोंकी सलामी नियत है । नवाबको लगभग ६२५००० रुपया वार्षिक मालगुजारी आती है, जिसमेसे महसूल इत्यादि छोड करके २६००० रुपये अङ्गरेज महाराजको राज कर दिया जाता है । उनका सैनिक बल २०० सवार और ९०० पैदल है । नवाब जाफरअलीखाँ साहब बहादुर, जिनकी अवस्था लगभग ४२ वर्षकी है, कांबेके वर्त्त-मान नवाब है ।

* पेटलादसे कांबे तक रेलवे बनगई । पेटलादसे १८ मील कांबेका रेलवे स्टेशन है ।

इतिहास—एक मुसाफिरने सन् ९१३ में कांबेको देखा था। जान पडता है कि ११ वी और १२ वीं सदीमें कांबे अनहिलवाडा राज्यके प्रधान बन्दरगाहोंमेंसे एक था। सन् १२९७ में जब मुसलमानोंने अनहिलवाडा राज्यको जीता तब कांबे हिन्दुस्तानके सबसे बडे धनी कसबोंमेंसे एक था। सन् १३०४ में दिल्लीके अलाउद्दीनने कांबे कसबेको लूटा और वहाँके मन्दिरोंको बरबाद किया। १५ वीं सदीमें गुजरातके मुसलमान बादशाहोंके अधीन गुजरातकी उन्नतिके साथ कांबेकी फिर उन्नति हुई। १६ वीं सदीके आरम्भमें वह भारतवर्षमें तिजारतका एक प्रधान केन्द्र बना था। सन् १६१३ में जब अङ्गरेज लोग आये, तब पोर्चुगाल और हालेण्डवाले अपनी अपनी कोठी वहाँ कायम कर चुके थे। पीछे सूरतकी बढती होनेसे कांबेकी घटती आरम्भ हुई। कांबेके वर्त्तमान नवाबका मूल पुरुष मोमिनखां गुजरातके अन्तिम गवर्नरसे पहिले गुजरातका गवर्नर था। उस समय मोमिनखाँका दामाद निजामखाँ कांबेका हाकिम था। सन् १७४२ में मोमिनखांके मरनेपर उसके पुत्र मुफ्तकारखाँने दगासे निजामखाँको मार कर कांबेको अपने अधिकारमें कर लिया। १८ वीं सदीमें महाराष्ट्रोंने कांबेको लूटा था।

नड़ियाद।

आनन्द जंक्शनसे ११ मील (बडौदा शहरके स्टेशनसे ३३ मील) पश्चिमोत्तर और अहमदाबादके रेलवे स्टेशनसे २९ मील दक्षिण-पूर्व नडियादका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके गुजरात प्रदेशमें (२२ अंश, ४० कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, ५५ कला, २० विकला पूर्व देशान्तरमें) खेडा जिलेमें नडियाद सबडिवीजनका सद्र स्थान और उस जिलेमें सबसे बडा कसबा नड़ियाद है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नड़ियादमें २९०४८ मनुष्य थे, अर्थात् १५०४२ पुरुष और १४००६ स्त्रियाँ। इनमें २४८४१ हिन्दू, ३८७४ मुसलमान, २३२ जैन, ५२ पारसी और ४९ क्रस्तान थे।

नड़ियादमें सबजजकी कचहरी, खफीफा कचहरी, एक हाईस्कूल, एक अस्पताल और एक रूईका कल कारखाना है। वहाँ तम्बाकू और घीकी बड़ी तिजारत होती है।

खेड़ा।

नड़ियादसे ११ मील (बडोदा शहरसे ४४ मील) पश्चिमोत्तर और अहमदाबाद जंक्शनसे १८ मील दक्षिण-पूर्व महम्मदाबादका रेलवे स्टेशन है। सन् १४७९ में अहमदाबादके महम्मद बेगडाने महम्मदाबादको बसाया था। उसकी बनवाई हुई भँवरबावली महम्मदाबादमें विद्यमान है। वह बावली ७५ फीट लम्बी और २५ फीट चौडी है। चक्करदार सीढ़ियोंसे नीचे जाना होता है। नीचे ८ कमरे बने हुए हैं। बावलीमें पत्थरकी २ महराबियाँ हैं, जिनमें बादशाहका झूलन लगता था।

महम्मदाबादके स्टेशनसे ५ मील दक्षिण-पश्चिम खेडा कसबे तक सुन्दर सडक बनी है। बम्बई हातेके गुजरात प्रदेशमें (२२ अंश, ४४ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, ४४ कला, ३ विकला पूर्व देशान्तरमें) जिलेका सदर स्थान खेड़ा कसबा है, जिसको कैरा भी कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय खेड़ा कसबेमें १०१०१ मनुष्य थे, अर्थात् ६४९७ हिन्दू, २१९० जैन, १३९२ मुसलमान, १२ सिक्ख और १० क्रूस्तान।

खेड़ा कसबेमें सरकारी कचहरियोंके सुन्दर मकान बने हुए हैं। कचहरीके पास एक बड़ा जैन-मन्दिर; पूर्व वाले फाटकके बाहर जेलखाना और दक्षिणके फाटकके बाहर घड़ीका बुर्ज और लायब्रेरी है। इनके अलावे खेडामें १ अस्पताल और चार पांच सरकारी स्कूल है। खेड़ा जङ्गली मुहकमेके कलक्टरका सदर स्थान है। वहाँ उस मुहकमेके हाकिमोंके मकान बने हुए हैं। खेड़ामें सारी और देशी लोगोके पहननेके कपड़े बहुत छापे जाते हैं।

खेडा जिला—गुजरातके उत्तरीय विभागमें खेड़ा जिला है। इसके उत्तर अहमदाबाद जिला और एक छोटा देशी राज्य; पश्चिम अहमदाबाद जिला और कांबेका राज्य और दक्षिण तथा पूर्व माही नदी और बडोदाका राज्य है। जिलेमें गुजराती भाषा प्रचलित है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय खेडा जिलेके १६०९ वर्गमील क्षेत्रफलमें ८०४८०० मनुष्य थे, अर्थात् ७२०८६६ हिन्दू, ७२९५४ मुसलमान, ९६०३ जैन, १०४१ क्रूस्तान, १३१ पारसी, ७ यहूदी और १९८ पहाड़ी जातियाँ इत्यादि। हिन्दुओंमें २७९३४४ कोली (खेतिहर), १४३१५१ कुन्बी (खेतिहर), ४२८०० महारा और धेर, ४१४९९ ब्राह्मण, २५७७३ राजपूत, १०८७४ चमार, १०८५९ हजाम, ८९८२ कुम्भार और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय खेडा जिलेके कसबे नडियादमें २९०४८, अमरेठमें १५६३८, कपडवंजमें १४८०५, बोरसादमें १२१५९ और खेड़ामें १०१०१ मनुष्य थे। डाकौर कसबा भी इसी जिलेमें है।

इतिहास—खेडा कसबा बहुत पुराना है। लोग कहते हैं कि यह महाभारतके समयमें था। ताम्बेके दानपत्रसे निश्चय होता है कि ५ वीं सदीमें खेडा विद्यमान था। सन् ७४६ से सन् १२९० तक खेडा जिला राजपूत राजाओंके अधिकारमे था, जिनमें अनहिलवाड़ाके राजा अधिक प्रसिद्ध थे। १४ वी सदीके अन्तमें खेड़ा जिला अहमदाबादके मुसलमानोके अधीन हुआ। सन् १५७३ में अकबरने उसको ले लिया। सन् १७२० से उस जिलेमें महाराष्ट्र और मुसलमान सूबेदार परस्पर झगड़ा करते रहे। सन् १७५३ मे दामाजीराव गायकवाड़ने खेड़ा कसबे और जिलेको जीता, तब पेशवा तथा गायकवाड़ने जिलेको बाँट लिया। अङ्गरेजी सरकारने सन् १८०२ में पेशवासे खेड़ा जिलेको हिस्सा, सन् १८०३ में आनन्दराव गायकवाड़से खेडा कसबा और खेड़ा जिलेका एक भाग और सन् १८१७ में गायकवाड़से खेड़ा जिलेका शेष भाग ले लिया। सन् १७३० तक खेड़ा कसबेकी छावनीमें अङ्गरेजी सेना रहती थी।

अहमदाबाद।

महम्मदाबासे १८ मील (बम्बई शहरके कुलावाके स्टेशनसे ३१० मील) उत्तर अहमदाबादका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके गुजरात प्रदेशमें साबरमती नदीके बायें अर्थात् पूर्व किनारेपर (२३ अंश, १ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, ३८ कला ३० विकला पूर्व देशान्तरमें) जिलेका सदर स्थान और जिलेमें सबसे बड़ा शहर अहमदाबाद है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय फौजी छावनीके साथ अहमदावाद शहरमें १४८४१२ मनुष्य थे, अर्थात् ७६६३० पुरुष और ७१७८२ स्त्रियां। इनमें१०२६१९ हिन्दू, ३०९४६ मुसलमान, १२७४७ जैन, १०३१ क्रस्तान, ७३३ पारसी, १५६एनिमिष्टिक, १५३ यहूदी और ३७ अन्य थे। मनुष्य–गणनाके अनुसार यह भारतवर्षमें १८ वाँ, वम्बई हातेमें तीसरा और गुजरातमें पहला शहर है।

अहमदावाद शहरसे "वम्वे वडोदा और सेंट्रल इण्डियन रेलवे" ३ ओर गई है, जिसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील २ पाई लगता है;—

(१) अहमदावादसे पश्चिम-दक्षिणके वाढ़-वान तक "वम्वे वडोदा और सेंट्रल इण्डियन रेलवे" और उससे आगे काठियावाडके देशी राजाओंकी रेलवे है,—

अहमदावादसे पश्चिम ४० मील वीरमगाँव जंक्शन, ५७ मील पत्री और ६२ मील खारागोडा।

वीरमगाँव जंक्शनसे पूर्वोत्तर ४१ मील महसाना जंक्शन और पश्चिम दक्षिण ३९ मील वाढ़वान जंक्शन।

वाढ़वान जंक्शनसे दक्षिण-पश्चिम-५२ मील वंकानीर जंक्शन, ७७ मील राजकोट, १०१ मील गोंडल और १२४ मील जितलसर जंक्शन।

वंकानीर जंक्शनसे उत्तर १६ मील मोरवी।

जितलसर जंक्शनसे पश्चिम १० मील धोराजी, २१ मील उपलेटा और ७८ मील पोरवन्दर, जितलसरसे दक्षिण १७ मील जूनागढ़, २४ मील शाहपुर, ३९ मील केशोद और ६८ मील विरावलवन्दर और जितलसरसे पूर्व ३ मील जेतपुर, ५६ मील लाठी, ८० मील धोला जंक्शन, ९३ मील सोनगढ, ९८ मील सिहोरा कसवा और ११२ मील भावनगर।

धोला जंक्शनसे उत्तर ५५ मील लिंवडी, ६८ मील वाढ़वान कसवा और ७२ मील वाढ़वान जंक्शन।

(२) वाढ़वान जंक्शनसे रेलवेके प्रसिद्ध स्टेशनोंके फासिले;—

वाढ़वानसे दक्षिण ४ मील वाढ़वान शहर, १७ मील लिंवडी और ७२ मील धोला जंक्शन।

धोला जंक्शनसे पूर्व १३ मील सोनगढ़, १८ मील सिहोर कसवा, २९ मील भावनगरका तिकट स्टेशन और ३२ मील भावनगरका स्टेशन और धोला जंक्शनसे पश्चिम २४ मील लाठी, ७७ मील जेतपुर और ८० मील जितलसर जंक्शन।

(३) अहमदाबाद जंक्शनसे उत्तर पालनपुर और पालनपुरसे पूर्वोत्तर अजमेर जंक्शन;—

मील-प्रसिद्ध स्टेशन।
४ सावरमती।
१६ ककोल।
४३ महसाना जंक्शन।
५६ ऊंझा कसवा।
६४ सिद्धपुर।
८३ पालनपुर जंक्शन।
११५ आवूरोड।
२१८ मारवाड़ रेलवे जंक्शन।
२५१ हरिपुर।

२७२ बियावर ।

३०५ अजमेर जंक्शन ।

महसाना जंक्शनसे पश्चिमोत्तर २५ मील पाटन; पूर्वोत्तर १३ मील बीसनगर कसबा, २१ मील वाड़-नगर कसबा और २८ मील खेरालू और दक्षिण–पश्चिम ४१ मील वीरमगॉव जंक्शन ।

पालनपुर जंक्शनसे पश्चिमोत्तर १७ मील डीसा ।

मारवाड़ रेलवे जंक्शनसे जो-धपुर बीकानेर रेलवेपर उत्तर कुछ पश्चिम ४४ मील लूनी जंक्शन और ६५ मील जोधपुर महलका स्टेशन।

लूनी जंक्शनसे पश्चिम ६० मील पच्चभद्रा ।

जोधपुरसे पूर्वोत्तर २८ मील पिपरारोड, ६३ मील मार्तारोड जंक्शन, १३६ मील कुचामनरोड, १५१ मील सांभर और १५५ मील बांदीकुई जंक्शन ।

मर्तारोड जंक्शनसे उत्तर कुछ पश्चिम १०३ मील बीकानेर ।

(४) अहमदाबादसे दक्षिण,–

मील-प्रसिद्ध स्टेशन ।

१८ अहमदाबाद ।

२९ नड़ियाद ।

४० आनन्द जंक्शन ।

६२ बड़ोदा ।

६४ विश्वामित्री जंक्शन ।

८१ मियांगांव जंक्शन ।

१०६ भड़ौंच ।

११२ अंकलेश्वर ।

१४३ सूरत ।

१६१ नवसारी ।

१८५ बलसर ।

१९५ उदवाडा ।

२०१ दमनरोड ।

२१५ संजान ।

२७७ बेसीनरोड ।

२८२ भयंदर ।

२८८ बोरवली ।

२९२ गुरगांव ।

२९९ बाँदरा कसबा ।

३०० माहिम ।

३०२ दादर ।

३०७ चरनी रोड ।

३१० बम्बईमें कुलाबा ।

आनन्द जंक्शनसे पूर्व कुछ उत्तर १४ मील अमरेठ कसबा, १९ मील डाकौर, ४९ मील गोधड़ा, ९४ मील दोहद कसबा और १६४ मील रत-लाम जंक्शन और आनन्द जंक्शनसे पश्चिम-दक्षिण १४ मील पेटलाद कसबा ।

विश्वामित्री जंक्शनसे पूर्व १२ मील डभोई जंक्शन और २१ मील बहा-दुरपुर ।

मियागॉव जंक्शनसे पूर्वोत्तर २० मील डभोई जंक्शन; डभोईसे दक्षिण १० मील चन्द्रोदय और पूर्व ९ मील बहादुरपुर ।

अहमदाबादमें रेलवे स्टेशनके पास धर्मशाला है। रेलवे सड़कके पश्चिम और साबरमती नदीसे पूर्व १५ फीटसे २० फीट तक ऊँचे शहरपनाहके भीतर २ वर्गमीलके क्षेत्रफलमें अहमदाबादका खास शहर है। शहरपनाहकी दीवारमें प्रायः ५० गजके अन्तर पर पाये बने हुए हैं और चारो ओर १२ फाटक हैं;—पूर्व ओर सारंगपुर, कालूपुर और प्रेमभाई फाटक; उत्तर दरियापुर, दिल्ली और शाहपुर फाटक, पश्चिम खांपुर और भद्र फाटक और दक्षिण जमालपुर, स्टोरिया और राजपुर फाटक। इनके अलावे २ छोटे फाटक हैं।

शहरमें अनेक चौड़ी सड़कें बनी हैं। म्युनिसिपल्टीकी सीमाके भीतर २८ मीलसे अधिक लम्बी गाड़ी चलनेके लायक सडक हैं। प्रधान सडक शहरके आरपार उत्तरसे दक्षिणको गई है। एक सड़क, जो बगलोके फुटपाथोके साथ ४० फीट चौड़ी है, पश्चिमसे पूर्वको गई है। सडकोंपर रातमे लालटेनोंकी रोशनी होती है। सडकोंके बगलोमें सुन्दर मकान और दुकानें बनी हुई हैं। शहरमें १४ बाजार हैं। शहरके मध्य भागके खुले हुए स्थानमे गल्लेका बडा बाजार है।

शहरमें लगभग १२५ जैनमन्दिर और अनेक हिन्दूमन्दिर हैं। हिन्दू मन्दिरोमे स्वामीनारायणका मन्दिर सबसे बडा है। जामामसजिद, रानी सिप्री, दस्तूरखां, अहमदशाह, मुहाफिजखॉ, हैबतखॉ, सैयदआलम, मलिकआलम, सीदीसैयद, कुतबशाह, सैयदउसमानी, मियाखॉ, चिस्ती, सीदीबसीर, अहमदचूस इत्यादि लोगोंकी बहुतसी मसजिदे और पहिला अहमदशाह, शाहआलम, आजिम और मवजिम, दरियाखां, असमखां, मीरआबुल अजीरुद्दीन इत्यादिके मकबरे हैं। इनके अलावे २ लायब्रेरी, जिलेकी कचहरियाँ, अस्पताल, पागलखाना, कोढ़ीखाना, दवाखाना, ४ लड़कियोंके स्कूल १४ लडकोंके स्कूल, और लगभग १०० खानगी स्कूल हैं।

शहर तथा उसके आस पास भी बहुतसी दर्शनीय् वस्तु हैं,—माता भवानीका पुराना कूप, दादाहरिका कूप, काकरिया झील, शांतिदासका मन्दिर, अजीमखांका महल, जो अब जेलखानेके काममे आता है इत्यादि।

शहरसे ३½ मील पूर्वोत्तर फौजी छावनी है। शहर और छावनीके बीचमे उत्तम सड़क बनी है। सडकके बगलोंमे वटवृक्षोंकी मनोरम श्रेणी हैं। नित्य शामको बहुत लोग वहाँ हवा खाने जाते हैं। दिल्ली फाटक से ५०० गज दक्षिण २ गिरजे और शहरसे ५ मील दक्षिण-पश्चिम साबरमतीके दूसरे पार सरखेज हैं। माधवपुर शहरतलीमें बहुत तिजारती लोग रहते हैं। रेलव स्टेशनसे पूर्व सारसपुर नामक एक सुन्दर शहरतली है, उसके चारों ओर दीवार है। सारसपुरमे चिन्तामणिका उत्तम जैनमन्दिर है; जिसको सन् १८६८ में शांतिदास नामक धनी सौदागरने पुराने जैनमन्दिरके स्थान पर ९ लाख रुपयेके खर्चसे बनवाया। अहमदाबादके चारों ओर १२ मीलमें दिलचस्प तबाहियॉ हैं।

भद्र फाटकके समीपके जेलखानेके पास एक कोठरीमें कालीजीकी मूर्त्ति है। फाटकसे बाहरकी साबरमतीका पुल टूट गया है। नदीके तीरपर अपने अपने कपड़े धोती हुई स्त्रियोंके झुण्ड देख पडते हैं, जिनमें अनेक पुरुषभी कपडे धोते हैं।

उसमानपुरके सामनेसे साबरमती नदीका पानी जल कलद्वारा शहरमें आता है। प्रतिवर्ष शहरमे छोटे बड़े लगभग २५ मेले होते हैं। अहमदाबादके सोनार, ठठेरे, जवाहिरी,

बढ़ई, कुम्भार, संगतरास, कागज बनाने वाले और हाथीदांतके काम बनानेवाले कारीगर प्रसिद्ध है। वहां देव मूर्त्तियोंके भूषण बक्स, सूतके कपड़े, सुनहरी रेशमी कमख्वाब, सोना चाँदीके लैस, गलीचे, चमड़ेकी ढाल इत्यादि वस्तु अत्युत्तम तैयार होती हैं। यद्यपि अहमदाबादकी दस्तकारियाँ पहिलेसे अब कम हैं; तथापि वहाँके बहुत लोगोंका निर्वाह उन्हींसे होता है। शहरमें बड़े बड़े कोठीवाले रहते हैं। अनेक भांतिके बहुतसे कल कारखाने हैं, जिनमें १३ से अधिक केवल कपड़े बीननेके हैं।

लगभग ३५० वर्ष हुए अहमदाबाद शहरमें बिनोदीराम ब्राह्मणके गृह दादूपन्थी संप्रदायके नियत करनेवाले दादूजीका जन्म हुआ था। भारत-भ्रमण पहिला खण्ड चौदहवें अध्यायके निरानामें दादूजीका वृत्तान्त लिखा हुआ है।

स्वामीनारायणका मन्दिर–शहरके पूर्वोत्तर भागमें, शहरसे उत्तरके दरियापुर नामक फाटकसे दक्षिण जानेवाली चौड़ी सड़कके किनारेके पास सन् १८५० का बना हुआ, स्वामीनारायणका विशाल मन्दिर है। मन्दिरका गुम्बज अठपहला है। मन्दिरमें भोगरागकी बडी तैयारी रहती है, उसके खर्चके लिये भारी आमदनीका प्रबन्ध है। १९ वीं सदीमें स्वामीनारायणकी संप्रदाय चली है। इस संप्रदायके नियत करनेवाले स्वामीनारायण नामक ब्राह्मण सन् १८२५ के पीछे तक थे। गुजरात और काठियावाड़के अनेक नगरोंमें स्वामीनारायणके मन्दिर बने हुए हैं। स्वामीनारायणकी आज्ञानुसार उनके मन्दिरमें कोई स्त्री नहीं जाने पाती है।

मन्दिरके पास पिंजरापोल नामक पशुशाला है, जिसमें धार्मिक लोगोके चन्देसे लगभग १००० जानवर पाले गये है। एक कमरेमें कीड़ेभी हैं। उससे दक्षिण ओर नवगजपीर नामक ९ कबरें हैं। प्रत्येक कबर १८ फीट लम्बी है। लोग कहते है कि ये कबरें अहमदाबाद शहर बसनेके समयसे बहुत पहिलेकी हैं।

मोहाफिजखाँकी मसजिद—स्वामीनारायणके मन्दिरसे पश्चिमोत्तर शहरके दिल्ली फाटकसे दक्षिण मोहाफिजखाँकी मसजिद है, जिसको सन् १४६५ में महम्मदबेगडाके सूबेदार जमालुद्दीन मोहाफिजखांने बनवाया था। उसकी मीनार सुन्दर हैं। वह मसजिद वहाँकी सब मसजिदोंसे अधिक मरम्मत है।

हाथीसिंहका जैन मन्दिर–शहरके उत्तरके दिल्ली फाटकसे लगभग ६०० गज उत्तर, सड़कसे पूर्व, हाथीसिंहका बड़ा जैन मन्दिर है। वह मन्दिर सन् १८४८ में १० लाख रुपयेके खर्चसे तैयार हुआ था। लगभग १३० फीट लम्बे और १०० फीट चौडे आंगनमें जैनोंके १५ वें तीर्थंकर धर्मनाथजीका उत्तम मन्दिर है। मन्दिरके नीचेका भाग मार्बुलसे बना हुआ है। मन्दिरमें धर्मनाथजीकी मार्बुलकी सुन्दर प्रतिमा बैठी है, उसके शिरपर नकली हीरोंसे भूषित सुनहरा मुकुट है। मन्दिरके आगेके जगमोहन अर्थात् पेशगाहमें उत्तम नकाशीका काम बना है। मन्दिर और जगमोहनमे श्वेत तथा नील रंगके मार्बुलके टुकड़ोंसे फर्श बना है और रंगदार बेश कीमती पत्थरोंकी पच्चीकारीसे फूल बेल बनाये गये हैं।

आंगनके चारों बगलोंमें दीवारके स्थानपर एकही तरहके ५३ शिखरदार मन्दिर हैं। प्रति मन्दिरमें एक, दो अथवा तीन मार्बुलकी जैन मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं। उनकी छाती,

कन्धाओ इत्यादि अंगोंपर रत्न और सोने जडे हुए है। सब मन्दिरोंमें पीतल अथवा लोहेके जालीदार छोटे किवाड़ लगे हैं। मन्दिरोंके आगे आंगनकी तरफ सुन्दर ओसारे हैं। मन्दिरके घेरेके आगे एक विश्राम गृह और एक दूसरा मकान है।

हाथीसिंहके मन्दिरसे लगभग १ मील पूर्वोत्तर दादाहरिका प्रसिद्ध कुँआ और उससे पूर्वोत्तर असरवागॉवमें माता भवानीका सुन्दर कुआं है।

नया जैन मन्दिर—शहरके भीतर एक सडकके वगलमें एक सुन्दर जैन मन्दिर है। एक घेरेके भीतर खास मन्दिर है। उसके आगेकी दीवारमे अनेक द्वार बने हुए हैं। मन्दिरमें प्रति द्वारके सामने मार्बुलकी एक जैन मूर्त्ति है, जिनमेंसे मध्यके द्वारके सामनेकी मूर्त्ति बड़ी है। मन्दिरके आगे सुन्दर जगमोहन और बाकी तीन बगलोंमें परिक्रमाके मार्गके बादकी दीवारमें पंक्तिसे बड़े वडे ताक बने हुए हैं, जिनमें जैन तीर्थंकरोंकी मार्बुलकी प्रतिमा प्रतिष्ठित है। उनकी छाती आदि अङ्गोंपर सोना अथवा रत्न जडे हुए हैं। ताकोंके जालीदार द्वारोंसे मूर्त्तियॉ देख पड़ती हैं।

अहमदशाहका मकवरा—शहरके मध्य भागमें दरियापुर फाटक और कालूपुर फाटककी सड़कके मेलके पास अहमदाबाद शहरको कायम करने वाला अहमदशाहका मकवरा है। पाहिले एक पेशगाह, जिसमें १८ स्तम्भ लगे हैं, मिलता है। मकवरेके मध्यका कमरा ३६ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है। अनेक रङ्गके मार्बुलके टुकड़ोसे फर्श बना हुआ है। मकबरेमें अहमदशाहकी नकली कवर है, उसके उत्तर उसके पुत्र महम्मदशाहकी कवर और दक्षिण उसके पोते कुतवशाहकी कवर है।

अहमदशाहके मकबरेसे लगभग १५० फीट पूर्व अहमदाबादकी उत्तम इमारतोंमेंसे एक अहमदशाहकी स्त्रियोंका मकवरा हीन दशामें विद्यमान है। उसमे ८ वडी और कई एक छोटी कवरें हैं। मकबरेके आगे आङ्गन और अगवासकी इमारत है।

जुमामसजिद्—अहमदशाहके मकवरेसे दक्षिण-पश्चिम प्रधान सड़क (मानिक चौक)-के दक्षिण बगलमें जुमामसजिद नामक एक उत्तम मसाजिद है, जिसको अहमदाबादके बसाने वाले अहमदशाहने सन् १४२४ में बनवाया था। एक बड़े आंगनके पश्चिम बगलमें खास मसजिद और तीन बगलोंमें मेहराबदार ओसारे और मध्यमें पानीसे भरा हुआ एक छोटा हौज है। सम्पूर्ण आंगनमें पत्थरका फर्श है। पूर्वके भागके एक घेरेमें अहमदशाहकी कबर है। उत्तर बगलमें सड़कके दक्षिण किनारेपर सदर दरवाजा है।

खास मसजिदमे २६० जैन स्तम्भ लगे हैं। उसके ऊपर मध्यमे १ बड़ा और चारों ओर १४ छोटे गुम्बज हैं। नीचे मार्बुलका फर्श है, जो पुराने होनेके कारण बहुत उदास होगया है। मार्बुलके तख्तेपर अरवी अक्षरमें मुसलमानी मतकी शिक्षाका शिलालेख है। सन् १८१९ के भूकम्पके समय मसाजिदके दोनों बड़े मीनारोंके ऊपरके भाग गिर गये; अब उनकी ऊँचाई ४४ फीटसे अधिक नहीं है।

जुमामसाजिदसे पश्चिम ओर प्रधान सडकपर अहमदशाहका बनवाया हुआ "तीन दरवाजा" है। उसमे सुन्दर नकाशीका काम बना हुआ है। दरवाजेकी छत सन् १८७७ में तोड दी गई।

अहमदशाहकी मसजिद–तीन दरवाजेसे दक्षिण–पश्चिम शहरके पश्चिमकी दीवारके पासके मानिकबुर्जके दक्षिण-पूर्व अहमदशाहकी मसजिद है। उसको अहमदशाहने जुमामसजिदसे पहिले सन् १४१४ में बनवाया था।

रानी सिप्रीकी मसजिद–शहरके दक्षिणके छोरिया फाटकसे उत्तर अहमदशाहकी पतोहू रानी सिप्रीकी सुन्दर मसजिद है। मसजिदके पास उसका मकबरा है। दोनो सन् १४३१ में बने। मसजिदके दो मीनार लगभग ५० फीट ऊंचे हैं।

रानी सिप्रीकी मसजिदसे पश्चिम दस्तूरखानकी मसजिद है, जिसको अहमदाबादके महम्मदबेगड़ाके मन्त्रियोंने बनवाया था। उसके चन्द गज पूर्व आसाभीलका; जिसके नामसे पहिले अहमदाबादका नाम असावल था, घेरा है। वहाँ पूर्व कालमें भील राजा आसाका किला था।

कांकरिया झील—शहरके दक्षिणके राजपुर फाटकसे ¾ मील दक्षिण पूर्व ७२ एकड भूमिपर दर्शनीय कांकरिया झील है, जिसको लोग हौजी कुतुब भी कहते हैं। उसको अहमदाबादके सुलतान कुतुबुद्दीनने सन् १४५१ मे बनवाया था। वह झील ३४ पहलका गोलाकार है; उसका प्रत्येक पहल ६३ गज लम्बा है; इस हिसाबसे उसका घेरा २१४२ गज अर्थात् लगभग १¼ मील लम्बा होता है। झीलके सब पहलोंमें नीचेसे ऊपर तक पत्थरकी सीढ़ियाँ बनी हुई हैं, ऊपर चारोंओर सड़क है।

झीलके मध्यमें लगभग ७५ गज लम्बा और इतनाही चौड़ा टापू है। झीलके दक्षिण किनारेसे टापू तक २५० गज लम्बी सड़क बनी है, जिसके किनारों पर छोटे छोटे वृक्ष लगे है और फूलोंके गमले रक्खे हुए है। टापू पर नगीना नामकी छोटी फुलवाडी और वटामण्डल नामक छोटा बँगला है। टापूके मध्यमें दमकलाका छोटा हौज है। अहमदाबादके कलक्टर साहबने सन् १८७२ में झीलकी मरम्मत करवाई और शहरके राजपुर नामक फाटक तक एक सड़क बनवा दी।

शाहआलम–कांकरिया झीलसे १½ मील दक्षिण पश्चिम बतवारोडके पास शाहआलम नामक प्रसिद्ध जगह है। वहाँ एक बहुत बडे आँगनके पश्चिमोत्तरके कोनेमे बडी मसजिद, दक्षिण-पूर्वके कोनेमें शाह आलमका मकबरा, दक्षिण-पश्चिमके कोनेमें शाह आलमके खानदानके लोगोंका मकबरा और पूर्वोत्तरके कोनेमें पेशगाहके साथ एक कमरा और आँगनके बीचमे पानीका हौज है। आँगनमें पत्थरका फर्श है। उत्तर बगलमें दोहरा फाटक है।

मसजिदके भीतर ८ स्तम्भोंकी ४ पंक्तियां और उसके आगेके दोनों कोनोंके पास ९० फीट ऊँचे दो मीनार है। उस मसजिदको महम्मद सालेहने बनवाया; उसके मीनारोंका काम निजामतखांने आरम्भ किया और सयफखाँने समाप्त किया।

शाहआलमका मकबरा गुम्बजदार है। उसकी दीवार दोहरी है। बाहरकी चारों ओरकी दीवारमें २८ मेहराबियां बनी हुई है, जिनमें किसी किसीमे किसी धातुकी जालीदार टट्टियां और किसी किसीमें जालीदार कपाट हैं। भीतरकी दीवारमे, जो कबरके चारों ओर है; २० खम्भे लगे हैं और चारों ओर एक एक जालीदार दरवाजा है। मकबरेमें काले और उजले माबुलका फर्श है। माबुलके चौखट लगे हैं। शाहआलम अहमदाबादके सुलतान

महम्मद बेगड़ाका उपदेशक था; वह सन् १४९५ में मर गया। महम्मद बेगड़ाकी कचहरीका सरदार ताजखाँ नारियालीने इस मकवरेको वनवाया । जहाँगीरकी वीवी नूरजहाँके भाई आसफखांने १७ वीं सदीमें मकवरेके गुम्बजको वेश कीमती पत्थर और सोनेसे संवारा ।

शाहआलमके मकवरेके सामने पश्चिम बड़े घेरेके दक्षिण-पश्चिमके कोनेमें शाह आलमके मकवरेके नकशेका दूसरा मकवरा है, जिसमे शाह आलमके खानदानके लोगोंकी कवरें हैं।

आजिम और मवजिमका मकबरा—शहरके दक्षिणके जमालपुर फाटकसे कई मील दक्षिण-पश्चिम साबरमती नदीके दूसरे पार अर्थात् उससे पश्चिम सरखेजकी इमारतोके बनानेवाले प्रधान कारीगर आजिम और मवजिम दोनो भाइयोंका वड़ा मकवरा है, जो सन् १४५७ मे बना था। लोग कहते हैं कि वें दोनो खुरासानसे आये थे।

उस मकवरेसे कई सो गज दूर सरखेजमें अहमदाबादके सुलतान महम्मद बेगड़ा आदिके मकवरे हैं। फाटक होकर आँगनमें जाने पर बाई ओर महम्मद बेगड़ा और उसके लड़कोका बड़ा मकवरा देख पड़ता है, जिसके पास तालावके किनारे पर महम्मद बेगड़ाकी स्त्री राजावाईका एक उमदा मकबरा है। दहिनी आर सुलतान अहमदशाहके उपदेशक शेख अहमदखट्टू गंजवखसका उत्तम मकवरा और एक मसजिद है। वह मकवरा गुजरातके उस किसिमके सब मकवरोंसे वडा है। उसके ऊपर मध्यमें बड़ा गुम्वज और उसके वगलोमें बहुतसे छोटे गुम्वज हैं। अठपहले घेरेके भीतर, जिसमें पीतलकी जालीदार खिड़कियाँ हैं, कवर है। मार्बुलका फर्श है। गुंबजके तलमे सुन्दर मुलामा है। दरवाजे पर सन् १४७३ का पारसी लेख है। मकबरेसे लगी हुई १८ स्तम्भों पर १० गुम्बजकी मसजिद है। गंजवखस सन् १४४५ मे अति वृद्ध होकर मरा। उसके स्मरणार्थ मकवरा और मसजिद बनाई गई। उसकी कबरके दक्षिण उसके चेले शेख शहाबुद्दीनकी कवर है।

महम्मद वेगडाने १७ एकड भूमिपर तालाव वनवाया; उसके चारों ओर सीढ़ियाँ बनाईं और उसके दक्षिण-पश्चिमके कोनेके पास एक सुन्दर महल वनाया, जो हीन दशामें विद्यमान है। तालाबमें घड़ियाल रहते है। उससे थोडा दक्षिण वावा अलीशेरका छोटा मकवरा है। १७ वीं सदीमें सरखेज नीलके लिये वहुत प्रसिद्ध था। सन् १६२० में हालेंड वालोंने वहाँ एक कोठी कायम की।

साबरमती नदी—अहमदाबाद शहरके पश्चिम साबरमती नदी वहती है । शहरके पास उसकी चौड़ाई लगभग ५०० गजसे ६०० गज तक है । नदी सर्वदा नाव चलनेके योग्य नहीं रहती। गर्मीके दिनोंमें उसमें केवल दो तीन फीट गहरा पानी रह जाता है। अहमदाबाद जिलेमें साबरमतीके किनारेपर नीलकण्ठ महादेव, खड्गधारेश्वर महादेव और भीमनाथ महादेवके ३ प्रसिद्ध शिवालय है। उस जिलेमें वह सबसे वडी नदी है। वह नदी पूर्वोत्तरमें अर्वली पहाड़से निकलकर दक्षिण—पश्चिमको वहती हुई लगभग २०० मील वहनेके उपरान्त कावेकी खाडीमें गिरती है। वहुतसी छोटी नदियाँ उसमें मिली हैं। उस नदीका शुद्ध नाम साभ्रमती है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—पद्मपुराण—(उत्तरखण्ड, १३५ वॉ अध्याय) कश्यपजीने अर्बुद अर्थात् अर्वली पर्वतमें, जहाँ पवित्र सरस्वती नदी थी, अनेक वर्षों तक भारी तप किया था।

मुनि गणोंने उनसे प्रार्थना की कि तुम हम लोगोके हितके लिये यहाँ गङ्गाको लाओ। कश्यपजीने अर्बुद वनमें सरस्वती नदीके तीरपर तप आरम्भ किया और अन्य ऋषि गण भी शिवकी आराधना करने लगे। शिवजी प्रकट होकर बोले कि हे कश्यप! तुम इच्छित वर मांगो। कश्यपजीने कहा कि हे भगवन्! तुम मुझको अपने शिरमें स्थित पवित्र गङ्गाको दो। तब शिवजीने अपनी एक जटासे गङ्गाको दिया। कश्यपजी गङ्गाको अपने आश्रममें ले गये। उस समयसे कश्यपजीके आश्रमका नाम केशरन्ध्र तीर्थ और गङ्गाका नाम काश्यपीगङ्गा हुआ। काश्यपीगङ्गाके दर्शन मात्रसे ब्रह्महत्यादि पाप छूट जाते है। इसका नाम सतयुगमें कृतवती, त्रेतामें गिरिकार्णिका, द्वापरमें चन्दना और कलियुगमें साभ्रमती रहता है। उसके तीरपर बहुतसे महर्षि निवास करते हैं। उसके जलमें सम्पूर्ण तीर्थोंका वास है। उसके पास श्राद्ध करनेसे पितरोंका शीघ्रही उद्धार होजाता है। उसके तीरपर ब्रह्मचारीश और गङ्गाधर शिवलिङ्ग और राजखड्ग नामक पवित्र तीर्थ है, जिसमे स्नान करनेसे ब्रह्महत्यादि पाप छूट जाते है।

(१३६ वाँ अध्याय) साभ्रमती नदी नन्दीकुण्डसे निकलकर अर्बुद पर्वतको लांघकर आगे गई है। नन्दीकुण्डके पास कपालमोचन तीर्थ और कपालेश शिवलिङ्ग है। (१३७ वाँ अध्याय) साभ्रमती नदी नन्दी प्रदेशसे विकीर्ण वनमें जाकर पर्वतोंके किनारोंको काटती हुई ७ धाराओंमें विभक्त होकर दक्षिण ओर समुद्रमें जामिली है। सातों धाराओंके नाम ये है;–१ साभ्रमती, २ सेटिका, ३ वल्किनी, ४ हिरण्या, ५ हस्तिमती, ६ वेत्रमती और ७ वीं भद्रामुखी। (१३९ वाँ अध्याय) मातृतीर्थके समीप साभ्रमतीमें स्नान करनेसे मातृ मण्डलमें निवास होता है। साभ्रमती और गोखुराके संगममे स्नान करनेवालेको करोड़ यज्ञ करनेका फल मिलता है। (१४७ वाँ अध्याय) साभ्रमतीके तीरपर खड्ग तीर्थमे स्नान करके खड्गधारेश्वर शिवके दर्शन करनेसे मनुष्यको स्वर्गलोक मिलता है। खड्ग धारेश्वरकी पूजा कार्त्तिकमें करनेसे मनोवांछित फल मिलता है और वैशाखमें करनेसे राज्य लाभ होता है। (१७० वाँ अध्याय) समुद्र और साभ्रमतीके संगममें स्नान करनेसे महापातकोंका नाश होजाता है। वहाँ श्राद्ध करनेसे मनुष्यका ब्रह्महत्या पाप छूट जाता है और पितर लोकमें निवास होता है। (१७२ वाँ अध्याय) साभ्रमतीके तीरपर नीलकण्ठ तीर्थमें नीलकण्ठ महादेव हैं। उनके दर्शन और पूजन करनेसे मनोवांछित फल लाभ होता है तथा मुक्ति मिलती है।

अहमदाबाद जिला—गुजरात देशमें अहमदाबाद जिला है। इसके उत्तर बड़ोदाके राज्यका उत्तरी भाग; पूर्वोत्तर माहीकण्ठा एजेंसी; पूर्व एक देशी राज्य और खेड़ा जिला, दक्षिण–पूर्व कांबेकी खाडी; दक्षिण और पश्चिम काठियावाड़ प्राय द्वीप है। जिलेकी सीमाओंके भीतर बड़ोदा और काठियावाड़के राज्योंके अनेक गाँव हैं और इस जिलेके गाँवोंके अनेक झुण्ड जिलेकी सीमाओंके बाहर हैं। जिलेमें दक्षिणी सीमाके पास और उत्तरी सीमाके बाहर कई एक चट्टानी पहाड़ियाँ हैं। प्रधान नदी साबरमती है। पश्चिम भागके अलावे, जहाँका पानी बहुत खारा है, जिलेमें सर्वत्र कूप हैं, जिनमेंसे बहुतेरोंमें २५ फीटके नीचे पानी है। जगह जगह जलाशयभी हैं। अहमदाबाद शहरसे लगभग ३७ मील दक्षिण पश्चिम वीरमगाँव सबडिविजनमें ५० वर्गमील क्षेत्रफलमें एक बड़ी झील है, जिसमें कई एक छोटे टापू बने हैं। जिलेके पूर्वोत्तर भागमें थोड़ा जङ्गल है। जिलेकी मवेसियाँ बहुत उत्तम होती हैं। जिलेमें गुजराती भाषा प्रचलित है।

गुजराती वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ अं अः

અ આ ઇ ઈ ઉ ઊ ઋ ૠ ઌ એ ઐ ઓ ઔ અં અઃ

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द

ક ખ ગ ઘ ઙ ચ છ જ ઝ ઞ ટ ઠ ડ ઢ ણ ત થ દ

ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह ळ क्ष ज्ञ

ધ ન પ ફ બ ભ મ ય ર લ વ શ ષ સ હ ળ ક્ષ જ્ઞ

का कि की कु कू के कै को कौ कं कः १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

કા કિ કી કુ કૂ કે કૈ કો કૌ કં કઃ ૧ ૨ ૩ ૪ ૫ ૬ ૭ ૮ ૯

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय अहमदाबाद जिलेके ३८२१ वर्गमील क्षेत्रफलमें ८५६३२४ मनुष्य थे; अर्थात् ७२९४९२ हिन्दू, ८३९४२ मुसलमान, ३८४७० जैन, १९९६ जङ्गली, १५३८ क्रस्तान, ६५२ पारसी और २३३ यहूदी। हिन्दुओंमें १७६२६८ कोली, १०९६९० कुन्वी, ४८६५८ राजपूत, ४३००० ब्राह्मण, ४०६२६ महारा, २०५५५ कुंभार, १५३७७ चमार, ११६५९ लोहार और बाकीमें अन्य जातियोंके लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय अहमदाबाद जिलेके कसबे अहमदाबादमें १४८४१२, वीरमगाँवमें २३२०९, धोलकामें १६४९४ और धोलेड़ामें १००८८ मनुष्य थे। इनके अलावे धुंधुक, परांजित; गोगो, मुरासा और सानन्द छोटे कसबे हैं।

इतिहास–पहिले पहल अनहिलवाड़ाके राजपूत राजाओंने (सन् ७४६–१२९७) अहमदाबाद जिलेकी भूमि जोतवानेका प्रबंध किया था। वहाँके राजाओंके प्रबल होनेके समयभी जिलेका बडा भाग अर्द्ध स्वाधीन भीलोंके हस्तगत था।

सन् १४११ में सुलतान अहमदने, जिसका राज्य सन् १४१३ से १४४३ तक था, हिन्दुओंके पुराने नगर असावलके पास, जो शहरके दक्षिणीय भागमें विद्यमान है, अहमदाबादके शहरपनाहका काम आरम्भ किया। सन् १४८६ में महम्मदशाह बेगडाने शहरपनाहको दुरुस्त करवाया। सन् १५११ तक आवादी और धनमें शहर बढ़ा चढ़ा था। सन् १५१२ से १५७२ तक गुजरातके मुसलमान बादशाहोंके प्रतापकी घटतीके साथ साथ शहरकी घटती हुई। सन् १५७३ में दिल्लीके अकबरने अहमदाबाहके तीसरे मुजफ्फरशाहके राज्यके समय गुजरातके साथ अहमदाबादको जीतकर अपने अधिकारमें कर लिया। भील लोगोंने भी उनकी अधीनता स्वीकार की। फिर शहरकी उन्नति होने लगी। १६ वीं और १७ वीं सदीमें अहमदाबाद पश्चिमी भारतके प्रतापशाली शहरोंमेंसे एक था। फिरिस्तामें लिखा है कि अहमदाबादके ३६० महल्ले अलग अलग दीवारोंसे घेरे हुए थे। लोग कहते हैं कि उस समय शहरमें लगभग ९ लाख मनुष्य बसते थे। वहाँ १८ वीं सदीके आरम्भमें दिल्लीका अधिकार नाममात्र रह गया! बहुतेरे मुसलमान और महाराष्ट्र प्रधान अहमदाबादके लिये झगड़ने लगे। शहरकी घटती होने लगी। सन् १७३८ में दामाजी गायकवाड़ और मुहिमखां मुगलने अहमदाबाद शहरको ले लिया। उसके पश्चात् जब पेशवाने दामाजीको कैद कर लिया, तब मुगलके कर्मचारियोंने सम्पूर्ण शहरपर अपना अधिकार जमाया, किन्तु जब दामाजी कैदसे छूटकर आये तब उन्होंने रघुनाथरावकी फौजकी सहायता लेकर सन् १७५३ में शहरको फिर ले लिया। सन् १७५७ में मुहीमखांने महाराष्ट्रोंसे शहरको फिर पाया। सन् १८०३ में अहमदाबाद जिलेमें अङ्गरेजी अधिकार हुआ। सन् १८१७ में गायकवाड़ने अङ्गरेजोंको अहमदाबाद शहर और उस जिलेके बाकी हिस्सेको, जो उनके और पेशवाके हिस्सेमें थे, दे दिया। सन् १८१८ की पहिली जनवरीको अहमदाबाद एक अलग जिला बनाया गया। उस समयसे शहरकी फिर बढ़ती होने लगी। सन् १८३३ में अङ्गरेजी सरकारने २५०००० रुपयेके खर्चसे शहरकी दीवारकी मरम्मत करवाई। सन् १८७५में नदीकी बाढ़से अहमदाबाद शहरके ३८८७ मकान टूट गये और लगभग ६००००० रुपयेकी वस्तुओंकी हानि हुई।

गुजरात देश–बम्बई हातेमें सिन्ध देशसे दक्षिण (काठियावाड़ प्रायद्वीपके साथ) गुजरात नामक प्रसिद्ध देश है। उसके उत्तर राजपूताना, पूर्व विंध्य और सतपुडा पहाड़ीके भाग, दक्षिण कोकन और पश्चिम समुद्र है। उसमें सूरत, भड़ौच, खेड़ा, पंचमहाल और अहमदाबाद ये ५ अङ्गरेजी जिले, जिनका क्षेत्रफल १०१५८ वर्गमील है, और बड़ोदाका राज्य तथा बम्बे गवर्नमेंटके अधीनके काठियावाड़, माहीकण्ठा, रेवाकण्ठा, कांबे, नारूकोर्ट इत्यादि देशी राज्य हैं, जिनका क्षेत्रफल ५९८८० वर्गमील है। अङ्गरेजी जिले और देशी राज्यों दोनोंका क्षेत्रफल ७००३८ वर्गमील है। सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय अंगरेजी पांचो जिलों में २८५७७३१ और बड़ोदा गुजरातके देशी राज्योंमें ६९२२०४९ तथा अंगरेजी जिलें और देशी राज्यों दोनोंमें ९७७९७८० मनुष्य थे। कभी कभी काठियावाड़को छोड़ कर बाकी देशको, जिसका क्षेत्रफल ४१५३६ वर्गमील है, गुजरात देश कहते हैं। गुजरात देश कपासकी उपज और उत्तम मवेसियोंके लिये प्रसिद्ध है (गुजरातका इतिहास बंबईके इतिहासमें लिखा हुआ है)। इसी देशमें सुप्रसिद्ध स्वामी दयानंद सरस्वतीजीका जन्म हुआ था।

स्वामी दयानंद सरस्वतीका संक्षिप्त जीवनचरित्र–गुजरातके काठियावाड़के मोरवी नगरमें औदीच्य ब्राह्मणके घर सन् १८२४ ई० मे स्वामीदयानद सरस्वतीजीका जन्म हुआ। उनके पिता अंबाशंकर एक प्रतिष्ठित जिमींदार थे। पिताने उनका नाम मूलशंकर रक्खा और बाल्यावस्थाहीमें उनको रुद्री और शुक्ल यजुर्वेद प्रारंभ करा दिया। मूलशंकरकी अवस्था २० वर्षकी हुई, तब उनके चचाका, जो उनसे बड़ा स्नेह रखतेथे, देहांत होगया। उस समयसे उनके चित्तमें मनुष्य संबंधी अनेक प्रश्न उत्पन्न होने लगे और उनके मनमें वैराग उत्पन्न हुआ। जब उनके पिता उनके विवाहका उद्योग करने लगे, तब उन्होंने प्रतिज्ञा की कि मैं कभी विवाह न करूंगा। जब ब्याहका दिन एक मास रह गया, तब मूलशंकर चुपके निकल कर इधर उधर भ्रमण करने लगे। भ्रमण करते हुए उनको साधु रूप धारी कई एक ठग मिले, जिनमेंसे एकने उनकी अंगूठियां ठगलीं और दूसरेने, जो एक रानीको निकाल लाया था, उनसे ठट्ठा करना आरंभ किया, इसलिये मूलशंकर किसी जगह न ठहर कर सिद्धपुरके बड़े मेलेमें चले गये। उनके पिता अंबाशंकरने उनका समाचार पाकर सिद्धपुरमे जाकर एक मन्दिरमें उनको पकडा। उन्होंने मूलशंकरकी कोपीन फाड डाली तथा तूंबा तोड़ डाला। चौथे दिन रात्रिमें मूलशकर अर्थात् स्वामी दयानंद सरस्वती वहांसे भाग निकले। उसके पश्चात् उन्होंने कई एक महात्माओंसे मिल कर योगाभ्यास किया। उसके उपरांत वह भ्रमण करते हुए अलकनंदा नदीके निकासके स्थानमें पहुंचे। उस समय उन्होने विचार किया कि हिमालयकी वर्फमें गल कर प्राण त्याग करदें, किंतु फिर शोचा कि विना ज्ञान प्राप्त किये हुए मरना पाप है, इसलिये विद्या प्राप्त करनी चाहिये। ऐसा विचार वह वहांसे मथुरामें आये। उस समय मथुरामें स्वामी बिरजानंद नामक ८१ वर्षका एक महान् विद्वान्, जो दोनों आंखोंसे अन्धे थे, रहते थे। उनको प्राचीन आर्य ग्रन्थोंके अतिरिक्त नवीन ग्रन्थोंपर श्रद्धा न थी। स्वामी दयानंदजीने उनसेही विद्याभ्यास आरंभ किया। अमरलाल नामक एक धर्मात्मा पुरुषने स्वामीजीके नित्यके भोजनादिका प्रबंध कर दिया। स्वामी दयानंदजीने अढ़ाई वर्ष मथुरामें रह कर स्वामी बिरजानंदजीसे महाभाष्य, वेदांतसूत्र, अष्टाध्यायी इत्यादि ग्रन्थ समाप्त किये। जब वह भेटके

लिये कुछ लौंगके दाने लेकर अपने गुरुजीसे विदा मांगने गये, तब स्वामी विरजानंदजीने उनको आज्ञा दी कि जो वेदविद्या संसारसे उठ गई है, तुम उसका प्रचार करो; मत मतांतरोंको दूर करके देशका सुधार करो और मनुष्यकृत ग्रन्थों पर, जिनमें परमेश्वर और ऋषियोंकी निंदा भरी है, विश्वास मत करो। स्वामी दयानंदजी गुरुकी आज्ञा पालन करनेकी प्रतिज्ञा करके वहांसे विदा हुए और उसी दिनसे उसका उद्योग करने लगे।

स्वामी दयानन्दसरस्वतीको स्वामी विरजानन्दके मिलनेसे वेदों, उपनिषदों तथा अन्य प्राचीन ग्रन्थोंपर श्रद्धा हुई। उन ग्रन्थोंको पढ़नेसे उनको असाधारण ज्ञान प्राप्त हुआ। उसके पश्चात् वह भारतवर्षके नगरोंमें भ्रमण करके व्याख्यान देने और शास्त्रार्थ करने लगे। वह अपने कथनका प्रमाण वेदों और उपनिषदोंसे देते थे। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश आदि अनेक बड़ी पुस्तक बनाई और बहुतसी पाठशालायें स्थापित कीं। वह वेद, उपनिषद आदि अति प्राचीन ग्रन्थोंको मानते थे। ईश्वरको निराकार मानकर मूर्त्ति पूजाका निषेध करते थे। ईश्वर, जीव और प्रकृतिको अनादि और नित्य मानते थे। स्त्री, शूद्र तथा हिन्दू मात्रको वेद पढ़नेका अधिकारी कहते थे। विधवा विवाहके पक्षपाती थे।

स्वामीजीके अनुयायियोंने "आर्य्यसमाज" स्थापित किया, जो भारतवर्षके प्रायः सब बड़े नगरोंमें विशेष करके पञ्जाब प्रान्तमें फैला हुआ है। स्वामी दयानन्द सरस्वतीके उद्योगसे भारतवर्षमें वेदका प्रचार प्रथमकी अपेक्षा अब बहुत बढ़ गया है।

स्वामीजीने सन् १८८३ ईस्वीके ३० अकतूबरको, जब उनका वय ५९ वर्षका था, राजपूतानेके अजमेर शहरमें अपने शरीरका परित्याग किया।

राधास्वामी-मत—इस उन्नीसवीं सदीमें ब्रह्मसमाज, आर्य्यसमाज, स्वामीनारायणका मत, सतनामी पन्थ, कुम्भी पन्थिया, राधास्वामीमत ये सब नये पन्थ नियत हुए हैं, जिनका संक्षिप्त वृत्तान्त भारत-भ्रमणमें स्थान स्थानपर लिखा गया है। राधास्वामी मतकी कथा ऐसी है,-आगरा निवासी राधास्वामीजीने राधास्वामी मतको नियत किया, जो जातिके खत्री थे। पश्चिमोत्तर देशके पोष्टमास्टर जनरल राय सालग्राम साहेब बहादुरने राधास्वामी कृत "सारवचनराधास्वामी" नामक पुस्तकको सन् १८८५ में छपवाया था; उन्होंने उसके आरम्भमें लिखा है कि आगरा शहरके पन्नीगली नामक महल्लेमें संवत् १८७५ (सन् १८१८ ईस्वी) के भादों बदी अष्टमीकी अर्द्धरात्रिके समय राधास्वामीजीका जन्म हुआ। वह बाल अवस्थाहीसे खास २ लोगोंको परमार्थका उपदेश देने लगे। उन्होंने लगभग १५ वर्ष तक अपने मकानके एक कोठेमें बैठकर श्रुतशब्दयोगका अभ्यास किया और उसके पश्चात् १७ वर्ष तक अपने गृहमें सतसंगियों और परमार्थीलोगोंको संतमत अर्थात् राधास्वामी मतका उपदेश दिया। लगभग ३००० मनुष्य उनका उपदेश ग्रहण करके उनके मतमें आगये। अब बहुतसे लोग उनके मतके अभ्यासमें लगे हुए हैं।

आगरामें लाला शिवदयालसिंहजी, वृन्दावन और प्रतापसिंह ३ भाई थे, जिनमेंसे लाला शिवदयालसिंहजी पीछे राधास्वामीजीके नामसे प्रसिद्ध होगये, प्रतापसिंह अब तक विद्यमान हैं। राधास्वामीजीका संवत् १९३५ (सन् १८७८) के असाढ़बदी १ को देहान्त होगया। आगरा शहरसे ३ मील दूर राधास्वामी नामक बागमें उनका सुन्दर समाधिमन्दिर बना है। वहाँ राधास्वामी मतके बहुत साधु रहते हैं।

राधास्वामीजीके प्रधान शिष्य आगरा निवासी कायस्थकुलभूषण राय सालग्राम साहेब बहादुर पोष्टमास्टर जनरलने इस मतको बहुत फैलाया है । इन्होंने इस मतके अनेक बड़े बडे ग्रन्थ वनाये और छपवाये हैं । उनके प्रधान शिष्य काशीनिवासी पण्डित ब्रह्मशङ्कर मिश्रजी हैं । आगरा और इलाहाबादमें राधास्वामी मतकी संगत अर्थात् सभा नियत हुई है । सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय भारतवर्षमें इस मतके १७६४३ मनुष्य थे ।

राधास्वामी संप्रदायके ग्रन्थोंमें लिखा है कि जो ईश्वर सबसे परे है, उसका नाम राधास्वामी है । उस मतके लोग आगराके लाला शिवदयालसिंहजीको उन्हीका अवतार मानकर उनको राधास्वामी कहने लगे ।' राधास्वामीमत श्रीकबीर साहबके मतसे बहुत मिलता है । इस मतके लोग "सुरत शब्द योग" का अभ्यास करते हैं, अर्थात् जीवात्माको नेत्रोंके स्थानसे ऊपर ब्रह्मांडमें चढ़ाते हैं और अन्तरका शब्द सुनते हैं । इनके मतमें सच्चा गुरु सच्चा नाम और सच्चा सतसंग इन ३ बातोंकी आवश्यकता है । इस मतके लोग शराब आदि मादक वस्तु नहीं पीते और मांस नहीं खाते । इनके मतमें तीर्थ, व्रत, मूर्त्तिपूजा करने और पुस्तकोंके खाली पढ़नेंहीसे अन्तः करण शुद्ध नहीं होता है ।

काठियावाड—बम्बई हातेके गुजारात प्रदेशके पश्चिमी भागमें काठियावाड़ प्रायद्वीप है । इसके उत्तर कच्छकी खाड़ी और कच्छका रन बाद कच्छ देश, पूर्व साबरमती नदी और कांबेकी खाड़ी बाद गुजरात देश और दक्षिण और पश्चिम अरबका समुद्र है । इसके दक्षिण-पश्चिमके भागको, जो लगभग १०० मील लम्बा होगा, सौराष्ट्र देश कहते हैं, जिसमें सोमनाथ, पट्टन, विरावल इत्यादि नगर हैं । काठियावाड़की सबसे अधिक लम्बाई लगभग २२० मील और सबसे अधिक चौडाई १६५ मील है ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय काठियावाडमें लगभग १३२० वर्गमील भूमि, जिसमें लगभग १४८००० मनुष्य थे, बड़ोदाके राज्यमें, लगभग ११०० वर्गमील भूमि; जिसमें १६०००० मनुष्य थे, अङ्गरेजी राज्यके अहमदाबाद जिलेमे, लगभग ७ वर्गमील भूमि, जिसमें १२६३६ मनुष्य थे, पोर्चुगीजोंके राज्य डिऊके अधिकारमें और बाकी २०५५९ वर्गमील भूमि, जिसमें २३४३८९९ मनुष्य थे, काठियावाड़के पोलिटिकल एजेंसीके अधीन थी । काठियावाड़के राज्यसे बडोदाके महाराजको १०९००० रुपये, अङ्गरेजी सरकारको अहमदाबाद जिलेके भागसे २६६००० रुपये और पोर्चुगालके गवर्नमेण्टको लगभग ३८००० रुपये मालगुजारी आती है ।

काठियावाड़के पोलिटिकल एजेंसीके अधीन, जो सन् १८२२ मे कायम हुई, छोटे वड़े १८७ देशी राज्य हैं । इनमेंसे १३ अङ्गरेजी गवर्नमेंटको कर नहीं देते और १०५ अङ्गरेजी गवर्नमेंटको और ७९ वड़ोदाके महाराजको 'राजकर' देते हैं तथा १२४ जूनागढ़के नव्वाबको भी खिराज देते हैं । वह एजेंसी ४ भागोंमें विभक्त है,—अर्थात् झालावाड़, हालार, सौराष्ट्र और गोहेलवार, जिनमें एक एक पोलिटिकेल एसिस्टेंट रहते हैं, जिनको जिला जज और मजिष्ट्रेटके समान अखतियार है । वे लोग अपनी समायतसे बड़े मुकदमोंको राजकोटकी फौजदारी कचहरीमें भेजते हैं । एजेंसीके प्रधान हाकिम पोलिटिकल एजेण्टका सदर स्थान राजकोट है ।

काठियावाड़में स्थान स्थानपर छोटी पहाड़ियाँ हैं। अनेक छोटी नदियाँ है, जिनमें भदर नदी प्रधान है। लगभग १५०० वर्गमील गिरके जंगलके अलावे काठियावाड़में प्रसिद्ध जंगल हैं। जंगलोंमें चीता, तेंदुए, हरिन इत्यादि बनैले जन्तु रहते हैं। पहिले सम्पूर्ण काठियावाड़ और गुजरातमें बहुत सिंह होते थे, किन्तु अब वे केवल गिर पहाड़के जंगलम मिलते हैं। जूनागढ़के पास बहुत गुफायें है। गिरनार और पालीटाणाकी पहाड़ियोंपर सुन्दर जैन मन्दिर हैं। काठियावाड़की एजेंसीमें कपास, बाजड़ा और जवाड़ बहुत होते हैं। चन्द भागोंमें हलदी, ऊख और नील भी होते हैं। बच्चे देनेके लिये बहुत घोड़ियाँ पाली जाती हैं। कई एक भागोंमें भेड़ बहुत होती हैं। काठियावाड़में गुजराती भाषा प्रचलित है।

सन् १८६३ में काठियावाड़के पोलिटिकेल एजेंसीके अधीनके देशी राज्य ७ दर्जेमें विभाग किये गये। पहिले और दूसरे दर्जेके प्रधानों अर्थात् राजाओंको दीवानी और फौजदारी दोनों मुहकमेके विचार करनेका अधिकार है। उनसे कम दर्जेके राजाओके अखतियार दर्जेके अनुसार घटते गये है। पहले दर्जेमें भावनगर, नवानगर, जूनागढ़ और ध्राँगड्रा, और दूसरे दर्जेमें गोंडल, मोरवी, पोरबन्दर, बाढ़वान, लिंबड़ी, झिङ्गवाड़ा, बंकानेर इत्यादि किये गये; किन्तु अब मोरवी और गोण्डल प्रथम दर्जेमें और पोरबन्दर तीसरे दर्जेमें कर दिये गये हैं।

काठियावाड़के बड़े देशी राज्योंका त्रिज;—

नं०	राज्य	क्षेत्रफल वर्गमील	मनुष्य-संख्या सन् १८८१	मालगुजारी
१	भावनगर	२८६०	४००३२३	३४०००००
२	नवानगर	३७९१	३१६१४७	२४०००००
३	जूनागढ़	३२७९	३८७४९९	३१०००००
४	गोण्डल	१०२४	१३५६०४	१२०००००
५	मोरवी	८२१	८९९६४	१००००००
६	ध्राँगड्रा	११५६	९९६८६	७५००००
७	पोरबन्दर	६३६	७१०७२	५५००००
८	बाढ़वान	२३६	४२५००	४५००००
९	लिंबड़ी	३४४	४३०६३	२६४०००
१०	राजकोट	२८३	४६५४०	२०५०००
११	पालीटाणा...	२८८	४९२७१	२०००००

सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय काठियावाड़के पोलिटिकल एजेंसीके देशी राज्योंके २०५५९ वर्गमील क्षेत्रफलमें २३४३८९९ मनुष्य थ; अर्थात

१९४२६५८ हिन्दू, ३०३५३७ मुसलमान, ९६१४१ जैन, ६०५ कृस्तान, ४८९ पारसी, १४५ यहूदी और ३२४ अन्य । हिन्दुओंमे ३३०८४० कोली, ३१६८३८ कुन्बी, १४६६२९ ब्राह्मण, १२९०१८ राजपूत, १२३६६६ महारा, ८५११८ कुंभार, ५४९६८ लोहाना २९९९१ नापित (नाई), २९३५२ दरजी, २६७३८ वढ़ई, २६१७८ लोहार, १६५०२ सोनार और बाकीमें अन्य जातियोके लोग थे ।

काठियावाडके देशी राज्योंके कसबे, जिनमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १० हजारसे अधिक मनुष्य थे;—

नम्बर	नाम कसबा	मनुष्य-संख्या	नम्बर	नाम कसबा	मनुष्य-संख्या
१	भावनगर	५७६५३	१०	गोंडल	१५३४३
२	नवानगर	४८५३०	११	विरावल	१५३३९
३	जूनागढ	३१६४०	१२	ध्रांगड्रा	१५२०९
४	राजकोट	२९२४७	१३	जेतपुर	१३६४६
५	वाढ़वान	२४६०४	१४	लिंबड़ी	१३४९७
६	धोराजी	२०४०६	१५	मङ्गलोर	१३००५
७	पोरबन्दर	१८८०५	१६	पालीटाणा	१०४४२
८	महुआ	१६७०७	१७	सिहोर	१०००५
९	मोरवी	१६३२५			

काठियावाडका इतिहास—मौर्यवंशी राजा अशोकके राज्यके समय विक्रमी संवत्के आरम्भसे लगभग २०० वर्ष पहिलेके शिलालेख गिरनारके पासके चट्टानपर खोदे हुए है । कदाचित् राजा अशोक और अन्य मौर्यवंशी राजाओके अधीन क्षत्रप वंशवालोने सौराष्ट्रमें राज्य किया था । सन् ई० के लगभग १०० वर्ष पहिलेसे तीसरी सदीतक लगभग ३०० वर्ष पर्यन्त उस देशके शाह वंशके राजाओने और उनके पश्चात् कन्नौजके गुप्त वंशी राजाओके सेनापतियोंने सौराष्ट्रमें हुकूमत किया था । गुप्त वंशीका अन्तिम सेनापति सौराष्ट्रका राजा हुआ, जिसने अपने लेफ्टिनेंटको वर्त्तमान भावनगरसे १८ मील पश्चिमोत्तर वल्लभीनगरमें रक्खा । जब विदेशी आक्रमण करनेवालेने गुप्तवंशी राजाको सिंहासनसे उतार दिया, तब ५-वी सदीमें वल्लभी राजाने कच्छ, सूरत, भड़ौंच, खेडा मालवा इत्यादि देशोंपर अपना अधिकार फैलाया । सन् ६१२ से ६४० तक दूसरा ध्रुवसेन राजाका राज्य था । नही जान पड़ता है कि किस तरहसे वल्लभी वंशके राज्यका विनाश हुआ । अनुमानसे जान पडता है कि जब मुसलमानोंने सिंधसे आकर उनका नाश किया, तब काठियावाडकी सीमाके बाहर अनहिलवाड़ा राज्यका सदर स्थान बना । सन् ७४६ से १२९७ तक अनहिलवाड़ाके राज्यके समय काठियावाड़मे बहुतसे छोटे राजा हुए थे । सन् १०२४ मे गजनीके महमूदने काठियावाड़के दक्षिण भागके सोमनाथका मन्दिर लूटा । अनहिलवाडाके राजाओने काठियावाडके उत्तरी भागमें झाला राजपूतोंको बसाया । १३ वीं सदीमें गोहेल राजपूत, जो काठियावाड़के पूर्वी भागमें हैं, उत्तरसे आये । जाडेजा और काठी पश्चिमसे कच्छ होकर काठियावाडमें आये थे ।

काठियावाड़के दक्षिण-पश्चिमका बड़ा भाग, जो लगभग १०० मील लम्बा है, अब तक सौराष्ट्र देश कहलाता है। १३ वीं और १४ वीं सदीमें काठी जातिके लोग कच्छसे आकर उस प्रायद्वीपमें बसे; तबसे उसके मध्य भागसे पूर्वका बड़ा भाग काठियावाड़ कहलाने लगा। कच्छवालोंने १५ वीं सदीमें सम्पूर्ण काठियोंको अपने देशसे निकाल दिया। महाराष्ट्रोंने सौराष्ट्र और काठियावाड़ दोनोंका काठियावाड़ नाम प्रसिद्ध कर दिया, परन्तु बहुत लोग; खास करके देशी आदमी अब तक दक्षिण-पश्चिमके भागको सौरा कहते हैं।

बहादुरशाहने पोर्चुगालवालोंको काठियावाड़के डिऊमें कोठी बनानेकी इजाजत दी। सन् १५३६ में पोर्चुगालवालोंने वहाँ एक किला बनाया। अब तक डिऊ टापू और वह किला पोर्चुगालवालोंके अधिकारमें है।

सन् १५७३ में अकबरने गुजरातको जीता। महाराष्ट्रोंने सन् १७०५ में गुजरातमें प्रवेश किया। सन् १७६० में उनका राज्य दृढ़ होगया। सन् १८०७—१८०८ से काठियावाड़के सब प्रधान पूनाके पेशवा और बड़ोदाके गायकवाड़को अङ्गरेजी गवर्नमेंट द्वारा राजकर देने लगे। सन् १८१८ में अङ्गरेजोंने काठियावाड़के पेशवाका भाग ले लिया। सन् १८२० में गायकवाड़ने अपना हिस्सा अङ्गरेजी सरकारद्वारा वसूल होना स्वीकार किया। सन् १८२२ में बम्बईके गवर्नरके अधीन काठियावाड़में पोलीटिकल एजेंसी कायम हुई। सन् १८३१ में प्रधान फौजदारी कचहरी कायम हुई। जिस अपराधके विचार करनेका देशी प्रधानोंका अधिकार नहीं है, उसका विचार उस कचहरीका हाकिम करता है।

पचीसवाँ अध्याय।

(बम्बई हातेके काठियावाड़में) बीरमगाँव, वाढ़वान, ध्रांगध्रा, मोरवी, राजकोट, नवानगर, (कच्छमें) मांडवी, भुज, नारायणसर, (काठियावाड़में) गोंडल और पोरबन्दर।

बीरमगांव।

अहमदाबाद शहरसे कई मील उत्तर शाहीके बागके पास साबरमती नदीपर रेलवेका सुन्दर पुल है। पुलके ऊपर रेलवे लाइनके बगलमें आदमीके चलनेका मार्ग बना है। अहमदाबादके रेलवे स्टेशनसे ४ मील उत्तर कुछ पश्चिम साबरमती नदीके उत्तर किनारे पर साबरमती नामक रेलवे स्टेशन है, जिसके पास एक बड़ा जेलखाना बना है। उस स्टेशनसे पूर्वोत्तर छोटी गाडीकी रेलवे लाइन महसाना, अजमेर; बांदीकुई जंक्शन इत्यादि स्टेशनों होकर दिल्ली और आगराको और पश्चिम ओर बड़ी गाड़ीकी लाइन काठियावाड़में बीरमगाँव होकर वाढ़वानको गई है। वाढ़वानसे आगे काठियावाड़के देशी राजाओंकी छोटी गाड़ीकी लाइनें हैं।

अहमदाबादके रेलवे स्टेशनसे ४० मील (साबरमतीके स्टेशनसे ३६ मील) पश्चिम बीरमगॉवका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके अहमदाबाद जिलेमें सब डिवीजनका सदर स्थान बीरमगॉव एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय वीरमगॉवमें २३२०९ मनुष्य थे, अर्थात् १५६४० हिन्दू, ५१८९ मुसलमान, २३२० जैन, ४० पारसी, १५ कृस्तान और ५ एनिमिष्टिक।

रेलवे स्टेशनके पास सुन्दर सरकारी धर्मशाला बनी है। मैंने धर्मशालाके पास एक भिक्षुक-लडका देखा, जिसकी आंखोका चिह्न कुछ नहीं था; किन्तु आंखोके स्थानोके ऊपर भौहें थीं। वीरमगाँव कसबेके चारोंओर शहरपनाह अर्थात् पक्की दीवार है। उसमें ११ वीं सदीके अन्तका बना हुआ मानसर नामक एक तालाब है, जिसके चारो बगलों पर पत्थरकी सीढियां और बहुतेरे छोटे मन्दिर बने हुए हैं। इनके अलावे वीरमगॉवमें कपडेका मिल, सबजजकी कचहरी, अस्पताल और स्कूल है। वीरमगॉवसे २५ मील दूर बचराजीका प्रसिद्ध मन्दिर है, जहां आश्विनमें मेला होता है, जिसमें लगभग २०००० आदमी जाते हैं।

वीरमगॉवसे पश्चिमोत्तर एक रेलवे लाइन खारागोडाको गई है। वीरमगॉवसे १७ मील पश्चिम कुछ उत्तर दीवारसे घेरा हुआ पत्री नामक छोटा कसबा और २२ मील कच्छके रनके पास खारागोड़ा गॉव है। सूखी ऋतुओंमें कच्छके रनका कीचड़ सूखकर कड़ा होजाता है, उससे बहुत नमक तैयार होता है। नमक बटोरने के लिये उस रनमें रेलकी बहुत सडकें निकाली गई हैं। रेलवे स्टेशनके पास बहुत नमक इकट्ठा किया जाता है।

वाढ़वान।

वीरमगॉवके रेलवे स्टेशनसे ३९ मील दक्षिण-पश्चिम (अहमदाबाद जंक्शनसे ७९ मील) वाढ़वानका रेलवे जंक्शन है। वाढ़वानसे मोरवी रेलवे पश्चिम और वंकानेरको और वंकानेरसे उत्तर मोरवीको तथा दक्षिण-पश्चिम राजकोट, गोंडल और जितलसर जंक्शनको और भावनगर, गोंडल, जूनागढ़ और पोरवन्दर रेलवे वाढ़वान जंक्शनसे दक्षिण लिंवड़ी होकर धोला जंक्शनको और धोलासे पूर्व भावनगरको तथा पश्चिम जितलसर जंक्शन और पोरवन्दरको और जितलसर जंक्शनसे दक्षिण जूनागढ़ होकर वेरावल वन्दरको गई है।

रेलवेके जंक्शनसे ४ मील पश्चिम वाढ़वान कसबेका रेलवे स्टेशन है। वम्बई हातेके काठियावाडके झालावाड़ विभागमें देशी राज्यकी राजधानी वाढ़वान एक पुराना कसबा है। उससे ३ मील पश्चिम वाढ़वानका सिविल स्टेशन है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सिविल स्टेशनके साथ वाढ़वान कसबेमें २४६०४ मनुष्य थे, अर्थात् १५९१० हिन्दू, ५५४५ जैन, ३०१७ मुसलमान, ५६ पारसी, ५२ कृस्तान और २४ यहूदी।

वाढ़वान कसबेके चारों ओर पत्थरकी दीवार है। कसबेके दक्षिणीय भागमें वाढवान नरेशका चौमञ्जिला विशाल महल बना हुआ है। वाढ़वानमें रुईकी बड़ी तिजारत होती है, धनी तिजारती लोग बसते हैं और उत्तम साबुन, जीन आदि घोडेके असबाव तथा पत्थरकी चीजे बहुत तैयार होती हैं।

वाढ़वानके सिविल स्टेशनमें अच्छा बाजार, अनेक सरकारी आफिस, जेलखाना, अस्पताल, एक घडीका बुर्ज, एक अच्छी धर्मशाला, बँगला और तालुकदारोंका एक स्कूल है। जो तालुकदारोंके लड़के राजकोटके राजकुमार कालिजमें पढ़नेका खर्च नहीं दे सकते

हैं; वे बाढ़वानके स्कूलमें पढ़ते हैं। एक अच्छी सड़क बाढ़वानके सिविल स्टेशनसे राजकोटको गई है।

बाढ़वानका राज्य—काठियावाड़के झालावार विभागमें बाढ़वानका राज्य है। राज्यमें कपास और मामूली अन्न उत्पन्न होते हैं। नमक और देशी साबुन तैयार होता है। वह काठियावाड़में दूसरे दर्जेका राज्य है। लगभग २० स्कूलोंमें १३०० से अधिक विद्यार्थी पढ़ते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय बाढ़वान राज्यके २३६ वर्गमील क्षेत्रफलमें १ कसबा, ३० गाँवमें ९२२६ मकान और ४२५०० मनुष्य थे; अर्थात् ३४८०८ हिन्दू, २३१३ मुसलमान और ५३७९ अन्य।

बाढ़वान नरेश झाला राजपूत हैं। वर्तमान बाढ़वान नरेश ठाकुर साहब बलसिंहजी २७ वर्षके जवान हैं। बाढ़वान राज्यसे लगभग ४५०००० रुपये मालगुजारी आती है, जिसमेंसे अङ्गरेजी सरकारको २८६९० रुपया राजकर दिया जाता है। फौजी बल ४३८ आदमीका है।

धांगध्रा।

बाढ़वानके रेलवे स्टेशनसे लगभग २० मील पश्चिमोत्तर और अहमदाबाद शहरसे सड़क द्वारा ७५ मील पश्चिम कच्छके छोटे रनसे दक्षिण काठियावाड़के देशी राज्यकी राजधानी धांगध्रा है *।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय धांगध्रा कसबामें १५२०९ मनुष्य थे, अर्थात् ११९३६ हिन्दू, २१८४ जैन, १८७९ मुसलमान, ६ पारसी और ४ क्रस्तान।

राजधानीके चारों ओर पक्की दीवार है। उसमें धांगध्रानरेशका महल, कचहरियां, बाग, अस्पताल, स्कूल और कई एक देवमन्दिर हैं।

धांगध्राका राज्य—कच्छके छोटे रनके पास काठियावाड़के उत्तर किनारेके समीप काठियावाड़में प्रथम दर्जेके राज्योंमेंसे धांगध्राका राज्य है। राज्यमें स्थान स्थान पर पहाड़ी और चट्टान हैं। कपास और अन्न अधिक होते हैं। नमक, पत्थरकी चक्की, तांबे, पीतल और मिट्टीके वर्त्तन बहुत तैयार होते हैं। बनाई हुई सड़क कोई नहीं है। लगभग ३१ स्कूलोंमें करीब १४०० लड़के पढ़ते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय धांगध्रा राज्यके ११५६ वर्गमील क्षेत्रफलमें १२९, गाँव और ९९६८६ मनुष्य थे; अर्थात् ८८६६५ हिन्दू ५६८६ मुसलमान और ५३३५ अन्य।

धांगध्रानरेश झाला राजपूत हैं। इनके पूर्व पुरुषे पूर्वकालमें काठियावाड़के उत्तरसे आकर वीरम गाँव सबडिवीजनके पत्रीमें बसे। वहाँसे वे लोग हलावाड़में और हलावाड़से धांगध्रामें गये। धांगध्राकी शाखा बाढ़वान, लिंबड़ी और काठियावाड़के और ३ छोटे प्रधान हैं। बंकानेरवाले अपनेको पत्रीकी बड़ी शाखासे कहते हैं। धांगध्राके राज्यसे लगभग ७५०००० रुपये वार्षिक मालगुजारी आती है, जिसमेंसे अङ्गरेजी गवर्नमेंट और जूनागढ़के नवाबको ४४६७५ रुपया राजकर दिया जाता है। राज्यकी फौजी ताकत २१५० आदमीकी

* अब २१ मीलकी रेलवे लाइन बाढ़वानसे पश्चिमोत्तर धांगध्राको गई है।

है। धांगध्राके वर्त्तमान नरेश राजासाहब सर मानसिंहजी रनमलसिंहजी (अर्थात् रनमलसिंहजीके पुत्र मानसिंहजी) के. सी. एस. आई ५७ वर्षकी अवस्थाके हैं।

मोरवी।

वाढ़वान जंक्शनसे ५२ मील पश्चिम वंकानेर जंक्शन और वंकानेरसे १६ मील उत्तर (अहमदाबादसे १४७ मील) मोरवीका रेलवे स्टेशन है। बंबई हातेके काठियावाड़ देशके हालार विभागमें (२२ अंश, ४९ कला उत्तर अक्षांश और ७० अंश, ५३ कला पूर्व देशान्तरमें) एक छोटी नदीके पास देशी राज्यकी राजधानी मोरवीसे राजकोट तक ३५ मील उत्तम सड़क बनी हुई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय मोरवी कसवेमें १६३२५ मनुष्य थे, अर्थात् १०७३५ हिन्दू, ३५०६ मुसलमान, ३०२४ जैन, ३३ कृस्तान, २१ पारसी और ६ यहूदी।

मोरवी कसवेमें मोरवी नरेश ठाकुर साहबका सुन्दर महल, कचहरियाँ, गल्लेका बाजार, एक पाठशाला, एक अस्पताल और कई स्कूल हैं। हालमें कसवेमें जलकल बनी है।

इसी मोरवीमे स्वामी दयानन्द सरस्वतीजीका जन्म हुआ था। अहमदाबादमे गुजरात दशके वृत्तान्तमें देखिये।

मोरवीका राज्य—काठियावाडके हालार विभागमें कच्छकी खाड़ीके पास मोरवीका राज्य है। देश साधारण रूपसे बराबर है। राज्यमे अन्न, ऊख और कपास बहुत होती है। समुद्रके रनके पास नमक बनाया जाता है। कच्छकी खाड़ी पर राज्यके एक बन्दरगाहसे सौदागरी होती है। राज्यके २६ स्कूलोंमें लगभग १३०० लडके पढ़ते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय मोरवी राज्यका क्षेत्रफल ८२१ वर्गमील था, जिसके २ कसवो और १३४ गावोंमे १७२४२ मकान और ८९९६४ मनुष्य थे, अर्थात् ७३९२६ हिन्दू, ११९४२ मुसलमान और ४०९६ अन्य।

मोरवी नरेश जाडेजा राजपूत है। ऐसी कहावत है कि १७ वीं सदीके पिछले भागमे जब कच्छके रावका छोटा पुत्र अपने वडे भाईको मार कर कच्छका राजा बन गया, तब वडे भाईकी सन्तानके लोगोंने मोरवीमें आकर, जो कच्छके अधिकारमें थी, अपना अधिकार किया। मोरवी नरेश उन्हीके वंशधर हैं (कच्छके इतिहासमें देखिये)।

सन् १८७० में ठाकुर रव्वोजीके देहान्त होने पर उनके पुत्र वर्त्तमान मोरवी नरेश ठाकुर साहब सर वाघजी बहादुर के. सी. आई ई. जिनकी अवस्था लगभग ३५ वर्षकी है, उत्तराधिकारी हुए। वह राजकुमार कालिजमें पढे हैं और एक बार यूरपकी यात्रा कर आये हैं। पहिले मोरवीका राज्य काठियावाडके राज्योंमे दूसरे दर्जेका था, किन्तु अब प्रथम दर्जेमें हुआ है। मोरवीके राज्यसे लगभग १० लाख रुपये मालगुजारी आती है, जिससे अङ्गरेजी गवर्नमेंट, वडौदाके गायकवाड और जूनागढ नवावको ६१५६० रुपया 'राजकर' दिया जाता है।

राजकोट

मोरवीसे १६ मील दक्षिण बंकानेर जंक्शन और बंकानेरसे २५ मील दक्षिण कुछ पश्चिम राजकोटका रेलवे स्टेशन है। काठियावाडके हालार विभागमें देशी राज्यकी राजधानी और काठियावाड़के पोलिटिकल एजेंटका सदर स्थान राजकोट है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सिविल स्टेशनके साथ राजकोट कसबेमे २९२४७ मनुष्य थे; अर्थात् १६०८३ पुरुष और १३१६४ स्त्रियाँ। इनमें, २०६७१ हिन्दू, ५८१८ मुसलमान, २३९१ जैन, २०९ पारसी, १२४ क्रस्तान, २९ यहूदी और ४ एनिमिष्टिक थे।

राजकोटमें सिविल स्टेशन, फौजी छावनी, जेलखाना, राजकुमार कालिज, धर्मशाला, बङ्गला, कई एक गिरजे और २ स्कूल हैं। सन् १८७५ में ७०००० रुपयेके खर्चसे तैयार होकर हाई स्कूल खुला, जिसका खर्च जूनागढ़के नवाबने दिया था। कसबेके पूर्वोत्तरके "जुबली वाटर वर्क्स" से राजकोटमें पानी आता है। कसबेमें अनेक भांतिके रंग तैयार होते है और साधारण तरहकी सौदागरी होती हैं।

राजकुमार कालिज, जिसमें काठियावाड़के राजा तथा ठाकुरोंके लड़के पढ़ते हैं, सन् १८७० में तैयार होकर खुला। उसके एक उत्तम हाल अर्थात् बड़े कमरेसे क्लासोंके कमरेमें जाना होता है। दोनो ओरके अगवासोंमें सुन्दर बरण्डे बने हैं। पश्चिम ओर सदर दरवाजा है, जिसके दोनों बगलोंमें दो टावर बने हैं। पूर्व वाले दरवाजेके ऊपर ५५ फीट ऊँचा एक चौकोना टावर है। उत्तर और दक्षिणके बाजुओंमें ३२ विद्यार्थियोंके सोने, बैठने, स्नान करने इत्यादि कामोंके लिये कमरे बने हुए हैं।

राजकोटका राज्य—काठियावाड़के हाला विभागमें काठियावाड़ प्रायद्वीपके मध्य भागमें राजकोटका राज्य है। वह राज्य काठियावाड़के राज्योंमें दूसरे दर्जेका है। राज्यकी भूमि ऊँची नीची तथा पत्थरीली है। ऊख, कपास और मामूली अन्न होते हैं। १४ स्कूलों में लगभग १२०० लड़के पढ़ते हैं। राजकोटमें एक नदी पर कैशर हिन्द नामक प्रसिद्ध पुल है, उसके बनानेमें ११७५०० रुपया खर्च पड़ा था, जिसमें११०००० रुपया भावनगरके राजाने दिया था।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय राजकोटके राज्यका क्षेत्रफल २८३ वर्गमील था, जिसमें १ कसबा ६० गाँव और ४६५४० मनुष्य थे, अर्थात् ३६९२९ हिन्दू, ६७७५ मुसलमान और २८३६ अन्य।

राजकोट नरेश ठाकुर साहब जाड़ेजा राजपूत है। वर्तमान ठाकुर साहब रुबोजी, जो राजकुमार कालिजमें पढ़े थे, अपने राज्यका स्वयं प्रबन्ध करते हैं। राजकोटके राज्यसे लगभग २०५००० रुपया वार्षिक मालगुजारी आती है, जिसमेंसे अङ्गरेजी गवर्नमेण्ट और जूनागढ़के नवाबको २१३२० रुपया राजकर दिया जाता है। फौजी ताकत ३३६ आदमीकी है।

सन् १५४० में जामरावलने नवानगरको बसाया, जिसके वंशज नवानगरके वर्तमान जामसाहब हैं। उसीकी शाखासे राजकोटका राज्य नियत हुआ।

नवानगर।

राजकोटके रेलवे स्टेशनसे पश्चिम कुछ उत्तर ५४ मीलकी कच्ची सड़क कच्छकी खाड़ीके दक्षिण किनारेपर नवानगरको, जिसको जामनगरभी कहते हैं, गई है। सडक पर पुल नहीं बना है, इस कारणसे वर्षाकालमें मार्ग वन्द हो जाता है *। काठियावाडके हालाड़ विभागमें (२२ अंश, २६ कला,३० विकला उत्तर अक्षांश और ७० अंश, १६ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमें) देशी राज्यकी राजधानी नवानगर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय नवानगर कसबेमें ४८५३० मनुष्य थे, अर्थात् २४४६० पुरुष और २४०७० स्त्रियाँ। इनमे २८६०० हिन्दू, १६०४९ मुसलमान, ३७८१ जैन, ४७ कृस्तान, ४१ पारसी और १२ यहूदी थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारत वर्षमे ७८ वॉ, बम्बईके गवर्नमेण्टके अधीनके देशी राज्यों तथा काठियावाडके राज्योंमें दूसरा शहर है।

४ मील की पक्की दीवारसे घेरी हुई नवानगर राजधानी है। प्रायः सब मकान पत्थरसे बने हुए हैं। राजमहल सुन्दर इमारत है। राजधानी उन्नति पर है। उसमें बडी तिजारत होती है। रेशमी और सोनेकी कारचोबीके काम तथा इतर और खुशबूदार तेलके लिये नवानगर प्रसिद्ध है। कसबेके उत्तर समुद्रमें मोती वाली सीप मिलती है, पर अच्छी नहीं। उससे नवानगरके जामसाहबको लगभग ४००० रुपये वार्षिक आमदनी होती है।

नवानगरका राज्य—काठियावाड़के हालाड़ विभागमें नवानगरका राज्य है। राज्यका क्षेत्रफल ३७९१ वर्गमील है। इसके उत्तर कच्छका रन और कच्छकी खाडी पूर्व मोरबी, राजकोट, धोरला और गोंडलका राज्य; दक्षिण काठियावाडका सौराष्ट्र विभाग और पश्चिम ऊखमण्डल है। यह राज्य काठियावाडके औवल दर्जेके राज्योंमेंसे एक है। भूमि साधारण रूपसे समतल है; किन्तु इसकी सीमाके भीतर बरदा पहाडीके सिलसिलेका बडा भाग आया है। राज्यकी खानियोंमे अनेक प्रकारका मार्बुल, ताम्बा, लोहा और पत्थर है। कपास और मामूली अन्न बहुत होते हैं। खाड़ीके दक्षिण किनारेके पास कुछ मोतीकी सीप मिलती हैं। वहाँका रङ्ग बहुत अच्छा होता है। राज्यके भीतर कई बन्दरगाह हैं। सन् १८६० तक नवानगर राज्यकी पहाडियोंमें सिंह रहते थे, किन्तु अब केवल गिरिके जंगलमें मिलते हैं। उस राज्यमें चीता और तेंदुए हैं। राज्यके ६२ स्कूलोंमें लगभग ५००० लड़के पढ़ते हैं। राज्यसे परमार्थके कामोंमें बहुत रुपया खर्च होता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय नवानगरके राज्यमें ३१६१४७ मनुष्य थे; अर्थात् २५०३८२ हिन्दू, ४९२२१ मुसलमान और १६५४४ अन्य।

नवानगरका राजवंश जाडेजा राजपूत है। कच्छके राव और नवानगरके जाम साहब एकही कुलके हैं। जाड़ेजा राजपूत लोग कच्छसे काठियावाड़में आकर पुराने हुकूमत करने वालेको निकाल धुमलीमें बसे। उनमेसे जामरावलने सन् १५४० मे नवानगरको बसाया। इसी लिये नवानगरको जामनगर तथा वहाँके राजाओंको जामसाहब कहते हैं। सन् १७८८ मे नवानगरके चारोंओर पक्की दीवार बनाई गई। वर्तमान सदीके आरम्भमे बहुत जाडेजा

* अब ५१ मील की रेलवे लाइन राजकोटसे नवानगरको गई है।

राजपूत अपनी लड़कियोंको मार डालते थे; किन्तु सन् १८१२ में उनके प्रधानोंने इस कुरीतिके छोड़ानेका प्रबन्ध किया। इसको रोकनेके लिये अङ्गरेजी अफसरोंकी निगरानी बराबर होती आई है। अब वह लोग लड़कियोंको नहीं मारते हैं। जामसाहबको अङ्गरेजी गवर्नमेण्टकी ओरसे ११ तोपोंकी सलामी मिलती है। नवानगरके राज्यसे लगभग २४००००० रुपया मालगुजारी आती है। जिसमेंसे अङ्गरेजी गवर्नमेण्ट, बड़ोदाके गायकवाड़ और जूनागढ़के नव्वाबको लगभग १२०००० रुपया राजकर दिया जाता है। जाम साहबका ३३०० आदमीका फौजी बल है। नवानगरके वर्तमान नरेश जाम सर विभाजी रणमलजी के. सी. एस. आई. ६२ वर्षकी अवस्थाके हैं।

माण्डवी।

नवानगरके बन्दरगाहसे लगभग ६० मील पश्चिमोत्तर कच्छके टापूके दक्षिण किनारेपर, भुज राजधानीसे ३६ मील दक्षिण—पश्चिमका कच्छका प्रधान बन्दरगाह तथा कच्छ राज्यमें सबसे बड़ा कसबा माण्डवी है। वह २२ अंश, ५० कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ६९ अंश, ३१ कला, ४५ विकला पूर्व देशान्तरमें स्थित है। अनेक नाव नवानगरके बन्दरगाहसे कच्छकी खाड़ी द्वारा माण्डवी जाती हैं। आगबोट सप्ताहमें दो तीनबार बम्बई शहरसे खुलकर विरावल, पोरबन्दर, द्वारिका, माण्डवी आदि बन्दरगाहोंसे होकर करॉचीको और करॉचीसे माण्डवी, द्वारिका आदि बन्दरगाह होकर बम्बईको जाते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य—गणनाके समय माण्डवीमें ३८१५५ मनुष्य थे अर्थात् १८४०७ पुरुष और १९७४८ स्त्रियाँ। इनमें १९१२९ हिन्दू, १५४९९ मुसलमान, ३४३७ जैन, ५४ क्रस्तान, ३० पारसी और ६ अन्य थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह बम्बे गवर्नमेण्टके अधीनके देशी राज्योंमें चौथा और कच्छके राज्यमें पहला कसबा है।

माण्डवी कसबा दीवारसे घेरा हुआ है। दीवारके बाहर नई सराय और पुरानी सराय नामक दो शहरतलियाँ हैं, जिनमें सौदागर और समुद्रमें काम करने वाले लोग रहते हैं। माण्डवीमें बड़ी सौदागरी होती है। बन्दरगाहमें किनारेसे ५०० गजके भीतर तक ७० टन बोझे वाले जहाज आते हैं। बन्दरगाहके पास लाइटहाउस बना हुआ है।

भुज।

माण्डवीके बन्दरगाहसे ३६ मील पूर्वोत्तर (२३ अंश, १५ कला उत्तर अक्षांश और ६९ अंश, ४८ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमें) कच्छ टापूके मध्यभागमें एक पहाड़ीके, जिसके ऊपर किला है, पादमूलके पास कच्छ राज्यकी राजधानी भुज नामक कसबा है। भुजग (सर्प) शब्दका अपभ्रंश भुज नाम है।

सन् १८९१ की मनुष्य—गणनाके समय फौजी छावनीके साथ भुज कसबेमें २५४२१ मनुष्य थे; अर्थात् १३४२३ पुरुष और ११९९८ स्त्रियां। इनमें १४३५० हिन्दू; ९३५७ मुसलमान, १२२४ जैन, १८६ एनिमिष्टिक, ११६ क्रस्तान, ७३ पारसी, ४७ यहूदी और ६८ अन्य थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह कच्छके राज्यमें दूसरा कसबा है।

भुज कसबेमें कच्छके महारावका सुन्दर महल बना हुआ है। लगभग १५० वर्ष हुए कि कच्छके राव लखपतिजीने बिल्लौरी आइनेका शीशमहल बनवाया था। वह महल तस्वीर

आदि मनोरम सामानसे सजा हुआ है। इनके अलावे भुजमें १ जेलखाना, १ हाई स्कूल, १ अन्य स्कूल, १ लायब्रेरी, १ अस्पताल, १ मसजिद, कच्छके राजाओकी अनेक छत्तरियाँ और कई एक देव मन्दिर हैं। कसबेके बगलोंमे अनेक फाटक बने हुए हैं कसबेके आस पास कई दरगाह हैं। कसबेमें १६ वीं सदीके पहिलेकी बनी हुई कोई इमारत नहीं है।

कच्छका राज्य—बम्बई गवर्नमेंटके अधीन गुजरातमें कच्छका राज्य है। इसके बड़े रनके उत्तर और पश्चिमोत्तर सिन्ध देश, पूर्व पालनपुर एजेंसीके देशी राज्य; दक्षिण कच्छकी खाड़ीके बाद काठियावाड़ प्रायद्वीप और दक्षिण–पश्चिम अरबका समुद्र है। कच्छके रनको छोड़ करके कच्छ राज्यका क्षेत्रफल ६५०० वर्गमील है। उसकी लम्बाई पूर्वसे पश्चिमको लगभग १६० मील और चौड़ाई उत्तरसे दक्षिणको ३५ मीलसे ७० मील तक है। उसके उत्तर कच्छका बडा रन, पूर्व–दक्षिण छोटा रन, दक्षिण, कच्छकी खाडी और पश्चिमोत्तर सिन्धु नदीका पूर्वी मुहाना है। इस भांति सम्पूर्ण कच्छ देश प्रायः पूरे तौरसे हिन्द महाद्वीपसे अलग हुआ है। कच्छ राज्यमें ८ सबडिवीजन हैं। भुज राजधानी है। कच्छका देश ऊसर और चट्टानी है। वृक्ष प्रायः नहीं हैं; किन्तु चारागाह अच्छे हैं। जगह जगह पहाडियोकी श्रेणी और जगह जगह अकेली पहाडी हैं। घाटियोंमें कपास और अन्नकी अच्छी फसिल होती हैं। कच्छमें कोई स्थाई नदी नहीं हैं, परन्तु वर्षा कालमें बहुतसी बडे विस्तारकी नदियाँ पहाडियोंके सिलसिलोंसे बहती हुई उत्तर और कच्छके रनमें और दक्षिण और कच्छकी खाडीमें गिरती हैं। वर्षाकालके अतिरिक्त अन्य ऋतुओंमें नदियोंके बहावके मार्ग कुण्डोके समान देख पडते हैं। कच्छकी खानोंमें लोहा, फिटिकिरी, कोयला, शोरा, मकानके काम योग्य पत्थर, एक प्रकारका मार्बुल इत्यादि खानिक वस्तु होती हैं। कोई जङ्गल नहीं है। बनाई हुई सडक प्राय. नहीं हैं, इस लिये बरसातमे देश प्रायः अगम हो जाता है। कच्छमें मकान अच्छे बनते हैं।

कच्छ टापूके उत्तर और पूर्व-दक्षिण लगभग ९०००वर्गमील क्षेत्रफलमें कच्छका "रन" अर्थात् नमकदार मरुस्थल फैला हुआ है। उनमेसे उत्तर वाला बडा रन पूर्वसे पश्चिम तक लगभग १६० मील लम्बा और उत्तरसे दक्षिण ८० मील तक चौडा अर्थात् लगभग ७००० वर्गमीलमें और पूर्व-दक्षिण वाला छोटा रन पूर्वसे पश्चिम तक लगभग ७० मील लम्बा अनुमानसे २००० वर्गमीलमें फैला है। कभी कभी रनका सम्पूर्ण सतह खास करके छोटे रनका नमकसे पूर्ण हो जाता है। रनके छोटे टापुओंमेंसे चन्द टापुओंको छोडकर जिनपर जगह जगह झाडियाँ और घास जमते हैं, रनमें किसी जगह वृक्षों तथा झाडियोका चिह्न नहीं है। जङ्गली गदहे टापुओं और किनारोंके पास घूमा करते हैं और घास चरते हैं। कभी कभी बरसातमे पानीकी बहुत बाढ़ हो जाती है। उस समय आर पार जाना दुस्तर और भयानक हो जाता है। बाढ़का पानी सूख जानेपर जमीन नमकसे पूर्ण हो जाती है। जङ्गली गदहोंके झुण्डों और भूली हुई चिडियोंके अतिरिक्त कोई प्राणी रनमें नहीं देख पड़ते, कभी कभी ऊँटोंके बनिजारे देखनेमें आते हैं। किनारोंके पासकी अपेक्षा रनका मध्य भाग बहुत ऊँचा है, इस कारणसे बगलेमें कीचड तथा पानी रहनेपर भी मध्यका भाग सूख जाता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय कच्छमें ८ कसबे, ८८९ गॉव, १०२००७ मकान और ५१२०८४ मनुष्य थे, अर्थात् ३२५४७८ हिन्दू; ११८७९७ मुसलमान, ६६६६३ जैन, ९५९ जङ्गली जातियां, ९६ क्रस्तान, ४२४२ पारसी, ३० सिक्ख और १९ यहूदी। इनमें सैकड़े पीछे ८ से कुछ अधिक राजपूत और ६ से अधिक ब्राह्मण थे। राजपूतोंमें लगभग २०००० जाड़ेजा राजपूत थे।

कच्छमें सर्व साधारण लोगोंकी भाषा कच्छी है। कुछ कुछ फारसी और हिन्दुस्तानी भी प्रचलित है। सन् १८८२ में कच्छके ८६ स्कूलोंमे लगभग ५४०० लड़के पढ़ते थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय कच्छ राज्यके कसबे मांडवीमें ३८१५५, भुजमें २५४२१, अजरमें १४४३३ और मांडवामें १०४३३ मनुष्य थे।

कच्छकी तिजारत खास करके समुद्र द्वारा होती है। रुई, फिटकिरी, काले कपड़े, चॉदीके वर्तन, मिलेट, दलिहन, अन्न इत्यादि चीजें कच्छसे अन्य देशोंमें जाती हैं और विविध प्रकारके अन्न, चीनी, मक्खन, किराना, माल, लकडी, कपडा, हाथीदांत और लोहा, पीतल तथा तांबेके वर्तन आदि वस्तु अन्य देशोंसे कच्छमें आती हैं। कच्छके बहुत लोग ऊंटोंको रखते हैं।

कच्छमें भूकम्प बहुत हुआ करता है। उन्नीसवी सदीमें ४ वार, अर्थात् सन् १८१९, १८४४, १८४५ और सन् १८६४ में भूकम्प हुआ था; इनमें सन् १८१९ का भूकम्प बडा भयंकर था; उस समय कच्छके रावसाहबके महलके साथ भुज राजधानीके लगभग ७००० मकान गिर गये, ११५० मनुष्य मकानोंके नीचे दब गये, कच्छ राज्यके नगरोंकी बडी हानि हुई और टेराका किला जो कच्छके राज्यमें सब किलोंसे दृढ़ था, जमीनमें मिल गया।

कच्छके महाराव जाडेजा राजपूत हैं। वर्तमान कच्छ नरेश महाराव सर खेंगारजी सवाई बहादुर के. सी. आई. ई. जिनका जन्म सन् १८६६ में हुआ था; अपने पिता महाराव श्री प्रागमलजीकी मृत्यु होने पर सन् १८७६ में उत्तराधिकारी हुए थे। महाराव साहब और उनके भ्राता अच्छी तरहसे शिक्षित हैं। कच्छके राज्यसे लगभग ३०००००० रुपया मालगुजारी आती है। कच्छके महारावको अङ्गरेजी महाराजकी ओरसे १७ तोपोंकी सलामी मिलती है। फौजी बल ३४० सवार, ४०० पैदल, ५०० अरब और ४० गोलंदाज हैं। इनके अलावे लगभग ३००० गैर मामूली पैदर और ६०० पुलिस हैं। आवश्यक होने पर उनके अधीनके प्रधान लोग लगभग ४००० आदमीकी सहायता कर सकते हैं।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि १५ वीं सदीमें जाडाके पुत्र जामलाखके अधीन बहुतसे जाडेजा राजपूत सिन्ध देशसे कच्छमें आये। जाडाके वंशधर होनेसे वे जाडेजा कहलाते हैं। जाडेजा राजपूत अपनी लडकियोंको मारडालते थे। लोग कहते हैं कि इनके मूल पुरुषा जाडाने इसरीतिको प्रचलित किया था उसने विना ब्याही हुई अपनी ७ लडकियोंको मार-डाला; क्योंकि लड़कियोंके योग्य वर नहीं मिले थे।

सन् १५४० तक जामलाखके वंशधर ३ शाखाओंमें बॅट कर कच्छ पर हुकूमत करते थे। सन् १५४० में जामवंशके खेंगार नामक प्रतापी पुरुष अहमदाबादके मुसलमान बादशाहकी सहायतासे जाड़ेजा जातिका प्रधान और सम्पूर्ण कच्छका मालिक बन गया। उसने बादशाहसे

रावकी पदवी और मोर्वीका राज्य पाया। खेंगारके चचा जामरावल, जो प्रथम कच्छके एक बड़े भागपर हुकूमत करते थे, काठियावाड़मे भाग गये। उन्होंने वहाँ नवानगर राज्यको कायम किया। उनके वंशधर नवानगरके राजा लोग अवतक जाम कहलाते हैं। खेंगारसे ६ पीढ़ियों तक बड़े पुत्र राव बनते आये, परन्तु १७ वीं सदीके पिछले भागमें रायधनजीकी मृत्यु होने पर उनके तीसरे पुत्र प्रागजीने अपने बड़े भाईको मारकर कच्छका राजसिंहासन ले लिया, किन्तु उस भाईके पुत्रको; जो गद्दीका अधिकारी था; मौर्वीका राज्य दे दिया। मौर्वी अवतक उसीकी संतानके अधिकारमे है। खेंगारके वंशके राव लखपतिकी मृत्यु होने पर उनकी १६ स्त्रियाँ उनके साथ चितापर जल गई थीं। कच्छके अङ्गरेजी रेजीडेंटीके पास उनके स्मरण चिह्न अवतक विद्यमान हैं। कच्छके रावके मूल पुरुषा खेंगारसे १४ वी पीढ़ीमें महाराव श्रीप्रागमलजी थे, जिनके पुत्र वर्तमान कच्छ नरेश हैं।

नारायणसर।

भुज राजधानीसे लगभग ९० मील पश्चिमोत्तर कच्छके राज्यमें सिन्ध नदीके पूर्वी मुहानेके पास नारायणसर नामक बस्ती और पवित्र तीर्थ स्थान है। बस्तीमे एक छोटा राजा रहता है। वहाँ आदिनारायणका, लक्ष्मीनारायणका और गोवर्द्धननाथजीका मन्दिर है। वहाँ बहुतेरे यात्री अपनी छातीपर छाप लेते हैं। नारायणसरसे १ मील दूर कोटेश्वर महादेव और नीलकंठ महादेव हैं। वहाँ बहुतेरे यात्री अपनी दहिनी बाँह पर छाप लेते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा-श्रीमद्भागवत (६ ठा स्कन्ध ५ वां अध्याय) दक्षप्रजापतिने १० पुत्र उत्पन्न करके उनको सृष्टि करनेकी आज्ञा दी। वे सब पश्चिम दिशाके नारायणसर नामक पुण्यदायक तीर्थमे जहां सिन्धु नदी समुद्रमे मिली है, जाकर सृष्टि उत्पत्तिकी कामनासे कठोर तप करने लगे; किन्तु जब नारदजीने वहाँ जाकर उनको ज्ञानका उपदेश दिया तब उन लोगोने सृष्टिकी कामनाकी इच्छाको छोड कर जिस मार्गसे फिर लौटना नहीं होता उस मार्गको ग्रहण किया। यह समाचार सुनकर दक्षने एक सहस्र पुत्र उत्पन्न करके उनको प्रजा उत्पन्न करनेकी आज्ञा दी, वे लोग भी नारायणसरोवर पर गये और उसके पवित्र जलके स्पर्शसे विशुद्ध चित्त होकर सृष्टिकी कामनासे तप करने लगे। फिर नारदजीने वहाँ जाकर उनको ज्ञान उपदेश देकर विरक्त करदिया। वे लोग भी अपने भ्राताओंके मार्गमें चले गये।

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण-(कृष्णजन्मखण्ड, १३२ वाँ अध्याय) चन्द्रमाने देवगुरु बृहस्पतिकी स्त्री ताराको भादो सुदी चौथिको हरण किया और भादों वदी चौथको छोड दिया। बृहस्पतिने ताराको ग्रहण करलिया। उस समय ताराने चन्द्रमाको शाप दिया कि जो मनुष्य तुम्हारा दर्शन करेगा वह कलंकी और पापी होगा। तब चन्द्रमाने नारायण सरोवरमें जाकर नारायणकी आराधना की। नारायणने प्रकट होकर चन्द्रमासे कहा कि हे चन्द्र! तुम सर्वदा कलंकी नहीं रहोगे; जो मनुष्य भादो सुदी चौथको तुमको देखेगा वही कलंकी होगा।

गोंडल।

मैं राजकोटमें लौटकर रेलगाड़ीमें सवार हो गोंडल पहुँचा। राजकोटके रेलवे स्टेशनसे २४ मील दक्षिण कुछ पश्चिम और जूनागढ़से ४० मील पूर्वोत्तर गोंडलका रेलवे स्टेशन

है। काठियावाड़के हालाड़ विभागमें देशी राज्यकी राजधानी गोंडल एक कसबा है। गोंडलसे राजकोट, जेतपुर, जूनागढ़, धोराजी और उपलेटाको सड़क गई है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय गोंडल कसबेमें १५३४३ मनुष्य थे; अर्थात् ९४२८ हिन्दू, ३८४७ मुसलमान, २०२२ जैन, ३७ क्रस्तान और ९ पारसी।

कसबेके बगलोंमें दीवार बनी हुई है। उसमें बहुतसे सुन्दर मन्दिर हैं। कसबेके बाहर एक बागमें गोंडलके ठाकुर साहबके आफिस हैं। इनके अलावे गोंडलमें अस्पताल, दवाखाना और छोटे बड़े कई स्कूल हैं।

गोंडलका राज्य—काठियावाड़के हालाड़ विभागमें गोंडलका राज्य है। राज्यके एक छोटे भागमें पहाड़ियां हैं। कपास और अन्न खास पैदावार है। भदर इत्यादि अनेक छोटी नदियां बहती हैं। छोटे बड़े लगभग ४० स्कूल हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय गोंडल राज्यके १०३४ वर्गमील क्षेत्रफलमें १७४ गाँव और १३५६०४ मनुष्य थे; अर्थात् १०५३२९ हिन्दू, २४६५२ मुसलमान और ५६२३ अन्य।

गोंडल नरेश जाड़ेजा राजपूत हैं। वर्त्तमान गोंडल नरेश ठाकुर साहब सर भगवतसिंहजी संग्रामजी के. सी. आई. ई. ने, जिनकी अवस्था लगभग ३० वर्षकी है, राजकोटके राजकुमार कालिजमें शिक्षा पाई और सन् १८८५ में इङ्गलेंडके एडिंबरामें जाकर डाक्टरी विद्यामें निपुणता दिखलाई। वहाँकी यूनिवरसिटीने इनको एल० एल० डी० की पदवी दी। यह काठियावाड़के राजाओंमें दूसरे दर्जेके राजाओंमें थे; किन्तु अब अङ्गरेज महाराजने इनको प्रथम दर्जेके राजाओंमें कर दिया है।

गोंडलके राज्यसे लगभग १२००००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमेंसे अङ्गरेजी गवर्नमेंट, बडोदाके गायकवाड और जूनागढ़के नव्वाबको ११०७२० रुपया राजकर दिया जाता है। गोण्डल नरेशका सैनिक बल २०० सवार, ६६० पैदल और पुलिस तथा १६ तोपें हैं।

पोरबन्दर।

गोंडलके रेलवे स्टेशनसे २३ मील दक्षिण-पश्चिम जेतलसर जंक्शन और जेतलसरसे १० मील पश्चिम धोराजीका रेलवे स्टेशन है। धोराजी काठियावाड़में एक प्रसिद्ध तिजारती कसबा दीवारसे घेरा हुआ है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय ३०४०६ मनुष्य थे; अर्थात् १०५६० मुसलमान, ८६१६ हिन्दू, १२१३ जैन, १६ पारसी और १ क्रस्तान। धोराजीमें एक ठाकुर साहब हैं।

धोराजीके रेलवे स्टेशनसे ११ मील पश्चिम उपलेटाका रेलवे स्टेशन है। एक नदीके किनारेपर पक्की दीवारसे घेरा हुआ उपलेटा एक सुन्दर गाँव है, जिसमें एक ठाकुर साहब रहते हैं।

उपलेटाके रेलवे स्टेशनसे ५७ मील और जेतलसर जंक्शनसे ७८ मील पश्चिम (जूनागढ़से ९५ मील) पोरबन्दरका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके काठियावाड़के पश्चिम किनारेपर (२१ अंश, २७ कला, १० विकला उत्तर अक्षांश और ६९ अंश, ४८ कला, ३०

विकला पूर्व देशान्तरमें) काठियावाडमें एक देशी राज्यकी राजधानी तथा समुद्रका बन्दरगाह पोरबन्दर है, जिसको बहुत लोग सुदामापुरी भी कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पोरबन्दर कसबेमें १८८०५ मनुष्य थे, अर्थात् १३३७२ हिन्दू, ४३६९ मुसलमान, १०९० जैन, ५७ पारसी और १७ कृस्तान।

पोरबन्दर कसबेके बगलोंमें पत्थरकी दीवार है। कसबेके प्रायः सब मकान पत्थरसे बने हुए हैं। राणासाहबका महल तीन मंजिला है। केदारनाथ शिवका विशाल मन्दिर बना हुआ है। मन्दिरमें भोगरागका सुन्दर प्रबन्ध है। कसबेमें राणासाहबकी कचहरियाँ, स्कूल, अस्पताल, मुरारजी कृष्णजीकी धर्मशाला, दो तीन अन्य धर्मशालायें, छोटे बड़े छः सात सदावर्त और अनेक देवमन्दिर हैं। पोरबन्दरका पत्थर प्रसिद्ध है। मैंने वहाँ देखा कि कारीगर लोग मकान बनानेके कामके लिये पत्थरोंको लकड़ीके समान आरासे चीरते थे।

पोरबन्दरमें समुद्रद्वारा सिन्धु, बलोचिस्तान, पारसकी खाड़ी, अरब और अफ्रिकाके पश्चिम किनारेके बन्दरगाहोंके साथ तथा भारतवर्षके कोंकन और मालबार किनारेके सहित सौदागरी होती है। सन् १८८२-१८८३ में लगभग १६६०००० रुपयेके मालकी आमदनी रफतनी हुई थी। आगबोट सप्ताहमें तीन बार बम्बईसे मगरोल, विरावल बन्दर, पोरबन्दर, द्वारिका इत्यादि बन्दरगाह होकर कराँचीको और करांचीसे द्वारिका, पोरबन्दर, विरावल इत्यादि होकर बम्बईको जाते हैं। द्वारिकाके कुछ यात्री पोरबन्दरमे आगबोटपर चढ़ते ह तथा पोरबन्दरमें आगबोटसे उतरते हैं। पोरबन्दरसे द्वारिकाका महसूल एक आदमीका दूसरे क्लासका २ रुपये और तीसरे क्लासका एक रुपया लगता है।

सुदामाजीका मन्दिर—पोरबन्दरके राणासाहबकी वाटिकामें श्रीकृष्ण भगवान्के मित्र सुदामाजीका एक बहुत छोटा मन्दिर है। मन्दिरमें सुदामाजी और उनकी पत्नीकी मूर्त्ति खड़ी है। मन्दिरमें केवल एक पुजारी रहता है। वाटिकामें एक छोटा बङ्गला और वाटिकाके निकट जगन्नाथजीका एक बहुत छोटा मन्दिर है। वाटिकासे बाहर सुदामाके मन्दिरसे पश्चिम भूमिपर चक्रव्यूहकी लकीरकी तरह आधे फीटसे अधिक ऊँची और इतनीही चौड़ी गचकी लकीरसे "भूल भुलैया" बनी है, जिसको लोग चौरासी भी कहते हैं। वह ऐसे ढबसे बनी है कि आदमी उसके एक मार्गसे प्रवेश करके लकीरोंसे बने हुए सब घेराओंमें घूमकर दूसरे मार्गसे निकल जाता है। सुदामाजी द्वारिकासे आनेपर अपनी मढ़ीके स्थानपर बड़ा महल देखकर भूल गये थे, उसीके स्मरणार्थ यह भूलभूलैया बनी है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—श्रीमद्भागवत—(दशम स्कन्ध, ८० वाँ अध्याय) सुदामा नामक एक दरिद्र ब्राह्मण द्वारिकाधीश श्रीकृष्णचन्द्रके मित्र थे। एक समय उनकी स्त्री अति दुःखित हो पतिसे बोली कि हे ब्राह्मण! यादवोंमे श्रेष्ठ साक्षात् लक्ष्मीपति कृष्ण चन्द्र तुम्हारे सखा हैं, तुम्हारे जाने पर वह तुमको बहुत धन देंगे, तुम उनके पास जाओ। सुदामाकी आज्ञासे उनकी स्त्रीने कृष्णचन्द्रको भेंट देनेके लिये थोड़ासा चावल एक फटे हुए वस्त्रमें बांध कर ला दिया। सुदामा उसको लेकर द्वारिकामे रुक्मिणीके महलके पास पहुँचे। श्रीकृष्णचन्द्र अपने द्वारपालके मुखसे सुदामाका आगमन सुन कर रुक्मिणीकी शय्यासे शीघ्र उठे। उन्होंने सुदामासे मिलकर उनको अपने पलंगपर बैठाया। साक्षात् श्रीरुक्मिणीजी उस ब्राह्मणकी सेवा करने लगीं।

(८१ वाँ अध्याय) कृष्णभगवान्‌ने सुदामासे कहा कि हे ब्राह्मण ! तुम मेरे लिये क्या भेट लाये हो ? । जब सुदामाने लज्जित हो उनको तंडुल नहीं दिया, तब कृष्णभगवान्‌ने सुदामाके वस्त्रमेसे चावल ले लिया । जब उन्होंने दो मुट्ठी चावल भोजन करके तीसरी मुट्ठी भोजन करनेका विचार किया, तब रुक्मिणीने उनका हाथ पकड लिया । सुदामा एक रात्रि श्रीकृष्णके भवनमें सुखसे निवास करके प्रातः काल भगवान्‌से विदा हो अपने घर चले। वह मार्गमें विचार करते थे कि इस कारणसे कृष्णने मुझको कुछ नहीं दिया है कि दरिद्री सुदामा धनको पाकर मदांध हो मुझको भूल जायगा । उसके पश्चात् सुदामाने अपने नगरमें पहुँचकर देखा कि इन्द्रभवनके समान महल बन गये हैं। चारोओर विमान सुशोभित हैं । चित्र विचित्र बाग लग गये हैं । अनेक सरोवर बन गये हैं । यह सब देख कर, उनका मन चकित होगया । फिर उन्होंने विचार किया कि यह तो मेराही स्थान है; ऐसा क्यों होगया । उस समय उनकी स्त्री पतिका आगमन सुन गृहसे बाहर आकर उनको अपने महलमें लेगई । सुदामाने बड़ा आश्चर्य माना और पीछे जान-लिया कि कृष्णभगवान्‌की कृपासे यह संपत्ति और ऐश्वर्य मुझको मिला है ।

पोरबन्दरका राज्य—काठियावाड़के सौराष्ट्र विभागमें काठियावाड़के पश्चिमी भागमें अरबके समुद्रके किनारेके पास ६३६ वर्गमील क्षेत्रफलमें पोरबन्दरका राज्य है । यह राज्य समुद्रके किनारे पर दूर तक लम्बा है। इसकी चौड़ाई किसी जगह २४ मीलसे अधिक नहीं है। राज्यमें प्रायः पहाड़ी नहीं है। तीन चार छोटी नदियां बहती हैं। समुद्रके किनारेके निकट बड़े बड़े दलदल हैं । उनमें वर्षाका पानी इकट्ठा होता है । वर्षाका पानी पड़नेसे नमकदार दलदलोंमें केवल घास और नरकट जमता है; किन्तु मीठे पानीके दलदलोंमे धान, चना, अरहर इत्यादि फसिल होती है । इनमेंसे एक दलदल लगभग ६ मील लम्बा और ४ मील चौड़ा है । पोरबन्दरके राज्यमें औसत सालाना २० इञ्च वर्षा होती है । पोरबन्दरका पत्थर सुन्दरतामें प्रसिद्ध है वह राज्यमें सर्वत्र मिलता है, किन्तु खास करके बरदा पहाड़ियोंकी खानोंसे निकाला जाता है । और बम्बई शहरमें बहुत भेजा जाता है । पोरबन्दर राज्यके उत्तम मकानोंकी जोड़ाईमें गारा नहीं दिया जाता है । कारीगर लोग पत्थरोके टुकड़ोंको, जो आरासे चीरकर और बसुलोंसे काट कर बनाये जाते हैं, ठीक तरहसे बैठा कर दीवार बनाते हैं। वर्षा होने पर वे टुकड़े आपसे आप मिल जाते हैं । भड़ौंच, सूरत, नवसारी, करांची, बम्बई और मलेबारके किनारोंके बन्दरगाहोंसे पोरबन्दरकी सौदागरी होती है। पोरबन्दरके राज्यमें पोरबन्दर, माधवपुर और मियानी प्रधान बन्दरगाह हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय पोरबन्दर राज्यके १ कसबे और ८४ गावोंमें ७१०७२ मनुष्य थे; अर्थात् ६३४०६ हिन्दू, ६७४१ मुसलमान और ९२५ दूसरे ।

पोरबन्दरके राणासाहब जेठवा राजपूत हैं । उनको अङ्गरेज महाराजकी ओरसे ११ तोपोंकी सलामी मिलती है । वह राज्य पहिले काठियावाड़के दूसरे दर्जेके राज्योंमें था; किन्तु सन् १८६९ में तीसरे दर्जेमें कर दिया गया । पोरबन्दरके राज्यसे लगभग ५५०००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमेंसे अङ्गरेजी सरकार, बड़ोदाके गायकवाड़ और जूना-गढ़के नवाबको ४८५०० रुपया दिया जाता है । राणासाहबका लगभग ६०० आदमियोंका सैनिक बल है । सन् १८८२-८३ में पोरबन्दरके राज्यमें १० स्कूल थे । लगभग १५० वर्षसे पोर-

बन्दर कसबा राजधानी हुआ है। वर्त्तमान पोरबन्दर नरेश राणा श्रीविक्रमादित्यजी खेमाजी ७५ वर्षकी अवस्थाके वृद्ध हैं। यह बड़े धर्मनिष्ठ हैं; किन्तु राज्य-प्रबंधके गड़बड़ होनेसे बम्बईके गवर्नमेंटने इनको राज्यच्युत कर दिया है।

माधवपुर—पोरबन्दर कसबेसे ४० मील दक्षिण-पूर्व समुद्रके पास पोरबन्दरके राज्यमें माधवपुर बन्दरगाह है। वहाँ मधुमतीनदी समुद्रमें मिली है और ब्रह्मकुण्ड तीर्थ तथा कृष्ण-भगवान्का प्रसिद्ध मन्दिर है। कुछ लोग कहते हैं कि इसी स्थानपर रुक्मिणीजीके साथ श्रीकृष्णचन्द्रका विवाह हुआ था।

छत्तीसवां अध्याय।

(काठियावाड़में) मूलद्वारिका, द्वारिका और बेटद्वारिका।

मूलद्वारिका।

पोरबन्दरसे १२ मील पश्चिमोत्तर द्वारिका जानेवाली सडकके पास मूलद्वारिका नामक गाँव है। वहाँ बहुतसे पुराने मन्दिर हैं। लोग कहते हैं कि श्रीकृष्ण भगवान् मथुरासे प्रथम इसी जगह आये थे।

मूलद्वारिकासे ६ मील (पोरबन्दरसे १८ मील पश्चिमोत्तर) उखमण्डल सबडिवीजनमें मियानी पुराना बन्दरगाह है। मियानीसे लगभग २२ मील (पोरबन्दरसे ४० मील) पश्चिमोत्तर गोलगढ़ नामक गाँवके पास पिण्डारक तीर्थ और दुर्वासा ऋषिका आश्रम है।

द्वारिका।

पोरबन्दरसे ५६ मील विरावल बन्दरसे १५० मील और बम्बई शहरसे ३४२ मील पश्चिमोत्तर (२२ अंश, १४ कला, २० विकला उत्तर अक्षांश और ६९ अंश, ५ कला पूर्व देशांतरमे) बम्बई हातेके काठियावाड़ प्रायद्वीपके पश्चिमोत्तरके कोनेमें, बड़ोदाके राज्यके अमरेली विभागके ऊखमण्डल सबडिवीजनमें द्वारिका एक छोटा कसबा तथा प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है, जिसको गोमतीद्वारिका भी कहते हैं। पोरबन्दर, विरावलबन्दर और बम्बईमें रेल है। आगबोट सप्ताहमें ३ वार बम्बईसे विरावलबन्दर, पोरबन्दर, द्वारिका इत्यादि बन्दरगाह होकर करांचीको और करांचीसे द्वारिका, पोरबन्दर, विरावलबन्दर इत्यादि बंदरगाह होकर बम्बईको जाते हैं। द्वारिकाके यात्री बम्बई, विरावलबंदर और पोरबंदरमें रेलगाड़ीसे उतरकर आगबोट द्वारा द्वारिका पहुँचते हैं। कुछ लोग पोरबंदरसे पैदल अथवा बैलगाड़ीपर सवार हो द्वारिका जाते हैं। बैलगाड़ीकी सडक अच्छी नहीं है। आगबोटका महसूल पोरबंदर तथा विरावल बंदरसे द्वारिकाका दूसरे क्लासका २ रुपया और तीसरे क्लासका १ रुपया और बम्बईसे द्वारिकाका दूसरे क्लासका ४ रुपया और तीसरे क्लासका २ रुपया लगता है। आगबोटपर चढ़ाने

अथवा उतारनेवाली नावका महसूल चार आना अलग देना पड़ता है। द्वारिकामें उतरनेवालोंसे चुंगीकी तलासी ली जाती है। यद्यपि पोरबंदरसे आगबोट केवल ७ घण्टेमें द्वारिका पहुँच जाते है और सड़क द्वारा पोरबंदरसे द्वारिका जानेमें दो दिनोंसे अधिक समय लग जाता है तथापि बहुतेरे लोग आगबोटके क्लेशसे बचनेके लिये पैदल अथवा बैलगाड़ीपर वहांसे द्वारिका जाते हैं। हवा तेज रहनेपर जब नाव आगबोट पर चढ़नेवाले यात्रियोंको लेकर उछलती कूदती ऊँची ऊँची लहरोंको लांघती हुई पालके सहारेसे आगबोटकी तरफ चलती है, तब कितने लोग अधीर होजाते हैं, तथा कितने लोग वमन करते हैं। उससे अधिक क्लेश आगबोट पर होता है क्योंकि उस पर पाहिलेके चढ़े हुए कितने लोग पांव फैला कर सोते है; नये चढ़नेवालोंमेंसे कितनेको बैठनेका स्थान नहीं मिलता तथा कितने लोग वमन करते हैं; किन्तु पवनकी तेजी नहीं रहनेपर और बैठने सोनेका स्थान मिल जान पर आगबोटमें कोई दुःख नहीं होता। मेरे जानेके समय हवा तेज थी द्वारिका भारतवर्षके पश्चिमके किनारे पर, भारतवर्षके ४ धामोंमेंसे एक धाम और सप्त पुरियोंमेंसे एक पुरी है। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय गोमतीद्वारिकामें ७४३ मकान और लगभग ५००० मनुष्य थे।

द्वारिका कसबेके एक भागके चारोंओर, जो लगभग २५० गज उत्तरसे दक्षिणको लम्बा और २०० गज चौड़ा अर्थात् लगभग १७ बीघे भूमिपर है, पक्की दीवार बनी हुई है, जिसके चारो बगलोंमें एक एक फाटक बना है। दक्षिणकी दीवारमें रणछोड़जीके मन्दिरके घेरेका खास फाटक है। घेरेके भीतर बस्ती, धर्मशालायें और बहुतसे मन्दिर और घेरेके बगलोंमें अर्थात् उसके बाहर बहुतसे मन्दिर, स्थान इत्यादि हैं। द्वारिकामें आठ दस धर्मशालायें, बड़ोदाके महाराजकी कचहरियां, पुलिस, जेलखाना, फौजी छावनी, पांच छः स्कूल और कई एक अस्पताल है।

सन् १८५९ के वघेरोंके बगावतके समयसे महाराजके खर्चसे द्वारिकामें देशी पैदलकी एक कम्पनी अङ्गरेजी सेना रहती है। उसके अलावे महाराजकी सेना भी है। द्वारिका ऊखमंडल सबडिवीजनका सदर स्थान है। गोमतीद्वारिका और बेटद्वारिकाके यात्रियोंके 'कर' और चुंगीकी आमदनीका ४०००० रुपये पर ठीका दिया गया है। इसके अलावे लगभग ८००० रुपया घाटकी आमदनी है। ऐसा नहीं जानना चाहिये कि बड़ोदाके महाराज यात्रियोंसे 'कर' लेकर अपने घर ले जाते हैं। ऊपर लिखी हुई आमदनीके अलावे महाराजको द्वारिकाके प्रबन्धके खर्चके लिये प्रति वर्ष लगभग ४०००० रुपया घरसे देना पड़ता है।

समुद्रके किनारेपर नमक तैयार होता है, जो वहाँ बहुत सस्ता बिकता है। समुद्रका ज्वार और भाठा नित्य दो बार होता है। भाठा होने पर अर्थात् समुद्रकी बाढ़का पानी हट जानेपर भांति भांतिके गोमती चक्र, कौड़ी दोहना इत्यादि जल उद्भिज वस्तु किनारे पर पड़ जाती है। यात्री लोग गोमती चक्रको पूजा करनेके लिये अपने घर ले जाते हैं।

द्वारिकामें बहुत पण्डे हैं। वही लोग धनी यात्रियोंके साथ बेटद्वारिकाभी जाते हैं। वहाँ जाति जातिके अलग अलग पण्डे हैं। किसी पण्डेके हिस्सेमें एक

जातिके यात्री और किसीके हिस्सेमे दो, तीन या उससेभी अधिक जातिके यात्री हैं। उन लोगोको यात्री खोज लानेके लिये कहीं जाना नहीं पडता; यात्रीको पुरीमें पहुँचने पर उस जातिका पण्डा उसके साथ लग जाता है। वहाँकी स्त्रियाँ पर्देमें नही रहतीं। ब्राह्मण भोजनके समय ब्राह्मणोंके साथ उनकी स्त्रियांभी आकर भोजन करती हैं,किन्तु विधवा स्त्रियां उनके साथ पंक्तिमें नहीं बैठती।

द्वारिकाके आस पास किसी चीजकी पैदावार नहीं है, सब वस्तु बाहरसे आती हैं। नागफेनी और सीज जहां तहाँ बहुत हैं, जो जलानेके काममें आते हैं। किसी किसी जगह आम आदिके वृक्ष देखनेमे आते हैं, किन्तु वह हरे भरे अथवा सीधे खड़े नहीं हैं। पहिले उस देशमे काबाजातिके मुसलमान या अन्यलोग डाका मारते थे, इस लिये साधु लोग तथा निर्धन लोगोंके अतिरिक्त धनी तथा सर्व साधारण लोग वहाँ प्रायः नहीं जाते थे। अब किसी जगह कोई भय नहीं है, नित्य सैकड़ों यात्री द्वारिकामें पहुँचते हैं।

गोमती—द्वारिकाके पश्चिम समुद्र और दक्षिण गोमती नामक लम्बा खाल है, जो समुद्रके ज्वारके पानीसे भरा रहता है। गोमतीके होनेसे उस नगरको लोग गोमती द्वारिका कहते हैं। गोमतीके उत्तरके किनारेपर द्वारिकाकी ओर पश्चिमसे पूर्व तक इस क्रमसे ९ पक्के घाट बने हुए हैं,—१ संगम घाट, २ नारायणघाट, ३ वासुदेवघाट, ४ गऊघाट, ५ पार्वतीघाट, ६ पाण्डवघाट, ७ ब्रह्माघाट, ८ सुरधनघाट और ९ वाँ सरकारीघाट। समुद्र और गोमतीके मेलके पास संगमघाटपर संगमनारायणका मन्दिर वासुदेवघाटके पास हनुमान्‌जीका मन्दिर और उससे पश्चिम नृसिंहजीका स्थान है। सरकारी घाटसे पूर्व निष्पाप कुण्ड नामक छोटा पोखरा है, उसके बगलोपर पक्की सीढियाँ बनी है, उसमे गोमतीका पानी रहता है। वहाँकी रीतिके अनुसार यात्री लोग प्रथम निष्पाप कुण्डमें तीर्थ भेट देकर स्नान करते हैं। जिसकी इच्छा होती है वह उस स्थानपर पिण्डदान करता है। उस कुण्डके समीप एक अन्य छोटा कुण्ड,संवलियाजीका मन्दिर,गोवर्द्धननाथका मंदिर और महाप्रभुकी बैठक है। प्रति यात्रीको गोमतीमें स्नान करनेके लिये बडोदाके महाराजके कर्मचारी अथवा ठीकेदारको दो रुपया देना पड़ता है, बिना नियमित दो रुपया दिये हुए कोई गोमतीके किसी घाटपर स्नान नहीं कर सकता है। यात्री प्रथम दो रुपया देकरके तब निष्पाप कुण्डम स्नान करता है। जो एक बार नियमित कर दे देता है, वह नित्य स्नान करता है। दरिद्र लोगोंसे "मेरे पास कुछ नहीं है" ऐसा सौगन्ध कराकर उसका 'कर' माफ कर दिया जाता है। इसी भांति बेटद्वारिकाके मन्दिरोंमें दर्शन करनेवालोंसे भी दो रुपया लिया जाता है। लगभग १० वर्ष पहिले ब्राह्मणों और साधुओंको छोड़कर अन्य यात्रियोंको गोमतीमें स्नान करने और बेटद्वारिकाके मन्दिरोंमें दर्शन करनेका महसूल प्रतियात्रीका ९ रुपया लगता था, किन्तु अब नये प्रबन्धके अनुसार सबको दो दो रुपया दोनो द्वारिकामें देना होता है।

गोमतीके दक्षिण किनारेपर पंचकुंआ नामसे प्रसिद्ध ५ पवित्र कूप हैं। पांचों लगभग एक एक हाथ लम्बे और इतनेही चौड़े चौखूटे हैं। यात्री लोग कूपोंसे जल निकालकर आचमन और मार्जन करते हैं।

गोमतीद्वारकाके मंदिरोंका नकशा।

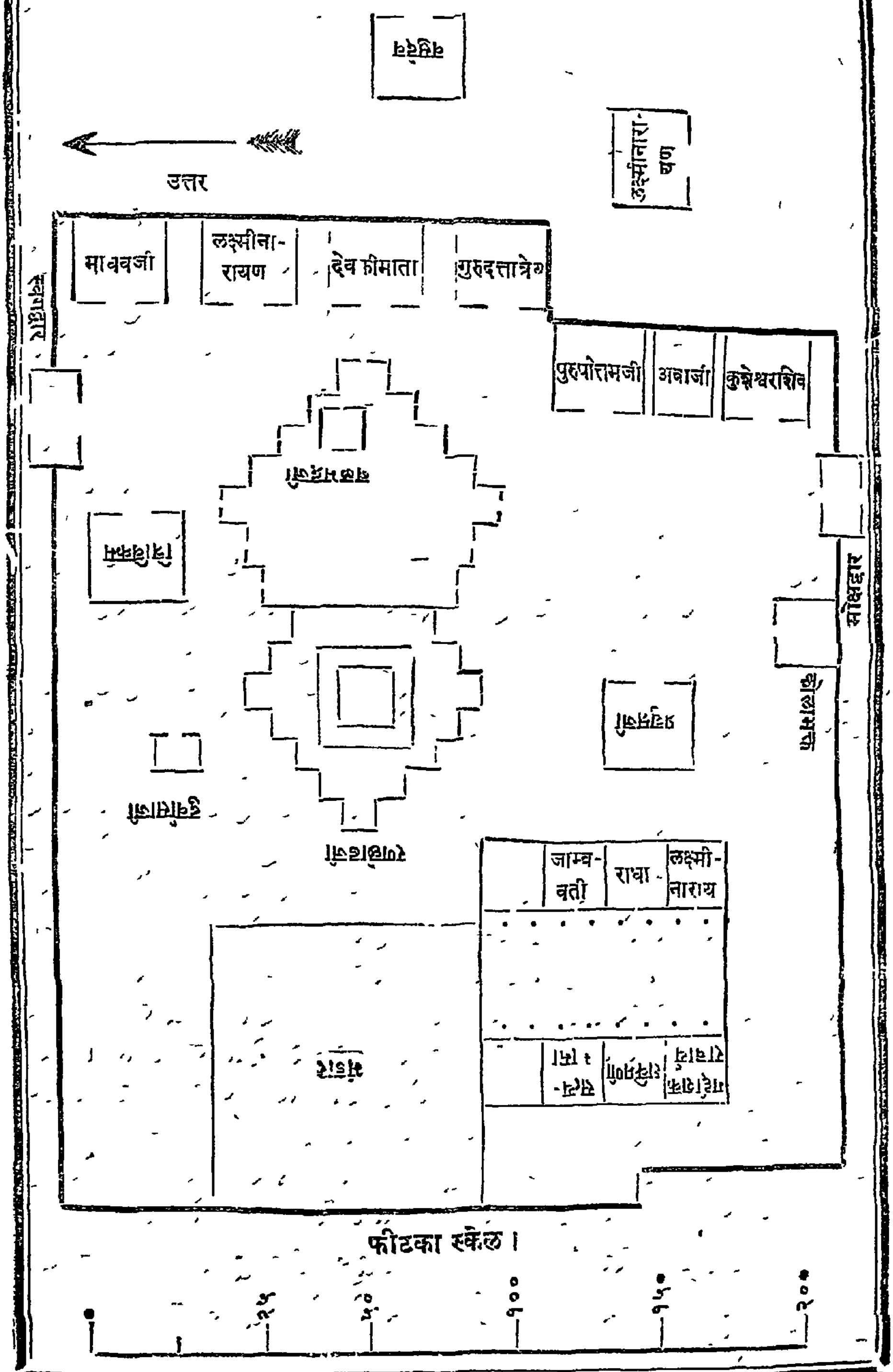

मन्दिर—यात्रीलोग निष्पाप कुण्डमें स्नान करके रणछोड़ आदि देवताओंके मन्दिरमें जाकर दर्शन करते हैं। शहरपनाहके भीतर उसके पूर्व-दक्षिणके कोनेके पास लगभग २४० फीट लम्बे और २०० फीट चौड़े घेरेमें रणछोड़ आदि देवताओंके मन्दिर हैं (यहाँके नकशेसे देखिये)। घेरेके दक्षिण बगलमें स्वर्गद्वार नामक फाटक और उत्तर बगलमे मोक्षद्वार नामक फाटक है। स्नान करके मन्दिरमे जानेके समय मार्गमे कृष्णजी, गोमतीमाता और महालक्ष्मीजी और सीढ़ियोंपर हनूमानजी, नृसिंहजी और साक्षीगोपालका दर्शन होता है। घेरेके भीतरके मन्दिरोंमें जाकर देवताओंके पूजन करनेका 'कर' नियत है। रणछोडजीके मन्दिरका ८ आना, त्रिविक्रमजीके मन्दिरका ४ आना, प्रद्युम्नजीके मन्दिरका ४ आना और अन्य मन्दिरोंका 'कर' दो दो आना या उससे भी कम है। जो यात्री एक बार पुजारियोंको नियत 'कर' दे देता है, वह मन्दिरके भीतर नित्य जाकर देवताओंके चरणोंको स्पर्श करके चरणोंपर पुष्प तथा तुलसी पत्र चढाता है। जो यात्री जिस मन्दिरका नियमित कर नहीं देता, वह उस मन्दिरके द्वारके बाहरसे दर्शन करता है।

कृष्ण भगवान् कालयवनके डरसे रण अर्थात् संग्राम छोड़कर द्वारिकामें भाग गये, इस कारणसे उनका नाम रणछोड़ पड़ा है। रणछोड़जीका मन्दिर द्वारिकाके सब मन्दिरोंमें प्रधान और सबसे अधिक बड़ा तथा सुन्दर है। वह मन्दिर, जो सात मञ्जिला शिखरदार है, ४० फीट लम्बा और उतनाही चौड़ा तथा लगभग १४० फीट ऊँचा है। ऊपरके मञ्जिलोंमें जानेके लिये भीतर सीढियाँ बनी हुई हैं। मन्दिरकी दीवारें दोहरी है। दोनो दीवारोंके बीचमें परिक्रमा करनेकी जगह है। मन्दिरके भीतर चांदीके पत्तरोंसे भूषित किये हुए सिंहाँसनपर रणछोड़जीकी, जिनको द्वारिकाधीश भी कहते हैं, ३ फीट ऊँची श्यामल चतुर्भुज मूर्त्ति है। मूर्त्तिके अंगमें बहुमूल्य वस्त्र, गलेमें सोनेकी अनेक भांतिकी ११ माला हैं और शिरपर सुन्दर सुनहरा मुकुट है। मन्दिरके फर्शमें श्वेत तथा नील मार्बुलके टुकड़े जड़े हुए हैं, द्वारके चौखटोंपर चाँदीके पत्तर लगे हैं और छतसे सुन्दर झाड़ लटकते हैं। यात्रीलोग रणछोड़जीके चरणोंपर फूल और तुलसीपत्र तथा माला चढ़ाते हैं और सिंहासनकी परिक्रमा करते हैं। मन्दिरके ऊपरके एक मञ्जिलमे अम्बा देवीकी मूर्त्ति है। मन्दिरके आगे, अर्थात् पूर्व, मन्दिरसे अधिक लम्बा चौड़ा, १०० फीट ऊँचा पंचमंजिला जगमोहन है। उसके भीतर पत्थरके ६० चौकोने स्तम्भ लगे हैं। फर्शमें श्वेत और नील मार्बुलके टुकड़े जड़े हुए हैं। ऊपर सुन्दर गुम्बज है। उस जगमोहनमें पश्चिम-दक्षिणके कोनेके पास एक छोटी कोठरीमे शेषरूप बलदेवजी हैं। मन्दिरके समान जगमोहन भी पहलदार है। मन्दिरसे दक्षिण-पूर्व दुर्वासाजीका छोटा मन्दिर है।

रणछोड़जीके मन्दिरसे दक्षिण त्रिविक्रमजीका शिखरदार मन्दिर है। उसके किवाड़, चौखट और सिंहासनपर चांदीके पत्तर जड़े हुए हैं, छतमें झाड आदि लगे हैं, फर्शमें श्वेत और नील मार्बुलके टुकड़े जड़े हुए हैं। मन्दिरमें सिंहासनपर त्रिविक्रमजीकी मनोरम मूर्त्ति है। रणछोड़जीके वस्त्र भूषणोंके समान इनके भी वस्त्र भूषण हैं। त्रिविक्रमजीके पास राजा बलि और ब्रह्माके ४ पुत्र, अर्थात् सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमारकी छोटी छोटी मूर्त्ति और मन्दिरके दक्षिण-पश्चिमके कोनेमें गरुड़की मूर्त्ति है। त्रिविक्रमजीको बहुत लोग टीकमजी कहते हैं। वहाँके पण्डोंका कथन है कि दुर्वासा ऋषि राजा बलिसे त्रिविक्रम भगवान्‌को मांग लाये थे।

रणछोड़जीके मन्दिरसे उत्तर प्रद्युम्नजीका शिखरदार मंदिर है। मंदिरमें मार्बुलके टुकड़ोंका फर्श बना है, झाड़ लटकते हैं और चाँदीके सिंहासन पर श्याम रूप प्रद्युम्नजी विराजते हैं। उनका शृङ्गार भी प्रायः रणछोडजीके शृङ्गारके समान है। उनके पास अनिरुद्धजीकी छोटी प्रतिमा है।

घेरेके उत्तरवाले फाटकसे पश्चिम कुशेश्वर महादेवका मंदिर है। मंदिरके नीचे तहखानेमें कुशेश्वर शिवलिंग और पार्वतीजीकी मूर्त्ति है। वहाँ बहुतेरे यात्री लड्डू तथा घी चढ़ाते है। पण्डे लोग कहते हैं कि जब कुश नामक दैत्य द्वारिकामें बड़ा उत्पात करके सब लोगोंको क्लेश देने लगा, तब दुर्वासा ऋषि त्रिविक्रम भगवान्‌को राजा बलिसे माँग लाये। जब कुश दैत्य किसी भांतिसे नहीं मरा, तब त्रिविक्रमजीने उसको भूमिमें गाड़ कर उसके ऊपर शिवलिंग स्थापित कर दिया, जो कुशेश्वर नामसे प्रसिद्ध हुए। उस समय कुशने कहा कि जो द्वारिकाके यात्री कुशेश्वरकी पूजा न करें, उनकी यात्राका आधा फल मुझको मिले, तब मैं इसके भीतर स्थिर रहूँगा। त्रिविक्रमजीने कुशको यह वर दे दिया; कुश भूमिमें स्थित होगया।

घेरेके भीतर उसके पश्चिमकी दीवारके पास क्रमसे उत्तरसे दक्षिण कुशेश्वर महादेव, अम्बाजी, पुरुषोत्तमजी, गुरु दत्तात्रेय, देवकी माता, लक्ष्मीनारायण और माधवजीके मंदिर; उत्तरकी दीवारके पास मोक्षद्वार फाटकसे पूर्व कोला भक्तका मन्दिर और पूर्वकी दीवारके पास एक घेरेके पूर्व बगलमें क्रमसे दक्षिणसे उत्तर, खाली मंदिर, सत्यभामाका मंदिर, रुक्मिणीका मंदिर, शंकराचार्य्यकी गद्दी और पश्चिम बगलमें क्रमसे दक्षिणसे उत्तर १ खाली मंदिर और जाम्बवती, राधा और लक्ष्मीनारायणके ३ मन्दिर हैं (नक्शेसे देखिये)।

भीतरवाले घेरेसे दक्षिण शारदामठके अधीन रणछोडजीका भण्डार घर है। उसमें भोगकी सामग्री तैयार करके नियत समयोंपर रणछोडजी आदि वहाँके देवताओंको भोग लगाई जाती हैं। धनी यात्री लोग उस भण्डारमें भोगकी सामग्री अथवा रुपया देकर अपनी ओरसे वहाँके देवताओंको भोग लगवाते हैं।

भण्डारसे दक्षिण सुप्रसिद्ध शारदामठ है। भारतवर्षकी चारों दिशाओंकी सीमाओंके पास सुप्रसिद्ध शंकराचार्यजीके ४ प्रधान मठ हैं, जो उनके ४ शिष्योंसे हुए थे;—दक्षिणकी सीमाकी ओर मैसूर राज्यके शृंगेरी गाँवमें शृंगेरीमठ, पश्चिमकी सीमापर द्वारिकामें शारदामठ, उत्तरकी सीमाके पास गढ़वाल जिलेमें जोशीमठ और पूर्वकी सीमापर उड़ीसेकी जगन्नाथपुरीमें गोवर्द्धनमठ। इनका विशेष वृत्तांत तथा शंकराचार्यजीका जीवन चरित्र भारत-भ्रमणके इसी खण्डमें शृंगेरीके वृत्तांतमें है। इस समय द्वारिकाके शारदामठके स्वामी जगतगुरु श्रीशंकराश्रम स्वामीजी हैं। उनका जन्म मदरास हातेके गोदावरी जिलेके एक गाँवमें हुआ था। उनका नाम जगन्नाथशास्त्री था। वह शास्त्रोंमें अच्छे विद्वान् हैं और अङ्गरेजी तथा फारसी भी जानते हैं। वह इस समय देशभूषणके लिये निकले हैं और सनातनधर्मका व्याख्यान देते फिरते हैं।

मन्दिरके बड़े घेरेसे बाहर उसके पश्चिम लक्ष्मीनारायणका एक मन्दिर है। नारायणकी श्यामवर्णकी चतुर्भुज मूर्त्ति लगभग २ हाथ ऊँची है, जिसके वाम अंकमें लक्ष्मीजीकी छोटी प्रतिमा है। नारायणके अंगमें बहुमूल्य वस्त्र, शिरपर सुनहरा मुकुट और गलेमें सोनेके १० हार है।

लक्ष्मीनारायणके मन्दिरसे दाक्षिण-पश्चिम वासुदेवका मन्दिर है, जिसके चोखट और सिंहासनमें चाँदीके पत्तर जड़े हुए हैं। मूर्ति श्याम वर्णकी चतुर्भुज है। उसके अंगमें सुन्दर वस्त्र; शिर पर सुनहरा मुकुट, हाथोंमे सुनहरा शंख, चक्र, गदा और पद्म तथा गलेमें सोनेकी आठ दश सिकरी हैं।

नगरकी परिक्रमा-रणछोड़जीके मन्दिरसे नगरकी परिक्रमाकी यात्रा आरम्भ होती है। मन्दिरसे पश्चिम गोमतीके घाटोंपरके देवताओंके दर्शन करते हुए समुद्रके निकट सङ्गमघाट पर जाना चाहिये। सङ्गमसे उत्तरके समुद्रके घाटको लोग चक्रतीर्थ कहते हैं। उससे उत्तर रत्नेश्वर महादेवका मन्दिर है। उससे उत्तर द्वारिका नगरके वाहर सिद्धनाथ महादेवका मन्दिर मिलता है, जिसका फर्श श्वेत और नील मार्वुलसे वना है। उससे आगे ज्ञानकुण्ड नामक वावली, उससे आगे जूनीरामवाड़ी नामक मन्दिरमे राम, लक्ष्मण और जानकी, उससे आगे नई रामवाड़ी नामक मन्दिर और सौमित्री वावली नामक कूप, उससे आगे अक्षयवट वृक्ष अघोरकुण्ड, भद्रकाली और आशापुरी माताकी मूर्त्ति, और उससे आगे कैलासकुण्ड नामक छोटा पोखरा मिलता है। पोखरेके चारों वगलोंमे पत्थरकी सिढियाँ वनी हुई हैं। उसमें गुलावी रङ्गका पानी है। वहाँके पण्डे कहते हैं कि राजा नृग गिरगिट होकर इसी कुण्डमें रहते थे और इसी स्थानपर उनका उद्धार हुआ था। कैलासकुण्डसे आगे सूर्यनारायण और उससे आगे शहर पनाहके पूर्वके दर्वाजेके पास जय और विजयका दर्शन होता है। उसके पश्चात् निःपापकुण्ड और रणछोडजीके मन्दिरके वीचके देवताओंके दर्शन करते हुए दक्षिण दरवाजेसे रणछोड़जीके मन्दिरमें जाकर परिक्रमा समाप्त करनी चाहिये।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(सभापर्व, १४ वाँ अध्याय) मगधदेशका राजा जरासन्ध अपने प्रतापसे सम्पूर्ण पृथ्वीको अपने अधिकारमें करके पृथ्वीनाथ वन गया। पृथ्वीके वहुतसे राजा उसके भयसे उसके सहायक वन गये और वहुतेरे अपने देशको छोड़ कर भाग गये। (कृष्णने कहा था कि हम वडे वडे अस्त्रोंसे लगातार ३०० वर्ष तक जरासन्धके साथ लड़ेगे तौभी उसको नहीं जीत सकेंगे, क्योंकि वह अमरके समान तेजस्वी और वली है)। अस्ति और प्राप्ति नामक जरासन्धकी दो पुत्री कंससे व्याही गई थीं। जव कृष्णने कंसको मारा, तव उन्होंने अपना दुःख जरासन्धसे जा सुनाया। जरासन्ध वारवार मथुरापर आक्रमण करने लगा। हंस और डिम्भक दो अति वलवान् पुरुष जरासन्धके सहायक थे। १७ वीं लड़ाईके समय वलरामजीने हंसको मारा। डिम्भकने हंसकी ग्लानिसे यमुनामें डूवकर अपना प्राण छोड दिया। जरासन्ध उनकी मृत्युका समाचार पाकर उदास हो अपनी राजधानीकी ओर चला। उसके लौटनेपर कृष्ण आदि यादव आनन्दित मनसे फिर मथुरामे वसने लगे, किन्तु कंसकी दोनो स्त्रियाँ कृष्ण, वलरामको मारनेके लिये अपने पिता जरासन्धको फिर उभाडने लगीं। तव कृष्णने उदास हो मथुरासे भागनेका विचार किया। सव मथुरावासी अनन्त ऐश्वर्यको आपसमे वांटकर प्रत्येक आदमी स्वल्प भार लेकर पश्चिम दिशामे भाग गये। वे लोग भारतवर्षके पश्चिमी विभागमें रैवत पर्वतकी चोटियोंसे सुशोभित कुशस्थली अर्थात् द्वारिका पुरीमें जा वसे। उन्होंने अच्छे प्रकारसे वहाँके दुर्ग अर्थात् किलेका संस्कार किया। वह दुर्ग देवताओंके भी गमन करने योग्य न रहा। उस दुर्गसे स्त्रियाँ भी अनायास लड़ सकती थीं। सव लोग निर्भय होकर गोमन्त नामक पर्वतपर निवास

करने लगे। वह पर्वत ३ योजनमें फैला हुआ था। एक एक योजनपर एक एक सैन्य व्यूह बना था। प्रत्येक योजनके अन्तरपर सौ सौ द्वार बने थे।

(वनपर्व, ८२ वाँ अध्याय) द्वारिकापुरीमें जाकर पिण्डारक तीर्थमें स्नान करनेसे बहुत सुवर्ण मिलता है। उस तीर्थमें अब भी पद्मके तुल्य एक मुद्रा, त्रिशूल और पद्मके चिह्न देख पड़ते हैं। वहाँ महादेवजी सर्वदा निवास करते हैं।

(अनुशासनपर्व, ७० वाँ अध्याय) प्यासे हुए चन्द आदमियोंने जलको ढूँढते हुए द्वारिकाके एक स्थानमें तृण लताओंसे परिपूर्ण एक बड़ा कूप पाया। उन्होंने उसके भीतर एक बड़ा गिरगिट देखा। जब उनके बहुत यत्न करनेपर गिरगिट कूपसे नहीं निकला, तब उन्होंने वहाँसे जाकर कृष्णसे वह वृत्तान्त कह सुनाया। कृष्ण भगवान्ने वहाँ जाकर कूपसे गिरगिटको निकाला। उन्होंने गिरगिट रूपी राजा नृगसे पूछा कि तुम्हारा रूप ऐसा क्यों हुआ है। तब गिरगिट बोला कि अग्निहोत्री ब्राह्मणकी एक गऊ भूलकर हमारी गौओंमें आ मिली। मैंने एक ब्राह्मणको वह गऊ फिर दान करदी। अग्निहोत्रीने उस गऊको दूसरे ब्राह्मणके घर देखा। दोनों ब्राह्मण झगड़ते हुए मेरे पास आये। मै प्रतिग्रहीता ब्राह्मणको एक गऊके बदलेमें एकसौ गऊ देता था, किन्तु वह अस्वीकार करके चला गया। तब मैंने दूसरे ब्राह्मणको उस गऊके बदलेमें एक सहस्र गऊ लेनेको कहा; पर उसने अस्वीकार करके अपनीही गऊ मांगी। उसके पश्चात् जब मैंने उससे सोने चाँदीसे खचित रथ लेनेको कहा, तब वह उसकोभी अस्वीकार करके क्रोध युक्त हो अपने घर चला गया। उसी समय मैं कालवश होकर यमराजके समीप उपस्थित हुआ। यमराजने कहा कि हे महाराज नृग! तुम्हारे पुण्यकी संख्या नहीं है, किन्तु तुमसे कुछ पापभी हुआ है। ब्राह्मणकी गऊ खो जानेसे रक्षा करनेकी तुम्हारी प्रतिज्ञा नष्ट हुई, इस कारण तुमको पाप हुआ और ब्राह्मणस्व ग्रहण करनेसे तुमको दूसरा पाप लगा। तुम पापका फल पहिले अथवा पीछे भोगोगे? मैंने कहा कि मैं पहिलेही पापका फल भोग करूँगा। हे प्रभो! मैं उसी समय पृथ्वीमें गिरा। उस समय धर्मराजने मुझसे कहा कि सहस्र वर्ष पूरा होने पर तुम्हारा पाप कर्म नष्ट होगा; कृष्ण भगवान् तुम्हारा उद्धार करेंगे। मैं गिरगिट रूपसे नीचे शिर करके कूपमें गिर गया। ऐसा कह राजा नृग गिरगिट रूप छोड़ कर दिव्य विमानमें बैठ सुरलोकमें चले गये (यह कथा श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्धके ६४ वें अध्यायमें है)।

(१५९ वाँ अध्याय) महर्षि दुर्वासा यह कहा करते थे कि मुझको, जो मैं अल्प अपराधमें बड़ा क्रोध करता हूँ, कौन मनुष्य सत्कार पूर्वक अपने गृहमें रख सकता है। जब किसीने उनका सत्कार नहीं किया, तब कृष्णने अपने निज गृहमें उनका वास कराया। वह कभी सहस्रों आदमियोंके भोजनका सामान अकेलेही भोजन करलेते; कभी बहुत थोडा भोजन करते, कभी हँसते और कभी अकस्मात् रोदन करनेमें प्रवृत्त होजाते थे। उस समय पृथ्वी पर दुर्वासाके समान अवस्थावाला कोई मनुष्य न था। उसने अपने वास गृहमें जाकर बिछाई हुई शय्या और अलंकृत कन्याओंको जलादिया। एक दिन दुर्वासाने कृष्णसे कहा कि मुझको भोजनके लिये शीघ्रही पायस दो। कृष्णने उनको उष्ण पायस दिया। दुर्वासाने कुछ पायस भोजन करके कृष्णसे कहा कि तुम इस पायसको अपने सारे अंगमें लगाओ। कृष्णने जूठे पायसको अपने शरीर और मस्तकमें लगा लिया। तब दुर्वासाने रुक्मिणीको

देख कर उसके शरीरमें पायस लगाया। उसके पश्चात् वह पायसलिप्तांगी रुक्मिणीको शीघ्रही रथमें जोड़कर रथमें बैठ कृष्णके गृहसे बाहर निकले। उन्होंने कृष्णके सन्मुखही बालिका रुक्मिणीको कोडेसे मारा और प्रशस्त राजमार्गसे रथको चलाया। जब रुक्मिणी थक गई, तब दुर्वासाने क्रुद्ध होकर रथको वेग पूर्वक दौड़ाया। उसके पश्चात् वह अत्यन्त क्रोध युक्त हो रथसे उतरकर ऊर्ध्व मार्गसे दक्षिणकी ओर दौड़े। उस समय कृष्ण, जिनके अङ्गमें पायस लगा हुआ था, मुनिके पीछे पीछे दौड़कर उनसे विनय करने लगे कि हे भगवन्! आप मुझपर प्रसन्न होवें। तब महर्षि दुर्वासा प्रसन्न होकर बोले कि हे कृष्ण! तुमने क्रोधको जीत लिया है, मैं तुम पर प्रसन्न हूँ, तुम्हारी टूटी, जली अथवा नष्ट हुई सब वस्तु जैसीकी तैसी तथा उससे भी उत्कृष्ट हो जायँगी। तुम्हारे शरीरके जितने भागमें पायस लगा है, वह अभेद्य हो जायगा, किन्तु तुम्हारे दोनों पदतलमें पायस नही लगा, मुझको इसी बातका संशय है। उसके पश्चात ब्राह्मणने रुक्मिणीसे कहा कि हे सुन्दरी! तुम्हारा यश और कीर्ति लोककी सब स्त्रियोंसे श्रेष्ठ होगी। कृष्णकी सोलह सहस्र स्त्रियोंमे तुम वरिष्ठा होगी, इत्यादि। उसी समय कृष्णका शरीर श्रीसम्पन्न होगया। दुर्वासाने जिन जिन वस्तुओंको तोड़ फोड़ दिया था तथा जलाया था, सब नई हो गई। दुर्वासा उसी स्थानमें अन्तर्द्धान होगये। (१६० वाँ अध्याय) रुद्रने दुर्वासा नामक वीर्यवान् ब्राह्मण बनकर कृष्णके गृहमे बहुत काल तक निवास करके दुःसह व्यवहार किया था।

(मौषल पर्व, ७ वाँ अध्याय) प्रभासमें द्वारिकाके क्षत्रियोंके निवास होनेके पश्चात् द्वारिका वासियोंके अर्जुनके साथ जानेके लिये नगरसे बाहर होने पर समुद्रने समस्त द्वारिका नगरीको अपने जलमें डुबा दिया। (८ वाँ अध्याय) ५ लाख यदुवंशी वीर परस्पर लड़कर प्रभासमें मरगये थे (यदुवंशियोंके निवासकी कथा सोमनाथपट्टनकी प्राचीन कथामें देखिये)।

आदिब्रह्मपुराण—(७ वाँ अध्याय) राजा आनर्तका रेवत नामक पुत्र आनर्त देशका राजा हुआ। कुशस्थली उसकी राजधानी हुई।

देवीभागवत—(७ वां स्कंध, ७ वाँ अध्याय) शर्यातिका पुत्र आनर्त और आनर्तका पुत्र रेवत था, जिसने समुद्रके भीतर कुशस्थली नामक पुरी बसाई वह आनर्त आदि देशोंका राज्य करने लगा। उसके १०० पुत्र हुए और रेवती नामकी एक कन्या हुई। (८ वाँ अध्याय) राजा रेवत अपनी पुत्रीके लिये वर पूछनेके अर्थ पुत्रीके साथ ब्रह्मलोकमें गये। उस समय ब्रह्माकी सभामे गन्धर्वगणोंका गान होरहा था। जब गन्धर्वोंका गाना समाप्त हुआ, तब रेवतने अपना अभिप्राय ब्रह्मासे कह सुनाया। ब्रह्माने कहा कि हे राजेन्द्र! जिन राजपुत्रोंको तुमने घर बनानेका निश्चय किया था, वे अपने पिता, पुत्र तथा बांधवोंके सहित मर गये। अब सत्ताईसवां द्वापर बीतता है। तुम्हारे वंशके सब लोग मृतक होगये। दैत्योंने तुम्हारी पुरीको लूट लिया। अब वहाँ मथुरापुरीके सोमवंशी राजा उग्रसेन राज्य करते हैं। श्रीकृष्णने सब यादवोंको द्वारिकामें बसाया है। वहाँके वसुदेवके पुत्र बलदेवजी तुम्हारी कन्याके योग्य वर हैं। ऐसा ब्रह्माका वचन सुन राजा रेवत द्वारिकामें आये और रेवती नामक अपनी कन्याको बलदेवजीको समर्पण करके बदरिकाश्रममें चले गये।

श्रीमद्भागवत—(दशम स्कन्ध, ५० वाँ अध्याय) जब कृष्णने मथुराके राजा कंसको मारडाला, तब अस्ति और प्राप्ति नामक उसकी दोनों स्त्रियोंने अपने पिता मगध देशके राजा जरासन्धसे अपना दुःख जा सुनाया। जरासन्धने २३ अक्षौहिणी सेना लेकर मथुराको चारों ओरसे घेर लिया (२१८७० हाथी, २१८७० रथ, ६५६१० घोड़े और १०९३५० पैदलकी एक अक्षौहिणी होती है)। बडी लडाईके अन्तमें वह कृष्ण आदि यदुवंशियोंसे परास्त होकर मगध देशको लौट गया। इसी भांति जरासन्धने २३ अक्षौहिणी सेना लेकर १७ बार मथुरापर आक्रमण किया; किन्तु परास्त होकर सत्रहबार उसको लौट जाना पड़ा। अठारहवीं बार जरासन्धके आक्रमण करनेसे पहिलेही नारदकी प्रेरणासे कालयवनने आकर मथुराको घेर लिया। उस समय कृष्णने विचार किया कि महाबलवान् कालयवन मथुराको घेर रहा है और कल अथवा परसों जरासन्ध भी अवश्य आवेगा, इस लिये एक अगम किलेमें यादवोंको रखकर कालयवनका वध करना चाहिये। ऐसा विचार कर उन्होंने समुद्रके बीचमें १२ योजनका किला बनाकर उसमें द्वारिका नामक आश्चर्य नगर बनाया और अपने योगके प्रभावसे मथुरा वासियोंको उस नगरमें पहुँचा दिया। उसके पश्चात् वह द्वारिकासे मथुरामें आकर कालयवनके सामने होकर मथुराके द्वारसे बाहर निकले। (५१ वाँ अध्याय) कालयवन श्रीकृष्णको पकड़नेके लिये उनके पीछे दौड़ा, जो पर्वतकी गुफामें जाकर राजा मुचकुन्दकी दृष्टिसे जल गया। (५२ वाँ अध्याय) कृष्णने मथुरामें आकर कालयवनकी सेनाको मारकर उसका सब धन द्वारिकामें भेज दिया। उसी समय जरासन्ध फिर २३ अक्षौहिणी सेना लेकर मथुरापर चढ़ आया। कृष्ण और बलदेव वहाँसे शीघ्र भागे। जरासन्ध उनके पीछे दौडने लगा। दोनों भाई दूर जाकर प्रवर्षण नामक पर्वतपर चढ़ गये। जरासंध उस पर्वतके चारों ओर आग लगा कर चला गया। कृष्ण और बलदेव पर्वतसे कूद कर, द्वारिकामें चले गये (जरासंध और कालयवनके भयसे कृष्णको द्वारिका बसानेकी कथा आदि ब्रह्मपुराणके ८७ वें अध्यायमें और विष्णुपुराण—पांचवे अंशके २३ वें अध्यायमें है)।

(५४ वें अध्यायसे ५८ वें अध्याय तक) कृष्णकी ८ पटरानी थीं;—(१) विदर्भ देशके कुण्डनपुरके राजा भीष्मककी पुत्री रुक्मिणी; (२) जाम्बवानकी पुत्री जाम्बवती, (३) द्वारिकाके सत्राजितकी पुत्री सत्यभामा, (४) सूर्यकी पुत्री कालिन्दी, (५) उज्जैनके रहनेवाले वसुदेवकी बहिन राजाधिदेवीकी पुत्री मित्रविन्दा, (६) अयोध्याके राजा नग्नजितकी कन्या सत्या, जिसको नाग्नजिती भी कहते हैं, (७) कैकय देशमें रहनेवाली वसुदेवकी बहिन श्रुतिकीर्तिकी पुत्री भद्रा और (८) मद्र देशके राजाकी पुत्री लक्ष्मणा (देवीभागवत—चौथे स्कन्धके २४ वें अध्यायमें भी यही ८ पटरानी लिखी हुई हैं)।

मत्स्यपुराण—(४७ वाँ अध्याय) यादवोंकी संख्या ३ करोड़ थी; उनमेंसे ६० हजार देवताओंके अंशसे बड़े बलवान् थे।

विष्णुपुराण—(५ वाँ अंश, ३८ वाँ अध्याय) कृष्णके परम धाम जानेके पीछे समुद्रने रुक्मिणीके महलको छोड़कर सारी द्वारिका नगरीको अपने जलमें डुबा दिया। उस महलको समुद्र अबतक नहीं बोर सकता; क्यों कि वहाँ विहार करनेके लिये कृष्ण भगवान् नित्य आते हैं (यह कथा श्रीमद्भागवत—एकादश स्कन्धके ३१ वें अध्यायमें ब्रह्मवैवर्त्तपुराण—कृष्ण जन्म खण्डके १२९ वें अध्यायमें और आदिब्रह्मपुराणके ९९ वें अध्यायमें है)।

पद्मपुराण-(पातालखण्ड १७ वाँ अध्याय) द्वारावतीकी गोमती नदीका जल साक्षात् ब्रह्म रूप है। वहाँके सब पाषाण और सब मनुष्य चक्रांकित है। वहाँ सब लोगोंके पालक त्रिविक्रम भगवान् सर्वदा निवास करते हैं। (७९ वाँ अध्याय) जो मनुष्य द्वारावतीके गोमतीचक्रसे युक्त १२ शालग्राम शिलाका पूजन करता है, वह वैकुण्ठमें जाकर पूजित होता है। जिस स्थान पर द्वारावतीकी शिला रहती है, वह स्थान वैकुण्ठ भवनके तुल्य है; उस स्थानमें मरने वाले मनुष्य विष्णु लोकमें जाते हैं। (९५ वाँ अध्याय) जो पुरुष ३ रात्रि द्वारिकामें निवास करके गोमतीके जलमें स्नान करता है वह धन्य है। (स्वर्गखण्ड, ५७ वाँ अध्याय) विराट् पुरुषके ७ धातु सातों पुरियां हैं।

(उत्तरखण्ड, २९ वाँ अध्याय) मनुष्य गोपीचन्दनको अपने अङ्गमें लगानेसे ब्रह्महत्याके पापसे विमुक्त हो जाता है। गोपीचन्दन गङ्गाजलके समान पवित्र है, उसका तिलक लगानेसे चाण्डालभी शुद्ध हो जाता है। (६७ वाँ अध्याय) जिस घरमें गोपीचन्दन रहता है, वह गृह विष्णुका मन्दिर है। जो मनुष्य गोपीचन्दनका तिलक लगाता है, वह विष्णुलोकमें निवास करता है। ब्राह्मण और गऊको मारने वालाभी गोपीचन्दन शरीरमें लगानेसे तत्कालही सब पापोंसे विमुक्त हो जाता है।

गरुडपुराण-(पूर्वार्द्ध ६६ वाँ अध्याय) जिस स्थानमें द्वारिका चक्र और शालग्राम शिला दोनों रहते हैं, वह स्थान मुक्तिदायक हो जाता है। द्वारिका तीर्थ सम्पूर्ण पापोंका नाश करने वाला और भुक्ति मुक्तिका देने वाला है। (प्रेतकल्प, २७ वाँ अध्याय) जिस स्थानमें शालग्राम शिला और द्वारिकाकी शिला अर्थात् गोमतीचक्र रहता है, वह स्थान निःसंदेह मुक्तिका देने वाला है। अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, काञ्ची, अवंतिका और द्वारिका ये सातों पुरियां मोक्ष देने वाली हैं।

स्कन्दपुराण-(काशीखण्ड, १०४ वाँ अध्याय) द्वारिकाके चारोओर चारों वर्णोंके प्रवेश करनेके लिये द्वार बने हुए हैं, इसी कारणसे तत्त्ववेत्ताओंने उसको द्वारावती कहा है।

वाराहपुराण-(१४३ वाँ अध्याय) द्वारिकामे समुद्रके पास पंचसर नामक तीर्थ है, जिसमें स्नान करनेसे सब पाप छूट जाते हैं।

बेटद्वारिका।

गोमतीद्वारिकासे लगभग २० मील पूर्वोत्तर कच्छकी खाड़ीमें बड़ोदाके महाराजके अधीन बेटद्वारिका नामक छोटा टापू है। गोमतीद्वारिकासे एक सड़क बड़वालागांव और रामड़ा होकर और दूसरी एक राह नागेश्वर गाँव और गोपीतालाब होकर बेटद्वारिकाकी खाडीके पास गई है। बहुतेरे यात्री रामड़ा होकर बेटद्वारिका जाते हैं और गोपी तालाब होकर गोमतीद्वारिकामें लौट आते हैं और बहुतेरे यात्री गोपीतालाबकी राहसे जाकर रामड़ाकी सड़कसे गोमतीद्वारिका लौट आते हैं। गोमती द्वारिकासे १ मील पर रुक्मिणीजीका एक छोटा मन्दिर, ३½ मील पर टूटा हुआ शहरपनाहके भीतर बड़वाला नामक एक बडा गाँव, जिसमें १ धर्मशाला, १ सदावर्त और अनेक धनी महाजन हैं, ५ मील पर १ बावली, ६½ मील पर १ गाँव और १ पोखरा, ७½ मील पर १ पोखरा, ८½ मील पर १ गाँव, ९½ मील पर एक बावली और १४ मील पर

बेटद्वारिकाकी खाड़ीके पास टूटा हुआ शहरपनाहके भीतर रामड़ा नामक बड़ा गाँव है। गोमतीद्वारिकासे रामड़ा तक सड़कके बगलोंमें मीलके पत्थर लगे हैं। सड़कके आस-पासकी भूमि उपजाऊ नहीं है, कांटेदार सीज और नागफेनी बहुत देख पड़ती हैं, जिनको वहांके लोग सुखाकरके चुल्हामें जलाते हैं। सड़कके किनारोंपर जगह जगह पीपल, वट आदिके वृक्ष लगाये गये हैं; किन्तु उनमें कोई हरा भरा अथवा सीधा खड़ा नहीं है। वे सब एकही दिशामें झुके हुए हैं। जाने आनेके लिये किरायेकी बैलगाड़ी बहुत मिलती हैं। एक गाड़ीका एक तरफका महसूल लगभग एक रुपया लगता है। गोपीतालाबकी राहसे गोमती-द्वारिकासे १० मीलपर नागेश्वर गाँव, १२ मीलपर गोपीतालाब और लगभग १५ मीलपर बेटद्वारिकाकी खाड़ी है।

रामड़ामें शहरपनाहके बाहर सड़कके पास १ धर्मशाला और एक सदावर्त है। अनेक यात्री विशेष करके दूरके साधुलोग रामड़ामें जाकर शंख, चक्र आदिके छापसे तप्त मुद्रांकित होते हैं। वहीं द्वारिकाका छाप कहलाता है। यात्रियोंके लिये वहाँ छाप लेनेकी कोई विधि अथवा नियम नहीं है। रामड़ासे करीब ६ मील पूर्वोत्तर समुद्रके एक छोटे टापूके भीतर बेट-द्वारिका नामक गाँव है। खाड़ीमें ६ मील नावपर जाना होता है। नाव पालके सहारेसे चलती है। नावका महसूल प्रति आदमीका आध आना लगता है; किन्तु सरकारी महसूल, जो बड़ोदाके महाराजके ठीकेदारको देना होता है, ब्राह्मण और साधुओंको प्रति आदमी आध आना और अन्य लोगोंको प्रति मनुष्य दो आना देना पड़ता है। लौटनेके समय भी इतनाही नावका भाड़ा तथा सरकारी महसूल लगता है।

बेटद्वारिकाका टापू दक्षिण—पश्चिमसे पूर्वोत्तर तक लगभग ७ मील लम्बा है; किन्तु सीधी लाइनमें नापनेसे उसकी लम्बाई ५ मीलसे अधिक नहीं है। उसके दक्षिण—पश्चिमका आधा भाग लगभग ६० फीट ऊँचा पत्थरीला है। पूर्वोत्तरके नोकको लोग हनूमान अन्त-रीप कहते हैं। क्योंकि उस अन्तरीपके पास उस टापूमें हनूमानका एक मन्दिर है। उस टापूमें खास करके मन्दिरोंके सम्बन्धी ब्राह्मण वसते हैं। बेटद्वारिकाके टापूमें किसी चीजकी पैदावार नहीं है, जगह जगह सीज तथा नागफेनी बहुत लगी हैं। बेटद्वारिका श्रीकृष्णका विहारस्थल माना जाता है। एक कहानी प्रसिद्ध है कि संवत् १२७२ (सन् १३१५ ई०) में डाकौरका बुढ़ान भक्त गोमतीद्वारिकाके रणछोड़जीकी प्रतिमाको डाकौरमें लेगया। जब वहाँके पुजारी डाकौरमें गये, तब रणछोड़जीने उनको स्वप्न दिया कि हम यहांही रहेंगे। गोमतीद्वारिकामें गोमतीगङ्गाका माहात्म्य होगा। लाडुआ गाँवके पास पृथ्वीके भीतर मेरी एक मूर्त्ति है; तुम लोग उसको निकालकर बेटद्वारिकामें स्थापित करो। पुजारियोंने भगवा-न्की आज्ञानुसार लाडुआ गाँवसे मूर्त्तिको लाकर बेटद्वारिकामें स्थापित किया। एक दूसरी मूर्त्ति गोमतीद्वारिकामें स्थापित की गई (चौबीसवें अध्यायमें डाकौरकी कथामें देखिये)।

टापूके उत्तरके किनारेके पास बेटद्वारिका नामक एक गाँव है, जिसमें यात्रियोंके जरूरी कामकी सब वस्तु मिलती हैं; कई एक धर्मशालायें बनी हैं, कई सदावर्त लगे हैं और रणछोड़सागर, रत्न तालाब, कचौरी तालाब, शंखतालाब इत्यादि जलाशय और बहुतसे देव-मन्दिर बने हुए हैं। कृष्णभगवान्के महलके मन्दिरोंके अतिरिक्त, जिनका नकशा यहाँ बना है;—

बेटद्वारिकाका मंदिर।

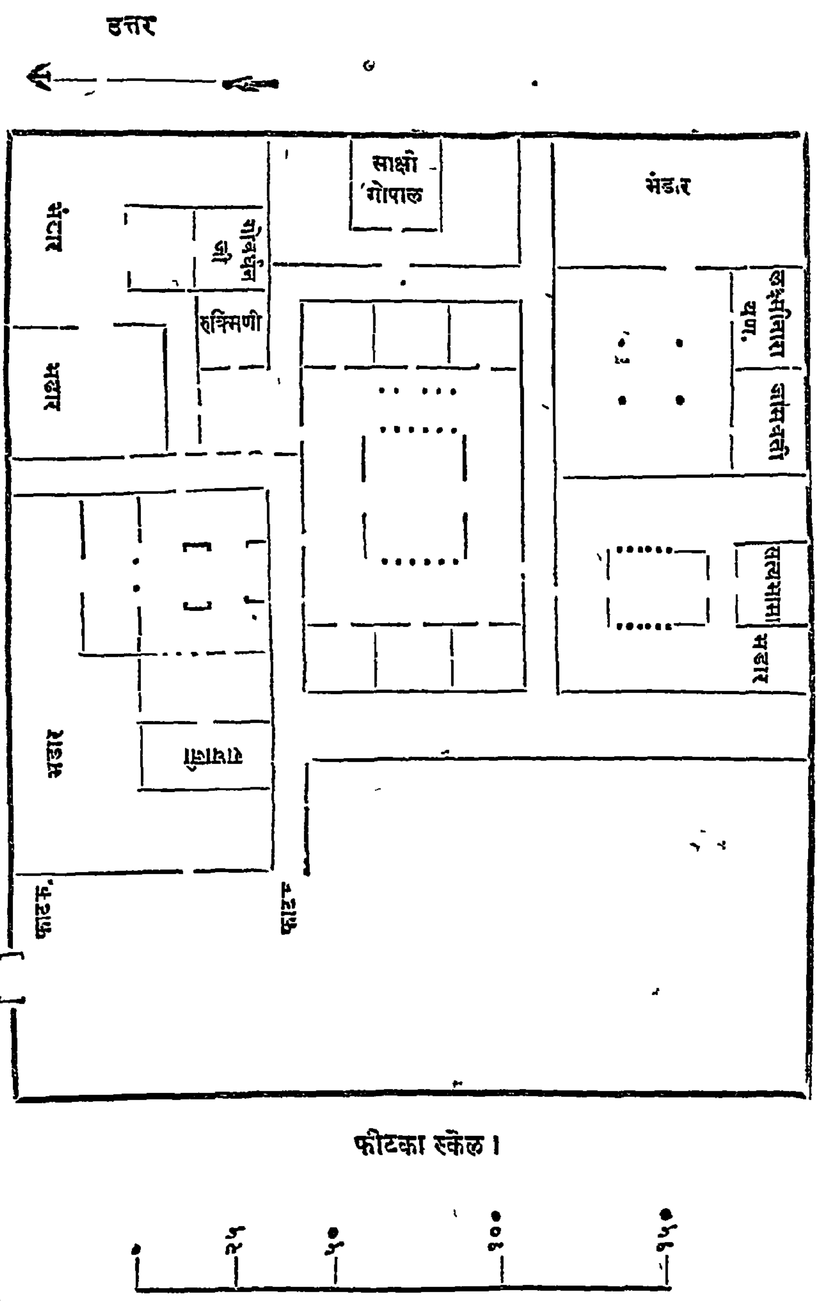
उत्तर
साक्षी गोपाल
भंडार
भंडार
गोवर्धन जी
रुक्मिणी
भंडार
जांबवती
सत्यभामा
भंडार
भंडार
फाटक
फाटक
फीटका स्केल।
२५
५०
१००
१५०

• उस टापूमें मुरलीमनोहरका मन्दिर, हनूमानटेकरी, देवीका मन्दिर, नवग्रहका मन्दिर, नीलकण्ठ महादेवका मन्दिर, धिङ्गणेश्वर, महादेवका मन्दिर, पञ्चेश्वर महादेवका मन्दिर, कचौरी तालाबके पास रामचन्द्रका मन्दिर और शंख तालाबके किनारेपर शंखनारायणका मन्दिर है। जलाशयोंमें रणछोड़सागर, जो महलके मन्दिर और शंखोद्धारके बीचमें है, प्रधान है, उसके चारों बगलोंमें दीवार बनी है और जगह जगह घाट बने हैं। बेटद्वारिकामें हाजीपीरका एक रोजा है। बेटद्वारिकाकी छोटी परिक्रमा ६ मीलकी है। कुछ लोग जलमार्गसे नाव द्वारा टापूके चारोंओर घूमकर टापूकी परिक्रमा करते है।

सन् १८५७ के बलवेके अन्त सन् १८५९ में अङ्गरेजी गवर्नमेंटने बाघेरोंसे बेटद्वारिकाका टापू छीन लिया और उसका किला और वहांके प्रधान मन्दिरोंको उड़ा दिया। सन् १८६१ में बड़ोदाके महाराजने टूटे हुए मन्दिरोंको बनवाकर मन्दिरोंकी देव मूर्त्तियोंको; जो मन्दिर उड़ानेके पहिलेसे निकालकर रक्खी गई थीं, विधिपूर्वक संस्कार करवा करके पुनः स्थापित करवाया। तबसे धार्मिक भक्तोंने मन्दिरोंकी बड़ी उन्नति की है तथा उनके ऐश्वर्यको बहुत बढ़ाया है।

कृष्णके महल—बेटद्वारिकामें एक बड़े घेरेके भीतर दो मञ्जिले तीन मंजिले ५ महल बने हैं, जिनका नकशा यहाँ बनाया गया है। उत्तरके बड़े फाटकसे होकर भीतरके पश्चिमवाले छोटे फाटकके पास जाना होता है। वहाँ बड़ोदाके महाराजका कर्मचारी अथवा ठीकेदार प्रति यात्रीसे दो रुपये 'कर' लेता है। बिना 'कर' दिये हुए कोई उस फाटकके भीतर जाने नही पाता है। भीतर राजाओंके महलकी तरहके अलग अलग ५ महल बने है। गोमतीद्वारिकाके समान वहाँ भी मन्दिरोंके देवताओंके चरण छूनेका 'कर' पुजारियोंको देना होता है। जो यात्री नियमित कर नहीं देता वह बाहरसे देवताओंका दर्शन करता है। जो यात्री अपनी ओरसे वहाँके देवताओंको स्नान करवाता है, उसको ७ रुपया राजाको देना पड़ता है और महापूजाका 'कर' अलग लगता है।

भीतरके फाटकसे सीधे पूर्व जाने पर दहिने ओर श्रीकृष्ण भगवान्के खास महलका द्वार मिलता है। उसका घेरा पूर्वसे पश्चिमको लगभग ९० फीट लम्बा और उत्तरसे दक्षिणको लगभग ६० फीट चौड़ा है। घेरेके पूर्व बगलमें उत्तर प्रद्युम्नजीका मन्दिर, उससे दक्षिण रणछोड़जीका मन्दिर और उससे दक्षिण टीकम अर्थात् त्रिविक्रमजीका मन्दिर है। इन मन्दिरोंके आगे दोहरी दालान है। घेरेके पश्चिम बगलवें उत्तर पुरुषोत्तमजीका मन्दिर, उससे दक्षिण देवकी माताका मन्दिर और उससे दक्षिण माधवजीका मन्दिर है। तीनों मन्दिरोंके आगे दालान है। घेरेके दक्षिण बगलमें पश्चिम ओर अम्बाजीका और उससे पूर्व गरुड़का मन्दिर और मध्यमें छोटा आँगन है। प्रद्युम्नजी, रणछोड़जी, टीकमजी और देवकी माताके मन्दिरोंके किवाड़ों और सिंहासनोंमें चाँदीके पत्तर जड़े हुए है। मन्दिरोंके छतसे झाड़ और कुण्डिये लटके है। गोमती द्वारिकाके रणछोडजी, टीकमजी, प्रद्युम्नजी, देवकी माता, माधवजी और पुरुषोत्तमजीकी मूर्त्तियोंके समान वहाँकी मूर्त्तियोंकी झाँकी भी मनोरम है। अम्बा देवीकी मार्बुलकी प्रतिमा है। मन्दिरों और दालानोंमे श्वेत और नीले मार्बुलका फर्श है। मन्दिरके भीतरसे ऊपर दो मंजिलेको सीढ़ियां गई है। वहाँ भगवान्का सेजमहल

है, झूला लगा है, चोपड़ खेलनेका स्थान बना है और कमरेके चारों ओरकी दीवारमें बड़े बड़े आइने लगे हुए हैं। वहाँके मन्दिरों, कमरों तथा दालानोंकी सजावट देखने लायक है।

रणछोड़जी अर्थात् कृष्णके महलके दक्षिण सत्यभामा और जाम्बवतीका महल; पूर्व साक्षीगोपालका मन्दिर और उत्तर रुक्मिणी तथा राधाका महल है। जाम्बवतीके महलमें जाम्बवतीके मन्दिरके पूर्व लक्ष्मीनारायणका मन्दिर और रुक्मिणीके महलमें रुक्मिणीके मन्दिरसे पूर्व गोवर्द्धननाथका मन्दिर है। सब मन्दिरोंके किवाडोंमें चाँदीके पत्तर लगे हैं, छतोंमें झाड लटके हैं, मूर्त्तियोंकी झाँकी मनोरम है; मन्दिरोंके आगे सुन्दर जगमोहन बने हैं और मन्दिरो तथा जगमोहनोंमें मार्बुलका फर्श है। सत्यभामा, जाम्बवती, रुक्मिणी और राधा इन चारोंके भण्डार, कारखाने तथा भण्डारके मालिक अलग अलग हैं। चारों महलोंके भण्डारोंसे भांति भांतिकी भोगकी सामग्री नियमित समयोंपर बनाकर रणछोड़जीके मन्दिरमें भेजी जाती हैं। वहाँ दिन रातमें १३ वार भोग लगता है। राधाजीके महलसे सत्यभामा, जाम्बवती और रुक्मिणीके मन्दिरोंमे भी भोग लगानेकी सामग्री तैयार करके भेजी जाती है। बेटद्वारिकामें गोमतीद्वारिकासे अधिक भोगरागका प्रबंध रहता है। अनेक यात्री अपने खर्चसे भोग लगवानेके लिये भण्डारमें रुपया देते हैं। नित्यके नियमित भोगके खर्चके लिये बड़ौदाके महाराज और काठियावाडके ठाकुर, सेठ इत्यादि धार्मिक लोग रुपया देते हैं। भोग लगी हुई सामग्री मोल मिल सकती है। दिन रातमें ९ बार आरती लगती है। नित्य मंदिरोके पट १२ बजे दिनमें बन्द होजाते हैं और ४ बजे खुलकर फिर रातमे ९ बजेके बाद बन्द होते हैं।

शंखोद्धार—कृष्णके महलसे लगभग $1\frac{1}{2}$ मील दूर बेटद्वारिकाके टापूके भीतर शंखोद्धार नामक तीर्थमे शंख तालाब नामक पोखरा और शंखनारायणका सुन्दर मन्दिर है। मार्गमे रणछोड़सागर मिलता है। मन्दिर और जगमोहनमें श्वेत और नीले मार्बुलका फर्श और सिंहासन तथा मन्दिरके किवाडोंमें चाँदीके पत्तर लगे हैं। पण्डे लोग कहते हैं कि कृष्ण भगवान्ने इस स्थान पर शंखासुरका उद्धार किया था इसी लिये इसका नाम शंखोद्धार तीर्थ हुआ। यात्री लोग शंख तालावमें स्नान करके शंखनारायणका दर्शन करते हैं।

गोपीतालाव–जो यात्री रामडाकी सडकसे बेटद्वारिका जाता है वह गोपीतालाव होकर गोमतीद्वारिका लौट आता है। बेटद्वारिकामें नावपर सवार हो गोपीतालावकी ओर खाड़ीके किनारेपर नावसे उतरना होता है। खाडीसे लगभग २ मील पश्चिम-दक्षिण गोमतीद्वारिकाके मार्गमें गोमती द्वारिकासे १३ मील पूर्वोत्तर गोपीतालाव नामक कच्चा सरोवर है। मार्गमें पीले रङ्गकी भूमि मिलती है। गोपीतालावके भीतरकी पीत रङ्गकी मिट्टी पवित्र गोपीचन्दन है। बहुतेरे यात्री गोपीतालावसे गोपीचन्दन निकालकर और बहुतेरे लोग गोपीचन्दनके पांसे तथा गोले, जो वहाँके लोग बनाकर बेंचते हैं, मोल लेकर अपने घर ले जाते हैं। इस तालावमें स्नान करनेका "कर" एक आना लगता है। गोपीतालावके पास एक छोटी बस्ती, २ धर्मशाला, छोटी धर्मशालाके पास गोपीनाथका मन्दिर, वल्लभ संप्रदाय वालोंकी एक मठ और २ सदावर्त्त हैं। वहाँ मयूर पक्षी बहुत रहते हैं। गोपीचन्दनके माहात्म्यकी कथा द्वारिकाकी संक्षिप्त कथामें लिखी हुई है।

नागेश्वर—गोपीतालाबसे ३ मील और बेटद्वारिकाकी खाड़ीसे ५ मील दक्षिण-पश्चिम और गोमती द्वारिकासे १० मील पूर्वोत्तर नागेश्वर नामक वस्तीके पास नागेश्वर नामक शिवका छोटा मन्दिर है। मन्दिरके भीतर शिवलिङ्गके पास पार्वतीकी मूर्ति और बाहर नन्दी बैल है। मन्दिर बहुत छोटा है; उसमें कोई पुजारीभी नहीं रहता। वस्तीके पास मयूर बहुत रहते है। अनेक लोग कहते हैं कि शिवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमेंके नागेश-शिवलिङ्ग यही है; किन्तु बहुत लोग नागेश अर्थात् अवढ़ा नागनाथको १२ ज्योतिर्लिङ्गोंमें मानते हैं, जिनका वृत्तान्त भारत-भ्रमणके चौथे खण्डके तीसरे अध्यायमें लिखा गया है। रास्तेमें दो तीन बस्तियां मिलती हैं; जिनके चारोंओर शहर पनाहके स्थान पर कांटेदार लकड़ीके घेरान बने है। नागेश्वरसे दक्षिण-पश्चिम ४ मील पर एक वस्ती, ९ मील पर एक बावली और १० मील पर (खाड़ीसे १५ मील) गोमती द्वारिका है।

सत्ताईसवां अध्याय।

(काठियावाड़में) विरावल और सोमनाथपट्टन।

विरावल।

मैं द्वारिकाके पास आगबोटमें सवार हो विरावल वंदर में उतरा। द्वारिकासे १५० मील (मङ्गरोलके वन्दरगाहसे २० मील) दक्षिण पूर्व और वम्बई शहरसे १९३ मील पश्चिमोत्तर अरबके समुद्रकी एक खाड़ीके पश्चिमी किनारेपर विरावल वन्दरगाह है। लगभग १४ घण्टेमें आगबोट द्वारिकासे पोरबन्दर और मङ्गरोल बन्दरगाह होकर विरावलमें पहुँचते हैं। एक आदमीके दूसरे दर्जेका महसूल २ रुपया और तीसरे दर्जेका १ रुपया लगता है। द्वारिकासे वम्बईका महसूल इससे दूना है। द्वारिकाके कोई कोई यात्री पोरबन्दरमें, कोई विरावलमें और बहुतसे यात्री बम्बईमें लौट कर आगबोटसे उतरते हैं और रेलगाड़ीमें सवार होते हैं। बम्बई हातेके काठियावाड़में जूनागाढ़ राज्यके अन्तरगत (२० अंश, ५३ कला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, २६ कला पूर्व देशान्तरमें) सोमनाथके मन्दिरसे २½ मील पश्चिमोत्तर विरावल एक सुन्दर कसबा तथा प्रसिद्ध बन्दरगाह है, जिसको उस देशके अधिक लोग विरोवल पट्टन कहते है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय विरावल कसबेमें १५३३९ मनुष्य थे अर्थात् ७२४५ मुसलमान, ६९४९ हिन्दू, ११२४ जैन, १५ क्रस्तान और ६ पारसी।

विरावल कसबा पक्की दीवारसे घेरा हुआ है। बन्दरगाहके लाइट हाउससे ¾ मील दूर कसबेकी दीवारके पासही पश्चिम रेलवे स्टेशन है। कसबेके उत्तर देवक नदी बहती है। एक धर्मशाला रेलवे स्टेशनके पास और दूसरी धर्मशाला कसबेकी दीवारोंके भीतर है। कसबेमें दो तीन सदावर्त लगे हैं। कसबेके अधिक मकान पत्थरके मुडेरेदार हैं। कसबेसे लगभग २ मील पश्चिमोत्तर समुद्रके पास जालेश्वर महादेवका मन्दिर है। हालमें विरावल बन्दरगाहकी बड़ी उन्नति हुई है। मसकट, करांची और बम्बईके साथ बड़ी तिजारत होती है।

विरावलसे २० मील पश्चिमोत्तर मङ्गरोल एक कसवा तथा वन्दरगाह है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय १३००५ मनुष्य थे। उसमें जूनागढ़को कर देनेवाला एक नव्वाब रहता है और एक उत्तम मसाजिद है।

सोमनाथपट्टन।

विरावलसे २½ मील दक्षिण-पूर्व बम्बई हातेके काठियावाड़ प्रायद्वीपके दक्षिण किनारेपर (२२ अंश, ४ कला, उत्तर अक्षांश और ७१ अंश, २६ कला पूर्व देशान्तरमें) खाड़ीके पूर्वी किनारेके पास जूनागढ़के राज्यमें सोमनाथपट्टन एक कसवा है, जिसको देवपट्टन; प्रभासपट्टन, और पट्टनसोमनाथ भी कहते हैं। उसका नाम महाभारत तथा पुराणोंमें प्रभास लिखा है। विरावल तक रेलगाड़ी और आगबोट जाते हैं (विरावलमें देखिये)। विरावलमें सोमनाथपट्टन जानेके लिये किरायेकी घोड़ागाड़ी तथा बैलगाड़ी मिलती हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सोमनाथपट्टन कसवेमें ६६४४ मनुष्य थे। इनमें अधिक मुसलमान हैं और वहुतसे ब्राह्मण पण्डे रहते हैं। बहुतसे धनी तिजारती लोग अब विरावलमें चले गये हैं।

सोमनाथपट्टन कसवेके चारोंओर पत्थरकी पुरानी दीवार हैं, जिनमे अनेक फाटक बने हुए हैं। पश्चिमके जूनागढ़ नामक फाटकसे कसबेमें जाना होता है। पूर्ववाले नानाफाटकके बाहर मुडेरादार एक बडी धर्मशाला है, जिसमें यात्री लोग ७ दिन तक रह सकते हैं। सोमनाथपट्टनमे नित्य यात्री जाते हैं। कसबेकी दुकानोंपर उनकी आवश्यकीय सब वस्तु मिलती हैं। कसबेमें ताला बहुत तैयार होते हैं, इस कामके लिये वह मशहूर है। सोमनाथपट्टन एक महालका सदर स्थान है। उसमे महालकी कचहरियाँ, चन्द कोठीवाल और तिजारती लोगोंके मकान; एक अस्पताल, एक स्कूल, कई एक मसाजिद, कई एक तालाव और वहुतसे देवमन्दिर हैं। वहाँके मुसलमान प्रवल हैं, वे बार बार वहाँके ब्राह्मणोंसे झगड़ते हैं।

प्राचीत्रिवेणी–"नानाफाटक" के दक्षिणके समुद्रका नाम अग्निकुण्ड है। यात्री लोग प्रथम अग्निकुण्डमें स्नान करके प्राचीत्रिवेणीमें स्नान करते हैं। नानाफाटकसे लगभग ¾ माल पूर्व प्राचीत्रिवेणी है। अग्निकुण्ड और प्राचीत्रिवेणीके वीचमें एक जगह ब्रह्मकुण्ड नामक एक छोटी बावली है, जिसके पास ब्रह्मकमण्डल नामक कूप और ब्रह्मेश्वर शिव लिङ्ग हैं और दूसरी जगह आदि प्रभास और जल प्रभास नामक दो कुण्ड हैं। कसबेके पूर्वके तीन नदियोंके संगमको प्राचीत्रिवेणी कहते हैं। वहाँ पूर्वोत्तरसे हिरण्यानदी, पूर्वसे सरस्वतीनदी और दक्षिण–पूर्वसे कपिला नदी आई है। कपिला सरस्वतीमें, सरस्वती हिरण्यामें और हिरण्या दक्षिण जा करके समुद्रमें मिल गई है। लोग कहते हैं कि इसी सङ्गमके पास श्रीकृष्णका शरीर जलाया गया था। प्राचीत्रिवेणीके पास त्रिवेणी माता, महाकालेश्वर आदि देवता हैं।

पूर्वके स्थान और देवता–प्राचीत्रिवेणीसे पूर्वोत्तर इस क्रमसे स्थान और देवता मिलते हैं,—संगमसे लगभग २०० गज उत्तर सूर्यनारायणका पुराना मन्दिर है, जिसके आधे भागको महमूदने तोड दिया था। उस मन्दिरसे थोड़े आगे जानेपर एक भूवेवरेमें हिङ्गलाजमाताकी मूर्त्तिका दर्शन होता है। उससे आगे एक मन्दिरमें सिद्धनाथ महादेव (खण्डित

शिव लिङ्ग) हैं, जिसके समीप बलदेवजीका मन्दिर और महाप्रभुकी बैठक अर्थात् कृष्णका मन्दिर है। उससे आगे हिरण्यानदीके दहिने किनारेपर एक पतला वटवृक्ष है। उस जगह एक बड़ा वटवृक्ष था, जिसको वहाँके मुसलमानोंने कई बार काट दिया; उसीसे यह वृक्ष निकला है। वटवृक्षके पास एक छोटी कबरगाह और कोठरीके समान दो छोटे मन्दिर हैं। मन्दिरोंमें अब कोई देवता नहीं है। उस स्थानके लिये हिन्दुओं और मुसलमानोंमें झगड़ा चला आता है। मुकदमा चल रहा है। अङ्गरेजी सरकारकी ओरसे इसके विचार करनेके लिये कमीशन बैठा है। वहाँके लोग कहते हैं कि बलरामजी इसी स्थानसे परमधामको गये थे। उस स्थानके पास १ रामचन्द्रका मन्दिर और १ कृष्णका मन्दिर है। उस स्थानसे आगे जाने पर भीमेश्वर महादेवका मन्दिर और मन्दिरसे आगे हिरण्यानदीके तीरपर यादवस्थल नामक स्थान मिलता है। वहाँ नदीके तीरपर 'पत्तलों' के समान लम्बे पत्तेवाला एक प्रकारका घास, जिसके पत्ते पत्तलोंसे अधिक चौड़े होते हैं; जमा हुआ है। लोग कहते है कि इसीका नाम महाभारत तथा पुराणोंमें एरका लिखा है, जिसके पत्ते यदुवंशियोंके नाशके समय अमोघ शस्त्र होगये थे। लोग उस घासको पटेर तथा पान कहते है।

यादवस्थलसे कसबेकी ओर लौटने पर मार्गमें नृसिंहजीका मन्दिर और नानाफाटकके बाहर धर्मशालासे उत्तर ओर गौरीकुण्ड नामक सरोवर, जिसके पास बहुतसे पुराने शिव-लिङ्ग हैं, मिलता है।

इनके अलावे कसबेमें शहरपनाहके भीतर गणेशजी, महाकालीजी, भद्रकालीजी, दैत्यसूदन आदि देवताओंके बहुतसे मन्दिर हैं। रामपुष्कर नामक एक तालाब है, जिसके लिये मुसलमान हिन्दुओंसे झगड़ा करते हैं।

सोमनाथका नया मन्दिर—नानाफाटकसे लगभग २०० गज पश्चिमोत्तर कसबेके मध्य भागमें सोमनाथका नया मन्दिर है, जिसको इन्दौरकी महारानी अहल्याबाईने, जिनका राज्य सन् १७६५ से सन् १७९५ ई० तक था, बनवाया था। वह मन्दिर साधारण कदका शिखरदार है। उसके आगे अर्थात् पूर्व बगलमें सुन्दर जगमोहन बना हुआ है। मन्दिरमें एक शिवलिङ्ग और उसके नीचे १३ फीट लम्बे और इतनेही चौड़े तहखानेमें सोमनाथ शिव लिङ्ग है। मन्दिरके दक्षिण बगलमें तहखानेमें जानेके लिये २२ सीढ़ियाँ बनी हुई है। तहखानेमें १६ स्तम्भ लगे हैं; उसके मध्यमें बड़े अर्घेपर बड़े आकारका सोमनाथ शिवलिङ्ग; पश्चिम बगलमें पार्वतीजी; उत्तर बगलमें लक्ष्मीजी, गङ्गाजी, सरस्वतीजी और पूर्व बगलमें नन्दी हैं। वहाँ दिन रात दीप जलते हैं। मन्दिरके चारों बगलोंमें आँगनके बाद दीवार है। आँगनके पूर्वोत्तरके कोनेके पास गणेशजीका छोटा मन्दिर और पूर्व तथा उत्तर बगलमें दरवाजा है। उत्तरके दरवाजेके बाहर अघोरेश्वर शिवलिङ्ग है। सोमनाथके मन्दिरके आँगनके पूर्व एक बड़ा आँगन है। उसके चारों बगलों पर दो मंजिले मकान और दालान; पूर्व बगलमें सदर फाटक और दक्षिण बगलमें एक खिड़की है। बड़े आँगनके दक्षिण एक छोटा आँगन है। सोमनाथके मन्दिरमें चन्द पुजारी रहते है। वहाँ नित्य यात्री जाते हैं।

सोमनाथ का मन्दिर

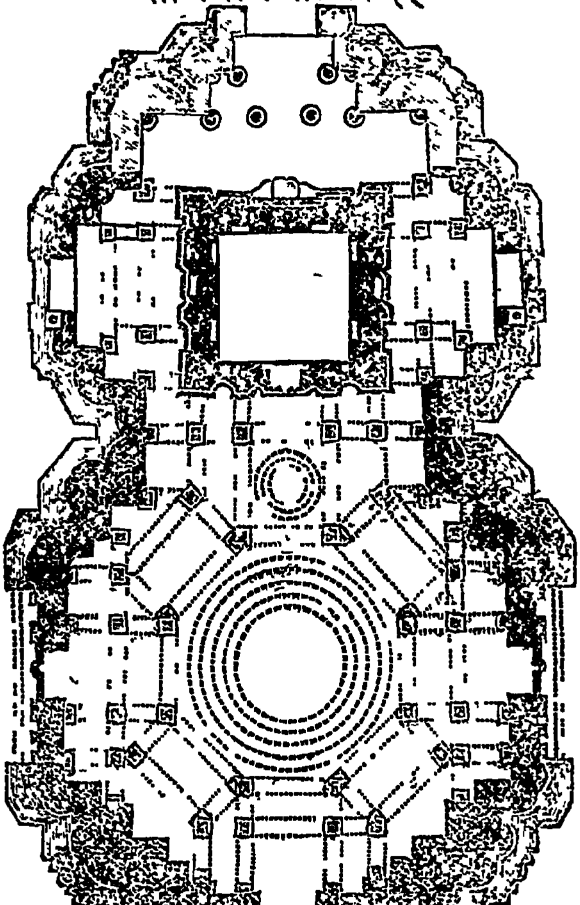

सोमनाथका पुराना मन्दिर—कसबेके पश्चिम समुद्रके तीरपर सोमनाथका पुराना मन्दिर है, जिसको सन् १०२४ में गजनीके महमूदने लूटा था। वह मन्दिर मुसलमानोके अधिकारमे हीन दशामें विद्यमान है। जूनागढ़के नवावके मुसलमान कर्मचारीके पास मन्दिर देखनेके लिये कुजी मिलती है, तथा पेशगाहके दरवाजोके जङ्गलोंसे मन्दिरके भीतरके हिस्से देख पडते हैं। तवाह हालतमें भी मन्दिरकी वनावट देखने योग्य है। गिरनारके नेमिनाथके मन्दिरके समान यह हातेसे घेरा हुआ था, अव केवल मन्दिर, जो काले पत्थरका है, खड़ा है। उसके मार्बुलका काम अब नहीं है। मन्दिरके पेशगाह अर्थात् जगमोहनमे ३ ओर ३ दरवाजे हैं। उसके मध्यमे अठपहले स्थानकी आठो दिशाओमे ओसारे हैं, ऊपर मध्यमें एक वडा और उसके पास ४ छोटे गुम्बज हैं। मध्यके गुम्वजके नीचे ८ स्तम्भ और ८ मेहरावी हैं। पेशगाहके पश्चिम सोमनाथका निज मन्दिर है, जिसमें वड़े आकारका सोमनाथ शिव-

लिङ्ग था। मन्दिर भीतर चौकोना है। उसके बगलोंमे बाहरकी दीवारके भीतर विचित्र ढंगसे स्तम्भ लगे है। मन्दिरके आगे पेशगाहके पश्चिमके भागमे नन्दीके रहनेका स्थान है। मन्दिर और पेशगाहकी छत एकही है। उसपर चढ़नेके लिये बाहरसे सीढ़ियां बनी हुई हैं। मन्दिर और उसके आगेका एक गुम्बज गिर गया है। ऊपरसे मन्दिरके भीतरका भाग देख पड़ता है। मन्दिरके पीछेकी टूटी हुई दीवार पत्थरके ढोकोंसे बना दी गई है। मन्दिर और पेशगाहकी लम्बाई पूर्वसे पश्चिम तक १२० फीट और चौड़ाई उत्तरसे दक्षिण तक ७५ फीट तथा उसका घेरा ३३० फीट है। पेशगाहके तीनो दरवाजोंमें काठके जङ्गले लगा दिये गये हैं। ताला बन्द रहता है।

मन्दिरसे पश्चिम उसके घेरेके पश्चिमकी सीमाके पास एक पुराना ओसारा है, जिसको मुसलमानोंने निमाजगाह बनाया है। मन्दिरसे पूर्व बस्तीके भीतर दो जगह हनूमानजीकी २ बहुत पुरानी मूर्त्तियाँ हैं। पण्डे कहते हैं कि जब महमूदने मन्दिरको लूटा, उससे पहिलेकी ये मूर्त्तियाँ हैं।

बाणतीर्थ–सोमनाथपट्टन और विरावल कसबेके मध्यमें सोमनाथपट्टनसे लगभग १ मील पश्चिमोत्तर समुद्रके तीरपर बाणतीर्थ है। वहाँके लोग कहते हैं कि जरा नामक व्याधने इसी स्थानसे श्रीकृष्णको बाण मारा था, इसी कारणसे इस स्थानका नाम बाणतीर्थ हुआ। बैशाखकी अक्षय तृतीयाको वहाँ स्नानका मेला होता है। वहाँ समुद्रके तीरपर शशिपोषण महादेवका पुराना विशाल मन्दिर है।

बाणतीर्थके पश्चिम समुद्रके तीरपर चन्द्रभागातीर्थ है। वहाँ बालूमें विना अर्घेके कपिलेश्वर शिवलिंग हैं।

भालकतीर्थ—बाणतीर्थसे १½ मील उत्तर और भालपुर बस्तीसे पश्चिम भालकतीर्थ है। वहाँ भालकुण्ड नामक एक पक्का तालाब है। उसके पास पद्मकुण्ड नामक छोटा सरोवर और एक पीपलके वृक्षके पास भालेश्वर शिवलिङ्ग हैं। वहाँके पण्डे कहते हैं कि इसी स्थानपर कृष्णको जरा नामक व्याधका बाण लगा। उन्होंने पद्मकुण्डके जलमें अपने रुधिरको धोया था। इसी स्थानसे वह परम धामको गये। इस स्थान पर कृष्णभगवान्को भाल अर्थात् बाणका अग्र भाग लगा, इसी लिये इस स्थानको लोग भालतीर्थ कहते हैं। यात्री लोग भालकुण्डमें स्नान और पद्मकुण्डमें मार्जन तथा कोई कोई दोनोंमें मार्जन करते हैं।

इतिहास–सन् १०२४ में गजनीके महमूदने सोमनाथका मन्दिर लूटा था; उससे पहिलेका वहाँका ठीक इतिहास मालुम नहीं होता है। कहा जाता है कि ८ वीं सदीमें काठियावाड़का वह भाग चालुक्य वंशके राजाके अधीनके राजपूतोंके अधिकारमें था।

सन् १०२४ में महमूदने सोमनाथपर आक्रमण किया। उसने तीन दिनकी सख्त रुकावटके बाद शहर और मन्दिरको लेलिया। ऐसा पसिद्ध है कि मन्दिरके खर्चके लिये २००० गाँव थे। वहाँ ३०० बाजा वाले नियत थे; ५०० नाचने वाली लड़कियां मुकरर थीं, हजामत बनानेके लिये ३०० नाई रहते थे। मन्दिरके ५६ खम्भोंमें उत्तम जड़ावका काम था। सोनेकी मोटी जंजीरमें घण्टा लटकता था। महमूद मन्दिरसे करोड़ोंकी संपत्ति तथा सोमनाथका प्रसिद्ध फाटक गजनीको लेगया। अङ्गरेज महाराजने सन् १८४२ में

काबुलके जीतनेके पश्चात् सोमनाथके फाटकको लाकर आगरेके किलेमें रक्खा। महमूद सोमनाथपट्टनमें एक मुसलमान गवर्नर रख गया, किन्तु पीछे बाजा जातिके राजपूतोंने सोमनाथपट्टनको अपने अधिकारमें कर लिया, वह तीर्थ स्थान बना। सोमनाथपट्टनके एक मन्दिरके शिलालेखसे जान पडा है कि गार्गेय गोत्रके वाल्मीकराशिके पुत्र त्रिपुरांतकने देवपत्तन अर्थात् सोमनाथपट्टनमें आकर सोमेश्वरके मन्दिरके उत्तर ५ मन्दिर बनवाये और संवत १३४३ (सन् १२८७ ईस्वी) के माघ सुदी पञ्चमीको उनमें माल्हणेश्वर, गण्ड-बृहस्पति महादेव, उमेश्वर, त्रिपुरांतक और रामेश्वर महादेव तथा भैरव, गोरख, हनूमान, सरस्वती और सिद्धिविनायकको स्थापित किया, उसने गण्डबृहस्पति महादेव तथा चालुक्य वंशके राजा सारङ्गदेवके बनाये हुए सारङ्ग तालाबके पास एक बावली बनवाई। लगभग सन् १३०० में अलमखां सिर्कोने फिर सोमनाथपट्टनको उजाड़ किया और समुद्रके किनारेके नागर राज्यको जीता। उस समय सोमनाथपट्टनमें मुसलमानोंका अधिकार हुआ। १४ वीं सदीके आरम्भ महम्मद तुगलकके राज्यके समयसे वहाँ बराबर मुसलमान गवर्नर मुकर्रर होते आये। १७ वीं सदीके अन्त तक सोमनाथके मन्दिरमें पूजा होती थी, किन्तु पीछे औरङ्गजेबने मन्दिरको अच्छी तरहसे बरबाद करादिया। मुगलोंके राज्य निर्बल होनेके समय सोमनाथपट्टनपर कभी मंगरोलके शेष और पोरबन्दरके राणाका अधिकार था। पीछे जूनागढ़के नव्वाबने उसको जीता, तबसे वह उन्हींके वंशजोंके अधीन है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–शंखस्मृति—(१४ वाँ अध्याय) जो कुछ प्रभासमें पितरोंके निमित्त दिया जाता है, उसका फल अक्षय होता है।

महाभारत—(वनपर्व ८२ वाँ अध्याय)–प्रभासतीर्थमें भगवान् अग्नि आपही निवास करते हैं। जो मनुष्य वहाँ स्नान करके ३ दिन वास करता है, वह अग्निष्टोम यज्ञका फल पाता है। सरस्वती और समुद्रके सङ्गमपर जानेसे सहस्र गोदानका फल होता है और स्वर्ग मिलता है। वहाँ समुद्रमें स्नान करके तीन दिन पितर और देवताओंके तर्पण करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल होता है। (८८ वाँ अध्याय) सुराष्ट्र देशमें समुद्रके निकट देवताओका प्रभास नामक तीर्थ है। उसीके पास पिण्डारकतीर्थमें अनेक महर्षि निवास करते हैं। उसी ओर शीघ्र सिद्धि देनेवाला उजयंत पर्वत है।

(शल्यपर्व, ३५ वाँ अध्याय) चन्द्रमा प्रभास क्षेत्रमें जा करके "राजयक्ष्मा" रोगसे छूटकर फिर तेजको प्राप्त हुआ। कथा ऐसी है कि दक्ष प्रजापतिने अपनी २७ कन्याओंका व्याह चन्द्रमाके साथ कर दिया। उनमें रोहिणी अधिक रूपवती थी, इस लिये चन्द्रमा उसीसे अधिक प्रेम करता था। ऐसा देखकर चन्द्रमाकी सब स्त्रियोंने अपने पिता दक्षप्रजापतिसे जाकर कहा कि चन्द्रमा सदा रोहणीके गृहमें रहते हैं। दक्षने दो बार चन्द्रमाको समझा बुझाकर अपनी पुत्रियोंको उनके घर भेजा, परन्तु चन्द्रमा फिर भी रोहिणीसे वैसाही प्रेम करने लगा। जब तीसरी बार वे स्त्रियाँ रुष्ट होकर अपने पिताके घर गई, तब दक्षप्रजापतिने क्रोध करके राजयक्ष्मा रोगको चन्द्रमाके पास भेज दिया। उस रोगके हृदयमें घुसनेसे चन्द्रमा दिन दिन क्षीण होने लगा। उन्होंने इस रोगके छूटनेके लिये अनेक यज्ञादि यत्न भी किये, परन्तु वह न छूटा। जब सब देवताओंने दक्षप्रजापतिके समीप जाकर चन्द्रमाके

आरोग्य होनेकी प्रार्थना की, तब दक्षप्रजापति बोले कि हमारा शाप वृथा नहीं होगा, परन्तु हम उपाय बतला देते हैं, यदि चन्द्रमा सरस्वती तीर्थमें स्नान करे तो उसका तेज फिर वैसाही होजायगा; किन्तु वह आधे मास तक क्षीण हुआ करेगा और आधे महीने तक बढ़ा करेगा। यह पश्चिम समुद्रके तटपर जाकर सरस्वती और समुद्रके सङ्गममें शिवकी पूजा करे, तब फिर इसका तेज बढ़ जायगा। ऋषियोंकी आज्ञासे चन्द्रमा अमावास्या तिथिको सरस्वती तीर्थमें पहुँचा। उस समयसे उसका तेज बढ़ने लगा और उसकी किरणें शीतल होगईं। उस दिनसे चन्द्रमा सदा अमावास्याको प्रभास तीर्थमें स्नान करता है। इसी तीर्थमें चन्द्रमाकी प्रभा बढ़ी, इसलिये इसको लोग प्रभास कहने लगे। (शान्ति पर्वके ३४२ वें अध्यायमें भी यह कथा है)।

(स्त्री पर्व, २५ वाँ अध्याय) धृतराष्ट्रकी स्त्री गान्धारीने कहा कि हे कृष्ण! तुमने सामर्थ्य रहनेपर भी कौरव और पांडवोंको युद्ध करनेसे निवारण नहीं किया, इस लिये मेरे शापसे तुम भी अपनी जातिका नाश करोगे। तुम अबसे छत्तीसवें वर्ष अपने पुत्र, पौत्र, जाति और बांधवोंसे हीन होकर अनाथके समान वनमें दुष्ट उपायसे मारे जावोगे। जैसे कुरुकुलकी स्त्रियाँ रोती फिरती हैं; ऐसेही तुम्हारी स्त्रियाँ पुत्र और बान्धवोंसे हीन होकर रोवेंगी।

(मौशल पर्व्व, प्रथम अध्याय) युधिष्ठिरके राज्य मिलनेके छत्तीसवें वर्षमें वृष्णिवंशियोंमे बहुतही दुर्नीति उपस्थित हुई। वे लोग एरकामें लगे हुए मूशल-कणके द्वारा परस्परकी मारसे विनष्ट हो गये।

एक समय सारण प्रभृति वीरगण विश्वामित्र, कण्व और नारद मुनिको द्वारिका नगरीमें आये हुए देखकर साम्बको स्त्रीकी भांति सज्जित करके बोले कि हे महर्षिगण! यह पुत्राभिलाषिणी भार्य्या क्या प्रसव करेगी। ऐसा सुनके महर्षिवृन्द अत्यन्तही रुष्ट हुए। उन्होंने कहा कि यह श्रीकृष्णका पुत्र साम्ब वृष्णि और अन्धकोंके विनाशके निमित्त एक मूशल प्रसव करेगा। राम और कृष्णको छोड़कर सारा यदुकुल उससे विनष्ट होगा। हलधर समुद्रमें प्रवेश करके शरीर छोड़ेंगे। जरा नाम कैवर्त्त पृथ्वीपर सोये हुए कृष्णको विद्ध करेगा। उसके दूसरे दिन साम्बने एक मूषल प्रसव किया। राजा उग्रसेनने उस मूसलका महीन चूर्ण करवा करके समुद्रमें फेंकवा दिया। (दूसरा अध्याय) कृष्ण बोले कि गांधारीने पुत्र शोकसे संतापित होकर आर्त्त भावसे जो छत्तीसवे वर्षमें यदुवंशियोंके नाश होनेका शाप दिया था, यह वही छत्तीसवां वर्ष उपस्थित हुआ है। उस समय द्वारिकामें भांति भांतिके अशकुन होने लगे। (तीसरा अध्याय) बहुत अशकुन देख कर वृष्णि और अंधकवंशी लोग अपनी अन्तःपुरचारिणी स्त्रियोंके सहित तीर्थयात्राके अभिलाषी हुए। वे सैनिक पुरुषोंके सहित घोड़े, हाथी और यानोंमें चढ़के प्रभास तीर्थमें पहुँचे और वहाँ इच्छानुसार गृह वासके अनुरूप सुख भोगने लगे। उस समय उद्धवने योगबलसे सब भविष्य वृत्तांत जानकर वहाँसे प्रस्थान कर दिया।

प्रभास तीर्थमें यादवोंके सैकड़ों तूर्य्य शब्द तथा नट नर्तकोंके नृत्य गीतादि युक्त महापान आरम्भ हुआ। सब लोगोंने मदमत्त होकर ब्राह्मणोंके भोजनके निमित्त पकाये हुए अन्नको बन्दरोंको खिला दिया। राम, कृतवर्म्मा, सात्यकी, गद, बभ्रु, आदि वीरगण कृष्णके सन्मुखही मद्य पीने लगे। उसी समय सात्यकी मतवाला होकर कृतवर्म्मासे बोला कि तुमने

जो महाभारतकी लडाईमे सोते हुए पुरुषोंका वध किया; यदुवंशी उसको कदापि नहीं सहेंगे। प्रद्युम्नने सात्यकीके कहे हुए वचनकी बहुत प्रशंसा की। तब कृतवर्म्मा क्रुद्ध होकर बोला कि जब भुजा कट जानेपर भूरिश्रवा रणमें योगयुक्त होकर बैठा था, तब तुमने वीर होकर किस प्रकार नृशंशकी भांति उसका वध किया था। इतनी बात सुनकर कृष्ण बहुत क्रुद्ध होकर तिरछे नेत्रसे कृतवर्माको देखने लगे। तब सात्यकीने क्रोध पूर्वक दौडकर तलवारसे कृतवर्माका शिर काट डाला और उसके बाधवोंका वध करते हुए चारों ओर घूमने लगा। इतनेही समयमें भोज और अन्धक वंशियोंने एकत्रित होकर सात्यकीको घेर लिया और सात्यकी और रुक्मिणीके पुत्र शैनेयको मारडाला। यह देख कृष्णने क्रोध पूर्वक एक मुट्ठी एरका घास ग्रहण किया। वह वज्र सदृश लोहमय मूशल होगया। कृष्णने जिसको सामने पाया, उसको उसी मूशलसे नाश कर डाला उसे देख कर अन्धक, भोज, शैनेय और वृष्णिवंशीयगण उसही मूशलभूत एरकाको लेकर उससे परस्परमें एक दूसरेका नाश करने लगे। उस समय ब्राह्मणोंके शापसे समस्त एरका वज्रकी भांति होगया और समस्त तृण भी मूशल होगये। वे इतने मतवाले हुए थे कि परस्पर युद्धमें प्रवृत्त होकर पिता पुत्रको और पुत्र पिताको मारकर गिराने लगे। कृष्णने सांब, चारुदेष्ण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध तथा गद आदि वीरोंको मरे हुए वा पृथ्वीमें पड़े हुए देख कर क्रुद्ध हो बचे हुए लोगोंका नाश करके यदुकुलको प्रायः निःशेष कर दिया।

(चौथा अध्याय) कृष्ण, दारुक और बभ्रुने बलरामके समीप जाकर देखा कि वह निर्जन स्थानमें वृक्षके ऊपर बैठकर ध्यान कर रहे हैं। माधवने अर्जुनको बुलानेके लिये दारुकको हस्तिनापुरमें और बभ्रुको स्त्रियोकी रक्षाके लिये द्वारिकामें भेजा। उसी समय किसी व्याधने कृष्णके निकटही मूसलसे बभ्रुका जीवन हर लिया। तब कृष्णने द्वारिकामे जाकर वसुदेवसे कहा कि हे पिता!, जब तक अर्जुन न आवें, तब तक आप यहाँके नर नारियोंकी रक्षा कीजिये, मैं रामके सहित वनवासी होकर अपना शेष समय व्यतीत करूँगा। इसके पश्चात् कृष्णने वनमे जाकर देखा कि बलराम निर्जनमे अकेले योग युक्त होकर बैठे हैं और उनके मुखसे एक श्वेत वर्ण महा नाग बाहर होता है। देखते देखते वह समुद्रमें प्रवेश कर गया। श्रीकृष्ण दिव्य दृष्टिके सहारे कालकी गति देख कर निर्जन वनमे घूमते घूमते पृथ्वीमें बैठे और गान्धारीका वचन स्मरण कर महायोग अवलम्बन करके सोगये। उस समय जरा नामक व्याधने सोये हुए माधवको मृग जानकर बाणसे विद्ध किया। जब उसने निकट जाकर योग-युक्त पीताम्बरधारी चतुर्भुज रूप कृष्णको देखा, तब अपनेको अपराधी समझकर शंकित चित्तसे उनके दोनो चरणोंको जा पकडा। उस समय माधव उसे आश्वासित करके निज तेजके सहा स्वर्गमें जाकर सब देवताओंसे पूजित हो अपने धामको चले गये। दारुक अर्जुनको हस्तिनापुरसे ले आया। (७ वाँ अध्याय) अर्जुनके द्वारिकामे पहुँचनेके दूसरे दिन वसुदेव योग अवलम्बन करके उत्तम गतिको प्राप्त हुए। देवकी, भद्रा, मदिरा और रोहिणी ये चारो स्त्रियाँ वसुदेवके सहित चिताग्निमें जलकर पतिलोकमें गईं। वज्र आदि वृष्णि कुमारों तथा यादवोंकी स्त्रियोंने उनका तर्पण कार्य्य पूरा किया। अर्जुन उन कार्य्योंको पूरा करके प्रभासमे गये। उन्होंने वहाँ प्रधानताके अनुसार सब मृतकोका अन्त्येष्टि कार्य किया और बलराम तथा कृष्णके शरीरको विधि पूर्वक जलाया। अर्जुनने सातवें दिन प्रेतकार्य समाप्त करके हस्तिनापुरको प्रस्थान किया।

वृष्णि वंशियोंकी स्त्रियाँ रथोंमें चढ़के अर्जुनके पीछे चली। अन्धक तथा वृष्णि-वंशीय रथी तथा घुड़सवार आदि सेवकगण बालक और बूढ़ोंसे युक्त स्त्रियोंकी रक्षाके लिये उनके चारोंओर चले। पदाति तथा गजारोही पुरुष आगे पीछे चलने लगे। चारों वर्णके मनुष्य और अन्धक तथा वृष्णिवंशीय बालकगण अर्जुनके अनुगामी हुए। कृष्णकी स्त्रियाँ उनके परपोते वज्रको आगे करके बाहर हुई। वृष्णि और अन्धकवंशीय स्त्रियाँभी उनकी अनुगामिनी हुई। उन लोगोंके बाहर होने पर समुद्रने समग्र द्वारिका नगरीको जलमें डुबा दिया। एक दिन अर्जुनके संग सब द्वारिका वासियोंने पंचनदके समीप निवास किया। वहाँ आभीरोंने आकर बहुतसी स्त्रियोंका हरण कर लिया। अर्जुन और सम्पूर्ण रथी तथा गजसवारोंके सब बाण और पराक्रम निष्फल हो गये। अर्जुनने यादवोंकी बची हुई स्त्रियोंको कुरुक्षेत्रमें लाकर स्थान स्थानपर वास करवाया और कृतवर्मा और अन्य भोजवंशीय स्त्रियोंको, जो आभीरोंके हरण करनेसे बची थीं, मार्तिकावत नगरमें, बाकी बालक, वृद्ध और स्त्रियोंको इन्द्रप्रस्थमें और वृद्ध और बालकोंके सहित युयुधानके पुत्रको सरस्वती नदीके तट पर बसा दिया। उन्होंने अनिरुद्धके पुत्र वज्रको इन्द्रप्रस्थका राज्य दे दिया। कृष्ण भगवान्की स्त्रियोंमेंसे रुक्मिणी, गांधारी, शैव्या, हेमवती और जांबवती अग्निमें प्रवेश कर गई और सत्यभामा आदि अन्य स्त्रियाँ तपस्या करनेके अर्थ वनमें चली गई। (८ वाँ अध्याय) इस भांति ५ लाख यदुवंशी वीर परस्पर लड़कर प्रभासमें मर गये थे।

देवी भागवत—(दूसरा स्कन्ध, ८ वाँ अध्याय) अर्जुनने प्रभासमें जाकर सबकी क्रिया की। कृष्णके शरीरके साथ उनकी ८ स्त्रियाँ और बलदेवजीके सहित रेवती सती हो गई।

लिङ्गपुराण—(६९ वाँ अध्याय) श्रीकृष्ण भगवान्ने भूमिका भार उतार ब्राह्मणोंके शापके बहाने अपने कुलका संहार किया। वह आपभी १०० वर्ष पूरे होनेके अनन्तर जरा नामक व्याधके बाणसे मनुष्यदेह त्याग कर उस व्याधको साथ ले वैकुण्ठको चले गये। बलदेवजी नागरूप धर कर गये। रुक्मिणी आदि प्रधान रानी श्रीकृष्णके साथ सती हुई, किन्तु बाकी सब अष्टावक्र मुनिके शापसे चोरोंके हाथमें पड़ीं। रेवती बलदेवजीके साथ सती होगई। अर्जुनने कृष्ण और बलदेवकी और्ध्वदैहिक क्रिया की।

विष्णुपुराण—(५ वाँ अंश, ३७ वाँ अध्याय) देवताओंका पठाया हुआ दूत कृष्णके पास आया और एकान्तमें उनसे बोला कि १२५ वर्ष मनुष्य लोकमें रहकर पृथ्वीके भार उतारनेके लिये आप आये थे, वह दिन पूरा होगया; अब आप स्वर्गको चलिये। उसके पश्चात् सब यदुवंशी रथों पर चढ़ प्रभासमें पहुँचे। वहाँ सब मद्य पान कर परस्पर विवाद करने लगे। जब उनलोगोंके सब आयुध टूट गये, तब वे लोग शापित लोहके चूर्णसे उत्पन्न एरका घासको उखाड़ एक दूसरेको मारने लगे। क्षण मात्रमें कृष्ण और दारुक सारथीको छोड़ यादवोंमें कोई जीता न रहा। उन्होंने देखा कि एक वृक्षके नीचे घायल बलदेवजी बैठे हैं। उनके मुखसे बड़ा भारी सर्प निकल समुद्रमें चला गया। कृष्ण दारुकसे द्वारिका और हस्तिनापुरमें खबर भेज कर आप योग युक्त हो पलथी मार वृक्षके नीचे बैठ गये। उसी समय जरा नामक लुब्धक, जिसने बचे हुए लोह मय मूशलके टुकड़ोंको अपने बाणके फोंकपर लगाया था, वहाँ आया। उसने भगवान्के चरणको मृग जानकर उसको

अपने वाणसे विद्ध किया। भगवान्‌ने स्वर्गसे आये हुए विमानपर लुब्धकको भेजा और आपभी मनुष्य शरीर त्याग किया। (३८वॉ अध्याय) अर्जुनने हस्तिनापुरसे आकर कृष्ण और-वलरामके मृतक शरीरको ढूँढ़ सब मृतक कर्म किया। कृष्णकी ८ पटरानियां हरिके शरीरके संग सती होगई। रेवती वलदेवजीके शरीरके साथ भस्म हुई। उग्रसेन, वसुदेव, देवकी, रोहिणी अग्निमें प्रवेश करगई। अर्जुनने कृष्णकी अवशेष स्त्रियोंको और कृष्णके पर-पोते वज्रको सङ्ग ले हस्तिनापुरको प्रस्थान किया। जव पञ्जावमे आकर एक स्थानमें वह ठहरे तब आभीर चोरोंने सब धन और स्त्रियोंको छीन लिया अष्टावक्र मुनिने पूर्व जन्ममें स्त्रियोंको शाप दिया था कि तुम चोरोंके हाथमें पडोगी।

श्रीमद्भागवत—(एकादश स्कन्ध, प्रथम अध्याय) विश्वामित्र, असित, कण्व, दुर्वासा भृगु, अङ्गिरा, कश्यप, वामदेव, अत्रि, वशिष्ठ, नारद आदि ऋषि पिण्डारक स्थानमें वास करते थे। यदुवंश कुमारोंने साम्बको स्त्री वनाकर पूछा कि हे ऋषीश्वरो! यह स्त्री गर्भवती है, इसके पुत्र होगा कि पुत्री। तव मुनियोंने कहा कि यह तुम्हारे कुलनाशक मूशलको उत्पन्न करेगी। तव सब वालकोंने साम्बका उदर खोल लोहेका मूसल देखा। राजा उग्रसेनने मूशलको चूर्ण करवाकर समुद्रमें वहवा दिया और रेतनेसे जो शेष भाग वचा, उसे भी समुद्रमें फेंकवा दिया। वहाँ कोई मत्स्य उस लोहेके टुकडेको निगल गया। वह चूर्ण वहता हुआ समुद्रके तीरपर आ लगा; उसीसे सब एरका अर्थात् पटेर (घास) उत्पन्न हुए। मत्स्य धीवरके हाथ पकडा गया। मत्स्यके पेटसे जो लोहा निकला, उससे धीवरने अपने तीरकी भाल वनाई। (३० वॉ अध्याय) मृत्यु सूचक घोर उत्पातोंको देख कृष्णजीने यादवोंसे कहा कि अव हम लोगोंको दा घडी भी द्वारिकामें रहना उचित नहीं है, सब स्त्री, वालक और वृद्ध शंखोद्धारको चले जाओ। हम लोग प्रभास क्षेत्रमें जाकर पश्चिमवाहिनी सरस्वतीमें स्नान करेंगे और पवित्र होकर अरिष्टोंके नाशके लिये देवताओंका पूजन करके ब्राह्मणोंको दान देंगे। सब यादव कृष्णके आदेशानुसार नौकाओं द्वारा समुद्र उतर प्रभासको चले गये। उसके उपरान्त दैवसे हतवुद्धि यादवोंने मदिरा पान किया। मद्य पानसे अतिगर्वयुक्त यादवोंका बड़ा कोलाहल हुआ। उसके उपरान्त अत्यन्त क्रोधित हो प्रद्युम्न, सांव, अक्रूर, अनिरुद्ध, सात्यकी, निशठ इत्यादि दाशार्ह, वृष्णि, अन्धक और भोजवंशी वीर समुद्रके तटपर खड्ग, गदा, तोमर और रिष्टियोंसे युद्ध करने लगे। जाति जातिहीको मारने लगे। अब शस्त्रोंके चुक जानेपर वे लोग पटेर घासोंको ग्रहण करने लगे, जो यादवोंके हाथमें लेतेही वज्रके समान दुधारे खांडे हो जाते थे। उससे यादव लोग वैरियोंको मारने लगे। जब कृष्णचन्द्रके निषेध करनेपर वे लोग कृष्ण, वलदेवको मारनेके लिये शस्त्र ले उनके सन्मुख आये, तव दोनों भाई खड्गरूप पटेरोंको हाथोंमें ले सबको मारने लगे। सबके मरनेपर वलदेवजीने समुद्रके तटपर परम पुरुषके ध्यानरूप योगसे आपमें युक्त कर मनुष्य लोक छोड़ दिया। कृष्ण पीपलका आश्रय ले मौन होकर भूमिमें वैठ गये। उसी समय जरा नामक वधिकने, जिसने मूशलके अवशेष लोहेके खण्डसे वाण वनाया था, मृगके आकार वाले कृष्णके चरणको वींध डाला किन्तु जव उसने निकट जाकर कृष्णका चतुर्भुज रूप देखा, तव भयभीत होकर उनके चरण पर गिर पड़ा। कृष्ण भगवान्‌ने वधिकको अभय करके विमानमें वैठाकर स्वर्गमें भेज दिया। उस समय कृष्णका सारथी आया। कृष्णने सारथीसे कहा कि अब समुद्र द्वारिकापुरीको

जलमे डुबा देगा; तुम हमारा हाल द्वारिका वासियोंसे कहकर हस्तिनापुरमें जाकर अर्जुनको ले आवो। सारथी द्वारिकाको चला गया। (३१ वाँ अध्याय) कृष्णजी उसी शरीरसे अपने परम धामरूप वैकुण्ठको चले गये। कृष्णके सारथीने द्वारिकामें जाकर यादवोंके नाश होनेका वृत्तान्त कहा। सब लोग व्याकुल हो प्रभासमें आये। देवकी, रोहिणी और वसुदेवने अपने प्राण छोड़ दिये। दूसरी स्त्रियाँ अपने अपने पतियोंसे मिलकर चितामें प्रवेश करगई। रुक्मिणी आदि कृष्णकी स्त्रियाँ कृष्णमय होकर अग्निमें प्रवेश कर गई। अर्जुनने सन्तानहीन लोगोंका पिण्डदान और तर्पण किया। उस समय समुद्रने कृष्णचन्द्रके मन्दिरको छोड़कर सारी द्वारिकापुरीको जलमें डुबा दिया। उसके पश्चात् अर्जुनने बची हुई स्त्रियों; बालकों और वृद्धोंको लेकर इन्द्रप्रस्थमे प्रवेश कराया और वहाँ वज्रका अभिषेक कर दिया। पांडवलोग परीक्षितको राजतिलक देकर महाप्रस्थानको चले गये।

भविष्यपुराण (६९ वाँ अध्याय), मत्स्यपुराण (६९ वाँ अध्याय) और पद्मपुराण (सृष्टि खण्ड २३ वाँ अध्याय) में है कि साम्बका मनोहर रूप देख कृष्णकी १६ हजार स्त्रियाँ कामातुर होगईं। तब कृष्ण भगवान्ने अपनी स्त्रियोंको शाप दिया कि तुमको पतिलोक और स्वर्ग नहीं मिलेगा; तुम लोग अन्तमें चोरोंके वश पड़ोगी और साम्बको शाप दिया कि तू कुष्ठी होजा इत्यादि। इसी कारणसे आभीरलोग पंचनदके किनारेसे स्त्रियोंको हर लेगये थे।

वामनपुराण—(३४ वाँ अध्याय) सोमतीर्थमें, जहाँ चन्द्रमा व्याधिसे मुक्त हुआ था, स्नान करके सोमेश्वर, अर्थात् सोमनाथके दर्शन करनेसे राजसूय यज्ञका फल मिलता है। वहाँके भूतेश्वर और भालेश्वरकी पूजा करनेसे मनुष्य फिर जन्म नहीं लेता है। (८४ वाँ अध्याय) प्रह्लादने प्रभास तीर्थमें जाकर सरस्वती और समुद्रके सङ्गममें स्नान करके शिवका दर्शन किया।

गरुड़पुराणण—(पूर्वार्द्ध, ८१ वाँ अध्याय) प्रभासक्षेत्र एक उत्तम स्थान है, जिसमें सोमनाथ महादेव निवास करते हैं।

कूर्मपुराण—(उपरि भाग, ३४ वाँ अध्याय) तीर्थोंमें उत्तम प्रभास तीर्थ है, जिसको सिद्धाश्रम भी कहते हैं। उस तीर्थमें भगवान् शंकरके पूजन, जप, होम आदि कर्म करनेसे और ब्राह्मणोंको दान देनेसे अक्षय पद मिलता है। शिवजीका सोमेश्वर तीर्थ सम्पूर्ण व्याधिका नाश करनेवाला और शिवलोक देनेवाला है।

शिवपुराण–(ज्ञान संहिता, ३८ वाँ अध्याय) शिवजीके १२ ज्योतिर्लिंग हैं;–(१) सौराष्ट्र देशमें सोमनाथ (२) श्रीशैलपर मल्लिकार्जुन, (३) उज्जैनमें महाकालेश्वर, (४) ओंकारमें अमरेश्वर, (५) हिमालय पर केदारेश्वर, (६) डाकिनीमे भीमशंकर, (७) वाराणसीमें विश्वेश, (८) गोदावरीके तटपर त्र्यंबक, (९) चिताभूमि पर वैद्यनाथ, (१०) दारुका वनमे नागेश, (११) सेतुबंधमें रामेश्वर और (१२) शिवालयमें घुश्मेश्वर। ज्योतिर्लिङ्गोंकी पूजा करनेका अधिकार चारों वर्णोंका है। इनके नैवेद्य भोजन करनेसे सम्पूर्ण पापोंका नाश होजाता है। नीच जातियोंमें उत्पन्न मनुष्य भी ज्योतिर्लिङ्गके दर्शन करनेसे दूसरे जन्ममे शास्त्रज्ञ ब्राह्मण होते हैं और उसके पश्चात् उनकी मुक्ति होजाती है।

(४५ वाँ अध्याय) दक्षप्रजापतिने अश्विनी आदिक अपनी २७ पुत्रियोंका विवाह चन्द्रमासे कर दिया। जब चन्द्रमा अपनी रोहिणी नामक पत्नीसे अधिक स्नेह करने लगा, तब दक्षकी अन्य कन्याओंने अपने निरादरका वृत्तांत अपने पितासे कह सुनाया। दक्षने चन्द्रमाको बहुत समझाया कि तुमको अपनी सब स्त्रियोंपर समान प्रीति रखनी उचित है; किन्तु भावी वश चन्द्रमा उनका वचन न मानकर सब स्त्रियोंका निरादर करके फिर रोहिणीसे आसक्त हुआ। तब दक्षने दुःखी होकर चन्द्रमाको शाप दिया कि तू क्षयी रोगसे पीड़ित होजा। उसी क्षण चन्द्रमा क्षयी रोगसे युक्त होगया। चन्द्रमाके क्षीण होनेसे जगत्में हाहाकार मच गया। देवता और ऋषिगण दुःखी हुए। चन्द्रमाकी प्रार्थनासे इन्द्रादिक देवताओंने ब्रह्माके पास जाकर उनसे चन्द्रमाके आरोग्य होनेका उपाय पूछा। ब्रह्माजीने कहा कि चन्द्रमा प्रभास तीर्थमें जाकर मृत्युञ्जयके मंत्रसे प्रभाके सागरपर शिवजीकी आराधना करे, तो शिवजीकी प्रसन्नतासे उसका रोग दूर होगा। ब्रह्माके आदेशसे इन्द्रादिक देवता और पुरातन ऋषिगण दक्षको शान्त करनेके पश्चात् चन्द्रमाको लेकर प्रभास तीर्थमें गये। उन्होंने वहाँ एक गढ़ा खोदकर उसमें तीर्थोंका आवाहन किया और मृत्युञ्जयके विधानसे पार्थिव लिङ्ग स्थापित किया। उसके पश्चात् वे लोग चले गये। चन्द्रमाने जब ६ मास तक मृत्युञ्जयके मन्त्रसे शिवजीका पूजन किया, तब शिवजी प्रसन्न होकर बोले कि हे चन्द्रमा! तुम इच्छित वर मांगो। चन्द्रमाने कहा कि हे स्वामी! मैं यही चाहताहूँ कि मेरा क्षयी रोग दूर होजावे। शिवजीने कहा कि तुम्हारी कला जिस भांति क्रम क्रमसे कृष्ण पक्षमें घटेगी, उसी प्रकार शुक्ल पक्षमें वृद्धिको प्राप्त होगी। उस समय समस्त देवता और ऋषिगण प्रसन्न होकर शिवजीसे बोले कि हे स्वामी! आप इस स्थानमें स्थित होजाइये। तब शिवजी वहाँ स्थित होकर सोमेश्वर अर्थात् सोमनाथ नामसे जगत्में प्रसिद्ध हुए। देवताओं तथा ऋषियोंका खोदा हुआ गढ़ा चन्द्र कुण्ड नामसे विख्यात हुआ। उसमें स्नान करनेसे मनुष्यका सब पाप छूट जाता है। जो मनुष्य उसमें ६ मास तक स्नान करता है उसके कुष्ठ आदि असाध्य रोग नष्ट हो जाते हैं।

अट्ठाईसवां अध्याय।

(काठियावाड़में) जूनागढ़, गिरनारपर्वत, जेतपुर, लाठी, पालीटाणा, शत्रुंजय पहाड़ी, भावनगर और लिंबड़ी।

जूनागढ़।

विरावल कसबेके रेलवे स्टेशनसे उत्तर २९ मील केशोद, ४४ मील शाहपुर और ५१ मील जूनागढ़का रेलवे स्टेशन है। केशोद और शाहपुर दोनो गांवोंके चारोंओर पक्की दीवार बनी हुई हैं। केशोदसे उत्तर एक नदी पर रेलवेका पुल बना है।

बम्बई हातेके काठियावाड़में (२१ अंश, ३१ कला उत्तर अक्षांश और ७० अंश, ३६ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमें) देशी राज्यकी राजधानी जूनागढ़ एक सुन्दर छोटा शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय जूनागढ़ कसबेमें ३१६४० मनुष्य थे; अर्थात् १६७१० पुरुष और १४९३० स्त्रियाँ। इनमें १५३३१ हिन्दू, १५२४० मुसलमान, १०१७ जैन, ३० कृस्तान, १३ पारसी और ९ यहूदी थे। मनुष्य-गणनाके अनुसार यह बम्बई हातेके देशी राज्योंमें पांचवाँ और काठियावाड़में तीसरा कसबा है।

जूनागढ़के बगलोंमें पक्की दीवार है। शहरसे पूर्व-उत्तर, गिरनार आदि पहाड़ियाँ और पश्चिम रेलवे लाइन है। रेलवेके पास शहरके पश्चिमका फाटक है। शहरसे दक्षिण-पूर्व गिरका मैदान है। जूनागढ़ शहरमे कई एक मकबरे, कई मसजिदें, अनेक देवमन्दिर, जिनमें स्वामीनारायणका मन्दिर उत्तम है, कई एक धर्मशाला, कई सदावर्त, एक उत्तम अस्पताल, जेलखाना, नवाबकी कचहरियोंकी इमारतें और अनेक स्कूल हैं। मेरे जानेके समय जेलखानेसे दक्षिण एक घोड़शालमें १०० घोड़े और एक गाड़ीखानेमें लगभग ४० बग्गी टमटम और ४० घोड़े थे। हालमें शहरमें अनेक सरकारी तथा कचहरीके सरदारोंके उत्तम मकान बने हैं।

शहरके उत्तरीय भागमें जूनागढ़के दूसरे बहादुरखाँ दूसरा हमीदखां और लाडलीबू नामक एक स्त्री इन तीनोंके ३ मकबरे हैं। जेलखानासे दक्षिण नवाब महव्वतखांका मकबरा है। जूनागढ़के सम्पूर्ण मकबरे इसी सदीके बने हुए हैं। उनमेंसे कई एक ३० वर्षके भीतरके हैं। शहरके उत्तरवाले फाटकसे ½ मील दूर वजीरसाहबका सांकर बाग नामक सुन्दर उद्यान है। उसमें दो मञ्जिले बङ्गलेके बगलोंमें पानीसे पूर्ण एक नाला है। उससे लगभग ५० गजके अन्तरपर एक जन्तुशालामें बाघ, हरिन आदि जन्तु रक्खे हुए हैं। शहरसे दक्षिण सांकर बागसे अधिक मनोरम सरदार बाग है, जिसमें सुन्दर बङ्गले बने हैं और गिरके जङ्गलोंसे लाकर अनेक सिंह और सिंहनी रक्खी गई है।

जूनागढ़के विरावल फाटकके दक्षिण, पूर्व, उत्तर अर्थात् जमियालशाहका मनोरम स्थान है। वहाँ ३० फीट ऊँचा उत्तरका दरगाह, एक तालाब और वजीर साहब बाहुदीनका बनवाया हुआ एक कोढ़ीखाना है, जिसकी नेव सन् १८९० में प्रिंस एलवर्ट विक्टरने दी थी। उसमें लगभग १०० कोढ़ी रह सकते हैं। उस स्थानसे ४ मील दक्षिण-पूर्व २७८० फीट ऊँची उत्तर पहाड़ी है, जिसके श्रृङ्गपर एक छोटा स्थान बना है। उस पहाड़ीको हिंदू और मुसलमान दोनों पाक समझते हैं। लोग कहते है कि उसके पास रहनेसे कुष्ठ रोग छूटता है। बहुतसे कोढ़ी उस पहाड़ीको सेवते हैं।

जूनागढ़के नवाबका महल–शहरके मध्य भागमे एकही जगह कई एक कितेमें दो मञ्जिले चौमञ्जिले नवाब साहबके मकान बने हैं। उनके ऊपरके भागोंमें बहुतसे मेहराबदार द्वार हैं। मकान रङ्गोंसे चित्रित हैं। महलका एक मकान सर्व साधारण लोगोंके देखनेके लिये खुला रहता है। उसका दोमञ्जिला कमरा बहुतसे झाड़, फानूस, तस्वीरों, बड़े बड़े आइनों और सुनहरी रुपहरी कोच कुर्शियोंसे सजा हुआ है। उसमें जगह जगह प्रदर्शनीकी वस्तु भी रक्खी हैं। महलके आगे महव्वतसर्किल नामक बाजार है।

महव्वतखांका मकबरा—शहरके जेलखानेसे दक्षिण जूनागढ़के मृत नव्वाबके पिता सर महव्वतखांजी के० सी० एस० आईका बहुत सुन्दर मकबरा है। मकबरा २४पहलका है। सब पहलोंकी मेहराबियोंमें लोहेका सुन्दर जालीदार काम है। मकबरेके भीतर उसके मध्यमें

८पहलका खास मकवरा है, जिसके ५ पहलोंमें लोहेकी सुन्दर झंझरी और ३ पहलोंमें चांदी और शीशाओंके सुन्दर काम हैं। खास मकवरेके भीतर चांदनीके नीचे, जिसमें चांदीके चोब लगे हैं, सर महव्वतखांकी कब्र है। खास मकवरेके चारों वगलोंमें नील और श्वेत मार्बुलके टुकडोंका फर्श और उत्तर वगलकी भूमिपर वेश कीमती पत्थरकी पच्चीकारीका काम है। छतमे बडे वड़े झाड़ लगे हैं। मकवरेके शिरपर मध्यमें एक वड़ा गुम्वज और उसके चारोंओर बहुतसे छोटे गुम्मज हैं। मकवरेके आगे पत्थरका बड़ा फर्श है।

महव्वतखाँके मकवरेके उत्तर एक दूसरा उससे छोटा मकवरा वन रहा है। उसमे थोड़ा काम बाकी है।

नव्वाब साहवकी मसजिद—महव्वतखाँके मकवरेसे दक्षिण ओर जूनागढ़के नव्वाब साहवकी मसजिद है। वह बाहरसे चौकोनी है, किन्तु उसके भीतर ५८ खम्भे ऐसे ढवसे लगाये गये हैं कि उसमें ६ भाग हो गये हैं। प्रत्येक भागके वगलोमें ८ खम्भे पडते हैं। प्रति भागके ऊपर एक सुन्दर गुंवज है। मसजिदके भीतर श्वेत और नील रङ्गके मार्बुलका और उसके आगेके वडे आंगनमे साधारण पत्थरका फर्श है।

अपरकोट—शहरके पास अपरकोट नामक पुराना किला है, जो पूर्व समयमें हिन्दू राजाओंका गढ़ था। वह सन् १८५८ तक जेलखानेके काममें आता था, किन्तु अब वेकार पड़ा है। यहाँ सन् ईस्वीके आरम्भसे २७० वर्ष पहिलेसे राजा अशोकके सूवेदार और उनके समयके पीछे गुप्त वंशके राजाओंके सूवेदार रहते थे। अपरकोटमें तथा उसके पास अनेक वाद्ध गुफा हैं। किलेकी पश्चिमकी दीवारमें आगे पीछे एक दूसरेके भीतर क्रमसे ३ फाटक बने हुए हैं। किलेकी दीवार ६० फीटसे ७० फीट तक ऊँची है। फाटकके ऊपर पांचवें मण्डलीकका सन् १४५० का शिला लेख है। किलेमें २ पुरानी तोपे पडी हैं, जिनमेंसे एक १७ फीट और दूसरी १३ फीट लम्बी है, महम्मद वेगडाकी वनवाई हुई जुमामसजिद टूट फूट गई है; उसका एक मीनार खड़ा है। मसजिदके पास नूरीशाहका मकवरा है। किलेमें २ पुरानी वावली है, जिनमे नीचे तक चक्कर दार सीढ़ियाँ वनी हुई हैं। बड़ी मसजिदसे लगभग ५० गज उत्तर अनेक दो मञ्जिले गुफामन्दिर हैं, जिनके नीचेके कमरे ११ फीट ऊँचे हैं। वागेश्वरी फाटकके भीतर बावाप्याराकी गुफा है। बावाप्यारा नामक एक फकीर गुफाओमे रहता था, इस कारणसे उनका यह नाम पड़गया। अपरकोटके पास खपड़ा-खोड़िया नामक गुफाओंका झुण्ड है। देखनेसे जान पडता है कि एक समय वे तीन मञ्जिले मठ थे।

जूनागढ़का राज्य—काठियावाडके दक्षिण-पश्चिमके भागमें जूनागढ़ एक देशी राज्य है। भूमि साधारण प्रकारसे समतल है। गिरनार पहाडियोंकी एक चोटी समुद्रके जलसे ३६७५ फीट ऊँची है। राज्यका एक भाग गिर कहलाता है, उसमे सघन वृक्षोंका जङ्गल और उसके चन्द भागोमे पहाड़ियाँ हैं। पहिले काठियावाड प्रायद्वीप ओर गुजरातमे वहुत सिंह मिलते थे, परन्तु अब वे केवल गिरिके जंगलोंमे पाये जाते हैं। अफ्रिकाके सिंहोंसे मिलानेमें इनका आल छोटा और रङ्ग हलका होता है। गिरके जङ्गलोंमें १२ से अधिक सिंह हैं। जूनागढ़के राज्यके खानोंसे मकानके कामके योग्य पत्थर निकलता है। काली मिट्टीके खेत कुओं और नहरोंसे पटाये जाते हैं। कपास बहुत होती है, जो विरावल वन्दरसे

आगबोटों द्वारा बम्बई भेजी जाती है। गेहूँ, दलिहन, ऊख और तेलहनभी होते हैं। राज्यके ३४ स्कूलोंमें लगभग २००० लड़के पढ़ते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय जूनागढ़ राज्यके ३२७९ वर्गमील क्षेत्रफलम ७ कसबे, ८५० गाँव, ६५७८ मकान और ३८७४९९ मनुष्य थे, अर्थात् ३०६२९५ हिन्दू, ७६४०१ मुसलमान और ४८०३ अन्य।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय जूनागढ़ राज्यके जूनागढ़ कसबेमें ३१६४० और विरावलमें १५३३९ मनुष्य थे। उस राज्यमें सोमनाथपट्टन एक प्रसिद्ध कसबा है।

जूनागढ़का राज्य काठियावाड़के प्रथम दर्जेके राज्योंमेंसे एक है। वहाँके नवाबोंको ११ तोपोंकी सलामी मिलती है। जूनागढ़के राज्यसे लगभग २१००००० रुपये मालगुजारी आती है, जिसमेंसे अङ्गरेजी सरकार और बड़ोदाके गायकवाड़को ६५६०० रुपया राज्य-कर दिया जाता है। इनका सैनिक बल लगभग २७०० आदमियोंका है। जूनागढ़के नवाब अङ्गरेजी सरकार और गायकवाड़को 'राज्य कर' देते हैं और काठियावाड़के बहुतेरे छोटे देशी राजाओंसे जोरतलबी नामक एक प्रकारका 'कर' लेते हैं, जिसको काठियावाड़ एजेंसीके अफसर लोग तहसील करके उनको देते हैं।

इतिहास—अति पूर्व कालमें जूनागढ़ बौद्धों तथा राजपूतोंका राज्य था (अपरकोटमें देखिये)। उस समय अपरकोट अर्थात् पुराना जूनागढ़ राजधानी था। सन् १४७२ में अहमदाबादके सुलतान महम्मद बेगड़ाने अपरकोटके राजपूत राजाको जीता। उसीने (वर्तमान) जूनागढ़ शहरको बसाया। सोलहवीं सदीमें अकबरके राज्यके समय जूनागढ़ दिल्लीके अधिकारमें हुआ और गुजरातके सूबेदारके अधीन रक्खा गया। जब गुजरातसे मुगलोंका अधिकार उठ गया, तब लगभग सन् १७३५ में शेरखांबाबी नामक एक सिपाहीने मुगलोंके गवर्नरको निकाल कर जूनागढ़में अपना अधिकार कर लिया। शेरखांके पुत्र सलावतखांने अपने वारिश पुत्रको जूनागढ़का नवाब बनाया और छोटे पुत्रोंको जागीर दे दी।

शेरखांबाबीके वंशधर जूनागढ़के ८ वें नवाब सर महब्बतखांजी के. सी. एस. आई. थे, जो सन् १८८२ में मर गये, तब उनके पुत्र बहादुरखांजी उत्तराधिकारी हुए, जिनको पीछे जी. सी. एस. आई. की पदवी मिली थी, किन्तु सन् १८९२ में ३८ वर्षकी अवस्थामें उनका देहान्त हो गया।

नरसी भक्तकी कथा—एक कहावत है कि जूनागढ़में एक ब्राह्मणके गृह नरसीभक्तका जन्म हुआ। जब उनके माता पिता मर गये, तब वह अपने भाईके घर रहने लगे। उनके एक पुत्र और दो पुत्रियां हुईं। नरसीभक्त वहाँ आनेवाले साधुओंकी अच्छी भांतिसे सेवा किया करते थे। एक दिन अनेक साधुओंने जूनागढ़में आकर वहाँके लोगोंसे पूछा कि यहां साहूकार कौन है? हम लोगोंको द्वारिकाकी हुण्डी करानी है। नरसीके शत्रुओंने परिहास करके कह दिया कि नरसीभक्त यहांके साहूकार हैं। साधुओंने नरसीजीके पास सातसौ रुपये रख कर उनसे हुण्डी लिख देनेको कहा। नरसीजीके अस्वीकार करने पर जब साधुलोग हुण्डी लिख देनेके लिये हाथ जोड़ कर उनकी प्रार्थना करने लगे, तब उन्होंने जान लिया कि भगवान्ने शत्रुओंके हृदयमें प्रेरणा करके मुझको यह खर्च भेजवाया है। ऐसा शोच नरसीजीने द्वारिकामें सांवलशाहके ऊपर हुण्डी लिख दी। साधुलोग इस हुण्डीकलके दे

द्वारिकामें गये । वहाँ सांवलशाह अर्थात् कृष्ण भगवान्ने साहूकारका रूप धर,कर साधुओं-को हुण्डीका रुपया चुका दिया और नरसीजीके नामसे रुक्का लिख दिया कि मैंने हुण्डीका दाम दे दिया है । नरसीजीने सब रुपयेको साधुओंकी सेवामें खर्च कर दिया । लोग इस प्रकारके नरसीजीकी अनेक आश्चर्य कथा कहते हैं ।

गिरनार पर्वत ।

जूनागढ़ शहरसे पूर्व गिरनार नामक पहाड़ियाँ हैं, जिनमेंसे गिरनार पहाड़ी ३६७५ फीट, योगिनिया पहाड़ी २५२७ फीट, वेसला पहाड़ी २२९० फीट और दत्तर पहाड़ी २७८० फीट समुद्रके जलसे ऊँची है । इनके अलावे लक्ष्मण टेकरी इत्यादि अनेक छोटी पहाड़ियाँ हैं । गिरनार पहाड़ीपर हिन्दुओं और जैनोंके बहुत मन्दिर तथा स्थान बने हुए हैं । गिरनारका हिन्दू,जैन और बौद्ध ये तीनों मतके लोग आदर करते हैं । जूनागढ़ शहरसे गिरनार पहाड़ीकी केवल चोटी देख पड़ती है, क्यों कि उसके आगे (जूनागढ़की ओर) योगिनिया, लक्ष्मण-टेकरी, वेसला, दत्तर इत्यादि छोटी पहाड़ियाँ हैं । पहाडियोंपर जानेके लिये जूनागढ़में किरायेकी डोली मिलती हैं ।

जूनागढ़ शहरसे लगभग १० मील पूर्व २१ अंश, ३० कला उत्तर अक्षांश और ७० अंश, ४२ कला पूर्व देशान्तरमें पवित्र गिरनार पहाडी है । यात्री लोग जूनागढ़ शहरके पाससे पहाड़ियोंकी यात्रा आरम्भ करते हैं । जूनागढ़से १४ मील दूर गिरनारके शिखरपर दत्ता-त्रेयजीका स्थान है । पहाड़ियोंकी चढ़ाई कडी है । नित्य हिन्दू यात्री पहाडियोंपर चढते हैं । यात्री लोग दो तीन दिनमें पहाडी यात्रा समाप्त करते हैं । अगहनकी पूर्णमासीको दत्तात्रेय-जीका जन्म हुआ था, उस दिन उनके दर्शनका अधिक माहात्म्य है ।

कुछ लोगोंका मत है कि गिरनार पर्वत, जो गोमती द्वारिका तथा बेट द्वारिकासे सीधी लकीरसें लगभग १०० मील दूर है, द्वारिकाके पासका रैवतगिरि है, जिसपर द्वारिकाके लोग उत्सव तथा क्रीडा किया करते थे । महाभारत आदि पर्वके २१९ वे अध्याय, और अश्वमेधपर्वके ५९ वें अध्यायमे रैवतगिरिपर यदुवंशियोंके उत्सव करनेकी और लिङ्गपुराण--उत्तरार्द्धके तीसरे अध्यायमे उस पर्वतपर कृष्णके विहार करनेकी कथा लिखी हुई है ।

जूनागढ़ शहरके पास जूनागढकी पुरानी राजधानी अपरकोट नामक किला है । लोग उसके वागेश्वरी फाटक होकर, जिसके पास एक धर्मशाला है, गिरनारकी यात्रा करते हैं । उस स्थानसे लगभग २०० गज आगे मार्गके दहिने वागेश्वरीका मन्दिर है । उससे आगे नया तीन मञ्जिला मन्दिर; मन्दिरसे थोड़ा आगे पत्थरका पुल और पुलसे आगे चट्टानोंपर पुराने शिलालेख हैं । वहाँ लगभग ३० फीट लम्बे और २० फीट चौडे एक चट्टानपर मौर्यवंशी राजा अशोकके लेख जो विक्रमी संवत्से २०० वर्ष पहिलेके हैं, खोदे हुए हैं । दूसरे चट्टानपर शक संवत्की पहली शताब्दी सन् ईस्वीकी दूसरी सदी के क्षत्रपवंशके राजा रुद्रदामाके शिला लेख है (दोनोंके अक्षरान्तर और अनुवाद अन्यत्र देखिये) । एक तीसरे स्थानमें सन् ईस्वीकी पांचवीं सदीके लेख हैं, जिनमें दर्शन तालावके बाँधके टूटने और सएक पल बनवानेका वृत्तान्त खोदा हुआ है ।

मौर्यवंशी राजा अशोक के गिरनारपर्वतपरके लेखसे (वि० सं० से २०० वर्ष पहिले)

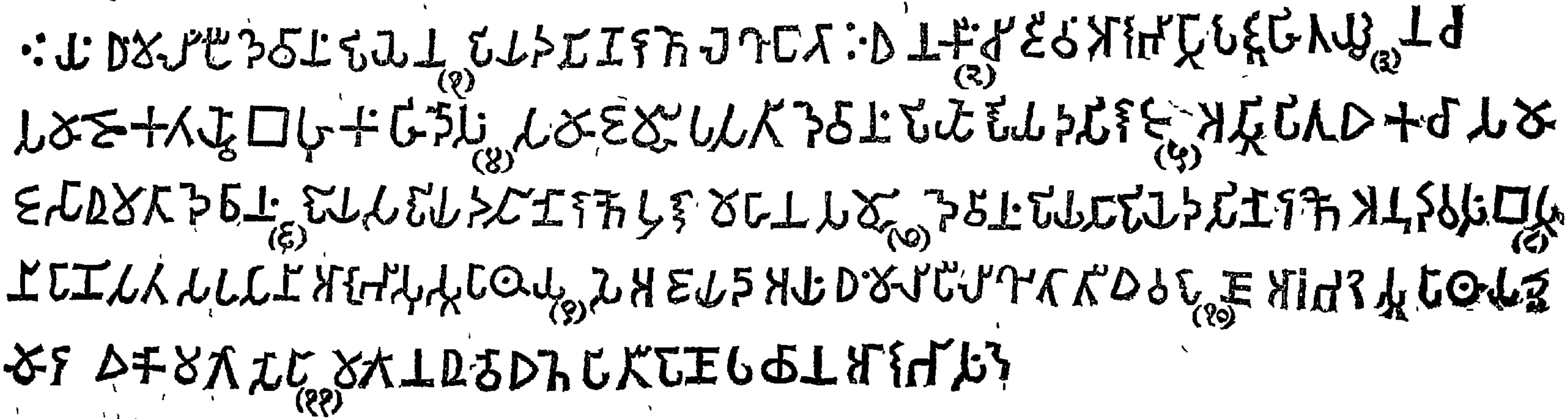

लेखकी असली पंक्तियोंका अक्षरान्तर.

इयं धंमलिपी देवानं प्रियेन प्रियदसिना राञा लेखापिता इधन किंचि जीवं आरभित्पा प्रजूहितव्यं नच समाजो कतव्यो बहुकं हि दोसं समाजम्हि पसति देवानं प्रियो प्रियदसि राजा अस्ति पितुए कचा समाजा साधुमता देवानं प्रियस प्रियदसिनो राञो पुरा महानसम्हि देवानं प्रियसा प्रियदसिनो राञो अनु दिवसं बहूनि प्राणिसतसहस्रानि आरभिसु सूपाथाय से अज यदा अयं धंमलिपी लिखिता तीएव प्राणा आरभदे सूपाथाय द्वो मोरा एको मगो सोपि मगो न ध्रुवो एतेपि त्रीप्राणा पछा न आरभिसंदे (१).

गिरनारपर्वत–१८९३.

(१३०९)

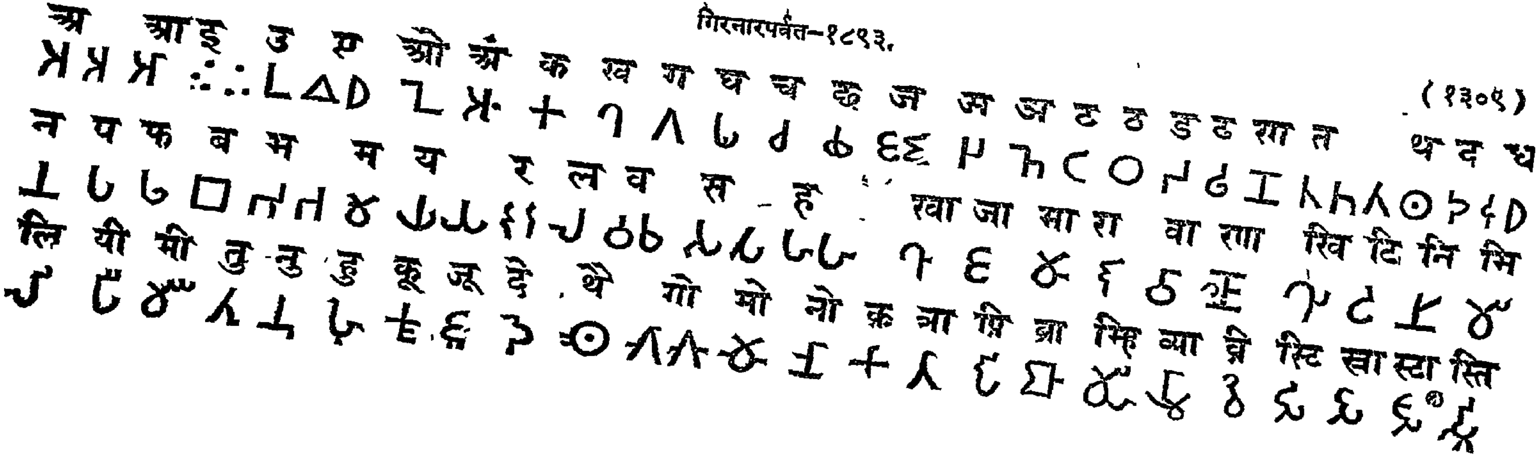

क्षत्रप वंश के राजा रुद्रदामा के (गिरनार पर के) लेख से (शक सं० की पहिली शताब्दी)

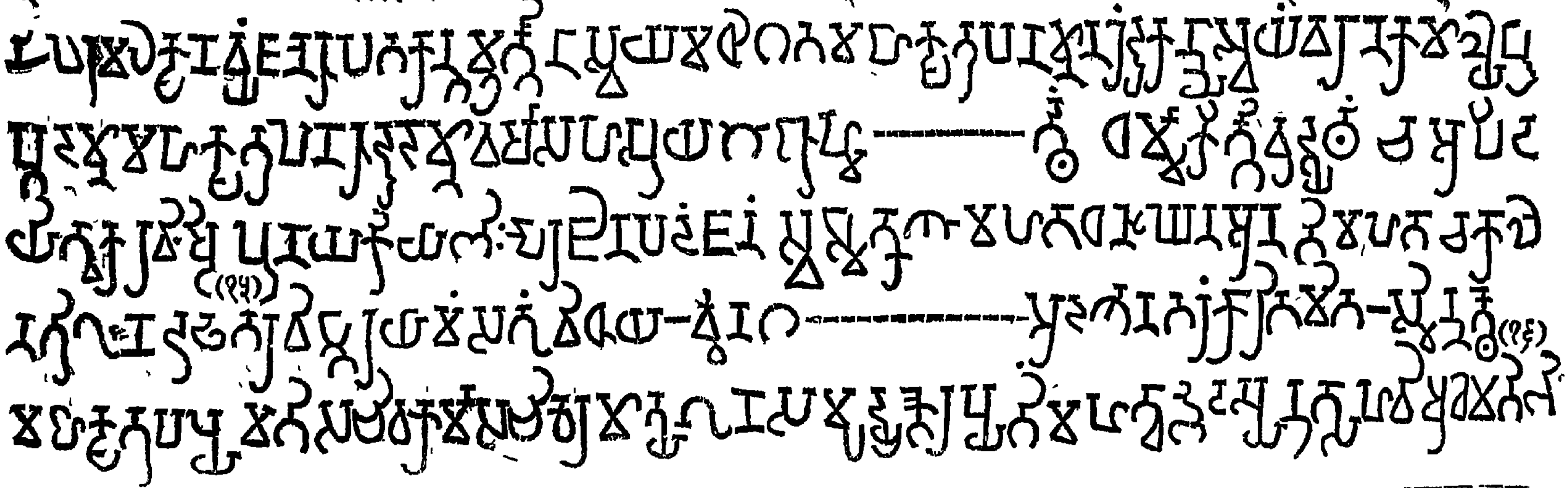

परमलक्षणव्यंजनैरुपेतकान्तमूर्त्तिना स्वयमधिगतमहाक्षत्रपनाम्ना नरेंद्रकन्यास्वयंवरानेकमाल्यप्राप्तदाम्ना महाक्षत्रपेणरुद्रदाम्ना वर्षसहस्रायगोब्राह्म...............
...र्थं धर्मकीर्त्तिवृद्ध्यर्थं च अपीडयित्वा कराविष्टिप्राणयक्रियाभिः पौरजानपदं जनं स्वस्मात्कोशा (त्) महता धनौघेन अनतिमहता च कालेन त्रिगुणदृढतरविस्तारायामं सेतुं विधाय——र्व्वतग................सुदर्शनतरं कारितमिति—स्मिन्नर्थे महाक्षत्रपस्य मतिसचिवकर्मसचिवैरमात्यगुणसमुद्युक्तैरप्यतिमहत्वाद्भेदस्य (स्या) नुत्साहविमुखमतिभिः

गिरनारपर्वत–१८९३. (१३११)

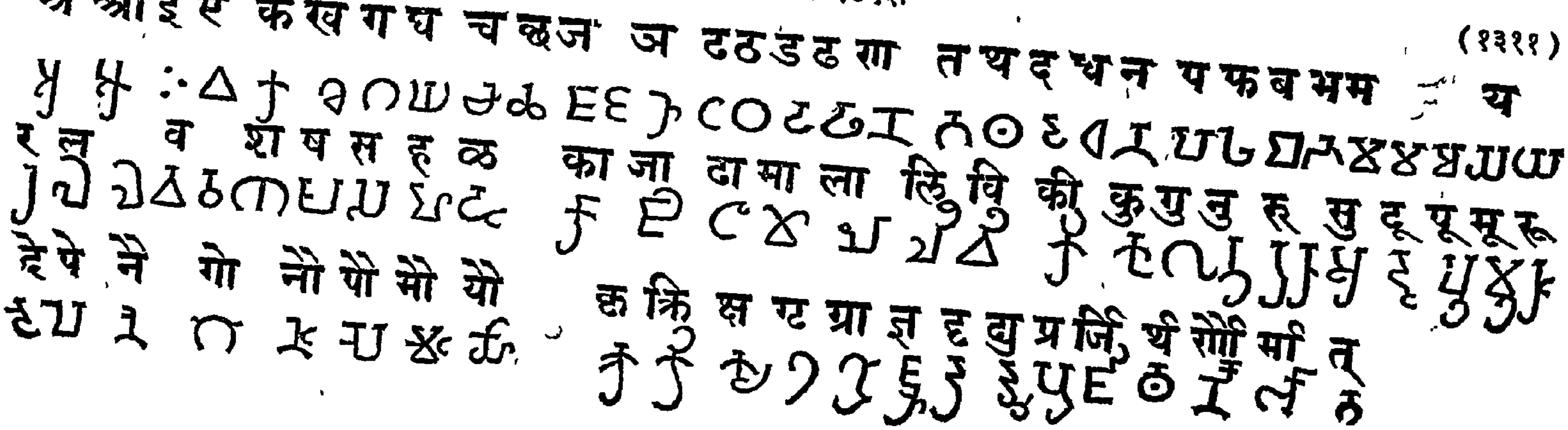

राजा अशोकके लेखके पत्थरसे आगे सोनारोखा नदीपर सुन्दर पुल बना है। नदीके दोनों किनारोंपर अनेक मन्दिर बने हुए हैं, जिनमें दामोदरजीका मन्दिर बड़ा है। उस स्थानपर दामोदरकुण्ड और रेवतीकुण्डमें यात्री लोग स्नान करते हैं। उससे आगे जङ्गली घाटी होकर पहाड़ी मार्ग निकला है। एक जगह वृक्षोंके पास, जहाँ बहुत बन्दर रहते हैं, भवनाथ शिवका मन्दिर है। उससे आगे एक स्थानपर १ कूप और कई एक मन्दिर हैं। नेमिनाथके मन्दिर तक जगह जगह ६ परवा अर्थात् विश्रामगृह मिलते हैं।

मैदानसे ५०० फीट ऊपर चुड़िया परवाका और १००० फीट ऊपर टोलीटेरी नामक विश्रामगृह है। वहाँसे खड़ी चढ़ाई आरम्भ होती है। लगभग १४०० फीट ऊपर; जिसके आगेसे राह दहिने घूमती है, तीसरा विश्रामगृह है। उससे आगे जानेपर दहनी और दत्तर पहाड़ी देख पड़ती है। लगभग१५०० फीट ऊपर एक पत्थरकी धर्मशाला है, जहाँसे भैरवथंपा चट्टान; अर्थात् भयंकर कुण्डके चट्टानका उत्तम दृश्य दृष्टिगोचर होता है। पूर्व कालमें अनेक लोग उस-स्थानसे १००० फीट अथवा उससे अधिक नीचे कूदकर आत्मघात कर डालते थे। उनको विश्वास था कि जो आदमी इस प्रकारसे प्राण त्याग करेगा वह दूसरे जन्ममें राजा होगा। उसके पास पांडव गुफा है। एक स्थानमें हनूमान धारा और एक स्थानमें रामानन्दस्वामीकी चरणपादुका और गुफा मिलती है। एक जगह मुचुकुन्द गुफा है। लोग कहते हैं कि इसी गुफामें राजा मुचुकुन्द सोये थे, जिनकी दृष्टिसे कालयवन भस्म होगया। इनके अलावे मार्गमें सेवानाथका मन्दिर, हाथीपगलाकुण्ड, सूर्यकुण्ड, मालीपर्वकुण्ड तथा अनेक दूसरे कूप, कुण्ड तथा मन्दिर हैं।

जैन मन्दिर—जूनागढ़के मैदानसे २३७० फीट (समुद्रके जलसे लगभग ३००० फीट) ऊपर देवकोटके घेरेका, जिसको खेंगारका महल भी कहते हैं, फाटक है। फाटकसे भीतर जानेपर बाईं ओर पहाड़ीके पश्चिम किनारेके पास जैन मन्दिरोंका बड़ा घेरा और दहिनी ओर कच्छके राजा मानसिंहका पुराना मन्दिर मिलता है। वहाँ पहाड़ीकी चोटीसे लगभग ६०० फीट नीचे उस पहाड़ीके खड़े भागके शिरपर १६ जैन मन्दिर बने हुए हैं; जिनमें सबसे बड़ा और कदाचित् सब मन्दिरोंसे पुराना जैनोंके २२ वें तीर्थंकर नेमीनाथका विचित्र मन्दिर है। मन्दिर परके लेखसे जान पड़ता है कि सन् १२७८ में उस मन्दिरकी मरम्मत की गई। गिरनारके मन्दिर बहुत पुराने हैं। ईशासे २७० वर्ष पहिले भी वह जैन यात्राका स्थान था।

जैन लोगोंके ५ पवित्र स्थानोंमेंसे सबसे अधिक पवित्र पालीटाणाकी शत्रुंजय पहाड़ी और उसके पश्चात् गिरनार पहाड़ी है।

१९५ फीट लम्बे और १३० फीट चौड़े चौकोने आँगनमें नेमीनाथका मन्दिर है। मन्दिरके भीतर सोनेके भूषणों और रत्नोंके जड़ावसे भूषित नेमीनाथकी नीलरङ्गकी प्रतिमा है। उस स्थानके चारों ओर एक राह है, जिसके बगलमें सफेद मार्बुलकी अनेक मूर्त्तियाँ देखनेमें आती हैं। मन्दिरके आगे अर्थात् पश्चिम क्रमसे दो कमरे और एक जग-मोहन अर्थात् आगेका मण्डप है। उनमेंसे पूर्ववाले कमरेके मध्यमें एक स्थान; पश्चिमवाले कमरेमें पीले रंगके पत्थरसे बने हुए २ चबूतरे; जिनपर दो दो चरणचिह्न बने हैं; और उसके पश्चिमके जगमोहनके खम्भोंमेंसे २ खम्भोंपर मन्दिरकी मरम्मतके समय लिखे हुए हैं, जो सन् १२७५—१२७८—१२८१ के मुताबिक होते हैं। मन्दिरके आँगनके चारों बगलोंमें ७० कोठरियां हैं। प्रति कोठरीमें नेमीनाथकी एक प्रतिमा पल्थी मार कर बैठी है। कोठ-रियोंके आगे लगातार ओसारा है; जिसके आगे पत्थरकी जालीदार टट्टियां बनी हैं।

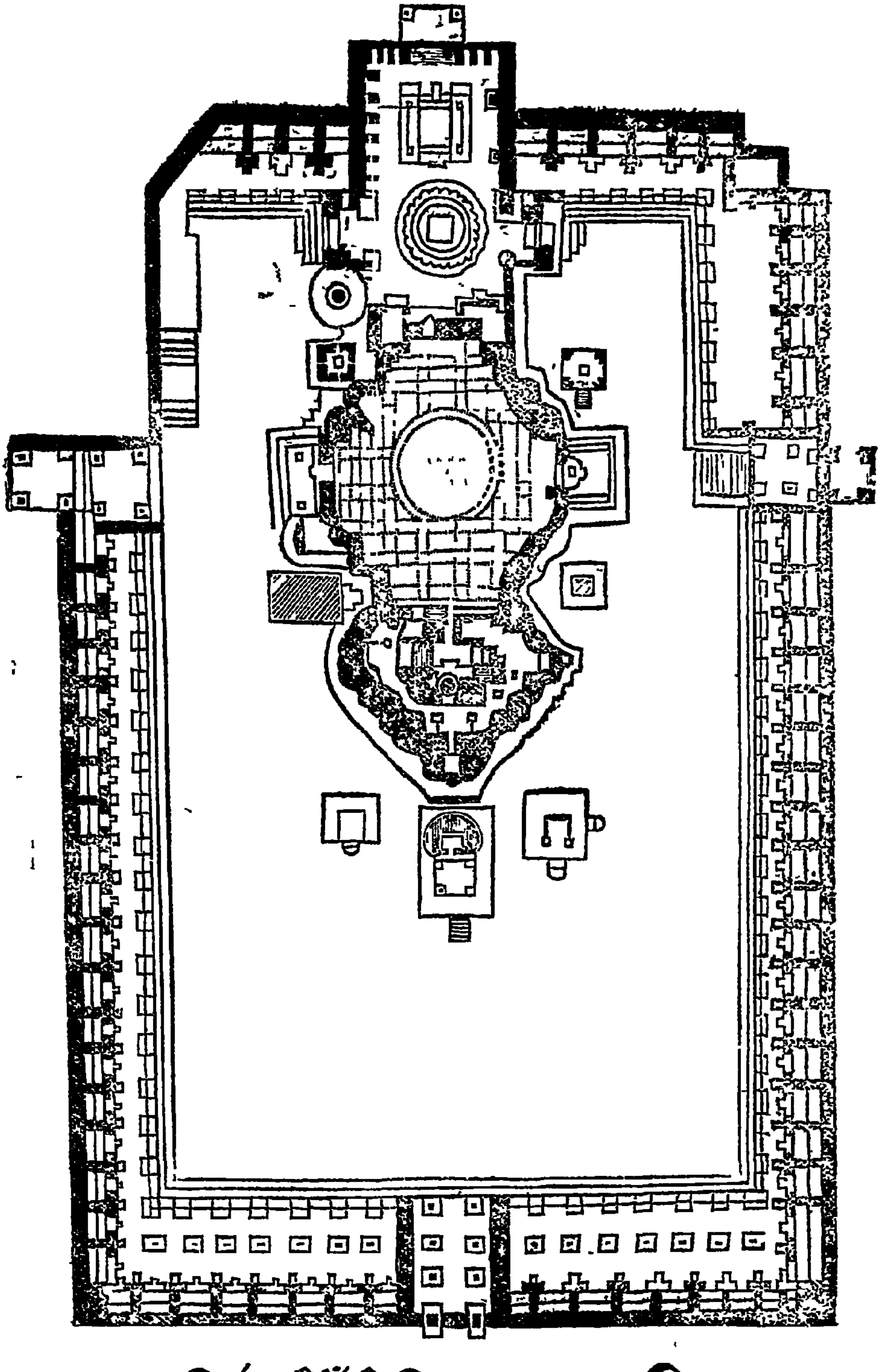

गिरनारमें नेमीनाथ कामन्दिर

नेमीनाथके मन्दिरको छोड़नेपर बाईं ओर ३ मन्दिर मिलते हैं, जिनमें दक्षिणवाले मन्दिरमें प्रथम तीर्थंकर ऋषभजी, अर्थात् आदिनाथकी एक बड़ी मूर्त्ति और चौवीसों जैन तीर्थंकरों अर्थात् जैन देवताओंकी प्रतिमा हैं (चौवीसोंके नाम शत्रुंजयमें देखिये) । उस मन्दिरके सामने पंचभाइयोंका नया मन्दिर है । उसके पश्चिम पार्श्वनाथका बड़ा मन्दिर और बड़े मन्दिरसे उत्तर पार्श्वनाथका दूसरा मन्दिर है । उत्तर बगलके पास कुमारपालका मन्दिर है, जिसको मुसलमानोंने कुरूप किया था; किन्तु सन् १८२४ में हंसराज जेठाने उसको फिर पूर्ववत् बना दिया ।

नेमीनाथके मन्दिरके पीछे तेजपाल और वास्तुपाल दोनों भाइयोंके (सन् ११७७ के) बनवाये हुए एकही साथ ३ विचित्र मन्दिर हैं । वहाँ १९ वें तीर्थंकर मालीनाथकी मूर्त्ति है । तेजपाल और वास्तुपालका बनवाया हुआ एक उत्तम मन्दिर आबू पहाड़पर भी है ।

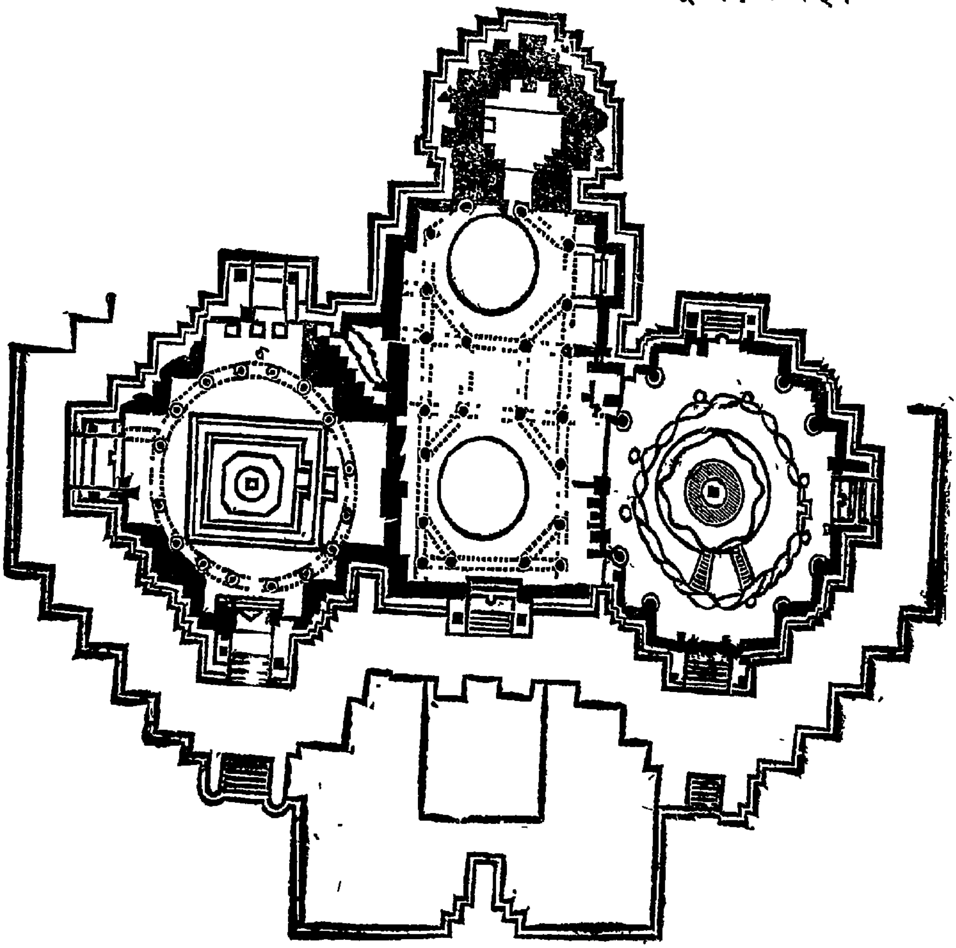

गिरनार मे

तेजपाल और वस्तुपालकामन्दिर

गौमुखी—ऊपर लिखे हुए जैन मन्दिरोंके घेरेसे उत्तर ७० फीट लम्बा और ५० फीट चौड़ा भीमकुण्ड नामक जलाशय है, जिसमें हिन्दू यात्री स्नान करते हैं।

जैन मन्दिरोंसे दक्षिण उस स्थानसे २०० फीटकी ऊँचाई पर जूनागढ़ कसबेसे लगभग १० मील दूर गौमुखी स्थान है। वहाँ पत्थरकी गोमुखी होकर जलकी धारा गिरती है, जिसको लोग गंगा कहते हैं। वहाँ कई एक झरने तथा ब्रह्मेश्वर और नर्मदेश्वरके २ मन्दिर हैं। गोमुखीसे ऊपर दो राह दो तरफ गई हैं।

अम्बाका मन्दिर—गोमुखीसे एक मील दूर पहाडीकी पहिली चोटीके शिरपर ३३३० फीटकी ऊँचाई पर अम्बादेवीका पुराना मन्दिर है, जो दूरसे देख पड़ता है। खड़ी सीढ़ियोंसे मन्दिरके पास पहुँचना होता है। उस प्रान्तके दूर दूरके बहुत ब्राह्मण विवाह होने पर दुलहिनके सहित वहाँ जाते हैं और दुलहिनके साथ गँठजोड़ाव किये हुए अम्बादेवीको नारियल आदि पूजा चढ़ाते है। एक ब्राह्मण दुलहाने उस मन्दिरकी मरम्मत करवाई है।

गुरु दत्तात्रेयका मन्दिर-अम्बाके मन्दिरसे पूर्व गोरखनाथ, दत्तासू अर्थात् दत्तात्रेय और कालिका नामकी ३ चोटियोंके ३ शृङ्ग है। पहिले गोरखनाथका स्थान, जिसको गोरखटेकरी कहते हैं, मिलता है। उससे आगे गोमुखीसे ४ मील और जूनागढ़ शहरसे १४ मील दूर गुरु दत्तात्रेयका छोटा मन्दिर है, जिसमें उनका चरण चिह्न बना हुआ है। श्रीमद्भागवतके लेखके अनुसार दत्तात्रेयजी विष्णुके २४ अवतारोमेंसे एक हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा-श्रीमद्भागवत-(प्रथमस्कन्ध, तीसरा अध्याय) विष्णुभगवान्के २४ अवतार है,-(१) सनत्कुमार, (२) वाराह, (३) यज्ञ, (४) हयग्रीव, (५) नर· नारायण, (६) कपिलदेव, (७) दत्तात्रेय, (८) ऋषभ, (९) पृथु, (१०) मत्स्य, (११) कच्छ, (१२) धन्वतारि, (१३) मोहिनी, (१४) नृसिंह, (१५) वामन, (१६) परशुराम, (१७) व्यास, (१८) रामचन्द्र, (१९) कृष्ण (२०) नारद, (२१) हरि, (२२) हस, (२३) बुद्ध और (२४) कल्की। दत्तात्रेयजीने महर्षि अत्रिके पुत्र होकर अपनी माता अनुसूयाको प्रसन्न किया और राजा अलर्क और प्रह्लादको आत्म विद्याका उपदेश दिया।

विष्णुपुराण-(प्रथम अंश, १० वाँ अध्याय) महर्षि अत्रिकी भार्या अनुसूयासे चंद्रमा, दत्तात्रेय और दुर्वासा नामक ३ पुत्र हुए।

दूसरा शिवपुराण—(७ वाँ खण्ड, २५ वाँ अध्याय) अत्रिके ३ पुत्र हुए,-ब्रह्माके अंशसे चन्द्रमा, विष्णुके अशसे दत्तात्रेय और शिवजीके अंशसे दुर्वासा।

भविष्यपुराण-(उत्तरार्द्ध, ५१वाँ अध्याय) महर्षि आत्रिके पुत्र योगी दत्तात्रेयजी, जो विष्णुके अवतारोमेंसे थे, विन्ध्य पर्वत पर अपने आश्रममें योग साधन करते थे।

जेतपुर।

जूनागढके रेलवे स्टेशनसे १७ मील उत्तर जितलसरका रेलवे जक्शन है। जितलसरसे पूर्व ३ मील जेतपुर, ५६ मील लाठी, ८० मील धोला जंक्शन, ९३ मील सोनगढ़, ९८ मील सिहोर कसबा और ११२ मील भावनगरका रेलवे स्टेशन। जितलसर जंक्शनसे पश्चिम

१० मील धोराजी और ७८ मील पोरबंदरका रेलवे स्टेशन और जितलसरस पूर्वोत्तर ओर २३ मील गोंडल, ४७ मील राजकोट; ७२ मील बंकानेर जंक्शन और १२४ मील बाढ़वान जंक्शनसे उत्तर ५५ मील लिंबड़ी, ६८ मील बाढ़वान शहर और ७२ मील बाढ़वान जंक्शनका स्टेशन और बंकानेर जंक्शनसे उत्तर १६ मील मोरवीका स्टेशन है।

जितलसर जंक्शनसे ३ मील पूर्व जेतपुरका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके काठियावाड़ सौराष्ट्र डिवीजनमें एक देशी राज्यकी राजधानी जेतपुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय जेतपुर कसबेमें १३६४६ मनुष्य थे, अर्थात् ७२६८ हिन्दू; ५१३५ मुसलमान; १२४२ जैन और १ पारसी।

जेतपुर कसबेके चारोंओर पक्की दीवार है। कसबा उन्नति पर है। वहाँसे राजकोट, धोराजी, जूनागढ़ और मनवाड़ाको सड़क गई है। जेतपुरसे धर्मशाला, बङ्गला, अस्पताल, कचहरियोंके मकान और कई एक स्कूल हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय जेतपुर राज्यके ७३४ वर्गमीलमें ९२५५३ मनुष्य थे। राज्यसे लगभग ८ लाख रुपया मालगुजारी आती है; जिसमेंसे अङ्गरेजी गवर्नमेंट, बड़ोदाके गायकवाड़ और जूनागढ़के नवावको लगभग ६० हजार राज्यकर दिया जाता है। इसमें अलग अलग कर देनेवाले १७ तालुकदार हैं।

लाठी।

जेतपुरके रेलवे स्टेशनसे ५३ मील और जितलसर जंक्शनसे ५६ मील पूर्व लाठीका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके काठियावाड प्रदेशके गोहेलवार प्रान्तमें देशी राज्यकी राजधानी लाठी है।

रेलवे स्टेशनसे लगभग १ मील दूर लाठी कसबा है। लाठीमें ठाकुर साहबका महल, एक धर्मशाला, अस्पताल, स्कूल और पोष्ट आफिस है।

लाठीका राज्य–यह राज्य काठियावाड़के चौथे दर्जेके राज्योंमेंसे एक है। राज्यमें ऊख और कपास अधिक होती है। सन् १८८१ की मनुष्य–गणनाके समय लाठी राज्यके ४८ वर्गमील क्षेत्रफलमें ८ गाँव, और ६८०४ मनुष्य थे। राज्यसे लगभग ७४००० रुपये मालगुजारी आती है, जिसमेंसे बड़ोदाके गायकवाड़ और जूनागढ़के नव्वाबको २००० रुपया राज्यकर दिया जाता है।

लाठीके ठाकुर साहब गोहेल राजपूत है। लोग कहते हैं कि लगभग सन् १२६० में गोहेल राजपूत सेजाक नामक अपने प्रधानके अधीन उस देशमें बसे। सेजाकके ३ पुत्र थे, जिनमेंसे रानोजीके वंशधर भावनगरके ठाकुर, सारङ्गजीके वंशधर लाठीके ठाकुर और शाहजीके वंशधर पालीटाणाके ठाकुर हैं। वर्तमान लाठीनरेशका नाम ठाकुरसाहब सूरसिंहजी हैं।

पालीटाणा।

लाठीके रेलवे स्टेशनसे २४ मील पूर्व धोला जंक्शन है, जहाँसे उत्तर ७२ मीलकी एक रेलवे लाइन वाढ़वान जंक्शनको गई है। धोलाके स्टेशनके पास भावनगरके ठाकुर साहबकी धर्मशाला है।

धोला जक्शनसे १३ मील (जितलसर जक्शनसे ९३ मील) पूर्व और सिहोरके स्टेशनसे ५ मील (भावनगरसे १९ मील) पश्चिम सोनगढका रेलवे स्टेशन है। सोनगढ़ गोहेलवार सवडिवीजनका सदर स्थान है। सोनगढ़से १४ मील दक्षिण एक अच्छी सड़क पालीटाणा कसवेको गई है। * वम्बई हातेके काठियावाड़ देशके गोहेलवार प्रांतमें शत्रुंजय नामक प्रसिद्ध पहाड़ीकी पूर्वी नेवके पास (२१ अंश, ३१ कला, १० विकला उत्तर अक्षांश और ७१ अंश, ५३ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमें) एक देशी राज्यकी राजधानी पालीटाणा है। पालीटाणा कसवेसे ७० मील दक्षिण–पश्चिम सूरत शहर, १०५ मील पूर्व कुछ उत्तर बड़ोदा शहर, १२० मील पूर्वोत्तर अहमदावाद शहर और लगभग २०० मील दक्षिण कुछ पूर्व वम्बई शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय पालीटाणा कसवेमें १०४४२ मनुष्य थे, अर्थात् ६५८६ हिन्दू, १९५७ जैन, १८७८ मुसलमान, २० कृस्तान और १ पारसी।

पालीटाणामें वहाँके ठाकुर साहवका महल वना है और स्कूल, अस्पताल और डाकखाना है।

पालीटाणाका राज्य—पालीटाणाका राज्य काठियावाडके गोहेलवार प्रान्तमें काठियावाडके दूसरे दर्जेके राज्योंमेंसे एक है। उस राज्यमें ऊख, कपास और गल्ले अधिक होते हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय पालीटाणा राज्यके २८८ वर्गमील क्षेत्रफलमें १ कसबा, ८६ गाँव, १०४८६ मकान और ४९२७१ मनुष्य थे; अर्थात् ४२९५५ हिन्दू, ३५८१ मुसलमान और २७३५ दूसरे। पालीटाणाके राज्यसे लगभग २००००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमेंसे १०३६० रुपया वडोदाके गायकवाड़ और जूनागढ़के नव्वावको राज्यकर दिया जाता है। ठाकुरसाहवका फौजी वल लगभग ४५० आदमीका है। पालीटाणा राज्यकी शत्रुंजय पहाडीका वृत्तान्त नीचे देखिये।

पालीटाणाके ठाकुर गोहेल राजपूत हैं। कहते हैं कि सन् १२६० में सेजाक नामक गोहेल राजपूतके अधीन उस जातिके लोग उस देशमें वसे। सेजाकके ३ पुत्र थे, जिनमेंसे वड़े पुत्र रानोजीके वंशधर भावनगरके ठाकुर सारङ्गजीके वंशधर लाठीके ठाकुर और तीसरे पुत्र शाहजीके वंशधर पालीटाणाके ठाकुर हैं। ठाकुरसाहव सूरसिंहजीके देहान्त होनेपर वर्तमान पालीटाणा नरेश ठाकुरसाहव मानसिंहजी, जिनकी अवस्था लगभग २७ वर्षकी है, उत्तराधिकारी हुए।

शत्रुंजय पहाड़ी।

पालीटाणा कसवेसे १½ मील पश्चिम पालीटाणाके राज्यमें शत्रुंजय पहाडी है। कसवेस पहाड़ीके पास तक सड़कके वगलोंमें वृक्ष लगे हुए हैं। जैन लोगोंकी ५ पवित्र पहाड़ियाँ हैं,–काठियावाड़में शत्रुंजय और गिरनार, राजपूतानेमें आवू, मध्य भारतमें ग्वालियर और छोटे नागपुर प्रान्तके हजारीवाग जिलेमें पारसनाथ। इन पांचोंमे शत्रुञ्जय; जिसका प्रधान देवता आदि नाथ है, सबसे अधिक पवित्र है; इस लिये भारतवर्षके प्रायः सब शहरोंके धनी जैन लोग उसके मन्दिरोंकी सहायता करते आते हैं और पहाडीपर

* सोनगढसे ५ मील पूर्व सिहोरका रेलवे स्टेशन है। वहासे रेलवे शाखा पालीटाणाको गई है।

मन्दिरोंको बनवाते हैं। शत्रुञ्जय माहात्म्य १४ सर्गकी पुस्तक है। प्रति वर्ष बहुतसे जैन यात्री तथा देखने वाले लोग पहाड़ी पर चढ़ते हैं। यात्री लोग सबेरे पहाड़ी पर चढ़ते हैं और उसी दिन दर्शन या पूजन करके लौट आते है, क्योंकि उस पवित्र पहाड़ीपर रसोई बनाना और सोना जैन लोगोंके मतमें निषेध है। बहुतेरे जैन लोग उस पर भोजनभी नहीं करते। पहाड़ी पर चढ़नेके लिये वहाँ झंपान, जिसमें ४ कुली लगते हैं, बहुत मिलते हैं।

शत्रुञ्जय पहाड़ी समुद्रके जलसे १९८० फीट ऊँची है। पहाड़ीकी चढ़ाईके मार्गमें और खास करके आदिनाथके मन्दिरके पीछे बहुतसी छोटी कोठरियो तथा ताकोंमे मार्बुलके तखते पर जोड़े चरणचिह्न बने हैं, जिनको निर्धन जैनोंने बनवाया था। मार्गमें बेडौल पत्थरकी सीढ़ियाँ हैं। किसी किसी जगह दुरुस्त सीढ़ियाँ बनी हुई है। जगह जगह विश्रामके लिये मकान बने हैं। बहुत जगह पहाड़ीका बगल बहुत खड़ा है। जमीनसे कुछ ऊपर हनूमानजीका एक छोटा मन्दिर है। उस मन्दिरके पाससे ऊपरको दो राह गई हैं;–एक दहिनी ओर पहाड़ीकी उत्तरी चोटीको और दूसरी बाईं ओर बीच वाली घाटीसे होकर दक्षिणी चोटीको। दहिनेकी राहसे कुछ ऊपर जाने पर एक मुसलमानी पीरका दरगाह मिलता है। हनूमान्जीके मन्दिरके होनेसे हिन्दू लोग और उस दरगाहके होनेसे मुसलमान लोग उस जैन पहाड़ीको अपने अपने मतका कह कर उसका आदर करते हैं।

पहाड़ीके ऊपर दो चिपटे शिखर हैं। दोनों शिखरोंके बीचमें एक घाटी है। प्रत्येक शिखर लगभग ३५० गज लम्बा है। घाटी और दोनों शिखर दृढ़ दीवारसे घेरे हुए हैं। दीवारोंमें गोली चलाने योग्य भवांरियाँ बनी हुई हैं। बगलमें फाटक है। घेरेके भीतर अलग अलगके प्रधान मन्दिरोंके घेरेके १९ फाटक हैं। उनमें एक एक प्रधान मन्दिरके साथ अनेक छोटे मन्दिर हैं। सब फाटक रातमें बन्द कर दिये जाते हैं। वह पहाड़ी जैन मन्दिरोंका एक शहर है, क्योंकि सिवाय चन्द तालाबोंके फाटकके भीतर मन्दिरोंके अतिरिक्त कोई दूसरी मशहूर वस्तु नहीं है। उसमें सैकड़ों जगह जैन मन्दिर बने हुए हैं। शिखरकी दीवार पर चढ़नेसे दक्षिण ओर शत्रुञ्जय नदी देख पड़ती है। पहाड़ीका सम्पूर्ण शिर जैन मन्दिरोंसे परिपूर्ण है, जिनमें आदिनाथ, कुमारपाल, विमलशाह, संप्रतिराज और चौमुख मन्दिर मुख्य हैं। उनमेंसे चौमुख मन्दिर सब मन्दिरोंसे ऊंचा है, वह २५ मील दूरसे पहचाना जा सकता है।

एक घेरेके मध्यमें 'चौमुख अर्थात् चार मुख वाला जैन मन्दिर है। वह मन्दिर २ फीट ऊँचे चबूतरे पर लगभग ६८ फीट लम्बा और ५८ फीट चौड़ा बना हुआ है, किन्तु उसका अगवास कुछ दूर तक फैला है। मन्दिरके पूर्व मण्डप है, जिसके पश्चिम ३१ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा अन्तरालय, अर्थात् एक कमरा है; जिसके दोनो बगलोंमें चबूतरे पर एक एक द्वार बने हुए हैं। अन्तरालयमें १२ स्तम्भ लगे हैं। उसकी छत गुम्बजदार है। अन्तरालयसे होकर गर्भगृहमें, जो २३ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है, जाना होता है। उसमें मूर्त्तिके सिंहासनके कोनोंके पास ४ विचित्र खम्भे लगे है। फर्शसे ५६ फीट ऊँचा विमान अर्थात् देवताके रहनेका स्थान है। चारोंओर ४ बड़े द्वार हैं; अर्थात् १ अन्तरालयमें और तीन देवढ़ियोंमें चबूतरे पर। गर्भगृहकी दीवार, जो विमानको थांभती है; बहुत मोटी है, उसमें अनेक छोटी कोठरियां बनी हुई हैं। बड़े मन्दिरोंके फर्शमें नील,

श्वेत तथा भूरे रङ्गके सुन्दर मार्बुलके टुकड़े जड़े हुए हैं। सीढ़ियाँ उत्तर बगलपर विमानके ऊपरके मञ्जिलको गई हैं। गर्भगृहमें २ फीट ऊँचा, १२ फीट लम्बा और इतनाही चौडा श्वेत मार्बुलका सिंहासन, अर्थात् चबूतरा है। सिंहासन पर श्वेत मार्बुलकी बनी हुई १० फीट ऊँची आदिनाथकी ४ मूर्त्तियाँ पलथी मारकर बठी हैं। गर्भगृहके चारोंओरके द्वारोंमेंसे प्रति द्वारकी ओर एक मूर्त्तिका मुख है, इस लिये वह मान्दिर चौमुख मन्दिर कहलाता है। मारवाड़से लाकर मार्बुल उस मन्दिरमें लगाया गया था। लोग कहते हैं कि इस मन्दिरमें १३५ मूर्त्तियाँ हैं। बहुतसी मूर्त्तियोंके भौओं और छातियोंपर वेशकीमती रतन और कंधाओं, केहुनियों, ठेहुनों तथा शिरके मुकुटपर सोनेके पत्तर जड़े हुए हैं। उसे घेरेमें चौमुख मन्दिरके अतिरिक्त अन्य बहुत छोटे मन्दिर हैं।

ऐसा प्रसिद्ध है कि इस घेरेके भीतरके कई मन्दिर राजा विक्रमके समयमें बने थे; किन्तु यह नही निश्चय होता है कि वह उज्जैनका विक्रम, अथवा लगभग सन् ५०० ईस्वीका हर्ष विक्रम या कोई अन्य विक्रम था। लेखोंसे विदित होता है कि सवत् १६७५ (सन् १६१९ ई०)में सुलतान नूरुद्दीन जहाँगीर, प्रिंस सुलतान खुशरू और प्रिंस खुर्रमके समयमें शनिवार, वैशाख सुदी १३ सोमजी और उसकी स्त्री रंजाल देवीने आदिनाथके चार मुख वाले मन्दिरको बनवाया, अर्थात् अहमदाबादके सेवा सोमजीने मन्दिरको वर्तमान शकलमें फिर बनवा दिया।

वैज्ञानिक लोग अनुमान करते हैं कि शत्रुंजयके मन्दिरोंमेंसे चन्द मन्दिर ११ वी सदीके हैं। बाकी सब उसके पीछेसे अब तकके बने हुए हैं, किन्तु उनमेंसे बहुत मन्दिर और प्रसिद्ध मन्दिरोंमेंसे चन्द मन्दिर १०० वर्षके इधरके बने हुए हैं।

एक स्थानमें इतने मान्दिरोंका जमाव हिन्दू अथवा बौद्ध लोगोंके किसी तीर्थमे नहीं है। यद्यपि काशी और भुवनेश्वरमें हिन्दुओंके बहुतसे मान्दिर और सांची, पेशावर इत्यादिमें बौद्धोंके बहुत स्तूप और विहार हैं, किन्तु वे छितराये हुए हैं, अर्थात् शहरके समान इकट्ठे नहीं हैं। जैन लोग प्राय. करके अपने मन्दिरोंको इकट्ठे एक झुण्डमें बनवाते हैं।

शत्रुंजयपर सन्नाटा रहता है, अर्थात् निर्जन स्थान है। वहाँ कभी कभी प्रातःकालमें बहुत थोडे समय तक घण्टी या नगाड़ेका शब्द सुन पड़ता है और कोई विशेष दिनोंमें बड़े मन्दिरोंसे गीतका शब्द। जैन मतके चन्द साधु वहाँके मान्दिरोंमें सोते हैं और वहाँ अपनी नित्यक्रिया करते हैं और चन्द नोकर, जो बड़े परिश्रम और सावधानीसे मन्दिरों और स्थानोंको साफ करते हैं तथा वहाँके कबूतरोंको खिलाते हैं, वहाँ सर्वदा निवास करते हैं। यात्री लोग, पूजा अथवा दर्शन करके उसी दिन लौट जाते हैं; क्योंकि उस पवित्र पहाड़ीपर, जो देवताओंका शहर है, सर्व साधारणको रसोई बनाना, शयन करना तथा भोजन करना, भी निषेध है, किन्तु बहुतेरे लोग अपने साथ खानेकी वस्तु ऊपर ले जाते हैं। मान्दिरोंपर तथा उनके आस पास बहुतसे कबूतरों, पण्डुकों तथा रुक्खियोंके झुण्ड रहते हैं। इनके अलावे मयूर इत्यादि पक्षी भी वहाँ हैं।

जैनधर्म—पुराणोंमें किसी किसी जगह जैनधर्मका वृत्तान्त मिलता है। जैनी लोगोंके नीचे लिखे हुए २४ तीर्थंकर अर्थात् देवता हैं;—१ ऋषभनाथजी, जिनको आदिनाथ भी कहते

हैं, २ अजितनाथ, ३ सम्भवनाथ, ४ अभिनन्दननाथ, ५ सुमतिनाथ, ६ पद्मप्रभनाथ, ७ सुपार्श्वनाथ, ८ चन्द्रप्रभनाथ, ९ पुष्पदन्तनाथ, १० शीतलनाथ, ११ श्रेयांशनाथ, १२ वासुपूज्यनाथ, १३ विमलनाथ, १४ अनन्तनाथ, १५ धर्मनाथ, १६ शान्तिनाथ, १७ कुंथुनाथ, १८ अरनाथ, १९ मल्लीनाथ, २० सुव्रतनाथ, २१ नमिनाथ, २२ नेमीनाथ, २३ पार्श्वनाथ और २४ वाँ महावीर स्वामी । जैनी लोगोंके मन्दिरोंमें इन्हीं तीर्थकरोंकी मूर्त्तियाँ रहती हैं । किसी मन्दिरमें इनमेंसे चन्दकी मूर्त्तियाँ और किसीमें चौवीसों तीर्थकरोंकी प्रतिमा हैं ।

जैनियोंके ग्रन्थमें लिखा है कि चौवीसवें तीर्थकर महावीरका देहान्त विक्रमीय संवत्से ४७० वर्ष (सन् ईस्वीसे ५२७ वर्ष) पहिले हुआ था; अर्थात् गौतम बुद्धके समयमें महावीर विद्यमान थे । जैनी लोग कहते हैं कि २३ वाँ तीर्थकर पार्श्वनाथसे२५० वर्ष पीछे महावीरका देहान्त हुआ था ।

जैनी लोगोंकी पुस्तकोंमें लिखा है कि महावीर राजा सिद्धार्थके पुत्र थे । राजाने पुत्रका नाम वर्द्धमान रक्खा था और उनको महावीरकी पदवी दी थी । महावीरकी प्रियदर्शना नामक पुत्रीका ब्याह कुमार जमालीसे हुआ था । महावीरने अपने माता-पिताकी मृत्यु होजानेके पश्चात् अपने ज्येष्ठ भ्राता नन्दिवर्द्धनको राज्य भार देकर यतिधर्मका आश्रयण लिया और १२ वर्ष इन्द्रियोंका संयम करके जिनत्वको प्राप्त किया । महावीरके धर्म उपदेशसे मुग्ध होकर १००००० लोग श्रावक अर्थात् गृहस्थ जैन और १४००० लोग श्रमण अर्थात् विरक्त जैन होगये । उनके ११ प्रधान शिष्य महा पण्डित थे । ७२ वर्षके वयमें महावीरका देहान्त हुआ । बहुत लोगोंका मत है कि बौद्ध धर्मके भारतवर्षसे उठ जानेपर महावीर कृत जैनधर्मका प्रचार हुआ ।

जैनियोंके मतमें प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द ये ४ प्रमाण हैं । उनके मतमें जगत्के मूल तत्त्व ९ हैं—१ जीव, २ अजीव, ३ पुण्य, ४ पाप, ५ आश्रव (कर्मका बन्धन), ६ संवर, ७ बंध, ८ निर्जरण (कर्मका त्याग) और ९ वाँ मुक्ति (अष्ट कर्मोंका क्षय) । कुछ लोग इनमेंसें ७ तत्त्वोंको मानते हैं ।

नैयायिक लोग अनुमान प्रमाणसे कहते हैं कि पृथ्वी आदि सब वस्तुका कोई कर्त्ता है; क्योंकि जब पदार्थ है तब उसका कर्त्ता अवश्य होगा; किन्तु जैनीलोग इस रूपसे अनुमान नहीं करते; उनके मतमें जगत्की उत्पत्ति नही है; न कोई ईश्वर है । उनके मतमें संसारी और मुक्त दो प्रकारके जीव हैं । वे लोग अपने तीर्थकरों और सिद्ध देवताओंको मानते हैं ।

बौद्धोंके समान जैनियोंमें भी अहिंसा परम धर्म है । किसी प्राणीका वध नहीं करना, यही जैन धर्मकी सार नीति है । जानवरोंपर जैन लोगोंकी बड़ी दया है । उन्हींके उद्योगसे स्थान स्थान पर जानवरोंके अस्पताल तथा पशुशालायें बनी हुई हैं । बहुत बातोंमें बौद्धों और जैनोंका मत मिलता है । बौद्धोंके समान जैनी लोग भी ईश्वरकी स्थितिको नही स्वीकार करते हैं । उनके मतमें मन्दिर बना कर जैन तीर्थकरकी प्रतिमा स्थापित करना उत्तम कर्म है; चाहे प्रतिमाओंकी पूजा हो अथवा न हो । उन्होंने बहुतसे उत्तम मन्दिर, जिनमें मार्बुलका बहुत काम है, बनवाये हैं । बहुतेरी जैन प्रतिमाओंके भौंहोंपर और छातीके बीचमें चाँदी अथवा सोने पर हीरे जड़े रहते हैं; और किसी किसीके कंधों, केहुनियों, ठेहुनों तथा शिरके मुकुट पर सोनेके पत्तर जड़े रहते हैं ।

जैनियोंमें श्वेताम्बर और दिगम्बर दो प्रकार होते हैं। श्रावक श्वेताम्बरोंमें ओसवाल और पोरवाल जातिके बनिये और दिगम्बरोंमें अग्रवाला सरावगी जातिके बनिये बहुत हैं। दिगम्बर जैनियोंकी देव मूर्त्तियोकी देहमे वस्त्रका चिह्न नहीं रहता। श्वेतांवर लोग अपने तीर्थंकरोकी पूजा करते हैं और अपने मतवालोंका बडा सम्मान करते हैं। जैन लोग उदारता, सुशीलता, पुण्य और तप इन ४ को मुख्य धर्म मानते हैं।

जैन श्रमणोंका कर्तव्य कार्य आठवाँ तपस्या नीचे लिखे हुए ५ कर्म हैं,-(१) चैत्य अर्थात् देवमन्दिरमें पाठ करना, (२) साधुओंकी वन्दना करना, (३) वार्षिक परिभ्रमण करना, (४) परस्पर स्वधर्मकी चर्चा करना और (५) इन्द्रियोंका दमन करना। श्रमण लोग क्षमाशील, संग रहित, केश संस्कारसे रहित और भिक्षान्न भोजी होते हैं। वे लोग इसलिये अपने मुखपर पतला कपड़ा दिये रहते हैं कि उडनेवाला कोई कीड़ा मुखमे न पड़ जाय। वे एक झाडू अपने हाथमें लिये रहते हैं, उसीसे जगह बहार कर जीवोंको बचा कर बैठते हैं तथा भूमिको बहार कर मल मूत्र त्याग करते हैं। उनमें बहुतेरे लोग ऐसे होते हैं कि जीव हिंसाके भयसे न तो रसोई बनाते हैं न किसीको अपनी रसोई बनानेकी आज्ञा देते हैं; जो लोग अपने निमित्त रसोई बनाते हैं, उन्हींसे वे मॉग कर उसको भोजन करते हैं। वे मॉड और चावल धोये हुए पानीसे जलका काम निबाह लेते हैं, क्योंकि जलमें सूक्ष्म जीव रहते हैं; मॉड़में कोई जीव नहीं है।

जैन लोग सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १४१६६३८ थे; वे लोग राजपूताना और पश्चिमी भारतमें बहुत हैं।

भावनगर।

सोनगढ़ के रेलवे स्टेशन से ५ मील पूर्व सिहोर का रेलवे स्टेशन है। स्टेसनसे १$\frac{3}{4}$ मील दक्षिण सिहोर कसवा है, जो एक समय राजधानी था। सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सिहोर कसवेमें १०००५ मनुष्य थे; अर्थात् ७६७८ हिन्दू, १४१३ मुसलमान, ९१३ जैन और १ कृस्तान। सिहोरमें कई एक देव मन्दिर बने हुए हैं।

सिहोरके रेलवे स्टेशनसे १४ मील (धौला जंक्शनसे ३२ मील और जितलसर जंक्शनसे ११२ मील) पूर्व भावनगरका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके काठियावाड़ देशमें काठियावाढ प्रायद्वीपके पूर्वी किनारेके पास (२१ अंश, ४५ कला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, १२ कला, ३० विकला पूर्व देशान्तरमें) कांबेकी खाडी पर गुजरातके भड़ोंच शहरसे लगभग ५० मील पश्चिम कुछ उत्तर एक देशी राज्यकी राजधानी भावनगर है; जिसको लोग भाऊनगरभी कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय भावनगर कसवेमें ५७६५३ मनुष्य थे, अर्थात् ३१११६ पुरुष और २६५३७ स्त्रियाँ। इनमें ४२०२१ हिन्दू, १०२६७ मुसलमान, ४७६१ जैन, ३०८ कृस्तान और २९६ पारसी थे। मनुष्य-संख्याके अनुसार यह भारतवर्षमें ६४ वाँ और बम्बईके गवर्नरके अधीनके देशी राज्योंमें पहिला कसवा है।

भावनगरमे कोई पुरानी वस्तु दर्शनीय नहीं है। हालमें बहुत सुन्दर इमारतें बनी है। वहाँ ठाकुर साहबका महल, कई एक सुन्दर बाग, हौज, सूत कातने और कपड़े बिननेके मिल (कल कारखाने), एञ्जनके छापेखाने, १ बीमारखाना, पानीकी कल, अस्पताल और कई स्कूल हैं। भावनगरमें बड़ी तिजारत होती है। वहाँके बन्दरगाहसे बहुत रुई गाँठें बांधकर काठियावाड़ तथा अन्य देशोंमें भेजी जाती हैं।

भावनगरका राज्य–काठियावाड़के पूर्वी किनारेके पास भावनगरका राज्य है। राज्यमें कपास, नमक और गल्ले पैदा होते हैं। तेल, कपड़े और पीतल तथा तांबेके बर्तन तैयार होते हैं। राज्यमें अनेक बन्दरगाह हैं; जिनमेंसे करोड़ों रुपयेके माल जाते आते है। ११७ स्कूलोंमें लगभग ६३०० लड़के पढ़ते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय भावनगर राज्यके २८६० वर्गमील क्षेत्रफलमें ६५९ गॉव और ४००३२३ मनुष्य थे; अर्थात् ३४६०९४ हिन्दू, ३७०४० मुसलमान और १७१८९ अन्य।

काठियावाड़में भावनगरका राज्य प्रथम दर्जेके राज्योंमेंसे एक तथा सब राज्योंसे अधिक प्रसिद्ध है। वहाँके ठाकुर साहबको अङ्गरेजी सरकारकी ओरसे ११ तोपोंकी सलामी मिलती है। राज्यका सैनिक बल ८५ पुलिसके सवार; ५०० पैदल और २७६५ अन्य मनुष्य है। राज्यसे लगभग ३४००००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमेंसे १२८०६० रुपया अङ्गरेजी गवर्नमेण्टको और १५४४९० रुपया बडोदाके गायकवाड़ और जूनागढ़के नवाबको दिया जाता है।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि लगभग सन् १२६० में गोहेल राजपूत अपने प्रधान सेजाकके अधीन उस देशमे बसे। सेजाकके ३ पुत्र थे;—रानोजी, सारङ्गजी और शाहजी, जिनमेंसे रानोजीके वंशधर भावनगरके, सारङ्गजीके वंशधर लाठीके और शाहजीके वंशधर पालीटाणाके ठाकुर साहब है। सन् १७२३ में भाऊसिंहने भाऊनगर अर्थात् भावनगरको बसाया। भाऊसिंहके पुत्र रावल अखेरजीकी मृत्यु होने पर उनके पुत्र बख्तसिंह सन् १७७२ में राज्यके उत्तराधिकारी हुए। भाऊसिंह, रावल अखेरजी और बख्तसिंहने देशकी सौदागरीकी उन्नति करने और समुद्रके डकैतोंके विनाश करनेमें बड़ा परिश्रम किया। बख्तसिंहने भावनगर राज्यको बहुत बढ़ाया।

भावनगरके वर्तमान नरेश ठाकुर साहब सर तख्तसिंहजी यशवन्तसिंहजी जी. सी. एस. आई. जिनका जन्म सन् १८५८ में हुआ था, राजकोटके राजकुमार कालिजमें पढ़े हैं, उनके नाबालिग रहनेके समय एक अङ्गरेजी अफसर और पुराना दीवान गौरीशङ्कर सी. एस. आई. ने राज्यका प्रबन्ध किया था। भावनगरके वर्तमान ठाकुर साहबने राजकोटके कालिजके एक बाजू और प्रिंसपलके मकान बनानेके लिये १००००० रुपया और खैराती फण्डमें ५०००० रुपया दिया था।

लिंबड़ी।

भावनगरके रेलवे स्टेशनसे ३२ मील पश्चिम धौला जंक्शन और धौला जक्शनसे ५५ मील उत्तर लिंबड़ीका रेलवे स्टेशन है। काठियावाडके झालावार प्रान्तमे एक छोटी नदीके उत्तर किनारेपर एक देशी राज्यकी राजधानी लिंवडी है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय लिंबडी कसबेमें १३४९७ मनुष्य थे, अर्थात् ८६३१ हिन्दू, ३४२७ जैन, १४२७ मुसलमान, ९ पारसी और ३ कृस्तान।

लिम्बड़ीमें ठाकुर साहबका सुन्दर महल बना है और एक अस्पताल, एक स्कूल और ठाकुर साहबकी कचहरियां हैं।

लिम्बड़ीका राज्य—काठियावाडके झालावार विभागमें लिंबड़ी राज्य है। राज्यकी भूमि समतल है। एक छोटी नदी राज्यमे होकर बहती है। राज्यमें कपास और गल्ले होते हैं। सन् १८८३ मे राज्यके १७ स्कूलोंमें १३१७ लडके पढ़ते थे।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय लिंबड़ी राज्यके ३४४ वर्गमील क्षेत्रफलमे १ कसवा, ४३ गाँव और ४३०२३ मनुष्य थे, अर्थात् ३३५५६ हिन्दू, ४६३२ मुसलमान और ४८७५ अन्य।

लिंबडीका राज्य काठियावाडके दूसरे दर्जेके राज्योमेसे एक है। वहाँके ठाकुर साहब झाला राजपूत हैं। उनको ९ तोपोंकी सलामी मिलती है। वर्त्तमान लिम्बड़ी नरेश ठाकुर साहब सर यशवंतसिंहजी फतहसिंह के० सी० आई० ई० राजकोटके राजकुमार कालिजमें पढ़े हैं। सन् १८७६ में सबालिग होनेपर उनको राज्यका पूरा अधिकार मिल गया। सन् १८८७ में उनको के० सी० आई० ई० की पदवी मिली। लिम्बड़ीके राज्यसे २६४००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमेसे अंगरेजी गवर्नमेण्ट और जूनागढ़के नवावको ४५५२० रुपया राज्यकर दिया जाता है। उनका सैनिक वल १६० आदमीका है।

उन्तीसवाँ अध्याय।

(बम्बई हातेमें) पाटन, राधनपुर, वीसनगर, वाडनगर, सिद्धपुर, पालनपुर, (राजपूतानेमें) आबू पहाड़ और सिरोही।

पाटन।

लिंवड़ीके रेलवे स्टेशनसे १७ मील उत्तर वाढ़वान-जंक्शन, वाढ़वानसे ३९ मील पूर्वोत्तर वीरम गाँव जंक्शन और वीरमगांवसे ४१ मील पूर्वोत्तर (अहमदाबाद जंक्शनसे

४३ मील उत्तर) महसानामें रेलवेका जंक्शन है। महसानासे २७ मील दक्षिण और अहमदाबादसे १६ मील उत्तर कलोलका रेलवे स्टेशन है, जिससे १४ मील पश्चिम बड़ोदा राज्यमें काड़ी कसबा है; जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय १६३३१ मनुष्य थे।

महसानासे रेलवेकी एक लाइन पश्चिमोत्तर पाटनको; दूसरी लाइन पूर्वोत्तर बीसनगर, वाड़नगर होकर खेरालूको; तीसरी लाइन उत्तर बाद पूर्वोत्तर सिद्धपुर होकर अजमेर इत्यादिको; चौथी लाइन दक्षिण-पूर्व अहमदाबाद इत्यादिको और पाँचवीं लाइन दक्षिण-पश्चिम वीरमगाँव, वाढ़वान, बंकानेर, राजकोट और जितलसर जंक्शन होकर पोरबन्दर तथा विरावल बन्दरको गई है। इनमेंसे महसानासे पाटन; खेरालू और वीरमगाँव जानेवाली ये ३ लाइनें बड़ोदाके महाराजकी बनवाई हुई हैं।

महसाना जंक्शनसे २५ मील पश्चिमोत्तर पाटनका रेलवे स्टेशन है। गुजरात देशके बड़ोदा राज्यके काड़े विभागमें (२३ अंश, ५१ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, १० कला, २० विकला पूर्व देशान्तरमें) सरस्वती नदीके किनारे पर सबडिवीजनका सदर स्थान पाटन कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पाटन कसबेमें ३२६४६ मनुष्य थे; अर्थात् १५७२४ पुरुष और १६९२२ स्त्रियां। इनमें २२७८६ हिन्दू, ५८९९ मुसलमान, ३९२९ जैन; १६ पारसी, १० एनिमिष्टिक, अर्थात् जङ्गली जातियाँ और ६ कृस्तान थे। मनुष्य—संख्याके अनुसार यह बड़ोदाके राज्यमें दूसरा कसबा है।

कसबेके बगलोंमें मोटी दीवार बनी हुई है। पाटनमें बड़ोदाके महाराजकी कचहरी, अस्पताल, कई छोटे स्कूल, कई एक देवमन्दिर और १०८ से अधिक जैन मंदिर हैं। जैनोंके पुस्तकालयोंके लिये अब तक पाटन प्रसिद्ध है। कसबेमें तलवार, बर्छी, छुरी, कपड़े, रेशमी वस्त्र और मिट्टीके बर्तन बहुत बनते हैं।

इतिहास—पाटन पहिले अनहिलवाड़ा करके प्रख्यात था। यह गुजरातके सबसे अधिक पुराने और सबसे अधिक प्रसिद्ध कसबोंमेंसे एक है। अनहिलवाड़ा सन् ७४६ से सन् १२९४ तक तोमर राजपूतोंकी राजधानी था; मुसलमानोंके अधिकारके समय भी यह लगातार प्रसिद्ध बना रहा, अब तक कसबेके आसपास पुरानी कारीगरीकी बहुतसी निशानियाँ देखनेमें आती हैं। सन् १०२४ में गजनीके महमूदने सोमनाथको जानेके समय अनहिलवाड़ाको लेलिया था और १३ वीं सदीके आरम्भमें दिल्लीके बादशाह कुतुबुद्दिनने अनहिलवाड़ाके राजा भीमदेवको परास्त किया, किन्तु सन् ७४६ से सन् १२९७ तक अनहिलवाड़ाका राज्य राजपूत राजाओंके अधिकारमें रहा। सन् १२९७ में मुसलमानोंने अनहिलवाड़ाके राज्यको ले लिया। नये पाटन कसबेका बड़ा भाग महाराष्ट्रोंका बनाया हुआ है।

राधनपुर ।

पाटनके रेलवे स्टेशनसे लगभग ५० मील पश्चिम (खारागोड़ाके रेलवे स्टेशनसे ४० मील उत्तर) २३ अंश, ४९ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७१ अंश, ३८ कला ४० विकला पूर्व देशांतरमें बम्बई हातेके पालनपुर एजेंसीमें देशी राज्यकी राजधानी राधनपुर है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय राधनपुर कसबेमें १४१७५ मनुष्य थे, अर्थात् ६७२३ हिन्दू, ४६६० मुसलमान और २७९२ जैन ।

राधनपुर कसबेके चारोंओर १५ फीट ऊँची और ८ फीट मोटी दीवार है । दीवारमें भंवांरियाँ बनी हुई हैं, चारोंओर ८ फाटक हैं । शहर पनाहके भीतरका किला, जिसमें राधनपुरके नव्वाब रहते हैं, दीवारसे घेरा हुआ है । कसबेमें अस्पताल और स्कूल बना है और बड़ी सौदागरी होती है । रुई, गेंहू, चना इत्यादि वस्तु राधनपुरसे अन्यत्र भेजी जाती हैं और चीनी, चावल, तंवाकू, कपडा और हाथीदांत इत्यादि चीजें अन्य जगहोंसे वहाँ आती हैं ।

राधनपुरका राज्य—पालनपुर एजेंसीमें राधनपुर प्रथम दर्जेका राज्य है । देश समतल है । ३ छोटी नदियाँ, जो ग्रीष्म कालमें सूख जाती हैं, राज्यमे होकर बहती हैं । कूपोंका पानी १० फीटसे ३० फीट तक नीचे है, कच्छके नमकदार रनके पास होनेके कारण गहिरे कूपोंका पानी खारा और कम गहिरे कूपोंका पानी मीठा होता है । सन् १८८३ मे राज्यके ९ स्कूलोंमें ५७२ विद्यार्थी पढ़ते थे ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय राधनपुर राज्यके ११५० वर्गमील क्षेत्रफलके २ कसबे और १५६ गावोंमें ९८१२९ मनुष्य थे; अर्थात् ८०५८८ हिन्दू, ११७५७ मुसलमान और ५७८४ अन्य । राधनपुरके राज्यसे लगभग ६००००० रुपया मालगुजारी आती है । वहाँके नव्वावको अङ्गरेज महाराजकी ओरसे ११ तोपोंकी सलामी मिलती है । उनका सैनिक बल लगभग २५० सवार और ३६० पैदलका है ।

इतिहास—राधनपुरका राज्य वावी खानदानके पठानके अधिकारमें है । वह पहिले बाघेलोंके अधिकारके समय लुनवाडा कहलाता था, जो पीछे गुजरातके मुसलमानोंके अधीन फतहखाँ बलूचीके अधिकारमे हुआ । कहा जाता है कि उसी खानदानके राधनखाँके नामसे उसका राधनपुर नाम पडा ।

पहला वावी १६ वीं सदीमे हुमायूंके साथ हिन्दुस्तानमे आया । १७ वीं सदीमें शाहजहाँके राज्यके समय वहादुरखां वावी थारड़का फौजदार बनाया गया । उसका पुत्र शेरखाँ वावी जो गुजरात देशका जानकार था, शाहजादे मुराद वखसकी सहायता देनेके लिये गुजरातमें भेजा गया । उसके पुत्र जाफ़रखांने सन् १६९३ में राधनपुर, सामी, मुञ्जपुर और

तेरवाड़ाकी फौजदारीको प्राप्त किया। वह सन् १७०४ में बीजापुरका और सन् १७०६ में पाटनका गवर्नर बनाया गया। उसका पुत्र खांजहां राजनपुर, पाटन, बाड़नगर, बीसनगर, बीजापुर खेरालू इत्यादिका गवर्नर हुआ। खांजहाँके पुत्र कमालुद्दीनखांने औरङ्गजेबके मरनेके पश्चात् अहमदाबादके सूबेको मुगलोंसे छीन लिया। उसीकी हुकूमतके समय उस खान्दानके शेरखां बाबीने जूनागढ़के राज्यपर अपना अधिकार कर लिया, जिसके वंशधर जूनागढ़के वर्तमान नवाब हैं। सन् १७५३ में रघुनाथराव पेशवा और दामाजी गायकवाड़ने अहमदाबादपर आक्रमण करके कमालुद्दीनको परास्त किया। उस समय उन्होंने उसको राधनपुर, सामी, मुञ्जपुर, पाटन; बीसनगर, बाड़नगर, बीजापुर; थराड और खेरालूका जागीरदार बनाया। उसके पीछे दामाजीने कमालुद्दीनके उत्तराधिकारियोंसे राधनपुर, सामी और मुञ्जपुरको छोड़कर सब जागीरोंको छीन लिया। पीछे राधनपुर अङ्गरेजी गवर्नमेंटके अधीन हुआ। सन् १८१६ और १८२० की महामारीसे राधनपुर कसबेके लगभग आधे निवासी मर गये। सन् १८२२ में १७००० रुपया राधनपुरका राज्यकर मुकर्रर हुआ, जिसको अङ्गरेजी सरकारने सन् १८२५ में माफ कर दिया। इस समय नवाब महम्मद बिसमिल्लाखां, जिनकी अवस्था ५० वर्षकी है, राधनपुरके नवाब हैं।

बीसनगर।

महसाना जंक्शनसे १३ मील पूर्वोत्तर बीसनगरका रेलवे-स्टेशन है। बड़ोदा राज्यके काड़ी विभागमें सबडिवीजनका सदर स्थान बीसनगर एक कसबा है, जिसको ११ वीं या १३ वीं सदीमें विसलदेवने बसाया था।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बीसनगर कसबेमें २१३७६ मनुष्य थे; अर्थात् १८५३० हिन्दू, १६०६ मुसलमान, १२३८ जैन और २ पारसी।

बीसनगर ६ प्रकारके नागर ब्राह्मणोंमेंसे १ का प्रधान स्थान है, इसमेंसे बहुत नागर ब्राह्मण स्वामीनारायणकी सम्प्रदायके हे। स्वामी नारायण सन् १८२५ ई० के पीछे तक थे। गुजरात और काठियावाड़ तथा बम्बईमें स्थान स्थान पर उनके मन्दिर बने हुए हैं।

बाडनगर।

बीसनगरसे ८ मील (महसाना जंक्शनसे २१ मील) पूर्वोत्तर बाडनगरका रेलवे स्टेशन है। बड़ोदा राज्यके काड़ी विभागमें बाडनगर एक पुराना कसबा है, जो एक समय बहुत प्रसिद्ध था।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय बाडनगरमें १५९४१ मनुष्य थे; अर्थात् १४२७६ हिन्दू, १०३५ मुसलमान और ६३० जैन।

बाडनगरमें चन्द दिलचस्प खण्डहर हैं। वहाँके हाटकेश्वर महादेवका मन्दिर दर्शनीय है। बाडनगर नागर ब्राह्मणोंका, जो गुजरात और काठियावाड़में माननीय हैं, प्रधान धर्म स्थान है।

सिद्धपुर।

महसाना जंक्शनसे १३ मील उत्तर ऊंझाका रेलवे स्टेशन है। बड़ोदा राज्यके काड़ी विभागमें ऊँझा एक कसबा है, जिसमें सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय ११८८७ मनुष्य थे।

ऊंझासे ८ मील (अहमदाबादसे ६४ मील) उत्तर और अजमेर शहरसे ३४१ मील दक्षिण पश्चिम सिद्धपुराका रेलवे स्टेशन है। बडोदाके राज्यके काडी विभागमें (२३ अंश, ५५ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, २६ कला पूर्व देशान्तरमें) सरस्वती नामक नदीके किनारे पर सिद्धपुर एक पुराना कसबा और प्रसिद्ध तीर्थ है। इसीमें कपिलदेवजीका जन्म हुआ था। इसको लोग मातृगया कहते हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय सिद्धपुर कसबेमें १६२२४ मनुष्य थे; अर्थात् १२०५३ हिन्दू, ३६६० मुसलमान, ५०० जैन ६ कृस्तान और ५ पारसी।

रेलवे स्टेशनके पास बडोदाके महाराजकी धर्मशाला है। स्टेशनसे ½ मील सिद्धपुर कसबा है। कसबेके पास सरस्वतीनदी बहती है, जो राजपूतानेमें आबू पहाड़ीसे निकल कर पालनपुर, राधनपुरके राज्य और बडोदा राज्यके पाटन सबडिवीजन होकर १०० मीलसे अधिक दक्षिण-पश्चिम बहनेके पश्चात् कच्छके रनमें गिरती है। वह नदी कई मीलों तक पृथ्वीके गर्भमें बह करके राधनपुरके राज्यमे प्रवेश करनेके पहिले फिर प्रकट होजाती है। नदीमें सब जगह हिल जाने लायक पानी है। सिद्धपुरके पास नदीके किनारेपर पक्का घाट बना है। गर्मीके दिनोंमें नदीमे थोड़ा पानी बहता है। लोग पानीमें बैठकर स्नान करते हैं। सिद्धपुरके पास सरस्वतीके किनारोंपर और उसके जलमें सैडकों डोड सर्प रहते हैं। वे न किसीसे डरते हैं और न किसीको काटते हैं। उनमेंसे कोई कोई स्नानके समय आदमीकी देहमें भी लग जाते है।

सिद्धपुरमें बडोदाके महाराजकी कचहरियां, पुलिस, स्कूल और अस्पताल हैं। वहाँ सदावर्त लगा है, धर्मशालाये बनी हैं और हजारों घर पंडे बसते है। रणछोड़जी इत्यादि देवताओंके बहुतसे मन्दिर है। वहाँ सरस्वती नदी, रुद्रमहालय, गोविन्दराव तथा माधवरावका मन्दिर और बिंदुसर ये ४ स्थान प्रधान हैं,—सरस्वतीके किनारेसे थोड़ीही दूरपर कसबेमें रुद्रमहालयका खडहर है। वहाँ पश्चिमी भारतके प्रसिद्ध पुराने मन्दिरोंमेंसे एक रुद्रेश्वर महादेवका मन्दिर था, जिसको लगभग सन् १३०० ईस्वीमें अल्लाउद्दीनने तोड़ दिया। पंडे लोग कहते हैं कि उस समय सिरोहीके राजा शिवलिङ्गको अपनी राजधानीमें लेगये, वहाँ उनका नाम झरणेश्वर पड गया, जो वहाँ अब तक विद्यमान हैं। रुद्रमहालयमे अब केवल उस मन्दिरका टूटा हुआ फाटक है। फाटकसे बाहर मुसलमानोंके अधिकारमें

उस समयका एक छोटा कुण्ड और कोठरीके समान दो तीन छोटे खाली मन्दिर हैं। कसबेके वाहर बिन्दुसरके मार्गमें एक मन्दिरमें गोविन्दराव और दूसरेमें माधवरावकी सुन्दर मूर्ति है।

सिद्धपुर कसबेसे १ मील दूर बिंदुसर है। वहाँ पहुँचनेसे पहिलेही एक स्थानपर एकही पंक्तिमें शिखरदार ३ नये मन्दिर मिलते हैं, जिनमेंसे एकमें शेषशायी भगवान्, दूसरेमें लक्ष्मीनारायण और तीसरेमें राम, लक्ष्मण और सीता हैं। दूसरे स्थानमें वल्लभकुलवालोंके मन्दिरके निकट एक-कोठरीमें कर्दम ऋषि और देवहूतीकी छोटी मूर्त्ति है। तीसरे स्थानमें बिन्दुसरके समीप ज्ञानवापी नामक छोटी बावली और छोटे मन्दिरमें सिद्धेश्वर महादेव हैं। लगभग ४० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा बिन्दुसर नामक छोटा पोखरा है। उसके चारों बगलोंपर नीचे पत्थरकी सीढ़ियाँ और ऊपर पत्थरके फर्श हैं और दक्षिणके किनारेके पास ३ छोटे मन्दिर हैं; जिनमेंसे एकमें महर्षि कर्दम और देवहूती, दूसरेमें कपिल मुनि और तीसरेमें गया गदाधरजी हैं। बिन्दुसरके किनारेपर बहुतेरे यात्री; जिनकी माता मरगई है, पिण्डदान करते हैं। बिन्दुसरके पासही अल्पासरोवर नामक बहुत बड़ा तालाब है। उसके चारों बगलोंपर पक्के घाट बने हुए हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–महाभारत—(वनपर्व, २५८ वाँ अध्याय) राजा युधिष्ठिरने कहा कि अब हमलोग मरु देशके उत्तम काम्यक वनमें जाकर बिन्दुसर नामक तालाबके तटपर विहार करेंगे। उसके पश्चात् पाण्डव लोग काम्यक वनमें चले गये।

वामनपुराण–(३५ वाँ अध्याय) मातृ तीर्थमें जाकर स्नान करनेसे प्रजाकी वृद्धि होती है।

श्रीमद्भागवत—(पहिला स्कन्ध, तीसरा अध्याय) विष्णु भगवान्के २४ अवतार है–(१) सनत्कुमार; (२) वाराह, (३) यज्ञ; (४) हयग्रीव, (५) नर नारायण; (६) कपिलदेव, (७) दत्तात्रेय, (८) ऋषभ, (९) पृथु, (१०) मत्स्य, (११) कच्छ, (१२) धन्वन्तारि, (१३) मोहिनी, (१४) नृसिंह, (१५) वामन, (१६) परशुराम, (१७) व्यास, (१८) रामचन्द्र, (१९) कृष्ण, (२०) नारद, (२१) हरि, (२२) हंस; (२३) बुद्ध और (२४) कल्की।

(तीसरा स्कन्ध, २१ वाँ अध्याय) ब्रह्माजीने कर्दम ऋषिसे कहा कि तुम सृष्टि रचो। ऋषिने सतयुगमें सरस्वती नदीके किनारे पर जाकर विवाहके हेतु हजार वर्षतक तप किया। भगवान्ने प्रकट होकर कहा कि हे महर्षि ! ब्रह्माका पुत्र मनु ब्रह्मावर्तमें बसकर सातों द्वीपोंका राज्य करता है। वह परसोंके दिन यहाँ आकर तुमको अपनी पुत्री देजायगा। मैं तुम्हारे घर जन्म लूँगा। भगवान्के कहे हुए दिनमें राजा मनु अपनी पत्नी तथा पुत्रीके साथ रथमें बैठे हुए बिन्दुसरके पास कर्दम मुनिके आश्रममें आये। भगवान्ने कर्दम ऋषिके वरदान देनेके समय दया करके अश्रुबिन्दु गिराये थे; उसी दिनसे उस स्थानका नाम बिन्दु-

सर होगया था। (२२ वाँ अध्याय) राजा मनु और उनकी पत्नी शतरूपाने अपनी पुत्री देवहूतीको महर्षि कर्दमको समर्पण कर दिया। (२३ वाँ अध्याय) कर्दमने अपने विहार करनेके लिये योग बलसे इच्छानुसार भूमण्डलमें भ्रमण करनेवाला एक उत्तम विमान प्रकट किया। देवहूतीने पतिकी आज्ञासे सरस्वतीके शिवसरोवरमें स्नान किया। सरोवरसे १००० कन्या निकलकर देवहूतीकी दासी बनीं। महा योगी कर्दमजी अपनी भार्याके सहित विमानमें बैठ सम्पूर्ण भूमण्डलमें भ्रमण करके अपने आश्रममें आये। देवहूतीसे ९ कन्या उत्पन्न हुईं। (२४ वाँ अध्याय) कुछ दिनोंके पश्चात् देवहूतीके गर्भसे भगवान् कपिलजीने जन्म लिया। कर्दमजीने ब्रह्माजीकी आज्ञानुसार मरीचि आदि मुनीश्वरोंको अपनी नवो कन्या देदीं। उसके पीछे वह कपिलदेवजीकी प्रदक्षिणा करके वहाँसे चले गये। (२५ वाँ अध्याय) कपिलदेवजीने विन्दुसरोवरपर बसकर अपनी माताको ज्ञान उपदेश दिया। (३३ वाँ अध्याय) वह देवहूतीको आत्मगति दिखाकर उनसे आज्ञा ले वहाँसे ईशान कोणकी ओर (गङ्गासागर) में चले गये। वहाँ समुद्रने उनको रहनेका स्थान दिया। अब तक कपिलदेवजी त्रिलोककी शान्तिके निमित्त योग धारण करके उसी स्थानपर विराजते हैं। देवहूती सरस्वतीके तीरपर वास करने लगी और थोडेही कालमें अनन्य गतिको पहुँच गई। वह आश्रम सिद्धपद (सिद्धपुर) नामसे विख्यात हो गया।

पद्मपुराण—(उत्तर खण्ड, १४६ वाँ अध्याय) रुद्रमहालय तीर्थ साक्षात् महादेवजीका रचा हुआ केदार तीर्थके तुल्य है। वहाँ श्राद्ध करनेसे पितर गण रुद्र लोकमें चले जाते हैं। वहाँ स्नान करनेसे मुक्ति हो जाती है। कार्त्तिक अथवा वैशाखकी पूर्णमासीको उस तीर्थमें जानेसे फिर संसारमें जन्म नहीं होता है।

पालनपुर।

सिद्धपुरसे १९ मील (अहमदाबादसे ८३ मील) उत्तर पालनपुरका रेलवे स्टेशन है। बम्बई हातेके पालनपुर एजेंसीमें देशी राज्यकी राजधानी और पालनपुर एजेंसीका सदर स्थान पालनपुर है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणनाके समय पालनपुर कसबेमें २१०९२ मनुष्य थे, अर्थात् १०१२३ हिन्दू; ७९९२ मुसलमान, २९३५ जैन, २५ पारसी, १२ क्रस्तान और ४ यहूदी।

पालनपुर कसबा ३ मील लम्बी दीवारसे, जो १७ फीटसे २० फीट तक ऊँची और ६ फीट मोटी है, घेरा हुआ है। जैनपुरा और ताजपुर नामकी दो शहरतलियाँ हैं। कसबेके मकानोंमें चन्द मकान अच्छे हैं। प्रधान सड़कपर रातमे लालटेनोंकी रोशनी होती है। इनके अतिरिक्त पालनपुरमें पालनपुरके नव्वावका महल, पोलिटिकल एजेंटकी कोठी, बङ्गला स्कूल, लायब्रेरी, अस्पताल और पोष्टआफिस है। पालनपुर कसबेसे पश्चिम कुछ उत्तर १७ मीलकी रेलवे शाखा डीसा छावनीको गई है।

पालनपुरका राज्य—पालनपुर पोलिटिकल एजेंसीमें १३ राज्य हैं, जिनमेंसे पालनपुर और राधनपुर पहिले दरजेके राज्य और दूसरे ११ बहुत छोटे राज्य हैं। पालनपुर सबसे बडा राज्य है। उसके उत्तर सिरोहीका राज्य और मारवाड़का सबडिवीजन; पूर्व सिरोही और एक दूसरा राज्य तथा अर्बलीका सिलासला, दक्षिण बड़ोदाका राज्य और पश्चिम पालनपुर एजेंसीके राज्य हैं।

राज्यके उत्तरी भागमें सघन वनोंके साथ पहाड़ियाँ हैं। पूर्व और दक्षिणकी नीची ऊँची काली भूमि उपजाऊ है; उसमें वर्षमें तीन फसिल होती हैं। पश्चिमोत्तर समतल मैदान है, जिसमें साधारण तरहसे सालमें एक फसिल होती है। पहाड़ियोंपर अच्छे चरागाह हैं। गाँव, जो साधारण प्रकारसे गरीब हैं, दूर दूर पर बसे हैं। उस राज्यमें बनास और सरस्वती नदी बहती है। बोखारकी बीमारी बहुत होती है। ऊख, गेहूँ, धान इत्यादि फसिल होती हैं। अहमदाबादसे पालनपुरके राज्यसे होकर अजमेर, दिल्ली और आगराको सड़क गई है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय पालनपुर राज्यके ३१५० वर्गमील क्षेत्रफलके १ कसबे और ४५१ गाँवामें २३४४०२ मनुष्य थे; अर्थात् १९३३१७ हिन्दू, १७२५६ मुसलमान और १३८२९ दूसरे।

पालनपुर राज्यसे लगभग ५००००० रुपया मालगुजारी आती है, जिसमेंसे ४३७५० रुपया बड़ोदाके महाराजको 'कर' दिया जाता है। वहाँके नवाबको अङ्गरेजी गवर्नमेण्टकी ओरसे ११ तोपोंकी सलामी मिलती है। उनके पास लगभग ३०० सवार और ७०० पैदल सेना है।

इतिहास—पालनपुरके नवाब लोहानी अफगान है। कहा जाता है कि दिल्लीके हुमायूँके राज्यके समय लोहानी लोग विहारपर अधिकार रखते थे। सन् १५९७ में अकबरने उनके प्रधान गजनीखांको दीवानकी पदवी देकर लाहौरका सूबेदार बनाया। सन् १६८२ में औरङ्गजेबने गजनीखांके वंशजको पालनपुर, डीसा इत्यादि दे दिये। सन् १६९८ में मारवाड़के राठौर राजपूतोंने उसके उत्तराधिकारीसे सब देश छीनकर उसको पालनपुर छोड़ दिया। उस समयसे वे लोग पालनपुरमें रहने लगे। सन् १७५० में दीवान बहादुरखांन पालनपुरके शहर पनाहको बनवाया। सन् १८१२ में पालनपुरके फीरोजखांको उनके अधीनके एक आदमीने मारडाला। उस समय फीरोजखांके पुत्र फतहखांने अङ्गरेजी गवर्नमेंटसे सहायता मांगी। सन् १८१३ में अङ्गरेजी सरकारने अपनी सेना भेजकर फतहखांको पालनपुरका प्रधान बना दिया। सन् १८१७ में अङ्गरेजोंने आक्रमण करके पालनपुरको ले लिया। उसके पश्चात् पालनपुरके प्रधान उनके अधीन हुए। इस समय दीवान सर शेरमहम्मदखां, जिनकी अवस्था लगभग ४० वर्षकी है, पालनपुरके नवाब है।

आबू पहाड़।

पालनपुरके रेलवे स्टेशनसे १३ मील पूर्वोत्तर सरोत्राका रेलवे स्टेशन है, जिससे पूर्वोत्तर बम्बई हाता छूट कर राजपूताना प्रदेश मिल जाता है। सरोत्रासे १९ मील और पालनपुरके रेलवे स्टेशनसे ३२ मील पूर्वोत्तर राजपूताना प्रदेशमें आबूरोडका रेलवे स्टेशन है।

राजपूतानेकी दक्षिणी सीमाके पास राजपूतानेके सिरोहीके राज्यमें आबू नामक प्रसिद्ध पहाड है। वह पहाड अर्बुदगिरिका, जिसको अब अर्वली कहते हैं, एक भाग है, किन्तु अर्वलीके सिलसिलेसे आबू पहाड एक तङ्ग घाटी द्वारा अलग होगया है। उस घाटीसे होकर पश्चिमी बनास नदी बहती है। आबू पहाड़ पर बहुतसे जैनयात्री और हिन्दू यात्री जाते हैं।

आबूका शिर लगभग १४ मील लम्बा और २ मीलसे ४ मील तक चौड़ा है। उस पर स्थान स्थानमें चोटियाँ हैं। उसका प्लेटू अर्थात् ऊपरका मैदान नीचेके मैदानसे लगभग ३००० फीट और समुद्रके जलसे ४००० फीट ऊचा है। आबूके उत्तर भागका शिखर, जो उसके सब शिखरोंसे बुलन्द है, समुद्रके जलसे ५६५० फीट ऊँचा है।

आबूरोडके रेलवे स्टेशनसे आबू पहाडके पूर्व बगलके पास तक १६½ मील पर्यंत चढ़ाईकी सुन्दर सड़क है। रेलवे स्टेशनसे पांच छः मील तक हलके पहियेकी गाडीका और उससे आगे पहाडके शिर तक छोटे घोडेका मार्ग है। तांगाभी पहाडके शिर तक जा सकता है।

आबू पहाडपर गर्मीके समय गवर्नर जनरलके राजपूतानेके एजेंट और अन्य यूरोपियन तथा देशी अमीर लोग रहते हैं। वहाँ तंदुरुस्तीके लिये यूरोपियन सेना रक्खी जाती हैं। आबूकी नेवके पास और उसके ढालू बगलों पर मनोहर सघन जङ्गल हैं, जिनमें स्थान स्थानपर बांसके जङ्गल लगे हैं। जङ्गलोंमें भालू बहुत रहते है, बाघ कभी कभी देखनेमे आते हैं। वहाँ औसतमें सालाना वर्षा लगभग ७० इञ्च होती है। वर्षा कालमें नदियों और झरनोका पानी बढ़ जानेसे तथा हरे भरे जङ्गलोंसे आबूकी शोभा बहुत बढ जाती है। प्रायः सम्पूर्ण घाटियोंमें २० या ३० फीट कूप खननेसे अच्छा पानी मिल जाता है। जाडेके समयमें आबू पर बहुत कम लोग रहते हैं। सरकारी अफसरों तथा दर्शकोंके लिये आबू पर लगभग ५० बॅगले बने हैं। फौजी छावनीमें लगभग २०० सैनिक रह सकते हैं। उस पहाड़ पर गर्मीके समयमें लगभग ४५०० और दूसरे समयमें लगभग ३५०० आदमी रहते हैं। आबूकी कन्दराओंमें बहुतसे साधु निवास करते हैं। आबूकी पीठपर गाडीकी सडक बहुत कम हैं, किन्तु घोड़े और पैदलके सुन्दर मार्ग हैं

आबूके प्रेट्रके दक्षिण-पश्चिमके बगलके पास बारक अर्थात् सैनिक गृह, लारस स्कूल, अङ्गरेजी गिर्जा, रेजीडेन्सी, क्लब, बाजार इत्यादि हैं।

लगभग ½ मील लम्बी "नखी तालाब" नामक एक सुन्दर झील है, जिसको लोग नैला तालाब भी कहते हैं। उसके चन्द छोटे टापुओंपर वृक्ष लग गये हैं। उसमें सर्वदा झरनोंका पानी गिरता है। हालमें पानी अधिक रहनेके लिये झीलके पश्चिम किनारेके पास एक बाँध बनाया गया है। झीलके पूर्वके किनारेके पास पानीकी गहराई कम है; किन्तु अन्य भागोंमें पानी गहरा है। उसकी औसत गहराई २० से ३० फीट तक है; किन्तु बाँधकी ओर झीलके मध्य भागमें लगभग १०० फीट गहरा पानी है। उस देशके लोग कहते हैं कि देवताओंने महिषासुरके भयसे भाग कर अपने छिपनेके लिये अपने नैल अर्थात् नखोंसे खोदकर इस झीलको बनाया था, इसी लिये इसका नाम नैला तथा नखी तालाब पड़ा है। नखी झीलके किनारेपर खानगी मकान बने हुए हैं।

झीलकी दक्षिण रामकुण्ड नामक चोटी ४३५४ फीट और उत्तर अम्बादेवी चोटी ४७२० फीट, चर्च चोटी ३८४९ फीट, रेजीडेंसी चोटी ३९३० फीट, केका पहाड़ ४६०० फीट, देवली पहाड़ी ४३३५ फीट, विमली चोटी ४५४२ फीट, फिटपरेप ४५७२ फीट, अचलगढ़ चोटी ४६८८ फीट, नैरा चोटी ४६८६ फीट, झाका चोटी ५१९६ फीट और नगरातालाब चोटी ४९२३ फीट समुद्रके जलसे ऊँची है।

आबूके जैन मन्दिर—आबूके सिविल स्टेशनसे लगभग १ मील उत्तर पहाड़के ऊपर देवलबाडेमें आबूके प्रसिद्ध जैन मन्दिर है। मन्दिरोंके चारों ओर पर्वतकी चोटियाँ हैं। वहाँ ५ मन्दिर हैं, जिनमेंसे एक विमलशाहका और दूसरा वास्तुपाल और तेजपालका बनवाया हुआ है। वे दोनों मन्दिर भारत-वर्षके सब जैन मन्दिरोंसे अधिक सुन्दर हैं। मध्यमें जैन लोगोंके पहिले तीर्थंकर ऋषभनाथ अर्थात् आदिनाथका चौमुख नामक तीन मञ्जिला मन्दिर है। उस मन्दिरमें चारों ओर ४ दरवाजे हैं। मन्दिरके मध्यमें ऋषभनाथकी चौमुख अर्थात् चार मुखवाली प्रतिमा है। मन्दिरके पश्चिम बगलमें दोहरी और तीन बगलोंमें एकहरी मंडप अर्थात् जगमोहन है। चौमुख मन्दिरके उत्तर ओर एक ऊँचे चबूतरेपर दूसरा बड़ा मन्दिर; चौमुखसे दक्षिण-पूर्व ऊँची दीवारसे घेरा हुआ आदिनाथका एक मन्दिर और चौमुखसे पश्चिम विमलशाहका और वास्तुपाल तथा तेजपालके ये दोनों मन्दिर है।

विमलशाहके मन्दिरमें जैनोंके तीर्थंकर आदिनाथ और उसके उत्तर वास्तुपाल और तेजपाल नामक दोनों भाइयोंके मन्दिरमें जैन लोगोंके ३२ वें तीर्थंकर नेमीनाथकी प्रतिमा है। वहाँके शिलालेखोंसे विदित होता है कि विमलशाहका मन्दिर संवत् १०८८ (सन् १०३१ ई०) में बना और संवत् १३७९ (सन् १३२२ ई०) में मरम्मत किया गया और वास्तुपाल, तेजपालका मन्दिर सन् ११९७ और सन् १२४७ ईस्वीके बीचमें बना था। दोनो मन्दिर सैकड़ों मीलसे मार्बुल अर्थात् संगमर्मर लाकर पहाड़पर बनाये गये। उनमें बारीक नकाशीका काम है और पत्थर काट कर विचित्र फूल पत्ते निकाले गये हैं। किसी किसीका मत है कि आगरेके ताजमहलको छोड़ कर भारतवर्षमें कोई ऐसी इमारत नहीं है।

एक आँगनमे, जिसकी लम्बाई १४० फीट और चौड़ाई ९० फीट है, आदिनाथका मन्दिर है। आँगनके चारों वगलोंमें ५५ छोटी कोठरियां हैं। प्रति कोठरीमे जैन देवताकी प्रतिमा पलथी मारकर बैठी हुई है। कोठरियोंके आगे छोटे खंभे लगे हुए ओसारे हैं। वह मन्दिर जैन मन्दिरोंके मामूली ढाचेका है, उसमें केवल एक द्वार है। मन्दिरमें आदिनाथकी पीतलकी प्रतिमा पल्थी मारकर बैठी है। मन्दिरके आगे आंगनमे ४८ स्तम्भोंका मण्डप है, जिसके ऊपर मध्यमें एक गुम्बज वना हुआ है। एक मुख्वा मण्डपमें, जिसका अगवास दरवाजेकी ओर है, सफेद मार्बुलके लगभग ४ फीट ऊँचे ९ हाथी हैं। प्रत्येक हाथीपर हौदेमें एक पुरुप और एक पीलवानकी प्रतिमा वनी हुई हैं। उनमेंसे कई एक टूट गई हैं। यह ठाट विमलशाह और उनके वंशके लोगोंके मन्दिरमें जानेका वना हुआ है, अर्थात् हाथियोपर विमलशाह और उनके वंशके लोगोंकी प्रतिमा हैं। विमलशाहकी प्रतिमाको मुसलमानोंने तोड़ दिया था। उनकी वर्त्तमान प्रतिमा चिकनी मिट्टीकी वनी है।

विमलशाहके मन्दिरके उत्तर वगलमें जैनोके २२ वें तीर्थंकर नेमीनाथका मन्दिर है, जिसको अनहिल पाटनके पोरवाल वनियाँ वास्तुपाल और तेजपालने, जो गुजरातके वघेला राजाके दीवान थे, वनवाया था। ऐसा प्रसिद्ध है कि इस मन्दिरके वननेमें १ करोड़ ८० लाख रुपया खर्च पडा। उसके अलावे उस जगहके, जिसपर मन्दिर वना है, भरती करनेमें ५६ लाख रुपया अलग खर्च हुआ था। वह मन्दिर सुन्दरता और कारीगरीमें वहुत उत्तम है। उसमें कई एक संस्कृत लेख हैं। डे आं गनमें मन्दिर है। आंगनके चारो वगलोंमें वहुत सी छोटी कोठरियाँ वनी हुई हैं, जिनमे जैन मूर्त्तियाँ वैठी है। कोठरियाक दरवाजेके ऊपर उनकी वनावटके विषयमें ४६ लेख हैं, जिनमें सवत १२८७ (सन् १२३०) से संवत् १२९३ (सन् १२३६ ई०) तक देख पडता है। उस मन्दिरमे उत्तम सङ्गतरासीके १० हाथियोंका ठाट है। हाथियोंके सवारोंको कोई राजा ले गया था। प्रति हाथीके पीछे एक ताक है। उन ताकोंमें वास्तुपाल, तेजपाल और उनके चचा तथा उन लोगोंके परिवारके अन्य लोगोंकी प्रतिमा वनी हुई हैं।

अचलगढ़—देवलवाड़ासे ४ मील आगे उरिया गाँवके पास एक वङ्गला है। दहिनेके मार्गसे उस जगहसे १ मील दूर जानेपर एक घेरेके भीतर अचलेश्वर महादेवका सुन्दर मन्दिर मिलता है। उसके दक्षिण अग्निकुण्ड नामक सरोवर है, जिसके किनारेपर एक पमारकी मार्बुलकी सुन्दर प्रतिमा वनी हुई है, जिसके हाथमें धनुष वना है। उसके पास पत्थरके ३ भैंसे हैं। मन्दिरसे दक्षिण-पूर्व एक दूसरा सुन्दर मन्दिर है। वहाँके सव मन्दिर पहाड़ीपर चढ़नेके समय दूरहीसे देख पडते हैं। वहाँ हिन्दू यात्री वहुत जाते हैं। अचलेश्वर महादेवके मन्दिरके पास एक संन्यासीके मठमें राणा समरसिंह प्रशस्ति, जिसको संवत् १३४२ (सन् १२८५ ईस्वी) में चित्तौरगढ़के वेदशर्म्मा नामक नागर ब्राह्मणने श्लोकवद्ध संस्कृतमें वनाया था, पत्थरपर खोदी हुई है। उसमें वप्पारावलसे ले करके राणा समरसिंह तकके चित्तौरके राजाओंका वर्णन है और लिखा है कि राणा समरसिंहने अचलेश्वरको स्थापित किया तथा भावशंकर तपस्वीकी आज्ञासे उनके पुराने मठका जीर्णोद्धार करवा दिया राणा

समरसिंह सन् ११९३ ईस्वीमें अपने शाले पृथ्वीराजके साथ महम्मदगोरीके संग्राममें मारे गये थे (प्रथम खण्डके चित्तौरमें देखिये)।

मन्दिर और स्थान—आबू पहाड़के बगलोंपर तथा उसके चारोंओरके मैदानोंमें बहुतसे मन्दिर और स्थान हैं, उनमेंसे चन्द सुन्दर हैं। पहाड़के दक्षिण-पूर्वके ढालूपर ५०० फीट नीचे अङ्गरेजी गिरजासे ३ मील दूर गौमुखके पास एक सुन्दर मन्दिर है। मन्दिरके आगे एक पीतलकी प्रतिमा बनी हुई है।

सिविल स्टेशनसे ५ मील दूर गौमुखसे पश्चिम पहाड़के दक्षिण बगलपर गौतमका मन्दिर है।

सिविल स्टेशनसे १४ मील दूर पहाड़के दक्षिण-पूर्वके पादमूलके पास एक देवमन्दिर है। आबूरोडके रेलवे स्टेशनसे सुगमतासे आदमी वहाँ जा सकते हैं।

पहाड़से दक्षिण-पश्चिमके मैदानमें अनन्दाके डाक बँगलेसे २ मील दक्षिण देवाङ्गना स्थान है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत-(वनपर्व, ८२ वाँ अध्याय) तीर्थके यात्रियोंको उचित है कि चर्मण्वती अर्थात् चम्बल नदीमें स्नान करनेके उपरान्त हिमाचलके पुत्र अर्बुदगिरि जायँ। वहाँ पूर्व समयमें पृथ्वीमें छेद था। उसी जगह तीनों लोकोंमें विख्यात वशिष्ठ मुनिका आश्रम है, वहाँ एक रात निवास करनेसे हजार गोदानका फल और वहाँके पिंगतीर्थके स्पर्श करनेसे सौ गोदानका फल मिलता है।

सिरोही।

आबूरोडके रेलवे स्टेशनसे २८ मील उत्तर और नानाके रेलवे स्टेशनसे लगभग १६ मील पश्चिम (२४ अंश, ५३ कला, १२ विकला उत्तर अक्षांश और ७२ अंश, ५४ कला, ३८ विकला पूर्व देशान्तरमें) राजपूतानाके सिरोही राज्यकी राजधानी सिरोही नामक छोटा कसबा है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सिरोही कसबेमें ५३९९ मनुष्य थे; अर्थात् ५१२९ हिन्दू और ५७० मुसलमान।

सिरोहीमें वहाँके महारावका महल, एक अस्पताल, एक जेलखाना और शरणेश्वर शिवका मन्दिर है। वहाँ तलवार, बर्छी, छुरी, इत्यादि हथियार सुन्दर बनते हैं।

सिरोहीका राज्य—राजपूताना एजेंसीमें सिरोही एक देशी राज्य है। उसके उत्तर जोधपुरका राज्य, पूर्व उदयपुरका राज्य; दक्षिण पालनपुर और माहीकण्ठाके इडर और दन्ताका राज्य और पश्चिम जोधपुरका राज्य है। उस देशमें चट्टान और पहाड़ियाँ बहुत हैं, इस लिये वह राज्य बहुत टुकड़ोंमें बट गया है। उस राज्यके आबू पहाड़की सबसे ऊँची चोटी समुद्रके जलसे ५६५० फीट ऊँची है। अर्वली पहाड़से वह राज्य दो भागोंमें विभक्त हुआ है। पश्चिमी भाग दूसरे भागोंसे अधिक मैदान और खेतीके लायक है। राज्यकी प्रधान फसिल गेहूँ और जव है; किन्तु चना; मिलेट और तेलहन अर्थात् तेलके बीजभी होते हैं। राज्यमें केवल पश्चिमी बनास नदी है, जिसकी धारा गर्मी आरम्भ होनेके समय बहनेसे

वन्द होजाती है, किन्तु स्थान स्थानमें नदीके गहरे स्थानमें पानी रह जाता है। कूपोंका पानी राज्यके पूर्वोत्तरके भागमें ५० फीटसे १०० फीट तक नीचे; पश्चिमोत्तरके भागमे ७० फीटसे ९० फीट तक नीचे, पूर्वी भागमें १५ फीटसे ६० फीट तक नीचे और पश्चिमी भागमे ६० फीटसे ७० फ़ीट तक नीचे है। सिरोही कसवे और उसके पड़ोसके कूपोंमें खारा पानी है। पहाड़ियों और वनोंमे बाघ वहुत है, जो वहुत मवेसियोंको मार डालते हैं। भालू, हरिन और तेंदुएभी हैं। सिरोहीके राज्यसे १७५००० रुपया मालगुजारी आती है। राज्यका फौजी वल २ तोप, लगभग १०० सवार और ५९० पैदलका है। वहाँके महाराव अङ्गरेजी सरकारकी ओरसे १५ तोपोंकी सलामी पाते हैं। अब उस राज्यके कुछ लोग पढ़नेमें मन लगाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय सिरोहीके राज्यके ३०२० वर्गमील क्षेत्रफलमे १ कसबा, ३६५ गाँव, ३०५३२ मकान और १४२९०३ मनुष्य थे, अर्थात् १२३६३३ हिन्दू, १६१३७ जैन, २९३५ मुसलमान, १७९ कृस्तान और १९ अन्य। हिन्दुओंमे १७३१७ वनिया, १३४६६ राजपूत, १३२८८ ब्राह्मण और बाकीमें अन्य जातियोके लोग थे। राज्यके उत्तरके भागमें मीना और दक्षिण भागमें भील वहुत हैं, जिनमेंसे वहुत लोग चोरीका पेशा करते हैं।

इतिहास—वर्त्तमान सिरोही नरेश दिल्लीके महाराज पृथ्वीराजके वंशज देवराजके वंशधर चौहान राजपूत है। अति पूर्व समयमें सिरोहीमें भील लोग वसते थे। वहाँ राजपूतोंमें प्रथम गिहलोट राजपूत और उसके थोड़ेही दिन पीछे पमार राजपूत आये। पमारोंकी राजधानी चन्द्रवती थी, जिसके खण्डहरोंको देखनेसे जान पड़ता है कि एक समय यह वड़ा शहर था। पमारोंके उत्तराधिकारी चौहान हुए, जो लगभग ११५२ ईस्वीमें उस देशमें वसे थे। उन्होंने वहुत वर्षों तक वड़ी लड़ाई करके पमारोंके राज्यपर अपना अधिकार किया। अन्तमें जब पमार लोग आबू पहाड पर भाग गये तब देवराज चौहानने उनके पास खवर भेजी कि तुम लोग अपनी १२ लड़कियां चौहानोंको देकर इनसे मित्रता कर लो। उसकी बातपर विश्वास करके प्रायः सब पमार राजपूत १२ लडकियोंको लेकर सिरोहीकी दक्षिणी सीमाके पास भदेली गांवमें आये। उस समय चौहानोंने उन पर आक्रमण करके वहुतेरोंको मार डाला और आबूको अपने अधिकारमें कर लिया। अब तक पमारोंकी किलाबन्दियोंके खण्डहर आबू पर विद्यमान हैं।

सन् १८५७ के वलवेके समय सिरोहीके महाराव शिवसिंहने अङ्गरेजी सरकारकी सहायता की, उसकी कृतज्ञतामें अङ्गरेज महाराजने उनका आधा 'कर' छोड़ दिया, अब वहाँके महारावको केवल ६८८० रुपया कर देना पड़ता है। सन् १८४५ मे सिरोहीके महारावने अङ्गरेजी सरकारको आबू पहाड़ पर उसके चन्द टुकेड़ दे दिये, जिनपर अङ्गरेजी अफसर गर्मीके दिनोंमें रहते हैं। वर्त्तमान सिरोही नरेश महाराव केशरीसिंहजी वहादुर लगभग ३३ वर्षकी अवस्थाके चौहान राजपूत हैं।

आबूरोडके रेलवे स्टेशनसे १९० मील अजमेर, २०८ मील किसनगढ़, २३९ मील फलेरा जंक्शन, २७४ मील जयपुर, ३३० मील बाँदीकुई जंक्शन, ३९१ मील भरतपुर, ४२५ मील आगरा किलाका स्टेशन, ४४१ मील तुण्डका जंक्शन, ४९८ मील इटावा, ५८५ मील कानपुर, ७०४ मील इलाहाबाद, ७९८ मील नयनी जंक्शन, ७५५ मील विंध्याचल, ७६० मील मिर्जापुर, ७९९ मील मुगलसराय जंक्शन, ८५७ मील बक्सर और ८८७ मील विहियाका रेलवे स्टेशन है। मैं विहियाके स्टेशनपर रेलगाड़ीसे उतरकर स्टेशनसे १२ मील उत्तर अपने घर चरजपुरा चला आया ❋।

साधुचरणप्रसाद,

भारत-भ्रमण चौथा खण्ड समाप्त।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बम्बई.

❋ अब ग्रन्थकर्त्ता बाबू साधुचरणप्रसाद, जिनका वय (सन् १९०३ ईस्वीमें) ५१ वर्षका है, अपने गृहके कार्योंको छोड़कर काशीमें रहते हैं।